卐 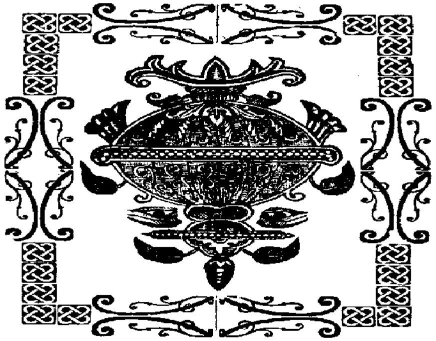 卐

प्रकाशकः—
शेठ वल्लभदास त्रिभुवनदास गांधी
सेक्रेटरी श्री जैन आत्मानन्द सभा
भावनगर

मूल्यम्—
बहुमूल्यपत्रप्रतेः दश रूप्यकाः ।
अल्पमूल्यपत्रप्रतेः सार्धाष्टौ रूप्यकाः ।

मुद्रकः—
शाह गुलाबचंद लल्लुभाई
श्री महोदय प्रिन्टींग प्रेस
दाणापीठ—भावनगर

आ भा र प्र द र्श न

प्रस्तुत ग्रन्थना मुद्रणकार्य माटे जे भाग्यवान् महानुभावोए सभाने द्रव्य अर्पण कर्युं छे तेमनां शुभ नामोनी नोंध लेवा साथे तेमनो अमे अंतःकरणथी धन्यवाद आपवा पूर्वक आभार मानीए छीए—

रू. २०००) पाटणनिवासी धर्मात्मा शेठ नटवरलाल तथा भाई रमणलाले पोताना पिताश्री शेठ छोटालाल लहेरचन्दना कल्याणनिमित्ते अर्पण कर्या छे ।

रू. ५००) राधनपुरवासी शेठ चन्दुलाल केशरीचन्दनी धर्मपत्नी अने पाटणनिवासी शेठ मोहनलाल मोतीचन्दनी सुपुत्री बहेन केशरबहेने पोताना जेठ शेठ जीवाभाई केशरीचन्दना कल्याणनिमित्ते कहेला द्रव्यमांथी आप्या छे ।

गांधी वल्लभदास त्रिभुवनदास
सेक्रेटरी श्रीजैन आत्मानन्द सभा.
भावनगर (काठीआवाड)

॥ जयन्तु वीतरागाः ॥

कथारत्नकोशनी प्रस्तावना ।

आजे आचार्य **श्रीदेवभद्रसूरिविरचित** रत्नकोशना यथार्थ नामने शोभावतो एवो **कथारत्नकोश** नामनो अतिदुर्लभ ग्रन्थ प्रकाशित करी जैनकथासाहित्यरसिक विद्वानोना करकमळमां उपहाररूपे अर्पण करवामां आवे छे; जेनी साद्यंत परिपूर्ण मात्र एक ज ताडपत्र उपर लखाएली प्राचीन प्रति, खंभातना 'श्रीशांतिनाथ जैन ज्ञानभंडार'ने नामे ओळखाता अतिप्राचीन गौरवशाळी ताडपत्रीय ज्ञानभंडारमां जळवाएली छे. तेने अंगे नीचेना मुद्दाओ उपर विचार करवामां आवे छेः—१ भारतीय कथासाहित्यनी विपुलता. २ जैन प्रवचनमां धर्मकथानुयोगनुं स्थान. ३ कथाना प्रकारो अने कथावस्तु. ४ कथारत्नकोशग्रंथनो परिचय. ५ तेना प्रणेता. ६ अन्य जैनकथाग्रंथादिमां कथारत्नकोशनुं अनुकरण अने अवतरण. ७ संशोधन माटे एकत्र करेली प्राचीन प्रतिओनो परिचय तथा संशोधन विशेनी माहिती.

१ भारतीय कथासाहित्यनी विपुलता

आजनी प्रत्यक्ष दुनिआमां जे मानवप्रजा वसे छे तेमां भणेलागणेला कुशाग्रमतिवाळा लोको बे त्रण टका जेटला ज छे, ज्यारे बाकीनो ९७ टका जेटलो भाग अक्षरज्ञान विनानो छतां स्वयंस्फुरित संवेदनवाळो छे. आमां केवळ अक्षरपरिचय धरावनारा अने

श्रीआत्मानन्द-जैनग्रन्थरत्नमाला एकनवतितमं रत्नम् ९१

सिरिदेवभद्दायरियविरइओ—श्रीदेवभद्राचार्यविरचितः

कहारयणकोसो—कथारत्नकोशः ।

विषमपदार्थद्योतिन्या टिप्पण्या विभूषितः ।

कथारत्नकोशकारप्रणीतप्रमाणप्रकाश—अनन्तनाथस्तोत्रादिभिः संयुतश्च ।

सम्पादकः संशोधकश्च—

बृहत्तपोगच्छान्तर्गतसंविग्नशाखीय—आद्याचार्य—श्री१००८श्रीविजयानन्दसूरिप्रवर—प्रवरविनेयप्रवर्तकश्री-
कान्तिविजयान्तिषन्मुनिवरश्रीचतुरविजयचरणाब्जसेवको मुनिः पुण्यविजयः ।

मुद्रयित्वा प्राकाश्यं नीतश्चायं ग्रन्थः—भावनगरस्थया श्रीजैन—आत्मानन्दसभया ।

वीरसंवत् २४७० आत्मसंवत् ४८ विक्रमसंवत् २००० इस्वीसन् १९४४

सद्गुणोथी विभूषित महापुरुषो आमजनताने उपदेशद्वारा केळवी शके छे, साहित्यसर्जनद्वारा दोरी शके छे अने अनेक गूंचो उकेली तेनी साधनाना मार्गने सरळ बनावी आपे छे. आ दृष्टिए पण कथासाहित्यनुं मूल्य अनेकगणुं वधी जाय छे.

२ जैनप्रवचनमां कथानुयोगनुं स्थान

जेम महाभारत अने रामायणना प्रणेता वैदिक महर्षिओए आमजनताना प्रतिनिधि बनी ए ग्रंथोनी रचना करी हती, ए ज प्रमाणे जैनपरंपराए पण आमजनतानी विशेष सेवना करवामां ज पोतानुं गौरव मान्युं छे. एक काळे ज्यारे वैदिक परंपरा आमजनतानी मटी राजाओनी आश्रित थई आमजनतानुं प्रतिनिधिपणुं गुमावी बेठी, एटलुं ज नहि पण ए आमजनतानी स्वाभाविक भाषा तरफ पण सुगाळवी थई गई, बराबर ए ज वखते जैनपरंपरामां अनुक्रमे थएल महामान्य तीर्थंकर भगवान् श्रीपार्श्वनाथ अने श्रमण भगवान् श्रीवीरवर्धमानस्वामीए आमजनतानु प्रतिनिधिपणुं कर्युं अने तेनी स्वाभाविक भाषाने अपनावी ते द्वारा ज पोतानुं धर्मतीर्थ प्रवर्त्ताव्युं अने आमजनता सुधी पहोंचे एवा साहित्यनिर्माणने पूरेपूरो टेको आप्यो. एटलुं ज नहि पण जैनप्रवचनना जे मुख्य चार विभागो बताव्या छे तेमां आमजनताना अतिप्रिय ए कथासाहित्यने खास स्थान पण आप्युं छे. जैनप्रवचन चरणकरणानुयोग, धर्मकथानुयोग, गणितानुयोग अने द्रव्यानुयोग ए चार विभागमां वहेंचाएलुं छे. आमां आमजनतानुं प्रतिनिधित्व धरावनार धर्मकथानुयोग विशिष्ट स्थान भोगवे छे. सदाचरणोना मूळ नियमो अने तेमने आचरणमां मूकवानी विविध प्रक्रियाओना साहित्यनुं नाम चरणकरणानुयोग छे. ए सदाचरणो जेमणे जेमणे—स्त्री के पुरुषे—आचरी बताव्यां होय, एवां आचरणोथी जे लाभो मेळव्या होय अथवा ए आचरणो आचरतां आवी पडती मुशीबतोने वेठी तेमने जे रीते पार करी होय तेवा सदाचारपरायण धीर वीर गंभीर स्त्रीपुरुषोनां ऐतिहासिक के कथारूप जीवनोना सर्जननुं नाम धर्मकथानुयोग छे. आ विषे शास्त्रकारो तो एम पण कहे छे के—आवा प्रकारना धर्मकथानुयोग विना चरणकरणानुयोगनी साधना कठण बनी जाय छे अने जनता ते तरफ वळती के आकर्षाती पण नथी. आम जैन दृष्टिए 'एक अपेक्षाए चारे अनुयोगोमां धर्मकथानुयोग प्राधान्य धरावे छे' एम कहेवुं लेशमात्र अनुचित नथी. जेमां खगोळभूगोळनां विविध गणितो आवे ते गणितानुयोग अने जेमां आत्मा, परमात्मा, जीवादितत्त्वो, कर्म, जगतनुं स्वरूप वगेरे केवळसूक्ष्मबुद्धिग्राह्य विषयो वर्णववामां आव्या होय ते द्रव्यानुयोग. आ चार अनुयोग पैकी मात्र एक धर्मकथानुयोग ज एवो छे जे आमजनता सुधी पहोंची शके छे अने तेथी ज बीजा अनुयोगो करतां कोई अपेक्षाए तेनुं महत्त्व समजवानुं छे. जैनपरंपरा अने वैदिकपरंपरानी पेठे बौद्धपरंपराए पण कथानुयोगने स्थान आपेलुं छे, एटलुं ज नहि पण सरखामणीमां वैदिकपरंपरा करतां बौद्धपरंपरा, जैनपरंपरानी पेठे आमजनतानी सविशेष प्रतिनिधि रहेली छे. जैनपरंपराना चरणकरणानुयोग माटे बौद्धपरंपरामां 'विनयपिटक' शब्द, धर्मकथानुयोगमाटे 'सुत्तपिटक' अने गणितानुयोग तथा द्रव्यानुयोग माटे 'अभिधम्मपिटक'शब्द योजायो छे 'पिटक'शब्द जैनपरंपराना 'द्वादशांगीगणिपिटक' साथे जोडाएला 'पिटक' शब्दने मळतो 'पेटी' अर्थने बतावतो ज शब्द छे. सुत्तपिटकमां अनेकानेक कथाओनो समावेश छे. **दीघनिकाय मज्झिमनिकाय सुत्तनिपात** वगेरे अनेकानेक ग्रंथोनो 'सुत्तपिटक'मां समावेश थाय छे. जैनपरंपरानो धर्मकथानुयोग, बौद्धपरंपरानो सुत्तपिटक अने वैदिकपरंपरानो इतिहास ए त्रणे शब्दो लगभग एकार्थक शब्दो छे. धर्मकथानुयोग पथ्यभोजनपान जेवो छे. जेम पथ्य अन्नपान मानवशरीरने दृढ, निरोगी, पुरुषार्थी, दीर्घजीवी अने मानवतापरायण बनावे छे तेम धर्मकथानुयोग पण मानवना मनने प्रेरणा आपी बलिष्ठ, स्वस्थ, निग्रही, सदाचारी अने सदा-

चारप्रचारी बनावे छे अने अजरामर परिस्थिति सुधी पहोंचाडे छे. बोलता चालता उपदेशक करतां, धर्मकथानुयोग मानवना मन उपर एवी सारी असर उपजावे छे जे धीरे धीरे पण पाकी थएली अने जीवनमां उतरेली होय छे. संक्षेपमां एम कही शकाय के धर्मकथानुयोग मानवने खरा अर्थमां मानवरूपे घडी शके छे अने आध्यात्मिकदृष्टिए पूर्ण स्वतंत्रता सुधी पण पहोंचाडे छे.

३ कथाना प्रकारो अने कथावस्तु

आचार्य श्रीहरिभद्रसूरिवरे समराइच्चकहामां कथाओना विभाग करतां अर्थकथा, कामकथा, धर्मकथा अने संकीर्णकथा एम चार विभाग बताव्या छे. जे कथामां उपादानरूपे अर्थ होय, वणजवेपार, लडाईओ, खेती, लेख–लखत वगेरेनी पद्धतिओ, कळाओ, शिल्पो, सुवर्णसिद्धि वगेरे धातुवादो, तथा अर्थोपार्जनना निमित्तरूप साम, दाम, दंड आदि नीतिओनुं वर्णन होय तेनुं नाम अर्थकथा. जेमां उपादानरूपे काम होय अने प्रसंगे प्रसंगे दूतीना अभिसारो, स्त्रीओना रमणो, अनंगलेखो, ललितकळाओ, अनुरागपुलकितो निरूपेलां होय ते कामकथा. जेमां उपादानरूपे धर्म होय अने क्षमा, मार्दव, आर्जव, अलोभ, तप, संयम, सत्य, शौच वगेरेने लगतां मानवसमाजने धारणपोषण आपनारां अने तेनुं सत्त्वसंरक्षण करनारां वर्णनो होय ते धर्मकथा. अने जेमां धर्म, अर्थ अने काम ए त्रणे वर्गोनुं यथास्थान निरूपण होय अने ए त्रणे वर्गोने समजाववा तेमज परस्पर अबाधक रीते व्यवहारमां लाववा युक्तिओ, तर्को, हेतुओ अने उदाहरणो वगेरे आपेलां होय ते धर्मकथा. कथाओना आ चार प्रकार पैकी केवळ एक धर्मकथा ज धर्मकथानुयोगमां आवे छे. मूळ जैन आगमोमां पण ज्ञाताधर्मकथांग, उपासकदशांग, अंतकृद्दशांग, अनुत्तरौपपातिकदशांग, विपाक वगेरे अनेक आगमो पण धर्मकथाने प्रधानपणे वर्णवे छे. ज्ञाताधर्मकथांगनुं जे प्राचीन कथासंख्याप्रमाण कहेवामां आव्युं छे तेमां ते

अक्षरपरिचय विनाना छतां पोतानी हैयाउकलतथी व्यवहार अने परमार्थनो तोड काढनारा लोकोनो समावेश छे. आ ९७ टका जेटली अत्यधिक संख्या धरावनारा लोको विज्ञान, तत्त्वज्ञान, गणितविद्या, भूगोळ के खगोळविद्यामां ऊंडा ऊतरवा जराय राजी नथी तेम तैयार पण नथी. तेमने तो घणी सरळ रीते समज पडे अने ए समजद्वारा जीवननो रस माणी शकाय अने व्यवहार तेमज परमार्थने समजी मानवजीवननी कृतकृत्यता अनुभवाय एवा साहित्यनी अपेक्षा छे. एटले ए वस्तुने आपणा पूर्व महर्षिओए विपुल प्रमाणमां कथा, उपकथा, आख्यानो, आख्यायिकाओ, ऐतिहासिक चरित्रोआदि सर्जीने पूरी रीते संतोषी पण छे. आ रीते जोतां कथासाहित्यनो संबंध मुख्यतया आमजनता साथे छे, अने आमजनता विपुल होवाथी तेनी साथे संबंध धरावतुं कथासाहित्य पण विपुल, विविध अने आमजनतानी खासियतोने लक्ष्मां राखी सुगम अने सुबोध भाषामां सरजाएलुं छे. आ प्रकारनुं कथासाहित्य जेम जैनसंप्रदायमां विपुल छे ए ज रीते वैदिक अने बौद्धसंप्रदायमां पण अति विपुल प्रमाणमां छे; एटलुं ज नहि पण भारतवर्षनी जेम भारतवर्षनी बहार पण आ जातनुं कथासाहित्य एटला ज प्रमाणमां उपलब्ध थाय छे. ज्ञाननी दृष्टिए विज्ञान, तत्त्वज्ञान, भूगोळ, खगोळ, गणित, आयुर्वेद, अध्यात्मशास्त्र, योगविद्या, प्रमाणशास्त्र वगेरे विद्याओनुं महत्त्व जराय ओछुं नथी, परन्तु ते बधी गहन विद्याओने सर्वगम्य करवानुं साधन मात्र एक कथासाहित्य छे; माटे ज भारतवर्षना तेमज भारतनी बहारना प्राचीन अर्वाचीन कुशाग्रमति विद्वानो पण कथासर्जननी प्रवृत्तिमां पड्या छे अने ए द्वारा एमणे आमजनताने त्याग, तप, वैराग्य, धीरज, क्षमा, निस्पृहता, प्राणिसेवा, सत्य, निर्लोभता, सरळता आदि गुणोनी सिद्धि माटे विविध प्रेरणाओ आपी छे. आमजनताने केळववानुं काम सहज साध्य नथी, तेम छतां त्याग, सदाचार, सरळता, समयज्ञता आदि

कथाओनो समावेश करवामां आव्यो छे. धर्मकथाओना ग्रन्थोमां शृंगार आदि रसोनी विपुलताने लीधे धर्मकथानुं धर्मकथापणुं गौण थवानो दोष जेम केटलीक धर्मकथाओनी रचनामां आवी जाय छे तेम आ ग्रंथमां ग्रंथकारे जरा पण थवा दीधुं नथी; एटलुं ज नहि पण प्रस्तुत धर्मकथाग्रंथमां शृंगार आदि जेवा रसोनो लगभग अभाव छतां आ धर्मकथाग्रंथ शृंगार रहित बनी न जाय अथवा एमांनी धर्मकथाना वाचन के श्रवणमां वक्ता के श्रोतानी रसवृत्ति लेश पण नीरस अथवा रूक्ष न बनी जाय ए विषेनी दरेक चोकसाई ग्रंथकारे राखी छे. प्रस्तुत ग्रंथमां ग्रंथकार जे जे गुण विषे कथा कहेवी शरू करे छे तेना प्रारंभमां, कथाना वर्णनमां अने एना उपसंहारमां ते ते गुणनुं स्वरूप, तेनुं विवेचन अने तेने लगता गुण-दोषो लाभ-हानिनुं निरूपण तेमणे अति सरस पद्धतिए कर्युं छे.

उपर जणाववामां आव्युं तेम आ ग्रंथमां तेत्रीस सामान्यगुण अने सत्तर विशेषगुण मळी जे पचास गुणोनुं वर्णन करवामां आव्युं छे ते उपरांत प्रसंगोपात्त बीजा अनेक महत्त्वना विषयो वर्णववामां तेमज चर्चवामां आव्या छे. जेवा के—उपवनवर्णन, ऋतुवर्णन, रात्रिवर्णन, युद्धवर्णन, श्मशानवर्णन आदि वर्णनो; राजकुलना परिचयथी थता लाभो, सत्पुरुषनो मार्ग, आपघातमां दोष, देशदर्शन, पुरुषना प्रकारो, नहिकरवालायक—करवालायक—छोडवालायक—धारणकरवालायक—विश्वासनहिकरवालायक आठ आठ बाबतो, अतिथिसत्कार आदि नैतिक विषयो; छींकनो विचार, राजलक्षणो, सामुद्रिक, मृत्युज्ञाननां चिह्नो, अकालदंतोद्गमकल्प, रत्नपरीक्षा आदि लोकमानसने आकर्षनार स्थूल विषयो; देवगुरुधर्मतत्त्वनुं स्वरूप, गुरुतत्त्वव्यवस्थापनवादस्थल, अष्टप्रातिहार्यनुं स्वरूप, वेदापौरुषेयत्ववादस्थल, धर्मतत्त्वपरामर्श, रत्नत्रयी, जिनप्रतिमाकारधारी मत्स्य अने कमळो, जिनपूजानुं विस्तृत स्वरूप,

॥ ५ ॥

सामान्य धर्मोपदेश, मूर्तिपूजाविषयक चर्चास्थल, हस्तितापस तथा शौचवादमतनुं निरसन, अनंतकाय—कंदमूळना भक्षणनुं सदोषपणुं आदि गंभीर धार्मिक विचारो; उपधानविधि, ध्वजारोपणविधि, मूर्त्तिप्रतिष्ठाविधि आदि विधानो अने ते उपरांत अनेक कथाओ, तथा सुभाषितादि विविध विषयो आलेखवामां आवेला छे. आ बधी वस्तु प्रस्तुत ग्रंथनी विषयानुक्रमणिका जोवाथी ध्यानमां आवी शकशे. आ उपरथी प्रस्तुत ग्रंथकार केटला समर्थ अने बहुश्रुत आचार्य हता अने तेमनी कृति केटली पांडित्यपूर्ण अने अर्थगंभीर छे ए पण समजी शकाशे.

प्रस्तुत कथारत्नकोशनी खास विशेषता ए छे के—बीजा कथाकोशग्रंथोमां एकनी एक प्रचलित कथाओ संग्रहाएली होय छे त्यारे आ कथासंग्रहमां एम नथी; पण कोई कोई आपवादिक कथाने बाद करीए तो लगभग बधी ज कथाओ अपूर्व ज छे, जे बीजे स्थळे भाग्येज जोवामां आवे. आ बधी धर्मकथाओने नाना बाळकोनी बाळभाषामां उतारवामां आवे तो एक सारी जेवी बाळकथानी श्रेणि तैयार थई शके तेम छे. ग्रंथकारे वर्णनशैली एवी राखी छे के ए रीते कथाश्रेणी तैयार करवा इच्छनारने घणुं शोधवानुं नथी रहेतुं.

५ कथारत्नकोशना प्रणेता आचार्य श्रीदेवभद्रसूरि

प्रस्तुत ग्रंथना प्रणेता आचार्य श्रीदेवभद्रसूरि छे. तेओश्री विक्रमनी बारमी शताब्दिना मान्य आचार्य छे. खरतरगच्छीय पट्टावलिमां तेमना विषे मात्र एटलो ज उल्लेख मळे छे के—" तेमणे वि. सं. ११६७ मां श्रीमान् जिनवल्लभगणिने अने वि. सं. ११६९मां वाचनाचार्य श्रीजयदेवसूरि शिष्य श्रीजिनदत्तने आचार्यपदारूढ कर्या हता " आथी विशेष एमना विषे बीजो कशो ज

उल्लेख ए पट्टावलीओमां देखातो नथी. एटले आचार्य श्रीदेवभद्रसूरि विषेनी खास हकीकत आपणे एमनी पोतानी कृतिओ आदि उपरथी ज तारववानी रहे छे.

आचार्य श्रीदेवभद्रसूरिना विषयमां तेमनी जन्मभूमि, जन्मसंवत्, ज्ञाति, माता-पिता, दीक्षासंवत्, आचार्यपदसंवत् आदिने लगती कशीये नोंध हजु सुधी क्यांय जोवामां आवी नथी. तेम छतां तेमणे पोते रचेला महावीरचरित्र (जे वि. सं. ११३९ मां आचार्यपदारूढ थवा पहेलां गुणचंद्रनामावस्थामां रच्युं छे), कथारत्नकोश (जे वि. सं. ११५८ मां रचाएलो छे) अने पार्श्वनाथचरित्र(जे वि. सं. ११६८ मां रचेलुं छे)नी प्रशस्तिओमांथी तेमना विषेनी केटलीक महत्त्वनी माहिती आपणने मळी रहे छे; एटले सौ पहेलां आपणे उपरोक्त त्रणे य ग्रन्थोनी प्रशस्तिओना उपयोगी अंशने जोई लईए—

" अइसयगुणरयणनिही मिच्छत्ततमंधलोयदिणनाहो । दूरुच्छारियवइरो वइरसामी समुप्पन्नो ॥ ४७ ॥
साहाइ तस्स चंदे कुलम्मि निप्पडिमपसमकुलभवणं । आसि सिरिवद्धमाणो मुणिनाहो संजमनिहि व्व ॥ ४८ ॥
मुणिवइणो तस्स हरट्टऽहाससियजसपसाहियासस्स । आसि दुवे वरसीसा जयपयडा सूर-ससिणो व्व ॥ ५० ॥
भवजलहिवीइसंभंतभवियसंताणतारणसमत्थो । बोहित्थो व्व महत्थो सिरिसूरिजिणेसरो पढमो ॥ ५१ ॥
अन्नो य पुन्निमायंदसुंदरो बुद्धिसागरो सूरी । निम्मवियपवरवागरण-छंदसत्थो पसत्थमई ॥ ५३ ॥
एगंतवायविलसिरपरवाइकुरंगभंगसीहाणं । तेसिं सीसो जिणचंदसूरिनामो समुप्पन्नो ॥ ५४ ॥
संवेगरंगसाला न केवलं कव्वविरयणा जेणं । भव्वजणविम्हयकरी विहिया संजमपवित्ती वि ॥ ५५ ॥

आगममां साडात्रण करोड कथाओ अने तेटली ज उपकथाओ वगेरे होवानुं कहेलुं छे. ए जोतां जैन परंपरामां धर्मकथानुं साहित्य केटलुं विपुल हतुं ए सहजमां ज कल्पी शकाय तेम छे. धर्मकथाओमां पण युद्ध, खेती, वणज, कळाओ, शिल्पो, ललितकळाओ, धातुवादो वगेरेनुं वर्णन आवे छे; परंतु धर्म प्रधान स्थाने होय अने बाकी बधुं आनुषंगिक रीते धर्मनुं पोषक होय. ए ज रीते अर्थकथा अने कामकथामां पण धर्मनुं वर्णन न ज आवे एम नहि, पण अर्थ अने काम एमां प्रधान होय; ए ज दृष्टिए ते ते कथाने तेवां तेवां नामो अपाएलां छे. प्रस्तुत कथारत्नकोश, धर्मकथाओनो महान् ग्रंथ छे. तेमां उपर कह्या प्रमाणे अर्थकथा अने कामकथानुं प्रासंगिक निरूपण होवा छतां, धर्म प्रधानस्थाने होई तेने धर्मकथानो ग्रंथ गणवामां कशोय बाध नथी. आवी कथाओमां कथाओनुं वस्तु दिव्य होय छे, मानव्य होय छे अने दिव्यमानव्य पण होय छे. कथारत्नकोशनी धर्मकथाओनुं वस्तु प्रधानपणे मानव्य छे अने क्वचित् दिव्यमानव्य पण छे.

४ कथारत्नकोशग्रंथनो परिचय

प्रस्तुत ग्रंथ प्राकृत भाषामां गद्य-पद्यरूपे अतिप्रासादिक सालंकार रचनाथी रचाएलो अने अनुमान साडाअगीआर हजार श्लोकप्रमाण छे. बहु नानी नहि, बहु मोटी पण नहि, छतां संक्षिप्त कही शकाय तेवी मौलिक पचास कथाओना संग्रहरूप आ कृति छे. प्रस्तुत ग्रंथ मुख्यत्वे प्राकृत भाषामां रचायलो होवा छतां तेमां प्रसंगोपात संस्कृत अने अपभ्रंश भाषानो उपयोग पण ग्रंथकारे करेलो छे; खास करी दरेक कथाना उपसंहारमां उपदेश तरीके जे चार श्लोको अने पुष्पिका आपवामां आव्यां छे ए तो संस्कृत भाषामां ज छे. आ ग्रंथमां सम्यक्त्व आदि तेत्रीस सामान्य गुणो अने पांच अणुव्रत आदि सत्तर विशेष गुणोने लगती

वसुबाणरुद्द ११५८ संखे वच्चंते विक्कमाओ कालम्मि । लिहिओ पढमम्मि य पोत्थयम्मि गणिअमलचंदेण ॥ ९ ॥

देवभद्राचार्यीयकथाकोशप्रशस्तिः

" तित्थम्मि वट्टंते तस्स भयवओ तियसवंदणिज्जम्मि । चंदकुलम्मि पसिद्धो विउलाए वइरसाहाए ॥
सिरिवद्धमाणसूरी अहेसि तव-नाण-चरणरयणनिही । जस्सऽज्ज वि सुमरंतो लोगो रोमंचमुव्वहइ ॥
तस्साऽऽसि दोन्नि सीसा जयविक्खाया दिवायर-ससि व्व । आयरियजिणेसर-बुद्धिसागरायरियनामाणो ॥
तेसिं च पुणो जाया सीसा दो महियलम्मि सुपसिद्धा । जिणचंदसूरिनामो बीओऽभयदेवसूरि त्ति ॥
सिद्धंतवित्तिविरयण-पगरणउवयरियभव्वलोयाण । को ताण गुणलवं पि हु होज्ज समत्थो पवित्थरिउं ॥
तेसि विणेयस्स पसन्नचंदसूरिस्स सव्वगुणनिहिणो । पयपउमसेवगेहिं सुमइउवज्झायसिस्सेहिं ॥
संवेगरंगसालाऽऽराहणसत्थं जयम्मि वित्थरियं । रइयं च वीरचरियं जेहिं कहारयणकोसो य ॥
सोवन्निडयमंडियमुणिसुव्वय १ वीरभवण २ रमणीए । भरुयच्छे तेहि ठिएहिं मंदिरे आमदत्तस्स ॥
सिरिदेवभद्दसूरीहिं विरइयं पासनाहचरियमिमं । लिहियं पढमिल्लुयपोत्थयम्मि गणिअमलचंदेण ॥
काले वसुरसरुद्दे ११६८ वच्चंते विक्कमाओ सिद्धमिमं । अणुचियमिह सूरीहिं खमियव्वं सोहियव्वं च ॥
॥ इतिश्रीप्रसन्नचन्द्रसूरिपादसेवकश्रीदेवभद्राचार्यविरचितं पार्श्वनाथचरितं समाप्तम् ॥ "

देवभद्रीयपार्श्वनाथचरितप्रशस्तिः ॥

आ उपरांत आचार्य श्रीजिनचंद्रसूरिविरचित संवेगरंगशाला ग्रंथनी पुष्पिका, जे आचार्यश्रीदेवभद्रसूरिना संबंधमां उपयोगी छे ते पण जोई लइए—

" इति श्रीमज्जिनचन्द्रसूरिकृता तद्विनेयश्रीप्रसन्नचन्द्रसूरिसमभ्यर्थितेन गुणचन्द्रगणि[ना] प्रतिसंस्कृता जिनवल्लभगणिना च संशोधिता संवेगरङ्गशालाऽऽराधना समाप्ता ॥ "

उपर जे चार ग्रंथोनी प्रशस्ति अने पुष्पिकानो उल्लेख करवामां आव्यो छे ए उपरथी आचार्य श्रीदेवभद्रसूरिना संबंधमां नीचेनी हकीकत तरी आवे छे.

आचार्य श्रीदेवभद्र, श्रीसुमतिवाचकना शिष्य हता. आचार्यपदारूढ थया पहेलां तेमनुं नाम गुणचंद्रगणी हतुं; जे नामावस्थामां तेमणे वि. सं. ११२५ मां संवेगरंगशालानामना आराधनाशास्त्रने संस्कारयुक्त कर्युं अने वि. सं. ११३९ मां महावीरचरित्रनुं निर्माण कर्युं हतुं.

संवेगरंगशालानी पुष्पिकामां " **तद्विनेयश्रीप्रसन्नचन्द्रसूरिसमभ्यर्थितेन गुणचन्द्रगणिना** " तथा महावीरचरित्रनी प्रशस्तिमां " **सूरी पसन्नचंदो चंदो इव जणमणाणंदो ॥ तव्वयणेणं सिरिसुमइवायगाणं विणेयलेसेणं । गणिणा गुणचंदेणं** " ए मुजबना आचार्य श्रीप्रसन्नचंद्र अने श्रीदेवभद्रसूरिना पारस्परिक संबंधना दूरभावने सूचवता '**समभ्यर्थितेन**' अने '**तव्वयणेणं**' जेवा शब्दो जोवामां आवे छे ज्यारे कथारत्नकोश अने पार्श्वनाथचरित्रनी प्रशस्तिमां ए बन्नेयना पारस्परिक औचित्यभावभर्या गुणानुरागने वरसावता '**तस्सेवगेहिं**' अने '**पयपउमसेवगेहिं**' जेवा शब्दो नजरे पडे छे. आनुं कारण ए ज कल्पी शकाय छे के—आचार्य

श्रीप्रसन्नचंद्रे गुणचंद्रगणिना गुणोथी आकर्षाई तेमने आचार्यपदारूढ कर्या हशे अने ए रीते ए बन्नेय आचार्यो एकबीजामां ओतप्रोत थया हशे.

उपर जणाववामां आव्युं तेम गुणचंद्रगणी अने श्रीदेवभद्रसूरि ए बन्नेय एक ज व्यक्ति छे एमां लेश पण शंकाने स्थान नथी. कारण के जे श्रेष्ठिनी विज्ञप्तिने आधीन थई महावीरचरित्रनी रचना कर्यानो निर्देश कथारत्नकोश अने पार्श्वनाथचरित्रमां छे ए ज उल्लेख, गुरुनामनिर्देश, पट्टपरंपरा वगेरे बधुंय एक सरखुं महावीरचरित्रमां मळी आवे छे. तेमज कथारत्नकोशकार अने पार्श्वनाथचरित्रकार पोताने संवेगरंगशाला ग्रंथना संस्कर्ता तरीके ओळखावे छे छतां ए नाम–देवभद्रसूरि नाम ए ग्रंथनी पुष्पिकामां न मळतां गुणचंद्रगणी ए नामनो उल्लेख मळे छे, जे महावीरचरित्रना प्रणेतानुं नाम छे. एटले कोई पण जातनी शंका विना आनो अर्थ एटलो ज थयो के—आचार्य देवभद्र अने गुणचंद्रगणी ए बन्नेय एक ज व्यक्ति छे.

उपर ' गुणचंद्रगणी अने श्रीदेवभद्रसूरि ए भिन्ननामधारी एक ज महापुरुष छे ' ए साबित करवा माटे तेमनी जे त्रण कृतिओनो उल्लेख करवामां आव्यो छे ते उपरांत तेमणे अनेक स्तोत्रोनी तथा प्रमाणप्रकाश (?) जेवा समर्थ दार्शनिक ग्रंथनी पण रचना करी छे. तेमना स्तोत्रो पैकी त्रण स्तोत्रो तेमज प्रमाणप्रकाश (?) ग्रंथनो जेटलो अंश लभ्य थई शक्यां छे ए बधायने अहीं कथारत्नकोशने अंते प्रसिद्ध करेल छे. ए प्रसिद्ध करेल स्तोत्रो जोतां तेमज कथारत्नकोश आदिमां स्थळे स्थळे आवती दार्शनिक चर्चाओ जोतां श्रीदेवभद्राचार्यनो समर्थ दार्शनिक आचार्यनी कोटिमां समावेश करवो जरा पण अनुचित के असंगतिभर्यो नहि ज लागे.

प्रस्तुत प्रकाशनने अंते जे दार्शमिक प्रकरण अने स्तोत्रो प्रसिद्ध करवामां आव्या छे ए पाटण खेत्रवसी पाडाना ताडपत्रीय

ससमय-परसमयन्नू विसुद्धसिद्धंतदेसणाकुसलो । सयलमहिवलयवित्तो अन्नोऽभयदेवसूरि त्ति ॥ ५६ ॥
जेणालंकारधरा सलक्खणा वरपया पसन्ना य । नवंगवित्तिरयणेण भारई कामिणि व्व कया ॥ ५७ ॥
तेसिं अत्थि विणेओ समत्थसत्थत्थबोहकुसलमई । सूरी पसन्नचंदो चंदो इव जणमणाणंदो ॥ ५८ ॥
तव्वयणेणं सिरिसुमइवायगाणं विणेयलेसेणं । गणिणा गुणचंदेणं रइयं सिरिवीरचरियमिमं ॥ ५९ ॥
जाओ तीसे सुंदरविचित्तलक्खणविराइयसरीरो । जेट्ठो सिद्धो पुत्तो बीओ पुण वीरनामो त्ति ॥ ७५ ॥
तेहिं तित्थाहिवपरमभत्तिसव्वस्समुव्वहंतेहिं । वीरजिणचरियमेयं कारवियं मुद्धबोहकरं ॥ ८० ॥
नंदसिहिरुद्द ११३९ संखे वोकंते विक्कमाओ कालम्मि । जेट्ठस्स सुद्धतइयातिहिम्मि सोमे समत्तमिमं ॥ ८३ ॥

गुणचन्द्रीय–देवभद्रीयमहावीरचरितप्रशस्तिः ॥

" चंदकुले गुणगणवद्धमाणसिरिवद्धमाणसूरिस्स । सीसा जिणेसरो बुद्धिसागरो सूरिणो जाया ॥ १ ॥
ताण जिणचंदसूरी सीसो सिरिअभयदेवसूरी वि । रवि–ससहर व्व पयडा अहेसि सियगुणमऊहेहिं ॥ ३ ॥
तेसिं अत्थि विणेओ समत्थसत्थत्थपारपत्तमई । सूरी पसन्नचंदो न नामओ अत्थओ वि परं ॥ ४ ॥
तस्सेवगेहिं सिरिसुमइवायगाणं विणेयलेसेहिं । सिरिदेवभद्दसूरीहिं एस रइओ कहाकोसो ॥ ५ ॥
संघधुरंधरसिरिसिद्ध–वीरसेट्ठीण वयणओ जेहिं । चरियं चरिमजिणिंदस्स विरइयं वीरनाहस्स ॥ ६ ॥
परिकम्मिऊण विहियं जेहिं सइ भव्वलोगपाउग्गं । संवेगरंगसालाभिहाणमाराहणारयणं ॥ ७ ॥

आ प्रमाणे अहीं टूंकमां जणाववामां आव्युं छे ते उपरथी आपणने खात्री थाय छे के—पूज्य आचार्यश्री देवभद्रसूरि समर्थ कथाकार, स्तुतिकार तेमज दार्शनिक बहुश्रुत आचार्य हता.

आचार्य देवभद्रसूरिना संबंधमां आटलुं निवेदन कर्या पछी 'तेओश्री कया गच्छना हता' ए प्रश्न रही जाय छे. आ विषे अहीं एटलुं ज कहेवुं प्राप्त छे के—आजे एमना जेटला ग्रंथो विद्यमान छे ए पैकी कोईमां पण तेओश्रीए पोताना गच्छनो नामनिर्देश कर्यो नथी; परंतु ए ग्रंथोनी विस्तृत प्रशस्तिओमां तेओ पोताने मात्र वज्रशाखीय अने चंद्रकुलीन तरीके ज ओळखावे छे. एटले आ विषे अमे पण तेओश्री पोते पोताने ओळखावे छे तेम तेमने 'वज्रशाखीय अने चंद्रकुलीन आचार्य' तरीके ज ओळखावीए छीए.

जो के जेसलमेरनी ताडपत्रीय पार्श्वनाथचरित्रनी प्रतिनी प्रशस्तिमां **'विउलाए वइरसाहाए'** पाठने भूंसी नाखीने बदलामां **'खरयरो वइरसाहाए'** पाठ, अने **'आयरियजिणेसरबुद्धिसागरायरियनामाणो'** पाठने भूंसी नाखीने तेना स्थानमां **'आयरियजिणेसरबुद्धिसागरा खरयरा जाया'** पाठ लखी नाखेलो मळे छे; परंतु ए रीते भूंसी—बगाडीने नवा बनावेला पाठोनो ऐतिहासिक प्रमाण तरीके क्यारे पण उपयोग करी शकाय नहि. एटले अमे एवा पाठोने अमारी प्रस्तुत प्रस्तावनामां प्रमाण तरीके स्वीकार्या नथी. उपर जणाववामां आव्युं तेम जेसलमेरमां एवी घणी प्राचीन प्रतिओ छे जेमांनी प्रशस्ति अने पुष्पिकाओना पाठोने गच्छव्यामोहने अधीन थई बगाडीने ते ते ठेकाणे 'खरतर' शब्द लखी नाखवामां आव्यो छे, जे घणुं ज अनुचित कार्य छे.

६ कथारत्नकोशनां अनुकरण अने अवतरण

आचार्य श्रीदेवभद्रनो प्रस्तुत कथारत्नकोश रचायो त्यारथी तेनी विशिष्टताने लई एटली बधी ख्याति पामी चूक्यो हतो के बीजा

बीजा जैन आचार्योए पोतपोताना ग्रंथोमां तेनां अनुकरण अने अवतरणो करीने पोतानी अने पोतानी कृतिओनी प्रतिष्ठा वधारी हती. आचार्य श्रीदेवेन्द्रसूरिकृत देववंदनभाष्य उपर श्रीधर्मकीर्तिए रचेली 'संघाचारविधि' नामनी टीकामां कथारत्नकोशनीकथाने जेमनी तेम सहज फेरफार करीने उद्धरी छे. तेम ज सुविहित पूर्वाचार्यप्रणीत 'गुरुतत्त्वसिद्धि'मां कथारत्नकोशनुं एक आखुं प्रकरण ज अक्षरशः गोठवी दीधुं छे. अने आचार्य श्रीजिनप्रभसूरिए पोताना विधिप्रपा ग्रंथमां ध्वजारोपणविधि, प्रतिष्ठोपकरणसंग्रह तथा प्रतिष्ठाविधि नामनां प्रकरणोमां कथारत्नकोशनां ते ते सळंग प्रकरणो अने तेमां आवता श्लोकोनां अवतरणो करेलां छे.

उक्त हकीकतनो स्पष्ट ख्याल आवे ते माटे आ नीचे थोडोक उतारो आपीए छीए—

कथारत्नकोश विजयकथानक ११	संघाचारविधि विजयकुमारकथा पृ. ४२८
तस्स य रन्नो मित्तो अहेसि दढगाढरूढपडिबंधो ।	दृढगाढप्रतिबन्धः श्रीगुप्ताख्यः कुबेरसमविभवः ।
आबालकालसहपंसुकीलिओ नाम सिरिगुत्तो ॥ १९ ॥	सहपंसुकीलिओ तस्स आसि मित्तो महाकिविणो ॥२॥
सुहिसयणबंधवाणं थेवं पि हु नेव देइ ओगासं ।	न ददाति स्वजनेभ्यः किञ्चिन्न व्ययति किञ्चिदपि धर्मे ।
धणमुच्छाए परिहरइ दूरओ साहुगोट्ठिं पि ॥ २१ ॥	धणमुच्छाए वज्जइ गमागमं सव्वठाणेसु ॥ ३ ॥
नवरं चिरपुरिसागय-सावयधम्मक्खणं जहावसरं ।	नवरं चिरपुरुषागत–जिनवरधर्मक्षणं यथावसरम् ।
जिणपूयणाइपमुहं जहापयट्टं कुणइ किं पि ॥ २२ ॥	जिणपूयणाइपमुहं जहापयट्टं कुणइ किं पि ॥ ४ ॥
उक्खणणखणणपरियत्तणाहिं गोवेइ तं च निययधणं ।	उत्खननखननपरिवर्त्तनादिभिः तद्धनं निजं नित्यम् ।
अवहारसंकियमणो पइक्खणं लंछणे नियइ ॥ २३ ॥	अवहारसंकियमणो गोवंतो सो किलेसेइ ॥ ५ ॥

सिट्ठं जणणीए अन्नया य तुह पुत्त ! संतिओ ताओ।
साहिंतो मह कहमवि परितोसगओ गिहादूरे ॥ ५२ ॥
अट्ठावयस्स कोडीउ अट्ठ चिट्ठंति भूमिनिहियाओ ।
ता वच्छ ! किं न ठाणाइं ताइं इण्हिं खणेसि ? त्ति ॥५३॥
इत्यादि ॥

सदनान्तः किञ्चिदपि द्रव्यमपश्यन्नसौ बहुक्लेशैः ।
भोयणमवि अज्जंतो कया वि जणणीइ इममुत्तो ॥८॥
वत्सेह स्थानेऽष्टौ कोट्यः कनकस्य सन्ति निक्षिप्ताः ।
तुह पिउणा ता गिण्हसु कयं किलेसेहिं सेसेहिं ॥९॥
इत्यादि ॥

प्रस्तुत विजय नामना श्रेष्ठिपुत्रनी कथा कथारत्नकोशकारे चैत्याधिकारमां आपेली छे त्यारे ए ज कथा संघाचारविधिना प्रणेताए स्तोत्रना अधिकारमां वर्णवेली छे. कथारत्नकोशमां ए कथा आखी प्राकृतमां छे त्यारे संघाचारविधिकारे ए कथाने बे भाषामां एटले के एक ज गाथामां पूर्वार्ध संस्कृत अने उत्तरार्ध प्राकृत एम बे भाषामां योजेली छे. संघाचारविधिटीकामांनी कथामां जे उत्तरार्ध प्राकृत छे ते आखी कथामां मोटे भागे कथारत्नकोशनां अक्षरे अक्षर उद्धरेल छे अने पूर्वार्ध पण कथारत्नकोशमांनी कथानां लगभग अनुवाद जेवां छे, जे उपर आपेली सामसामी गाथाओने सरखाववाथी स्पष्ट थई जाय एम छे.

आचार्यमहाराज श्रीविजयनीतिसूरि तरफथी प्रसिद्ध थएल गुरुतत्त्वसिद्धिमां पृ० ४७ उपर **संवेगरंगशाला**ना नामे उद्धरेल **"इत्थंतरम्मि सड्ढो आसधरो नाम भणइ दुवियड्ढो"** ए गाथाथी शरू थतुं ५९ गाथानुं जे प्रकरण छे ते आखुंय कथारत्नकोशना पृ. १० थी १२ मां गाथा १८५ थी २४३ सुधीमां छे. गुरुतत्त्वसिद्धिमां आ प्रकरण संवेगरंगशालाना उतारा तरीके जणावेल छे पण खरी रीते आ प्रकरण कथारत्नकोशमांनुं ज छे. आ उपरथी गुरुतत्त्वसिद्धिना रचनासमय उपर पण प्रकाश पडे छे अने कथारत्नकोशनी आद्यता पण पुरवार थाय छे.

भंडारमांनी प्राचीनतम खंडित ताडपत्रीय प्रकरणपोथीमांथी मळी आव्यां छे, जेने आधारे तैयार करी प्रसिद्ध करवामां आवेल छे. ए स्तोत्रो जेवा मळ्या छे तेवा ज शक्य संशोधन साथे प्रसिद्ध कर्या छे, एटले एना संबंधमां खास कशुं ज कहेवानुं नथी; परंतु "प्रमाणप्रकाश" नामनुं जे प्रकरण प्रसिद्ध कर्युं छे ए प्रकरणना नामने अथवा एना प्रणेताने सूचवतो कशोय उल्लेख ए पोथीमांथी मळी शक्यो नथी. ते छतां ए अपूर्ण अने निर्नामक प्रकरणनुं नाम में **'प्रमाणप्रकाश'** आप्युं छे ते ए प्रकरणना त्रीजा श्लोकमां आवता **"प्रमाणमेव यत् सद्भिस्तदेवातः प्रकाश्यते"** ए आर्थिक अनुसंधानने लक्षमां राखीने ज आपवामां आव्युं छे. ए ज रीते ग्रंथप्रणेता तरीके आचार्य देवभद्रना नामनो उल्लेख करवामां आव्यो छे एनुं कारण ए छे के–आ प्रकरण, उपरोक्त ताडपत्रीय पोथीमां देवभद्रसूरिकृत स्तोत्रसंग्रह साथे संलग्न होई तेमज आचार्य देवभद्रनी स्तोत्ररचनामां तेमज बीजी दरेक कृतिमां तेमनी दार्शनिकतानो प्रभाव देखातो होई आ कृति तेमनी होवी जोईए एम मानीने में पोते प्रस्तुत प्रकरणने एमनी कृति तरीके निर्देशी छे. एटले संभव छे अने कदाच शक्य पण छे के—प्रस्तुत प्रकरणनुं नाम **"प्रमाणप्रकाश"** न होय अने एना प्रणेता आचार्य देवभद्र पण न होय. आम छतां ए प्रकरणमांनो आठमो श्लोक जोया पछी 'प्रस्तुत प्रकरण श्वेतांबराचार्यविरचित छे' ए विषे तो जरा पण शंका रहेती नथी.

वादन्यायस्ततः सर्वविन्त्वे च भुक्तिसम्भवः । पुंस्त्रियोश्च समा मुक्तिरिति शास्त्रार्थसंग्रहः ॥ ८ ॥

आ श्लोकमां जणाव्या प्रमाणे "प्रस्तुत प्रकरणमां–केवळज्ञानीने आहारनो संभव छे अने पुरुष अने स्त्रीने एकसरखी रीते मोक्ष प्राप्त थई शके छे. आ बे विषयो चर्चवामां आवशे." आथी प्रस्तुत प्रकरण श्वेतांबराचार्यप्रणीत ज छे, ए निर्विवाद रीते पुरवार थाय छे.

मध्य–अंतमांनां घणां पानां गूम थएलां होई खंडित प्रति छे ज्यारे चूरुना भंडारनी प्रति कागळ उपर लखाएली ग्रंथना उत्तरखंड-रूप छे. आ त्रण प्रतो पैकी जे बे अति प्राचीन ताडपत्रीय प्रतिओनो में मारा प्रस्तुत संशोधनमां उपयोग कर्यो छे तेनो परिचय आ ठेकाणे कराववामां आवे छे—

खं० प्रति—आ प्रति खंभातना "श्रीशान्तिनाथ जैन ज्ञानभंडार"ने नामे ओळखाता प्राचीनतम अने गौरवशाली ताडपत्रीय जैन ज्ञानभंडारनी छे. प्रति अतिसुकोमळ सुंदरतम श्रीताडपत्र उपर सुंदर लिपिथी लखाएली छे. एनी पत्रसंख्या ३१७ छे. तेनी दरेक पुठीमां त्रण, चार के पांच लीटीओ लखेली छे. दरेक लीटीमां १२७ थी १४० लगभग अक्षरो छे. ए अक्षरो ठेक–ठेकाणे नाना–मोटा लखावा छतां लिपिनुं सौंदर्य आदिथी अंत सुधी एकसरखुं जळवाएलुं छे. प्रतिनी लंबाई पहोळाई ३१×२। इंचनी छे. प्रति लांबी होई तेनां पानां सुव्यवस्थित रीते रही शके ए कारणसर दोरो परोववा माटे तेना वचमां बे काणां पाडी त्रण विभागमां लखाएली छे. प्रति विक्रम संवत् १२८६ मां लखाएली होवा छतां तेनी स्थिति हजु जेवी ने तेवी निराबाध छे. प्रति घणी ज अशुद्ध छे, एटलुं ज नहि पण एमां घणे ठेकाणे पंक्तिओनी पंक्तिओ जेटला पाठो पडी गया छे, तेमज लेखकनी लिपिविषयक अज्ञानताने लीधे स्थान–स्थान पर अक्षरोनी फेरबदली तथा अस्तव्यस्तता पण बहुज थएलां छे. प्रतिना अंतमां तेना लखावनार पुण्यवान् आचार्य अने श्रावकनी एकवीस श्लोक जेटली लांबी प्रशस्ति लखेली होवा छतां कोई भाग्यवाने ए प्रशस्तिने सदंतर भूसी नाखवानुं पुण्यकार्य उपार्जन कर्युं छे !!! ते छतां ए घसी–भूसी नाखेली प्रशस्तिने अति प्रयत्नने अंते अमे जे रीते अने जेटली वांची शक्या छीए तेटलो उतारो आ नीचे आपीए छीए—

इति प्रव्रज्यार्थचिन्तायां श्रीप्रभप्रभाचन्द्रचरितमुक्तम् । तदुक्तौ च सम्यक्त्वादिपञ्चाशदर्थाधिकारसम्बद्धः कथारत्नकोशोऽपि समाप्तः ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ मङ्गलं महाश्रीः ॥ शुभं भवतु ॥ शिवमस्तु सर्वजगतः परहितनिरता भवन्तु भूतगणाः । दोषाः प्रयान्तु नाशं सर्वत्र सुखी भवतु लोकः ॥ १ ॥ छ ॥ ६०३ ॥ छ ॥ संवत् १२८६ वर्षे श्रावण शुदि ३ बुधेऽद्येह प्रह्लादनपुरे कथारत्नकोशपुस्तकमलेखीति भद्रमिति ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ छ ॥

॥ श्रीमद्वीरदृशः पान्तु सुधावृष्टेः सहोदराः । स्वर्भूर्भुगर्भशस्यानां फलसम्पत्तिहेतुकम् ॥ १ ॥
श्रीमत्प्राग्वाटवंशो जगति विजयते..................................जगुरुगणनाप्रौढमेधाभिरामः ।
उच्चैः शाखासहस्रैः परिकलितवपुः पात्रपूरान्वितोऽसौ, चित्रं छिद्रं न यस्मिन्नघजडकलितो नैव युक्तो न हीनः ॥ २ ॥
तस्मिन् क्ष्माभृति...ययनोदया...नमलक्षणाभिदुरि ....सा.........स ॥ ३ ॥
......................क्तो, मोढेरके वीरजिनस्य भक्तः। अगण्यपुण्योपचितोऽत्र शस्यो, देदाख्यसाधुः स्वजनैकमान्यः ॥ ४ ॥
तस्यात्मजो देल्हणनामधेय, औदार्यधैर्यादिगुणैरमेयः । कलत्रमेतस्य बभूव धन्या, दानैक......रिरेव...... ॥ ५ ॥
.........प्रभूता.................................. । ....तदानशीलोछीते मिमीतेत्फलयेतनूजे ॥ ६ ॥
आद्याऽऽदिमस्याजनि देल्हुकाख्या, कान्ताऽभवद्धाइणिका द्वितीया। पुत्रोऽपरस्याः किल राजदेवो, ज्येष्ठः कनिष्ठोऽजनि कामदेवः ॥७
राजदेवस्य तो.. । .... ॥ ८ ॥
ना...कामा विदिता प्रशान्ता, पतिव्रता थेहडसाधुकान्ता । विख्यातवंशा पतिभक्तिरक्ता, दोषैर्विमुक्ता कुलधर्मयुक्ता ॥ ९ ॥
...शुभं सुम......समा....................................... । तस्य प्रणाम......तकामरामदेव इति निर्मितन ॥ १० ॥
.... । ....वुवर्तिकाः ॥ ११ ॥

प्रथमा विजयिणिनाम, द्वितीया भोलिकाभिधा । शम्भूदेवो विनीतोऽस्ति, भोलीपुत्रः........................ ॥ १२ ॥
पत्नी कल्हू रामदेवस्यं दक्षा प्रत्यक्षेयं दृश्यते शुद्धपक्षा। भर्तुर्भक्ता शुद्धशीला विनीता, जाता चेयं रामचन्द्रस्य सीता ॥१३॥
मालवमंडलमध्ये..............................भूपाल... । ....णोपार्जितसंतत पाण्डित्यं रामदेवो यम् ॥ १४ ॥
जिनेन्द्रदेवाल[य]पौषधे च, वापीसरःकूपनिपानकानि। नवीन–जीर्णोद्धरणेषु नित्यं सदोद्यतः पण्डितरामदेवः ॥ १५ ॥
षड्दर्शने पूजनबद्धकक्षः, दाने च दीनोद्धरणे च दक्षः । सन्न्यायमार्गे कृतशुद्धपक्षः................................ ॥ १६ ॥
..........................श्री.........हैंकुलगोत्र...... । प्रसादमासाद्य वटद्रुरीत्या आचन्द्रसूर्यं शतशाखमेतु ॥ १७ ॥
त...।...सुरयो मान्याः, श्रीश्रीपरमेश्वराः । तत्पादाम्बुजरवयः, श्रीजगच्चन्द्रसूरयः (?) ॥ १८ ॥
वादि...................................... । श्रीरवितिलका................................ ॥ १९ ॥
श्रीसोमतिलकसूरिर्भूरिगुणश्चरितचारुचारित्रः । तच्छिष्यः सोमयशास्तस्मादुपदेशमासाद्य ॥ २० ॥
विद्यादानं दानतो मुख्यमेतज्ज्ञात्वा सम्यक् श्रीकथारत्नकोशः । पित्रोः.........पुण्यहेतोर्जैनं शास्त्रं.................. ॥ २१ ॥
.... ॥ २२ ॥
हिमकारगज.........दंतैश्च शैलेन्द्रस्य महे ..... गिरिगणेशज्योत्स्ना......या । यावद्गांग जलौकसो...... ॥ २३ ॥
॥ छ ॥.. ॥ छ ॥

प्रस्तुत प्रतिनां पानां वचमां कोई कोई ठेकाणे घसाई गएलां छे ए बाद करीए तो आ प्रति साद्यंत परिपूर्ण छे. प्रति खंभातना ज्ञानभंडारनी होई तेनी संज्ञा अमे खं० राखी छे. परंतु ज्यां प्र० प्रति खंडित होई फक्त आ एक ज प्रतिना आधारे संशोधन कर्युं

विधिप्रपा पृ० १०९ उपर प्रतिष्ठा प्रसंगने लगती केटलीक मुद्राओना वर्णन अंगेनी पांच गाथाओ आपेली छे ते अने त्यार पछी पृ० १११ उपर प्रतिष्ठा संबंधे जे ३९ गाथाओ छे ते बधी अक्षरशः प्रस्तुत कथारत्नकोशमां पृ० ८६ गाथा १७ थी ५५ सुधी-मां उपलब्ध छे. तथा पृ० ११४ उपर 'ध्वजारोपणविधि'ना नाम नीचे जे ४० थी ५० गाथाओ नोंधेली छे ते पण कथा-रत्नकोशमां आवता विजयकथानकमां पृ० ७१ उपर आपेली ११४ थी १२४ गाथाओ छे. विधिप्रपाकारे त्यां कथारत्नकोश-ना नामनो उल्लेख पण कर्यो छे.

आ प्रमाणे अहीं कथारत्नकोशनुं अनुकरण अने अवतरण करनार सुविहित पुरुषोना बे त्रण ग्रंथोनी तुलना करी छे, परंतु बीजा आचार्योनी कृतिमां पण कथारत्नकोशनां अनुकरणो अने अवतरणो जरूर हशे; परंतु अहीं तो आटलेथी ज विरमुं छुं. आ अनुकरणो अने अवतरणोए पण प्रस्तुत कथारत्नकोश ग्रंथना संशोधनमां वधारानी सहाय करी छे एटले ए दृष्टिए पण ते ते अनुकरण करनारा अने अवतरण करनारा आचार्यो विशेष स्मरणार्ह छे.

७ कथारत्नकोशना संशोधन माटेनी प्रतिओ

आजे कथारत्नकोशनी एकंदर त्रण प्रतिओ विद्यमान छे एम जाणी शकायुं छे. जे पैकीनी एक प्रति खंभातना ताडपत्रीय भंडारमां छे, एक प्रवर्त्तकजी महाराज श्रीकांतिविजयजी महाराजना वडोदराना विशाळ ज्ञानभंडारमां छे अने एक चूरु (मारवाड)-ना तेरापंथीय ज्ञानभंडारमां छे. आ रीते आजे जोवा–जाणवामां आवेली त्रण प्रतो पैकी मात्र खंभातना भंडारनी प्रति ज साद्यंत परिपूर्ण छे. ते सिवाय पूज्य प्रवर्तकजी महाराजश्रीना भंडारनी प्रति एककाळे साद्यंत परिपूर्ण होवा छतां अत्यारे एमांथी आदि–

उपरथी लखाएलां होय तेम लागे छे. प्रतिना पानानी दरेक पुठीमां पांच के छ लीटीओ लखेली छे. दरेक लीटीमां ११५ थी १३० अक्षरो छे. प्रतिनी लंबाई–पहोळाई ३०×२। इंचनी छे. आ प्रति पण उपर जणाव्या मुजब दोरो परोववा माटे वचमां बे काणां पाडी त्रण विभागमां लखवामां आवी छे. प्रतिनी लिपि अने स्थिति जोतां ए खं० प्रति करतां वधारे प्राचीन छे अने एनी स्थिति जराजीर्ण थई गई छे. प्रस्तुत प्रति अत्यारे प्रवर्त्तकजी महाराजश्रीना ज्ञानभंडारमां होई एनी संज्ञा अमे प्र० राखी छे अने ज्यां प्रतिमांना सुधारेला पाठभेदोने अमे पाठांतरमां आप्या छे त्यां **प्रसं०** एम जणाव्युं छे.

प्रतिओनी विशेषता अने शुद्ध्यशुद्ध्यादि

उपर जे बे प्रतिओनो परिचय आपवामां आव्यो छे ते पैकी प्र० प्रति भ्रान्तिरहित शुद्ध लिपिमां लखाएली छे. एमां लेखकना लिपिविषयक अज्ञानजनित अशुद्धिओ बहु ज ओछी छे तेमज ए प्रतिने कोई विद्वाने सुधारेली पण छे; एटले तेना विषे फक्त एटलुं ज कहेवानुं रहे छे के प्रतिना शोधके कथासमाप्तिनी पुष्पिकामां केटलेक ठेकाणे **"इति श्रीदेवभद्रसूरिविरचिते"** ए प्रमाणे ग्रंथकारना नामनो निर्देश करती जे पंक्ति उमेरेली छे ए अमे स्वीकारी नथी. आ सिवाय आ प्रति विषे खास कशुं ज कहेवानुं नथी.

परंतु खं० प्रतिमां लेखकना प्रमाद अने लिपिविषयक अज्ञानपणाने लईने **इं ई, ए प, गु तु, च व, ड्ड ड्ड, ठ व, ड द, ड र, ण ल, त्थ च्छ, न्त त्त, न्ति त्ति, न्नु त्तु, नु तु, प व, प य, व न, म स, ल भ, श ष स** इत्यादि अक्षरोनो परस्पर विपर्यास थवाने लीधे घणी ज अशुद्धिओ वधी जवा पामी छे. तेम ज प्रतिना लेखके घणे ठेकाणे पडिमात्रा अने ह्रस्व इकारनी वेलंटि–ि–मां कशो भेद राख्यो नथी. घणे ठेकाणे एकवडाने बदले बेवडा अने बेवडाने बदले एकवडा अक्षरो लखी नाख्या छे. आ जातना अशुद्ध पाठोने अमे लिपिभ्रान्तिना नियमो, शास्त्रनो विषय, ग्रंथकारनी भाषा, छंदनुं औचित्य आदि वस्तुने लक्षमां राखी सुधारवा प्रयत्न कर्यो छे. अने आ रीते सुधारेला पाठोने, वाचकगणने वांचवामां गरबड के भ्रान्ति न थाय ए माटे कोष्ठकमां न आपतां मूळमां ज अमे आप्या छे अने अशुद्ध पाठोने यथायोग्य नीचे टिप्पणमां आप्या छे. परंतु ज्यां ज्यां बीजी प्रति सहायक थती रही छे त्यां अमे एवा अशुद्ध पाठोने जता ज कर्या छे. प्रस्तुत संपादनमां घणे ठेकाणे **कुन्त, होन्ति, कुण्डल** इत्यादि जेवा परसवर्णयुक्त पाठो नजरे पडशे ए अमे नथी कर्या, पण प्रतिमां ज ए जातना परसवर्णवाळा पाठो छे. तेमज **उच्चिय (सं उचित)**ने बदले **उच्चिय, सक्खं सक्खा (सं० साक्षात्)** ने बदले **संखं संखा** जेवा विविध प्रयोगो देखाशे अने दीर्घ तथा अनुस्वारथी पर बेवडाएला अक्षरवाळा **वंच्छा, कंक्खा, अहाक्खाय** जेवा पाठो पण जोवामां आवशे ए बधा पाठो आखा ग्रंथमां ठेक–ठेकाणे उपलब्ध थता होई ए बधाने सुधारवा अनुचित समजी जेम ने तेम कायम राखवामां आव्या छे.

प्रस्तुत मुद्रणमां ज्यां ज्यां प्रतिमां पाठो के अक्षरो पडी गएला लाग्या छे त्यां त्यां अर्थानुसंधान माटे जे नवी पाठपूर्ति करवामां आवी छे ए दरेक पाठोने [ ] आवा चोरस कोष्ठकमां आप्या छे.

प्रस्तुत प्रकाशनमां पत्र १०१ना बीजा पृष्ठमां पहेला श्लोकना उत्तरार्धमां भ्रान्तिथी **'जनितसम्मदि'** पाठ छपायो छे तेने सुधारीने **'जनितसम्मुदि'** ए प्रमाणे वांचवो.

अंतमां प्रस्तुत ग्रंथना संशोधनमां अने तेनी विषमपदार्थद्योतक टिप्पणी करवामां अति सावधानता राखवा छतां मतिभ्रमथी थएली स्खलनाओ जणाय तेने सुधारीने वांचवा विद्वानोने अभ्यर्थना छे. इति शम् ।

पूज्यपाद प्रवर्त्तकजी महाराज श्री१००८श्रीकान्तिविजयजीप्रशिष्य—
पूज्य श्रीचतुरविजयजीमहाराज शिष्य **मुनिपुण्यविजय.**

छे त्यां आ प्रतिना अशुद्ध पाठोने टिप्पणमां आपतां आ प्रतिने अमे **प्रतौ** ए संकेतथी ओळखावी छे. एटले के आथी अमे एम जणाववा इच्छीए छीए के ज्यां अमे पाठभेद साथे **प्रतौ** एम नोंध्युं होय त्यां एम समजवुं के ए ठेकाणे प्र० प्रति खंडित होई ते ते विभागने मात्र **खं०** प्रतिना आधारे ज सम्पादित करवामां आव्यो छे.

प्र० प्रति—आ प्रति पूज्यपाद वयोवृद्ध शांतमूर्त्ति परमगुरुदेव प्रवर्त्तकजी महाराज श्री१००८श्री **कांतिविजयजी**महाराजना वडोदराना जैन ज्ञानभंडारनी छे. ए प्रति पाटण श्रीसंघना ज्ञानभंडारनां अस्तव्यस्त ताडपत्रीय पानांमांथी मेळवेली होई खरी रीते ए पाटण श्रीसंघना ज्ञानभंडारनी ज प्रति कही शकाय. आ प्रति सुंदरतम श्रीताडपत्र उपर अतिमनोहर एकधारी लिपिथी लखाएली छे. प्रतिना अंतनो भाग अधूरो होई तेनां एकंदर केटलां पानां हशे ए कही शकाय तेम नथी. ते छतां अत्यारे जे पानां विद्यमान छे ते १३९ थी २९५ सुधी छे. तेमां पण वचमांथी १६७, १६८, २०१ थी २२७, २४६ अने २५९ आ प्रमाणे बधां मळी एकंदर एकत्रीस पानां गूम थयां छे. एटले आ प्रतिनां विद्यमान पानां मात्र १२६ होई सामान्य रीते एम कही शकाय के आ प्रतिनां बे भागनां पानां गूम थयां छे ज्यारे मात्र त्रीजा भाग जेटलां ज पानां विद्यमान छे. आम छतां आ खंडित प्रति शुद्धप्राय होई एणे प्रस्तुत ग्रंथना संशोधनमां खूब ज मदद करी छे. अनेक ठेकाणे पंक्तिओनी पंक्ति जेटला पाठो, जे **खं०** प्रतिमां पडी गएला हता ते पण आ खंडित प्रतिद्वारा पूरी शकाया छे. प्रस्तुत प्रतिने कोई विद्वाने वांचीने सांगोपांग सुधारवा प्रयत्न कर्यो छे अने कोई कोई ठेकाणे कठिन शब्द उपर टिप्पण पण करेल छे. प्रस्तुत प्रति ताडपत्रीय लखाणना जमानामां ज गमे ते कारणसर खंडित थएल होई तेमां घणे ठेकाणे पानां नवां लखावीने उमेरवामां आव्यां छे, जे **खं०** प्रतिने मळती कोई प्रति

विषयः	पत्रम्
❀ शङ्कायाः स्वरूपम्	१४
राजकुलपरिचये लाभः	१५
हेमन्तवर्णनम्	१५
शङ्कात्यागोपदेशः	१७
३ काङ्क्षातिचारप्रक्रमे नागदत्तकथानकम्	**१७–२०**
❀ काङ्क्षायाः स्वरूपम्	१७
उपवनवर्णनम्	१८
काङ्क्षात्यागोपदेशः	२०
४ विचिकित्सातिचारप्रक्रमे गङ्ग-वसुमत्योः कथानकम्	**२०–२४**
❀ विचिकित्सायाः स्वरूपम्	२०
सत्पुरुषपन्थाः	२१
नागवर्णनम्	२२

विषयः	पत्रम्
विचिकित्सात्यागोपदेशः	२४
५ मूढदृष्टित्वातिचारप्रक्रमे शङ्खकथानकम्	**२४–२९**
❀ मूढदृष्टित्वस्य स्वरूपम्	२४
प्रावृड्वर्णनम्	२५
आत्महत्यायां दोषोपदर्शनम्	२७
❀ मूढदृष्टित्वं तद्विपाकश्च	२८
मूढदृष्टित्वत्यागोपदेशः	२९
६ उपबृंहातिचारप्रक्रमे रुद्राचार्यकथानकम्	**२९–३३**
❀ उपबृंहायाः स्वरूपम्	२९
❀ जीवादीनि सप्त तत्त्वानि तत्संख्याविषयकं वादस्थलं च	३०
❀ सङ्घादेशपत्रम्	३१
❀ छिकाविचारः	३२

विषयः	पत्रम्
गुणोपबृंहोपदेशः	३३
७ स्थिरीकरणातिचारप्रक्रमे भवदेवराजर्षि-कथानकम्	**३३–४०**
❀ स्थिरीकरणस्य स्वरूपम्	३३
देशदर्शनम्	३४
❀ राजलक्षणानि	३४
युद्धवर्णनम्	३६
पुरुषप्रकाराः	३९
स्थिरीकरणोपदेशः	४०
८ वात्सल्यगुणे धनसाधुकथानकम्	**४०–४७**
❀ वात्सल्यस्य स्वरूपम्	४०
❀ धर्मात्मनां भोजनसमये विचारणा	४१

विषयः	पत्रम्
❀ रत्नलक्षणानि	४४
वात्सल्यविधानोपदेशः	४६
९ प्रभावनाचारे अचलकथानकम्	**४७–५५**
❀ प्रभावनायाः स्वरूपम्	४७
❀ मृत्युज्ञानचिह्नानि	४८
श्मशानवर्णनम्	४९
❀ सामुद्रिकम्	५०
तपस्विमुनेरात्मकथा	**५२**
राजधर्मनिष्ठस्यैव राज्ञः प्रजाकृतधर्मषष्ठभागस्य प्राप्तिः	५३
❀ अष्टप्रातिहार्यस्वरूपम्	५४
प्रभावनोपदेशः सम्यक्त्वमाहात्म्यं च	५५

अवशेषाश्चतुर्विंशतिः सामान्यगुणाः

विषयः	पत्रम्
१० पञ्चनमस्कारे श्रीदेवनृपकथानकम्	५५–६७
❀ पञ्चनमस्कारस्य स्वरूपं तन्माहात्म्यं च	५५
युद्धवर्णनम्	५६
द्वन्द्वयुद्धम्	५७
❀ अष्टाष्टौ अकर्त्तव्य-कर्त्तव्य-मोक्तव्य-धर्त्तव्य-अविश्वस्यानि	५८
हीनबलस्य राज्ञो राजनीतिः	५८
राजलक्ष्म्याः चपलत्वम्	६१
❀ पञ्चनमस्काराराधनविधिः—उपधानविधिः	६२
नमस्कारमाहात्म्ये हेमप्रभदेवसम्बन्धः	६३
पञ्चनमस्कारस्मरणस्य फलम्	६६
११ चैत्याधिकारे विजयकथानकम्	६७–७८

विषयः	पत्रम्
❀ चैत्यविधापनाधिकारी तद्विधिश्च	६७
❀ सूत्रधारस्य प्रतिपत्तिः	७१
❀ ध्वजारोपणविधिः	७२
स्वयम्भूदत्तकथानकम्	७३
❀ मुनियोग्यानि जिनचैत्यविषयाणि नव त्रिकाणि	७६
❀ वेदापौरुषेयत्ववादः	७६
जिनचैत्यविधापनस्य गुणाः तद्विधापनोपदेशश्च	७७
१२ जिनबिम्बप्रतिष्ठाप्रक्रमे महाराजपद्मकथानकम्	७८–९०
❀ जिनबिम्बविधापनं तद्विधिश्च	७८
❀ प्रतिष्ठायाः त्रैविध्यम्	७८
❀ धर्मतत्त्वपरामर्शः	७९

कथारत्नकोशस्थानां कथानकादीनामनुक्रमणिका।

धर्माधिकारिसामान्यगुणवर्णनाधिकारः

विषयः	पत्रम्
सम्यक्त्वपटलम्	१–५९
१ सम्यक्त्वाधिकारे नरवर्मनृपकथानकम्	१–१४
मङ्गलं ग्रन्थनाम अभिधेयं च	१–२
❀ धर्माधिकारिणां सामान्यगुणा विशेषगुणाश्च	२
सामान्यगुणानां माहात्म्यम्	२
❀ सम्यक्त्वम्	२
❀ राजसंसदि धर्मसंवादः	३
नरवर्मनृपपुत्रहरिदत्तस्य मदनदत्तवणिजश्च पूर्वभवकथानकम्	६

विषयः	पत्रम्
❀ एकावलीहारस्य उत्पत्तिः	७
❀ सम्यक्त्वस्य स्वरूपम्	९
❀ देवतत्त्वं गुरुतत्त्वं च	९
❀ गुरुतत्त्वव्यवस्थापनविषयकं वादस्थलम्	१०
❀ धर्मतत्त्वम्	११
दुर्विदग्धस्य आसधरश्राद्धस्य पूर्वभवकथानकम्	१२
सुवेगदेवेन नरवर्मनृपस्य सम्यक्त्वदार्ढ्यस्य परीक्षणम् नृपं प्रति निर्जरस्याशीर्वचश्च	१३
२ शङ्कातिचारदोषे धनदेवकथानकम्	१४–१७

	विषयः	पत्रम्
१५	**शास्त्रश्रवणाधिकारे श्रीगुप्तकथानकम्**	**१०९–१८**
❀	जिनागमस्य श्रवणम्	१०९
	शुकस्य कथानकम्	**११६**
	शास्त्रश्रवणस्य फलं तदुपदेशश्च	११८
१६	**ज्ञानदानावसरे धनदत्तकथानकम्**	**११८–२६**
❀	ज्ञानदानस्य स्वरूपम्	११८
	ज्ञानान्तरायकर्मनिवारणोपायः	१२४
	ज्ञानदानस्य फलं तदुपदेशश्च	१२५
१७	**अभयप्रदानप्रस्तावे जयराजर्षिकथानकम्**	**१२६–३३**
❀	अभयदानस्य स्वरूपम्	१२६
	जीवितव्यप्रियत्वविषये चौराहरणम्	**१२९**
१८	**यत्युपष्टम्भदानाधिकारे सुजयराजर्षिकथानकम्**	**१३३–४२**

	विषयः	पत्रम्
❀	उपष्टम्भदानस्य स्वरूपम्	१३३
	प्रवहणम्	१३४
	अनन्तवीर्यमुनेः सिंहनादस्य च सम्बन्धः	**१३६**
	उपष्टम्भदानस्य माहात्म्यम्	१४१
१९	**कुग्रहत्यागे विमलोपाख्यानकम्**	**१४२–५०**
❀	कुग्रहस्य स्वरूपम्	१४२
❀	जिनप्रतिमापूजादिविषयकं चार्चिकम्	१४४
	हरेः कथानकम्	**१४४**
❀	सामान्यधर्मोपदेशः	१४६
❀	सूत्रोक्तचैत्यवन्दना-द्रव्यपूजादिविषयकं चार्चिकम्	१४६
	कुग्रहत्यागोपदेशः	१५०
२०	**माध्यस्थगुणचिन्तायां पुरोहितसुतनारायणकथानकम्**	**१५०–५७**

	विषयः	पत्रम्
❀	माध्यस्थगुणस्य स्वरूपम्	१५०
	रक्तत्वे शिवस्य कथानकम्	**१५१**
	द्विष्टत्वे शशिन आहरणम्	**१५२**
	मूढत्वे शङ्खस्याहरणम्	**१५३**
	अरक्त-द्विष्ट-मूढानां तत्त्वज्ञानाप्तिः	१५३
❀	हस्तितापसमतस्य निरसनम्	१५४
❀	शौचवादमतस्य प्रतिक्षेपणम्	१५५
❀	अनन्तकायादीनां सदोषत्वम्	१५५
	माध्यस्थगुणस्य माहात्म्यम्	१५७
२१	**सामर्थ्यगुणचिन्तायां अमरदत्तकथानकम्**	**१५७–६३**
❀	सामर्थ्यगुणस्य स्वरूपम्	१५७
	वसन्तस्य वसन्तक्रीडायाश्च वर्णनम्	१५८
	देवलकथानकम्	**१५९**

	विषयः	पत्रम्
❀	शुश्रूषाया माहात्म्यम्	१६०
❀	धर्मोपास्तेः मुख्यत्वम्	१६२
	सामर्थ्यगुणस्य माहात्म्यम्	१६३
२२	**धर्मार्थिव्यतिरेकचिन्तायां सुन्दरकथानकम्**	**१६३–६९**
❀	अर्थित्वगुणस्य स्वरूपम्	१६३
	प्रावृड्वर्णनम्	१६४
	संवरश्रेष्ठिपूर्वभवकथानकम्	**१६५**
❀	अतिथिसत्कारः	१६६
	रात्रिवर्णनम्	१६६
❀	अनर्थिनः स्वरूपम्	१६९
२३	**आलोचकपुरुषव्यतिरेके धर्मदेवकथानकम्**	**१६९–७५**
❀	आलोचकस्य स्वरूपम्	१६९
	अनालोचितकारित्वे दोषोपदर्शनम्	१७५

विषयः	पत्रम्
२४ **उपायचिन्तायां विजयदेवकथानकम्**	**१७६–८३**
❀ उपायचिन्तायाः स्वरूपम्	१७६
उपायदर्शित्वस्य फलम्	१८३
२५ **उपशान्तप्रक्रमे सुदत्तकथानकम्**	**१८३–९१**
❀ उपशान्तगुणस्य स्वरूपं कषायाणां दोषाश्च	१८३
❀ जिनस्तवनम्	१८५
कषायविपाके रोरस्य तत्पुत्राणां च पूर्वभव-वृत्तगर्भितं कथानकम्	**१८६**
❀ कषायाणां विपाकः	१८८
❀ कषायविजयभावना	१८९–९०
उपशान्ता-ऽनुपशान्तयोः फलम्	१९१
२६ **दक्षत्वगुणचिन्तायां सुरशेखरराजपुत्रकथा-नकम्**	**१९१–९६**

विषयः	पत्रम्
❀ दक्षत्वगुणस्य स्वरूपम्	१९१
दक्षत्वगुणस्य माहात्म्यम्	१९६
२७ **दाक्षिण्यगुणचिन्तायां भवदेवकथानकम्**	**१९६–२०१**
❀ दाक्षिण्यगुणस्य स्वरूपम्	१९६
परोपकारी	१९९
दाक्षिण्यगुणस्य माहात्म्यम्	२०१
२८ **धैर्यगुणचिन्तायां महेन्द्रनृपकथानकम्**	**२०१–७**
❀ धीरत्वस्य स्वरूपम्	२०१
धैर्यगुणस्य माहात्म्यम्	२०७
२९ **गाम्भीर्यगुणचिन्तायां विजयाचार्यकथानकम्**	**२०७–१२**
❀ गाम्भीर्यगुणस्य स्वरूपम्	२०७
गाम्भीर्यस्य माहात्म्यं तद्भावा-ऽभावयोः गुण-दोषौ च	२११

विषयः	पत्रम्
❀ रत्नत्रयी	७९
❀ देवतत्त्वविचारः	८१
❀ जिनबिम्बप्रतिष्ठाविधिः	८६
❀ साधूनां प्रतिष्ठाविधिविधापनस्यादुष्टत्वम्	८८
❀ कर्मणां बलिकत्वम्	८९
❀ मत्स्य-पद्मानां वलयाकारवर्जं सर्वेऽप्याकाराः	८९
❀ जिनप्रतिमाकारं महापद्मं दृष्ट्वा पद्मनृपजीवमक-रस्य जातिस्मरणम्	९०
जिनबिम्बविधापन-प्रतिष्ठापनयोः माहात्म्यम्	९०
१३ **जिनपूजाधिकारे प्रभङ्करकथानकम्**	**९१–१०२**
❀ जिनपूजायाः स्वरूपम्	९१
❀ सम्यक्त्वप्राप्तेः स्वरूपम्	९३
❀ मनुष्यजन्मादिधर्मसामग्र्याः सफलीकरणोपदेशः	९३

विषयः	पत्रम्
निष्पुण्यानां मन्त्राद्यसिद्धिः तद्विषये सोमस्य कथानकं च	**९५**
❀ जिनपूजायाः विधिः	९८
❀ अष्टप्रकारी पूजा	९८
❀ अधिकार्यपेक्षया विविधैर्द्रव्यैर्जिनपूजनस्या-दूषितत्वम्	१००
जिनार्चनस्य फलम्	१०२
१४ **देवद्रव्यचिन्ताधिकारे भ्रातृद्वयकथानकम्**	**१०२–९**
❀ देवद्रव्यस्य स्वरूपं तद्वृद्धिश्च	१०२
साधारणद्रव्यम्	१०२
करुणविलापः	१०४
❀ देवद्रव्यभक्षणविपाकः	१०६
देवद्रव्यरक्षणोपदेशः	१०९

	विषयः	पत्रम्
	बन्धातिचारे मिहिरकथानकम्	२४३
	वधातिचारे वरुणकथानकम्	२४४
	छविच्छेदे लीलावतीकथानकम्	२४४
	अतिभारारोपणे मधुकथानकम्	२४५
	भोज्यव्यवच्छेदे धरकथानकम्	२४५
❀	व्रतस्य विशुद्धिः, अतिचार-भङ्गौ यतना च	२४६
	प्राणवधविरतेः माहात्म्यम्	२४७
३५	द्वितीयाणुव्रतस्थूलमृषावादविरतिगुणचिन्तायां सागरकथानकम्	२४७–५४
❀	सत्यवचनस्य स्वरूपम्	२४७
	माण्डव्यर्षेश्चरितम्	२४९
❀	स्थूलमृषावादविरतेः स्वरूपं तदतिचाराः तद्भङ्गातिचारयोः स्वरूपं च	२५०

	विषयः	पत्रम्
	मृषावादातिचारविषये सुरथज्ञातम्	२५०
❀	विरतिग्रहणे दोषापादनविषयकं चार्चिकम्	२५२
	असत्यवाग्विपाकदर्शनद्वारा तत्त्यागोपदेशः	२५४
३६	तृतीयाणुव्रतस्थूलादत्तादानविरतिगुणचिन्तायां फरुसरामकथानकम्	२५४–६१
❀	अदत्तविरतेः स्वरूपम्	२५४
	धर्मयशोमुनेश्चरितम्	२५६
❀	अदत्तविरतेः स्वरूपं तदतिचाराश्च	२५६
	अदत्तादानस्य दोषाः तद्विरतेर्गुणाश्च	२६१
३७	चतुर्थाणुव्रतस्थूलमैथुनविरतिगुणचिन्तायां सुरप्रियकथानकम्	२६१–६९
❀	मैथुनविरतेः स्वरूपम्	२६१
❀	चतुर्थाणुव्रतस्य स्वरूपं तदतिचाराश्च	२६५

	विषयः	पत्रम्
❀	स्वदारसन्तोषिणः परदारवर्जिनश्चाश्रित्यातिचारविभागः	२६५
❀	पुण्यस्य पापस्य च द्वैविध्यम्	२६७
	पारदार्यदोषावेदनद्वारा तत्परिहारोपदेशः	२६८
३८	पञ्चमाणुव्रतस्थूलपरिग्रहविरतिगुणचिन्तायां धरणकथानकम्	२६९–७६
❀	स्थूलपरिग्रहविरतेः स्वरूपम् तदतिचाराश्च	२६९–२७४
	परिग्रहपरिमाणविरतेः फलम्	२७६
	त्रीणि गुणव्रतानि	२७७–९९
३९	प्रथमदिग्विरतिगुणव्रतचिन्तायां शिवभूतिस्कन्दयोराख्यानकम्	२७७–८४
❀	दिग्विरतिगुणव्रतस्य स्वरूपम्	२७७
	मित्रम्	२७८

	विषयः	पत्रम्
	खल-सज्जनयोः स्नेहः	२७८
❀	प्रश्न-प्रहेलिकादिका गोष्ठी	२७९
	देवपालराजकुमारपूर्वभवकथानकम्	२८०
❀	अकालदन्तोद्गमकल्पः	२८१
	दुर्बलचरणस्य पूर्वभवकथानकम्	२८२
❀	दिग्विरतेः स्वरूपं तदतिचाराश्च	२८३
	दिग्विरतेरुपदेशः	२८४
४०	द्वितीयभोगोपभोगविरतिगुणव्रतचिन्तायां सकुटुम्बमेहश्रेष्ठिकथानकम्	२८५–९१
❀	भोगोपभोगगुणव्रतस्य स्वरूपम्	२८५
	मखसूदनमुनेरात्मकथा	२८६
❀	भोगोपभोगव्रतस्य स्वरूपं तदतिचाराश्च	२८६
❀	पञ्चदश कर्मादानानि	२८७

विषयः	पत्रम्
भोगोपभोगविरतेरुपदेशः	२९१
४१ तृतीयअनर्थदण्डविरतिगुणव्रतचिन्तायां चित्रगुप्तकथानकम्	**२९१–९९**
❀ अनर्थदण्डविरतिगुणव्रतस्य स्वरूपम्	२९१
❀ दानविधानम्	२९३
❀ अनर्थदण्डविरतेः स्वरूपं तदतिचाराश्च	२९६
अनर्थदण्डदोषोपदर्शनद्वारा तत्परिहारोपदेशः	२९८
चत्वारि शिक्षाव्रतानि	**२९९–३२६**
४२ प्रथमसामायिकशिक्षाव्रतप्रक्रमे मेघरथकथानकम्	**२९९–३०६**
❀ सामायिकस्य स्वरूपम्	२९९
❀ सामायिकव्रतस्य स्वरूपं तदतिचाराश्च	३०४
सामायिकव्रतस्य माहात्म्यम्	३०५

विषयः	पत्रम्
४३ द्वितीयदेशावकाशिकशिक्षाव्रतविषये पवनञ्जयकथानकम्	**३०६–१३**
❀ देशावकाशिकस्य स्वरूपम्	३०६
❀ देशावकाशिकव्रतस्य स्वरूपं तदतिचाराश्च	३११
देशावकाशिकस्य स्वरूपम्	३१३
४४ तृतीयपौषधव्रतशिक्षाव्रतविचारणायां ब्रह्मदेवकथानकम्	**३१३–१८**
❀ पौषधस्य स्वरूपम्	३१३
❀ पौषधव्रतस्य स्वरूपं तदतिचाराश्च	३१४
क्षेमङ्करस्य कथानकम्	**३१५**
तस्करचतुष्ककथानकम्	**३१८**
पौषधव्रतस्य माहात्म्यम्	३१८

विषयः	पत्रम्
३० इन्द्रियपञ्चकविजय-तद्व्यतिरेकवर्णनायां सुजसश्रेष्ठि-तत्सुतकथानकम्	**२१२–१७**
३१ पैशुन्यगुण-दोषचिन्तायां धनपाल-बालचन्द्रकथानकम्	**२१७–२५**
❀ पैशुन्यस्य स्वरूपम्	२१७
रामदेवमुनेरात्मकथा	**२१८**
आदित्यब्राह्मणसम्बन्धः	**२२१**
पैशुन्यत्यागोपदेशः	२२४

विषयः	पत्रम्
३२ परोपकारद्वारचिन्तायां भरतनृपकथानकम्	**२२५–३२**
❀ परोपकारित्वस्य स्वरूपम्	२२५
पारासरस्य सम्बन्धः	**२३०**
परोपकारकरणोपदेशः	२३२
३३ विनयद्वारव्यावर्णनायां सुलसकथानकम्	**२३२–३९**
❀ विनयस्य स्वरूपम्	२३२
❀ मुनिदानस्य फलम्	२३७
विनयगुणस्य माहात्म्यम्	२३९

द्वितीयो धर्माधिकारिविशेषगुणवर्णनाधिकारः

श्रमणोपासकस्य द्वादश व्रतानि

विषयः	पत्रम्
पञ्च अणुव्रतानि	**२४०–७६**
३४ प्रथमाणुव्रतस्थूलप्राणातिपातविरतिगुणचिन्तायां यज्ञदेवकथानकम्	**२४०–४७**

विषयः	पत्रम्
❀ प्राणवधविरतेः स्वरूपम्	२४०
❀ स्थूलप्राणातिपातविरतेः स्वरूपं तदतिचाराश्च	२४३
❀ अतिचार-भङ्गयोः स्वरूपम्	२४३

विषय:	पत्रम्
❀ प्रत्याख्यानस्य स्वरूपम्	३४३
प्रत्याख्यानफले दामन्नककथानकम्	**३४५**
❀ प्रत्याख्यानस्य शुद्ध्यशुद्ध्यादि तन्माहात्म्यं च	३४९
५० प्रव्रज्यार्थचिन्तायां श्रीप्रभ-प्रभाचन्द्र-कथानकम्	**३४९–६०**
❀ प्रव्रज्यायाः स्वरूपं समर्था-ऽसमर्थप्रव्रज्ये च	३४९
सनत्कुमारनाटकप्रबन्धः	**३५०**
युद्धवर्णनम्	३५३
❀ प्रव्रजितं प्रति गुरोः अनुशिष्टिः	३५५
❀ प्रव्रज्याप्रतिपत्तिनिषेधविषयकं चार्चिकम्	३५६
❀ आत्मानुशासनम्	३५७
❀ संलेखनायाः स्वरूपम् अतिचाराश्च	३५८
❀ संस्तारकप्रव्रज्या	३५९
प्रशस्तिः	**३५९**
ग्रन्थोपसंहारः	३६०

प्रमाणप्रकाशः	१
अनन्तनाथस्तोत्रम्	७
स्तम्भनकपार्श्वनाथस्तोत्रम्	८
वीतरागस्तवः	९

कथारत्नकोशस्य शुद्धिपत्रम्

अशुद्धिः	शुद्धिः	पत्रम्	पङ्क्तिः	अशुद्धिः	शुद्धिः	पत्रम्	पङ्क्तिः
सत्ययासत्य	सत्यया–सत्य	२–१	१३	य इह	य गिहि	६७–१	६
वहुओ	वहूओ	३–१	१०	धणिणा	वणिणा	७०–१	३
संगं	संगो	१०–२	४	दघौघा	दघौघां	१०२–१	६
मीसिं	मेसिं	१०–२	११	एसो	एसो,	११२–१	८
तहाहभव	तहाभव	२९–१	१०	विश्वस्तः	विश्वस्तः ॥	११२–२	१४
कुंडं	कुडं	४१–१	१०	प्रतौ	प्रतौ ।	११५–१	१२
सुप्रत्न	सुप्रयत्न	४८–१	१३	वाव[रा]	वावा[रा]	१२२–१	२
सुषं, सा	सुषं सा,	५१–१	१	८ ॥	॥ ८	१२२–१	१४
शास्विनां	शाखिनां	६१–१	१३	निरनीकु	नीरनिकु	१३५–१	१०
मृगेन्द्र वृन्दं	मृगेन्द्रवृन्दं	६४–२	१२	चउरगुणो	चउइ गुणो	१३८–२	९

अशुद्धिः	शुद्धिः	पत्रम्	पङ्क्तिः
विह	विहं	१४१—२	८
सम्पादम	सम्पादन	१५०—२	१३
लोचना	लोचनौ	१५४—१	१३
°स्तत्त्र यत्नः य्र०	°स्तत्र प्रयत्नः खं०	१८३—१	१४
°यं संप°	°पयं संपव°	१८३—१	१४
विववज्जयं	विवज्जियं	१८४—२	६
अनिरं वारि	अनिवारि	१९२—१	१३
नयरम्मि	नयरम्मि,	१९३—१	५
त्करा:'—	त्करा:'	१९३—१	१४
मीयगं	मायंग	२०२—२	२
ख०	खं०	२०२—२	१४
औवयं	आवयं	२०७—१	३
वेतो	वैतो	२०७—१	१०
ऽयति	[तद्]ऽयति	२१७—१	१०
कृतंसवि	कृतसंवि	२२६—१	१३
पृथ्वीवलयम्	०	२७९—१	१४
कुवलयं—	कुवलयं— पृथ्वीवलयम्,	२७९—१	१४
पिवि	पिविं	२८८—२	१०

विषयः	पत्रम्
४५ चतुर्थअतिथिसंविभागशिक्षाव्रतविषये नरदेव-देवचन्द्रादिकथानकम्	३१९—२६
❁ अतिथिसंविभागस्य स्वरूपम्	३१९
❁ युगादिजिनस्तुतिः	३२२
नरदेवादीनां पूर्वभवकथानकम्	३२४
❁ अतिथिसंविभागव्रतस्य स्वरूपं तदतिचाराश्च	३२४
अतिथिसंविभागव्रतस्य माहात्म्यम्	३२६

विषयः	पत्रम्
४६ द्वादशावर्त्तवन्दनकफलवर्णनायां शिवचन्द्र-चन्द्रदेवकथानकम्	३२६—३१
❁ द्वादशावर्त्तवन्दनकस्य स्वरूपम्	३२६+२८
द्वादशावर्त्तवन्दनकगुणे कृष्णस्य कथानकम्	३२९
वन्दनकविधानोपदेशः	३३१
४७ प्रतिक्रमणगुणचिन्तायां सोमदेवकथानकम्	३३२—३६
❁ प्रतिक्रमणस्य स्वरूपम्	३३२
अश्वदृष्टान्तः	३३३
प्रतिक्रमणस्य माहात्म्यम्	३३६
४८ कायोत्सर्गविधानचिन्तायां शशिराज-कथानकम्	३३७—४३
❁ कायोत्सर्गस्य स्वरूपम्	३३७+३८
उदितोदयनरपतेः कथानकम्	३३९
कायोत्सर्गस्य माहात्म्यम्	३४३
४९ प्रत्याख्यानव्यतिरेकचिन्तायां भानुदत्त-कथानकम्	३४३—४९

॥ ॐ नमो जिनागमाय ॥

सम्मत्तपडलयं ।

मङ्गलम्

[1]पडिबिंबियपणयजणा निलीणभवभीरुभव्वलोय व्व । उम्मुहमऊहनिवहा सिवभवणारोहसेणि व्व ॥ १ ॥
भीमभवोयहिलंघणसज्जा सज्झाणवत्तपंति व्व । चरणनहमालिया सहइ जस्स सो जयइ पढमजिणो ॥ २ ॥
सु[2]मणोऽभिरामरूवो चारुपओ सुरहिवयणसयवत्तो । जयइ सिवनयरिपत्थियमंगलकलसो व्व वीरजिणो ॥ ३ ॥
स जयइ पुणो वि [3]दुज्जयकसायसरहोलिविहलिउच्छाहो । लंछणछलेण भीउ व्व केसरी जं समल्लीणो ॥ ४ ॥
भवचारयबंधं बंधुणो व्व [4]अवणिंतु वो ऽवसेसा [5]वि । जिणवइणो मोहमहंधयारहरणम्मि रविणो व्व ॥ ५ ॥
पासस्स फणामणिणो उम्मुहपसरंतकंतिणो दूरं । विहि[6]यावट्ठियदीवूसव व्व तिमिरं हरंतु ममं ॥ ६ ॥
जयइ वि[7]लसंतनिम्मलमऊहमंडलपसाहियसरीरा । पग्गहियपारिवेस व्व ससिकला भयवई वाणी ॥ ७ ॥

॥ १ ॥

१ प्रतिबिम्बितप्रणतजना निलीनभवभीरुभव्यलोकेव । उन्मुखमयूखनिवहा शिवभवनारोहश्रेणिरिव ॥ १ ॥ भीमभवोदधिलङ्घनसज्जा सद्ध्यानपात्रपङ्क्तिरिव । चरणनखमालिका राजते यस्य स जयति प्रथमजिनः ॥ २ ॥ २ अस्यामार्यायां श्लिष्टविशेषणैः वीरो भगवान् मङ्गलकलशेनोपमीयते, तथाहि—सुमनसां—विदुषां सुराणां चाभिरामं रूपं यस्य एवंविधो भगवान्, कलशपक्षे सुष्ठु मनोऽभिरामं रूपं यस्य। 'चारुपदः' शोभनचरणो भगवान्, अन्यत्र चारु पयो—दुग्धं जलं वा यत्र स चारुपयाः। सुरभि—सुगन्धयुक्तं वदनमेव शतपत्रं यस्यैतादृशो भगवान्, अन्यत्र सुरभि वदने—कलशमुखे शतपत्रं यस्य ॥ ३ दुर्जयकषायशरभावलिविफलितोत्साहः । शरभावलिः—अष्टापदपंक्तिः ॥ ४ अपनयन्तु ॥ ५ °**सेवा वि** इति प्रतौ पाठः ॥ ६ विहितावस्थितदीपोत्सवा इव ॥ ७ विलसन्निर्मलमयूख-

ग्रन्थनाम अभिधेयं च

स[1]सिरीया सच्चाहिट्ठिया य सच्चकनंदया सुगया । गुरुणो हरिणो व्व कुणंतु वंछियं निच्छियं मज्झ ॥ ८ ॥
इत्थं थोयवत्थु[2]इसामत्थेणं जडो वि जंपेमि । सम्मत्ताइपयत्थप्पडिबद्धं[3] कहारयणकोसं ॥ ९ ॥
एत्थ य जिणिं[4]दसमयम्मि सम्मया मुत्तिपहपवित्तीए । सुमुणी सुसावगो वि य जहु[5]त्तकिरियाकलावन्नू ॥ १० ॥
सुमुणित्तणं च पायं सुसावगत्तं विणा न संभवइ । फा[6]सियदेसचरित्तो हि सव्वविरइं पि काउमलं ॥ ११ ॥
सामन्न-विसेसगुणन्निओ य सु[7]सावगत्तणं लहइ । सो पुण सामन्नगुणी नेओ सम्माइदारेहिं ॥ १२ ॥

सामान्यगुणाः विशेषगुणाश्च

सम्मत्तजुओ १ तद्दोससंक २ कंखा ३ विगिंछय ४ म्मुक्को । अविमूढदिट्ठि ५ उववूहगो ६ थिरीकरणनिरओ ७ य ॥
वच्छल्ल ८ पभावणत्तं ९ पंचनमोक्कारपरमभत्तो १० य । चेइय ११ बिंबपइट्ठा १२ पूया १३ कारावणुज्जुत्तो ॥ १४ ॥
जिणदव्वरक्खगो १४ समयसुइपरो १५ नाण १६ अभयदाई १७ य । साहूवट्ठंभकरो १८ तह कुग्गहनिग्गहपहाणो १९ ॥
मज्झत्थो य २० समत्थो २१ अत्थी २२ आलोयगो २३ उवायण्णू २४ ।
उवसंतो २५ दक्खो २६ दक्खिणो य २७ धीरो य २८ गंभीरो २९ ॥ १६ ॥

मण्डलप्रसाधितशरीरा प्रगृहीतपरिवेषा इव । प्रसाधित—अलंकृत । परिवेषः—चन्द्रपरितोवर्त्ति वर्षागमनसूचकं जलकुण्डकम् ॥

१ अत्र श्लिष्टविशेषणैर्गुरवो हरिभिः—वासुदेवैः सहोपमीयन्ते । तथाहि—'सश्रीकाः' ज्ञानादिलक्ष्मीविभूषिताः गुरवः, अन्यत्र लक्ष्म्यभिधानपत्नीयुक्ताः । सत्येन अधिष्ठिता गुरवः, अन्यत्र सत्ययासत्यभामापत्न्या युक्ताः । सच्चकं—सतां समूहः तदाह्लादकाः गुरवः, अन्यत्र सत् च तत् चक्रं च—चक्राख्यमायुधं तन्नन्दकाः, पूर्वोक्तो वा अर्थः । सु—शोभनं गतं—गमनं ज्ञानं देवादिका वा गतिर्येषां ते एवंविधा गुरवः, अन्यत्र गदाख्यमायुधं येषां ते इति ॥ २ °**त्थुई**° प्रतौ ॥ ३ लुप्तविभक्त्यन्तं पदमिदम् ॥ ४ जिनागमे ॥ ५ यथोक्तक्रियाकलापज्ञः ॥ ६ स्पृष्टदेशचारित्रः ॥ ७ **सुसाव**° प्रतौ ॥

इंदियजई ३० अपिसुणो ३१ परोवयारी ३२ तहा विणयजुत्तो ३३। इय तेत्तीसमिमेसुं नरवम्माई य दिट्ठंता ॥ १७ ॥
सामन्नगुणाणुगओ विसेसगुणधरणधीरंयमुवेइ[1]। ते य इह विसेसगुणा जीववहविरमणाईया ॥ १८ ॥
जीववह १ अलिय २ परदव्व ३ जुवइवज्जण ४ परिग्गहपमाणं ५। दिसिमाण ६ भोगउवभोग ७ ऽणत्थदंडवयं ८ चेव ॥
सामाइय ९ देसंवगासियं[2] च १० पोसहवयं ११ अतिहिदाणं १२।
वंदण १३ पडिकमणं १४ काउसंग्ग[3] १५ संवरण १६ पवज्जा १७ ॥ २० ॥
एए हि विसेसगुणा दिट्ठंता एसु जन्नदेवाई[4]। अन्नय[5]-वइरेगेहिं जाहासंखेण नायव्वा ॥ २१ ॥
जह सोहइ भूसुद्धीए[6] चित्तकम्मं थिरं च होइ चिरं। सामन्नगुणाणुगए तह पुरिसम्मि विसेसगुणा ॥ २२ ॥
उवलक्खणं च एए एयंरूवा[7]ऽवरे वि विन्नेया। सामन्न-विसेसगुणा संखेवेणेह वुत्ता वि ॥ २३ ॥
सम्मत्तगुणेण[8] य पाउणन्ति जीवा न निरय-तिरिएसु। उप्पत्तिमणंतरमवि जइ णो बद्धाउया[9] पुव्विं ॥ २४ ॥
नेव य अवड्ढ[10]पोग्गलपरियट्टाओ वि अहियभवभमणं। उक्कोसओ वि संभवइ एत्थ ईसिं पि पुट्ठम्मि ॥ २५ ॥
जो पुण सम्मत्त[11]मिमं चिरकालं कलिय[12]विमलगुणपसरो। फासइ नरवम्मो इव सो पावइ परमसुहनिवहं ॥ २६ ॥
नरवम्मो य नरवई जह सम्मत्तं पुरा समणुपत्तो। जाओ य परमकल्लाणभायणं तह निसामेह ॥ २७ ॥

१-धीरताम् ॥ २ देसाव° प्रतौ ॥ ३ °उस्सग्ग° प्रतौ ॥ ४ °वाइं प्रतौ ॥ ५ अन्वयव्यतिरेकाभ्याम् ॥ ६ भूशुद्धौ ॥ ७ एवंरूपाः ॥ ८ सामन्नगुणाण य प्रतौ पाठः ॥ ९ बद्धायुष्कर्माणः ॥ १० अपार्धपुद्गलपरावर्त्तात् ॥ ११ समत्त° प्रतौ ॥ १२ °लिभवियलगण° प्रतौ ॥

॥ णमो त्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स ॥

सिरिदेवभद्दसूरिविरइओ

कहारयणकोसो ।

। पढमो धम्माहिगारिसामन्नगुणवण्णणाहिगारो ।

रतिसुंदरी-राज्ञी हरिदत्तो युवराजः मन्त्रिणः

देव-गुरुप्पडिबद्धो वि[1]वित्तनत्थित्तवायवामोहो । जो [2]समरसोवओगो वि विजियनीसेसरिउचक्को ॥ ३८ ॥
तस्सऽत्थि महुमहस्स व लच्छी नवनलिणपत्तपिहुलच्छी । भज्जा सीलाइगुणोहधाम रइसुंदरी नाम ॥ ३९ ॥
रूवविणिम्मवणुक्कट्ठनिट्ठपरमेट्ठिणो व्व सा सिद्धी । दीसइ सुवइ य न जं जयम्मि अन्ना तहा रमणी ॥ ४० ॥
कय[3]बुहतोसो नीईविसारओ सारओ व्व रय[4]णियरो । कुवल[5]यजणियाणंदो य से सुओ अत्थि हरिदत्तो॥ ४१ ॥
[6]कुम्मस्स व तस्सुवलम्भपरमअवट्ठंभगाढपरिसुद्धो ।...सह............सेसो, व्व धरइ गरुयं पि भूभारं ॥ ४२ ॥
सुकुलुग्गया विणीया दक्खा स[7]त्थत्थपारया धीरा । पहुभत्ता मइसागरपमुहा से मंतिणो जाया ॥ ४३ ॥
आरोवियरज्जभरो य तेसु [8]बुहसलहियं उचियसमयं । विसयसुहं भुंजंतो कालं वोले[9]इ स महप्पा ॥ ४४ ॥
अह अन्नया कयाई तस्स सभाए सुहासणत्थस्स । धम्मकहा परिवड्ढइ............रं राया ॥ ४५ ॥
एगेण तत्थ भणियं लोगविरुद्धाण वज्जणेण सया । दक्खिन्नेणं दुहियाणुकंपणेण य परो धम्मो ॥ ४६ ॥
अन्नेण पुणो भणियं को धम्मो ? किं व तस्सरूवं ? ति । को वा तप्फलभोई ? सच्चमिणं ? कप्पणामेत्तं ? ॥ ४७ ॥

---

१ विविक्तनास्तित्ववादव्यामोहः । विविक्त–त्यक्त ॥ २ श्लिष्टविशेषणेन विरोधोऽत्र—यः समरसे शमरसे वा उपयोगवान् कथमसौ विजितनिःशेषरिपुचक्रो भवति ? इति । समरे–युद्धे सोपयोगः–सावधानः राजधर्मत्वाद् अत एवासौ विजितनिःशेषरिपुसमूहो वर्त्तत इति विरोधपरिहारः ॥ ३ °**यवहुतो**° प्रतौ पाठः । चन्द्रपक्षे कृतः बुधस्य–ग्रहविशेषस्य तोषो येन । पुत्रपक्षे तु बुधानां–पण्डितानामिति ॥ ४ °**यनिय**° प्रतौ ॥ ५ चन्द्रपक्षे कुवलयानां–रात्रिविकासिकमलानां जनित आनन्दो येनेत्यर्थः, कुमारपक्षे पुनः कुवलयस्य–महीवलयवर्त्तिलोकस्योत्पादितानन्द इत्यर्थः ॥ ६ **कुंकुम**° प्रतौ ॥ ७ शास्त्रास्त्रपारगाः शास्त्रार्थपारगाश्चेत्यर्थः ॥ ८ बुधश्लाघितम् ॥ ९ व्यतिक्रामति ॥

॥ ३ ॥

राजसंसदि धर्मचर्चा

जंपियमवरेणमिमं मोत्तुं नियनियकुलक्कमाणुगयं । दिट्ठगुणं........................ ॥ ४८ ॥
अन्नेण पुणो भणियं विहि-[1]पडिसेहप्पहाणसत्थुत्तं । सलहंति धम्मतत्तं न सबुद्धिविकप्पणामेत्तं ॥ ४९ ॥
अवरेण पुणो वुत्तं सत्थाणि बहूणि [2]भूरिसंघारा । बहुरूवा मयभेया को सम्मं मुणइ धम्ममिह ? ॥ ५० ॥
इय पउरधम्मगोयरवियारखरतरसमीरखिप्पंतो । संसय............................... ॥ ५१ ॥
..........................परमपुरिसत्थो । आरोविओ य सो कहमिमेहिं महसंसयतुलाए ? ॥ ५२ ॥
संभवइ निरभिधेयो न सव्वहाऽऽगासकुसुममिव एसो । [3]आबालगोव-विलयाविबुहाइपवित्तिदंसणओ ॥ ५३ ॥
..................विकहाविवित्त.. ॥ ५४ ॥
...............गयघडारूढपरिविह.........। ....तुरयजोहं पप्प भुंजंति रज्जसिरिं ॥ ५५ ॥
अन्ने तप्पुरओ च्चिय [4]परिस्समुल्लसियभूरिपस्सेया । किच्छकयपाणवित्ती जह...................... ॥ ५६ ॥
....भोयणं केइ ॥ ५७ ॥
अन्ने य [5]घरा घरभमणलद्धपज्जुसियतुच्छमाहारं । एगागिणो दिणंते भुंजंति महादुहुव्विग्गा ॥ ५८ ॥

---

१ °**प्पडि**° प्रतौ । विधिप्रतिषेधप्रधानशास्त्रोक्तम् । विधिप्रतिषेधौ–उत्सर्गापवादौ ॥ २ 'भूरिसंहाराणि' भिन्नभिन्नतत्त्वनिर्णायकानि ॥ ३ **आलावगो**° प्रतौ ॥ ४ परिश्रमोल्लसितभूरिप्रस्वेदाः 'कृच्छ्रकृतप्राणवृत्तयः' कष्टेन कृताजीविकाः ॥ ५ गृहाद् गृहभ्रमणलब्धपर्युषिततुच्छम् आहारम् ॥

निरुवमरूवोहामियमयरद्धयकित्तिणो जणा एगे । सइ दिंति लोयलोयणकुमुयवणाणंदमिंदु व ॥ ५९ ॥
अन्ने य सास-जर-कास-कोढ-खयखुन्नखीणसव्वंगा । निव्वेयमपुव्वं दिंति वत्तसवणे सपिउणो वि ॥ ६० ॥
पीणपओहरहरिणच्छिपरिगया गीयमाणगुणनियरा । जम्मग्गिरदिन्नधणा एगे विलसंति जाजीवं ॥ ६१ ॥
अवरे य रुट्ठ-दुच्चिट्ठपंसुलीदिन्नकडयडाडोवा । ओवाइयमग्गियमच्चुणो य चिट्ठंति झुसिरघरे ॥ ६२ ॥
इय तुल्लमणुयभावे वि भिन्नभिन्नोवलद्धसुह-दुक्खं । न घडइ जयवइचित्तं धम्मा-ऽधम्मं विणा सम्मं ॥ ६३ ॥
······मणुट्ठाणमिमाण साहगं सुद्धबुद्धिणा नेयं । नज्जइ य तं च सत्थत्थकुसलहियसुगुरुवयणाओ ॥ ६४ ॥
सुगुरू वि गरुयचिरभवसमुवज्जियसुकयपगरिसवसेण । गंवि सुगविट्ठो चिंतामणि व्व कट्ठेण दट्ठव्वो ॥ ६५ ॥
एवं परिभावितस्स तस्स पाओसियं नरिंदस्स । पलयघणगज्जियं पिव गंभीरं वज्जियं तूरं ॥ ६६ ॥
अह ईसिंचलियसुललियपंकयदलदीहरच्छिणा रन्ना । सव्वजणोऽणुन्नातो कयप्पणामो गओ सगिहं ॥ ६७ ॥
एत्थंतरम्मि सिररइयपाणिकोसो नमंसिउं रायं । विन्नविउं पारद्धो पडिहारो देव ! निसुणेह ॥ ६८ ॥

१ निरुपमरूपाभिभूतमकरध्वजकीर्तयः ॥ २ सदा ॥ ३ °कोट्ठक्खयक्खुन्न° प्रतौ ॥ ४ वार्ताश्रवणे स्वपितुरपि ॥ ५ यन्मार्गणशीलदत्तधनाः ॥ ६ रुट्ठदुच्चिट्ठ° प्रतौ । रुष्टदुश्चेष्टपांशुलीदत्तकडकडाटोपाः । उपयाचितेन मार्गितमृत्यवश्च तिष्ठन्ति शुषिरगृहे ॥ ७ जगद्वैचित्र्यम् ॥ ८ ज्ञायते च तच्च शास्त्रार्थकुशलहितसुगुरुवचनात् ॥ ९ गुरुकचिरभवसमुपार्जितसुकृतप्रकर्षवशेन ॥ १० 'गवि' पृथ्व्याम् ॥ ११ पिव इति इवार्थकमव्ययम् ॥ १२ ईषच्चलितसुललितपङ्कजदलदीर्घाक्षेण ॥ १३ °दलंदी° प्रतौ ॥ १४ °जणाणु° प्रतौ ॥

विजयवती
राजधानी

एत्थेव जंबुदीवे भारहवासम्मि वासवपुरि व्व । रम्मा मागहविसयस्स तिलयभूया अदिट्ठभया ॥ २८ ॥
अत्थि समत्थदिसामुहपत्तपसिद्धी समिद्धजणनिवहा । विजयवई नाम पुरी पउरागर-नगरपरिकिन्ना ॥ २९ ॥
नक्खत्तपंतिनिवडणभएण उत्थंभणत्थमिव विहिओ । तुंगो पागारो सहइ जीए कविसीसयसणाहो ॥ ३० ॥
हिमगिरिगुरुबहुसुरघरबहुईसरदंसणोवलोभेण । परिहा तुंगतरंगा गंग व्व जहिं बहिं भाइ ॥ ३१ ॥
जत्थाऽऽउहे च्चिय गया सुमणोबंधो य मालियघरेसु । आरूढगुणे य धणुम्मि परवहो न उण लोएसु ॥ ३२ ॥
तव-दाण-नाणवावारमग्गदीसंतसंत-सुइलोया । सययमहा [जा] सोहइ कयकयजुगनिच्चवास व्व ॥ ३३ ॥

नरवर्मनृपः

पालेइ तं च पणमंतमंति-सामंतलीढपयपीढो । नरवम्मनिवो जयसिरिकरेणुगाऽऽलाणथंभो व्व ॥ ३४ ॥
जो सयलकलाकोसल्ल-चाग-सत्थत्थबोहपमुहेहिं । सुगुणेहि सेसभूमीवईण निदंसणं पत्तो ॥ ३५ ॥
विणयनया तत्तो च्चिय विणिग्गया निच्छियं अहं मन्ने । पयईण पालणा वि य तत्तुल्ला जं न अन्नत्थ ॥ ३६ ॥
वरवत्थमंडणाओ पयाओ जं तस्स तं किमिव चोज्जं ? । मुत्ताहारंसुयभूसियाओ जस्सऽरिवहुओ वि ॥ ३७ ॥

१ प्रचुराकरनगरपरिकीर्णा ॥ २ 'यत्र' यस्यां पुर्यां आयुधे एव 'गदा' गदाख्यं शस्त्रं वर्त्तते, न तु लोकेषु 'गदाः' रोगा दृश्यन्ते । 'सुमनोबन्धः' पुष्पाणां बन्धो मालिकगृहेष्वेव, न तु लोकेषु सुमनसां–विदुषां बन्धो दृश्यते । 'परवधः' शत्रुवधः 'आरूढगुणे' सप्रत्यञ्चे धनुष्येवावलोक्यते, न पुनः आरूढगुणेषु–प्राप्तगुणेषु लोकेषु 'परवधः' अन्यप्राणिवधो विलोक्यत इति ॥ ३–मग्गदृश्यमानसत्शुचिलोका ॥ ४ 'सततमहा' निरन्तरोत्सववती 'सततमखा वा' निरन्तरयागमयी ॥ ५ कृतकृतयुगनित्यवासा ॥ ६ त्यागः–दानम् ॥ ७ अहम्मन्ने प्रतौ ॥ ८ जन्न प्रतौ ॥ ९ आश्चर्यम् ॥ १० अत्र श्लिष्टविशेषणेन विरोधः प्रतिपाद्यते, तथाहि— कथं रिपुवध्वः मुक्ताहारैः अंशुकैश्च भूषिता भवन्ति ? इति विरोधः । तत्परिहारपक्षे तु—मुक्तानां हारतुल्यैः–पङ्क्तिसमैः अश्रुभिः भूषिता इति ॥

मदनदत्तस्य एकावली-हारप्राप्तिः

॥ ५ ॥

सो भणइ देव! निसुणसु तुम्ह समीवाओ पुव्वकालम्मि। अत्थोवज्जणहेउं गओ म्हि [हं] पुव्वदेसम्मि ॥ ८१ ॥
वच्चंतो य कहं पि हु पडिओ हरि-हरिणविसयभीमाए। विडविवणसंकडाए अडवीए दुव्वइनामाए ॥ ८२ ॥
पुव्वाणियं च पाणियमसेसमवि निट्ठियं तहिं तत्तो। सव्वत्तो वि पयट्टो पलोइउं सलिलमुव्वउत्तो ॥ ८३ ॥
जाव कहिं पि न किं पि हु, सुयं व दिट्ठं व तं तया भीओ। वणसंडमेगमुद्दिसिय पट्ठिओ सिग्घवेगेण ॥ ८४ ॥
दिट्ठो य तत्थ मा[1]यंडमंडलुद्दामतेयपब्भारो। सयमेव पसमरासि व्व अहव सुस्समणधम्मो व्व ॥ ८५ ॥
[2]बहुसीससंगओ रामणो व्व [3]बहुसावओ य विंज्झो व्व। [4]कयजीववग्गरक्खो इंदो व्व गुणंधरो सूरी ॥ ८६ ॥
तस्स य पुरो समुज्जलजलन्तमणिमउडभासुरसिरग्गो। पढमु[5]ग्गमंतदिणनाहभूसिओ उदयसेलो व्व ॥ ८७ ॥
[6]आमल[य]थूलमुत्तियमणहरहारावरुद्धकंठयलो। तारायणपरियरिओ मेरु व्व सयं विरायंतो ॥ ८८ ॥
एगो देवो नवजोव्वणाए देवीए परिवुडो सम्मं। निसुणंतो जिणधम्मं दिट्ठो य मए सवेरग्गं ॥ ८९ ॥
मुणिवइणो वयणेहिं सुरहारस्स य फुरंतकिरणेहिं। अमओवमेहिं तण्हा दु[7]हा वि मह उवसमं पत्ता ॥ ९० ॥
तो जायगरुयभत्ती तिपयाहिणपुव्वयं पणमिऊण। सूरिं सुरं च वंदिय आसीणो हं तयासन्ने ॥ ९१ ॥

१ मार्तण्डमण्डलोद्दामतेजःप्राग्भारः ॥ २ रावणो बहुभिः शीर्षैः सङ्गतः, सूरिः पुनर्बहुभिः शिष्यैः सङ्गतः–परिवृत इत्यर्थः ॥ ३ विन्ध्याचलः बहवः श्वापदा यत्र, सूरिस्तु बहवः श्रावकाः–उपासका यस्य ॥ ४ इन्द्रः कृता जीववर्गेण–गुरुवर्गेण रक्षा यस्य, सूरिः पुनः कृता जीववर्गस्य–षड्जीवनिकायरूपस्य रक्षा येन ॥ ५ प्रथमोद्गच्छद्दिननाथभूषितः ॥ ६ आमलकस्थूलमौक्तिकमनोहरहारावरुद्धकण्ठतलः । तारागणपरिकरितः ॥ ७ बाह्या आभ्यन्तरा चेति ॥

मदनदत्त-हरिदत्तयोः पूर्वभवः

अह तियसो [1]मइ वियसियकुवलयदलस[2]च्छहं खिविय चक्खुं। सुसिणिद्धबंधवम्मि व परितुट्ठो पुच्छए सूरिं ॥
भयवं! को एस नरो? किं वा एयप्पलोयणे य ममं। जाओ मणपरितोसो? [तो] सूरी भणिउमाढत्तो ॥ ९३ ॥
भो तियस! ओहिलोयणपलोयणाऽ[3]णलियमुणियकज्जस्स। किं सी[4]सइ तुह? तह वि हु सुमरणहेउं भणामि इमं ॥ ९४ ॥
एत्तो पुव्वभवम्मि कोसंबीए पुरीए जयरन्नो। तुममेसो च्चिय पुत्ता जेट्ठ-कणिट्ठा समुप्पन्ना ॥ ९५ ॥
बालत्तणे वि जणणी दिवंगया पालिया [य] धावीए। अहिगयकलाकलावा कमेण तरुणत्तमणुपत्ता ॥ ९६ ॥
जुवरायपयपयाणत्थमन्नया सायरं नरिंदेण। दिव्वंसुय-भूसणदाणओ य सम्माणिया सम्मं ॥ ९७ ॥
नायं च इमं सव्वं सवत्तिजणणीए तयणु कुद्धाए। नियपुत्तरज्जविग्घं संकंतीए अणज्जाए ॥ ९८ ॥
कीलिउमुज्जाणं उवगयाण तुम्हाण घोरविसमे[5]स्सं। पच्चइयपुरिसहत्थेण दावियं भोयणं किं पि ॥ ९९ ॥
अह तदुवभोगउ च्चिय तुब्भे [6]रुंभंतचेयणाऽऽसीणा। प[7]ढमिल्लुयपल्लवमणहरस्स कंकेल्लिणो मूले ॥ १०० ॥
तत्थेव य विहिवसओ दिवायरो नाम तक्खणं साहू। गरुलोववाइयं सुत्तमुत्तमं गुणिउमाढत्तो ॥ १०१ ॥
तम्मि य गुणिज्जमाणे गरुलाहिवई [8]फुरंतगरुलवओ। मणिमउडभासुरसिरो समागओ वंदिउं सा[9]हुं ॥ १०२ ॥
तस्स य माहप्पेणं विसं तमं पिव विरो[10]यणाहिहयं। नट्ठं झड त्ति तुब्भे समुट्ठिया सुत्तबुद्ध व्व ॥ १०३ ॥

१ मयि ममोपरीत्यर्थः ॥ २ समानम् ॥ ३ अनलीकं–सत्यम् ॥ ४ 'शिष्यते' कथ्यते ॥ ५ –मिश्रम् ॥ ६ रुध्यमान– ॥ ७ प्राथमिक– ॥ ८ 'स्फुरद्गरुडवयाः' स्फुरद्गरुडपक्षिचिह्नः ॥ ९ साहू प्रतौ ॥ १० विरोचनः सूर्यः ॥

परियणपरिकित्तियविसवियारविन्नायजणणिवुत्तंता । लक्खियमुणिमाहप्पा य निवडिया साहुचलणेसु ॥ १०४ ॥
भणिया य गरुलवइणा भो! तुब्भे सुकयभायणं नूणं। जं एस अमयमुत्ती मुणिवसभो कह वि इह पत्तो ॥ १०५ ॥
इहरा सवत्तिजणणीदावियविसवेयणाअभिहयाणं । धम्म-ऽत्थविरहियाणं मरणं तुब्भं लहुं हुंतं ॥ १०६ ॥
अज्ज वि किं पि न नट्ठं जइ मह वुत्तं करेह ता एयं । चिंतामणिं व साहुं आराहेज्जह पयत्तेण ॥ १०७ ॥
इय तेऽणुसासिऊणं साहुं अभिवंदिउं च गरुलवई । मेहम्मि व भूमीए तिरोहिओ विज्जुपुंजो व ॥ १०८ ॥
तुब्भेहिं चिंतियं तो एत्तो जुत्तं न नियघरे वसिउं। दुव्विलसियाइं दीसंति जत्थ नियगाण वि य एवं ॥ १०९ ॥
अहवा घरवासवसंगयाण वारिंगयाण व गयाण । ते केऽणत्था जे नाऽऽवडंति वडविडविवित्थारा ? ॥ ११० ॥
धन्नो एस महप्पा साहू घरपंजराउ निक्खमिउं । जो धरियसुद्धपक्खो विहरइ वसुहं विहंगो व ॥ १११ ॥
अम्हाण वि जुज्जइ इन्हिं एयप्पवहणं दढं घेत्तुं । दुहवारि-मच्चुमयरं उत्तरिउं भवमहाजलहिं ॥ ११२ ॥
एवं विभाविऊणं नमिऊण मुणिं च परमभत्तीए। उज्झिय कालक्खेवं दिक्खट्ठमुवट्ठिया दो वि ॥ ११३ ॥
जोग्गयमुवलब्भ तवस्सिणा वि पव्वाविया चरिय चरणं । मरिऊण तओ जाया देवा सोहम्मकप्पम्मि ॥ ११४ ॥
विज्जुप्पभनामो एस भो! तुमं विज्जुसुंदरो य इमो । नवरं एसो चविउं विजयवईए वरपुरीए ॥ ११५ ॥

१ सकय° प्रतौ ॥ २ सपत्नीजननीदापितविषवेदनाभिहतयोः ॥ ३ वारिगतानामिव गजानाम् ॥ ४ विडविडवि° प्रतौ ॥ ५ साधुः 'धृतशुद्धपक्षः' धृतशुद्धचारित्रधर्मपक्षः, विहङ्गः धृतशुद्धपतत्रः ॥ ६ °यपव° प्रतौ ॥ ७ चरित्वा ॥ ८ 'च्युत्वा' मृत्वा ॥ ९ °ई पव° प्रतौ ॥

मदनदत्तस्य राजसंसदि प्रवेशः तदागमवृत्तं च

तुम्हाण पियवयस्सो दूरदिसागमणवड्ढिउकट्ठो । चिट्ठइ दट्ठुं देवं पडिरुद्धो बाहि किं किच्चं ? ॥ ६९ ॥
रन्ना पयंपियं पेससु त्ति तो सो विसज्जिओ णेण । संपत्तो रायसहं सहरिसमवलोइओ रन्ना ॥ ७० ॥
सो एस मयणदत्तो पियमित्तो कह चिरागतो एत्थ ? । सायरकयप्पणामोऽवग्गाहिओ तयणु ससिणेहं ॥ ७१ ॥
आसणमासीणो पुच्छिओ य पियमित्त! कत्थ कत्थ तुमं। एत्तियकालं भमिओ ? किं दिट्ठमुवज्जियं किं वा ? ॥ ७२ ॥
तेणं पयंपियं देव! लाड-मरहट्ठ-गोड-सोरट्ठा । पारित्त-मलय-मालव-वेरागर-सिंधुसोवीरा ॥
कासी-कोसल-नेवाल-कीर-जालंधराइणो देसा । भमिया विचित्तनेवत्थधारिनरनियरपरिकिन्ना ॥ ७४ ॥
दिट्ठा य तुंगसुरभवणसभो[......]सरिसराइणोऽणेगे। चोज्जाणि य ताणि न जाणि साहिउं पि हु तरिज्जंति ॥ ७५ ॥
अत्थो य अज्जितो बहु कुबेरकोसाइरित्तवित्थारो । तह तिहुयणिक्कसारो एगो एगावलीहारो ॥ ७६ ॥
तस्स य लाभो पुहईए नाह! नीसेसअच्छरियपवरो। नो कस्स कस्स चित्तं पकुणइ विम्हयरसाउलियं ? ॥ ७७ ॥
अह मंजुगुंजिउद्दाममुरवरवरम्मपडहपडुपाढं । नच्चिरवारविलासिणि[रण]रणमणिकिंकिणीजालं ॥ ७८ ॥
पेच्छणयमतुच्छसमुच्छलंतसुइसुहयगरुयगेयसरं । वारइ रायाऽनिलचलियकमलसोभेण सकरेण ॥ ७९ ॥
भणइ य संपइ पियमेत्त! होउ सेसेहिं साहियव्वेहिं । हारोवलंभमेगग्गचित्तओ मे निवेएसु ॥ ८० ॥

१ दिट्ठइ प्रतौ ॥ २ वेषः ॥ ३ आश्चर्याणि ॥ ४ कथयितुमपि हि शक्यन्ते ॥ ५ अथ मञ्जुगुञ्जितोद्दाममुरजवरम्यपटहपटुपाठम्। नर्त्तनशीलवारविलासिनीरणरणन्मणिकिङ्किणीजालम् ॥ ६ °पाडं प्रतौ ॥ ७ प्रेक्षणकमतुच्छसमुच्छलत्श्रुतिसुखदगुरुकगेयस्वरम् ॥ ८ अलमित्यर्थः ॥ ९ कथयितव्यैः ॥

अहह ! कहं सीसोवरि चिट्ठइ धिट्ठो ममावि इह एसो ?। अहवा [1]अदिट्ठफुरिए को काउं किं न उज्जमइ ? ॥ १२८ ॥
ता अवणेमि सुदुव्विणयविडविणो फलमिमस्स [2]मिन्हि पि । कालविलंबो नीईय[3] वीरवित्तीण न हु जुत्तो ॥ १२९ ॥
इय [4]गरुयरोससंरंभनिब्भरायंबिरच्छिछोहेहिं । कुंकुमरसलित्तं पिव[5] कुणमाणो भवणभित्तिभरं ॥ १३० ॥
निक्खित्तकमलपयरं व महियलं सव्वओ य दंसिंतो । नि[6]व्वत्तिंतो गयणं झड त्ति कयअकालसंज्झं व ॥ १३१ ॥
एगावलिहारविरायमाणवच्छत्थलोऽमलदुकूलं । प[7]रिहिय परिहारयणं पहरणमवि गरुयमादाय ॥ १३२ ॥
सोहम्मतियसणाहं पडुच्च कयतिव्वसमरसंकप्पो । नीहरिओ सपुरीओ तणं व तिजयं च पेहंतो ॥ १३३ ॥
कुडिला कज्जाण गइ त्ति कह वि सक्केण निज्जियस्स ममं । को सरणं ? ति विभाविय ओहिन्नाणं पउंजेइ ॥
तो सुंसुमारपुरपरिसरम्मि सरणिक्कसुंदरं वीरं । [8]उस्सग्गगयं पेहइ गयसोगमसोगसाहितले[9] ॥ १३५ ॥
तो पवणविजइणीए गईए गंतूण पणमिउं वीरं । नाह ! तुह पायपउमप्पभावओ वंछियं होउ ॥ १३६ ॥
इय काऊणाऽऽसंसं [10]कयजोयणसयसहस्सकसिणंगो । महया संरंभेणं वच्चंतो सुरपुरं पत्तो ॥ १३७ ॥
पउमवरवेइयाए [11]एयं अन्नं पयं हरिसभाए । ठविऊण मुक्कसंको सक्कं अक्कोसिउं लग्गो ॥ १३८ ॥

१ अदृष्टपराक्रमे अदृष्टे वा—भाग्ये स्फुरिते इत्यर्थः ॥ २ मकारोऽत्रालाक्षणिकः ॥ ३ नीत्या 'वीरवृत्तीनां' पराक्रमवताम् ॥ ४ गुरुकरोषसंरम्भ-निर्भरातामाक्षिक्षोभैः ॥ ५ पिव इवार्थे ॥ ६ 'निर्वर्तयन्' कुर्वाणः ॥ ७ परिधाय, परिघरत्नम् ॥ ८ कायोत्सर्गस्थितं प्रेक्षते गतशोकम् अशोक-शाखितले ॥ ९ °तलो प्रतौ ॥ १० कृतयोजनशतसहस्रकृत्स्नाङ्गः ॥ ११ एकम् अन्यं पादम् ॥

रे रे चमराहम ! कह कहेहि जाओ तुहाऽऽगमणविसओ । सलभस्स व दी[1]वसिहाए मह सहाए ? त्ति जंपित्ता ॥
सुरवइणा रोसभरेण तरुणरविबिंबलक्खदु[2]प्पेक्खं । पक्खित्तं कुलिसं तस्स हणणहेउं महावेगं ॥ १४० ॥
अह तं इंतं दट्ठुं सममभिमाणेण संकुडियकाओ । हेट्ठमुहो उड्ढकमो वीरं पइ पट्ठिओ चमरो ॥ १४१ ॥
ता [3]एवरूविणो [4]वच्चिरस्स कंठाओ से चुओ हारो । वीरियसारो व जसो व अहव [5]सूरत्तवाउ व ॥ १४२ ॥
एसो य निवडमाणो हारो विज्जुप्पभेण [6]सम्पत्तो । कीलत्थमुवगएणं एत्तो संखेज्जदीवम्मि ॥ १४३ ॥
एवं निसामिऊणं हारुप्पत्तिं [7]अहं महाराय ! । देसेसु चिरं भमिओ काऊणऽत्थज्जणं वलिओ ॥ १४४ ॥
पणुवीसवच्छरेहिं तुम[8]ए मह देव ! दंसणं जायं । जाओ य सुरो स सुओ अन्नो वा तुज्झ ? नायव्वं ॥ १४५ ॥
रन्ना पयंपियं चक्खुगोयरे कोऽणुमाणवावारो ? । कीरउ दंसणमन्नोन्नमिन्हि हरिदत्त-हाराणं ॥ १४६ ॥
अह तुरियवेगधावियपुरिसेहिं [9]राय-वणिनिउत्तेहिं । रायसुओ हारो वि य सहाए तव्वेलमुवणीओ ॥ १४७ ॥
आसीणो रायसुओ पारद्धाऽणेगहा कहुल्लावा । दसदिसमुज्जोयंतो य दंसिओ अवसरे हारो ॥ १४८ ॥
अह हारदंसणाओ ईहा-ऽपोहाइपहपयट्टस्स । जायं जाईसरणं झड त्ति हरिदत्तकुमरस्स ॥ १४९ ॥
चिरपव्वज्जा तियसत्तणं च हारप्पयाणवुत्तंतो । विन्नाओ सव्वो वि य जहट्ठिओ सुमिणदिट्ठो व ॥ १५० ॥

१ °वसहा° प्रतौ ॥ २ °दुपेक्खं प्रतौ ॥ ३ एत्थ रू° प्रतौ पाठः ॥ ४ 'व्रजितुः' गमनशीलस्य ॥ ५ शूरत्ववादः ॥ ६ सप्पत्तो प्रतौ ॥ ७ अहम्महा° प्रतौ ॥ ८ °ए सह प्रतौ ॥ ९ राजवणिग्नियुक्ताभ्याम् ॥

सुरभवणवसिय-भासिय-विलसिय-हसिया-ऽऽसियाइं सुमरंतो । नवरं तवेलं मुच्छिओ व जाओ नरिंदसुओ ॥ १५१ ॥
भणिओ य राइणा एत्थ कीस जोगि व रुद्ध[1]वावारो । अंतो चिय चिंतंतो चिट्ठसि ? मह कहसु य निमित्तं ॥
कुमरेण जंपियं ताय ! केत्तियं तुम्ह ए[य] साहेमि । अघडंतघडणपडुओ चित्तो कम्माण वावारो ॥ १५३ ॥
जं कहिउं पि न तीरइ सक्कइ सक्को वि जं[2]न्न सच्चविउं । संसारनडो पयडइ तमिंदयाल[3]प्फडाडोवं ॥ १५४ ॥
रन्ना पयंपियं वच्छ ! तह वि साहेसु एत्थ परमत्थं । तो तेण **मयणदत्तो**वइट्ठसरिसं सयल[4]मुत्तं ॥ १५५ ॥
जाया य हारदंसणपच्चयपभवा नरिंदपुत्तस्स । देव-गुरु-तत्तविसया सुद्धा सम्मत्तपडिवत्ती ॥ १५६ ॥
एत्थंतरम्मि रन्ना विभावियं अम्ह सब्भपुरिसेहिं । धम्मविही नीसेसो संसयमारोविओ आसि ॥ १५७ ॥
संपइ पुण पुत्तुवइट्ठपुव्वदिट्ठत्थविहुयमोहस्स । तत्तावलोयकुसला जाया पुन्नेहिं मह दिट्ठी ॥ १५८ ॥
एसो य सुओ पुन्नेहिं नूण संपाडिओ ममं विहिणा । कहमन्नह हुंतो धम्म[5]निच्छयच्छेयमइपसरो ? ॥ १५९ ॥
एवंविहसंजोगो य जायए भाविभूरिमद्दाणं । कप्पतरुसंगमो इव महल्लकल्लाणकलियाणं ॥ १६० ॥
इय जाव निवो पसरंतहरिसरोमंचकंचुइयकाओ । अच्छइ ता आगंतुं विन्नत्तो दारपालेण ॥ १६१ ॥
देव ! **कुसुमावयंसा**भिहाणउज्जाणपालगो तुम्ह । दंसणकंखी चिट्ठइ रायाऽऽह लहुं पवेसेहिं ॥ १६२ ॥
अह [6]भमिरभमररोलाउलाउ दाऊण बउलमालाओ । उज्जाणपालगो भूमिवालमेवं पयंपेइ ॥ १६३ ॥

१ °वावारा प्रतौ ॥ २ यद् न सत्यापयितुम् ॥ ३ °लफडा° प्रतौ ॥ ४ °लपुत्तं प्रतौ ॥ ५ धर्मनिश्चयच्छेकमतिप्रसरः ॥ ६ भ्रमणशीलभ्रमरशब्दाकुलाः ॥

जाओ वणियस्स सुओ गुणवंतो नाम **मयणदत्तो** त्ति । अत्थज्जणत्थमिहइं पत्तो ता जाव तं दिट्ठो ॥ ११६ ॥
पुव्वभवावज्जियगुरुसिणेहओ एयदंसणे य तुमं । हरिसं गओ सि एयं तं जं पुट्ठं निमित्तं त्ति ॥ ११७ ॥
इय सो सोच्चा देवो विन्नायजहट्ठियत्थवित्थारो । देइ महं नेहेणं [1]तं नियमेगावलीहारं ॥ ११८ ॥
पुच्छइ य गुरुं भालयलठवियकरसंपुडो पयत्तेण । भयवं ! निद्दा अरई सुरतरुकंपो य एमाई ॥ ११९ ॥
असिवाइ जीवियव्वं मह तु[2]च्छं निच्छियं निवेयंति । ता कहसु कत्थ जम्मो होही ? कह बोहिलाभो य ? ॥ १२० ॥
[3]भणिओ गुरुणा चविउं [4]एत्तो तं **भारहम्मि मगहाए** । **विजयवईए पुरीए नरवम्मनराहिवस्स** सुओ ॥ १२१ ॥
हरिदत्तो त्ति भविस्ससि बोहिं पुण **मयणदत्तदिन्नस्स** । हारस्स दंसणेणं लहिहसि इय मुणिय तवेलं ॥ १२२ ॥
देवो गओ स[5]थामं मए वि विम्हइयमाणसेण गुरू । पुट्ठो पहु ! सा[6]हिप्पउ इमस्स हारस्स उप्पत्ती ॥ १२३ ॥
जंपइ गुरू सुणिज्जउ पुव्वं किर **विंज्झगिरिवरतलम्मि** । पुरमत्थि **सयदुवारं** तत्थाऽऽसी **पूरणो** सेट्ठी ॥
सो काऊण सुतिक्खं तावसदिक्खं पवज्जियाणसणो । मरिउं जाओ **चमरो** सुरेसरो **चमरचंचाए** ॥ १२५ ॥
सो य कहिं पि पलोयइ जा उड्ढं ता पवड्ढियामरिसो । पेच्छइ सक्कं सीहासणट्ठियं नियसिरस्सुवरिं ॥ १२६ ॥
पुरओ पयट्टनट्टं **सोहम्मसभाए** वट्टमाणं च । [7]सामाणिय-तायत्तिस-रक्ख-परिसापरिक्खित्तं ॥ १२७ ॥

१ तन्निय° प्रतौ ॥ २ अल्पम् ॥ ३ भणिउं प्रतौ ॥ ४ पत्तो प्रतौ ॥ ५ स्वस्थानम् ॥ ६ कथ्यताम् ॥ ७ सामानिक–त्रायस्त्रिंश–आत्मरक्षक–पर्षत्परिक्षिप्तम् । परिक्षिप्तं–परिवृतम् ॥

देवतत्त्वम्

देवो य कोह-मय-माय-लोह-रइ-अरइ-हास-भयमुक्को। सोग-दुगुंछा-चिंता-विसाय-अन्नाणपरिहीणो ॥ १७५ ॥
मिच्छत्त-पमाय-सिणेह-मयण-निंदाइदोसरहियंगो । तारेउमलं अप्पा परं च पोउ व्व भवसिंधु ॥ १७६ ॥
करुणामयमयरहरं निरंजणं जिणवरं विमोत्तूण । नऽन्नत्थ देवबुद्धी जायइ सुमिणे वि सुमईण ॥ १७७ ॥
रागाइणो हि दोसा पसूण देवाणमवि य जइ संति । ता को पसु-देवाणं भेओ तुल्लम्मि दोसम्मि ? ॥ १७८ ॥
इ[य] सुपरिक्खियनिरुवमसुविसुद्धगुणोहगेहभूयम्मि । देवम्मि देवबुद्धी उप्पज्जइ पुन्नवंताण ॥ १७९ ॥

गुरुतत्त्वम्

देवो वि नवरि नज्जइ गुरूवइट्ठो गुरू य सुस्समणा। वयछक्क-कायछक्काइविहिजुया समिइ-गुत्तिपरा ॥ १८० ॥
परउवयारपहाणा सत्तणुरूवं सयं पि जयमाणा । अणुयत्तियसह-असहाइसेहवग्गा निरुव्विग्गा ॥ १८१ ॥
निग्गहियकुग्गहा परउवग्गहा मुणियस-परसत्थतत्था । समयाणुरूवजुंजियउस्सग्ग-ऽववायवावारा ॥ १८२ ॥
पडिलेहणा-पमज्जणपमुहसमायारिबद्धपडिबंधा । आवस्सयाइकिरियारया य विरया पमायाओ ॥ १८३ ॥

१ देवविषयका अष्टादश दोषा अन्यत्र रूपान्तरेणापि दृश्यन्ते—अन्नाण १ कोह २ मय ३ माण ४ लोह ५ माया ६ रई ७ अ अरई ८ अ । निद्दा ९ सोय १० अलियवयण ११ चोरिया १२ मच्छर १३ भया १४ य ॥ १ ॥ पाणिवह १५ पेम १६ कीलापसंग १७ हासा १८ य जस्स इय दोसा । अट्ठारस वि पणट्ठा नमामि देवाहिदेवं तं ॥ २ ॥ २ °विहाय° प्रतौ ॥ ३ पोत इव ॥ ४ 'करुणामृतमकरगृहं' करुणामृतसमुद्रम् ॥ ५ स्वप्नेऽपि ॥ ६ °गाहिणो प्रतौ ॥ ७ शक्त्यनुरूपं सदाऽपि यतमानाः । 'अनुवर्तितसहाऽसहादिशैक्षवर्गाः' पालितसमर्थाऽसमर्थादिशिष्यसमूहाः ॥ ८ पहउ° प्रतौ ॥ ९ ज्ञातस्वपरशास्त्रार्थाः ॥

गुरुतत्त्वव्यवस्थापनविषयकं वादस्थलम्

जह चित्तं तह वाया जह वाया तह समग्गकिरिया वि । जेसिं ते इह साहू माया-मयवज्जियसरीरा ॥ १८४ ॥
एत्थंतरम्मि सड्ढो आसधरो नाम भणइ दुवियड्ढो। भयवं! जहुत्तसाहू न संति गुरुणो कहं नेया? ॥ १८५ ॥
पिंडविसुद्धिं न तहा कुणंति सक्कं पि नाऽऽयरंति विहिं । पासत्थाईहिं समं चयंति नाऽऽलवण-नमणाई ॥ १८६ ॥
न परूविंति य सुद्धं न धरंति पमाणजुत्तमुवगरणं । थेवेसु वि रोगाइसु जह तह सेवंति अववायं ॥ १८७ ॥
इय अट्ठारससीलंगसहस्सधरणं विणा कहं समणा । हुंतु गुरू ? तदभावे कह वा ते वंदणिज्जा य ? ॥ १८८ ॥
भणियं गुरुणा भद्दय ! मा साहूणं अभावमुल्लवसु । तदभावे धम्मस्स वि नूणमभावो तए इट्ठो ॥ १८९ ॥
मिच्छत्तपउरयाए न नज्जई दाणि देवनामं पि । किं पुण कालोचियसुमुणिविरहओ मग्गविन्नाणं ? ॥ १९० ॥
'पिंडविसुद्धिं न कुणंति' जं च वुत्तं तयं पि न हु जुत्तं । नियसत्ति-काल-खेत्ताणुसारओ तप्पवित्तीए ॥ १९१ ॥
गिद्धि-सढभावविरहा सुद्धी तदभावओ वि जं भणियं । सुद्धं गवेसमाणो आहाकम्मे वि सो सुद्धो ॥ १९२ ॥
कह नज्जइ अगिद्धी ? घर-धण-सयणाइसव्वचागाओ । जं तेसि नाऽऽसि पुव्वं ते कह ? नणु इच्छचागाओ ॥ १९३ ॥
सुकरो इच्छाचागो अभावओ च्चिय, तुमं न किं कुणसि ? । दीणुद्धरणाइखमा तुज्झ वि नो दीसए लच्छी ॥ १९४ ॥

१ दुर्विदग्धः ॥ २ नेय प्रतौ ॥ ३ शक्यमपि ॥ ४ त्यजन्ति ॥ ५ °णाइं प्रतौ ॥ ६ सुद्धिं प्रतौ ॥ ७ °हस्सध° प्रतौ । अष्टादशशीलाङ्गसहस्रधारणम् ॥ ८ नज्जइ प्रतौ । ज्ञायते इत्यर्थः ॥ ९ कालोच्चिय° प्रतौ ॥ १० विद्धि° प्रतौ । गृद्धिशठभावविरहात् ॥ ११ °णु एत्थ चा° प्रतौ । ननु इच्छात्यागात् ॥

'नेवाऽऽयरंति सक्कं पि' जं च भणियं तयं पि निस्सारं । आवस्सयाइ किं ते न कुणंति ? जमेवमुल्लवसि ॥ १९५ ॥
अह विगैइचागमणुखणमुस्सग्गं कप्पविहॅरणाई य । सक्कं पि नाऽऽयरंती कह नज्जइ सक्कमेयमहो ! ? ॥ १९६ ॥
सामत्थ-कालदोसा सक्कं पि कयाइ जायइ असक्कं । आय-व्वयतुलणाए तदकरणे वि हु न ता दोसो ॥ १९७ ॥
'पासत्थाईसंगं नमणं च न संगयं' ति जं वयसि । तं पि हु मिच्छा सिद्धंतवयणओ तप्पवित्तीए ॥ १९८ ॥
नणु सिद्धंतनिसिद्धं आलवणाई वि किं पुणो नमणं ? । 'ओसन्नो पासत्थो' इच्चाईभूरिभणणाओ ॥ १९९ ॥
सच्चमिमं, ता सुत्ते वायनमोक्कारमाइ किं वुत्तं ? । परियाय-परिस-पुरिसादविक्खओ अह तयं मूढ ! ॥ २०० ॥
जइ ते फुडं अजोगा ता तन्नमणाइ कीसऽणुन्नायं ? । कारणओ वि हु इहरा पासंडीणं पि तं होउं ॥ २०१ ॥
अह ते नो जिणलिंगे का तदवेक्खा हु भावसारत्ते ? । अणुयत्तणा य भणिया तेसिं पि हु जेण वुत्तमिमं ॥ २०२ ॥
अँग्गीयादाइन्ने खेत्ते अन्नत्थ ठिइअभावम्मि । भावाणुवघायऽणुवत्तणाए तेसिं तु वसियव्वं ॥ २०३ ॥
इहरा स-परुवघाओ उँच्छोभाईहिं अत्तणो लहुया । तेसिं च कम्मबंधो दुगं पि एयं अणिट्ठफलं ॥ २०४ ॥
ता दव्वओ उ तेसिं अरत्त-दुट्ठेण कज्जमासज्ज । अणुवत्तणत्थमीसिं कायव्वं किं पि न उँ भावा ॥ २०५ ॥
'न परूविंति य सुद्धं' एयं पि अदूसणं जहाजोगं । पन्नवणं चिय जुत्तं इहरा दोसो त्ति जं भणियं ॥ २०६ ॥

१ विकृतित्यागं अनुक्षणं उत्सर्गं 'कल्पविहरणादि' नवकल्पविहारादि ॥ २ °विरहणा° प्रतौ ॥ ३ इत आरभ्य तिस्रो गाथा उपदेशपदग्रन्थे क्रमशः ८४०-४१-४२ तम्यः । अगीताद्याकीर्णे ॥ ४ उच्छोभः-आलप्रदानम् ॥ ५ उण भवे प्रतौ ॥

॥ १० ॥

गुणन्धर-
सूरेः
आगमनम्

पुरॅ-नगर-खेड-कब्बड-मडंबपमुहेसु सन्निवेसेसु । विहरंतोऽणुक्कमसो गुणंधरो सूरिरिह पत्तो ॥ १६४ ॥
वुत्थो य देव ! कुसुमावयंसउज्जाणमज्झभागम्मि । तित्थरॅस्स व तस्स य दंसणं च जुज्जइ तुहं काउं ॥ १६५ ॥
राया वि तँक्खणक्खुडियनिबिडनिगडो व्व लहुयहुयदेहो । सिंहासणाओ सिग्घं समुट्ठिओ हट्ठ-संतुट्ठो ॥ १६६ ॥
जंपइ य मयणदत्तो देव ! महप्पा स एस मुणिसीहो । जस्स पुरा तुह पुरओ सवित्थरा पयडिया वत्ता ॥
सो एस कामधेणू स एस चिंतामणी महाभागो । सो एस अमयवुट्ठी दट्ठव्वो ता लहुं चेव ॥ १६८ ॥
इय तव्वयणाऽऽयन्नणपमोयभरनिब्भरा कुमरपमुहा । सहसा सहा गुरूणं नमंसणुक्कंठिया जाया ॥ १६९ ॥
अह तक्खणसज्जियजयकरेणुमारुहिय विहियसिंगारो । धरियधवलायवत्तो ढलंतससितेयवरचमरो ॥ १७० ॥
अमरेसरो व्व राया करि-हरि-रह-जाणॅगयजणाणुगओ । महईए विभूईए विणिग्गओ वंदिउं सूरिं ॥ १७१ ॥
पत्तो उज्जाणमहिं उज्झियकरि-रायॅचिंधसिंगारो । भत्तीए जहविहिं वंदिऊण धरणीए उवविट्ठो ॥ १७२ ॥
भॅणिओ गुरुणा नरवर ! संसारे सारमेत्थ मणुयत्तं । तँत्थ वि नॅमंतसामंत-जणवयं भूमिनाहत्तं ॥ १७३ ॥
तं पुण धम्मस्स फलं धम्मस्स य मूलमेत्थ सम्मत्तं । देवॅ-गुरु-तत्तॅसुनिरुत्तनाणओ तं च होइ फुडं ॥ १७४ ॥

सम्यक्त्व-
स्वरूपम्

१ सुर° प्रतौ ॥ २ °स्स य तस्स व दं° प्रतौ ॥ ३ तत्क्षणखण्डितनिबिडनिगडः ॥ ४ °णकय प्रतौ ॥ ५ °यचिंधसिं° प्रतौ ॥ ६ भणिउं प्रतौ ॥ ७ तत्त वि प्रतौ पाठः ॥ ८ नमत्सामन्तजनपदं नमत्सामन्तजनव्रजं वा ॥ ९ देवगुरुतत्त्वसुनिश्चितज्ञानतः ॥ १० °त्तनिसुरु° प्रतौ पाठः ॥

[1]जइ जिणमयं पवज्जह ता मा ववहार-निच्छए मुयह । ववहारनउच्छेए तित्थुच्छेओ हवइ जम्हा ॥ २१९ ॥
तथा—धम्म[2]ज्जियं च ववहारं बुद्धेहाऽऽयरियं सया । तमायरंतो ववहारं गरिहं नाभिगच्छई ॥ २२० ॥
ता[3] दूसमाए दोसं विभाविउं जत्थ जं पलोएज्जा । नाणे व दंसणे वा चरणे वा त[4]मुववूहेज्जा ॥ २२१ ॥
किंच—न[5] विणा तित्थं नियंठेहिं नातित्था य नियंठिया । छक्कायसंजमो जाव ताव अणुसज्जणा दोण्हं ॥ २२२ ॥
तहा—जा संजमया जीवेसु ताव मूला य उत्तरगुणा य । इत्तिरिय-छेय संजम निग्गंथ बउसा य पडिसेवी ॥ २२३ ॥
धीरपुरिसपरिहाणिं नाऊणं मंदधम्मिया केइ । संविग्गजणं हीलंति ताण पयडो इमो दोसो ॥ २२४ ॥
संतगुणछायणा खलु परपरिवाओ य होइ अलियं च । धम्मे य अबहुमाणो साहुपओसे य संसारो ॥ २२५ ॥
जइ संपुन्नं एयं हविज्ज सिद्धी वि ता न वुच्छेज्जा । एयं पि नो मुणिज्जइ अहो ! महामोहमाहप्पं ॥ २२६ ॥
देव-गुरु-धम्म-किरियं पुव्वं जत्तो वियाणियं ते वि । हीलिज्जंती जइणो ही ही ! अकयन्नुओ लोगो ॥ २२७ ॥
इय नरवर ! केच्चिरमवुहजीवदुविलसियं निसामिहसि ? । साहूहिंतो वि परो मोक्खोवाओ धुवं नत्थि ॥ २२८ ॥

धर्मतत्त्वम्

आ[6]गमतत्तं च नरिंद ! सुणसु गयराग-दोस-मोहाण । एगंतपरहियाणं जिणाण वयणं हियं अमियं ॥ २२९ ॥

१ गाथेयं पञ्चवस्तुके १७२ तमी ॥ २ गाथेयमुत्तराध्ययने अ० १–४२ तमी ॥ ३ ततः दुष्षमाया दोषं विभाव्य ॥ ४ **तमव**° प्रतौ ॥ ५ गाथेयं व्यवहारदशमोद्देशकभाष्ये ३८९ तमी ॥ ६ आगमतत्त्वं च नरेन्द्र ! शृणु गतरागद्वेषमोहानाम् । एकान्तपरहितानां जिनानां वचनं हितं अमितम् ॥ दृष्टान्तयुक्तिहेतुगम्भीरमनेकभङ्गनयनिपुणम् । आदिमध्यावसानेषु दूरपरित्यक्तव्यभिचारम् ॥

दिट्ठंत-जुत्ति-हेऊगंभीरमणेगभंग-नयनिउणं । आई-मज्झ-ऽवसाणेसु दूरपरिच्चत्तव[1]भिचारं ॥ २३० ॥
सिव[2]पहरयणपईवं व कुमयपवणप्पणोल्लणाऽसज्झं । सं[3]झं व बहुविहाइसयतारतारानिवहजणणे ॥ २३१ ॥
इय देवम्मि गुरुम्मि य आगमविसए य जायबोहस्स । संकाइदोसरहिया पडिवत्ती होइ सम्मत्तं ॥ २३२ ॥
एयम्मि पावियम्मि नत्थि तयं जं न पावियं होइ । एयम्मूलाउ च्चिय मह[4]ल्लकल्लाणवल्लीओ ॥ २३३ ॥
अह मयणदत्त-नरवइसुएहिं संजायपरमतोसेहिं । भणियं भयवं ! साहु[5]प्पसायओ पत्तरिद्धीणं ॥ २३४ ॥
अम्हाणं पि हु पुरओ को एसो साहुदूसणं कुणइ ? । अहवा होयव्वं एत्थ पुव्वदुचरियदोसेण ॥ २३५ ॥
ता भयवं ! साहह को पुणेस पुव्वे भवम्मि हुंतो ? त्ति । मु[6]णिवयणा जंपियमेगमाणसा भो ! निसामेह ॥ २३६ ॥

आसधरस्य पूर्वभवः

एसो सावत्थीए नयरीए गिहवइस्स बंभस्स । पुत्तो नाम कुबेरो त्ति आसि पिउणो य सो रोसा ॥ २३७ ॥
संभूयगणिसमीवे पव्वइओ [7]केच्चिराणि वि दिणाणि । विणय-नएहिं वट्टिय पच्छा परिवडियउच्छाहो ॥ २३८ ॥
आवस्सयाइएसुं आलस्सं पइदिणं पि कुणमाणो । गुरुणा सा[8]सिज्जंतो सा[9]हूहि य कोवमुव्वहइ ॥ २३९ ॥
ईसिं पि साहुखलियं पेक्खित्ता भणइ निययदुच्चरियं । रक्खंति न थेवं पि हु परस्स पुण दिंति उवएसं ॥ २४० ॥
'बाल-गिलाणाईणं वेयावच्चं सया वि किच्चं' ति । गुरुणो वि परेसिं पन्नविंति न सयं पुण करेंति ॥ २४१ ॥

१ °**वाभि**° प्रतौ पाठः ॥ २ शिवपथरत्नप्रदीपं इव कुमतपवनप्रनोदनाऽसाध्यम् । सन्ध्या इव बहुविधातिशयतारतारानिवहजनने ॥ ३ **सज्झं**° प्रतौ ॥ ४ महाकल्याणवल्ल्यः ॥ ५ °**हुपासा**° प्रतौ ॥ ६ मुनिपतिना ॥ ७ कियच्चिराणि ॥ ८ शिष्यमाणः ॥ ९ **साहुंहि य** प्रतौ ॥

एमाइदूसणाइं वागरमाणो किलिट्ठमण-वयणो । मरिउं असुरनिकाए किब्बिसियासुरसिरिं पत्तो ॥ २४२ ॥
तत्तो चविउं इण्हिं सावयभावं गओ वि एस इहं । [1]पुव्वाणुवेहउ च्चिय पडुच्च मुणिणो इय भणेइ ॥ २४३ ॥
इय सोच्चा तं सड्ढं पन्नविउं ठाविउं च सुहमग्गे । नरवइपमुहा सव्वे गिहिधम्मे उज्जया जाया ॥ २४४ ॥
कारियजिणवरभवणा, सम्माणियपणइणो मुणियसमया । समणजणपज्जुवासण[2]पराइणा लोगठि[3]ईकुसला ॥ २४५ ॥
सविसेसजाणणम्मि समुज्जया वि[4]हियकुमयवामोहा । दक्खिन्न-दयाइगुणन्निया य भववासनिव्विन्ना ॥ २४६ ॥
इय ते वि[5]न्नायजहत्थियत्थसिद्धन्तसारसव्वस्सा । जिणधम्मे रायाई निच्चलचित्ता दढं जाया ॥ २४७ ॥
सूरी वि सुचिरमणुसासिऊण रायाइणो जहाभिमयं । विहरिउमारद्धो गाम-नयर-पुरमंडियं वसुहं ॥ २४८ ॥
अह अन्नया कयाई [6]सोहम्मसहट्ठिएण सुरवइणा । करकलियामलयं पिव[7] ओहीए मही नियंते[8]णं ॥ २४९ ॥
सम्मत्तनिच्चलमणं मुणिउं तं भूवइं सभापुरओ । भणियं भो भो तियसा ! नरवम्मनराहिवो एस ॥ २५० ॥
ससुराऽसुरतिजएण वि न चालिउं तीर[9]ए जिणमयाओ । ता एत्तो वि न धन्नो कयपुन्नो वा जं[10]ए अन्नो ॥ २५१ ॥
सोऊण य वयणमिमं सुवेगनामो सुरो विचिंतेइ । बालाणं व पहूणं जहतह छ[11]ज्जन्ति उल्लावा ॥ २५२ ॥
कहमन्नह नरमित्तो न चालिउं तीरइ त्ति हरिराह ? । अहवा सयमेव तहिं गंतुमहं तं परिक्खामि ॥ २५३ ॥

१ 'पूर्वानुवेधात्' पूर्वसम्बन्धाद् एव प्रतीत्य ॥ २—परायणाः—तत्पराः ॥ ३ °ठिई° प्रतौ ॥ ४ **विहियकुमुय**° प्रतौ । विहतकुमतव्यामोहाः ॥ ५ विज्ञातयथास्थितार्थसिद्धान्तसारसर्वस्वा ॥ ६ सौधर्मसभास्थितेन ॥ ७ पिव इवार्थकमव्ययम् ॥ ८ पश्यता ॥ ९ शक्यते ॥ १० जगति ॥ ११ राजन्ते ॥

[1]आमे घडे निहित्तं जहा जलं तं घडं विणासेइ । इय सिद्धंतरहस्सं अप्पाहारं विणासेइ ॥ २०७ ॥
जोग्गा-जोग्गमबुज्झिय धम्मरहस्सं कहेइ जो मूढो । संघस्स पवयणस्स य धम्मस्स य पच्चणीओ सो ॥ २०८ ॥
'न पमाणजुत्तमुवहिं धरिंति' एयं पि तुच्छमाभाइ । असढोवदंसियत्तेण तव्वि[2]हस्सुवहिनिवहस्स ॥ २०९ ॥
इहरा बाहुट्ठवियं पत्तं एगं तु पडलयच्छन्नं । पत्ताबंधकयं पुण बीयं मत्तं अगोअरओ ॥ २१० ॥
एगंगिय रयहरणं भवे न इन्हिं विसिट्ठमुणिणो वि । ता एत्थ पयत्थम्मि पुव्वे मुणिणो च्चिय पमाणं ॥ २११ ॥
'सेवंति य अ[3]ववायं' दूसणमेयं पि घडइ नो सम्मं । तव्विहसंघयणाईविरहा सुत्तुत्तिओ य तहा ॥ २१२ ॥
[4]सव्वत्थ संजमं संजमाउ अप्पाणमेव रक्खेज्जा । मुच्चइ अइवायाओ पुणो विसोही न याविरई ॥ २१३ ॥ किंच—
[5]काहं अछित्तिं अदुवा अहीहं तवोवहाणम्मि य उज्जमिस्सं । गणं व नीईय व सारइस्सं सालंबसेवी समुवेइ मोक्खं ॥
सीलंगाण वि भावो नेओ सव्वन्नुवयणओ चेव । कह भणियमन्नहेमं ? बकुस-कुसीलेहिं जा तित्थं ॥ २१५ ॥
कालाणुसारकिरियारय त्ति चारित्तिणो पवुच्चंति । जह कप्परुक्खविरहे रुक्खा भन्नंति लिंबा वि ॥ २१६ ॥
अह [6]सम्ममसुणियम्मी मुणिम्मि नमणाइ कीरइ कहं ? ति । वभिचारदंसणाओ एयं पि न सुंदरं जम्हा ॥ २१७ ॥
[7]छउमत्थसमयचज्जा ववहारनयाणुसारिणी सव्वा । तं ववहारं [8]कुव्वं सुज्झइ सव्वो वि समईए ॥ २१८ ॥

१ 'आमे' अपक्वे ॥ २ °**व्विहंसुव**° प्रतौ ॥ ३ **अविवा**° प्रतौ ॥ ४ गाथेयमोघनिर्युक्तौ ४६ तमी ॥ ५ गाथेयं व्यवहारपीठिकायां १८४ तमी ॥ ६ **संगममु**° प्रतौ ॥ ७ छद्मस्थसमयचर्या ॥ ८ कुर्वन् ॥

ते धन्ना सप्पुरिसा ताण जए निम्मला परं कित्ती । जेहिं नियजीविएण वि जिणसासणमुन्नइं नीयं ॥ २६६ ॥
किं लच्छीए ? किं वा विहलेणं तेण भूवइत्तेण ?। किं वा महं विवेगेण ? किं व सत्थत्थबोहेण ? ॥ २६७ ॥
जो हं सिरिजिणसासणलहुत्त[1]सहकारिकारणं जाओ । एत्तो वि जीविएणं कलंकपंकंकिएणं किं ? ॥ २६८ ॥
ता होउ जंपिएणं पारद्धं कुणह साहुणो तुरियं । एयं चिय पच्छित्तं इमस्स दुविलसियस्स ममं ॥ २६९ ॥

इय जाव निवो सब्भावगब्भवयणाइं उल्लविय सज्जो । जाओ जीवियचागस्स ताव सहस त्ति तियसेण ॥२७०॥
सम्मत्तनिच्चलत्तं ओहीए लक्खिऊण सविसेसं । [2]हरिसंसियाउ संहरियसयलडमरप्पवंचेण ॥ २७१ ॥
पयडियनियरूवेणं भालयलाऽऽरोविओभयकरेण । भणियं भो भो नरवर ! कयमित्तो चित्ततावेणं ॥ २७२ ॥
सम्मत्तथिरत्तं तुह सोहम्मिंदेण सलहियं दूरं । तमसद्दहिऊण मए [3]कयमेवंविहमहाडमरं ॥ २७३ ॥
न तुमाहिंतो वि परो सम्मद्दिट्ठी जयम्मि वि विसिट्ठो । कह न मही रयणवई जीसे नाहो तुमं जाओ ॥ २७४ ॥

रायाऽऽह भो महायस ! किं [4]सलहसि मे वराडयसमस्स ? । सप्पुरिसरयणभरिए जिणिंदवरसासणसमुद्दे ॥ २७५ ॥
अह नियसिराउ मउडं फुरंतमणिकुंडलं [5]पणामित्ता । कयसविणयप्पणामो तियसो जंपेउमाढत्तो ॥ २७६ ॥

१ °सहिकारि° प्रतौ ॥ २ 'हरिशंसितात्' इन्द्रकथितात् संहृतसकलविप्लवप्रपञ्चेन ॥ ३ कृत एवंविधमहाविप्लवः ॥ ४ श्लाघसे मम कपर्दकतुल्यस्य ॥ ५ अर्पयित्वा ॥

नृवर ! कुमुदकन्दच्छेदशुभ्रैर्यशोभिस्तव धवलितमेतत् सौधवद् विश्वविश्वम् ।
करतलकमलान्तर्भृङ्गिकेवाऽऽश्रिता श्रीरखिलमपि विलीनं प्राक्कृतं दुष्कृतं च ॥ १ ॥
तदिह भुवि न भद्रं भावि यन्न त्वयीतः, शिवसुखसखिभावं नीत आत्मा त्वयाऽसौ ।
तव गुणगणनायां सत्प्रवादप्रवृत्तिः, [1]ध्रुवमपरनरेषु द्रागभून्मुद्रितेव ॥ २ ॥
त्वमिह सुकृतभाजामग्रणीः श्रीजिनेन्द्रप्रवचनरसभिन्नास्तद्वयुद्धानवापि (?) ।
कथमिव न विशुद्ध्यै दूरनिर्धूतपङ्कं, भवति हि भवदंह्र्योर्दर्शनं स्पर्शनं च ? ॥ ३ ॥
इति सुचिरमुदात्त-स्फीत-सत्यार्थसारं, स्तवनमनुविधाय [2]प्रेक्ष्यमाणो नृपेण ।
गवलजलदनीलं लङ्घय[न्] व्योममार्गं, झगिति सुरनिकेतं स्वं जगामाऽमरः सः ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे सम्यक्त्वाधिकारे नरवर्मनृपकथानकं समाप्तम् ॥ १ ॥

सम्मत्ते पत्ते वि हु तदसुद्धीए न को वि होइ [3]गुणो । ता तव्विसुद्धि[4]मणहं भणामि [5]समयाणुसारेण ॥ १ ॥
संकाईया दोसा चउरो वि हु असुहभावसंजणगा । दूरेण वज्जणिज्जा सम्मत्तविलुंपगा पावा ॥ २ ॥
[6]उववूहणाइया पुण निद्दंसिया सुंदरा गुणा चउरो । एए इह करणिज्जा दोसा एए वि विवरीया ॥ ३ ॥

१ ध्रुव° प्रतौ ॥ २ प्रेक्षमा° प्रतौ ॥ ३ गुणे प्रतौ ॥ ४ अनघाम् ॥ ५ आगमानुसारेण ॥ ६ 'उपबृंहणादिकाः' प्रशंसनादिकाः ॥

शङ्कायाः स्वरूपम्

कंखाईण सरूवं नियनियठाणेसु वन्निस्सामि । ता संकापयमेव हि वन्निज्जंतं निसामेह ॥ ४ ॥
संसयकरणं संका सा दुविहा देस-सवभेएण । देसे जीवाईणं एक्कं संकेइ किं पि पयं ॥ ५ ॥
सवे पुण सवं पि हु दुवालसंगं पि संकइ विमूढो । किं होज्ज जिणुत्तमिमं ? अन्नेण व केणई विहियं ? ॥ ६ ॥
संकाकलंककलुसीभवंत[1]भयवंतवुत्ततत्तस्स । कज्जे निच्छयसारा कह चिट्ठा घडइ सुविसिट्ठा ? ॥ ७ ॥
संदेहदीहदोलाधिरूढचित्तो न साहिउं सक्को । इहलोइयं पि किंसिकम्ममाइ परलोइयं दूरे ॥ ८ ॥ किंच—
संकाविसविलसिरबहुवियप्पखिप्पंतचित्तविन्नासो[2] । इहइं चिय दुहभागी जायइ धणदेववणिओ व ॥ ९ ॥
तथाहि—अत्थि इहेव जंबुद्दीवे दीवे[3] एरवयखेत्ते कलिंगदेसकुलंगणावयणं व [4]मणोहरवाणियं[5], कम्मगंथपगरणं व [6]बहुविहपयइट्ठिइपएसगहणं, धण-धन्नसमिद्धं जयत्थलं नाम खेडं[7] । तत्थ य वत्थवो विसाहदत्तो नाम सेट्ठी । सेणा नाम [से] भज्जा । दुवे य ताण पुत्ता—संवरो धणदेवो य । दुवे वि य भायरो परोप्परं पिइं [8]वड्ढंता दिणाइं गमिंति ।
अन्नया य पिउणा विचिंतियं—को इमस्स घरस्स अब्भुद्धारकारी एएसिं होहि ? त्ति परिक्खं करेमि, तओ तं [9]परिक्खा-

१–भगवदुक्ततत्त्वस्य ॥ २ शङ्काविषविलसनशीलबहुविकल्पक्षिप्यमाणचित्तविन्यासः । विन्यासः–स्थैर्यम् ॥ ३ °वे वरवय° प्रतौ ॥ ४ मणोरहवा° प्रतौ ॥ ५ मनोहरा वाणी यत्रैतादृग् मुखम्, अन्यत्र मनोहरं वाणिज्यं यत्रेति ॥ ६ बहुविधैः प्रकृतिस्थितिप्रदेशैः–एतद्विषयकविचारैरित्यर्थः गहनमेवंविधं कर्मग्रन्थप्रकरणम्, अन्यत्र बहुविधाः याः प्रकृतयः–प्रजास्तासां स्थितिः–निवासो यत्र एवंप्रकारैः प्रदेशैः–स्थानैर्गहनमिति ॥ ७ धूलिप्राकारपरिक्षिप्तं स्थानं खेटमित्युच्यते ॥ ८ वड्ढंता प्रतौ ॥ ९ परीक्षानिष्पन्नम् ॥

सुवेगदेवेन नरवर्मनृपस्य सम्यक्त्व-दार्ढ्य-परीक्षणम्

अह कय[1]मुणिवररूवो कइवयसुस्समणपरिवुडो होउं । रायंगणमणुपत्तो दिट्ठो नरवम्मनरवइणा ॥ २५४ ॥
अब्भुट्ठिओ य सहसा [2]सहरिसमह वंदिऊण पुट्ठो य । भयवं ! साहेह महं किं पि हु आगमणकज्जं ? ति ॥ २५५ ॥
सुरमुणिणा भणियं भूमिनाह ! किं संजयाणमिह कज्जं ? । जेसिं मोक्ख-भवेसु वि तुल्ला चिय चित्तपडिवत्ती ॥ २५६ ॥
तह वि हु अणुग्गहकए मम किं पि कहेह भूवई भणइ । एत्थंतरम्मि निसियग्गखग्गहत्थेण केणावि ॥ २५७ ॥
केण वि कुंतकरेणं केण वि निक्किवकिवाणिहत्थेणं । समणेणं पडिरुद्धो राया करिकेसरीवाऽऽसु ॥ २५८ ॥
नट्ठो सि अज्ज [3]रुद्धो सि अज्ज अज्जं न होसि रे दुट्ठ ! । इय जंपिरेहिं तेहिं राया सत्तु व पग्गहिओ ॥ २५९ ॥
अह ईसिहसणविहडियउट्ठउडफुरंतदंतकंतीहिं[4] । धवलिंतेण व भवणं नरवइणा जंपियं एवं ॥ २६० ॥
भयवं ! किमिंदुमंडलसिहिकणवरिसणसरिच्छमेयं[5] ? ति । ते आहु रे कुपत्थिव ! न मुणसि दुविणय ! निद्धम्म ! ॥ २६१ ॥
सीयंति महामुणिणो दायारो नेव संति देसे वि । भुंजसि य सयं रज्जं सावयवायं वहसि कूडं ॥ २६२ ॥
इय कवडभत्तिसरिसं तुज्झ पयं संपयं समप्पेमो । एवं वुत्ते तेहिं राया पडिभणिउमाढत्तो ॥ २६३ ॥
सच्चमिमं मह दोसो एसो नवरं मयंकधवलस्स । जिणसासणस्स कीरइ कीस कलंको मुहा एवं ? ॥ २६४ ॥
एसो लोगो नाही सवे चिय एरिसा धुवं समणा । ता एगंते काउं किमहं पावो न निग्गहिओ ? ॥ २६५ ॥

१ कतिपयसुश्रमणपरिवृतः भूत्वा । राजाङ्गणम् ॥ २ सहर्षम् अथ ॥ ३ रुट्ठो सि प्रतौ ॥ ४ ईषद्धसनविघटितौष्ठपुटस्फुरद्दन्तकान्तिभिः । धवलयता ॥ ५ इन्दुमण्डलशिखिकणवर्षणसदृशमेतद् ? इति ॥

भूरिलाभं थेवेण हारेसि ? त्ति । तेण भणियं—को मुणइ तत्थ लाभो भविस्सइ न व ? त्ति, ता थोवलाभे वि दिट्ठे तं[1]प्परिहारो अजुत्तो—त्ति विणिवे[2]ट्टियं सव्वं । तदुवलद्धदव्वेण य अन्नं घेत्तूण पट्ठिओ, कालंतरेण पत्तो गज्जणयं । पयट्टो य पच्चक्खपसिद्धं पि संसयारोवणीहिं परिहरिय दव्वज्जणोवायं तेसु तेसु असारवावारेसु । 'सच्छंदो' त्ति उवेहिओ परियणेणं । उवलद्धतदभिप्पाएण य उवयरिउमारद्धो सो एगेण नयर[3]वुत्तेण । तच्छंदणाणुवित्तित्तणेण य पवत्तो से अभिन्नहिययत्तणं, आयड्ढियं च तं[4]त्तववएसेण तत्तो धं[5]णं । एवं च तुच्छवित्तो जाओ एसो ।

अन्नया य [6]मरुययरम्मदाणसुमणोहरतरुणीकुरुवल्लरीविलुलण-वलण-चलण-डिंखोलणखणसंपत्तसोरभा सिसिरियसरियनीरभरदुवहतुहिणुक्किरणदुस्सहा उत्तरदिसिस[7]मुत्था सव्वत्थ वि गंधवहा वियंभिया । पोढिमणुपत्तो हेमंतो । [8]वड्ढिया गेहिणीगाढालिंगणुक्कंठा । विमण-दुम्मणीहूया पहियवंठा । ठा[9]णट्ठाणपइट्ठियधम्मग्गिट्ठियापेरंतवीसमंतरोरनियरा जाया सन्निवेसपरिसरा । [10]विपंकतिल्लकल्लवियघणघुसिणंगरागरेहंतपुरजणाणुसरिज्जंतवलभीमज्झा संवुत्ता दिणावसाणसंज्झा । [11]परिफुट्टकुंदसोरभभरबंधुरा विप्फुरिया काणणसमीरा ।

१ 'तत्परिहारः' लाभपरिहारः ॥ २ समापितमित्यर्थः ॥ ३ नगरपुत्रेण ॥ ४ तत्तद्व्यपदेशेन ॥ ५ वणं प्रतौ ॥ ६ मरुबकवृक्षरम्यदानसुमनोहरतरुणीकुटिलकेशवल्लरीविलुलन–वलन–चलन–डिंखोलनक्षणसम्प्राप्तसौरभाः शिशिरितसरिन्नीरभरदुर्वहतुहिनोत्किरणदुस्सहाः उत्तरदिक्समुत्थाः सर्वत्रापि 'गन्धवाहाः' वाताः विजृम्भिताः ॥ ७ °मुत्थस° प्रतौ ॥ ८ वर्धिता गेहिनीगाढालिङ्गनोत्कण्ठा । विमनोदुर्मनीभूताः पथिकवण्ठाः ॥ ९ स्थानस्थानप्रतिष्ठितधर्माग्निष्ठिकापर्यन्तविश्राम्यद्रोरनिकराः जाताः सन्निवेशपरिसराः ॥ १० विपङ्क–आर्द्रितघनघुसृणाङ्गरागराजमानपुरजनानुस्रियमाणवलभीमध्या संवृत्ता दिनावसानसंध्या ॥ ११ विकसितकुन्दसौरभभरबन्धुराः विस्फुरिताः काननसमीराः ॥

एवंविहे य पवहंते हेमंते सो धणदेवो कुवि[य]प्पारोवियदोसं निद्दोसं पि परियणं संकंतो गिहदुवारं निबिडकवाडसंपुडं ता[1]लिऊण कुंचियाहत्थो रच्छामुहपइट्ठियाए अग्गिट्ठियाए सिसिरसमीरविहुरसरीरतावं[2]णट्ठा उवविट्ठो विसिट्ठजणगोट्ठीए । एत्थंतरे उच्छलिओ बहलकोलाहलो । 'किमेयं ? किमेयं ?' ति भीया उट्ठिया जणा पलोइउं पयत्ता दिसिवलयं । दिट्ठो य उड्ढं पवड्ढंतो कवोयकंधराधूसरो स[3]मुच्छलियघणरिंछोलिसंकियवकंगुग्गीवसच्चविज्जंतो मंसलो धूमनिवहो । 'कस्स घरमेयं डज्झइ ?' त्ति जाव संकासंकुनिभि[4]ज्जमाणमाणसो उ[5]प्पित्थहियओ जणो चिट्ठइ ताव सि[6]ट्ठमेगेण नरेण—एयस्स धणदेवस्स इमं मंदिरं डज्झइ त्ति । तओ तुरियं पेसिओ वि जणेण मंदिराभिमुहं सो न वच्चइ संसं[7]यालिद्धबुद्धी, भणइ य—न संभाविज्जइ मम मंदिरम्मि, किंतु तुं[8]हिणकणाणुविद्धगंधवाह[बाहिय]पहियपज्जालिओ तं[9]णरासिजलणो भविस्सइ, कीस मुहा वाउला होह ? उवविसह सं[10]ठाणेसु । खणंतरेण य इओ तओ पलोयंतो संपत्तो परियणो, भणिउं पवत्तो य—भो भो धणदेव ! किमेवमणाउलो चिट्ठसि ? न पेच्छसि [11]आमूलविफुरियफारफुलिंगुग्गारदारुणो दारुदहणदीहरसिहाकरालो अनलो घरं दहंतो ? त्ति । इमं सोच्चा उट्ठिओ सो गओ घरं सुं[12]साणतुल्लं । निदड्ढसव्वसारं दिट्ठमगारं । 'खीणविभवो' त्ति परिचत्तो परियणेणं । 'वा[13]उलो' त्ति धिक्कारिओ जणेणं ।

१ 'तालयित्वा' तालकं दत्त्वेत्यर्थः ॥ २ °वणुट्ठा ओव° प्रतौ ॥ ३ सउच्छ° प्रतौ । समुच्छलितघनपङ्क्तिशङ्कितवकाङ्गोद्ग्रीवदृश्यमानः ॥ ४ °भिच्चमा° प्रतौ । निर्भिद्यमान–॥ ५ त्रस्तहृदयः ॥ ६ सिट्ठं मे° प्रतौ ॥ ७ संशयाश्लिष्टबुद्धिः ॥ ८ तुहिनकणानुविद्धगन्धवाह[बाधित]पथिकप्रज्वालितस्तृणराशिज्वलनः ॥ ९ °तणुरा° प्रतौ ॥ १० संठाणे° प्रतौ ॥ ११ आमूलविस्फुरितस्फारस्फुलिङ्गोद्गारदारुणः दारुदहनदीर्घशिखाकरालः ॥ १२ श्मशानतुल्यम् ॥ १३ वातूलः ॥

अनिव्वहंतो य पट्ठिओ पिउघराभिमुहं । छुंहाकिलंतो य पविट्ठो एगत्थ सन्निवेसे भिक्खं परिभमिउं । 'सुंदरागारो' त्ति अणुकंपाए उववेसिऊण सायरं दिन्नं से एगाए घरसामिणीए भोयणं । उवसंतखुहावेयणो य नीहरिओ तत्तो । नवरं जाया से संका—अच्चायरदाणेण मुणेमि कम्मणाइदोसदुट्ठं भोयणमेयं ति । अच्चत्थसंकावसेण य उप्पन्ना उदरपीडा । महाकट्ठेण पत्तो एगम्मि नयरे । आपुच्छिऊण पविट्ठो वेज्जघरे । सिट्ठो वेज्जस्स दोससंभवो । दिन्नं उदरसोहणमोसहं से वेज्जेण । गंगासोउ व पयट्टो से अईसारो । अणुकंपाए तहावि ओसहदाणेण पडियग्गिओ किं पि वेज्जेण । ईसिववगयसंकावियारो य पट्ठिओ मग्गे । कालंतरेण पत्तो पिइमंदिरं । तप्पुव्वसमागयपरियणमुहनिसामियसमग्गवुत्तंतेण य पिउणा कया तदुचियपडिवत्ती ।

अवरवासरे य वद्धाविओ बीयसुयागमणेण सेट्ठी । पट्ठिओ य तयभिमुहं । कोसंतरमुवगएण निसामिओ वसहकंठघंटारवो । खणंतरेण य पत्तो पउरकरह-गोण-वेगसर-जाण-जंपाणपमुहपहाणसामग्गीए भडनियरपडियरिँओ सुओ । पडिओ पिउणो चलणेसु । सामग्गिए च्चिय मुणिओ से भूरिदव्वोवज्जणोवक्कमो । पविट्ठो नयरं, जायं वद्धावणयं । सोहणतिहिमुहुत्ते य कओ सो घरसामी । इयरो कम्मयरकज्जेसु नियुत्तो, निच्चं पि दुखाभागी य संवुत्तो संकादोसेणं ति ।

जइ दव्वओ वि संका संकेयपयं धुवं असिद्धीणं । ता कह जिणुत्ततत्ते सा कल्लाणाइं निंहणेज्जा ? ॥ १ ॥
अहवा संदेहमहातमोहवामोहिया इहं जीवा । चिंतामणिं पि पत्तं चयंति लेट्ठुं ति मन्नन्ता ॥ २ ॥

१ क्षुधाक्रान्तश्च ॥ २ गङ्गास्रोत इव ॥ ३ °इगारो प्रतौ ॥ ४ °ओ पत्तो सु° प्रतौ ॥ ५ निखन्यात् ॥

निव्वडियं कुडुंबाहिवच्चे पइट्ठिऊण अप्पणा सुहेण निच्चिंतो निवसामि त्ति । पारद्धा परिक्खा, वाहरिया दो वि पुत्ता—अरे ! सुवन्नसहस्सपंचयं घेत्तूण वच्चह तुब्भे दो वि विभिन्नदेसेसु, दंसेह अप्पणोऽप्पणो दव्वोवज्जण[विन्नाण]–न्ति । पडिवन्नं तेहिं । पग्गहियपभूयभंडा पट्ठिया देसंतरं । तत्थ जेट्ठो गओ दक्खिणावहं, इयरो य उत्तरावहं ।

जेट्ठेण कंचीपुरं पत्तेण पारद्धा अणेगदव्वज्जणोवाया, कया नरिंदेण समं मेत्ती, उँवयरिउमारद्धो य पवरवत्था-ईहिं । भणिओ य सहाइलोगेण—अहो ! किमेवं निरत्थओ अत्थव्वओ कीरइ ? किं केण भुयंगम-महीनाह-हुया-सणा उँवयारेण गहिया दिट्ठा ? जेणेवं वट्टसि । संवरेण भणियं—अरे मूढा ! तुब्भे न जाणह परमत्थं । जेण—

गंतव्वं रायउले राया तव्वल्लभा य भइयव्वा । जइ वि न वि हुंति विहवा नूणंऽणत्थप्पडीयाँरो ॥ १ ॥
जइ पुण धणव्वयभया न भइज्जइ भूवई सैइन्नेण । ता ओहाँवणठाणं नीयाण वि होइ किं चोज्जं ? ॥ २ ॥

इति विणिच्छिय सबुद्धिवियप्पेण अविगणिऊण मुद्धजणुल्लावं तह कह वि पारद्धो ववहारो जह सुखेत्तनिहित्तबीयनिवहो व्व भूरिफलपब्भारो जाओ । पाविया पसिद्धी । रायमडप्फरेण य उस्सिंखला वि गहिय निययलब्भं इब्भो य भूओ अचिरेणं ।

इओ य धणदेवो गज्जणयं पडुच्च वच्चंतो आवासिओ एगत्थ सन्निवेसे । आगया य तन्निवासिणो । मग्गिओ य सो तेहिं भंडं । 'अत्थि केत्तिओ वि लाभो' त्ति दाउमारद्धो पडिसिद्धो परियणेणं—किमेवं अट्ठाणदाणेणं करट्ठियं पि

१ °प्पणद° प्रतौ ॥ २ 'उपचरितुम्' सेवितुम् ॥ ३ उपचारेण ॥ ४ °यारा प्रतौ ॥ ५ सइत्तेण प्रतौ । 'सकर्णेन' निपुणेन ॥ ६ 'अपभ्राजनास्थानम्' निन्दायाः स्थानम् ॥ ७ आश्चर्यम् ॥ ८ राजगर्वेण च उच्छृङ्खलादपि गृहीत्वा निजकलभ्यम् ॥ ९ °ज्जणयं प्रतौ ॥

दुविकप्पा वि न कप्पइ काउमिमा दंसणं पवन्नस्स । कुपहपरिच्चागेण हि सुपहपवित्ती जणे दिट्ठा ॥ ४ ॥
न हि भूरिमग्गलग्गो पंहिओ पाउणइ वंछियं ठाणं । न विसे वि अमयचिंता तक्कज्जपसाहणं कुणइ ॥ ५ ॥
न य जुत्ता-ऽजुत्तवियारसारवावारविरहिया पुरिसा । अंहि[य]च्चागेण हियत्थसाहणे उज्जया हुंति ॥ ६ ॥
ताऽसव्वन्नुपणीए किच्चे च्चिय समुचिया परं कंखा । अन्नन्नकुतित्थियवग्गमग्गचागेण अच्चंतं ॥ ७ ॥
इहभवियकिच्चविसया विपेक्ख कंखा असंखदुक्खकरी । तव्वित्तसमाणसो इह दिट्ठंतो नागदत्तगिही ॥ ८ ॥

तथाहि—अत्थि इहेव भारहे वासे वियड्ढजणवड्ढियाणंदा वासुपुज्जजिणजम्मणजणियाणेगकल्लाणा चंपा नाम नयरी । तत्थ य वत्थव्वो सयंभू नाम वणिओ । पउमाभिहाणा से भज्जा । ओवाइयसयसंपत्तजम्मणो नागदत्तो नाम ताण पुत्तो । पाढिओ संजोग्गयाणुरूवं कलाकलावं । जोव्वणोवगओ य काराविओ समजाइ-रूवाइंगुणाए कुलबालियाए सलक्खणनामधेयाए पाणिग्गहणं । कालक्कमेण य जाओ कुडुंबपब्भारुव्वहणसमत्थो ।

अन्नया य पिया पारद्धो जराए, असारीकओ रोगेहिं, परिचत्तो बुद्धि-बल-परक्कमेहिं । तव्विहो य सो अप्पाणमधरमव-धारिऊण पुत्तं भणिउं पवत्तो—वच्छ ! पेच्छसु वुच्छेयपत्तं व मह सरीरगं, अज्जं कल्लं वा निच्छियं विवज्जिही, ता एत्थ इमं वत्तव्वं—तुमं हि सप्पुरिसमग्गे अप्पाणं ठविऊण तहा वट्टिज्जासि न जहा कुडुंबमम्हारिसाणमणुसरइ, न वा दुज्जणाणं हीलापयं

१ पथिकः प्रगुणयति वाञ्छितं स्थानम् । न विषेऽपि अमृतचिन्ता ॥ २ अहितार्थत्यागेन हितार्थसाधने ॥ ३ इय भ° प्रतौ ॥ ४ °क्ख संखा प्रतौ ॥ ५ उपयाचित- ॥ ६ संजो° प्रतौ ॥ ७ °इगणा° प्रतौ ॥ ८ 'अधरं' असमर्थम् ॥

वच्चइ, किंच—वच्छ ! न जाणिज्जइ कम्मपरिणईए का वि दसा पल्लट्टइ, अओ जइ कह वि न निंच्छारिउं पारेसि कुडुंबं ता अम्ह कुलदेवया कालिंजरगिरिपुव्वसिहरदेवउलपइट्ठिया चिट्ठइ तीसे आराहणं करेज्जासि, अम्ह पुव्वपुरिसेहिं पि दुत्थावत्थावडिएहिं आराहिया खु सा वंछियफलया जाय त्ति । सिरविरइयंजलिणा य 'तह' त्ति पडिस्सुयं नागदत्तेण । पवन्नभत्त-पाणपरिच्चागो य विवन्नो एसो । कयाइं तप्पारलोइयकिच्चाइं नागदत्तेण ।

विगयसोगीहूए य एसो कालक्कमेणं पयट्टो पुव्वपुरिसट्ठिईए अत्थोवज्जणाइवावारेसु । जाया य वुद्दाभिहाणेण सेट्ठिसुएण सह मेत्ती । समसुह-दुक्खाण य वच्चंति वासरा । सरंते य काले तहाविहअसुहकम्मोदयवसेण विलोट्टा ववसाया, विहडिओ पुरिसयारो, तक्करेहिं विलुत्ता देसंतरगयवणिपुत्ता, दड्ढा धन्नसंचया, पलीणाइं वड्ढिपउत्ताइं वित्ताइं, थोवदिणेहिं सव्वो वि अण्णो व्व परिणओ परियणो । ताण दोण्हं पि जाओ य परोप्परं एगंते आलोचो—अहो ! नूणमवरभवे समगं च्चिय कयं किं पि क-म्ममणुच्चियं, जप्पभावेण तुज्झ ममं पि एक्ककालमावडियमिमं निव्वाहसंकडं । वुद्देण भणियं—ता को एत्तो उवाओ ? कत्तो वा परित्ताणं ? किं वा कयं सुकयं हवइ ? बाढं मूढं मह मणं न किं पि दट्ठुं पारइ, किं बहुणा ? संपइ अप्पाणं पि दुहावह-मह[म]वगच्छामि; अहवा—

ता किं चोज्जं भन्नइ जं मन्नइ निद्धणत्तणं च जणो ? । अप्पा वि हु अप्पाणं कप्पइ पहपंसुपडितुल्लं ॥ १ ॥
पूरणमेत्तपवन्नो बुहाण हासप्पयं पवच्चंन्तो । सद्दो व्व अत्थरहिओ अवगिज्जइ किं पुण मणूसो ? ॥ २ ॥

निर्धनत्वम्

१ निस्तारयितुम् ॥ २ °च्चायगो प्रतौ ॥ ३ व्यस्ता व्यवसायाः ॥ ४ °च्चत्तो प्रतौ ॥ ५ शब्दपक्षे निरर्थकः, अन्यत्र धनरहितः ॥

सा बुद्धी सुविसुद्धा तमिंदियाणं बलं अविकलं च । वयणं पि तं चिय फुडं जणप्पसिद्धं तमभिहाणं ॥ ३ ॥
सो च्चिय पुरिसो दीसंतकंत-सुविभत्त-सुंदरावयवो । अन्नो खणेण जायइ धणहीणो ही ! महच्छरियं ॥ ४ ॥
इय गॅरुय[1]विसायविसप्पमाणमाणाइरित्तवयणपहं । दुद्दं पलोइउं नागदत्तवणिओ इमं भणइ ॥ ५ ॥

भो मित्त ! परिच्चय चित्तसंतावं, अत्थि पुव्वकालदिन्नो पिउवएसो, जहा—जया न नित्थारिउं सक्कसि सकुडुंबं तया कालिंजरगिरिट्ठियं कुलदेवयमाराहेज्जासि, सा हि दिट्ठपच्चया पुव्वपुरिसाण विदिन्नवंछियत्था आसि, ता होउ वियप्पकल्लोल-जालेणं, तं चेव भगवइं ओहामिय[2]कप्पतरुलयं गंतूण आराहेमो त्ति । भणियं दुद्देणं—एवं कीरउ, ममावि अत्थि तत्थ कुबेरो नाम जक्खो[3] कुलदेवो, अहं पि तमाराहिस्सामि त्ति । कयनिच्छया पडिग्गहियपाहेज्जा य निग्गया दो वि घराओ । पइदिणगमणेण य पत्ता कालिंजरपव्वयं । दिट्ठं च अणेगतरुजाइजायसोहं हंस-सारस-सुयसउंतसंकुलं भमिरभमरनियरज्झं-कारकारमणहरं[4] एगमुववणं । दुद्देण भणियं—अहो ! रमणीययया, अहो ! परियाग[5]पिसंगफलभरोणमियसाहया, अहो ! सव्वोउय[6]कुसुमसोरभनिब्भरया काणणस्स; अवि य—

उपवन-वर्णनम्

रंभा[7]भिराममुब्भडचित्तसिहंडिं सिणिद्धसरसंकं । सग्गं व उववणमिमं पेच्छह सुमणोहरमणिज्जं ॥ १ ॥

---

१ गुरुकविषादविसर्पन्मानातिरिक्तवचनपथम् ।। २ अभिभूतकल्पतरुलताम् ॥ ३ जक्खकु° प्रतौ ।। ४ झंकारक्रियामनोहरम् ॥ ५ परिपाकपिशङ्गफलभराव-नतशाखता ॥ ६ सर्वर्तुक- ॥ ७ अत्र गतानि श्लिष्टपदानि स्वर्गपक्षे उपवनपक्षे च क्रमेण योज्यानि—एकत्र रम्भया—रम्भाभिधयाऽप्सरसाऽभिरामम्, अन्यत्र रम्भाभिः—कदलीभिरभिरामम् । उद्भटाः चित्रशिखण्डिनः—सप्तर्षयो यत्र तम्, अन्यत्र उद्भटाः चित्राश्च शिखण्डिनः—मयूरा यत्र तत् । एकत्र

शङ्कात्यागोपदेशः

परमगुरुमुखाब्जान्निर्गते तत्त्वजाते, य इह कलुषबुद्धिर्मुह्यति स्वल्पसत्त्वः ।
विमलसलिलपूर्णां मङ्क्षु मुक्त्वा तडागीं, स सरति मृगतृष्णायाः सरस्तृट्पराद्धः ॥ १ ॥
मृषावदनकारणं भवति राग-मोहोदयः, स च त्रिभुवनप्रभाव[1]पगतः क्षयं सर्वथा ।
तदेवमपि शङ्कते य इह कोऽपि तुच्छाशयः, स वाञ्छति हुताशनादमृतवारिशैत्यक्रियाम् ॥ २ ॥
वैद्यमाप्तमवबुद्ध्य रोगवान्, तद्वचोऽपि यदि[2] जातु शङ्कते । भेषजं विदधदप्यनारतं, किं तदा व्रजति कोऽप्यरोगताम् ? ॥
इति त्यक्ताशङ्कः सकलमपि सर्वज्ञवचनं, तथा चित्ते दध्यात् स्पृशति न यथा संशयरजः ।
यतः सूर्योऽपाच्यामुदयमुपयायादपि शिवं, विजह्युर्वा सिद्धा न च भवति मिथ्या जिनवचः ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे सम्यक्त्वातिचारचिन्तायां शङ्कादोषे धनदेवकथानकं समाप्तम् ॥ २ ॥

काङ्क्षायाः स्वरूपम्

निस्संकिए वि सम्मे[3] कंखा तब्भाव[4]घाइणी नेया । अन्नन्नदंसणग्गहो सरूव एवं इमीए जओ ॥ १ ॥
देसे सव्वे य दुहा एसा देसम्मि दंसणं किं पि । एगं कंखइ[5] कविलाइसंतियं भव्वमेयं ति ॥ २ ॥
सव्वे सव्वमयाइं कंखइ पुण संसिया[6] इहं भावा । दाण-ऽज्झयणाईया[7] एएसु वि ते समा चेव ॥ ३ ॥

---

१ त्रिभुवनप्रभौ अपगत इति सन्धिच्छेदः ॥ २ यदि यातु सङ्केते प्रतौ ॥ ३ सम्मं प्रतौ । सम्यक्त्वे ॥ ४ सम्यक्त्वभावघातिनी ॥ ५ 'काङ्क्षते' समीहते ॥ ६ 'शंसिताः' कथिताः ॥ ७ °णाइया प्रतौ ॥

मंतरमंदिरं, कयं पडिचरणं, जायाइं दस लंघणाइं, न लद्धं पडिवयणं, 'इयाणिं किं करेमि ?' त्ति पडिवण्णो वाउलत्तणं ।

एत्थंतरे निच्छयवससमासाइयसमीहियदेवयावरो उवद्धियभद्दो संपत्तो दुद्दो । साहिओ णेण नागदत्तस्स नियवुत्तंतो । सविसायमियरेण वि अप्पणो त्ति । दुद्देण भणियं—अलमइक्कंतउक्कित्तणेण, एहि, संखं उवलक्खियपच्चयं भयवंतं कुबेरजक्खमणुसरामो । 'तह' त्ति उवद्धिओ नागदत्तो । गया कुबेरायणं । पारद्धो लंघिउं एसो । नवरं अविच्छिन्नभत्तपरिच्चायसोसियसरीरत्तणेण सासावसेसो जाउ–त्ति आउन्नो, किंकायव्वयावाउलो य भणिओ सो इयरजणेण—अहो ! किमेवं खयमुवेंतमुवेक्खसि ? न देसि किं पि भोयणं ? किं न सुयं तुमए 'जीवंतो नरो भद्राणि पश्यति' इति ? । पडिवन्नेणं दुद्देणं काराविओ मुग्गजूसो । अणिच्छंतो वि भुंजाविओ नागदत्तो । कइवय[दिण]भोयणजायसरीरावट्ठंभो य भुज्जो लंघिउमुच्छहंतो वुत्तो लोएण—भो ! मुंच ताव इममभिप्पायं, अणुसरसु ताव नियमंदिरं, कइवयदिणावसाणे पुणो वि विसिट्ठसउणबलोवलंभे इममत्थमणुट्ठेज्जासि । तओ नियत्तो नागदत्तो दुद्देण समं सगिहाभिमुहं, पत्तो य कालक्कमेणं, परितुट्ठो कुडुंबजणो, कओ से मज्जणाइउवयारो, उवक्खडिया महाभक्खभेयमणहरा रसवई । 'चिरकालोवलद्ध' त्ति परिभुत्ता कंक्खाइरेगेण, रयणीए पडिओ विसूइगादोसेण, वमण-विरेयणाइमहाविमद्देण पउणीकओ बंधुवग्गेण ।

एवमेसो कंक्खाविक्खिप्पमाणमाणसो देवयावरविरहेण दुक्खिओ जाओ । इयरो य न तह त्ति ।

पुव्वभवावज्जियगरुयपावपब्भारविणिहयप्पाणे । [...] वे सिद्धे जोगस्स ठंति..............दूरेण ॥ १ ॥

१ 'प्रतिचरणं' सेवा ॥ २ अलमतिक्रान्तोत्कीर्तनेन ॥ ३ साक्षात् ॥ ४ चिन्तातुरः ॥ ५ उत्सहमानः ॥ ६ कुटुंब° प्रतौ ॥ ७ उपस्कृता ॥

अपि च—चापल्यशल्यविहतो हितमप्यपास्य, पश्यत्यवस्त्वपि हि वस्तुधिया विमूढः ।
हृत्पूरचूर्णपरिभोगवशेन यद्वत्, क्लिष्टोऽविशिष्टमुपलाद्यपि हेममत्या ॥ १ ॥
कल्पद्रुकल्पमवधूय जिनेन्द्रधर्मं, धर्मान्तराण्यपि जिघृक्षति यः सुखाय ।
निर्मूलपारमुडुपेन स वारिराशिं, मन्ये तितीर्षति विमुच्य मनीष्टनावम् ॥ २ ॥
लोकेऽपि कार्यमसमाप्य किलैकमन्यदारिप्सुरन्यतमदप्युपलीयमानः ।
विज्ञोपहासपदविं च मुधा श्रमं च, कार्यक्षितिं च परमुप्यति (?) फल्गुचेष्टः ॥ ३ ॥
इत्याप्तदृष्टसुविशिष्टविचारभारनिर्वाहिमार्गदृढनिश्चयलीनचित्तः ।
चिन्ताव्यतीतशुभसम्पदमप्यवाप्य, संसारपारमचिरात् समुपैति सत्त्वः ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे सम्यक्त्वचिन्तायां द्वितीयातिचारप्रक्रमे नागदत्तकथानकं समाप्तम् ॥ ३ ॥

संका-कंखाहि अखंडिएं हि सम्मम्मि सव्वहा वज्जे । विसंवच्छच्छायं पिव विचिकिच्छं किच्छसंजणणी ॥ १ ॥
देसे सव्वे य इमा देसेऽणुट्ठाणमेगमासंके । सफलमफलं व होज्ज त्ति सव्वओ सव्वमासंके ॥ २ ॥

१ तप्रेण, लघ्व्या नावा वा ॥ २ मभीष्ट प्रतौ । पृषोदरादित्वात् मनीषामनीषितादिशब्दप्रयोगवद् मनीष्टप्रयोगसिद्धिः । मनोऽभिमतनावमित्यर्थः ॥ ३ आरब्धुमिच्छुः ॥ ४ °दृष्टनि° प्रतौ ॥ ५ °र्एहिं स° प्रतौ ॥ ६ विषवृक्षच्छायामिव ॥

सवन्नुवयणसंमणुब्भवंतनिम्मलविवेगजुत्ताण । संत्ताणमणुचिया सा दुविहा वि दुहावहा जेण ॥ ३ ॥
जिणंवुत्तमणुट्ठाणं विसिट्ठफलयं ति कीरइ अवस्सं । तत्थ वि संसयभावो न भाविभद्दाण संभवइ ॥ ४ ॥
इयरे वि अणुट्ठाणे किं पि फलं दिट्ठमेव पच्चक्खं । ता जिणभणिए वि तहिं संदेहो ही ! महामोहो ॥ ५ ॥ किंच—
जे किर किंसीवलाई फलसंसइणो किसिं विलंबंति । अविकलकारणभावे वि संस्सभागी न ते हुंति ॥ ६ ॥
एवमणुट्ठाणमिणं फलसंसयगब्भिणं पकुव्वंता । दुक्करयं पि हु तप्फलविवंज्जिया ते विसीयंति ॥ ७ ॥
अहवा विउंणो मुणिणो तदंगमलिणाइसंभविदुगुंच्छा । विउगुंर्च्छ त्ति इमा वि हु पडिवक्खो कुसलपक्खस्स ॥ ८ ॥
उभयसरूवं पि इमं जे नो वज्जंति वंज्जपडिहच्छा । गंगो व वसुमई विंव इहयं चिय ते दुही हुंति ॥ ९ ॥

तथाहि—अत्थि भारहवासविसेसंयतुल्ला महामुल्लविचित्तपणियसाला कुणाला नामं नयरी । तहिं च लोयववहाराणुसारिसारधम्मत्थाणुकूलवावाराणुरत्तचित्तो बंभदत्तो नाम सेट्ठी । सीमंतिणीजणसमुचियगुणमाणिकावड्ढियमंडणा चंदणा नाम भारिया । गंगाभिहाणो य ताण पुत्तो, वसुमई य धूया । गाहियाणि समुचियकलाकलावं, जोव्वणमणुपत्ताणि य वीवाहियाणि दोन्नि वि समुचियकुलेसु ।

अन्नया य रइहरपसुत्तस्स गंगस्स घरिणी डंका समुक्कडविसेणं विसहरेणं । मीलिया मंतवाइणो, पारद्धा विसोवसामणो-

१–श्रवणोद्भवत्– ॥ २ सत्त्वानामनुचिता ॥ ३ जिनोक्तमनुष्ठानम् ॥ ४ कृषीवलादयः फलसंशयिनः कृषीं विलम्बन्ते ॥ ५ सस्यं–धान्यम् ॥ ६ °वज्जया प्रतौ ॥ ७ विद्वांसः ॥ ८ °गुंच्छंति इ° प्रतौ । विद्वज्जुगुप्सा इति ॥ ९ वर्ज्यं–पापं तेन परिपूर्णाः ॥ १० विव इवार्थे ॥ ११–तिलक–॥ १२ दष्टा ॥

बहुंरिट्ठमरिट्ठाउलमपलासं गुरुपलासपडहच्छं । दीसंतसत्तपन्नं पि भूरिपन्नं च सहइ वणं ॥ २ ॥

एवंविहं तमुज्जाणमवलोयमाणा गया एगं सरोवरं, कयं मंज्जणायकिच्चं, गहियाइं कमलाइं । गओ कुबेरजक्खाययणं दुद्दो, इयरो य नियकुलदेवयाहरं । पूंइया भगवई, अट्ठंगपणिवायपुरस्सरं च संथुया सायरं भणिया—देवि ! अम्ह पुव्वपुरिसेहिं पि तुममाराहिया तेसिं वरदा जाया, ता ममासि तुममेव सरणं दोगच्चंचक्कक्कंतस्स, न य तुह पसायमंतरेण भुंजामि—त्ति कयनिच्छओ कुससत्थरमारुहिऊण पंजलिउडो पज्जुवासिउमारद्धो । जायाणि पंच लंघणाणि, न किंचि दिन्नमुत्तरं देवयाए । पारद्धे य छट्ठे लंघणे आगओ एगो पुरिसो, पुच्छिओ य नागदत्तो तेण—भो ! किमेयमारद्धं ? ति । सिट्ठो अणेण संवुत्तंतो । तेण भणियं—हा मूढ ! कीस अप्पाणं किलामेसि ? मुंच एयं कट्ठदेवयं, लग्गाए मम पट्ठीए दंसेमि जणविदिन्नवंछियत्थं सिद्धत्थाभिहाणं देवं एत्तो अदूरट्ठियं ति । अथिरत्तणेण पडिवन्नमिमं नागदत्तेण, गओ तेण [सद्धिं] सिद्धत्थवाण-

स्निग्धेन शशाङ्केन–चन्द्रेण सहितम्, अन्यत्र स्निग्धाः शशाः–शशकाः स्वाङ्के–मध्ये यत्र तत् । एकत्र सुमनसां–देवानाम् ओघेन–समूहेन रमणीयम्, अन्यत्र सुमनसां–पुष्पाणामोघेन रमणीयमिति ॥ ८ °ससंखं प्रतौ ॥

१ अत्र यद् बहुरिष्टं भवति तत् कथम् 'अरिष्टाकुलं' न रिष्टाकुलं भवति ? इति विरोधः, परिहारस्त्वत्र—बहवो रिष्टवृक्षा यत्र, अरिष्टैः–काकैश्चाकुलम् । तथा यद् 'अपलाशं' पलाशरहितं तत् कथं गुरुपलाशैः पडहच्छं–प्रतिपूर्णं भवतीति विरोधः, तत्परिहारः पुनः—'अपरासं' कोलाहलवर्जितं नीरवं शान्तियुक्तमिति यावत्, गुरुभिश्च पलाशवृक्षैरुपेतम् । तथा यद् दृश्यमानसप्तपर्णं कथं तद् भूरिपर्णं भवति ? इति विरोधः, परिहारस्तु—दृश्यमानाः सप्तपर्णाख्या वृक्षा यत्र, पुनश्च भूरिपत्राख्यं घासं यत्र तत् । एतादृशं वनं राजते इति सण्टङ्कः ॥ २ मज्जनादिकृत्यम् ॥ ३ पूईया प्रतौ ॥ ४ दौर्गत्यचक्राकान्तस्य ॥ ५ सव्वुत्तं° प्रतौ । स्ववृत्तान्तः ॥

कि[1]मसक्किरेण कीरइ जो तिणभंगे वि दूरमसमत्थो ? । सं[2]क्को वि परुवयारं [3]अवहीरइ ही ! कहिं जामो ? ॥ २ ॥
अवगन्नियसविणासा फलप्पयाणं पराण कुव्वंता । ही ! कत्थ पेच्छियव्वा रं[4]भाथंभ व्व सप्पुरिसा ? ॥ ३ ॥
अच्चंतमणुचियमिमं महप्पभावो वि जइ तुमं कुणसि । सच्छंदं कलिकालो ता वियरउ दूरमविरामं ॥ ४ ॥

इमं सोच्चा मंतवाइणा भणियं—भो भो ! बाढं लज्जिउ म्हि किलिट्ठचेट्ठिएणं, ता विरम सप्पुरिसमग्गाणुकित्तणाओ, कत्थ जलही ? कत्थ गोपयं ?, कत्थ सुराचलो ? कत्थ परमाणू ?, कहिं सप्पुरिससमायारो ? कहिं वा अम्हारिसो कीडकीडाविडंबणामेत्तो ?, अओ भद्द ! एसा तुह गिहिणी भइणि व्व निंच्चं[5] मह घरे ट्ठाही ताव जाव तुमं किं पि कत्तो वि मंतसिद्धिं मम उवाणिस्ससि, पच्छा इमं घेत्तूण सघरं वच्चेज्जासि, जया वि य किं पि मंतसिद्धिं लहसि तदा आपुच्छिऊण पाडलिपुत्तनयरे देवधरमंतवाइणो घरं एज्जासि, मा काहिसि संदेहं–ति संबोहिऊण तब्भज्जासमेओ सिग्घवेगेण गंतुमारद्धो मंतसिद्धो । सविलक्खो य पडिनियत्तो इयरो ।

सिट्ठो अणेण एस वइयरो[6] अम्मा-पिईपमुहलोगस्स । तेहिं भणियं—पुत्त ! मा संतप्प, अन्नं कन्नगं गमिस्सामो त्ति । तेण भणियं—अत्थि एवं, तह वि अणुरत्तजणोवेहणं दूरमणुचियं । तुसिणिं पवन्नो य सयणवग्गो । गंगो वि किं पि पाहेज्जमादाय अजाणिज्जंतो केणइ रयणीमज्झसमए नीहरिओ[7] घराओ, अखंडियपयाणगेहिं देसंतराइं भमिउमारद्धो । पज्जुवासिया

१ किमू अशक्तेन क्रियते ॥ २ शक्तः ॥ ३ अवधीरयति ॥ ४ कदलीवृक्षो हि फलजननानन्तरमवश्यं विनश्यतीत्येवमुक्तिः । ५ निच्च मह प्रतौ ॥ ६ यरं अ° प्रतौ ॥ ७ निःसृतः ॥

य के वि कहिं पि मंतवाइणो, समासाइया य तेहिंतो के वि उवएसा, पंरं[1] न चित्तक्खेवकारिणो जाया ।

तओ सो गओ उड्डियायघणविसयं । ठिओ तत्थ एगम्मि सन्निवेसे एगाए कुडुंबिणीए घरेगदेसे । तीसे य कुडुंबिणीए चत्तारि डिंभाणि अच्चंतचवलाणि खेत्ते कम्मकरणत्थं गच्छंतीए विघायं कुणंति । ततो सा सिद्धमंतसामत्थेणं विसहरं वाहरिऊण ताणि डसावेइ, विसमुच्छानिच्चेट्ठाणि य घरब्भंतरे खिविऊण गिहदुवारं दढं संजमिऊण खेत्तं वच्चइ । कम्मं काऊण य पडिनियत्ता जलच्छडाखेवमेत्तेण डिंभाणि स[2]भावत्थाणि करेइ । तं च पइदिणमेवंकुणंती दट्ठूण विम्हिओ गंगो चिंतेइ—अहो ! न एसा सामन्नम[3]हिला, ता एस च्चिय सव्वायरेण ओलग्गिउं जुत्त–त्ति लग्गो एसो तीए सव्वप्पयारेण आराहणं काउं ।

कइवयदिणेहिं य अच्चंतविणयकम्मसमाराहियहियया सा भणिउमाढत्ता—पुत्त ! किमेवमगुणा[ए] वि तुमं म[4]एवं वट्टसि ? सव्वहा दूरमा[5]गरिसियं मम चित्तं, ता साहेसु किं पिं[6] पओयणं ति । गंगेण भणियं—अम्मो ! किं साहेमि ? बाढं उच्चारिउं पि न पा[7]रियइ । तीए जंपियं—वच्छ ! निरुव्विग्गो साहेसु जहट्ठियं । तओ तेण सव्वो वि सिट्ठो नियवइयरो । तीए य इमं सोच्चा जंपियं—वच्छ ! मा ऊसुगो होसु, तहा काहं जहा पुन्नवंछियत्थो घरं वच्चसि त्ति । गंगेण भणियं—न दुल्लहमिमं तुह पायपउमपसाएण । अह सो[8]हणतिहिमुहुत्ते अट्ठन्हं पि नागकुलाणं काऊण पूयं दिन्ना नागा[9]हवण-विसविणासणपरमविज्जा । कहिओ साहणविही, जहा—किण्हचउद्दसीए मसाणे एगागिणा अट्ठोत्तररत्तकुसुमजा[10]वसहस्सेण एसा साहियव्वा, स[11]रिज्जंतीए य इमीए

१ परन्न परचित्त° प्रतौ पाठः ॥ २ स्वभावस्थानि ॥ ३ महिप्पा, ता प्रतौ ॥ ४ मया एवम् ॥ ५ आकर्षितम् ॥ ६ पिं प्रतौ ॥ ७ पार्यते ॥ ८ °हणाति° प्रतौ ॥ ९ नागाह्वानविषविनाशनपरमविद्या ॥ १०–जापसहस्रेण ॥ ११ स्मिर्यमाणायाम् ॥

विचिकित्सातिचारे गङ्गवसुमत्योः कथानकम् ४ । नागवर्णनम्

विज्जाए भुयंगवग्गा सरीरं बाढमभिद्दविस्संति, न य [1]थेवं पि भाइयवं ।

ततो सो सम्ममाराहणविहिं विज्जं च अ[2]वधारिऊण कयतप्पायवडणो नीहरिओ, गओ पाडलिपुत्तं। पउणीकया विज्जा-साहणविही, गओ मसाणं, जहोवइट्ठट्ठिईए विज्जं सुमरिउं पवत्तो । एत्थंतरे—

सिं[3]दूरारुणलोयणफुरंतपहपडलपाडलियगयणा । मुहकुहरुग्गिरियफुलिंगफारजलणच्छडाडोवा ॥ १ ॥
उ[4]ब्भडंडभिडंतफणफलगफडफडारावमुहरियदियंता । पइ[5]खणविमुक्कफुक्कारपवणकंपावियवणंता ॥ २ ॥
मेह[6]मसिणगुरु[यर]देहदंडडामर-डसंतजियलोया । दिसिविदिसिमुहेहिंतो भुयगा नीहरिउमारद्धा ॥ ३ ॥
अ[7]ह पलयखुभियकालोयजलहिकल्लोललोलगुरुदेहे । ते द[8]वन्ते दट्ठुं भीओ गंगो विचिंतेइ ॥ ४ ॥

सवहा न जुत्तं मंतसाहणमिमं काउं, को जाणइ कयंतचक्खुविक्खेव व दारुणा इमे भीमभुयंगमा समीवमुवागया किं पि कुवंति ? फलं च संसइयं, एए पुण नि[9]च्छिउं डसिउं विणासमुवणिंति, अणत्थं संसओ य निवित्तीए अंगमुवइसंति विउणो, ता अलं सं[10]दिद्धफलसिद्धिणा सुहपसुत्तकालकेसरिपबोहकप्पेण वेज्जासाहणेणं ति । संहरिओ तदाराहणोवक्कमो । वेगेण पलाणो सघराभिमुहं ।

१ थेवं भि भा° प्रतौ ॥ २ अकधा° प्रतौ ॥ ३ सिन्दूरारुणलोचनस्फुरत्प्रभापटलपाटलितगगनाः । मुखकुहरोद्गीर्णस्फुलिङ्गस्फारज्वलनच्छटाटोपाः ॥ ४ उद्भटदढफणाफलकस्फटत्स्फटारावमुखरितदिगन्ताः । प्रतिक्षणविमुक्तफुत्कारपवनकम्पितवनान्ताः ॥ ५ °इक्खण° प्रतौ ॥ ६ मेघमसृणगुरुतरदेहदण्ड-भयङ्करदशज्जीवलोकाः । दिग्विदिग्मुखेभ्यो भुजगाः निस्सर्तुमारब्धाः ॥ ७ अथ प्रलयक्षुब्धकालोदजलधिकल्लोललोलगुरुदेहान् । तान् 'द्रवतः' उपद्रवं कुर्वाणान् दृष्ट्वा भीतः गङ्गः विचिन्तयति ॥ ८ °व्वत्तो द° प्रतौ ॥ ९ °च्छिउं ड° प्रतौ ॥ १० °दिट्ठफ° प्रतौ ॥

॥ २२ ॥

वाया । वि[1]याणियदुट्ठकालदट्ठविसविगारवइयरेहिं य पच्चक्खाया तेहिं । 'विवन्न' त्ति नीया मसाणं, विरइया [चिया]। तहिं च जाव स[2]बमारोविज्जइ ताव कत्तो वि अवत्तलिंगी स[3]रीरच्छायावसमुणिज्जंतमाहप्पविसेसो पत्तो तमुद्देसं एगो पुरिसो । तेण भणियं—अहो ! महापावं जमेवं जीवंती वि चियाए आरोविज्जइ त्ति । तं च सोच्चा विम्हइयमाणसेण आबद्धकरसंपुडं भणियं जणेण—भो महायस ! कुणसु पसायं, देसु पाणभिक्खं जइ अत्थि किं पि परिन्नाणं । तेण जंपियं—अत्थि परिन्नाणं, केवलं जमहं मग्गामि न तं तुब्भेहिं दाउं सक्कि[4]स्सइ । जणेण भणियं—अलं वियप्पेण, जं भे रोयइ तं दुल्लहं पि मग्गसु जेण देमो त्ति । तेण भणियं—जइ एवं ता इमं चेव इत्थियं देह जेण पं[5]गुणं करोमि त्ति । 'जहा तहा जीवउ वरा[6]इणि' त्ति अकामेण वि पडिवन्नं जणेण । ततो सलीलमुक्कहुंकारमेत्तेण पणट्ठनीसेसविसविगारा अंगभंगं कुणंती सु[7]त्तपबुद्ध व उट्ठिया एसा । अहिट्ठिया य मंतवाइणा । सविम्हयमवलोयमाणस्स वि जणस्स तं घेत्तूण गओ जहाभिमयं । सविलक्खो य सदुक्खो य गओ जणो सगिहेसु । बाढं [8]अमरिसिओ गंगो, तह वि 'उवगारि' त्ति सपणयं मंतवाइणं जंपिउ-माढत्तो—भो महापुरिस ! न कुप्पियवं, भणामि किं पि—

सत्पुरुषमार्गः

नियजीवियवएण वि परकज्जे उज्जयाण धीराण । थोव च्चिय बज्झप[9]यत्थसत्थसंपाडणपवित्ती ॥ १ ॥

१ विज्ञातदुष्टकृष्णसर्पदष्टविषविकारव्यतिकरैः ॥ २ °व ज्जवमा° प्रतौ ॥ ३ शरीरकान्तिवशज्ञायमानमाहात्म्यविशेषः ॥ ४ °स्सह प्रतौ । शक्ष्यते ॥ ५ पमुणं प्रतौ ॥ ६ °इणि ति प्रतौ ॥ ७ सुद्धपबु° प्रतौ ॥ ८ अमर्षितः ॥ ९ °यच्छस° प्रतौ । बाह्यपदार्थसार्थसम्पादनप्रवृत्तिः ॥

देवधरस्स । तस्सामत्थेण य जाओ एसो तिकालजाणगो । 'विसिट्ठसत्थलाभहेउ' त्ति वत्थाइदाणपुव्वगं च समप्पिया णेण गंगस्स भज्जा । विसज्जिओ एसो गओ सट्ठाणं, सलहिओ पुरजणेणं, परितुट्ठा अम्मा-पिउणो ।

एगम्मि य दिणे रुयमाणी समागया ससुरघराओ धूया वसुमई । पुट्ठा य अम्मा-पिऊहिं—पुत्ति ! केणइ तुह किं कयं ? । तीए जंपियं—अम्म-ताय ! ससुरजणो निसग्गवेरि व्व ममं बाहइ, निच्चमुचियकिच्चकारिणिं पि वेरिणिं व पेच्छइ, संपयं च न याणामि केणइ कारणेण निद्धाडिय म्हि सगिहाउ त्ति । अम्मा-पि[1]ऊहिं भणियं—पुत्ति ! वीसत्था होसु, पुव्वकयदुक्कयजणियदुग्गदोहग्गदुव्विलसियमिमं, ता सगिहे व्वि[2]यं धम्मपरा परिवालेसु कइवयदिणाइं, जाव किं पि नेमित्तिय-मापुच्छिय तदुचिओवक्कममणुचिंतेमो त्ति ।

अन्नया य सो देवधरो चूडामणिनाणमुणियनट्ठ-मुं[3]ट्ठ-चिंताइपयत्थो कोऊहलियाणेगनरिंद-सेट्ठि-सेणावइपमुहपहाणलो-याणुसरिज्जमाणो समागओ तं पुरं । सुंदरफल-फुल्लाइदाणपुरस्सरं पुच्छिओ । एगग्गचित्तेण सम्मं परिभाविऊण सिट्ठं, जहा—एसा तुह भइणी पुव्वभवे साहूणं निप्पडिकम्मसरीराणं मलाविलसरीरत्तणेण विसप्पंतासुहगंधाणं 'धी ! धी ! इमे' त्ति दुगुंछं काऊण निकाइयदोहग्गदोसा एवं वट्टइ, उवसमोवाओ य जम्मंतरे परं [4]भावि त्ति, ता वच्च सगिहं, मा भूय-पिसायाइदोससंभावणं काहिसि त्ति । गओ गंगो । सिट्ठं तदुवइट्ठं । निंदिउमारद्धा अप्पाणं भइणी । गंगो वि तहाविहविज्जालाभफलचुक्को परं सोगमुवगओ त्ति ।

१ °पिऊणिं भणि° प्रतौ ॥ २ व्विय इति इवार्थकमव्ययम् ॥ ३ °मुट्ठिचिं° प्रतौ ॥ ४ भावि ति त्ति प्रतौ ॥

इह कु[1]सलपक्खविक्खेवदक्खसम्मोहनिम्महियमइणो । निद्धाडिंति उविंतिं ल[2]च्छिं हणिऊण डंडेण ॥ १ ॥
चिरकालं वसियव्वं भवकारागारसन्निरुद्धेहिं । मन्ने हं दुन्नयनिबिडनिगडनडिएहिं जीवेहिं ॥ २ ॥ किञ्च—

सस्वर्ण-रत्नपरिपूर्णमपि प्रधानं, रिक्तं तदेतदिति वर्जयते निधानम् ।
निश्चेतनाक्षफलमित्यवबुध्यमानः, कल्पद्रुमं च स समीह[3]त एव हातुम् ॥ १ ॥
तिर्यग् विवेकविकला तदियं कथं स्यात्, कामप्रदेति स निरस्यति कामधेनुम् ।
चिन्तामणिं च स तिरस्कुरुते किमेष, भाषानुरूपवपुषा वितरिष्यतीति ॥ २ ॥
यो भूत-भावि-भवदर्थविबोधबन्धुकैवल्यवज्जिनविनिश्चितमुक्तिमार्गम् ।
वैफल्य[4]सङ्कथवशेन विदां जुगुप्सासम्पादनेन यदि वा विगुणं मिमीते ॥ ३ ॥
इति गतविचिकित्सः स्वः-शिवश्रीगृहेषु, व्रत-नियम-तपस्या-दान-दीक्षादिकेषु ।
प्रतिदिवसवि[5]धेयेष्वन्वहं योजितात्मा, भवति भवसमुद्राद् द्राग् बहिर्नात्र चित्रम् ॥ ४ ॥

विचिकित्सात्यागोपदेशः

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे सम्यक्त्वचिन्तायां तृतीयातिचारप्रक्रमे गङ्ग-वसुमत्योः कथानकं समाप्तम् ॥ ४ ॥

१ कुशलपक्षविक्षेपदक्षसम्मोहनिर्मथितमतयः ॥ २ लच्छि प्रतौ ॥ ३ °मीहित प्रतौ ॥ ४ °ल्यसकथनवसेन प्रतौ ॥ ५ °विवियेस्वन्व° प्रतौ ॥

मूढदृष्टित्व-स्वरूपम्

पुव्वुत्तदोसरहिओ वि से[1]म्मभावम्मि बद्धलक्खो वि । असदज्झवसायकरं उज्झिज्जा मूढदिट्ठित्तं ॥ १ ॥
दिट्ठी य दंसणं इह सा मूढा जस्स मूढदिट्ठी सो । तीए पुण मूढत्तं कुतित्थिरिद्धीण दंसणओ ॥ २ ॥
रिद्धी य अणेगविहा विउ[2]व्वणा-वोमँ[3]गमणमाईया । मंताइसिद्धरूवा व लोय-निवपूयणाईया ॥ ३ ॥
ताओ दट्ठुं दिट्ठी मुज्झइ जस्सेह मूढदिट्ठी सो । गुण-गुणिँअभेयभावा अइयारत्तेण वि[4]मंओ ॥ ४ ॥
पेच्छह कुतित्थियाणं असंजयाणं पि रिद्धि-सक्कारा । ई[5]सिं पि न तह अम्हाण सुमुणिमग्गं गयाणं पि ॥ ५ ॥
किं मन्ने[6] जिणसासणमँहुणातणमँणतिसाइसिट्ठं वा ? । इय कुँवियप्पुप्पीलुँ[7][8]प्पेल्लियहियया हि मुज्झंति ॥ ६ ॥
न मुणंति हुंडुसप्पिणि-दूसम-भासग्गहाइदोसाओ[9] । गयदूसणं पि सव्वन्नुसासणं न तह जणपुज्जं ॥ ७ ॥
जइ कह वि अबुहबहुलोयजोयओ पूइयं कुतित्थिमयं । जिणसासणं तु न तहा, किमेत्तिँएण[10] वि तमवगीयं ? ॥ ८ ॥
जंइ[11] गुणगयाण माणो, बहुओ जाओ नरो न रयणत्थी । ता किं तमेत्तिएण वि प[12]त्तंमवत्थुत्तणं किं पि ? ॥ ९ ॥
ईं[13]हलोइयत्थलवमेत्तपेहणुप्पन्नदिट्ठिवाँ[14]मोहा । संखो इव सम्मत्तं चयंति तो हुंति दुहभागी ॥ १० ॥

१ समभा° प्रतौ ॥ २ विकुर्वणाव्योमगमनादिका ॥ ३ °वाम° प्रतौ ॥ ४ °णियमे° प्रतौ ॥ ५ 'अधुनातनम्' अर्वाचीनम् । 'अनतिशायिशिष्टं' सामान्यजनोपदिष्टम् ॥ ६ °मणिति° प्रतौ ॥ ७ कुविकल्पोत्पीडोत्प्रेरितहृदयाः ॥ ८ °लुपेल्लि° प्रतौ ॥ ९ हुण्डावसर्पिणीदुष्षमाभस्मग्रहादिदोषात् । साम्प्रतीनोऽवसर्पिणीकालः सार्वदिकावसर्पिणीकालापेक्षया निकृष्टतम इत्यसौ हुण्डावसर्पिणीत्वेनोपलक्ष्यते ॥ १० किमेतावताऽपि तद् 'अवगीतं' निन्दितम् ॥ ११ यदि गुणगजेषु 'रदनार्थी' हस्तिदन्तार्थी नरः 'बहुकः मानः' बहुमानयुक्तो न जातः तत् किं तदेतावताऽपि [गजानां] प्राप्तमवस्तुत्वं किमपि ? अपि तु न इत्याशयः ॥ १२ पत्तमवथुत्त° प्रतौ ॥ १३ इहलौकिकार्थलवमात्रप्रेक्षणोत्पन्नदृष्टिव्यामोहाः ॥ १४ °वामोहो प्रतौ ॥

अवरवासरे य लोयापुच्छणेण जाणिऊण पुव्वुत्तदेवधरमंतवाइणो मंदिरमुवगओ एसो । पच्चभिन्नाओ य मंतवाइणा । कया समुचियपडिवत्ती । जाओ परोप्परं समुल्लावो । भणिओ य गंगेण मंतवाई, जहा—गिण्हसु भो ! [1]भुयगायड्ढणिं सुमरणमेत्तेणं चिय तव्विसविघाइणिं च परमविज्जं, समप्पेसु य मम भज्जं[2]—न्ति । 'तह' त्ति पडिसुयं मंतवाइणा, सुदिणे गहियाँ[3] विज्जा, जहुत्तविहिणा निब्भयचित्तेण निरभिकंखेण य साहिया एसा ।

विन्नासिया य कोडुंबिणीडिंभनाएण चूडामणिसत्थपरमत्थजाणगे जयदेवनेमित्तिगम्मि । आँ[4]इद्धदुट्ठदुँ[5]व्वनपन्नगविसाइरेगेण कँ[6]ट्ठीहूओ एसो, पच्चक्खाओ विसँ[7]चिगिच्छगेहिं । आँ[8]दन्नो राया । उग्घोसावियं नयरे—जो एयं पउणीकरेइ तस्स अभिरुइयं राया देइ त्ति । निवारिओ पडहगो देवधरेण, भणिओ य राया—देव ! जइ एस चूडामणिसत्थपरमत्थं निच्छियं देइ ता जीवावेमि एयं । रन्ना भणियं—अवस्सं दाही, अदिंतं च अहं दवावेमि । देवधरेण भणियं—देव ! एत्थं[9] यऽत्थे कस्स धम्महत्थो ? । रन्ना जंपियं—ममं चेव । तओ सविसेसजायसामत्थेण पगुणीकओ एसो, पँ[10]रं न पडिवन्नो चूडामणिसत्थदाणं । तओ रन्ना जंपियं—तुह विसनिचेट्ठस्स मए समीहिँयँ[11]प्पणविसए धम्महत्थो दिन्नो, ता ममाणुवित्तीए अँ[12]न्नहा न कायव्वं, दायव्वं सव्वहा सत्थमेयमिमस्स त्ति । ततो [13]रायगाढाणुवित्तीए तेण सिट्ठं चूडामणितँ[14]न्तं तेरसममत्तापज्जवसाणं

१ भुजगाकर्षणीं स्मरणमात्रेणैव ॥ २ °ज्ज त्ति प्रतौ ॥ ३ °हियवि° प्रतौ ॥ ४ आविष्ट– ॥ ५–कृष्ण– ॥ ६ 'काष्ठीभूतः' काष्ठवद् निश्चेतनो जातः ॥ ७ 'विषचिकित्सकैः' विषवैद्यैः ॥ ८ चिन्तातुरः ॥ ९ °त्थ एत्थे प्रतौ ॥ १० परन्न पडि° प्रतौ ॥ ११ °यप्पाण° प्रतौ ॥ १२ अन्नन्नहा का° प्रतौ ॥ १३ राया गा° प्रतौ ॥ १४ °तत्तं प्रतौ । तन्त्र–शास्त्रम् ॥

जोगाणंदनाभधेयो नेमित्तिओ दुवारे देवदंसणूसुओ चिट्ठइ, को आएसो ? । राइणा भणियं—सिग्घं पवेसेहि । 'जं देवो आणवेइ' त्ति पवेसिओ नेमित्तिओ, दिन्नासीसो य निविट्ठो समुचियट्ठाणे। कुसुम-तंबोल[1]प्पयाणपुरस्सरं संभासिओ भूवइणा—कत्तो आगमणं ? कहिं वा गमणं ? ति । तेण भ[णि]यं—महाराय ! विज्जारयणरयणाय[2]राउ वसंतपुराओ आगओ म्हि, गमणं पुण कंचीपुरं पडुच्च समीहामि । रन्ना जंपियं—भवदु ताव, तिकालावलोयणविसए केत्तिओ विन्नाणपगरिसो ? । नेमित्तिएण कहियं—महाराय ! गुरुपायप्पसायाओ अत्थि लवमित्तो । रन्ना जंपियं—जइ एवं ता साहेसु थोवदिवसाण मज्झे च्चिय किमिह सुहमसुहं वा [3]भविस्सइ ? । नेमित्तिएण भणियं—महाराय ! निसामेसु, आगमिस्सअट्ठमीए दिणे सूरस्स सव्वग्गासि गहणं भविस्सइ । इमं च सोच्चा विम्हिओ रायलोगो विकंपियसिरो परोप्परं मुहमवलोइउं पवत्तो । अयंड[4]ा-यन्नियसूरग्गहणसंखुद्धेण य भणियं भूवइणा—भो नेमित्तिग ! कहं अप[5]व्वे च्चिय एयं संभवइ ? । नेमित्तिएण भणियं—महाराय ! अवि चलइ ससागरं धरणिवट्ठं, न उण ईसिं पि केवलिदिट्ठं, परं निउणमइणा सम्मं परिभावियव्व–न्ति । 'अजुत्तो कज्जतत्तुल्लावो जह तह' त्ति परिभाविऊण रन्ना विसज्जिओ सभालोगो, कयं विजणं, पुच्छिओ सायरं नेमित्तिओ—साहेसु भो ! पयडक्खरं, को एस सूरो ? किं वा अप[5]व्वे च्चिय तग्गहणं ? ति । नेमित्तिएण कहियं—महाराय ! सम्मं पुच्छियं, जो सूरो सो तुमं, जं च सव्वग्गासि ग्गहणं तं च तुह मरणं ति । तओ भीओ राया सव्वंगीणाभरणदाणपुव्वयं भणिउं पवत्तो—भो नेमित्तिग ! अत्थि कोइ एयस्स उवक[6]मणे उवाओ ? । नेमित्तिएण जंपियं—बाढमत्थि, न केव[7]लं तुमं सक्किहसि काउं । रन्ना भणियं—

१ °तंप्पलेप्पया° प्रतौ ॥ २ °णाउरा° प्रतौ ॥ ३ भणिस्स° प्रतौ ॥ ४ °डानिय° प्रतौ ॥ ५ °पव्वं च्चि° प्रतौ ॥ ६ °क्कामेण उ° प्रतौ ॥ ७ °लं न तुमं प्रतौ ॥

जीवियकज्जे किमकायव्वं ? ति । नेमित्तिएण कहियं—जइ एवं ता महाराय ! तुममप्पणो समरूव-जोव्वण-लक्खणगुणं कं[1] पि पुरिसविसेसं रायपए अभिसिंचिऊण सयं निद्देसवत्ती पंजलिउडो पुरओ से चिट्ठसु अट्ठमीदिणं जाव, जेण तव्विघाएण तुह कल्लाणं हवइ त्ति । पडिवन्नं रन्ना । कयसक्कारो विसज्जिओ नेमित्तिओ त्ति ।

वाहरिओ पहाणपरियणो, पुच्छिओ य—को ममं अच्चंतं सरिसरूवाइगुणो ? त्ति । [2]सम्मं सुनिच्छिऊण य तेण भणियं—देव ! संखस्स पुरोहियस्स पुत्तो पभाकरो चेव तुल्लरूवो, नावरो त्ति अम्ह पडिहासो । ततो रन्ना एयस्स चेव परिक्खा-कएण नियवत्था-ऽलंकारपरिग्गहं काराविऊण सो पभाकरो नियचेड-चाडुकर-किंकराणुगओ पेसिओ अंतेउरं । अच्चंत-सरिससरीरागारनिच्छियनरिंदागमणाहिं अब्भुट्ठिओ अंतेउरीहिं, नरिंदस्स व सगउरवमुवणीयमासणाइ । सो य तमणि-च्छंतो [3]खणमच्छिय पडिनियत्तो । समप्पियपुव्ववेसो य गओ सो सगिहं । खणंतरेण य गओ राया सयमंतेउरं । पुवट्ठिई[ए] च्चिय कओवयारो पुच्छिओ अंतेउरीहिं—देव ! पढममुवागएहिं तुब्भेहिं किं कारणं न किं पि जंपियं ? न किं पि आइट्ठं ? ति । कयागारसंवरेण नरवरेण वज्जरि[4]यं—मणोविक्खेवाउ त्ति ।

एवं च अप्पणो निव्विसेसरूवत्तणं निच्छिऊण पभाकरस्स, अंतेउरीहिं समं मिहोकहाहिं मुहुत्तमित्तं निगमिऊण पडि-गओ स[भा]गिहं । वाहराविओ संखो पुरोहिओ, सुहासण[5]त्थो सायरं संलत्तो य, जहा—अज्ज रयणीए सुमिणम्मि तुह सुयस्स पभाकरस्सऽतिस[6]वहसाविय रज्जं दिन्नं, अओ तमप्पणो सुमिणजंपियं तं[7]ह रज्जदाणेण सच्चं काउमिच्छामि । संखेण

१ किं पि प्रतौ ॥ २ सम्म प्रतौ ॥ ३ क्षणम् आसित्वा ॥ ४ कथितम् मनोविक्षेपात् ॥ ५°णत्थं सा° प्रतौ ॥ ६ अतिशपथशापयित्वा ॥ ७ तुह प्रतौ ॥

भणियं—देव ! कहासु वि एवंविहवइयरो न सुवइ, ता कहमेवं ? । रन्ना जंपियं—किमजुत्तं[1] ? गुरुसु सवस्ससमप्पणा उचिया चेव । तओ विम्हियमणसेण संखेण भणियं—जं देवो आणवेइ त्ति ।

अह अकयकालक्खेवं पहाण-मंति-सामंत-सेट्ठि-सेणावइपभिइपच्चक्खं पभाकरो रायाभिसेएण अहिसिंचिऊण पइट्ठिओ नियपए नरिंदेण, समप्पिया पियाविरहिया सवहा वि रायसिरी पणमिओ य । ठिओ य पागयनरनिं[2]विसेसो समुचियभूमिगाए । 'हा ! किमेयं ?' ति असुणियपरमत्थो वाउलीहूओ सवो जणो । इयरेण वि पडिवन्नं रज्जं, दवाविया सवत्थ वि अप्पणो आणा निस्संकं, रज्जकज्जाइं पि चिंतिउमारद्धाइं ति ।

अह संपत्ते अट्ठमवासरे, सट्ठाणम्मि निवेट्ठेसु पहाणलोगेसु, पागयपाए एगदेसनिलुक्के पुवपत्थिवे, आसणासीणस्स पभाकरस्स रन्नो ढलंतेसु उभयपासचामरेसु, पयट्टे य पुरओ नट्टे अकंडे च्चिय त[3]डयडाडोयडमरियजियलोया तड त्ति सिरोवरि रुट्ठजमदिट्ठि व निट्ठुरा निवडिया विज्जू । तक्खणमेव भासरासित्तणं पत्तो पभंकरराया । 'हा हा ! किमेयं ?' ति दिसोदिसिं पलाणो रायलोओ । जायं पुरे असमंजसं ।

एत्थंतरे तम्मरणोवक्कमियनियमच्चुभओ गुं[4]डाडोयउब्भडं जयकुंजरमारुहिऊण विसिट्ठनर-तुरय-रह-जोहवूं[5]हपरिगओ निग्गओ उ बहिया चंदनरिंदो, आसासिओ लोगो, पुवं व रज्जकज्जमणुचिंतिउं पवत्तो । सुणियरज्जदाणपरमत्थो य संखो अच्चंतदुस्सहसुयसोगवज्जावडणदारुणदुक्खो पलविउं पवत्तो—

१ °जुत्त प्रतौ ॥ २–तुल्यः ॥ ३ तडतडाटोपउपद्रुतजीवलोका ॥ ४ गुडा–हस्तिकवचनम् ॥ ५ °वूढप° प्रतौ । –व्यूह–॥

तथाहि—एरवयद्धवसुंधराभोगभूसणं स[1]णंतमणिकिंकिणीकरालधयवडाऽऽडोयसुंदरसुरागारं गारवाइदोसविरहियलोयनिवहोवसोहियं अत्थि जयपुरं नाम नयरं । नयर[2]र[3]क्खणविजियसहस्सक्खो स[4]क्खं धम्मराओ व विरायमाणो मा[5]णविंदो चंदो नाम भूवई । नियरूवाइगुणोहामियकमला कमलावई नाम से भज्जा । नीसेसकलाजुत्तो पुरंदरो नाम पुत्तो । पत्ती य से सवकायववियक्खणा सलक्खणा नाम । सवाणि वि इमाणि नियनियकम्मसंपउत्ताणि चिट्ठंति ।

अन्नया य गहिरगज्जिरवाऊरियबंभंडभंडोयरा फुरंतफारविज्जुच्छडाडोवभासुरा अ[6]खंडाखंडलचंडगंडीवमंडणा आरोहं[7]पयट्टमहप्पमाणमाणंसिणीमाणखंडणा वियंभिया भेसियपहियजूहा पढममेहसमूहा ।

तयणु गहिरकंठा नच्चिया नीलकंठा[8], विगलियपरितोसा रायहंसा य नट्ठा ।
नवकिसलयसोहा साहिसंघा[9] हि जाया, अखिलमवि पलीणं पोइणीणं वणं च ॥ १ ॥
महिसउलमसेसं जिंभियं भूरितोसं, विरहिजुवइवग्गो सोगिओ गाढदुक्खो ।
इय विसं[10]रिसकीडानाडियासुत्तहारो, वियरिउमुवउत्तो पाउसारंभकालो ॥ २ ॥

अवरवासरे य पायवडं[11]णपुवयं पडिहारेण अत्थाणमंडवे सुहासणासीणो विन्नत्तो राया—देव ! तिकालगयभाववियाणगो

१ रणंत° प्रतौ । स्वनत्–शब्दायमान– ॥ २ नयरक्षण–नीतिपालन– ॥ ३ °रखूण° प्रतौ ॥ ४ सक्ख धम्म° प्रतौ ॥ ५ साण° प्रतौ ॥ ६ परिपूर्णचण्डेन्द्रधनुर्भूषिता इत्यर्थः ॥ ७ °रोट्टप° प्रतौ । आरोहप्रवृत्तमहाप्रमाणमनस्विनीमानखण्डनाः विजृम्भिता भेषितपथिकयूथाः प्रथममेघसमूहाः ॥ ८ मयूराः ॥ ९ 'शाखिसङ्घाः' वृक्षसमूहाः ॥ १० विसदृशक्रीडानाटिकासूत्रधारः ॥ ११ °डणुपु° प्रतौ ॥

विमलोहिलोयणाऽवलोइयजियलोयविचित्तवावारो सुहम्मो नाम सूरी पउरलोयमज्झंगओ[1] धम्ममुवइसंतो त्ति । अरइविणोय-निमित्तं च गओ तस्स समीवं, कयनमोक्कारो य आसीणो भूमिवट्ठे ।

धम्मं कहंतस्स य सूरिणो एगो पुरिसो बहुविहरोगवस[ग]ओ, अकालपरिसुक्कालाबुसमसीसो, भग्गोट्ठ-नट्ठनासा-किलिट्ठ-दिट्ठिदेसो, ठाणट्ठाणभग्गभुयट्ठिसंठाणो[2], मडहवच्छकप्परोप्पन्नदुट्ठगंडुट्ठाणो, निम्मंस-सोणिय-कीलाणुगारजंघोरुजुयलो, अच्चं-तमबलो उवागओ तं पएसं । तक्कालसंगैय[3]करुणापूरपूरिज्जमाणमाणसेण य जणेण पुच्छिओ सूरी—भयवं ! कस्स कम्मणो एसो विसमो दसावागो ? त्ति । सूरिणा भणियं—निसामेह—

एसो हि पुव्वजम्मे माहणो अइकोहणो आसि । सो य पव्वयजत्ताए पारद्धाए, कीरंतेसु लोएण चच्चरी-पगीयपमुहकी-लाविसेसेसु, सच्छंदपाण-भोयणदाणे परोप्परं पयट्टे किं पि अपावमाणो, तक्कालुच्छलियकोवानलाउललोयणो, अविमंसिऊण[4] जुत्ता-ऽजुत्तं[5] गिरिसिहराउ निवडिऊण मओ[6] । एवं च अप्पणो तद्देसवत्तिपिपीलियापमुहसत्ताणं च विणासेण संजणियासुहकम्मो बहुप्पयारदुहनिवहं तिरियाइजोणीसु अणुभविऊण संपइ तक्कम्मसेसयाए एवंविहासुहरूवं नरत्तणं पत्तो एवं वट्टइ । तथाहि—

> पॅरिकुवियगरुयमारुयसुसियसरीरऽट्ठिबंधसंधाणो[7] । उद्धविसुक्को[8] रुक्खो व रुक्खदेहच्छवी य दढं ॥ १ ॥

१ °ज्झमओ प्रतौ ॥ २ स्थानस्थानभग्नभुजास्थिसंस्थानः कुब्जवक्षःकर्परोत्पन्नदुष्टगण्डोत्थानः ॥ ३ °संगिय° प्रतौ ॥ ४ अविमृश्य ॥ ५ °जुत्त गि° प्रतौ ॥ ६ सओ प्रतौ ॥ ७ परिकुपितगुरुकमारुतशोषितशरीरास्थिबन्धसन्धानः । ऊर्ध्वविशुष्कः वृक्ष इव रूक्षदेहच्छविश्च दृढम् ॥ ८ °विमुक्को प्रतौ ॥

> अविभाविय[1]दिन्नक्कमपक्खुलण-ढलंतजाणु-कँडि[2]भागो । धी ! मज्झ जीविएणं ति जंपिरो दुक्खमणुहवइ ॥ २ ॥
> ता जह अन्नजियाणं धम्मो रक्खाए अक्खिओ परमो । तह अप्पणो वि तो उभयरक्खणं जुज्जए काउं ॥ ३ ॥
> जो पुण वियोगदुक्खेण कोह-लोहाइदूसियमणो वा । ववसइ मरणं सरणं सुचिरं से दीहसंसारो ॥ ४ ॥

एवं सूरिणा कहिए मैणागमु[3]वसंतसोगविगारो पुरोहिओ पच्चक्खावलोइयअप्पघायणकडुयफलविवागो णिवडिओ सूरि-चरणेसु । सिट्ठो निययाभिप्पाओ । अणुसासिओ गुरूहिं—भद्द ! असक्कपडियारे एवंविहदुक्खे न धम्मकरणमंतरेण अन्नमो-सहमत्थि, ता परिच्चय इमं दुरज्झवसायं, मा सुकयऽज्जणच्छलेण समज्जिणसु उभयलोगविरुद्धमधम्मपब्भारं ति । तओ पडिबुद्धो एसो, पडिवन्नो सूरिसमीवे सामन्नं । काउमारद्धो य दुक्करतव-चरणविसेसं वीसामणाइयं साहूसु विणयकम्मं च ।

अन्नया य 'सुपढियसुत्तत्थो' त्ति गुरुणा एँगल्ल[4]विहाराणुन्नाओ स महप्पा गामा-ऽऽगराईसु विहरंतो कलिंगदेसं गओ । तत्थ य तंकालं कालसेणो नाम परिव्वायगो साहियलिंगलक्खाभिहाणजक्खो सिद्धतिलोयपिसाइयाविज्जो सुरविरइय-गयणकणयसयवत्तासणनिलीणो कन्नपिसाइयानिवेइज्जंतभूय-भाविपयत्थो 'जं कमलासणो चउहिं मुहेहिं साहइ तमहं एक्केण वि आणणेण साहेमि' त्ति सगव्वमुल्लवंतो निरंतरोविंत-जंतनर-नरिंदसंदोहसेविज्जमाणचरणो सव्वं मुँद्धविय[5]ं पवत्तो । 'अहो ! इमस्स सत्ती, अहो ! पभावो, अहो ! रूवसंपत्ती, अहो ! तिकालविन्नाणपगरिसो' त्ति पमोयमुव्वहंतो दूराओ वि आगम्म जणो गुरु-

१ अविभावितदत्तक्रमप्रस्खलदवनमज्जानुकटिभागः ॥ २ कडिं° प्रतौ ॥ ३ मणोग° प्रतौ ॥ ४ एकाकिविहारानुज्ञातः ॥ ५ °मुव्ववि° प्रतौ । मुग्धयितुम् ॥

मूढदृष्टित्वम् तद्विपाकश्च

मिव देवयमिव वा आराहइ त्ति । तं च तहाविहा[1]इसय-पूय-सक्कार-समिद्धिपत्तं पइदिणमवलोयमाणो संखसाहू सुभावियमई वि तहाविहसम्मद्दंसणमोहणीयकम्मोदयओ परिहीयमाणसम्मत्तपोग्गलो चिंतिउमारद्धो—

चउतीसातिसयधरा कहासु सीसंति सव्वतित्थयरा । गिज्जइ गणहरचरियं अणप्पमाहप्पविप्फुरियं ॥ १ ॥
सुव्वइ विउव्वि-मणपज्जवाई[2]या वन्नणा बहुपयारा । चउदसपुव्वीणं पि हु सत्ती अच्छरियसिरिसारा ॥ २ ॥
दीसइ य थेवमेत्तं पि संपयं नेव किं पि अइसइयं । तित्थंतरेसु अज्ज वि दीसइ ता किं व एयं ? ति ॥ ३ ॥

इय विमूँ[3]ढदिट्ठित्तणविणिहम्ममाणमणो किं पि कालं जीविऊण मओ समाणो उववन्नो किव्विसियवंतरसुरेसु । सुकयकम्माणुसारमुवभोत्तूण विसयसुहं चुओ संतो जाओ पंतकुले पुत्तत्तणेणं ति ।

अह दुग्गमहादुग्गइसमुत्थदुत्थत्तणं अणुभवंतो । सुचिरं मिच्छत्तातुच्छपंसुपच्छाइयविवेगो ॥ १ ॥
लद्धुं अलद्धपुव्वं पि तव्विहं सुमुणिचिन्नसामन्नं । चिंतारयणं व विमूढदिट्ठिदोसेण हाँ[5]रविउं ॥ २ ॥
संखो असंखदुक्खाण खाणिमप्पाणमुवणमेऊण । दीहद्धंमद्धगो विवँ संसारं सरिउमारद्धो ॥ ३ ॥
इय दिट्ठिदोसमवधारिऊण सम्मग्गवाँरणं परमं । परतित्थिइड्ढिदंसणवसे वि वज्जिज्ज वामोहं ॥ ४ ॥
किं वा कीरइ इड्ढीहिं ताहिं संसारसायरेऽणंते । अज्ज वि विज्जंतम्मिं परमत्थियवत्थुँबज्झाहिं ॥ ५ ॥ किञ्च—

१ °हाइंस° प्रतौ । तथाविधातिशयपूजासत्कारसमृद्धिपात्रम् ॥ २ °इवा वन्न° प्रतौ ॥ ३ विमूढदृष्टित्वविनिहन्यमानमनाः ॥ ४ °चित्तसा° प्रतौ ॥ ५ हारयित्वा ॥ ६ °द्धमुद्ध° प्रतौ ॥ ७ विव इति इवार्थकमव्ययम् ॥ ८ °वावणं प्रतौ ॥ ९ °त्थुसज्झा° प्रतौ ॥

शङ्खस्य करुण-विलापः

हा पाव ! दइ[1]य ! निद्दय ! निक्कारणवहियवेर ! निम्मेर ! । एवंविहसुपुरिसरयणभंगमिय ववसिओ सि कहं ? ॥ १ ॥
तुमए वि पयावइ ! कीस एस नो रक्खिओ गुणाण निही । कह घडियसि सप्पुरिसे तव्विहपडिँ[2]छंदएण विणा ? ॥ २ ॥
हा वच्छ ! तुज्झ विरहे वि जीवियं भुवि विडंबणामेत्तं । नरवइपडिवत्ती वि हु वज्झविभूस व अरइकरी ॥ ३ ॥
किं वा वि मेत्तदोहो तुह चंदनरिंद ! कुँवलयाणंद ! । उचिओ ? अहवा चंदे मित्तविरोहो जैँयपसिद्धो ॥ ४ ॥
एमाइ बहुपयारं विलवंतो सिरमुरं च ताडंतो । मुच्छानिमीलियऽच्छो निवडंतो भूमिवट्ठे य ॥ ५ ॥
भणिओ नरवइलोएण भद्द ! तं कीस वहसि संतावं ? । धन्नो सो तुज्झ सुओ जो पहुकज्जे च्चिय विवन्नो ॥ ६ ॥
को ते वि हु सलहइ पहुपसायमुवभुंजिऊण जे सुचिरं । जरसा जज्जरदेहा सिकँडवडिया विवज्जंति ? ॥ ७ ॥
केत्तियमेत्तं वित्तं पुत्त-कलत्तं च सामिकज्जम्मि ? । अज्ज वि जीयं देहं च झँत्ति उज्झंति तँणयं व ॥ ८ ॥

इँच्चाइवयणेहिं पन्नविज्जंतो वि मणागं पि अपरिचत्तसोगावेगो संखो भेरवँपडणं पडुच्च एगागि च्चिय नीहरिओ[10] सनयराओ । निरंतरगमणेण य पत्तो कुसुंभउरे नयरे । वुत्थो बहिया एगत्थ उज्जाणे, दिट्ठो य तत्थ समत्थपरमत्थवियक्खणो

१ दैव ! निर्दय ! निष्कारणोढवैर ! निर्मर्याद ? ॥ २ °च्छंद° प्रतौ ॥ ३ चन्द्रपक्षे कुवलयानां—रजनीविकासिकमलानामानन्दकः, नरेन्द्रपक्षे कुवलयं—पृथ्वीवलयं तद्वर्तिजनानामानन्दकः तदामन्त्रणम् । चन्द्रपक्षे 'मित्रविरोधः' सूर्यविरोधः, अन्यत्र 'मित्रविरोधः' सुहृद्विरोध इत्यर्थः । यथा चन्द्रः कुवलयानन्दकोऽपि मित्रविरोध्यपि तथा भवानपीति भावः ॥ ४ जगत्प्रसिद्धः ॥ ५ मञ्चापतिता इत्यर्थः ॥ ६ उज्झन्ति प्रतौ ॥ ७ तृणमिव ॥ ८ इच्चाई प्रतौ ॥ ९ भृगुपातं प्रतीत्य ॥ १० °ओ य न° प्रतौ ॥

उपबृंहातिचारे रुद्रसूरिकथानकम् ६ ।

जह जीवाइयतत्ते अरुई सम्मत्तदूसिगा भणिया । तह [1]संतगुणाणुववूहणा वि दिट्ठाऽइयारकरी ॥ ६ ॥
सुगुणं सम्मद्दिट्ठी सभावउ च्चिय पसंसिउं सरइ । [2]दरफुडियमालईमउलमल्लिकुलं रणझणंतं व ॥ ७ ॥
लहुपरगुणे वि सु[3]गुणज्जणुज्जओ जायए पसंसाए । भीरू वि [4]सरइ सूरं सुसामिसम्माणिओ समरे ॥ ८ ॥
संता वि जया न गुणा सलाहणं पाउणंति उचियं पि । [5]दुक्ख[6]ज्जणाण हि तया करेज्ज को आयरं [7]ताण ? ॥ ९ ॥
ता नाणाईविसए गुणलेसं जत्थ जत्तियं पासे । उववूहेज्जा तत्थ उ [8]तयं ति [9]सम्मंगमवगम्म ॥ १० ॥
जो पुण पमायओ दप्पओ व उववूहणे न वट्टेज्जा । [10]नासेज्ज अप्पयं मुणिजणं च सो रुद्दसूरि व्व ॥ ११ ॥

तथाहि—इह हि पुव्वकालं कलिकालकलिलपक्खालणेक[11]पच्चला, विमलजलासय व्व पीणिय[12]सव्वपाणिगणा, गणणाइक्कंत-गुणा गुणसेणा नाम सूरिणो बहुसिस्सगणपरिवारा अणिययविहारचारिणो ससमय-परसमयवेइणो [13]अहेसि । ते य गयंद-वयपव्वए देववंदणं काऊण, एलगच्छनयरपरिसरे कुसुमावयंसए उज्जाणे तसपाण-बीयरहिए पएसे अहासन्निहियजणं अणुजाणाविऊण [14]समोसढ त्ति । [15]तक्कित्तिपडह[16]पडिरवसवणसमुब्भवंतकोऊहलसमाउलमाणसा समागया नरवइपुरस्सरा पुरजणा ।

---

१ विद्यमानगुणाऽप्रशंसना इत्यर्थः ॥ २ दरस्फुटित–ईषद्विकसित– ॥ ३ °**गुणुज्जणु**° प्रतौ ॥ ४ 'सरति' प्राप्नोति 'शूरं' शौर्यम् ॥ ५ दुःखेन अर्जनं येषां तेषाम् दुःखानां वा अर्जनं येभ्यस्तेषाम् ॥ ६ °**ज्जणेहिं त**° प्रतौ ॥ ७ 'तेषां' गुणानाम् ॥ ८ **नयंति संसंग**° प्रतौ । 'तकत्' तद् इति ॥ ९ सम्यक्त्वाङ्गम् अवगम्य ॥ १० नाशयेत् ॥ ११–प्रत्यलाः–समर्थाः ॥ १२ **पीणय**° प्रतौ ॥ १३ अभूवन् ते च गजेन्द्रपदपर्वते ॥ १४ समवसृताः ॥ १५ तत्कीर्त्तिपटहप्रतिरवश्रवणसमुद्भवत्कुतूहलसमाकुलमानसाः ॥ १६ °**परिरव**° प्रतौ ॥

जीवादीनि सप्त तत्त्वानि तद्व्यवस्थापनं च

मुणियतज्जोगयाणुसारेण पारद्धा पहुणा धम्मदेसणा । जहा—

संसारम्मि असारे सारं जम्मो कुले सुविमलम्मि । तत्थ वि य पुरिसभावो तम्मि य सद्धम्मपडिवत्ती ॥ १ ॥
सो पुण न पाणिपीडापरिहारपर[1]म्मुहो बुहाहिमओ । तप्पीडापरिहारो य नज्जई नाणसब्भावे ॥ २ ॥
तस्स[2]ब्भावो य इहं सद्दहणे तं च [3]सत्ततत्तगयं । तत्ताणि य जिणभणियाणि जीवमाईणि नेयाणि ॥ ३ ॥
जीवा य तत्थ उवओगलक्खणा अक्खिया जिणवरेहिं । [4]ताणं विलक्खणा पुण धम्माईया अजीवा उ ॥ ४ ॥
सुह-असुहकम्मपयईपोग्गलसंगिलणमासवो वुत्तो । तव्विवरीओ पुण संवरो त्ति दिट्ठो सुदिट्ठीहिं ॥ ५ ॥
तवकिरियाए कम्माण झोसणा निज्जरा समक्खाया । कम्माण संतई पुण बंधो मोक्खो य तीए खओ ॥ ६ ॥
एवं च तत्तवि[5]न्नाणसुंदरं सायरं पयट्टंतो । धम्मे तं कल्लाणं न विज्जई जं न [6]पाउणई ॥ ७ ॥
न [7]यँ एत्तो वि हु अन्नं वन्नंती मोक्खसाहणोवायं । न य एयविउत्ताणं [8]ताणं सत्ताण किं पि परं ॥ ८ ॥
जो ई[9]ह परम्मुहमणो मणुओ नूणं मणागमेत्तं पि । संसारियदुक्खाणं खाणी अप्पा कओ तेणं ॥ ९ ॥
इय एवमाइ गुरुणा सिट्ठे सुसिलिट्ठधम्मपरमत्थे । रुद्दो नामेण [10]दुओ समच्छरं भणिउमाढत्तो ॥ १० ॥
जुत्तमिह जीवतत्तं सेसाणं पुण अजीवभावाओ । बीयं अजीवतत्तं तदन्नपरिकप्पणा विहला ॥ ११ ॥

तत्त्वसंख्याविषयकं चार्चिकम्

---

१ °**परमुहो** प्रतौ ॥ २ **तसब्भा**° ॥ ३ सप्ततत्त्वविषयम् ॥ ४ 'तेषां' जीवानाम् ॥ ५ °**वित्ताण**° प्रतौ ॥ ६ प्रगुणयति ॥ ७ **य पत्तो** प्रतौ ॥ ८ त्राणम् ॥ ९ तत्त्वविज्ञाने ॥ १० द्विजः ॥

गुरुणा भणियं भद्दय ! जुत्तमियं जंपियं तए किंतु । सविसेसवत्थुविसयं पडुच्च इय तत्तपरिसंखा ॥ १२ ॥ तथाहि—

मिच्छत्ताइदुवारानिरोहओ कम्मसंगमो जो उ । जीवस्स आसवो सो तस्सऽन्नो संवरो नेओ ॥ १३ ॥

निज्जरमाई वि हु कम्मणो परं जीवविरियसावेक्खा । इय आसवाइतत्ताणि जीव-कम्माण विसयाणि ॥ १४ ॥

कह धम्माईणमजीवभावमेत्तेण हुंतु तुल्लाणि ? । तेणेसिऽणुप्पवेसो जुज्जइ नाजीवतत्तम्मि ॥१५॥ किञ्च—

केहिं पि अविज्जाई कम्मासवणम्मि हेउणो भणिया । बंधो वि य पयईए तीए विओगो य मोक्खो त्ति ॥ १६ ॥

विज्झायदीवकप्पत्तणं च मोक्खस्स केहिं वि य सिट्ठं । तेसि मयवारणत्थं इत्थं तत्ताइं सत्तेव ॥ १७ ॥

इय साभिप्पायपरूवणाए निच्छिन्नमच्छरुच्छाहो । रुद्दो रंजियचित्तो भववासाओ विरत्तो य ॥ १८ ॥

गुरुणो पामूलम्मि सम्मं पडिवज्जिउं समणधम्मं । सुत्त-ऽत्थाहिगमपरो गुरुणा सह विहरए वसुहं ॥ १९ ॥

कालक्कमेण य सेससाहूहिंतो पढियाइं भूरिसत्थाइं । बुद्धो तदत्थो । परेसिं पि वक्खाणाइकरणाइणा बाढमुवओगी जाओ त्ति । अन्नया य सूरीहिं पभायप्पायाए रयणीए सुमिणो दिट्ठो । तओ विभावियतयत्था निच्छइयथोवजीवियव्वा य पभाए साहूणमेगत्थ मिलियाणं तब्बुद्धिविमरिसणत्थं साहिउं पवत्ता, जहा—भो साहुणो ! अज्ज पभायप्पायाए रयणीए सुमिणम्मि

---

१ मिथ्यात्वादिद्वारानिरोधात् ॥ २ °गओ जो प्रतौ ॥ ३ 'तस्य' आश्रवस्य ॥ ४ °म्माणुवि° प्रतौ ॥ ५ कर्माश्रवे ॥ ६ नितरांछिन्नमत्सरोत्साहः ॥ ७ °लम्मि प्रतौ । पादमूले ॥ ८ °धम्म प्रतौ ॥ ९ °दथो प्रतौ ॥ १० °वखाणा° प्रतौ ॥ ११ °यपय° प्रतौ ॥ १२—विमर्शनार्थं—परीक्षार्थम् ॥

यथेन्द्रजालव्यवलोकनेन चित्रीयते मुग्धजनस्तथैव । मिथ्यादृशामृद्धिनिरीक्षणेन न मुह्यति क्वापि विशिष्टदृष्टिः ॥१॥ किञ्च—

न काञ्चनसमाश्रितः श्रियमियर्ति काचोऽधिकां, न वाऽपरुचितां व्रजत्यपमलो मणिः केवलः ।
कुदृष्टिरुदितर्द्धिरप्यधिपतिर्न मुक्तिश्रियामनृद्धिरपि सम्पदां पदमुपैति सद्दर्शनः ॥ २ ॥

सद्बोधवन्ध्यकृतभूरितपःप्रसूता, भूत्वा सुखाय बहुदुःखकरी समृद्धिः ।
चैत्रप्रतिष्ठिततृषापचितेः समाना, कौतीर्थिकी कथमिवास्तु विमोहहेतुः ? ॥ ३ ॥

इति पणयोषिन्नेपथ्यतुल्यपरतीर्थिकर्द्धितश्चेतः । विनिवर्त्य निश्चलात्मा यतेत जिनदृष्टचेष्टासु ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे सम्यक्त्वचिन्तायां चतुर्थातिचारप्रक्रमे शङ्खकथानकं समाप्तम् ॥ ५ ॥

संकाईण चउण्हं करणे अइयारमक्खिउं सम्मे । उववूहाइचउण्हं इण्हिं तं किं पि कित्तेमि ॥ १ ॥

उववूहणमुववूहा पसंसणा सा गुणाण ते य इहं । नाणाई घेत्तव्वा नेव्वाणपसाहणा परमा ॥ २ ॥

नाणं जहट्ठियत्थावधारणं दंसणं च तत्तरुई । कम्मचय-रित्तकरणं चारित्तं तावगं च तवो ॥ ३ ॥

जियविफुरियं ति विरियं विणइज्जइ कम्म जेण सो विणओ । लोयाववायभीरुत्तणं तु लज्ज त्ति एमाई ॥ ४ ॥

एएसु वट्टमाणस्स साहुणो जहुचियं च सड्ढस्स । उववूहणाअकरणे सम्मत्तऽइयारमाहंसु ॥ ५ ॥

---

१ °ह्यते क्वा° प्रतौ ॥ २ °यव्वाव° प्रतौ ॥ ३ ति तिरि° प्रतौ ॥

उपबृंहातिचारे रुद्रसूरिकथानकम् ६ ।

त्तसत्थपरमत्थवेई[1], चउत्थो पुण सामज्जो नाम जोगविहाणपमुहकिरियाकलावखेयन्नु[2] त्ति । तेसिं च गुणपगरिसवसरंजियमणमाणवकीरमाणं पूया-सक्कारं मणागमसहमाणो सूरी मणमज्झे अद्धिइं करेइ ।

अन्नदिवसे य पाडलिपुत्तनयराउ समागओ एगो साहुसंघाडगो, अब्भुट्ठिओ साहूहिं, कयपायपमज्जणाइपडिवत्तिविसेसो य पडिओ सूरिचरणेसु, लेहसमप्पणपुरस्सरं च विन्नविउं पवत्तो—भयवं ! एस पाडलिपुत्तनगर[3]संघसमवाएण तुम्ह पेसिओ, अओ इमं परिभाविऊण सिग्घमणुट्ठिज्जउ तयत्थो त्ति । तओ सायरं पणामपुव्वं लेहमादाय सूरी सयं वाइउमारद्धो—

सङ्घादेशपत्रम्

श्रीमदनर्घगुणर्द्धिवर्धमानं वर्धमानजिनमानम्य[4] धर्मिष्ठजनसन्निवासपवित्रात् श्रीपाडलिपुत्रात् प्रतिहताघसङ्घः श्रीचातुर्वर्णसङ्घः समस्तनगरराजराजगृहविहारिणं सदा सङ्घकार्यकारिणं कन्दर्पदर्पमथनभद्रं सादरं समादिशति । यथा—क्षेममिह, केवलमेतदेव मनाग् यत्—प्रज्ञावज्ञातवाचस्पतिर्विरचितविचित्रकाव्योपन्यासपद्धतिः सर्वग्रन्थार्थग्रन्थिभिदुरो नाम्ना विदुरो व्यक्तलिङ्गी षड्दर्शनोपप्लवं कुर्वाणो व्यहार्षीत् । तथाहि—

काणादान[5]मदान् प्रनष्टधिषणाधिकयानवाकयान् बहून्, शाक्यां[6]स्तर्कव[7]चोविचारविमुखान् साङ्ख्यानसाङ्ख्यानपि ।
कौलान्[8] भ्रष्टबलान् निरस्तयशसो मीमांसकान् व्यंसकान्, कुर्वन् वारणवद् विशङ्कमचरत् सर्वत्र गर्वोद्धुरः ॥ १ ॥

स च सम्प्रति जैनैः सार्धं स्पर्धां चिकीर्षते । ततश्च दर्शनकृत्यं कर्तुं स्वत एवोद्यतस्य भवतः ऋक्षवृक्षकक्षं

१ °वेइ प्रतौ ॥ २ खेदज्ञः–कुशलः ॥ ३ °पुत्तो नग° प्रतौ ॥ ४ °मानम्य धम्मिष्ठ° प्रतौ ॥ ५ वैशेषिकान् ॥ ६ बौद्धान् ॥ ७ °स्तकंव° प्रतौ ॥ ८ शाक्तिकान् ॥

दिधक्षोरिवाऽऽशुशुक्षणे[1]र्यद्यप्यनुचितः प्रेरणाप्रक्रमः, तथापि 'विषमो वादविधिः[2]' इति शीघ्रं स्वयमागन्तव्यम्, व्यपाये च प्रस्तुतार्थाव्यभिचरितगुणः शिष्यो वा प्रेषणीय इति ॥ छ ॥

एवं च विभाविऊण लेहत्थं मत्थयारोवियसंघसासणो सूरी तक्खणं पट्ठिओ पाडलिपुत्तनयराभिमुहं । नवरं जाया निडालं ताडयंती अभिमुहा छिक्का । तओ—

क्षुद्विचारः

वामा खेमा लाभम्मि दाहिणा पच्छिमा नियत्तेइ । निल्लाडुया य छिक्का कयं पि कज्जं विणासेइ ॥ १ ॥

इति विभावितो उवरओ सयं गमणाओ सूरी । पेसिओ पुव्वुत्तो बंभदत्तसाहू । दिन्ना य से सूरिणा सव्वकम्मकरी विज्जा । पढियसिद्धं तमवधारिऊण अक्खंडपयाणएहिं गतो एसो पाडलिपुत्तं ।

दिट्ठो राया, अहिट्ठिओ वाओ, 'जो जेण जिप्पइ सो[3] तस्सेव सिस्सो' त्ति जाया पइन्ना । दिन्नोऽणुकंपाए विदुरस्सेव पुव्वपक्खो साहुणा । वागरिओ य गरुयवयणोव[4]न्नासेण निच्चवाओ अणेण । त[5]यक्खरेऽणुभासिऊणऽणेगंतवायवाय[6]बलेण य पलालपूलउ व्व पक्खित्तो खणद्धेण एसो मुणिणा । स[7]त्तभंगीभावणावज्जासणिनिद्दयनिद्दलियस्स व पलीणा सुई मई वाया य एयस्स । तओ निब्भत्थिओ सो रन्ना—किमेवं चिट्ठसि ? कुणसु किं पि उत्तरं ति । एवमुत्ते जिएण वि तेण पारद्धा साहुणो थोभणाइया[8] खुद्दोवद्दवा । पडिहणिया य मुणिणा पुव्वपढियविज्जाबलेणं । तओ 'सव्वहा पडिहयसामत्थो' त्ति पडिवन्नो

१ °क्षणे यद्य° प्रतौ ॥ २ °विधेरि° प्रतौ ॥ ३ सो स त° प्रतौ ॥ ४ °णोविन्ना° प्रतौ ॥ ५ तयक्खुरे° प्रतौ । तदक्षराण्यनुभाष्य अनेकान्तवादवातबलेन ॥ ६ °यपले° प्रतौ ॥ ७ सप्तभङ्गीभावनावज्राशनिनिर्दयनिर्दलितस्य इव प्रलीना श्रुतिः ॥ ८ स्तम्भनादिकाः ॥

मुणिसमीवे सामन्नं । दिन्नं रन्ना विजयपत्तं । [1]उब्भावियं सवत्थ सवन्नुसासणं । पूइज्जंतो पुरजणेणं, सलहिज्जंतो संघेणं, अंगुलीहिं दंसिज्जंतो पागयलोगेणं, विदुरसिस्ससमेओ गओ रुद्दसूरिणो समीवं बंधुदत्तो । हिययसमुवहंतमच्छरेण य न मणागं पि उववूहिओ [2]सूरिणा । तओ—

संभावणाइरित्ते [3]कज्जे संपाडिए वि लज्जंतो । आणंदिएण धन्नो उववूहिज्जइ दढं गुरुणा ॥ १ ॥

इइ भाविज्जंतो परं सोगमुवगओ बंधुदत्तो [4]सग्गुणज्जणाय मंदायरो जाओ त्ति ।

चाउम्मासियसाहू वि तंकालं चाउम्मासियतवं पवन्नो । सो वि अणवरयमिंत-जंतमहीवइपमुहपहाण[जण]कीरंतसक्कारो पंतकुले अमुणिज्जंतो उंछवित्तीए भुंजिओ । सो वि सूरिणा न वयणमित्तेण संभासिओ ।

एवं वच्चंते काले गुणोववूहणविमुहे णायगे तदज्जणपडिभग्गे साहुवग्गे सुत्तऽत्थपढण-चिंतणाइवावारा पइदिणं [5]तणुयत्तणं पत्त त्ति । रुद्दसूरी वि तदज्झवसाओ चेव कालं काऊण किव्विसियवंतरसुरेसु उववज्जिऊण दुग्गयकुलेसु केसुं पि जाओ माहणपुत्तत्तणेणं ति । कालक्कमेणं अइक्कंतबालभावो पत्तो तरुणत्तणं । [6]गुणाणुववूहणजणियदुकम्मऽवसेसयाए पडिहया से जीहा । मूओ व भासाए पयंपिउं पवत्तो, वेरग्गिओ य तद्दोसेणं, 'ही ! मए किं पुवभवे कयं ?' ति जाया [7]जिन्नासा, पज्जुवासइ सवे [8]वि तित्थिए ।

१ 'उब्भावितं' प्रभावितम् ॥ २ **सूरिणो** प्रतौ ॥ ३ **कज्जेणं सं°** प्रतौ ॥ ४ **सग्गुणज्ज°** प्रतौ ॥ ५ 'तनुकत्वं' हीनत्वम् ॥ ६ **°णाणव°** प्रतौ । गुणानुपबृंहणजनितदुष्कर्मावशेषतया ॥ ७ जिज्ञासा ॥ ८ **वि तत्थि°** प्रतौ । 'तीर्थिकान्' मतान्तरीयान् ॥

वयं किर गुरूहिं दिवंगएहिं वाहरिया—सिग्घमागच्छह अम्ह पासम्मि त्ति; अम्हेहिं भणियं—एए तुम्हाणुमग्गओ चेव आगय म्मि, ता साहेह किमिह तत्तं ? ति । तत्थ नियनियमइवियप्पणाणुसारेण केणावि किं [पि] जंपियं, परं न सूरीण मणोरंजणं जायं ।

एत्थंतरे रुद्दसाहुणा भणियं—भयवं ! न सुट्ठु विसिट्ठसुमिणमेयं [1]अतीतवाहरणाओ, ता जुत्तमेत्थ विसेसुज्जमणं ति । 'अहो ! सुद्ध[बुद्धि]पगरिसागरो' त्ति पसंसिओ सूरिणा, 'सेससाहुविसेसगुणो' त्ति सुमुहुत्ते य निवेसिओ सूरिपए, दिन्नमणुसासणं । भावियसविसेस[2]समत्तभावणा य कयचउविहाहारपच्चक्खाणा खामियसंघा इंगिणिविहाणं पवज्जिऊण दिवं गया ।

रुद्दसूरी वि सूरो व बोहिंतो [3]भवकमला[4]ईरे, पणासिंतो [5]दोसायरुल्लासं, पयडंतो मुत्ति[6]मग्गं, विहणंतो [7]मिच्छत्ततिमिरं, गामा-ऽऽगराइसु विहरंतो संपत्तो तुहिणकरनियरनिम्मलपासायपरंप[रा]राइए रायगिहनयरे, ठिओ एगत्थ उज्जाणे । तस्स य सूरिणो समुदाए चत्तारि महातवस्सिणो विज्जा-चरणगुणोववेया पसिद्धिपत्ता य संति—पढमो य ताण मज्झे बंधुदत्तो नाम वायलद्धिसंपन्नो, बीओ पभाकरो नाम विगिट्ठचाउम्मासियतवविसेससामत्थजुत्तो, तईओ य सोमिलो नाम निमि-

१ 'अतीतव्याहरणात्' अतीतकथनात् ॥ २—समत्वभावनाः ॥ ३ यथा सूर्यः कमलाकरान् बोधयति—विकासयति तथा सूरिः भव्यजीवरूपान् कमलाकरान् बोधयति ॥ ४ **°लाईरे** प्रतौ ॥ ५ यथा सूर्यः दोषाकरस्य—चन्द्रस्य उल्लासं—प्रकाशं नाशयति तथा सूरिः जीवानां दोषाकरस्य—दुर्गुणसमूहस्य उल्लासं—वृद्धिं प्रणाशयति ॥ ६ यथा सूर्यो लोकानां तिमिरानुपलक्ष्यमाणं मार्गं प्रकटयति तथा सूरिः जीवानां अज्ञानतिमिरानुपलक्ष्यमाणं मुक्तिमार्गं प्रकटयति ॥ ७ यथा सूर्यस्तिमिरं विहन्ति तथा सूरिरपि जीवानां मिथ्यात्वतिमिरं विहन्ति विघातयतीति यावत् ॥

देवभद्दसूरि-
विरइओ
कहारयण-
कोसो ॥
सम्मत्त-
पडलयं ।

॥ ३३ ॥

यद् विद्यमानगुणसम्पदि बुध्यमाने, पुंसि प्रशंसनविधौ विरमन्ति वाचः ।
स व्यक्तमन्तरुदितोद्धतदर्पसर्पदंष्ट्राविशेषजनितः सकलो विकारः ॥ १ ॥
मिथ्यादृशोऽपि यदि नाम गुणाधिकानां, निर्मत्सरा विदधते स्तवनं प्रहृष्टाः ।
सीदन्ति तत्र किमिति स्फुटजैनवाक्यसम्यग्विचारचतुरा अपि बुद्धिमन्तः ? ॥ २ ॥
शङ्कादिदोषगहनं समतीत्य दुर्गमेतावतैव किमु मुह्यति विज्ञवर्गः ? ।
सद्यो विलङ्घ्य मकराकरमस्तपारं, किं कोऽपि गोष्पदजलेऽपि निमज्जतीति ? ॥ ३ ॥
इति स्वबुद्ध्याऽऽगमतोऽनुमानाद् , विचार्य सम्यग् हृदि चावधार्य । गुणोपबृंहा बृहदादरेण, सद्दर्शनस्याङ्गमसौ विधेया ॥४॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे सम्यक्त्वचिन्तायां पञ्चमातिचारप्रक्रमे रुद्राचार्यकथानकं समाप्तम् ॥ ६ ॥

स्थिरीकर-
णातिचारे
भवदेवक-
थानकम् ७।

गुणोपबृंहो-
पदेशः

सम्मत्ते पत्ते वि हु विहुणिज्जइ कम्मदोसओ जीवो । सुहभावाओ जम्हा ता भन्नइ तत्थिरीकरणं ॥ १ ॥
राग-द्दोसपरद्धा कहिं पि वेरग्गमग्गमवहाय । भुज्जो मूलट्ठाणं ही ही ! कट्ठं पवज्जंति ॥ २ ॥
गुणठाणे गरुयम्मि वि ठेविया अन्नाणपवणखिप्पंता । दोलंति धयवडा इव कयनिप्फलबहुफडाडोवा ॥ ३ ॥
ता ताण नाण-दंसण-चरणेसु दढं विसीयमाणाणं । कारुन्नपवन्नमणो तेसु च्चिय थिरत्तमुवणितो ॥ ४ ॥

स्थिरीकरण-
स्वरूपम्

॥ ३३ ॥

१ निर्मच्छरा प्रतौ ॥ २ °णट्ठाणे प्रतौ ॥ ३ दुवि° प्रतौ ॥ ४ विषीदताम् ॥

सम्मत्तं संपत्तं पि उत्तमं उत्तमुत्तमं कुणइ । सुद्धं मणिं व सोहं[1]णगुणेण अइसुंदरतरागं ॥ ५ ॥
धम्मस्स परममंगं ता कायव्वं दढं थिरीकरणं । परहियरएण सद्धम्मसीयमाणाण सत्ताण ॥ ६ ॥
अप्पंभरित्तभावा जो पुण सामत्थसंगओ वि परं । न थिरीकरेइ धम्मे राग-द्दोसेहिं वामूढो ॥ ७ ॥
तो तदुवेहा[2]संजणियदोसवड्ढंतकलुसपरिणामो । पब्भट्ठबोहिलाभो भवदेवो इव भवे भमइ ॥ ८ ॥

तथाहि—अत्थि पउँर[3]पुरपत्तपरमब्भुदयरेहं, रेहं[4]तंकंतपसरंतजणजणियभूरिसोहं, सोहं[5]म्मसुरपयं व दीसंतबहुं[6]विबुं[7]हवग्गं, वं[8]ग्गंताणेगनड-नाडइज्ज-लंखं[9]गपेच्छणयरम्मं रम्मपुरं नाम नयरं । विणिज्जियासेसवइरिमल्लो हत्थिमल्लो नाम राया । अँभि[10]न्नहिययभूओ गंगाधरो से बालमित्तो । ताणं च सहसयण-पाण-भोयणा-ऽवत्थाणपमुहकिच्चेसु सिणेहसारं वट्टंताणं एगया एगंतगयाँ[11]ण जाओ परोप्परमेवंविहसमुल्लावो ।

किं नाम सो वि पुरिसो पोरिसमुव्वहइ सलहियं जँ[12]यइ । धरइ य कुलाभिमाणं दंसइ य कलासु कोसल्लं ॥ १ ॥
नीहरिउं सघराओ जो न पलोयइ वसुंधराभोगं । गामा-ऽऽगर-नगरा-ऽऽसम-पुरपरिकिन्नं अनिव्विन्नो ? ॥ २ ॥
ता रज्जभरं मंतीसु सव्वहा रोविऊण निच्चिंता । कइवयवरिसाइं वयं पेच्छामो मेइणीवट्टं ॥ ३ ॥

देशदर्शनम्

१ शोधनगुणेन ॥ २ तदुपेक्षासंजनितदोषवर्धमानकलुषपरिणामः ॥ ३ प्रचुरपुरप्राप्तपरमाभ्युदयरेखम् ॥ ४ राजमानकान्तप्रसरज्जनजनितभूरिशोभम् ॥ ५ 'सौधर्मसुरपदमिव' सौधर्मदेवलोकमिवेति भावः ॥ ६ °हुविहबुह° प्रतौ ॥ ७ देवलोकपक्षे विबुधाः—देवाः, अन्यत्र विबुधाः—विद्वांसः ॥ ८ वल्गत्—खेलत्—॥ ९ लङ्खाः—वरत्राखेलकाः ॥ १० अभिन्न° प्रतौ ॥ ११ °याणु जा° प्रतौ ॥ १२ जगति ॥

स्थिरीकरणातिचारे-भवदेवकथानकम् ७।

'अभिरुइयं दो[1]ण्हं एयं' ति अभिन्नरहस्समंतिसंकामियरज्जचिंता य केणइ अमुणिज्जंता कयतक्कालोचियवेसपरिग्गहा निग्गया दो वि निययभवणाओ, पट्ठिया उत्तरावहं, [2]संतुरियपयक्खेवं गया कइवयजोयणाणि, आवासिया एगस्स थेरदियवरस्स मंदिरे । अकयपरिस्समत्तणेण य नि[3]त्थामीहूयाणि अंगाणि, प[4]मिलाणा दूरं सरीरसिरी । संभासिया थेरविप्पेणं—पुत्ता ! कत्तो आगमणं ? कहिं वा गंतव्वं ? अकयपहपरिस्समा पढमघरनीहरिय [5]व्व लक्खिज्जह त्ति । रन्ना जंपियं—विप्पवर ! रम्मपुराओ कूवदद्दुर व्व सव्वत्थ [6]अपरिहत्था देसदंसणकोऊहलेण उत्तरावहं पट्ठिय त्ति । माहणेण भणियं— वच्छ ! ई[7]इसीए आगिईए न तुमं सामन्नरूवो होसि । तहाहि—

राजलक्षणानि

पडाय-कमलं-ऽकुसप्पमुहलंछणालंकियं, सहावसुइ-कोमलं पय-कराण [8]रत्तत्तणं ।
कवाडवियडं फुडं उवचियं च व[9]च्छत्थलं, निडालमवि अट्ठमीसरयचंदबिंबोवमं ॥ १ ॥
[10]घणन्नियरसुंदरो विजियपंचयन्नो सरो, सरोरुहदलुज्जलं सवणपत्तमच्छीजुयं ।
[11]जुयाय[य]भुयादुगं जह तुहं पलोएज्जए, [12]जए तह सुनिच्छियं तुममहो ! महीनायगो ॥ २ ॥

एवं सोच्चा ईसि हसिऊण भणियं रन्ना—भो माहण ! पच्चक्खीभूयभूवइसिरिणो किं तुज्झ साहेमि ? । माहणेण

१ °ण्हं ति एयं अभि° प्रतौ ॥ २ सत्वरितपदक्षेपम् ॥ ३ 'निःस्थामीभूतानि' निर्बलीभूतानि ॥ ४ प्रम्लाना ॥ ५ व्व खलिज्ज° प्रतौ । ६ अनिपुणा इत्यर्थः ॥ ७ ईईसी° प्रतौ । ईदृश्या आकृत्या ॥ ८ रत्तन्नलं प्रतौ ॥ ९ °च्छच्छलं प्रतौ ॥ १० घणनिय° प्रतौ । घणनिकरसुन्दरः ॥ ११ युगायत–युगप्रमाण। युगं–रथधुरम् ॥ १२ जगति ॥

॥ ३४ ॥

स्वगुणोत्कर्षपरगुणेर्ष्याया विपाकः

अन्नया य समोसढा चउनाणोवगया सुहम्माभिहाणा सूरिणो । गतो सो ताण समीवं, वंदिऊण निविट्ठो सन्निहियभूमिवट्ठे । सूरीहिं वि तक्खणं एगो साहू नि[1]येगुणगव्विरो परमच्छरी अणुसासिउमारद्धो । जहा—भद्द !

थेवेण वि गव्वेणं गुणसमुदाओ वि कीरइ असारो । [2]रससंभियं पि भोयणविहाणमुवहणइ गरललवो ॥ १ ॥
निम्मलगुणेसु रत्तो जणो वि अन्नत्थ ते अपि[3]च्छंतो । भणिही एसो च्चिय एरिसो त्ति गव्वेण किं गुणिणो ? ॥ २ ॥
परगुणपसंसणाए अगुणो वि गुणत्तणं धुवं लहइ । साहुकिरियाए निरओ साहुत्तं गिहनिवासि व्व ॥ ३ ॥
सगुणेसु गव्वभावो मच्छरभावो य उत्तमगुणेसु । मंदरगरुयं पि नरं लहुयं कुव्वंति [4]सयराहं ॥ ४ ॥
सगुणाण निण्हवे परगुणाण दूरं पया[5]सणेऽभिरुई । किं बहुणा भणिएणं ? [6]नाऽणभिजायाण संभवइ ॥ ५ ॥

ता वच्छ ! केत्तियं [7]तुह कहिज्जइ ? पच्चक्खं चिय पेच्छसु एयाण विवागं । सिस्सेण भणियं—भयवं ! [8]कत्थ पेच्छामि ? । तओ दंसिओ सो रोरमाहणपुत्तो पणट्ठजीहावावारो त्ति । सिस्सेण जंपियं—भयवं ! किं पुव्वभवे इमिणा कयं ? ति । गुरुणा भणियं—जं तुमं काउमुवट्ठिओ सि त्ति । सिट्ठो सव्वो तप्पुव्वकालियवुत्तंतो । पडिबुद्धो रोरमाहणो पवन्नो सामन्नं । सिस्सो वि [9]तं निसामिऊण चत्तमच्छराइदोसो गुणिजणोववूहणाइसु उज्जओ जाओ त्ति ।

उववूहणाविरहओ तदवन्नाए गुणाण परिहाणी । सद्धाभंगो [10]सुगुणज्जणे य उभयं पि हु अजुत्तं ॥ १ ॥ किञ्च—

१ निजगुणगर्ववान् ॥ २ 'रससम्भृतं' रसपूर्णम् ॥ ३ °च्छंते प्रतौ ॥ ४ शीघ्रम् ॥ ५ °सणाभि° प्रतौ ॥ ६ न 'अनभिजातानां' नीचकुलोत्पन्नानाम् ॥ ७ गुह प्रतौ ॥ ८ कच्छ पे° प्रतौ ॥ ९ तन्निसा° प्रतौ ॥ १० सुणेज्ज° प्रतौ ॥

सूरमंडले पभवंतम्मि पउरस्स वि तिमिरपब्भारस्स अवगासो ? त्ति । गओ एसो । सिट्ठो अज्जुणनरिंदस्स तव्वुत्तंतो । तं सोचा विम्हिओ राया परिभाविउं पयत्तो—अहो ! अज्ज वि एवंविहअसमसाहसधणाणि पुरिसरयणाणि सुबंति[1] ता किं न संभवइ ? । तथाहि—

तेरुर्गोष्पदवत्[2] पयोधिममरक्रीडाचलं लेष्टुवत्[3], सद्यश्चिक्षिपुरम्बरं स्वगृहवर्च्चक्रुः[4] क्रमाक्रान्तिमत् ।
पातालं विविशुर्दरीवदभयाः किं वाऽस्तु तद्[5] दुष्करं, यन्नास्मिन् विदधुर्नृणां[6] सकलं[7]तामालम्ब्य सत्त्वाधिकाः ? ॥ १ ॥

ता होउ वियप्पकल्लोलमालाउलत्तेण, गंतुं सयमेव तमवलोएमि त्ति कइवयपहाणपुरिसपरियरिओ रायवाडीववएसेण इओ तओ परिभमिऊण गओ तं पएसं जत्थ हत्थिमल्लमहीनाहो वट्टइ त्ति । तओ दूरा[8] पमुक्करायचिंधो कयतकालोचिय[9]पडिवत्तिविसेसो तस्स समीवे उवविट्ठो, सिणेहसारं च परोप्परकहाहि ट्ठाऊण भणिओ अज्जुणरन्ना हत्थिमल्लो—एह, आवासदंसणेण अम्हे अणुगिण्हह[10] त्ति । उवरोहसीलयाए गओ एसो तस्साऽऽवासं । कया णेण भोयणाइपडिवत्ती ।

खणंतरावसाणे य अणवरयकसाघायपवड्ढंतवेगजच्चतुरयसमारूढा समागया चारपुरिसा । विन्नत्तं च तेहिं—देव ! भवदेवनरिंदपुरस्सरा पच्चंतनराहिवसेणावइणो विहियसन्नाहवूहविरयणा अणुमग्गतो चेव अम्हाणमागया, ता कुणह जमित्थ पत्थावे समुचिय-न्ति । तओ आउलीहूओ अज्जुणनरिंदो, भणिओ य वइरिहिययसल्लेण हत्थिमल्लेण—भो महाराय !

१ श्रूयन्ते ॥ २ °र्गोपदवत् पयोधेम° प्रतौ ॥ ३ लेट्टुव° प्रतौ ॥ ४ °चक्रः क्र° प्रतौ ॥ ५ तदुक्करं प्रतौ ॥ ६ नृषु इत्यर्थः ॥ ७ °लनामालम्ब्य स° प्रतौ ॥ ८ °रा य मु° प्रतौ ॥ ९ °लोच्चिय° प्रतौ ॥ १० °ण्हइ त्ति प्रतौ ॥

अलमलमाउलत्तणेण, पउणीकारवेसु पउरपहरणपडहच्छं[1] जयकुंजरमेगं मह जोग्गं, अवरं च गंगाधरजोग्गं ति । 'तह' त्ति संपाडियं सव्वं[2] अज्जुणेणं । तओ अणुरूवट्ठाणनिवेसियासेससामंतचक्को चक्कवूहविरयणं काऊण ट्ठिओ परबलाभिमुहो हत्थि[3]मल्लो । लग्गमाओहणं[4]—

वज्जंताउज्जसमुच्छलंतपडिसद्दभरियनहविवरं[5] । नहविवरट्ठियसुर-खयर-किन्नरारद्धजयकारं[6][7] ॥ १ ॥
जयकारसवणसंतुट्ठवंठखिप्पंतनिसियसरनियरं[8] । सरनियरवरिसपडिरुद्धचंडमायंडकरपसरं ॥ २ ॥
पसरंतजोहसंघायघायघुम्मंतमत्तकरडिघडं[9] । करडिघडविहडणाउलचउदिसिनासंतभीरुनरं ॥ ३ ॥
नरनाहनिहणनिवडंतछत्त-धयनिवहरुद्धसमरपहं[10] । समरपहवूढरुहिरप्पवाहबुड्डंतनर-तुरयं ॥ ४ ॥
नर-तुरयमुंडदोहंडरुंडकवलणमिलंतवेयालं[11] । वेयाल-पूयणाकुलकीडाकयतुमुलहयबोलं ॥ ५ ॥
हयबोलसवणपडिवलियसुहडकीरंतवीरवाहरणं[12] । वाहरणुग्गयरणरसमुच्छियभडदिन्नहुंकारं ॥ ६ ॥

१–पडहच्छं–युक्तम् ॥ २ सच्चं प्रतौ ॥ ३ अच्छिम° प्रतौ ॥ ४ 'आयोधनं' युद्धम् ॥ ५ वाद्यमानातोद्यसमुच्छलत्प्रतिशब्दभृतनभोविवरम् । नभोविवरस्थितसुरखचरकिन्नरारब्धजयकारम् ॥ ६ °मुज्झलं° प्रतौ ॥ ७ °रद्धंज° प्रतौ ॥ ८ जयकारश्रवणसन्तुष्टवण्ठक्षिप्यमाणनिशितशरनिकरम् । शरनिकरवर्षाप्रतिरुद्धचण्डमार्तण्डकरप्रसरम् ॥ ९ प्रसरद्योधसङ्घातघातघूर्णमानमत्तकरटिघटम् । करटिघटाविघटनाकुलचतुर्दिग्नश्यद्भीरुनरम् ॥ १० नरनाथनिधननिपतच्छत्रध्वजानिवहरुद्धसमरपथम् । समरपथव्यूढरुधिरप्रवाहब्रुडद्नरतुरगम् ॥ ११ नरतुरगमुण्डद्विखण्डरुण्डकवलनमिलद्वेतालम् । वेतालपूतनाकुलक्रीडाकृततुमुलहयबोलम् ॥ १२ हयबोलश्रवणप्रतिवलितसुभटक्रियमाणवीरव्याहरणम् । व्याहरणोद्गतरणरसमूर्छितभटदत्तहुङ्कारम् ॥

हुंकांरसैकओसक्कगिद्धपम्मुक्कचंचुवावारं । वारंवारं सव्वत्थ वित्थरंतोरु-भीमरवं ॥ ७ ॥
ईय घोरसमरसम्मद्दनिद्दउद्दामवड्ढिउक्करिसो । नरनाहहत्थिमल्लो हयमहियं कुणइ रिउचक्कं ॥ ८ ॥

एवंविहे य महासमरसंरंभे अजयावहमाहवसरूवमवधारिऊण पहाणपुरिसेहिं अणिच्छंतो वि छिन्नच्छत्त-धणुवयावलोयण-मिलियमावन्नो (?) [भव]देवराया नीसारिओ समराजिराओ । 'हयं सेन्नमनायगं' ति जं जत्तो तं तत्तो लुंटियं अज्जुणराय-लोएण परबलं ; सोहिया संगामभूमी, निरूविया पहारपरव्वससरीरा सामंताइणो । दिट्ठो य गंगाधरो कुंतघायगयजीवो निवडिओ भूमिवट्ठे, परं सोगावेगमइगतो हत्थिमल्लो, कारियं च सक्काराइयं से परलोईयं । हत्थिमल्लोवरोहेण पडिवन्न-मविसन्नमाणसेण अज्जुणेण पुव्वरज्जं । धूयादाणपुरस्सरं सक्कारिओ अणेण 'परमोवयारि' त्ति हत्थिमल्लो । ठिओ सो तत्थेव कइवयवासराइं ।

नवरं नैट्ठसल्लं व से खुडुक्कंतं न खणमवि विरमइ मित्तमरणविओगदुक्खं, न नट्टविहिवियक्खणे वि सुरूवरामाजणे निवडइ चक्खू, परमपहरिसट्ठाणे वि न आणंदिज्जइ मणागमवि मणो, न गय-तुरयवाहियालीसु वि थेवमवि अहिरमई मई । एवं च स महप्पा तव्विँओगं निग्गहिउमपारयंतो देसदंसणाओ दूरनियत्तियचित्तुच्छाहो कहिं पि रइं अपावमाणो जाव

१ हुङ्कारष्वष्कदवष्वष्कद्गृध्रप्रमुक्तचञ्चुव्यापारम् । वारंवारं सर्वत्र विस्तरदुरुभीमरवम् ॥ २ °सक्किओ° प्रतौ ॥ ३ इति घोरसमरसम्मर्दनिर्दयोद्दामव-र्धितोत्कर्षः । नरनाथहस्तिमल्लः हतमथितं करोति रिपुचक्रम् ॥ ४ जं तत्तो तं प्रतौ ॥ ५ अजुण° प्रतौ ॥ ६ नट्ठस° प्रतौ ॥ ७ °ओग-निग्गहिओमपारयंतो दिसिदंसणाओ दूरं प्रतौ ॥

भणियं—महाभाग ! सामुद्दसत्थपरमत्थो एस तुह सिट्ठो, तदणुरूवा य फलनिप्फत्ती होइ न होइ त्ति कम्माण अहिगारो, तह वि अवितहवयणा भयवंतो सत्थयारा, अवस्सं भवियव्वं तुह रिद्धिसमुदएणं, अओ न जह तह अप्पा किलेसियव्वो त्ति । रन्ना जंपियं—तुब्भे जाणह त्ति ।

एवं च दिणमेगं वीसमिऊण नीहरिया तओ ठाणाओ, पयट्टा पुव्वद्दिईए गंतुं । जाव य कइवयजोयणाइं गया ताव कुरुदेसविसमभूभागट्ठियं तेहिं दिट्ठं चउदिसविमुक्केहेरियं इओ तओ भमंत-रुब्भंततुरयारूढजोहं विसन्ननायगजणं सिबिरसन्निवेसं ति । तं च तहाविहं पेच्छिऊण पुच्छिओ एगो पहाणपुरिसो—भो ! किमेवमेयं भउब्भंतं व दीसइ ? त्ति । तेण भणियं—भो महायस ! सुणेहिं—एसो हि कुरुदेसाहिवई अज्जुणो नाम राया पंचंतन-रिंदसंदोहेण रयणीअवैक्खंददाणाइणा पराजिओ, निहयपहाणजोहनिवहो य संपइ तब्भएण एवं ससंको वट्टइ । हत्थिमल्लेण भणियं—कह एत्तियचाउरंगबलसामग्गीए वि एस महप्पा एवं विसीयइ ? त्ति । तेण भणियं—किं कीरइ सामग्गीए तहाविहँसावट्ठंभधीरपुरिससानिज्झविरहियाए ? । ईयमायन्निऊण उच्छलिया रन्नो करुणा, पयट्टो महा-पुरिसत्तणसहसंभूओ परोवयारकॅरणाहिलासो, विस्सुमरियं पारद्धं नियपओयणं । भणिओ णेण सो पहाणपुरिसो—अरे ! गंतूण नियनरवइणो साहेसु—जइ तहाविहपुरिससाणिज्झाभावाउ विसीयसि ता पउणो होहि, केत्तियमित्तमिमं परबलं ? को

१ हेरिकाः—चराः ॥ २ प्रत्यन्तनरेन्द्रः—समीपदेशस्थो राजा ॥ ३ °वखंद° प्रतौ ॥ ४ °हमव° प्रतौ । तथाविधसावष्टम्भधीरपुरुषसान्निध्यविर-हितया ॥ ५ इदमाकर्ण्य ॥ ६ महापुरुषत्वसहसम्भूतः ॥ ७ °करुणा° प्रतौ ॥ ८ विस्मृतम् ॥

पुत्तो महीचंदो केणइ दुन्निमित्तेण न याणामो पिसायपारद्धो असमंजसं जंपंतो महाकट्ठेण निरुद्धो, तुम्हे य गूढपुरिसपेसणेण य तदुवक्कमकएण वाहराविया तुरियतुरियं ति। तओ 'हा ! किमेयं ?' ति आदन्नो[1] राया गतो तदंतियं । अब्भुट्ठिओ पहिट्ठेण रायसुएण । कयपायवडणाइपडिवत्तिविसेसो संभासिओ रन्ना—वच्छ ! किमेयं ? ति । रायसुएण भणियं—ताय ! कत्थ किं ? ति । तओ 'सुन्नवयणो' त्ति धरिओ रन्ना मुद्धाए[2] । सभय-चमक्कारं च जंपियमणेण—देव ! किमेवं नियमित्तं पि पीडेसि ? । रन्ना भणियं—को तुमं ? । तेण जंपियं—गंगाधरो हं । रन्ना वुत्तं—कहमेवंविहमवत्थं पत्तो ? । तेण जंपियं—महाराय ! तइया महासमरसंरंभवावडे[3] तुमए अहं निबिडगुडा[4]डोयभासुरं करेणुरायमारुहिऊण ठिओ अभिमुहो दुम्मुहाभिहाणस्स परबलसामिणो, पयट्टं महंतमाओहणं, निट्ठिया सर-नाराय-खुरुप्प-वावल्ल-भल्लि-सेल्लाइणो पहरणविसेसा[5], ततो मए चोयाविऊण सहत्थी पडिकरिदंत........निहसदेसं पडुच्च कओ खग्गेण रिउणो घाओ, तेणावि अच्चंतनिसियकुंतघायविणिंततंजालो[6] पाडिओ हं सारिविट्ठाओ[7], गयजीओ य उववन्नो पिसायदेवेसु, तुह दंसणुक्कंठिओ य संकंतो कुमारम्मि ।

इमं सोच्चा सविम्हयं सविसायं ससोगगग्गिरं[8] च संलत्तं रन्ना—अहो ! सच्छंदं देवदुविलसियं, [अहो !] अविभावणिज्जरूवा कम्मपरिणई, अहो ! भागधेयविवज्जओ, जमेवंविहसहाइरयणाणि वि एवंविहदेवकिब्बिसजोणिमावज्जंति, किमिह कीरइ ? अविसओ पुरिसयारस्स, अगोयरं[9] मंत-तंताईणं ति । मंतीहिं भणियं—देव ! अलमलं संतप्पिएण, कुणह जमेत्थ

१ व्याकुलितः ॥ २ मुद्दाए प्रतौ । मूर्ध्ना ॥ ३–व्यापृते त्वयि ॥ ४ गुडा–हस्तिकवचम् ॥ ५ °सेसो प्रतौ ॥ ६ °जाले पा° प्रतौ ॥ ७ हस्तिकवचपृष्ठात् ॥ ८ सशोकगद्गदम् ॥ ९ °यरमं° प्रतौ ॥

करणिज्जं । रन्ना भणियं—भो परममित्त ! साहेसु केण पुण विहिणा तुह कएण सुगइलाभो भवेज्जा ? सव्वहा दुक्करं पि उवायं निवेदेसु । पिसाएण भणियं—महाराय ! अइक्कंतो कालो करणिज्जस्स, सकम्माणुरूवो सहणिज्जो इयाणि दसाविवागो[1] त्ति—

देवाण नारयाण य नरिंद ! चिरविहियकम्मपडिरूवो । उवभोगो[2] च्चिय सुकयज्जणं च पुण कम्मभूमीए ॥ १ ॥
पिंडप्पयाण[3]-हुणणाइणा य जे वि य वयंति किर सुगइं । विगइगयस्स वि दूरं अन्नाणवियंभियं तं पि ॥ २ ॥
एवं पि सुगइभावे कुगई कस्स वि न होज्ज संसारे। कीरइ य कीस जह तह सुगईभावे[4] वि तवकिरिया ? ॥ ३ ॥
ता जह विरोयणोसह[5]-लंघणकिरियाए रोगिणो सम्मं। सयमेव कीरमाणीए होइ रोगक्खतो[6] नियमा ॥ ४ ॥
तह नरवर ! तव-संजम-नाण-ज्झाणाइणा सुचरिएण । असुहस्स खओ तत्तो य निम्मलो सुगइलाभो त्ति ॥ ५ ॥

एवं वुत्ते 'तह' त्ति पडिवन्नं रन्ना । कयसिणेहसारसंलावो य जहागयं पडिगओ पिसाओ । साभावियरूवं पवन्नो कुमारो । एवंविहतव्वइयरनिसामणेण य धम्मकरणाभिलासी जाओ राया ।

इओ य सो भवदेवनरिंदो समरपराजय[जाय]वेरग्गो 'कहमहं मुंहम[7]वजसपंसुमलिणं सयणाईण दंसिस्सामि ?' त्ति च्छिन्नघरदंसणाभिलासो अद्धपहे च्चिय मइसागरसूरिसमीवे पवज्जं पडिवन्नो, सुत्तत्थाइं अहिज्जंतो तवोविसेसपरो विहरंतो य गुरुणा समं समागतो रम्मपुरनयरे । सूरिसमागमसमुब्भवंतपमोयाइसया य समागया वंदणत्थं पत्थिवाइणो । निसामियसव्वन्नुवयण-

१ °सावागो वि त्ति प्रतौ ॥ २ °भोगे च्चि° प्रतौ ॥ ३ पिण्डप्रदानहवनादिना ॥ ४ °गइभा° प्रतौ ॥ ५ विरेचनौषधलङ्घनक्रियया ॥ ६ °गखतो प्रतौ । रोगक्षयः ॥ ७ सुह° प्रतौ ॥

परमत्था य मत्थयारोवियपाणिणो पाणिवहपमुहपावट्ठाणनिवित्तिं जहसत्तीए पवन्ना पुरजणा । पुहइवई वि पुव्वं चिय भववास-विरत्तचित्तो तक्कालविसेससमुल्लसंतविरइपरिणामो पणामिऊण[1] महीचंदस्स रायसिरिं[2] सिरीससुकुमारसरीरो वि निस्सामन्नं सामन्नपज्जायं घेत्तुं गुरुकुलं समल्लीणो । विजियमयणमल्लो हत्थिमल्लो वि विहरिउं पवत्तो[3] । पच्चभिन्नाओ य भवदेवसाहुणा, जहा—सो एस पव्वज्जापडिवत्तिहेउत्तणेण मह उवयारी पराजयकरणेण य अवयारी य, अहह ! कहं समराजिरमुवगओ तहा-विहमहं महंतं लहुत्तमुवणीउ ?—त्ति मणागं समुव्वहइ अणुसयं । इयरो न पच्चभिजाणइ इमं ति वच्चइ कालो ।

अन्नया य 'गीयत्थो' त्ति गुरुणा पुरओ काउं भवदेवसाहू हत्थिमल्लाइकइवयसुतवस्सिणो सहाइणो दाउं पेसिओ विहारजत्ताए । सो य सिरोवरिसमारोवियसासणो अणिययविहारचरियाए गामाणुगामं विहरिउं पवत्तो । एगया य अचि-न्तसामत्थत्तणओ मोहमहारायस्स, पडिकूलकीलाकारित्तणतो य भवियव्वयाए स महप्पा हत्थिमल्लरायरिसी परिवडियसुह-भावो परिभाविउं पवत्तो—

पडिलेहणा-पमज्जणपमुहविहाणं विणा वि देवगई । लब्भइ जीवेहिं नियइ[4]भावओ निच्छियं एयं ॥ १ ॥
कहमन्नहा महाहवनिउत्तसुनिरुत्तचित्तविरिओ[5] वि । सुरजोणिम्मऽणुपत्तो[6] मित्तो गंगाधरो मज्झ ? ॥ २ ॥
सुव्वंति य समए वि हु तहभवत्तुब्भवंतसामत्था[8][9] । अकयकिरिया वि मरुदेविमाइणो सिवपयं पत्ता ॥ ३ ॥

१ अर्पयित्वा ॥ २ °सिरिं सरीरसुकु° प्रतौ । शिरीषसुकुमारशरीरः ॥ ३ °वन्नो प्रतौ ॥ ४ नियतिभावात् ॥ ५ महाहवनियुक्तसु-निश्चितचित्तवीर्योऽपि ॥ ६ °विहरि° प्रतौ ॥ ७ सुरयोनौ अनुप्राप्तः ॥ ८ तथाभव्यत्वोद्भवत्सामर्थ्याः ॥ ९ °ब्वन्नुब्भ° प्रतौ ॥

अच्छइ ताव पुव्वरज्जाओ समागओ एगो गूढचरो, पडिहारनिवेइओ पविट्ठो, पायवडणपुव्वयं च खेत्तो अणेण लेहो । वाइओ सयं रन्ना, 'सिग्घं नियत्तियव्वं' ति अवगओ तयत्थो । कहिओ य अज्जुणनरिंदस्स एस वुत्तंतो । तओ—

करि-तुरय-रयणसंभारनिब्भरं रायलच्छिविच्छड्डं[1] । सायरकयप्पणामो समागओ अज्जुणनरिंदो ॥ १ ॥
भालयलारोवियपाणिसंपुडो[2] जंपिउं समाढत्तो[3] । देव ! तुह पायपउमप्पसायलवविलसियं एयं ॥ २ ॥
ता गिण्हसु सव्वमिमं[4] तुह उवयारस्स केत्तियं एयं ? । तुह दंसणे वि नरवर ! मन्ने कयकिच्चमप्पाणं ॥ ३ ॥
नियजीवियव्वएण[5] वि परउवयरणेक्कलालसे तुमए । को सद्दहइ न बलि-सिबिपमुहे परकज्जकरणरए ? ॥ ४ ॥
अह सगुणकित्तणायन्नणेण लज्जाए संकुडियकाओ । तं भणइ हत्थिमल्लो भो नरवर ! किमिमसुल्लवसि ? ॥ ५ ॥
का मे सत्ती ? को नाणपगरिसो ? किं कलासु कोसल्लं ? । को वा परोवयारो ? तह वि हु गुणकित्तणमउव्वं ॥ ६ ॥
थेवं पि गुणं गिरिगरुयवित्थरं सच्चविंति[6] अवरस्स । गरुयं पि अप्पणो निण्हविंति पयई सुपुरिसाण ॥ ७ ॥

ता अलं भूरिभणणेण, भद्द ! अणुभुंजसु इमं रायसिरिं, अहं पुण वच्चामि रज्जाभिमुहं ।—ति संठविऊण कइवय-पुरिससमेओ नियत्तियासेसलोओ केणइ अमुणिज्जंतो गओ सनयरं ।

पविट्ठो रायभवणं, आसीणो अत्थाणमंडवे, समागया मंति-सामंताइणो, चिंतियाइं रज्जकज्जाइं । विसज्जियासेसलोगो य मंतीहिं समं ठिओ एगंते । पुच्छिया मंतिणो—भो ! किमहं वाहरिउ ? त्ति । मंतीहिं भणियं—देव ! निसामेसु—तुम्ह

१–विस्तारम् ॥ २ °संवुडो प्रतौ ॥ ३ समारब्धः ॥ ४ सज्जमि° प्रतौ ॥ ५ °वएणं वि प्रतौ । –व्ययेन ॥ ६ पश्यन्ति ॥

इय जइ ते वि हु निच्छिन्नपायसंसारसायरा वि जिणा। अब्भुज्जमंति ता सेसयाणं[1] को एत्थ वामोहो ? ॥ २ ॥

एवं वुत्तो वि पुणरवि पच्चुत्तरमणुसंधंतो ईसिपुव्वाणुसयवसओ उवेहिओ भवदेवसाहुणा । ततो बाढं धम्मकिच्चेसु अथिरीकयमाणसो लोयलज्जाए कुणमाणो वि बज्झाणुट्ठाणं[2] विराहियसामन्नत्तणेण मरिऊण असुरेसु उववन्नो । भवदेवो वि तत्थि[3]रीकरणोवेहणसंजणियसम्मद्दंसण[4]कलंको वि कयदुक्करतवविसेससामत्थेण कालं काऊण लंतए कप्पे मज्झिमाऊ देवो जाओ त्ति। तहिं च नाणाविहकीलाहिं वच्चंति से वासरा । घडिया य दढं ईसाणनामधेएण सुरेण सद्धिं मेत्ती । वच्चइ य तेण समं[5] विदेहाइखित्तेसु तित्थयरवंदणत्थं । अह छम्माससेसाउपत्ते पुच्छिओ अणेण तित्थयरो—भयवं ! किमहं सुलह[6]बोही भविस्सामि ? न व ? त्ति । भयवया भणियं—महाभाग ! दुल्लहबोहिलाभो तुमं, नं[7] कइवयभवभमणमंतरेण समीहियत्थभागी भविस्ससि त्ति । इमं सोच्चा सोगभरनिब्भराऊरिज्जमाणमाणसो वंदिऊण [गओ] जहागयं ।

तत्थ वि य सकम्मकुलिसताडिओ व्व दुक्कयहुयासणसंतप्पंतो दिट्ठो सो ईसाणेण । पुच्छिओ अणेण—भो वरमित्त ! किंनिमित्तमित्थं तुज्झ अणुतावो ?। तओ सिट्ठं[8] एएण संतावकारणं । ईसाणेण भणियं—महाभाग ! जइ एत्तिएण [संतप्पसि] ता मा संतप्पेज्जासि, अहं तुह भवंतरगयस्स तहा काहामि जहा बोहिलाभो हवइ त्ति । पडिवन्नमिममियरेण ।

१ °णा को प्रतौ ॥ २ बाह्यानुष्ठानं विराधितश्रामण्यत्वेन ॥ ३ तत्स्थिरीकरणोपेक्षणसंजनितसम्यग्दर्शनकलङ्कोऽपि कृतदुष्करतपोविशेषसामर्थ्येन ॥ ४ °म्मंदंस° प्रतौ ॥ ५ सम्मं प्रतौ ॥ ६ °लद्धबो° प्रतौ ॥ ७ नं प्रतौ ॥ ८ सिट्ठ प्रतौ ॥

कालक्कमेण मओ उववन्नो कोसंबीए वणियसुओ, जोव्वणमणुपत्तो य पडिबोहिउमारद्धो सामोवक्कमेणं देवेणं न कहिं पि पडिबुज्झइ ।

तयणंतरं च हरि-हरिण-भिल्ल-भल्लुंकि[1]निवहभीमाए । अडवीए पक्खित्तो, सुरेण सो भेसिओ य बहुं ॥ १ ॥

लहुक्क[2]चक्क-निसियग्गखग्ग-दिप्पंतकुंतपमुहेहिं । भणिओ य तियसमायाए पहरणेहिं रउद्देहिं ॥ २ ॥

मीण[3]उलाउल-परिभमिरमयर-भीमयरलोलकल्लोले । जलहिम्मि य पक्खित्तो निस्संठुं[4] लोहपिंडो व्व ॥ ३ ॥

छूढो[5] य कढिणदाढाकरालभुयगिंदरुंदमुहकुहरे । उववेसिओ य पज्जलिरजलणजालाकलावम्मि ॥ ४ ॥

न य तह वि कह वि ईसिं पि तस्स संभवइ धम्मपडिवत्ती । अच्चंततिक्खदुक्खोह[खोह]खिप्पंतमणसो वि ॥ ५ ॥

तो पडिभग्गो तियसो जहागयं पडिगओ अजोग्गो त्ति । इयरो वि चिरं भवभाविभीमभयभायणं भूओ ॥ ६ ॥

इय सत्तिसंभवे जाणिऊण धम्मम्मि अत्थिरं सत्तं । कुज्जा सव्वपयत्तेण तं थिरं दंसणंगमिमं ॥ ७ ॥ किञ्च—

न हि विचलति चेतः कस्य मोह[6]व्यपोहात् ?, व्युपरमति [मति]र्वा कस्य नो कष्टकृत्यात् ? ।
तदपि बहुतिथोक्तिन्यायदृष्टान्तकल्पं, तमपि जिनमताध्वन्यादरात् सन्दधीत ॥ १ ॥
न्यायवर्त्मनि नियुक्तमानसं संस्करोति कतमो न देहिनम् ?। तद्विकम्पितमपि स्थिरं पुनर्यः करोति स परं विचक्षणः॥२॥

१ भल्लुंकी–शिवा ॥ २ भयङ्करचक्रनिशिताग्रखड्गदीप्यत्कुन्तप्रमुखैः ॥ ३ मीनकुलाकुलपरिभ्रमणशीलमकरभीमतरलोलकल्लोले ॥ ४ निराधारम् ॥ ५ क्षिप्तश्च कठिनदंष्ट्राकरालभुजगेन्द्रविस्तृतमुखकुहरे । उपवेशितश्च प्रज्वलनशीलज्वलनज्वालाकलापे ॥ ६ °हाव्य° प्रतौ ॥

आबालगोपालजनेऽपि सिद्धः स्वार्थप्रवृत्तावधिकः प्रयत्नः । कल्याणसिन्धोरिह कस्यचित्तु परार्थमित्थं भवति प्रयासः ॥
यद्यर्हन्नपि निर्मलकेवललब्ध्यादिनिष्ठितार्थोऽपि । धर्मे स्थिरयति सत्त्वान् तदेह सुधियां किमालस्यम् ? ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे सम्यक्त्वचिन्तायां षष्ठातिचारप्रक्रमे भवदेवराजर्षिकथानकं समाप्तम् ॥ ७ ॥

वात्सल्यस्य स्वरूपम्

[1]विहिए वि थिरीकरणे न जं विणा निव्वहंति धम्मगुणा । पाएणं दंसणिणो तमिण्हिं कित्तेमि वच्छल्लं ॥ १ ॥
संघयण-काल-बल-विरियपयरिसाभावओ सुगीयाणं । [3]सज्जो सज्जोगीण वि विलिज्जई संजमुज्जोगो ॥ २ ॥
किं पुण तक्कालपवन्नदिक्ख-[4]ओएस-बाल-रोगीण । [5]हीएज्ज न सो सुविसुद्धबुद्धिसामत्थविरहाउ ॥ ३ ॥
ता ताण पाण-भोयण-भेसह-वत्थाइदाणओ कुज्जा । वच्छल्लं सविसेसं [6]विगिट्ठतव-बालयाईसु ॥ ४ ॥
वच्छल्लभावओ च्चिय अथिरा धम्मे थिरत्तणमुवेंति । पुव्वं चेव थिरा पुण थिरतरगा उज्जमंति दढं ॥ ५ ॥
लोए वि साहुवाओ न[7]ज्जंति विभिन्नदेस-जाई वि । जिणसासणप्पवन्ना एगकुडुंबोववन्न व ॥ ६ ॥
जइ वइरसामिपमुहा साहम्मियवच्छलत्त[8]मकरिंसु । सुस्समणा वि य होउं ता सेसा किमिह सीयंति ? ॥ ७ ॥
तेणेव ऊसवाइसु [9]सरणं दिट्ठाण पुव्वमालवणं । परिभूयाणं ताणं दुत्थावत्थाण पडियरणं ॥ ८ ॥

१ विहीए प्रतौ ॥ २ °ण्हि केत्ते° प्रतौ ॥ ३ सद्यः ॥ ४ आदेशाः—अतिथयः ॥ ५ हीयेत ॥ ६ चतुःप्रभृत्यभक्तार्थकारी विकृष्टतपा उच्यते ॥ ७ °न्न ज्जं प्रतौ ॥ ८ अकार्षुः ॥ ९ 'सरणं' समवसरणम्, जिनकल्याणकादिप्रसङ्गेषु सङ्घमेलापक इत्यर्थः ॥

ता तहभवत्तं च्चिय कल्लाणकलावकारणं परमं । तदभावे पुण विहलो सव्वो कायव्ववावारो ॥ ४ ॥
संजम-तवाइएहिं उवेइ सो पागमेयमवि तुच्छं । मरुदेवीपमुहाणं तव[1]विरहे किंकओ पागो ? ॥ ५ ॥
[2]इय सुहकिरियावारगवइरिविरुज्झंतसुद्धपरिणामो । [3]स महप्पा तव-किरियासु ईसि मंदायरो जाओ ॥ ६ ॥

पुरुषभेदाः

उवलद्धतप्पमायदुव्विलसिएण भणिओ भवदेवसाहुणा—भो रायरिसिप्पवर! [4]अनिविन्नपवन्नसामन्नगुणस्स जइ वि नत्थि तुह किं पि अणुसासियव्वं तहावि किं पि भन्नइ —इह हि पुरिसा तिविहा हवंति—जहन्ना मज्झिमा उत्तमा य, तत्थ जहन्ना नारभन्ति पढमं च्चिय विग्घभयाओ धम्मत्थं, मज्झिमा पुण विग्घविहया पारद्धं पि परिहरंति, उत्तमा य पच्चूहवूहसंभवे वि ब[5]हुतरमब्भुज्जमन्ति, ता तुममवि उत्तमो भविऊण कीस धम्मकिच्चाओ [6]पच्चोसक्कंतो व लक्खिज्जसि? ता किं जुत्तमेयं? । ततो हत्थिमल्लरायरिसिणा सिट्ठो सव्वो निययाभिप्पाओ । भवदेवेण भणियं—भद्द! जइ वि मरुदेवी पुव्वमकयतव-नियमविसेसा वि तज्ज[7]म्मे च्चिय सुह[8]भावाइरेगवससमासाइयनीसेसकम्मक्खया मोक्खमुवगया तहावि न तदुदाहरणम[9]च्छेरियभूयं पमाणीकायव्वं सव्वत्थ, ववहारविगमभावाओ, जं च 'त[10]हाविहभवत्तभावाउ चेव सिद्धिलाभो, कट्ठाणुट्ठाणकरणमणु[11]चियं' ति वुत्तं तं पि न सुंदरं; जओ—
[12]तित्थयरो चउनाणी सुरमहिओ सिज्झियव्वयधुयम्मि । अणिगूहियबल-विरिओ सव्वत्थामेण उज्ज[म]इ ॥ १ ॥

१ °रहो किं प्रतौ ॥ २ इति शुभक्रियावारकवैरिविरुध्यमानशुद्धपरिणामः ॥ ३ सा म° प्रतौ ॥ ४ अनिर्विण्णप्रपन्नश्रामण्यगुणस्य ॥ ५ °हुत्तर° प्रतौ ॥ ६ 'प्रत्यवष्वष्कमाणः' प्रतिनिवर्त्तमानः ॥ ७ °ज्जमे प्रतौ ॥ ८ शुभभावातिरेकवशसमासादितनिःशेषकर्मक्षया ॥ ९ आश्चर्यभूतम् ॥ १० °हाविहभ° प्रतौ ॥ ११ °यं पि वु° प्रतौ ॥ १२ गाथेयमावश्यकनिर्युक्तौ ॥

धर्मात्मनां भोजनसमये चिन्तनम्

पट्ठिओ वं[1]इरागरं । गओ कइवयजोयणाणि, आवासिओ पच्चंतगामे, जाओ भोयणसमओ, समारद्धो भोयणोवक्कमो, 'भोयणपत्थावो' त्ति सुमरिया देव-गुरुणो, वेरग्गोवगओ चिंतिउं पवत्तो—

न यत्र जिनमन्दिरं न च जिनेश्वरस्यार्चना, न दुं[2]ष्करतपःक्रियाकृतधियोऽधिकं साधवः ।
न चापि गुणवत्तरां[3]ः शुचिधियश्च साधर्मिकाः, न चाऽऽगमवचः क्वचिच्छ्रुतिपथं समागच्छति ॥ १ ॥
विवेकविकलं मनो मम कथं विरुद्धस्पृहं, विहर्तुमभिवाञ्छति च्युतगुणं च तत्राप्यदः ? ।
य ईदृशविपर्ययव्यतिकरेण वित्तागमः, पदं स विपदामहं महदिति स्फुटं तर्कये ॥ २ ॥
अहो ! महामोहविजृम्भितानां विरुद्धसन्धानविधौ प्रयत्नः । विदन्नपीदं यदयुक्तमित्थं तथापि न त्यक्तुमहं समीहे ॥ ३ ॥
इति विसदृशसामग्री मन्येऽहं दर्शनेऽपि सन्देहम् । आधास्यतीव पापा हा धिग् ! विषमो दशापाकः ॥ ४ ॥

एवं च सकायव्वेण परं संतावमुव्वहंतो सहाइजणोवरोहेण भोत्तूण वुत्थो तत्थेव । मज्झरत्तसमए य निब्भरपसुत्तस्स सव्व[स्स]मादाय पलाणा सहाइणो । पं[4]च्चूससिसिरमारुयकयकाउक्कंपो य पबुद्धो जाव पासदेसमालोएइ ताव न किं पि पासइ । 'कहं मुसिऊणं ममं पणट्ठा दुचेट्ठा सहाइणो ? अहो ! विवरम्मुं[5]हो विही, अहो ! पडिकूला कम्मपरिणई, फलियं च कहमकालपरिहीणमेव वं[6]वसायपावपायवेण ? न सव्वहा दइवबलवियलेण वि पुरिसयारेण किं पि सिज्झइ, केवलं काय-

१ वज्राकरो देशविशेषः ॥ २ दुःक्कर° प्रतौ ॥ ३ °रा सुविधि° प्रतौ ॥ ४ प्रत्यूषशिशिरमारुतकृतकायोत्कम्पश्च ॥ ५ विशेषेण पराङ्मुखः ॥ ६ व्यवसायपापपादपेन ॥

किलेसफलो चेव जायइ सव्वो उवक्कमो, ता किं नियत्तामि घराभिमुहं ? एत्थेव वा चिट्ठामि कइवयदिणाणि ? अहवा न जुत्तमेयं, अक्खंडियपुरिसयारा चेव पुरिसाण पवित्ती, होउ किं पि, पारद्धकरणमेवोचियं' ति निच्छिऊण अच्छिन्नपयाणएहिं गतो वइरागरं । समारद्धो इयरलोएण व तेणा वि वइरागरक्खणणेण विही । पाउणइ य तेत्तियं जेत्तिएण भोयणमेत्तं संपज्जइ । एवं पि वं[1]ड्ढारई । वच्चंति वासरा ।

जाया य खन्नं[2]विज्जावियक्खणेण दिवायराभिहाणेण जोगिणा समं से गोट्ठी । दाण-सम्माण-वयणविन्नासाइणा य दूरमागरिसियं जोगिणा तस्स हिययं । अवरवासरे य सायरं भणियमणेण—भो विसाहदत्त ! गरुओ एस कायकिलेसो, जमेवं पइदिणं किलिट्ठकट्ठकप्पणाए पाणवित्ती, सव्वहा चयसु एयं, अत्थि मह सुगुरुपाउयापूयणपसाएण धरणीकप्पपरिन्नाणं, तव्वसेण य मुणियं मए—एत्तो ट्ठाणातो पुव्वदिसिभाए तिकोसमेत्तं चंडियाययणपुरओ पंचकोडिदीणारपहाणं महानिहाणं, तं च तुम्हारिसे जइ उवजुज्जइ ता जुत्तं हवइ त्ति । विसाहदत्तेण भणियं—किं पुण एत्तियकालं एयस्स अग्गहणं । दिवायरेण जंपियं—सुट्ठु पुच्छियं, सुणसु एत्थ कारणं—

अहं हि गंगां[3]सरिपरिसरे सरवणसन्निवेसे जलणबंभणसुतो आसि । संपत्तजोवं[4]णो य तहाविहवसणवसेणाऽऽवासानीयम्मि पिउणो घरसारे सनिकारं नीसारिओ हं कुद्धेण पिउणा । जहिच्छचारेण परियडंतो य पत्तो सिरिपव्वयं । दिट्ठो य तत्थ गुविलगुहाविवरमं[5]ज्झमज्झासीणो ज्झाणकोट्ठोवगतो निप्फंदलोयणो निरुद्धसव्ववावारो एगो महामुणी । पणतो मए

१ वर्धयति ॥ २ खन्यविद्याविचक्षणेन ॥ ३ गङ्गासरित्परिसरे ॥ ४ °व्वणे य प्रतौ ॥ ५ मध्यं अध्यासीनः ॥

सव्वायरेण । तम्मुहकमलावलोयणविणिउत्तलोयणो ठिओ तदंतिए । खणंतरे य ईसिविप्फारियचक्खुणा संभासिओ हं तेण—वच्छ ! कत्तो आगओ सि ? त्ति । सविणयं सिट्ठो य मए निययवुत्तंतो । तमायन्निय भणियमणेण—

उस्सिंखलखलणं पिव एक्कं पि हु इंदियं हवइ जस्स । सो गंजणं जणाओ पावइ पुणु पावयसमो वि ॥ १ ॥
किं पुण सव्वाणि वि सव्वहेव सैसविसयसंगसज्जाणि । न करेज्ज ताण सज्जो लैल्लुक्कं आवयाचक्कं ? ॥ २ ॥
विक्कंता विउणो वि य पसिद्धिपत्ता वि गरुयसत्ता वि । दुद्दंतिंदियनिहया निहणमणंता गया सत्ता ॥ ३ ॥
कुप्पंति परम्मि परं पडिकूलकरम्मि न उण थेवं पि । पइसमयभूरिदुव्विलसियागमे इंदियग्गामे ॥ ४ ॥
ता परमत्थेण न को वि कस्सई वइरिओ सुँही वा वि । अप्पा असंवुडो संवुडो य सत्तू य मित्तो य ॥ ५ ॥
इय पैसमसार-मिय-महुरजंपिरे तम्मि मुणिवरे मज्झ । भववासाओ विमुहा दूरं जाया मई ज्झत्ति ॥ ६ ॥

तओ पवन्नो हं तस्स समीवे सीसत्तणं, गयाणि कइवयवरिसाणि, दूरमावज्जियं विणयकम्मणा से हिययं, जाओ य मे पसायाभिमुहबुद्धी । अन्नदिणे य दिन्नो अणेण खन्नविज्जाउवएसो, नवरं भणितो हं—सयं इमं न भोत्तव्वं, परस्स वि अहम्मस्स न उवजुंजणिज्जं, अन्नहा अधन्नविज्जा [विव] विवंज्जिहि त्ति । 'तह' त्ति पडिस्सुयमेयं । कालक्कमेण मओ एसो । अहं पि तप्पाय-सुमरणं कुणंतो ट्ठिओ एत्तियकालं । संपयं च तुह असरिसगुणपब्भारतरलिएण उवयाराणुरूवट्ठाणबद्धाणुसएण इमं निहाणस-

१ इवार्थकमव्ययम् ॥ २ स्वस्वविषयसङ्गसज्जानि ॥ ३ भीमम् ॥ ४ सुहृद् वाऽपि । आत्मा असंवृतः संवृतश्च ॥ ५ प्रशमसार-मित-मधुर-जल्पनशीले ॥ ६ अवन्न° प्रतौ ॥ ७ 'विपत्स्यते' विनंक्ष्यति ॥ ८ असदृशगुणप्राग्भारतरलितेन उपकारानुरूपस्थानबद्धानुशयेन ॥

सीयंताणं च सुवित्तिजुंजणं चोयणं पमाईणं । साहम्मियाण धन्ना कुणंति वच्छल्लबुद्धीए ॥ ९ ॥
सुहि-सयणमाइयाणं उवयरणं भवपबंधवुड्ढिकरं । जिणधम्मपवन्नाणं तं चिय भवभंगमुवणेइ ॥ १० ॥
आसंसाविरहाओ संसारियभावविगमओ चेव । वच्छल्लममोल्लं कित्तयंति साहम्मिलोयम्मि ॥ ११ ॥
इय जो सभूमिगाए समुचियमायरइ सुद्धबुद्धीए । सो पत्तबोहिलाभो धणो व निव्वुइसुहं लहइ ॥ १२ ॥ तथाहि—

अत्थि कुबेरपुराइरेगरिद्धिवित्थारविरायंतमंदिरमालालंकिया, सच्च-सोय-दया-दक्खिन्नपमुहपहाणगुणाणुगयपवरपुरिससमद्धासिया, सीयामुत्ति व्व अच्चुयसाहापरिगया, गयाणणगंडमंडलि व्व अणवरयपयट्टदाणवरिसा, वरिससयव्वएण वि अणिट्ठिय-भूरिकोसा कोसंबी नाम नयरी । तत्थ य वत्थव्वो विसाहदत्तो नाम सेट्ठी विसिट्ठजणसम्मएण ववहारेणं वट्टंतो कालं वोलेइ । कालंतरेण य तहाविहचिरभवावज्जियसुकयविवज्जयवसेण सणियसणियं झीणो रिद्धिसमुदओ । जाया से चिंता—किमियाणिं जुत्तं ? सव्वहा दव्वविवज्जियस्स हि गिहिणो न देव-गुरुपूयणं, न बंधुजणसम्माणणं, न गुणज्जणं, न अन्नो को वि पुरिसत्थो संभवइ, ता तदज्जणं काउं जुज्जइ ।–ति कत्तो वि किं पि समज्जिऊण कुडुंबसुत्थयं काऊण किं पि भंडं घेत्तूण

१ °त्तिजंज° प्रतौ । 'सुवृत्तियोजनं' सद्व्यापारे योजनम् ॥ २ सुहृत्स्वजनादीनाम् ॥ ३ °यंतिमं° प्रतौ ॥ ४ समध्यासिता–युक्ता ॥ ५ यथा सीतामूर्त्तिः अच्युतस्य–रामस्य शाखाभिः–स्तुतिभिः परिगता–युक्ता तत्परायणा इति भावः, एवं नगर्यपि अच्युताभिः–निरन्तराभिः शाखाभिः–आहुतिभिः व्याप्ता ॥ ६ गजाननगण्डमण्डली अनवरतं प्रवृत्ता दानवर्षा–मदजलवर्षा यत्रैवम्भूता, नगरी तु दानं–त्यागः तद्वर्षा ॥ ७ °लि ज्ज अ° प्रतौ ॥ ८ °णिट्ठिय° प्रतौ । अनिष्ठितभूरिकोशा ॥ ९ माम प्रतौ ॥ १० क्षीणः ॥ ११ कुडुंबसु° प्रतौ ॥

वि न जिण-साहुणो मोत्तूण अन्नं पूएमि वंदामि वा । किञ्च—

खरतरसमीरताडियताडीदललग्गसलिलबिंदुचलं । जीवियम[1]थिरप्पहरेहविब्भमं देहसोहं पि ॥ १ ॥
[2]सरयब्भविब्भमं जोव्वणं पि दुग्गयपईवपडितुल्लं । पियजणसंजोगं सं[3]पयं पि तरुणीकड[4]क्खचलं ॥ २ ॥
सेसं पि थोयवासरथिरं ति मुणिऊण चिरपरिग्गहियं । हियमप्पणो प[5]इन्नं कयमेयमहं विलोएमि ॥ ३ ॥
सकुलकमो वि मुंचइ धम्मविरुद्धं पि कीरइ अवस्सं । जइ होज्ज जीवियव्वाइयं थिरं सव्वकालं पि ॥ ४ ॥

एवं च सव्वं पयंपंतो निसामिओ तद्देसपसुत्तेण अइगरुयासायणावसोवलद्धलिंगपारंचियपायच्छित्तेण एत्तो च्चिय अव्वत्तवेस-लिंगधारिणा अतुच्छं पच्छायावमुव्वहंतेण पच्छाकडेणं धणाभिहाणेणं । चिंतियं च तेण—अहो ! कस्सइ महाणुभावस्स सम्मत्तनिच्चलत्तणं, अहो ! गाढावइनिवडियस्स वि दढधम्मया, अहो ! अभिन्नसरो वयणविन्नासो, किमिह भन्नए ? वयं[6]मिह चिरचरियचरणा वि होऊण सगुणट्ठाणाउ एवं नाम निवडिया, एस पुण महाणुभावो गिहत्थो वि अच्चत्थं दुत्थावत्थावडिओ वि एवं पयंपइ त्ति ।

एत्थंतरे कोवारुणीकयनयणेण कयंतजीहादीहं खग्गधेणुमायड्ढिऊण भणियं जोगिणा—रे रे दुरायार ! असारजंपिर ! परमत्थमुत्त ! निव्विन्नो व जी[7]वियव्वस्स समुल्लवसि, जइ रे[8] ! तुममेवंविहधम्मनिच्चलो ता कीस बहलतमपडलसामले अणेग-

१ °मथिर° प्रतौ । अस्थिरपथरेखाविभ्रमं देहसौख्यम्, –विभ्रमां देहशोभां वा ॥ २ शरदभ्रविभ्रमम् ॥ ३ सम्पदम् ॥ ४ °क्खं च° प्रतौ ॥ ५ प्रतिज्ञाम् ॥ ६ °यमहिचि° प्रतौ ॥ ७ जीययव्व° प्रतौ ॥ ८ रे ! दुमंमेवं° प्रतौ ॥

पच्चवायाउले विभावरीमज्झे मुहा परिस्समभायणं कया अम्हे ?, तमिमं सुहपसुत्तकेसरिकिसोरतलप्पहारप्पयाणमिव मरणपज्जवसाणं तुज्झाणुट्ठियं, अओ सुमरसु इट्ठदेवयं, सुदिट्ठं च कुणसु जीवलोयं, सो एस कीणासवयणप्पवेससमओ त्ति । इमं च [1]अयंडपडियजमदंडुड्डामरमायन्निऊण भणियं विसाहदत्तेण—

अइलालियं पि अइपालियं पि कयविविहभूरिरक्खं पि । तियसेहिं पि न तीरइ पु[2]न्नावहि जीवियं जंतं ॥ १ ॥
अप्पडिपुन्नावहि नासिउं च नो तीरई त[3]यं कह वि । एवं ठिए य किं भूरि भद्द ! विहलं समुल्लवसि ? ॥ २ ॥ तथा—
अक्खंडियसपइन्नं अविगंजियनियकुलक्कमायारं । मरणं पि हु प[4]रमब्भुदयनिव्विसेसं अहं मन्ने ॥ ३ ॥
सरियव्वं पि हु चिरमेव सुमरियं वीयरायपयपउमं । ए[5]त्तियमेत्ते य मणोविनिच्छए होउ जं किं पि ॥ ४ ॥
इय जाव सो पयंपइ ता चिर[6]दिन्नोवजाइयनिमित्तं । कच्चायणीए पुरओ तं हंतुमुवट्ठिओ जोगी ॥ ५ ॥

एत्थंतरम्मि गरुयकरुणापूरपूरिज्जमाणमाणसेण परमविज्जाबलदुद्धरिसेण साहम्मियवच्छल्लसंतविरिएण सिग्घमुवसप्पिऊण भणिओ सो धणेण—रे जोगियाहम ! को एस अणज्ज[कज्ज]करणुक्करिसपरमो पोरिसारंभो ? किं एयं पि न मुणसि ?—माणसमल्लीणे परमेसरे सरणेक्कसुंदरे जिणवरे न कयाइ एवंविहखुद्दोवद्द[7]वा ईसिं पि विद्दविउं पारिंति, ता रे असच्चसंध ! कवडेण इमं महाणुभावं निहणमुवणिंतो अप्पाणं सुरक्खियं करेज्जासि ।–त्ति उग्गीरियासिपुत्तिओ चेव थंभिओ से भुओ, विबलीकयं

१ अकाण्डपतितयमदण्डभयङ्करमाकर्ण्य ॥ २ पूर्णावधि जीवितं 'यात्' गच्छत् ॥ ३ 'तत्' जीवितम् ॥ ४ 'परमाभ्युदयनिर्विशेषं' महाभ्युदयसमानम् ॥ ५ एतावन्मात्रे मनोविनिश्चये ॥ ६ चिरदत्तोपयाचितनिमित्तम् ॥ ७ °द्दवव्वा प्रतौ ॥

सरीरं विज्जाबलेणं । सं[1]भासिओ **विसाहदत्तो**, पुच्छिओ य—भद्द ! किमेवंविहदुरायारसंसग्गेण मरणपज्जवसाणेण ? । **विसाहदत्तेण** भणियं—भो परमबंधव ! वित्तिवुच्छेयपभवो लोभो ए[2]त्थावरज्झइ ।– त्ति सिट्ठो अणेण निहाणवुत्तंतो ।

तदसच्चयापच्चयकरणत्थं भणिओ धणेण **दिवायरो**—भो ! किं तए इमं आरंभियमासि ? त्ति । जोगिणा वि तम्माहप्पमणप्पमवगच्छिऊण भणियं—सुणसु भयवं !, मए चिरदिन्ननरोवजाइयसंपाडणत्थं **कच्चायणीए** पुरओ णिहाणकवडेणेह आणिओ एस मुद्धवणिओ हणिउमारद्धो य, सेसं तुज्झं पि पच्चक्खं, खमहमिण्हि अवराहं, अहं पि तुम्हाण अणुकंपणिज्जो, पसीयह सव्वहा, विसज्जह सट्ठा[3]णगमणत्थं ति । 'मा भुज्जो एवं जीववहं करेज्जासि' त्ति विसज्जितो गतो [4]सं ट्ठाणं ।

पुट्ठो धणेण **विसाहदत्तो**—भो ! कत्तो आगमणं ? कहिं वा गंतव्वं ? कत्तो वा जिणधम्मसंपत्ती ? । **विसाहदत्तेण** भणियं—धम्मसंपत्ती **साय[5]रचंदसूरि**सियासाओ, आगमणं च **कोसंबीपुरीओ**, गंतव्वं तु संपइ न कहिं पि, इहेव निवाहनिमित्तं कइवयवइँ[6-7]ररयणऽज्जणकए वाससंभवाओ । धणेण भणियं—भद्द ! जाणासि किं पि वइँररयणगुण-दोसं जेण तग्गहणमभिलससि ? त्ति । **विसाहदत्तेण** भणियं—पसायं काऊण साहेह तस्सरूवं ति । धणेण जंपियं—निरुव्विग्गो निसामेसु—

सुस्वच्छं लघु व[8]र्णतश्च गुणवत् पार्श्वेषु सम्यक् समं, रेखा-बिन्दु-कलङ्क-कां[9]कपदक-त्रासादिभिर्वर्जितं[10]म् ।
लोकेऽस्मिन् परमाणुमात्रमपि यद् वज्रं क्वचिज्जायते, तस्मिन् देवसमाश्रयो ह्यवितथस्तीक्ष्णाग्रधा[11]रं यदि ॥ १ ॥

१ मं भीसिओ प्रतौ ॥ २ अत्र अपराध्यति ॥ ३ °ट्ठाणं गमणच्छं ति प्रतौ ॥ ४ स्वं स्थानम् ॥ ५ °यरचंद° प्रतौ ॥ ६–७ °इयररय° प्रतौ ॥ ८ वन्नंत° प्रतौ ॥ ९ °काकुप° प्रतौ ॥ १० °ताम् प्रतौ ॥ ११ °धार य° प्रतौ ॥

रूवं निवेइयं ति । ता भद्द ! कारण[मु]त्तमिमं जं तुमए पुव्वं पुट्ठं ति ।

तओ दूरविगयविगप्पजालेण भणियं **विसाहदत्तेण**—भयवं ! जुत्तमिमं, कुणसु इयाणि ममाणुग्गह–न्ति । ततो निहाणपूयापमुहकायव्ववित्थरो सिट्ठो जोगिणा । तेणावि अ[1]विमंसियतच्चित्तवित्तिणा पगुणीकओ, न विभावियं थेवं पि लोभदुविलसियमिमं, जहा—

ताव च्चिय किच्चा-ऽकिच्चचिंतणा माणसम्मि संभवइ । कज्जपरिच्छेयखमा ताव च्चिय विप्फुरइ बुद्धी ॥ १ ॥
जावऽज्ज वि वज्जनिवायदारुणो दूरदरिसियदुरंतो । उत्थरइ नेव लोहो वि[2]हुणियसोहो महाजोहो ॥ २ ॥

एवं च **विसाहदत्तो** स[3]मु[व]ट्ठियावयावडणो निहा[4]णुक्खणणसमग्गपूयाविहाणसमेओ पट्ठिओ समुवइट्ठनिसिसमए समं जोगिणा । पत्तो **चंडियाययण**समीवे । भणिओ य समीवपत्तमणोवंछियसिद्धिणा जोगिणा—भद्द ! **कच्चायणी**पसायणमुहा [5]सव्वसंपत्तीतो, ता वच्च तुमं, पूएसु भगवइं, जाव अहं एयदुवारदेसे च्चिय मंडलगपूयणाइणा अणंतरकिच्चकरणाय सज्जो भवामि त्ति । 'अ[6]णुचियमिमं सव्वन्नुधम्मपवन्नाणं' ति विभाविय भणियं **विसाहदत्तेणं**—भो जोगसत्थवियक्खण ! अट्ठारसदोसवज्जियं भयवंतं निरंजणं जिणं मोत्तूण सुमिणे वि न अन्नउत्थियाणं देवयाणं वंदण-पूयणाइ कप्पइ काउं ममं, ता जइ **कच्चायणी**पूयाकिच्चसज्झो एयलाभो ता पडउ वज्जासणी लाभस्स, अलं आयासेणं, वच्चामो सट्ठाणं, किमिह बहुभणिएण, जीवियचागे

१ अविमृष्टतच्चित्तवृत्तिना ॥ २ विधुनितशोभः विधुनितसौख्यो वेत्यर्थः ॥ ३ समुपस्थितापदापतनः ॥ ४ °णुख° प्रतौ ॥ ५ सर्वसम्पत्तयः ॥ ६ °णुचिय° प्रतौ ॥

लंकमावज्जंति, को वा पडिमल्लो कम्मविलसियाणं ? । इइ चिंतावसाणे य भणियमणेणं—मह जोग्गयाणुरूवं देह किं पि आएसं ति । धणेण जंपियं—भद्द ! उवयाराणुरूवे धम्मट्ठाणे सुट्ठु वट्टेज्जासि त्ति । 'तह' त्ति पडिवज्जिऊण गओ विसाहदत्तो जहागयं, पारद्धो पुवट्ठिईए खणिउं वइरागरं ।

धणो वि चिन्नपायच्छित्ततवोविसेसो पुणो पवन्नो गुरुसमीवे सामन्नं । विसाहदत्तो वि तहाविहसमुल्लसियलाभंतरायकम्मखओव[1]संमवससमासाइयपुव्वुत्तगुणजुत्तवज्जरयणदुगो गओ सनयरं । तविक्कएण पावियं भूरि दवजायं । पयट्टो य अपुव्वजिणभवण-बिंबपइट्ठा-विसिट्ठतित्थ-तित्थयरपूयाइएसु तं निजुंजिउं ।

अन्नया य सो धणसाहू बहुमुणिजणपरिवुडो विहरंतो संपत्तो तं पुरं । वंदणत्थमागओ पुरजणो । कया साहुणा धम्मदेसणा । पडिबुद्धो बहू जणो । विसाहदत्तो वि मुणिं पच्चभिजाणिऊण जायपरमहरि[2]सुंकरिसो सायरकयपयपणामो विन्नविउं पवत्तो—

भयवं ! किं नुं[3] वियाणह ? सो एस जणो कयंतव[य]णातो । तुब्भेहि रक्खिओ जो कारुन्नपवन्नचित्तेहिं ॥ १ ॥
[4]जिंणधम्मवणि त्ति जणे तह वच्छल्लं तए कुणंतेणं । अप्पा न किंतु अहमवि भवकूवाओ समुद्धरिओ ॥ २ ॥
कह व न दिप्पइ पयडं [5]पेडिहयपरतित्थिहत्थिविक्कमणं । सासणमेयं जम्मिं तुह सरिसा हुंति मुणिसीहा ? ॥ ३ ॥
जइ कह वि तम्मि काले न तुमं हुंतो सि जीवरक्खकरो । ता अट्टज्झाणमओ कं कुगइं नेव वच्चंतो ? ॥ ४ ॥

१ °समंवससमसा° प्रतौ ॥ २ °रिसमुक° प्रतौ ॥ ३ न प्रतौ ॥ ४ जिनधर्मवणिग् ॥ ५ प्रतिहतपरतीर्थिहस्तिविक्रमणम् ॥

मन्ने तमज्ज सुदिणं सो च्चिय समओ इमो सुहाण करो । जम्मि जियकप्परुक्खं तुह [1]पयपंकयपयं दिट्ठं ॥ ५ ॥
[2]काऊण मइ पसायं संपइ आदिससु जं करेमि अहं । [3]मह पुन्नपगरिसेणं तुम्हाऽऽगमणं धुवं जायं ॥ ६ ॥
मुणिणा भणियं भद्दय ! किमन्नमिह तुह कहेमि ? भववासे । जिणधम्मा[4]ओ ण परं मणवंछियकारणं परमं ॥ ७ ॥
ता तम्मि उत्तरोत्तरसुहकिच्चाराहणेण पइदियहं । निच्चं चेव पयत्तो जुत्तो सुविवित्तचित्ताणं ॥ ८ ॥
पडिवच्छल्लं पि हु एवमेव तुमए महं कयं होइ । जइ सवसंगचागेण निब्भरं भयसि जिणधम्मं ॥ ९ ॥
'इच्छामो अणुसट्ठिं' ति भालवट्टम्मि ठवियकरकमलो । पडिवन्नसाहुवयणो, विसाहदत्तो गओ सगिहं ॥ १० ॥

ततो वाहरिऊण स[5]कुंडुंबं सिट्ठो चिरकालिओ सयलवुत्तंतो, मुणिदिन्नाएसपाउब्भूओ संजमाभिलासो य । तओ [6]भावि-विओगदुक्खभरुब्भवंतबाहपक्खालियाणणं कुडुंबं भणिउं पवत्तं—भो देवाणुप्पिय ! बाढं विप्पियमिमं सोउं पि, किमंग ! अ[7]णुमंतुं ? को वा तुमाहिंतो वि ताणं चक्खू वा अम्हाणं ? ति ।

विसाहदत्तेण भणियं—किमेवं निविवेयाणुरूवमुल्लवह ? किं न मुणह मह संपइ पच्चासन्नं [8]सम्मं मच्चुं ? सवसरीरलद्धावगासा जरा, नियनियवि[9]सयगहणपडिभग्गो इंदियग्गामो; एवंठिए य भूरिवइरिपलायमाणस्स व निरुंभणं, जलण-

१ पयपयपंकयं पयं प्रतौ । पदपङ्कजपदम् ॥ २ कृत्वा मयि प्रसादम् कृत्वाऽतिप्रसादमिति वा ॥ ३ अह प्रतौ । मम पुण्यप्रकर्षेण महापुण्यप्रकर्षेणेति वा ॥ ४ ओ वि प° प्रतौ ॥ ५ °कुडुंबं प्रतौ ॥ ६ भाविवियोगदुःखभरोद्भवद्बाष्पप्रक्षालिताननम् ॥ ७ °णुमंतं प्रतौ ॥ ८ सम्मं म° प्रतौ ॥ ९ °विसाय° प्रतौ ॥

जालावलीपरिगयभवणविणिक्खमंतस्स व अंतो[1] चिय निजंतणं, सव्वहा अजुत्तं पारद्ध[2]वत्थुपयट्टस्स मह पडिक्खलणं[3]; न य एवंकए वि तुम्ह किं पि निस्सेयसं ठाणमवगच्छामि, धम्मविग्घसंपाडणेण केवलं अहम्मकम्ममेव; ता पडिवज्जह मह वयणं, विणयह अप्पाणं, पच्छा वि भावी एस विओगदुक्खपब्भारो[4], जइ अवस्सं त[5]ब्भीरुणो भवंतो ता प[6]व्वज्जह सममेव प[7]व्वज्जं। किमि[मि]णा मु[8]हमेत्तरसिएण पज्जंतदिन्नदारुणदुहनिवहेण गिहवासेणं ? ति।

इमं सोच्चा पहिट्ठं कुडुंबं 'एवं करेमो, सम्ममाइट्ठं' ति उववूहिऊण तव्वयणं समं **विसाहदत्तेण** साहुणो समीवे सव्वविरइं घेत्तूण सुगइभायणं जाय-न्ति ॥

वच्छल्लाओ एवं **विसाहदत्तो** परं गुणं पत्तो। तत्तो य तक्कुडुंबं व[9]च्छल्लं केण प[10]इतुल्लं ? ॥ १ ॥

साहू वि धणो संजमधणस्स कित्तिस्स सुगइलाभस्स। खाइयसम्मत्तस्स वि परमं पयविं समारूढो ॥२॥ अपि च—

क्लेशांशमात्रविहतोऽपि श[11]रीरिवर्गो, मार्गं समु[12]त्सृजति विक्लवमभ्युपैति।
तस्माच्चिराचरितदान-तपोविधान-ध्याना-ऽऽगमस्मृतिफलेन विमुच्यतेऽसौ ॥ १ ॥

१ °तो जिय प्रतौ ॥ २ °वन्नुप° प्रतौ ॥ ३ °लनं प्रतौ ॥ ४ °रो। तह अवस्सं तभीरु° प्रतौ ॥ ५ 'तद्भीरवः' वियोगदुःखभीरवः ॥ ६ पव्वज्ज° प्रतौ ॥ ७ पवज्जं प्रतौ ॥ ८ मुहुमे° प्रतौ ॥ ९ °च्छइयं केण इय तुल्लं प्रतौ ॥ १० 'प्रतितुल्यं' समानम् ॥ ११ शरीरव° प्रतौ ॥ १२ °मुच्छृज° प्रतौ ॥

एकमपि य[त्र] शृङ्गं विचटितमवलोक्यते विशीर्णं वा। गुणवदपि तन्न धार्यं वज्रं श्रेयोऽर्थिभिर्भवने ॥ २ ॥

यच्चैकदेशे[ऽ]क्षतजातभासं यद्वा भवेल्लोहितबिन्दुचित्रम्। न तन्न कुर्याद् ध्रियमाणमाशु स्वच्छन्दमृत्योरपि जीवितान्तम् ॥३॥

षट्कोटिशुद्धममलं स्फुट[1]तीक्ष्णधारं, व[2]र्णान्वितं [च] लघुपार्श्वमपेतदोषम्।
इन्द्रायुधांशुविसृतिच्छुरितान्तरिक्षं, एवंविधं भुवि भवेत् सुलभं न वज्रम् ॥ ४ ॥

व्याल-वह्नि-विष-व्या[3]धि-तस्करा-ऽम्बुभयानि च। दूरात् तस्य निवर्तन्ते स्फुटकर्मा[4]ण्यर्थदानि (?) च ॥ ५ ॥

यदि वज्रमपेतसर्वदोषं बिभृयाद् विंशतितन्दुला गुरुत्वम्। मणिशास्त्रविदो वदन्ति तस्य द्विगुणं रूपकलक्षमग्रमूल्यम् ॥६॥

एवं च वइररयणसरू[5]वमवधारिऊण उइए सूरमंडले दि[6]ट्ठतविसरिसायारेण पायवडिएण **विसाहदत्तेण** भणियं—अहो महाणुभाव ! सव्वहा न कुप्पियव्वं, 'परमोवयारि' त्ति पुच्छिउं किं पि अहिलसइ मम मणो। धणेण भणियं—वीसत्थो पुच्छसि त्ति। **विसाहदत्तेण** भणियं—पसायं काऊण ता साहेसु, कहं सुसमणाणुरूवं सरीरसंठाणं ? कहं वा रयहरणपमुहोवहिविरहिओ[7] वेसो ? त्ति। धणेण जंपियं—सुट्ठु, अहं[8] हि धणो नाम साहू अणुचियवयणवसावज्जियजिणसासणासायणादोसो गुरुविइन्नएवंविहपायच्छित्तो एवं वट्टामि त्ति। एवं सोच्चा विम्हिओ **विसाहदत्तो** चिंतेइ—अहो ! कहं रयणा[य]रस्स वि वेलालंघणं ? सरयरविणो वि तमोवियारपरामरिसो ? जमेवंविहसुसाहुरयणाणि वि होऊण एवंरूववयणिज्जक-

१ °टस्तीक्ष्ण° प्रतौ ॥ २ वर्न्नान्वि° प्रतौ ॥ ३ व्याधेत° प्रतौ ॥ ४ °मान्यर्थ° प्रतौ ॥ ५ °रूवंम° प्रतौ ॥ ६ दृष्टतद्विसदृशाचारेण ॥ ७ °ओ विसो प्रतौ ॥ ८ अहं कहं प्रतौ ॥

अईसेसि इड्डि धम्मकहि वाइ आयरिय खमग नेमित्ती । विज्जा राया-गणसम्मया य तित्थं पभावेंति ॥ ४ ॥
अन्ने वि विगिट्ठतवोविसेससुइसील-निम्मलायारा । बिंति सुभद्दापमुहा तित्थस्स पभावगा[3] पहुणो ॥ ५ ॥
सावज्ज-ऽणवज्जविभागभावणं पि हु इहं न जंपंति । सचरित्त-ऽचरित्तीणं जमिमं सवेसिं[5] किच्चं ति ॥ ६ ॥
तेणेव सिंगणाइयकज्जे[6] चुन्नेज्ज चक्कवट्टिं पि । साहू लद्धिबलेणं तदकरणेऽणंतसंसारी ॥ ७ ॥ किं बहुणा ?—
साहूण चेइयाण य पडिणीयं[7] तह अवन्नवाइं च । जिणपवयणस्स अहियं[8] सवत्थामेण वारेज्जा ॥ ८ ॥
निसुणिज्जइ विण्हुकुमारसाहुणा साहुसंघपडिणीओ[9] । नमुई खित्तो चलचलणकोडिणा लवणजलहितडे ॥ ९ ॥
भूरिगुणसिद्धिहेउं लहुदोससमुब्भवो विऽणुन्नाओ । अहिदट्ठंगुलिछेओ[10] जह कीरइ जीवियवकए ॥ १० ॥
ता राग-दोसरहिओ जो जिणसासणपभावणं कुणइ । तित्थयरनामगोयं सो बंधइ नूण अयलो व ॥ ११ ॥
तथाहि—अत्थि आगरो व पुरिसरयणाणं, भूमि व सयलविज्जाठाणाणं[11], निलउ व लच्छीए[12], उप्पत्तिभूमि व अच्छेरयाणं,

१ गाथेयं निशीथभाष्ये ३३तमी । अतिशेषी ऋद्धिमान् धर्मकथी वादी आचार्यः क्षपकः नैमित्तिकः । विद्यासिद्धः राजगणसम्मताश्च तीर्थं प्रभावयन्ति ॥ २ अन्येऽपि विकृष्टतपोविशेषशुचिशीलनिर्मलाचाराः । उच्यन्ते सुभद्राप्रमुखाः प्रभोस्तीर्थस्य प्रभावकाः ॥ ३ °वणा प° प्रतौ ॥ ४ °णाव° प्रतौ ॥ ५ °व्वेसु कि° प्रतौ ॥ ६ सिंगणणायकज्जि चु° प्रतौ । 'शृङ्गनादिते कार्ये' शृङ्गवादनपूर्वकं कर्त्तव्ये सङ्घादिकानां महति कार्ये उत्पन्ने इति भावः ॥ ७ पयडीणं तह प्रतौ ॥ ८ अहितं 'सर्वस्थाम्ना' सर्वशक्त्या ॥ ९ °पडणी° प्रतौ । प्रत्यनीकः—विरोधी ॥ १० °गुणिच्छेओ प्रतौ ॥ ११ °ज्जासंट्ठाणं प्रतौ ॥ १२ °ए, पत्ति° प्रतौ ॥

रामचंदनरिंदभुयपरिहपडिहयपडिभयं[1] निव्वयपुरं नाम नयरं । तहिं च रायप्पसायट्ठाणं अयलो नाम सहस्सजोही सपरक्कमावगन्नियसेसलोगो दुल्ललियवित्तीए वट्टइ । एगम्मि य दिणे अत्थाणनिसन्नस्स रामचंदराइणो विन्नत्तं महायणेणं—देव !
न वि दीसइ चोरपयं न मुणिज्जइ तग्गमाऽऽगमो कह वि । खत्तं पि पडइ न कहिं पि नेव नज्जइ य संचल्लो ॥ १ ॥
हेल्लोहलयं[2] सयलं पि नवरि मुट्ठं ति वागरइ नयरं । सुपयत्तखेत्तधणमवि[3] हीरइ ही ! सयमिव निहित्तं ॥ २ ॥
अज्ज वि दंसिज्जइ सयनिहित्तवत्थुम्मि नूण घरसामी । दंसिज्जइ सुज्झइ थेवमवि य नो तक्करो राया (?) ॥ ३ ॥
आगिट्ठिपगिट्ठो होज्ज किं नु सो ? अहव सिद्धपुरिसो वा ? । अंजणसिद्धो वा होज्ज ? विम्हओ वट्टए गरुओ ॥ ४ ॥
इय तव्विसेसनामं पि दुल्लहं निच्छियं वयं मुणिमो[4] । अद्दिस्समाणरूवस्स किं[5] ति पुण तस्स करगहणं ? ॥ ५ ॥

इमं च सोच्चा कोवभरायंबिरच्छिविच्छोहेहिं[6] पक्खित्तकणवीरकुसुमुकरं[7] पिव भवणभागं कुणमाणो रामचंदनरिंदो जंपिउं पवत्तो—अहो ! एवंविहमसमंजसमवि[8] कीस एच्चिरदिणेहिं मह साहियं ? किं मए पडिकूलियं कयाइ तुम्ह वयणं ? न सुट्ठु वा वट्टियं पयापओयणेसु ? अवगन्निओ वा दुन्नयकारी जणो ? जमेवं उवेहा कय त्ति । महायणेण भणियं—देव ! कीस एवमासंकह ? न सुविणे वि देवो एवंविहवत्तव्वयाभायणं, केवलं अमुणिज्जमाणे तक्करसरूवे कहं पहूणं चित्तसंतावो उप्पाइज्जइ ? संपयं 'बाढं सोढुमसक्कं' ति सिट्ठं देवस्स । 'को पुण एयनिग्गहसमत्थो ?' त्ति भाविऊण राइणा पलोइया सभानिसन्ना सुहडाइणो ।

१ —परिघप्रतिहतप्रतिभयम् ॥ २ अकस्मात् ॥ ३ सुप्रत्नक्षिप्तधनमपि ॥ ४ जानीमः ॥ ५ किं पि पु° प्रतौ ॥ ६ कोपभराताम्राक्षिविक्षेपैः ॥ ७ °सुमक्क° प्रतौ ॥ ८ °मसम्मंज° प्रतौ ॥

सामंत-दंडनायग-सेणावइ-अंगरक्ख-सुहडेसु । जा को वि किं पि न भणइ विन्नत्तो ताव अयलेण ॥ १ ॥
देव ! पसीयह वियरह आएसं मज्झ किंत्तियं एयं ? । पुन्नेण कह वि लब्भइ पत्थावो एरिसो नूण ॥ २ ॥
तो नरवइणा तंबोलदाणपुव्वं पयंपिओ एवं । तह कुणसु भद्द ! सिग्घं जह लब्भ[इ] एस चोरो त्ति ॥ ३ ॥
जइ पक्खंते चोरं न लभामि अहं विसामि तो जलणं । इइ निच्छिऊण अयलो नीहरिओ रायभवणाओ ॥ ४ ॥

पयट्टो य तिय-चउक्क-चच्चर-सभा-ऽऽसम-देवभवणाइसु चोरनिरूवणं काउं । ठविया य सव्वत्थ पयडा पच्छन्ना य तदुवलक्खणत्थं पच्चइयपुरिसा । गयं दुवालसरत्तं, न लद्धा थेवमेत्ता वि चोरसुद्धी । विसन्नो एसो चिंतिउमारद्धो य—अहो ! अपरिभावियवयणाणं एवंविहो दुरंतो विवागो, जमप्पणा अप्पणो च्चिय मच्चू पच्चासन्नीकओ, निच्छियमेयवइयरच्छलेण मरणमुवट्ठियमियाणिं, ता किं समीववत्तिमरणलिंगाणि घडंति न व ?—त्ति अवलोइयमणेण नासग्गं, निरूविओ कन्नघोसो, पच्चक्खीकओ भमुहाभागो, दिट्ठा गयणगंगा । तओ 'अज्ज वि न किं पि पच्चासन्नमच्चुलिंगं' ति पहिट्ठो हियएणं । 'न य संसयतुलमणारोवियजीवियव्वेहिं कज्जं साहियं तीरइ' त्ति णिबिडनिबद्धनियंसणो सणियसणियं तमालदलसामलं खग्गधेणुमादाय एगागी पढमजाममेत्ताए रयणीए नीहरिओ घराओ एसो । गओ य नयरपच्छिमविभागवत्तिणि कुडुंगाभिहाणे महामसाणे ।

तं च केरिसं ?—

१ 'वितरत' दत्त ॥ २ चौरशोधनम् ॥ ३ °मेत्तो वि प्रतौ । स्तोकमात्राऽपि ॥ ४ °प्पणो अ° प्रतौ ॥ ५ साधयितुं शक्यते ॥ ६ °णियन्तमा° प्रतौ ॥ ७ °गवित्ति° प्रतौ ॥

मुक्तश्च तेन बहुशो जनना-ऽऽधि-मृत्यु-रङ्गत्तरङ्गभववारिधिमध्यवर्ती ।
विस्रस्तपोत इव तिष्ठति भूरिकालं, मिथ्याविकल्पजलजन्तुवितुद्यमानः ॥ २ ॥
यस्तं विपत्तिपतितं च कृपापरीतः, साधर्म्यवत्सलधियैव परं प्रशास्ति ।
तस्मात् समस्तु कतमः परमोपकारी ? त्राताऽथवा ? समभिवाञ्छितदायको वा ? ॥ ३ ॥
सद्धर्मवारि वात्सल्यमेवमुपलभ्य सत्फलनिदानम् । को नाऽऽद्रियेत कल्याणकोशकामो महासत्त्वः ? ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे सम्यक्त्वचिन्तायां सप्तमातिचारे धनकथानकं समाप्तम् ॥ ८ ॥

पुव्वुत्तगुणं पि हु दंसणं इमं मोक्खसोक्खमुवणेइ । सम्मं पभावणाए ता तीए सरूवमक्खेमि ॥ १ ॥
कालें किलिस्समाणे उस्सिंखलखलखलीकए मग्गे । हीएज्ज धम्मवंछा तित्थस्स पभावणाए विणा ॥ २ ॥
करणक्खमा य तीसे देवा ते पुण पमायणो पायं । अन्नेसि संत्तिविरहा इअ अइसइपभिइणो नेया ॥ ३ ॥

१ यस्त्वं वि° प्रतौ ॥ २ कृपावान् ॥ ३ °धर्म्यैव° प्रतौ ॥ ४ 'आख्यामि' कथयामि ॥ ५ काले क्रियमाने उच्छृङ्खलखलखलीकृते मार्गे ॥ ६ °माणा उ° प्रतौ ॥ ७ °णखमा° प्रतौ ॥ ८ 'तस्याः' प्रभावनायाः ॥ ९ प्रमादिनः ॥ १० सन्निविरहाइअसइसइप° प्रतौ । शक्तिविरहादिति । प्रभावकाश्च अतिशयिप्रभृतयोऽनन्तरमेव वक्ष्यमाणाः ज्ञेयाः ॥

अहं ते अभिरुई, नवरं तुमं पि मम अभिरुइयं पूरेज्जासि—त्ति [1]ओयड्ढिऊणं असिधेणुं छिन्नं नियसरीर[2]मंसखंडं, दिन्नं च एयस्स। 'अहो ! अभुत्तपुव्वमेरिसं' ति पारद्धो पिसाओ तं भक्खिउं ।

[3]उक्कत्तिऊण जह जह अयलो [4]से देइ मंसखंडाइं । तह तह [5]दिव्वोसहविहिय व वुड्ढि छुहा जाई ॥ १ ॥

नीसेसमंस[6]वियलं जा [7]जायं से सरीरगं दूरं । ता जीवियनिरवेक्खो सीसं सो छेत्तुमारद्धो ॥ २ ॥

धरिओ य पिसाएणं दाहिणहत्थेण सत्ततुट्ठेण । भो भो ! कँयं महायस ! एवंविहसाह[8]सेणिंतो ॥ ३ ॥

वरसु वरं ति पवुत्तो अयलो पडिभणइ देव ! पसीय ममं। पडिवज्जसु सीसमिमं कत्तो पुण तुह समो अतिही ? ॥ ४ ॥

एयस्स सयं पि [9]विणस्सिरस्स सारं सरीरगस्सेयं । जं जुज्जइ परकज्जे ता विग्घं कुणसु मा एत्थ ॥ ५ ॥

एवं पि हु [10]पन्नविओ भणइ पिसाओ वरं [11]वरसु भद्द ! । मा पुरिसरयणवियलं होउ [12]अयंडे वि धरणियलं ॥ ६ ॥

[13]इय पुणरुत्तुल्लाविरपिसायवयणावगासमवगम्म । सो भणइ देव ! तुज्झ वि किं सीसइ [14]मुणियकज्जस्स ? ॥ ७ ॥

पिसाएण जंपियं—एवमेयं, पभाए तहा करेमि जहा तुमं [15]अहिगयतक्करसरूवो रायाणं पणमसि, ता वच्च [16]निरुव्विग्गो नियमभवणं, [17]पमुक्कनीसेसचिंतापब्भारो कुणसु निद्दं, अहं पि [18]सं ठाणं गंतूण चिंतेमि किं पि किच्चसेसं ति । 'एवं होउ' त्ति

१ आकृष्य ॥ २ °मंसं खंडं प्रतौ ॥ ३ उत्कृत्य ॥ ४ 'तस्य' तस्मै । चतुर्थ्यर्थे षष्ठीविभक्तिः ॥ ५ °हर्वीहि° प्रतौ । दिव्यौषधबृंहितेव ॥ ६—विकलम् ॥ ७ पर्याप्तम् ॥ ८ °सेणिंतो प्रतौ ॥ ९ विनशनशीलस्य ॥ १० प्रज्ञापितः ॥ ११ वृणीष्व ॥ १२ अकाण्डे ॥ १३ इति पुनरुक्तोल्लपनशील-पिशाचवचनावकाशमवगम्य ॥ १४ ज्ञातकार्यस्य ॥ १५ अधिगततस्करस्वरूपः ॥ १६ निरुद्विग्नः ॥ १७ प्रमुक्तनिःशेषचिन्ताप्राग्भारः ॥ १८ स्वं स्थानम् ॥

पडिवन्नं अयलेणं । [1]अदंसणीहूओ पिसाओ ।

अयलो वि पट्ठिओ सभवणाभिमुहं । पेच्छिउं च सो नियसरीरं [2]संविसेस[म]समलायन्न-वन्नपगरिसपत्तं विसन्नचित्तो चिंतिउं पवत्तो—हा हा ! कयं अक्खयमिमं दीसइ सरीरं, न किं पि उवओगं गयं तस्स महाणुभावस्स, अहो ! मे [3]अपुन्नया, अहो ! परोवयारित्तविरहियत्तणं—ति संतप्पंतो गओ घरं, पसुत्तो सुहसेज्जाए, 'समासिद्धकज्जो' त्ति निब्भरं निद्दा[ओ] । पभायसमए य मंदीभूयनिद्दावेगो संभासिओ पिसाएण—भो अयल ! [4]पयलायसि ? जग्गसि वा ? । अयलेण भणियं—जग्गामि, आइससु करणिज्जं । पिसाएण जंपियं—जं मए तुह पडिवन्नं तमायन्नसु संपयं—

एयस्स हि नयरस्स पुव्वओ पव्वयओ नाम भगवो आसमे परिवसइ । तस्स य कविलक्खो नाम चेडओ सिद्धो । तं च पेसिऊण [5]जं किं पि नयरे सारं वत्थं वा रयणं वा आभरणं वा तमा[6]यड्ढइ त्ति । निसि[7]समए य सो जहिच्छा[ए] चोरेऊणं निस्संको वि[8]यलेइ, दिवा य भगवरूवेण संजमियसरीरो बगवित्तीए वट्टइ । अवहरियदव्वसारं च [9]उडवगब्भंतरगुविलबिल-पवेसमित्तभूमीहरनिहित्तं धरइ । एत्थ मा विगप्पं काहिसि—त्ति सपच्चयं संसिऊण जहागयं पडिगओ पिसाओ ।

सहस्सजोही वि झत्ति पबुद्धो, विप्फारियच्छो समीवे किं पि अपेच्छंतो, जाणियपिसायनिवेइयवुत्तंतो, काऊण पाभाइयकिच्चं, कइवयभिच्चपरियरिओ गओ पिसायसिट्ठे आसमपए । दिट्ठो जहासिट्ठो भगवो नियधम्मसत्थपरूवणं कुण-

१ अदर्शनीभूतः ॥ २ सविशेषम् असमलावण्यवर्णप्रकर्षप्राप्तम् ॥ ३ अपुण्यता ॥ ४ 'प्रचलायसे' निद्रासि जागर्षि वा ॥ ५ जं किमयरे प्रतौ ॥ ६ आकर्षति ॥ ७ रात्रिसमये ॥ ८ विचरति ॥ ९ उटजाभ्यन्तरगुपिलबिलप्रवेशमात्रभूमिगृहनिहितम् ॥

माणो, अच्चंतोवसंतागारो, अगारं धम्मसारस्स, सरस्सइपवाहो व्व अच्छिन्नवयणपरंपरापरूवियनायगो त्ति । तं च दट्ठूण चिंतियमयलेण—अहो ! कहमेवंविहा आगिई ? कहं वा तारिसो अकज्जकरणप्पवंचो ?, कहिं एवंविहा किच्चाऽकिच्चपयत्थपच्चायणपवणा वाणी ? कहं वा तव्विहं [1]सयं दुम्मेहदुव्विलसियं ?, सव्वहा अविभावणिज्जा कम्मपरिणई न वियारभारगोयरमरिहइ–त्ति चिंततो संभासिओ भगवेण—भो महाणुभाव ! इममासणमलंकरेसु त्ति । तओ ईसिकयप्पणामो आसीणो अयलो । भणिओ य भगवेण—भद्द ! किमुव्विग्गो व्व लक्खीयसि ? । सहस्सजोहिणा जंपियं—भयवं ! असुहलक्खणनिम्मायमुत्तिणो अम्हारिसा पए पए उव्विग्गा चेव, केत्तियं साहिज्जइ ? । तओ आपायसीसं [2]तदंगमाभोगिऊण भणियं भगवेण—भो महाभाग ! मा मा एणं [3]मुंछवसु, जओ सामुद्दसत्थलक्खणमुद्दासंवादिणी तुज्झ मुत्ती, [4]तस्सत्थं गिज्जइ—

सामुद्रिकम्

नाभिः स्वरः सत्त्वमिति प्रशस्तं, गम्भीरमेतत् त्रितयं शुभाय । उरो ललाटं वदनं च पुंसां, विस्तीर्णमेतत् त्रितयं विशिष्टम् ॥१॥
वक्षोऽथ कक्षा नख-नाशिका-ऽऽस्य-कृकाटिकाश्चेति[5] षडुन्नतानि । ह्रस्वानि चत्वारि तु लिङ्ग-पृष्ठी,ग्रीवा च जङ्घे च सुखप्रदानि॥२
नेत्रान्त-पाद-कर-तालव-ऽधरोष्ठ-जिह्वा, रक्ता नखाश्च खलु सप्त सुखावहानि ।
इत्यादिलक्षणवचांसि भवच्छरीरे, निर्दूषणानि सकलान्यपि संवदन्ति ॥ ३ ॥

अचलेनोक्तम्—भवतु शेषम्, भगवन् ! आयुर्दीर्घं मम ? न वा ? इति । ततस्तत्करतलमालोक्य भणितं भागवतेन—भो महात्मन् ! सुचिरायुरसि, यतः—

१ स्वकं दुर्मेधादुर्विलासितम् ? ॥ २ तदङ्गम् 'आभोग्य' निरीक्ष्य ॥ ३ मकारोऽत्रालाक्षणिकः ॥ ४ तच्छास्त्रम् ॥ ५ °का चेति प्रतौ ॥

श्मशानवर्णनम्

[1]अणवरयकडुयकक्खडरडंत[2]भेरवकुडुंबदुप्पेच्छं । घुग्घुर[व]घोरघूयडकयभीममहातुमुलरावं ॥ १ ॥
[3]भल्लुंक[4]मोक्कफेक्कारडामरं भमिरभूरिवेयालं । चीयद्धदड्ढमयमंसभक्खण[5]ऽक्खणियसिवचक्कं ॥ २ ॥
[6]एगत्थ कत्तिउक्कित्तपेसिम[7]यजुसियजोइणीवंद्रं । अन्नत्थ मुक्कफुट्टऽट्टहासपरिभमिरभूयकुलं ॥ ३ ॥
[8]एगत्थ कलुणसरविहियरोयणारावडाइणीबिंबं । अन्नत्थं[9] तालतरुदीहजंघघुम्मंतर[10]क्खउलं ॥ ४ ॥

तम्मि एवंविहे[11] मसाणे अयलो [12]अयलो व्व ईसिं पि अखु[13]ब्भन्तो जाव केत्तियं पि भूभागं गओ ताव एगो महापिसाओ उद्धबद्धकविलकेसपासो, फुरंततारपिंगललोयणो, [14]कंधराकुट्टकुहरपसुत्तमहाविसविस[ह]रफारफुक्कारुग्गीरियगरुयसिहिसिहाजालो, दाहिणकरेण कवालं इयरेण [15]जमभमुहाकोणकुडिलं[16] कत्तियमुव्वहंतो, 'महामंसं कत्थइ लब्भइ ?' त्ति [17]पुणरुत्तं वाहरंतो पडिओ से चक्खुगोयरं । तओ परमसाहसा[18]वूरियहियएण भणिओ से अयलेण—भद्द ! किं मग्गसि ? । पिसाएण जंपियं—अच्चंतं छुहाकिलंतो [19]महामंसं मग्गेमि, न से[से]सु मंसेसु अभिरुइ त्ति । अयलेण भणियं—मा विसीयसु, पूरेमि

१ अनवरतकटुककर्कशरटद्भैरवकुटुम्बदुष्प्रेक्षम् । घुग्घुरवघोरघूककृतभीममहातुमुलरावम् ॥ २ °तभैरवकक्कडकुडुं° प्रतौ ॥ ३ भल्लुङ्कमुक्तफेत्कारभयङ्करं भ्रमणशीलभूरिवेतालम् । चिताऽर्धदग्धमृतकमांसभक्षणाक्षणिकशिवाचक्रम् ॥ ४ °कमेक्क° प्रतौ ॥ ५ °णक्खणि° प्रतौ ॥ ६ एकत्र कर्तिकोत्कृत्तपेशिमृतकजुषितयोगिनीवृन्दम् । अन्यत्र मुक्तस्फुटाट्टहासपरिभ्रमणशीलभूतकुलम् ॥ ७ °सियमयज्जुसि° प्रतौ ॥ ८ एकत्र करुणस्वरविहितरोदनारावडाकिनीबिम्बम् । अन्यत्र तालतरुदीर्घजङ्घघूर्णद्रक्षःकुलम् ॥ ९ °त्थ डाल° प्रतौ ॥ १० °रखउ° प्रतौ ॥ ११ °हे समाणे प्रतौ ॥ १२ 'अचल इव' गिरिवत् ॥ १३ °ब्भन्नो जा° प्रतौ ॥ १४ कन्धराकोष्ठकुहरप्रसुप्तमहाविषविषधरस्फारफुत्कारोद्गीरितगुरुकशिखिशिखाजालः ॥ १५ यमभ्रुकुटिकोणकुटिलां कर्तिकामुद्वहन् ॥ १६ °डिलकत्तियं मु° प्रतौ ॥ १७ वारंवारम् ॥ १८ °वूहिय° प्रतौ । –आपूरित– ॥ १९ 'महामांसं' मनुष्यमांसम् ॥

परमत्थेण कारणभूओ, कहमन्नहा एयवइयरं कोइ मुणंतो ? सव्वहा महाणत्थकारी अहं, तथाहि—

एगं लिंगी एसो अन्नं तह लक्खणोवएसी मे । वीसासमुवगओ वि य तह दंसियपणयभावो य ॥ १ ॥
कहमवगणिय समग्गं एयमहं दूरचत्तनयमग्गो । एवंविहं अकिच्चं ही ही ! नणु ववसिओ काउं ? ॥ २ ॥
बहुसाहियम्मि कज्जे तुण्हिक्को होज्ज पयडमवि लोए । अइपावपरिगएणं इमं पि वयणं न संभरियं ॥ ३ ॥
इहलोइयतुच्छपओयणत्थमित्थं अकिच्चलक्खं पि । काउं कंक्खइ जीवो नावेक्खइ तक्कयं दुक्खं ॥ ४ ॥
इय अविभावियकिच्चस्स होउ एयस्स मज्झ पच्छित्तं । जीवियचागो सिहिभक्खणेण जलपविसणेणं वा ॥ ५ ॥

एवं कयनिच्छओ सहस्सजोही अणाइक्खिऊण कस्सइ वत्तं मज्झरत्ते नीहरिओ घराओ, गओ एगंतपच्चंतसन्निवेसं, पारद्धो कट्ठाणि मीलिउं । दिट्ठो य अणेण एगो एगंतवासी एगपायनिहियसव्वसरीरभारो मायंडमंडलुम्मुहानिमेसनिवेसियनयणो काउस्सग्गगओ तवस्सि त्ति । 'होउ ताव, सायत्तं मरणं, पुच्छामि ताव इमं—किमेवं एस किलिस्सइ ?' त्ति । गओ अयलो तस्स समीवं, निवडिओ चलणेसु, उट्ठिओ वि पज्जुवासिउमाढत्तो । खणंतरे य पारियकाउस्सग्गो पुच्छिओ णेण साहू—भयवं ! किंनिमित्तमेवं अप्पा संताविज्जइ ? । मुणिणा भणियं—

नहि गरुयरोगविरहे विरोयणोसह-विसोसणप्पमुहं । अभिनंदइ किरियं कोइ कीरमाणिं सुमुद्धो वि ॥ १ ॥

१ एगो प्रतौ ॥ २ कथमवगणय्य समग्रम् ॥ ३ 'व्यवसितः' लग्नः ॥ ४ तत्कृतम् ॥ ५ अविचारितकार्यस्येत्यर्थः ॥ ६ °समाणेणं प्रतौ ॥ ७ अनाख्याय कस्यापि वार्त्ताम् ॥ ८ एकपादनिहितसर्वशरीरभारः मार्तण्डमण्डलोन्मुखानिमेषनिवेशितनयनः ॥ ९ स्वायत्तम् ॥ १० विरेचनौषधविशोषणप्रमुखाम् ॥

न य भूरिपावपब्भारभारियं अप्पयं अपेहित्ता । कट्ठाणुट्ठाणमहो ! एवंविहमारभइ को वि ॥ २ ॥

ता मुद्धमुह ! एयनिमित्तं । अयलेण भणियं—भयवं ! जहावित्तं तुम्ह विचित्तं फुडक्खरं सोउमिच्छामि । मुणिणा भणियं—जइ एवं ता सुणसु—

तपस्विमुनेरात्मकथा

अहं हि कायंदीए पुरीए वणसीहो नाम पारद्धिओ आसि । नियठक्कुरेण समं आहेडयं काउं अडविं गओ । तहिं च मयकुलमुद्दिसिय ठक्कुरवयणेण पारद्धो पंचमुग्गारसरो गेयरवो । तदाय[ण्ण]णुप्पन्नसवणसुहसंदोहसम्मीलियलोयणं निद्दायमाणं व समीवमुवसप्पिउमारद्धं मयकुलं । खित्तो य आयन्नमायड्ढिऊण ठक्कुरेण तरुमूलनिलीणेण तयभिमुहो सिलीमुहो । विद्धा य तेण वेलामासवत्तिगुरुगब्भभरमंदगामिणी हरिणी । पीडापब्भारविदिन्नोदरा दूरपडियफुरफुरायमाणगब्भा य विरसमारसंती धस त्ति धरणीयले पडिया । तं च तहाविहविसमदसावडियमवलोयमाणस्स मह जाया महती दया । 'अहो ! अहमिमस्स अकज्जस्स निमित्तं' ति कुविओ अप्पणो उवरि । ससरं सरासणं मोडिऊण वेगेण धाविओ गिरिसिरावडणं काउं । खलिउमपारयंतो य वलिओ विलक्खो ठक्कुरो । अहं च गिरिसिराओ पडंतो पडिसिद्धो तद्देसकयकाउस्सग्गेण चारणसमणेण, पन्नविओ य । जहा—

१ अप्रेक्ष्य ॥ २ 'आखेटकम्' मृगया ॥ ३ मृगकुलम् ॥ ४ तदाकर्णनोत्पन्नश्रवणसुखसन्दोहसम्मीलितलोचनम् ॥ ५ खिन्नो य प्रतौ ॥ ६ आकर्णमाकृष्य ॥ ७ बाणः ॥ ८ वेलामासवर्त्तिगुरुगर्भभरमन्दगामिनी ॥ ९ पीडाप्राग्भारविदीर्णोदरा दूरपतितस्फुरत्स्फुरायमाणगर्भा ॥ १० °णस्स म° प्रतौ ॥ ११ 'शरासनं' धनुः ॥

जइ निव्वियप्पमप्पा एवं परिकप्पिओ त[1]ए हंतुं । ता हणसु तह कहं पि हु जहा हओ होइ सु[2]हओ सो ॥ १ ॥
सुहतो य होइ सो पुण प[3]यंडतवकम्मनिम्महिज्जंतो । गिम्हुम्हायावणतरं[4]णितेयताविज्जमाणो य ॥ २ ॥
सिसिरसतुसारमारुयसीयफरिसा......हम्ममाणो य । जावज्जीवं सज्झाणकोट्टयट्ठावणेणेव ॥ ३ ॥
इय भद्द ! जइ सच्चं चिय किं पि वेरग्गं ता उग्गमायरसु धम्मं–ति अणुसासिओ पवन्नो हं सामन्नं । एवं च दुरणुचरेण कट्ठकलावेण अप्पाणं झोसंतो विहरामि त्ति ॥ छ ॥

इमं च स[5]म्ममवधारिऊण 'समाणरोगत्तणेण एयमेव ओसहं' ति मन्नमाणेण अयलेणावि गहिया त[6]द्दिक्खा । दुक्करतव-चरण-करणपरो य गाम-नगरा-ऽऽगराभिरामं वसुंधराभोगं विहं[7]रिउमारद्धो । अवि य—
सो नत्थि तवविसेसो सुदुक्करो वि हु न तेण जो तविओ । सुत्तं पि नत्थि तं जन्न ते[8]णं फुडमहिगयं सम्मं ॥ १ ॥
फुं[9]ट्टट्टहासवेयालविहियडक्कारडाइणीभीमं । तं नत्थि सुसाणं भूयभवणमवि सो न जत्थ ठिओ ॥ २ ॥
एवं च अणुत्तरतव-सच्च-सोय-विरिउल्लासवसेण तस्स जाया बहवो लद्धिविसेसा । तम्माहप्पेण भुयगो व फणारयणेण, कुरंगराउ व केसरस[10]डाकडप्पेण, करिवरो व [11]कलहोयधवलदसणमुसलजुयलेण लोयाणं पमोयं भयं च उप्पायंतो महाणुभावो परं पसिद्धिं गओ ।

१ **तए हुंतं** प्रतौ ॥ २ 'सुहतः' सन्मरणं प्रापितः ॥ ३ प्रचण्डतपःकर्मनिर्मथ्यमानः । ग्रीष्मोष्मातापनातरणितेजस्ताप्यमानश्च ॥ ४ °**रणते**° प्रतौ ॥ ५ **सम्मंमव**° प्रतौ ॥ ६ **तदिक्खा** प्रतौ । तद्दीक्षा ॥ ७ **विरहिउ**° प्रतौ ॥ ८ **ते य फु**° प्रतौ ॥ ९ स्फुटाट्टहासवेतालविहितडक्कार-डाकिनीभीमम् ॥ १० °**डाकडकडप्पे**° प्रतौ । केसरसटासमूहेन ॥ ११ कलधौतधवलदशनमुशलयुगलेन ॥

कनिष्ठिकामूलभवा गता या, प्रदेशिनी-मध्यमिकान्तरालम् । करोति रेषा परमायुषं, सा प्रमाणहीना तु तदूनमायुः ॥१॥
एवं च खणमेक्कं विगमिऊण पिसायनिवेइयत्थजायपच्चओ अइलो गओ सट्ठाणं । वाहराविओ रन्ना । कयपणामो य पुच्छिओ सायरं—कहसु चोरवुत्तंतं ति । ततो एगंते सिट्ठो जहट्ठिओ तव्वुत्तंतो अयलेणं । रन्ना जंपियं—को एत्थ पच्चओ ? । अयलेण भणियं—देव ! त[1]स्सयणहेट्ठओ भूमीहरे मोसजायमसेसम[2]च्छइ त्ति । तओ सीसवेयणा[3]कइयवं काऊण विसज्जि-यसभालोगो पसुत्तो राया सेज्जाए । पारंभिया तदु[व]समोवयारा । 'न जाओ विसेसो' त्ति वाहराविया मंतवाइणो । अक-यपडियारा ते वि गया जहागयं । ताहे रन्ना सो वि भगवो वाहराविओ । सायरदिन्नासणो संभासिउमारद्धो । पुरिसे य पेसिऊण खणाविओ तदासमो । नीहरियं मोसं, आणीयं रायभवणे । आहू[4]ओ तवेलं महायणो, दंसियं तं मोसजायं । पच्चभि-न्नायमसेसं महायणेणं । विलक्खीभूओ भागवओ, पुच्छिओ य रन्ना—भो पासंडियाहम ! को एस वुत्तंतो ? त्ति । अच्चंतदु-व्विलसियमप्पणो पायडीभूयमवगच्छिऊण लज्जायमाणो मोणमवलंबिऊण ट्ठिओ हेट्ठा[5]मुहो । विहडिया से पुन्नपरिवाडी, तु[6]ट्टो ज्झाणपयरिसो । सिद्धकज्जो दुज्जणो व दूरीहूओ चेडओ मुक्को जीवियव्वासाए । तओ उग्गसासणत्तणेण राइणा जायपबलको-वावेगेण नयरतिय-चउक्क-च्चच्चरेसु रासभसमारोवणपुरस्सरं भमाडिऊण, आघोसणापुव्वं निवेइऊण वुत्तंतं, महया दुक्खमारेण माराविओ एसो । निसामिओ तव्विणासवइयरो सहस्सजोहिणा । जाओ से महंतो पच्छायावो—अहो ! अहमेवंविहमहापावस्स

१ **तब्भयण**° प्रतौ । तच्छयनाधस्तात् ॥ २ °**मत्थइ** प्रतौ ॥ ३ °**कइवयं का**° प्रतौ । शीर्षवेदनाकैतवम् ॥ ४ °**हूए त**° प्रतौ ॥ ५ अधोमुखः ॥ ६ त्रुटितो ध्यानप्रकर्षः ॥

सामन्नेण वि एयं [1]गुणपयरिसपेहणेण उवउत्तो । तं किं [2]वे जं न पुन्नं पुहइवई नूण[3]मज्जिणइ ? ॥ ४ ॥ किं च—

सगुण-[4]विगुणाणुरूवं लिंगिसु भिच्चेसु वा पउंजंतो । पडिवत्तिं राया जणइ तग्गुणावज्जणे जुत्तं ॥ ५ ॥

सुगुणा य कह णु नरवर ! तत्थ दढं संभवंतु जत्थ दया । नेवऽत्थि [5]बंत्थिनिग्गहसारं च तवो वि दुरणुचरं ? ॥ ६ ॥

दस-अट्ठदोसरहिओ महिओ ससुरा-ऽसुरेण वि [6]जएण । देवो वि नेव निम्मलकेवलबलकलियतइलोको ? ॥ ७ ॥

एवं गंभीरपयत्थनिब्भरं भारइं [7]निसामित्ता । दरलज्जामउलियनयणपंकओ पत्थिवो भणइ ॥ ८ ॥

भयवं ! तुमं जमाइससि [8]तमियाणिमवस्सं काउं अभिलसइ मम मणो, केवलं केणइ निमित्तेणा[9]कालकुवियकयंतकवलिज्जंतरज्जसारसिंधुरावलोयणवाउलत्तणेण न भवणे न वणे न सयणे न आसणे न छुहत्तस्स न भुत्तस्स न सुन्ने न रन्ने न दिणे न रयणीए मणागं पि संपइ संपज्जइ मे रइ त्ति काऊणाणुग्गहं भयवं ! साहेसु तं दुनिमित्तं तदुवसमं च, जेण [10]लंघियविसमावयावडणो निरुव्विग्गो तुम्ह पायपंकयमाराहेमि त्ति । साहुणा भणियं—महाराय ! चिरकालियं पि दुक्कयं अज्ज वि [11]नट्ठसल्लं व खुडुक्कंत न विरमइ, अओ कहमन्नं काउं जुज्जइ ? कए वि को वा गुणो होही ? । राइणा भणियं—मा मेवं जंपह, तुम्ह पायपायवमल्लीणो खु एसो जणो [12]नोवेक्खिउं जुत्तो । किंच—

१ गुणप्रकर्षप्रेक्षणेन ॥ २ न प्रतौ ॥ ३ अर्जयति ॥ ४ °विगणा° प्रतौ ॥ ५ 'बस्तिनिग्रहसारं' ब्रह्मचर्यप्रधानम् ॥ ६ जगता ॥ ७ निशम्य । ईषल्लज्जामुकुलितनयनपङ्कजः ॥ ८ तविया° प्रतौ ॥ ९ अकालकुपितकृतान्तकवलीयमानराज्यसारसिन्धुरावलोकनव्याकुलत्वेन ॥ १० लङ्घितविषमापदापतनः निरुद्विग्नः॥ ११ नट्ठस° प्रतौ ॥ १२ नोवलक्खि° प्रतौ ॥

हरि-हर-दिवायर-बुद्ध-चंडि-[1]गयमुहपमोक्खदेवेहिं । आराहिएहिं वि [2]चिरं थुणिएहिं पूइएहिं पि ॥ १ ॥

जं नो सिद्धं कज्जं तं पि हु सिज्झइ य जइ तुमाहिंतो । ता तुम्ह सासणमहं जावज्जीवं पवज्जामि ॥ २ ॥

इहलोइयं हि कज्जं तुच्छं तं पि हु न सिज्झई जत्तो । दुस्सद्धेयं तत्तो गुरुपरलोयत्थनिव्वहणं ॥ ३ ॥

एवं ठिए वियप्पं मोत्तुं भयवं ! करेसु मह वुत्तं । इय सिट्ठे तन्निच्छयमुवलब्भ तवस्सिणा भणियं ॥ ४ ॥

जइ एवं ता नरवर ! [3]सुसाहुपयपउमखालणजलेण । अब्भोक्खिऊण रक्खसु गयजूहं रोग[4]रक्खसओ ॥ ५ ॥

न तुमाहिंतो वि परो एत्थ सुसाहु त्ति जंपिरो राया । [5]तप्पायसोहणजलं घेत्तुं सव्वं तयं कुणइ ॥ ६ ॥

विसमिव पीऊसहयं तमं व दिवसयरकिरणपडिरुद्धं । वेगेण रोगजायं निन्नट्ठं कुंजरकुलाओ ॥ ७ ॥

तो परितुट्ठो राया जोडियकरसंपुडो भणइ साहुं । भयवं ! वारणवाही केण निमित्तेण जाओ ? त्ति ॥ ८ ॥

मुणिणा भणियं नरवर ! भागवयमुणी हणाविओ तुमए । जो पुव्विं सो मरिउं रक्खसदेवत्तणं पत्तो ॥ ९ ॥

सरिऊण पुव्ववेरं तुज्झ सरीरम्मि अपभवमाणो सो । एवं पि होउ दुक्खं ति हत्थिणो हणिउमाढत्तो ॥ १० ॥

जाणियजहट्ठियत्थो राया नयरीए सव्वठाणेसु । पडहपडिहणणपुव्वं आघोसणमिय करावेइ ॥ ११ ॥

जिणसासणं चिय परं परमं मंगलमुदारमाहप्पं । परमोसहं च इह-अन्नभवियवाहीण विविहाण ॥ १२ ॥

इह थेवं पि अवन्नं अपक्खवायं च अबहुमाणं च । जो काही सो दंडं नियमा लहिही उभयभवियं ॥ १३ ॥

१ गजमुखः—गणपतिः ॥ २ चिरं मुणि° प्रतौ ॥ ३ सुसाधुपदपद्मक्षालनजलेन । 'अभ्युक्ष्य' सिक्त्वा ॥ ४—राक्षसात् ॥ ५ तत्पादनशोधनजलं गृहीत्वा ॥

इय पन्नविउं लोयं स महप्पा भूवई जिणमयम्मि । तह कह वि वड्ढिओ सेणिउ[1] व जह कित्तिमणुपत्तो ॥ १४ ॥
अयलो वि मुणी काउं पभावणं एरिसं हि तित्थस्स । तित्थयरनामगोयं कम्मं सम्मं समजिणिउं[2] ॥ १५ ॥
सोहम्मे उववन्नो ततो[3] वि भूओ महाविदेहम्मि । उप्पज्जंतनिरंतरजिण-हलि-हरि-चक्कवट्टिम्मि ॥ १६ ॥
वच्छाविजए सिरिजयपुरीए रन्नो पुरंदरजसस्स । देवीसुदंसणाए चउदससुस्सुमिणकयसन्नओ[4] ॥ १७ ॥
गब्भे पाउब्भूओ समुचियसमए य जम्ममणुपत्तो । अहिसित्तो य सुरा-ऽसुरवग्गेणं मेरुसिहरम्मि ॥ १८ ॥
सुमुहुत्ते जयमित्तो त्ति नामधेयं पयट्ठियमिमस्स[5] । एवं च सो महप्पा कमेण पत्तो वि तारुन्नं[6] ॥ १९ ॥
पाणिग्गहणमकाउं रायसिरिं मणहरं अपरिभोत्तुं । संवच्छरियं दाणं दवाविउं दुत्थियजणाण ॥ २० ॥
लोगंतियतियसहिओवएससविसेसवड्ढिउच्छाहो[7] । बत्तीससुरेसरकीरमाणनिक्खमणवरमहिमो ॥ २१ ॥
तिजयं[8] एगजयं पिव एगत्थुम्मिलियमणुय-सुर-असुरं । कुणमाणो पडिवन्नो निस्सामन्नं च सामन्नं ॥ २२ ॥
तो सुक्कज्झाणानलनिमूलनिद्दड्ढघाइकम्मदुमो । उप्पन्नकेवलालोयलोइयासेसतइलोक्को ॥ २३ ॥
सिंहासणोवविट्ठो उवरिधरिज्जंतसेयछत्ततिगो । देहदुवालसगुणियामरतरुणा सोहमाणो य ॥ २४ ॥

१ सेनिउ प्रतौ ॥ २ समर्ज्य ॥ ३ तत्तो प्रतौ ॥ ४–कृतसूचः ॥ ५ 'प्रतिष्ठितं' कृतम् ॥ ६ तारन्नं प्रतौ ॥ ७ लोकान्तिकत्रिदशहितोपदेश-सविशेषवर्धितोत्साहः । द्वात्रिंशत्सुरेश्वरक्रियमाणनिष्क्रमणवरमहिमः ॥ ८ तिगयं प्रतौ । त्रिजगद् एकजगद् इव एकत्रोन्मीलितमनुजसुरासुरम् । कुर्वाणः प्रतिपन्नः निःसामान्यं च श्रामण्यम् ॥ २२ ॥ ततः शुक्लध्यानानलनिर्मूलनिर्दग्धघातिकर्मद्रुमः । उत्पन्नकेवलालोकलोकिताशेषत्रैलोक्यः ॥ २३ ॥ सिंहासनोपविष्टः उपरिध्रियमाणश्वेतच्छत्रत्रिकः । देहद्वादशगुणितामरतरुणा शोभमानश्च ॥ २४ ॥

अन्नया य निब्भरपुरीओ समागया तं पएसं तवस्सिणो । वंदिओ सो तेहिं । पुच्छिया य अणेण विहारसुत्थयं । सिट्ठं च तेहिं, जहा—तत्थ य राया रामचंदो सासणपच्चणीयपरतित्थियजणजणियवेसमणस्सो[1] न सुट्ठु समणसंघम्मि[2] वट्टइ त्ति । ततो अयलसाहू सासणावमाणं सोढुमचयंतो त्ति गओ निब्भयपुरीए । वुत्थो पुप्फावयंसाभिहाणे[3] उज्जाणे ।
तम्मि पुण समए तस्स राइणो गयवराणं जाओ महावाही । कीरमाणेसु वि अणेगेसु भेसहपओगेसु, अच्चिज्जमाणेसु देवयाविसेसेसु, कीरंतेसु लक्खहोमेसु, तप्पिज्जंतेसु वि नवग्गहेसु, संतिकम्मवावडेसु वि पुरोहिएसु नोवसंतो मणागं पि । दो चत्तारि पंच य पइदिणं मरिउमारद्धा हत्थिणो । अच्चंतमादन्नो[4] राया। सिट्ठं[5] च से एगेण नरेण अयलसाहुणो आगमणं । तं च सोचा तुट्ठो राया । 'जहा पुव्वं[6] तक्करो परिन्नाओ तहा करिमरणनिदाणं पि मुणिही इमो' त्ति विभावितो गओ अयल-समीवं । वंदिऊण सिणेहसारं आसीणो मेइणीवट्ठे महीवई । मुणिणा[7] वि सुपसन्नवयणविन्नासेण सुनिउणजुत्तिगरुई पारद्धा धम्मकहा । जहा—
जं साहिउं न तीरइ पोरिसवित्तीए मइबलेणं वा । भुवणे वि जं दुलंभं सिज्झइ धम्मेण तं पि फुडं ॥ १ ॥
सो पुण नरवर ! तुम्हारिसाण उचियप्पवित्तिकरणेण । चउरासमेसु वि सया समदिट्ठित्तेण[8] होइ जओ ॥ २ ॥
नाएणं[9] पालिंतो सव्वेसु वि आसमे सरिसदिट्ठी । पाउणइ पुहइपालो तक्कयसुकयस्स[10] छब्भागं ॥ ३ ॥

१ शासनप्रत्यनीकपरतीर्थिकजनजनितद्वेषमनस्कः ॥ २ सुम° प्रतौ ॥ ३ पुष्पावतंसाभिधाने ॥ ४ अत्यन्तमाकुलित इत्यर्थः ॥ ५ 'शिष्टं' कथितं च तस्य ॥ ६ पुव्वत° प्रतौ ॥ ७ सुमिणा प्रतौ ॥ ८ समदृष्टित्वेन ॥ ९ न्यायेन ॥ १० 'तत्कृतसुकृतस्य' चतुराश्रमकृतसुकृतस्य षष्ठं भागम् ॥

पञ्चनम-स्कारस्वरूपं तन्माहात्म्यं

॥ अर्हम् ॥

कयसम्मत्तथिरत्तो जइ वि नरो तह वि वंछियं वत्थुं । पंच[1]नमोकारे च्चिय भत्तिपरो पावए परमं ॥ १ ॥
अरहंता सिद्धा सूरिणो य [2]उज्झाय-साहुणो चेव । परमिट्ठिणो हु एते एयन्नमणं नमोकारो ॥ २ ॥
एत्तो च्चिय एयाणं कीरंतो सायरं नमोकारो । एसो समग्गकल्लाणकारणं जायइ जियाण ॥ ३ ॥
एक्केक्कमक्खरं पि हु पंचनमोकारसन्तियं जीवो । बहु-बहुतर-बहुतमपाव[3]खयवसा लहइ भावेण ॥ ४ ॥
सूरो इव तिमिरभरं पहणइ चिंतामणि व्व दोगच्चं । चिंतियमित्तो य इमो भयवग्गं नासइ समग्गं ॥ ५ ॥ तहाहि—
नाभिद्दवइ[4] दवो तं दूमइ न मयाहिवो सुकुद्धो वि । सप्पो वि नाभिसप्पइ न वि चंपइ मत्त[5]पीलू वि ॥ ६ ॥
सत्तू वि तं न बाहइ न विराहइ भूय-साइणिगणो वि । चोरेइ तक्करो न वि न कमइ तं वारिपूरो वि ॥ ७ ॥
अहवा किमित्तिएणं ? इह-परलोए [6]सवंछियं लहइ । [7]जस्स मणे नवकारो **सिरिदेवो** एत्थुदाहरणं ॥ ८ ॥ तहाहि—
नीसेसदेससविसेसप[8]यडे जणवयम्मि **पंचाले** । कंपिल्लमत्थि नयरं [[9]नियरं]मयरंजिय[10]जणोहं ॥ ९ ॥
गेहाइं बहुधणाइं धणं पि [11]सुवियड्ढवड्ढियाणंदं । सुवियड्ढा वि हु जिणहरकयजत्ता-ण्हवण-पूयमहा ॥ १० ॥

---

१ 'नवकार' इति नाम्ना प्रसिद्धे पञ्चनमस्कारसूत्रे ॥ २ उपाध्याय– ॥ ३ °**वक्खय**° प्रतौ ॥ ४ °इ **दवो** प्रतौ । दावानलः ॥ ५ मत्तहस्ती ॥ ६ स्ववाञ्छितम् ॥ ७ **तस्स** प्रतौ ॥ ८ प्रकटे–प्रसिद्धे ॥ ९ निजरम्यतारञ्जितजनौघम् ॥ १० °**यजिणो**° प्रतौ ॥ ११ सुविदग्धवर्धितानन्दम् ॥

जिणगेहाणि वि मुणिजणकीरंतमहत्थसत्थकहणाइं । सत्थाणि वि पसमरसु[1]भडाइं जम्मि विरायंति ॥ ११ ॥
हारेसु ना[2]यगाणं तरलत्तं कुडिलया य केसाण । कसिण[3]मुहत्तं सिहि[4]णाण न उण लोयाण जत्थ पुरे ॥ १२ ॥
तत्थ रिउ[5]चक्कविक्कमणविहणिउक्कडतिविक्कमुक्करिसो । **सिरिहरिसो** [6]आसि निवो धणवरिसो त[7]कुयजणाण ॥ १३ ॥
सयलंतेउरतिलओवमाए देवीए **कमलसेणाए** । जाओ पुत्तो सुस्सुमिणपिसु[8]णिओ तस्स नरवइणो ॥ १४ ॥
दिज्जमाणधणतुट्ठमग्गणं, नच्चमाणपुरजामिणीगणं । मुक्कचारगनिबद्धमाणवं, पूइ[या]मर-मु[9]गुंद-दाणवं ॥ १५ ॥
संतिकम्मवाउलपुरोहियं, कीरमाणबहुरक्खसोहियं । गिहदुवारभुवि दिन्नसत्थियं, रायलोयपडिपुन्नपत्थियं ॥ १६ ॥
चारुवेसभड-वंठवड्ढियं, नाइ निव्वुइनिहाणमुड्ढियं । सवलच्छिकलियं व सुंदरं, गेय-तूररवपूरियंबरं ॥ १७ ॥
इय तज्जम्मणपडिबंधबंधु[10]रं पउरहरिसवद्धणयं । [[11]वद्धावणयं] सव्वायरेण काराविय रन्ना ॥ १८ ॥
ठवियमुचियम्मि समए **सिरिदेवो** नाम तस्स तत्तो सो । सयलं कलाकलावं गहाविओऽकालपरिहीणं ॥ १९ ॥
ठविउं जुवरायपयम्मि तं च राया महाविमद्देण । चउरंगबलसणाहो निक्खंतो विजयजत्ताए ॥ २० ॥
सोवीर-कोसल-कुसट्ट-कासि-बंगालपमुहनरनाहे । आणानिद्देसम्मि ठाविंतो भग्गदुग्गपहो ॥ २१ ॥
पत्तो स कमेणं कामरूयदेसस्स सीमसंधीए । तम्महिनाहो य तए भणाविओ दूयवयणेण ॥ २२ ॥

---

१ °**सुभडाइं जम्मि** प्रतौ ॥ २ हारमध्यस्थितमणीनाम् ॥ ३ °**मुहुत्तं** प्रतौ ॥ ४ स्तनानाम् ॥ ५ रिपुचक्रविक्रमणविहतोत्कटत्रिविक्रमोत्कर्षः ॥ ६ **आस** प्रतौ ॥ ७ स्वजनजनानाम् ॥ ८ °**सुणओ** प्रतौ । पिशुनितः–सूचितः ॥ ९ °**सुगुं**° प्रतौ ॥ १० °**धुरप**° प्रतौ ॥ ११ वर्धापनकम् ॥

युद्धवर्णनम्

[1]पडिवज्जसु सेवं मे [2]वज्जसु देसं व जुज्झसज्जो वा। संपज्जसु इय सोउं सो राया जायगुरुकोवो ॥ २३ ॥

हरसिरमंडणदाणेण दूयसम्माणणं लहुं काउं। सयलबलेण समेओ जुज्झट्ठमुवट्ठिओ [3]ज्झत्ति ॥ २४ ॥

अह बद्धपरोप्परमच्छराइं, उच्छलियकोवभरनिब्भराइं। जुज्झेण [4]लग्ग दोण्णि वि बलाइं, वित्थरिय [5]नाय सायरजलाइं॥

[6]मुहवडिय गुडिय गयघड घडन्त, नज्जंति नाइ डुंगर भिडंत। पक्खरियतरलतरतुरयथट्ट, कीणासकक्खडिय नं पयट्ट ॥

[7]रेहंति वेरिकियघोरघाय, बंदियणुग्घुट्ठजसप्पवाय। णाणाउह सुहड महापयंड, नच्चंत नाइ जमबाहुदंड ॥

[8]गुलुगुलियमहागयपायरक्ख, नर करउकंपियखग्ग दक्ख। रविकरि कराल छज्जंति केम?, गज्जियनवजलहरि विज्ज जेम॥

[9]आरुट्ठ-दुट्ठरिउवंठमुक्क, सर भल्लि सेल्ल नं पडहिं उक्क। कयसामिकज्ज फुडु सच्चसंध, हरिसेण नाइ नच्चिय कबंध ॥

[10][11]असिछिन्नसेन्नकरिरुहिरपूरि, समरोयहि वेलजलि व पूरि। पवहंति उद्धठियदंड छत्त, नं कूवखंभजुय जाणवत्त ॥

---

१ प्रतिपद्यस्व ॥ २ वर्जय ॥ ३ झगिति ॥ ४ लग्ने ॥ ५ इवार्थकमव्ययम् ॥ ६ 'मुखपतिते' अप्रस्थिते कवचिते गजघटे घटन्त्यौ ज्ञायेते इव पर्वतौ युध्यमानौ। कवचिततरलतरतुरगसमूहौ कीनाशकर्कशौ इव प्रवृत्तौ ॥ ७ राजन्ते वैरिकृतघोरघाता बन्दिजनोद्घुष्टयशःप्रवादाः। नानायुधाः सुभटा महाप्रचण्डाः नृत्यन्त इव यमबाहुदण्डाः ॥ ८ गुलुगुलायितमहागजपातरक्षकाः नराः करोत्कम्पितखड्गाः दक्षाः। रविकरैः करालाः राजन्ते, कीदृशः? गर्जितनवजलधरेषु विद्युतो यथा ॥ ९ आरुष्टदुष्टरिपुवण्ठमुक्ताः शराः भल्लयः 'शैलाः' प्रस्तराः इव पतन्ति उल्काः। कृतस्वामिकार्याः स्फुटं सत्यसन्धाः हर्षेण इव नर्तिताः कबन्धाः ॥ १० °सिच्छिन्न° प्रतौ। असिच्छिन्नसैन्यकरिरुधिरपूरेण समरोदधौ वेलाजलेनेव पूरिते। प्रवहन्ति ऊर्ध्वस्थितदण्डानि च्छत्राणि खलु कूपस्तम्भयुक्तानि यानपात्राणि ॥ ११ °द्धट्ठिय° प्रतौ ॥

॥ ५६ ॥

[1]चलियसियचारुचमरो पुरओ पक्खित्तकुसुमपयरो य। दिसिपसरियरविनिम्मलभामंडलखंडियतमोहो ॥ २५ ॥

सुरपहयदुंदुहीरवपयडियदुज्जेयपरमरिउविजओ। सव्वसभासाणुगदिव्ववाणिनिम्महियसम्मोहो ॥ २६ ॥

पायडियसुगइमग्गो पडिबोहियभूरिभव्ववग्गो य। चिरकालं विहरित्ता सिवसो[2]क्खं मोक्खमणुपत्तो ॥ २७ ॥

[3]इय कप्पपायवब्भहियमहियगुरुफलपयाणदुल्ललियं। काउं पभावणं सासणस्स तिन्नो [4]परं तरइ ॥ २८ ॥ अपि च—

प्रभावनोपदेशः

स्वार्थाय सर्वं कुरुते प्रयत्नमुत्कृष्यतेऽमुत्र गुणः क एव?। उत्कर्षणीयो हि परोपकारः स चान्यदानादतितुच्छ एव॥१॥

[5]प्रोक्तो गरीयान् पुन[र]र्हदुक्तसद्धर्म[मर्म]प्रतिपादनेन। स चाङ्गभाजां हृदि सन्निधातुं प्रभावनां नैव विना हि शक्यः॥२॥

प्रभावनाकर्तुरतो न कश्चित् परोपकारीत्यपरः पृथिव्याम्। चारित्रभाजोऽपि मुनीश्वरस्य तेनेह सम्[6]यक् कथितः प्रयत्नः॥३॥

सम्यक्त्वमाहात्म्यम्

सर्वोपधाविरहितं सुहितं जगत्यां, सम्यक्त्वरत्नमिदमुक्त[म][7]नर्घमित्थम्।

यस्याचलं हृदि [8]सदैतदकल्मषं च, दारिद्र्यवि[9]द्रुतिभयं कुत एव तस्य? ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे अष्टमाचारे अचलकथोक्त्या सम्यक्त्वपटलं समाप्तम् ॥ ९ ॥

---

१ चलितसितचारुचमरः पुरतः प्रक्षिप्तकुसुमप्रकरश्च। दिक्प्रसृतरविनिर्मलभामण्डलखण्डिततमओघः ॥ २५ ॥ सुरप्रहतदुन्दुभिरवप्रकटितदुर्जेयपरमरिपु-विजयः। सर्वस्वभाषानुगदिव्यवाणीनिर्मथितसम्मोहः ॥ २६ ॥ प्रकटितसुगतिमार्गः प्रतिबोधितभूरिभव्यवर्गश्च। चिरकालं विहृत्य शिवसौख्यं मोक्षमनुप्राप्तः ॥ २७ ॥ २ सोक्ख° प्रतौ ॥ ३ इति कल्पपादपाभ्यधिकमहितगुरुफलप्रदानदुर्ललिताम्। कृत्वा प्रभावनां शासनस्य तीर्णः परं तारयति ॥ २८ ॥ ४ परं न तरइ प्रतौ ॥ ५ प्रोक्तौ प्रतौ ॥ ६ °म्यक्त्वथितप्रयत्नः प्रतौ ॥ [illegible] °क्तनिर्घ° प्रतौ ॥ ८ सदेत° प्रतौ ॥ ९ °विद्रुति° प्रतौ ॥

[1]संनि-केउणो व तम-ससहर व हरि-रामण व जुज्झंता । भयतरलच्छं ससुरा-ऽसुराए परिसाए सच्चविया ॥ ३२ ॥
असि-चक्क-कुंत-[2]सव्वलं-खुरुप्पपमुहाउहेहिं जुज्झंता । [3]तंडवियबाहुदंडा मल्लो व परोप्परं लग्गा ॥ ३३ ॥
उद्धंत-पडंतेहिं विलुलियकेसापडंतकुसुमेहिं । सा समरमही [4]महिलं व सहइ दोहिं पि [5]दरमलिया ॥ ३४ ॥
[6]अच्छरियभूयभूवइरणपेहणनिन्निमेसचक्खूण । आसि विसेसो सुर-माणवाण नह-भूमि[ठाण]कओ ॥ ३५ ॥
अह [7]जमदंडुड्डामरभुयदंडन्नोन्नघायघुम्मंता । वणवारण व पंचाणण व [8]वा वड्ढिउकरिसा ॥ ३६ ॥
[9]मुट्ठिप्पहारपडिरवविहडियबं[10]भंडभंगंकयसंका । निस्संकमुक्ककमभरथरहरियसकाणणधरंता ॥ ३७ ॥
[11]तव्वेलावडणु[12]प्पडण-घडण-विहडणपवत्तणाकुसला । समसमरजया जाया ते दोन्नि वि हरि-विरंचि व ॥ ३८ ॥ किंच—
किं सिरिहरिसो कामरुयनरवरो अहव समरपरि[13]हत्थो । दुल्लक्खमिणं [14]तक्खणमहेसि सुमहेसिणो वि परं ॥ ३९ ॥
तुल्लगुणत्ते एक्कस्स वज्जणं लज्जणं इयरगहणं । इय ते दोन्नि वि वरिय व तक्खणं विजयलच्छीए ॥ ४० ॥
एत्थंतरम्मि [15]तप्परमपोरिसुक्करिसहरिसिया तियसा । मुंचंति कुसुमवरिसं ताणुवरिं चारु जुज्झं ति ॥ ४१ ॥

---

१ शनिकेतू इव तमःशशधरौ इव ॥ २ **ल-क्खुरु**° प्रतौ । शर्वलं—कुन्तभेदः ॥ ३ **तडवियडबा**° प्रतौ । ताण्डवित—नर्त्तित ॥ ४ °**ल व स**° प्रतौ ॥ ५ ईषन्मृदिता ॥ ६ आश्चर्यभूतभूपतिरणप्रेक्षणनिर्निमेषचक्षुषाम् । आसीद् विशेषः सुरमानवानां नभोभूमिस्थानकृतः । सुराः नभसि स्थिताः मानवाश्च भूमौ स्थिता इति भावः ॥ ७ यमदण्डभयङ्करभुजादण्डान्योन्यघातघूर्णमानौ ॥ ८ °**दंडुन्नो**° प्रतौ ॥ ९ मुष्टिप्रहारप्रतिरवविघटितब्रह्माण्डभङ्गकृतशङ्कौ । निःशङ्कमुक्तक्रमभारकम्पितसकाननधरान्तौ ॥ १० °**भंडक**° प्रतौ ॥ ११ तद्वेलापतनोत्पतनघटनविघटनप्रवर्त्तनाकुशलौ । समसमरजयौ जातौ ॥ १२ °**णुप्पिड**° प्रतौ ॥ १३ परिहस्तः—निपुणः ॥ १४ **तखण**° प्रतौ ॥ १५ तत्परमपौरुषोत्कर्षहृष्टाः त्रिदशाः ॥

दूरं उस्सारित्ता य बिंति भो राइणो ! [1]मुयह रोसं । वच्चह जहागयं नत्थि नूण तुम्हाण पडिमल्लो ॥ ४२ ॥
विजयसिरी तुम्हाणं [2]मज्झत्थ च्चिय समुव्वहउ रागं । अत्थंतुदयंताणं ससि-दिवसयराण संज्झ व ॥ ४३ ॥
इय ते भूमीवइणो सुरवयणुवरोहसंहरि[3]यसमरा । अ[4]समत्तवंछियत्था [5]सं ठाणं पडिगया नवरं ॥ ४४ ॥
सिरिहरिसो रिउणो अकयनिग्गहं विग्गहं किलेसफलं । [6]अप्पाणं अप्पाणं व चिंतमाणो दढं विमणो ॥ ४५ ॥
[7]रणरणयमुव्वहंतो लज्जाए जणं पि द[8]ट्ठुमचयंतो । सिरिदे[9]वं नियरज्जे ठविउं सासेउमाढत्तो ॥ ४६ ॥
वच्छ ! सिरी हरिणो वि हु न थिरा रज्जं च बहुविहावायं । अजसो य नरयहेऊ ता तुह [10]साहिप्पए किं पि ॥४७॥
अट्ठ न कीरंति सया अट्ठ य कीरंति अ[11]ट्ठ मुच्चिंति । अट्ठ धरिज्जंति मणे न वीससेयव्वमट्ठन्हं ॥ ४८ ॥
खलसंगो कुकलत्तं कोहो वसणं मओ य कुधणं च । कुग्गाहो मुक्खत्तं अट्ठ न कीरंति एयाइं ॥ ४९ ॥
कित्ती सुगुणब्भासो कलासु कुसलत्तणं सुमित्तो य । दक्खिन्नं करुणा उज्जमो दमो अट्ठ की[12]रंन्ति ॥ ५० ॥
नि[13]ल्लज्जिमा अविणतो कुसीलया निट्ठुरत्तणं माया । अनओ अजसमसच्चं अट्ठ वि मुच्चंति सच्चं ति ॥ ५१ ॥
उवयारो पडिवन्नं, सुभासियं [14]मम्म सुद्धविज्जा य । देवो य गुरू धम्मो अट्ठ धरिज्जंति हिययम्मि ॥ ५२ ॥

---

१ **मुहय रोसं** प्रतौ ॥ २ °**ज्झत्थो च्चिय** प्रतौ ॥ ३ °**यसयसमरा** प्रतौ ॥ ४ असमाप्त—॥ ५ स्वम् ॥ ६ आत्मानं 'अप्राणं' निर्बलम् ॥ ७ 'रणरणकं' उद्वेगम् ॥ ८ अशक्नुवन् ॥ ९ °**देवन्निय**° प्रतौ ॥ १० कथ्यते ॥ ११ °**ट्ठ य मु**° प्रतौ ॥ १२ °**रन्ति** प्रतौ ॥ १३ **निलज्जि**° प्रतौ ॥ १४ **मम सुट्ठवि**° प्रतौ ॥

कामुय-भुयंग-जल-जलण-जुवइ-रिउ-रोग-भूमिनाहाणं । अट्ठण्हं मा पुत्तय ! सुमिणम्मि वि वीससेज्जासि ॥ ५३ ॥
इय वच्छ ! तुज्झ साहेमि केत्तियं ? तह कहं पि रज्जभरं । धारेज्जसु जह न खलाण हासपयं[1]विं पवज्जेसि ॥ ५४ ॥
एवं सुयसिक्खवणं काउं गहिउं च तावसाण वयं । देवीय[2] समं राया गओ महासेलवणवासं ॥ ५५ ॥
सिरिदेवो पुण रज्जं अणुरत्तासेसमंति-सामंतं । पालियपयईवग्गं सासइ[3] नीतीए पंथो व्व ॥ ५६ ॥

हीनबलस्य राज्ञः नीतिः

अह [4]सुमरियपियवइरो कामरुयनिवो समग्गबलकलिओ । दूयनिवेइयवत्तो समागओ देससंधीए ॥ ५७ ॥
नाऊण तदागमणं निब्भयचित्तो निवो वि सिरिदेवो । एगंते ठाऊणं मंतीणमिमं निवेदेइ ॥ ५८ ॥
कुडिला कज्जाण गई मई वि तुच्छा रिऊ [य] सामरिसो । एवं ठियम्मि कज्जे किं कीरउ ? कहह परमत्थं ॥ ५९ ॥
मंतीहिं जंपियं देव ! जुत्तमेयं [5]सुनिच्छिउं कज्जे । कीरंते देव्ववसा नावजसो विहडिए वि भवे ॥ ६० ॥
सत्तू इमो समत्थो तुब्भे य अदिट्ठसमरवावारा । दइवबलं दुन्नेयं सहाइसत्ती वि संदिट्ठा[6] ॥ ६१ ॥
ता साम-भेय-दाणाइं मो[7]त्तुं अन्नं न देव ! रिउविजए । नीई पेच्छामो कुणहमे[8]त्थ जत्तं लहुं तम्हा ॥ ६२ ॥
सामेण हवइ मित्तो परो वि भेएण भिज्जइ [9]सुही वि । दाणेण सेलघडिया देवा वि वसं पवज्जंति ॥ ६३ ॥

१ °यडिं प° प्रतौ ॥ २ देव्या ॥ ३ °सय नी° प्रतौ । शास्ति नीत्याः पन्था इव ॥ ४ स्मृतपितृवैरः ॥ ५ सुनिश्चित्य कार्ये क्रियमाणे दैववशाद् नापयशः विघटितेऽपि भवेत् ॥ ६ °दिट्ठा प्रतौ ॥ ७ मोत्तुं अन्नोन्न देव प्रतौ ॥ ८ °मेत्त जत्तं प्रतौ ॥ ९ मुही प्रतौ ॥

[1]असिलुणियदंडु धवलायवत्तु, लुयसुहडमुंडमुहकुहरपत्तु । नज्जइ विडप्पकवलिज्जमाणु, गयतेउ नाइ सयमेव भाणु ॥
[2]हरि-करि-नरमुंडइं, रयनिब्बुड्डइं, लोहियसित्तइं सहहिं किह ? ।
वंछियजयसिट्ठिण, पुणु परमेट्ठिण, महियलि वाविय बीय जिह ॥ २५ ॥
इय एवंविहबहुविहजणनिवहवहं वियाणिउं राया । सिरिहरिसो गय[3]हरिसो [य] कामरूवं भणावेइ ॥ २६ ॥
तुममहयं च परोप्परजयसिरिसंबंधबद्धपरिबंधा । ता एहि सयं जुज्झामु हो[उ] सेन्नक्खएणऽमुणा ॥ २७ ॥
पडिवन्नमिमं कामरूयराइणा तयणु विहियत[4]णुताणा । नाणाउहहत्था दो वि पत्थिवा जुज्झिउं लग्गा ॥ २८ ॥
सुजुज्झमवलोइउं गयणमंडलं रोहिउं, ठिया असुर-किन्नरा [5]भवणवासि-विज्जाहरा ।
तहा विहियमंडणो सुरविलासिणीणं गणो, सविम्हय-भयाउलो पकयकेलिकोलाहलो ॥ २९ ॥
स अज्ज फुडु वं[6]चिओ सुकयकम्मुणा लुं[7]चिओ, पलोयइ इमं न जो इय पयंपिरो नच्चिरो ।
लुलंतजडजूडओ समरकेलिणो कूडओ, पु[8]राहववीसारओ तह वियंभिओ ता[9]रओ ॥ ३० ॥
एत्थंतरम्मि पसरंतहरिसतुट्टंततंतुसन्नाहा । ते भूनाहा नीसेसपहरणक्खेवकयकरणा ॥ ३१ ॥

द्वन्द्वयुद्ध-वर्णनम्

१ असिलूनदण्डं धवलातपत्रं लूनसुभटमुण्डमुखकुहरप्राप्तम् । ज्ञायते राहुकवलीयमानः गततेजा इव स्वयमेव भानुः ॥ २ हरिकरिनरमुण्डानि रजोनिर्ब्रुडितानि लोहितसिक्तानि राजन्ते कथम् ?। वाञ्छितजगत्सृष्टिना पुनः 'परमेष्ठिना' ब्रह्मणा महितले उप्तानि बीजानि यथा ॥ ३ गतहर्षः ॥ ४ तनुत्राणं—कवचम् ॥ ५ भुव° प्रतौ ॥ ६ °चिउं सुकाय° प्रतौ ॥ ७ °चियं, प° प्रतौ ॥ ८ पूर्वयुद्धविस्मारकः ॥ ९ नार° प्रतौ । 'तारः' प्रधानः ॥

॥५९॥

पुव्वपवाहेणं चिय जुज्झामो एहि किं जणवहेणं ? । तेणं पयंपियं जइ जुज्झेयव्वं सयं चेव ॥ ७६ ॥
ता किं सेन्नस्स परिग्गहेण ? इय होउ पुव्वरूढीए । से[1]न्नक्खए यं जाए जं उचियं तं करिस्सामि ॥ ७७ ॥
पडिवन्नमिमं तेणं लग्गं जुज्झं बलाण दोण्हं पि । वज्जिररणतूराणं उच्छलिओ बहलतुमुलरवो ॥ ७८ ॥
अह पत्तम्मि खणद्धे लद्धोगासेहिं परबलभडेहिं । सिरिदेवबलं पहयं तमं व दिणनाहकिरणेहिं ॥ ७९ ॥
सिरिदेवनरिंदपुरो जाया वत्ता जहा महीवइणो । तुब्भं जय-विक्कम-भीममाइणो निवडिया समरे ॥ ८० ॥
खुभिओ मंतीवग्गो [2]उव्विग्गो जंपिउं समाढत्तो । होही पुणो वि समओ पज्जत्तं इण्हि समरेण ॥ ८१ ॥
विक्कमबलेण पुणरवि अज्जिज्जइ चिरगया वि रायसिरी । जीयं पुण देव ! गयं न लब्भए तेण जम्मेण ॥ ८२ ॥
[3]आवयराहुमुहाओ नीहरिउमखंडमंडलो सूरो । अवहरिउं रायसिरिं पुणो वि खंडेइ परतेयं ॥ ८३ ॥
विन्नत्तमिमं पुव्विं पि देवपायाण जुंजिउं नीइं । साम-प्पयाणपमुहं अज्झ[4]वसिज्जउ ततो जुज्झं ॥ ८४ ॥
सच्छंदसीलयाए विवरीयमिमं कयं च देवेण । दुन्नयतरू स एसो य संपयं फुल्लिओ फलिओ ॥ ८५ ॥

१ °न्नखएण जाए प्रतौ ॥ २ उद्विग्नः जल्पितुं समारब्धः ॥ ३ यथा अखण्डमण्डलः 'सूरः' सूर्यः राहुमुखाद् निःसृत्य 'राजश्रियं' चन्द्रतेजः अपहृत्य पुनरपि 'परतेजः' तमःप्रभावं खण्डयति, एवं अखण्डदेशः शूरः आपद्राहुमुखाद् निःसृत्यं राजश्रियं अपहृत्य पुनरपि 'परतेजः' शत्रुप्रभावं खण्डयति इत्याशयः ॥ ४ अध्यवसीयताम् ॥

[1]सुविणिच्छियमंत-सरीररक्खरहियं दढं विचित्तं च । छलइ नरिंदं लच्छी हच्छं नरवर ! भुयंगि व ॥ ८६ ॥
किम[2]इक्कंताणं सोयणेण ? जइ अम्ह जंपियं कुणसु । ता वाउवेगतुरगं आरुहिऊणं अवक्कमसु ॥ ८७ ॥
पुव्वं पि सुव्वइ इमं मुणिऊणं अत्तणो असामत्थं । बंभो चक्की नट्ठो महुराओ जायवपहू वि ॥ ८८ ॥
इय दढमणिच्छमाणो वि सो निवो मंतिपमुहलोएण । निस्सारिओ महाहवभूमीओ जच्चतुरगेण ॥ ८९ ॥
वच्चंतो य कहं पि हु तमाल-तल-कयलिकलियवणसंडं । दिसिवा[3]मूढो रा[या] पत्तो अडविं महाभीमं ॥ ९० ॥
परियणजणो वि कत्थ वि य को वि सज्झसवसेण पब्भट्ठो । तुरगो वि गुरुपरिस्समकिलामिओ मच्चुमणुपत्तो ॥ ९१ ॥
सिरिदेवो वि नरिंदो इओ तओ केच्चिरं पि भूभागं । भ[4]मिउं पिवासिओ सिसिरसाहिछायाए आसीणो ॥ ९२ ॥
एत्थंतरम्मि एगो पुलिंदगो गहियकंदमूल-फलो । तं देसमणुप्पत्तो वुत्तो रन्ना य सप्पणयं ॥ ९३ ॥
भो भो महायस ! लहुं लहसु जलं [5]जलइ मह पिवासग्गी । तह कह वि जह [6]समप्पइ संपइ पुण जीवियव्वासा ॥ ९४ ॥
इय जंपिरं सरूवं [7]सलोणलोयण-मुहं महासत्तं । तं पेहिउं स तुरियं कत्तो वि जलं [8]पणामेइ ॥ ९५ ॥
तं कंदमूल-फलभोयणं च उवभुंजिउं महीनाहो । [9]आसत्थसरीरो किसल[10]सत्थरम्मि खणं सुत्तो ॥ ९६ ॥

१ यथा भुजङ्गी सुविनिश्चितमन्त्रशरीररक्षारहितं 'नरेन्द्रं' मान्त्रिकं शीघ्रं छलति, तथा सुनिश्चितमन्त्रणाविरहितं 'नरेन्द्रं' राजानमपि राजलक्ष्मीः छलति इति भावः ॥ २ किंमइ° प्रतौ ॥ ३ दिग्व्यामूढः ॥ ४ भणिउं प्रतौ ॥ ५ जणइ प्रतौ ॥ ६ समाप्यते ॥ ७ सलवणलोचनमुखम् ॥ ८ अर्पयति ॥ ९ आश्वस्त–॥ १० °लयसरम्मि प्रतौ ॥

खणमित्तम्मि पबुद्धं पुलिंदओ भणइ भो महाभाग[1]! । सुकुमार-सस्सिरीओ वि अडसि अडवीए किं एवं ?॥ ९७ ॥
राया वि नियकहाकहणलज्जिरो कहइ किं पि से वित्तं । सेविग[2]च्छणं हि गरुयाण सेसदुक्खाण दुक्खयरं ॥ ९८ ॥
भणितो य भूमिवइणा पुलिंदओ भद्द ! किं पि दंसेसु । चित्तक्खेवुप्पायगमडग[3]पदेसं ममं ताव ॥ ९९ ॥
तेणं पयंपियं एहि जेण दंसेमि तो महीनाहो । तेणं समं पयट्टो गंतुं कोऊहलाउलिओ ॥ १०० ॥
जा केच्चिरं पि वच्चइ अ[4]च्चंतुच्चं सिलुच्चओद्देसं । ता एगाए गुहाए देहपहापहयतिमिरभरं ॥ १०१ ॥
सूरं व राहुखंडणभएण दिव्वोसहीसमूहं व । वाइयभीयं लीणं उस्सग्गगयं मुणिं नियइ ॥ १०२ ॥
सा[5]यरपणमंत-थुणंत-इंत-वच्चंतखयर-सुरनियरं । तं च नि[6]एऊण निवो हरिसियवयणो विचिंतेइ ॥ १०३ ॥
चोज्जं[7] महंतमज्ज वि व[8]ज्जियवज्जाइं जोगसज्जाइं । दीसंति संतरूवाइं साहुरयणाइं इहइं पि ॥ १०४ ॥
क[9]यजुगजणनिम्माणुचियचारुगुणगणगिहं इमं मन्ने । गिरिगुविलगुहानिहियं निहिं व रक्खइ विही संखा[10] ॥ १०५ ॥
अहवा इमस्स सेलस्स एयमिह होज्ज सारसवस्सं । अच्चंतनिच्चलाइं कहमन्नह एयअंगाइं ? ॥ १०६ ॥
इय तद्दंसणविम्हयवियसियलोयणमुहं महीवालं । वावारंतरविरयं पुलोइउं जंपइ पुलिंदो ॥ १०७ ॥

---

१ °भागो प्रतौ ॥ २ स्वविकत्थनम् ॥ ३ °पवेसं समं प्रतौ । अटकप्रदेशम् माम् ॥ ४ अत्यन्तोच्चम् ॥ ५ सादरप्रणमत्स्तुवत्आयद्व्रजत्खचरसुर-निकरम् ॥ ६ दृष्ट्वा ॥ ७ आश्चर्यम् ॥ ८ वर्जितवर्ज्यानि ॥ ९ कृतयुगजननिर्माणोचितचारुगुणगणगृहम् ॥ १० साक्षात् ॥

एए जहजोग्गं[1] जुंजिऊण दंडे वि जइ समुज्जमसि । मसिकुच्चयं रिऊणं मुहेसु ता देसि निब्भंतं ॥ ६४ ॥
एवंविहे[2] पयत्ता पत्ता लच्छिं निवा सुतुच्छा वि । इय विवरीयरया पुण गरुया वि गया लहुं निहणं ॥ ६५ ॥
ता देव ! सत्तु-सामंत-मंति-मित्ताण जाणिउं चित्तं । पच्चइयनरेहिं तओ तदुचियसामाइ जुंजित्ता ॥ ६६ ॥
आयरसु विजयजत्तं लहसु जयं ज्झत्ति पाउणसु कित्तिं । भंजसु मड[3]प्फरं वेरियाण कयनीतिसन्नाहो ॥ ६७ ॥
अह परिभाविय त[4]व्वयणमीसि हसिऊण जंपियं रन्ना । वणियाणं विप्पाण य होइ मई एरिसी चेव ॥ ६८ ॥
कहमन्नहमप्पडिमल्लरायसिरिहरिसदेवपुत्तस्स । मज्झ वि पुरओ ए[5]रिसमहम्मरणकम्ममुवइसह ? ॥ ६९ ॥
अ[6]विमंसिऊण सम्मं तेणेव तिणं व मंतिणो लहुया । जहतह पयंपमाणा वच्चंति पराभवट्ठाणं ॥ ७० ॥
ता होउ मंतिएणं रे रे पडिहार ! पलयघणघोसं । उकंपियरिउचक्कं लहुं दवावेसु जयढक्कं ॥ ७१ ॥
तत्तो काउं मज्जणमुज्जलपरिहियविसुद्धवरवत्थो । कयमंगलोवयारो जयकुंजरमारुहिय राया ॥ ७२ ॥
मंडलिय-दंडनायग-सेणावइ-सुहडलोयपरियरिओ । भूरिसिय[7]छत्तछायासंछाइयरविकराभोगो ॥ ७३ ॥
चउरंगसेन्नसम्मद्द[8]ऽमंदनिद्दलियमेइणीवट्टो । नीहरिओ नयराओ जवेण गंतुं पयट्टो य ॥ ७४ ॥
अखलियपयाणएहिं पत्तो नियदेससीमसंधीए । दूयवयणेण तत्तो भणाविओ कामरूयराया ॥ ७५ ॥

---

१ °ग्गं संजुं° प्रतौ ॥ २ °विहि प° प्रतौ ॥ ३ °डफरं प्रतौ । गर्वम् ॥ ४ तन्नय° प्रतौ ॥ ५ ईदृशम् अधमरणकर्म उपदिशथ ॥ ६ अविमृश्य ॥ ७ °यच्छत्तच्छाया° प्रतौ ॥ ८ °द्दअसंद्दनि° प्रतौ ॥

राजलक्ष्म्याः चपलत्वम्

मणि[1]कुट्टिमसयताडियकंदुय[2]उप्फिडण-पडणपडितुल्लं। भमभमिर[3]जंतुविलसियमवगच्छसि किं न नीसेसं ? ॥ १२० ॥
किं[4] वा कोटरपज्जलिरजलणडज्झंतपायवप्पडिमं। करिचरणचंपिउप्पलमालं पिव बाहसी देहं ? ॥ १२१ ॥
जाहे[5] थिर-थूरगिरि-भवण-वण-नइ-सिंधुणो न ते वि थिरा। किं पुण रायसिरी सरय[6]सेलसरिय व पयइचला ?॥ १२२ ॥
अहवा चडुलतुरं[गम]खरखुर-पुच्छच्छडाविहुरिय व। सुप्पाणु[7]रूवकरिकन्नतालतालिज्जमाण व ॥ १२३ ॥
दप्पुब्भडसुहडकरावरुद्धपहरणसमूहभीय व। रय[8]चलिरचामरानिलगुरुलहरीहीरमाण[9] व ॥ १२४ ॥
कलि[10]कालकलियकलुसिज्जमाणभूनाहदढविरत्त व। गुरुसिक्खासवणुप्पन्न[कन्न]सूलाइरेग व ॥ १२५ ॥
कह कुणउ अवत्थाणं पत्थिव ! लोयम्मि निच्चकालं पि। रायसिरी पुरिसविसेसविसयविन्नाणविमुहवई[11] ? ॥ १२६ ॥
इय नरवरिंद ! बाढं निरुंभिउं[12] रायलच्छिवामोहं। तं निच्चलत्तकारणमवरं वावारमणुसरसु ॥ १२७ ॥
जइ ताव चित्तसंतावमेत्तओ चिंतियाइं सिज्झंति। ता ज्झाण-दाण-तवमाइएहिं किं खिज्जए[13] लोए ॥ १२८ ॥
रन्ना भणियं भयवं ! अवितहमेयं ति किंतु कलुसमई। अम्हारिसो जणो[14]ऽयं जहतह सुहसिद्धिमभिलसइ ॥ १२९ ॥

---

१ मणिकुट्टिमशयताडितकन्दुकोत्स्फिटनपतनप्रतितुल्यम्॥ २ °कंडिय° प्रतौ ॥ ३ भमभमि° प्रतौ ॥ ४ किं वा कोटरप्रज्वलनशीलज्वलनदह्यमानपादपप्रतिमम्। करिचरणाक्रान्तोत्पलमालामिव ॥ ५ यदा स्थिरस्थूलगिरिभवनवननदीसिन्धवः ॥ ६ शरच्छैलसरिदिव ॥ ७ सूर्पानुरूपकरिकर्णतालताड्यमानेव ॥ ८ वेगचलनशील– ॥ ९–ह्रियमाणा ॥ १० कलिकालकलिकाकलुष्यमाणभूनाथदृढविरक्तेव। गुरुशिक्षाश्रवणोत्पन्नकर्णशूलातिरेकेव ॥ ११ विमुखवती–विमुखेत्यर्थः ॥ १२ निरुध्य राजलक्ष्मीव्यामोहम् ॥ १३ खिद्यते लोकः ॥ १४ जणोहं जह° प्रतौ ॥

पञ्चनमस्काराराधनविधिः

न मुणइ कारणरहियं कज्जं कह जायइ ? त्ति तारूवं। संखेवसारभूयं किं[1] पि वएसं महं देहि ॥ १३० ॥
तो तज्जुग्गयमुवलब्भ साहुणा चंदणं व मलयाओ। नंदणवणाउ कप्पद्दुमं व जलहीउ अमयं व ॥ १३१ ॥
पा[2]रगयपणीयाओ पावयणाओ पहाणओ परमो। पंचपरमेट्ठिमंतो उवइट्ठो इट्ठसिद्धिकरो ॥ १३२ ॥
सम्मत्तनिच्चलत्तं परमं नरनाह ! नवरि कायव्वं। उच्छुलय[3] व न किरिया एयं[4]विउत्ता फलं देइ ॥ १३३ ॥
अन्नं च पंचमंगलसुयक्खंधो एस गिज्जए समए। पढमुच्चारो सत्थाण दिव्वमंताण पणवो[5] व ॥ १३४ ॥
एसो य उद्दिसिज्जइ जिणभवणे नंदिविरयणापुव्वं। तो कीरंतु[6]ववासा पढमं चिय पंच एगसरा ॥ १३५ ॥
तो अट्ठ अंबिलाइं दिज्जइ नवकारवायणा तत्तो। तिहिं उववासेहिं ततोऽणुन्नवणा कीरइ इमस्स[7] ॥ १३६ ॥ तहा—
इह साहुपए नव अक्खराइं पंचेव हुंति सिद्धपए। अरिहंताइपएसुं पत्तेयं सत्त सेसेसुं ॥ १३७ ॥
अरिहंताई पंच वि पयाइं बीयाइं परममंताणं। एयाणुवरिं चूला "एसो पंच" त्ति एमाई ॥ १३८ ॥
तेत्तीसऽक्खरमाणा इमा य तेत्तीसपयडणपहाणा। एवं [एस] समप्पइ फुडमक्खरअट्ठसट्ठीए ॥ १३९ ॥
एवं पढिओ एसो विहीए लक्खेण सेय-सुरहीणं। कुसुमाणं पुण जविओ भव्वेण तदेगचित्तेणं ॥ १४० ॥
वियरइ भुवणऽब्भहियं तित्थंकर-चक्कि-गणहरपयं पि। जहतह सुलभाणं पुण का वत्ता सेसवत्थूण ? ॥ १४१ ॥

---

१ किमप्युपदेशम् ॥ २ पारगताः–तीर्थकराः ॥ ३ सम्यक्त्वविरहिता क्रिया इक्षुलतावत् फलवन्ध्या ॥ ४ °यवेउ° प्रतौ ॥ ५ 'प्रणवः' ॐकारः ॥ ६ क्रियन्ते उपवासाः ॥ ७ °मस्सं प्रतौ ॥

अंतोऽरिहंत[1]विन्नास दाहिणावत्त सिद्धमाईणं । ज्झाणं च एत्थ किच्चं निच्चं परमेट्ठिमुद्दाए ॥ १४२ ॥ किंच—

करआवत्ते जो पंचमंगलं साहु[2]पडिमसंखाए । नववारा आवत्तइ छलंति नो तं पिसायाई ॥ १४३ ॥

एयप्पभावमहवा सव्वं सव्वन्नुणो च्चिय मुणंति । तल्लेसुद्देसं पुण पत्थिव ! तुह किं पि उवइट्ठं ॥ १४४ ॥

तो तक्खणदक्खिणविप्फुरंतलोयणविभावियऽब्भुदओ । नमिऊण मुणिं राया जंपेउमिमं समाढत्तो ॥ १४५ ॥

भयवं ! कुणसु पसायं जहाविहीए ममं इमं देह । मा जियचिंतारयणं विफलं तुह दंसणं होउ ॥ १४६ ॥

तो जोगो त्ति विभाविय मुणिणा सो संतिनाहजिणभवणे । तीए गुहाए अदूरे नीओ वंदाविओ देवे ॥ १४७ ॥

गुरु-देव-तत्तपयडणपुव्वं सम्मत्तमुत्तमं दाउं । पंचपरमेट्ठिमंतो उवहाणपुरस्सरं दिन्नो ॥ १४८ ॥

उववूहिओ य गुरुणा[3] देवाणुप्पिय ! तुमाउ नो अन्नो । धन्नो जए वि विज्जइ कहमन्नह एयसंपत्ती ? ॥ १४९ ॥

अवि लब्भइ चक्कित्तं सुराहिवत्तं सुरूव-सोहग्गं । न पुण परमेट्ठिमंतो एसो नीसेसकुसलकरो ॥ १५० ॥

जं कहिउं पि न तीरइ[4] न य जं विसए वि पडइ बुद्धीए । जं गोयरे य न मणोरहाण न मणे वि जं ठाइ ॥ १५१ ॥

तं पि हु अचिंतमाहप्पपंचपरमेट्ठिमंतसामत्था । सज्जो कज्जं पुरिसो साहइ लीलाए नि[5]ब्भंतं ॥ १५२ ॥

पेच्छसि इमं च जं भूमिनाह ! जिणसंतिमंदिरमुदारं । तं पि हु थेवाराहियपंचनमोक्कारविप्फुरि[6]यं ॥ १५३ ॥ तहाहि—

१ अर्हद्विन्यासः दक्षिणावर्त्तम् । लुप्तविभक्तिके पदे ॥ २ साधूनां प्रतिमाः द्वादश इति द्वादशसंख्ययेत्यर्थः ॥ ३ °णा भो दे° प्रतौ ॥ ४ शक्यते ॥ ५ 'निर्भ्रान्तं' निःशङ्कम् ६ ॥ °विफुरि° प्रतौ ॥

नरवर ! इमस्स मुणिणो किं रूवं मुणउ मारिसो मंदो ? । नवरं दिव्वोस[1]हिसाहिसाहियं पिव इमं मन्ने ॥ १०८ ॥

कहमन्नहा विरायइ सवणपुडं नागदमणिसारिच्छं । हिरिबेरमूलसुहुमा सुगंधिणो वा सिरोकेसा ॥ १०९ ॥

तंबोट्ठपुडट्ठ·········कसिणसिणिद्धा य सहइ रोमाली । एयस्स कालिया तालिय व्व सोवन्नवन्नकए ॥ ११० ॥

छायातरुं व पेच्छसु अच्छिन्नच्छायमंगमेयस्स । नवपल्लव व्व कंकेल्लिणो करा तह विरायंति ॥ १११ ॥

थलकमलनिव्विसेसं उम्मुहपसरंतनहमणिमऊहं । चलणजुयं समहियवीयरविकर (?) व्व गिरिमिव सहइ ॥ ११२ ॥

इय भूमिपाल ! साहेमि केत्तियं एयस[2]न्तियं तुज्झ ? । पयइपसुनिव्विसेसो साहीण सया वि सहवासी ॥ ११३ ॥

उल्लवइ तं नरिंदो को एवं भासिउं परं सक्को ? । अत्तबहुमाणविमुहाइं अहव हिययाइं गरुयाण ॥ ११४ ॥

ता होउ दाणि भणिएण एहि एयस्स पायपडणेण । इय अप्पाणं कुणिमो पू[3]यमप्पडिमधम्मस्स ॥ ११५ ॥

इय ते भूमं[4]डलसम्मिलंतभालयलल्लुलियसिरकेसा । नमिउं मुणिं निविट्ठा उचियट्ठाणे पहिट्ठमणा ॥ ११६ ॥

साहू वि जहो[5]च्चियकिच्च[6]सेसमवसेसिऊण आसीणो । जंपइ कत्तो ? के वा तुब्भे ? किं चेह कज्जं ? ति ॥ ११७ ॥

रन्ना पयंपियं कज्जमेत्थ तुम्हाण ताव पयनमणं । सेसं तु चित्तसंतावयं ति नो साहिउं जुत्तं ॥ ११८ ॥

तो दिव्वनाणबलकलियसयलतव्वइ[7]यरेण मुणिवइणा । भणियं नरिंद ! सविसायमेरिसं किं समुल्लवसि ? ॥ ११९ ॥

१ दिव्यौषधिशाखिसाधिकमिव ॥ २ °सन्तियं° प्रतौ । एतत्सत्कं तव । प्रकृतिपशुनिर्विशेषः शाखिनां सदाऽपि सहवासी ॥ ३ 'पूतम्' पावनम् ॥ ४ °डणस° प्रतौ ॥ ५ यथोचितकृत्यशेषम् 'अवशेष्य' समाप्य ॥ ६ °किच्चिसे° प्रतौ ॥ ७–तद्व्यतिकरेण ॥

एयस्स अदूरम्मि पंचनमोक्कारअक्खरसिलं पि । उत्तरदिसाए अज्ज वि पेच्छसु जइ कोउगं [1]अत्थि ॥ १६६ ॥
उवसंतदिट्ठियं अणसणट्ठियं ईसिवि[2]हँडिउट्ठउडं । सिरि विरइयकरकोसं तह घडियं वानरं तं पि ॥ १६७ ॥ छ ॥
एवं निसामिऊणं राया अच्चंतविम्हया[3]उँलिओ । तम्मि ठाणम्मि गतो दिट्ठं च जहट्ठियं सव्वं ॥ १६८ ॥
अह जायपच्चओ सो पच्चागंतूण पणमइ तवस्सिं । आबद्धकरयलंजलि पयंपए वयणमेयं च ॥ १६९ ॥
जह सिट्ठं पहु ! तुमए तहे[व] तं सव्वमेवमविगप्पं । अवि चलइ तियससेलो न तुम्ह वयणं पुण कहिं पि ॥ १७० ॥
पुव्वं पि निच्चलमणं विसेसतो तक्खणं महीवालं । अणुसासिय आपुच्छिय जहागयं पडिगओ साहू ॥ १७१ ॥
राया वि संतिजिणपायपउमपुरओ पयत्तक[4]यँझाणो । पंचनमोक्कारुच्चारपुव्वयं नाणमुद्दाए ॥ १७२ ॥
सिय-सुरहि-चारु कुसुमं ता मुंचइ जा समप्पए लक्खो । थेवेण नेव कत्तो वि ताव कयबहलहलबोलो ॥ १७३ ॥
सद्दे[5]वँत्तं व जए पइट्ठियं गरुयदेहदंडेण । [6]आयासं व मिणंतो भीमाण वि जणियभूरिभओ ॥ १७४ ॥
[7]निँठुरपयभरफुट्टंतमेइणीवट्टहलहलियसेलो । तद्देसखेत्तवालो समागओ करकयकवालो ॥ १७५ ॥
भणियं च तेण रे रे नराहमा ! विरम मंतसरणाओ । को एस मूढ ! मंतो ? को वा एयस्स दाया वि ? ॥ १७६ ॥
सव्वं आलप्पालं किं खिज्जसि ? किं न जासि नियभवणं ?। जलकप्पणा न [8]मायण्हियासु तण्हं पसामेइ ॥ १७७ ॥

१ अच्छि प्रतौ ॥ २ ईषद्विघटितौष्ठपुटं शिरसि ॥ ३ °उभिओ प्रतौ ॥ ४ °यज्झा° प्रतौ ॥ ५ °वत्तम्व जए प्रतौ ॥ ६ आकाशम् ॥ ७ निष्ठुरपदभरस्फुटन्मेदिनीपट्टकम्पितशैलः ॥ ८ मृगतृष्णिकासु तृष्णां प्रशमयति ॥

सिरिसंतिनाहपयदंसणे वि न य अत्थि जोग्गया तुज्झ । ता अप्पाणं [1]अमुँणिय कीस मुहा कुणसि ववसायं ॥ १७८ ॥
किं बहुणा भणिएणं ? जिणभवणावग्गहं लहुं चयसु । अह को वि भडमओ ते ता सज्जो होसु जुज्झत्थं ॥ १७९ ॥
इय जाव सो पयंपइ [2]सँरोसविप्फारियऽच्छिविच्छोहो । कीणासभ[3]मुँ[ह]कुडिलं च केत्तियं किं पि कंपइ या ॥ १८० ॥
ता गु[4]ँ[रु]-मन्तावन्नानिसामणुप्पन्नगाढपरिकोवो । राया ज्झाणं मोत्तुं जंपिउमेवं समाढत्तो ॥ १८१ ॥
रे[5] कडपूयण ! किं पित्तविहुरदेहो व्व पलवसि जहिच्छं ?। जं पंचनमोक्कारं निंदसि तद्देसगं च गुरुं ॥ १८२ ॥
एयं पि मूढ ! न [6]मँणसि ! [7]एँयाणऽग्घो न तिहुयणेणावि । पारिज्जइ काउं सुंदरं च एत्तो वि नत्थि परं ॥ १८३ ॥
ही ! मोहविलसियाइं ज[8]वँसगा पाणिणो न याणंति । [9]धँत्तूरयरसिया इव सुहमसुहं गज्झमियरं वा ॥ १८४ ॥
अहवा छुहा-पिवासाकिलामणा-ऽ[10]याँणचायलद्धेण । देवत्तेणं इय हवइ निच्छियं वयणविन्नाणं ॥ १८५ ॥
तुच्छाणं तुच्छाइं वयणाइं मणोरहा य सीलं च । खंती वि[11]णँतो य नतो य किमिह ता तुज्झ वयणिज्जं ? ॥ १८६ ॥
तो जायगरुयकोवो खेत्ताहिवई निवं समुल्लवइ । पावियदप्पफलो वि हु न मूढ ! दप्पं परिच्चयसि ? ॥ १८७ ॥
रायाऽऽह रे दुरासय ! को सि तुमं जेण तुज्झ भीओ हं । उज्झामि खत्तकुलज[12]म्मँसहयरं दप्पमप्पधणं ? ॥ १८८ ॥

१ अज्ञात्वा ॥ २ सरोषविस्फारिताक्षिविक्षेपः ॥ ३–भ्रुकुटि– ॥ ४ गुरुमन्त्रावज्ञानिशमनोत्पन्नगाढपरिकोपः ॥ ५ रे व्यन्तर ! ॥ ६ चिन्तयसि ॥ ७ 'एतयोः' पञ्चनमस्कारस्य तदुपदेशकगुरोश्च ॥ ८ यद्वशगाः ॥ ९ धत्तूरकरसिता इव शुभमशुभं ग्राह्यमितरद्वा ॥ १०–अज्ञानत्याग– ॥ ११ विनयश्च नयश्च ॥ १२ –सहचरं दर्पमात्मधनम् ॥

एसा वि कत्तिया[1] तुह न कन्नकंडूयणे वि मे सत्ता । विहलो इमो वि बालाण खयकरो नणु फडाडोवो ॥ १८९ ॥
खेत्ताहिवो पयंपइ जइ एवं एहि जिणहराओ बहिं । रणमणुचियं हि पुरओ केयजय[2]संतिस्स संतिस्स ॥ १९० ॥
अह वयणाणंतरमवि दढबद्धनियंसणो[3] निवो ज्झत्ति । नीहरिउं जुज्झेणं लग्गो सह खेत्तवालेणं ॥ १९१ ॥
एत्थंतरम्मि नरवइ[4]वामोहुप्पायणट्ठमट्ठदिसं । खित्ताहिवेण ठविया बिभीसियाओ ततो राया ॥ १९२ ॥
एगत्थ कडकडा[5]रवरउद्ददंतग्गदारुणायारं । डमडमियडमरुडामरमवलोयइ डाइणीवंद्रं ॥ १९३ ॥
अन्नत्थ वयणपज्जलियजलणजालाकलावदुप्पेच्छं । पेच्छइ वेयालकुलं करतालुत्तालतुमुलरवं ॥ १९४ ॥
एगत्थ सज्जिय[6]कमविडंबिउग्गाढदाढमुहकुहरं । पेच्छइ जलंतनयणं मइंद[7]विंदं जणरउद्दं[8] ॥ १९५ ॥
अन्नत्थ फार[9]फणफलगभीसणं दीहजीहजुयलिल्लं । पमुक्क[10]पुक्कनिकसियसिहिकणं नियइ फणिचक्कं ॥ १९६ ॥
एगत्थ चंड[11]तंडवियसुंड[12]मुड्डमरदंतदढदंडं । अंजणगिरिं व गरुयं अवलोयइ मत्तकरडिघडं ॥ १९७ ॥
अन्नत्थ खय[13]समीरुच्छालियचुडलीविलुत्तनक्खत्तं । पेक्खइ खयसमयम्मि व पसरंतं वणदवं रुद्दं ॥ १९८ ॥

---

१ कर्त्तिका ॥ २ कृतजगच्छान्तेः ॥ ३–निवसनः ॥ ४ नरपतिव्यामोहोत्पादनार्थम् अष्टदिक्षु ॥ ५ कटकटारवरौद्रदन्ताग्रदारुणाकारम् । डमडमायित-डमरुभयङ्करम् अवलोकते डाकिनीवृन्दम् ॥ ६ **सज्जय**° प्रतौ । सज्जितक्रमविडम्बितोद्गाढदंष्ट्रामुखकुहरम् ॥ ७ मृगेन्द्र वृन्दं जनभयङ्करम् ॥ ८ **जलर**° प्रतौ ॥ ९ स्फारफणाफलकभीषणं दीर्घजिह्वायुगलवन्तम् । प्रमुक्तपूत्कृतनिष्काशितशिखिकणं पश्यति फणिचक्रम् ॥ १० **पंचमु**° प्रतौ ॥ ११ चण्डताण्डवितशुण्डं महाभयङ्करदन्तदृढदण्डम् ॥ १२ °**सुंडमुंडडमुडमर**° प्रतौ ॥ १३ क्षयसमीरोच्छालितोल्मुकविलुप्तनक्षत्रम् ॥

सोहम्मदेवलोए हेमपभो नाम आसि वरतियसो । छम्माससेसमाउयमवगच्छिय अप्पणो सो य ॥ १५४ ॥
पुच्छेइ केवलिं वंदिऊण एत्तो चुयस्स मे भंते ! । कत्थुप्पत्ती होही ? कहं व बोहीए लाभो य ? ॥ १५५ ॥
तो केवलिणा भणियं पज्जंते भद्द ! अट्ट[1]ज्झाणेणं । मरिऊण वानरो तं होहिसि एयाए अडवीए ॥ १५६ ॥
तत्थ य किलेससज्झो होहीय कहं पि बोहिलाभो य । इय सोउं सो तियसो इममडविं आगतो तुरियं ॥ १५७ ॥
उक्किन्नो सेलसिलाए [2]बोहिहेउं च एस नवकारो । समए कालं काउं उववन्नो वानरत्तेण ॥ १५८ ॥
कह कह वि तुडि[3]वसेणं तेण भमंतेण सेलसिहरेसु । दिट्ठा सा उक्किन्ना पंचनमोक्कारपयपंती ॥ १५९ ॥
तं च विभा[4]वितो से जाईसरणेण मुणियपुव्वभवो । वेरग्गावडियमई घेत्तूणं अणसणं सम्मं ॥ १६० ॥
तं चेव नमोक्का[5]रं सरमाणो पाविऊण पंचत्तं । देवो पुणो वि जा[ओ] सोहम्मे हेमपभनामो ॥ १६१ ॥
किं दिन्नं ? किं तवियं ? किं जट्ठं[6] वा मए चिरभवम्मि ?। इय जाव सो विभावइ ता जायं जाइसरणं ति ॥ १६२ ॥
तो विन्नायजहट्ठियभावो मोत्तूण देवकिच्चाइं । आगच्छइ इह ठाणे पेच्छइ विज्जाहरे य तहिं ॥ १६३ ॥
विज्जाहराण हेउं संतिजिणिंदालयं पकाउमणे । तो ताण अप्पणो वि य अणुग्गहट्ठा ससत्तीए ॥ १६४ ॥
फलिह[7]मणिमसिणभूमियममियत्थंभावलीविरायंतं । नियगरिमविजियगिरिवरमाययणं संतिणो कुणइ ॥ १६५ ॥

---

१ °**ट्टज्झाणे**° प्रतौ ॥ २ °**बोहिहे**° प्रतौ ॥ ३ भाग्यवशेन ॥ ४ 'विभावयन्' चिन्तयन् सः ॥ ५ °**कारो, स**° प्रतौ ॥ ६ 'इष्टम्' पूजितम् ॥
७ स्फटिकमणिमसृणभूमिकम् अमितस्तम्भावलीविराजमानम् ॥

रायाऽऽह भो महायस ! किं संतप्पसि तुमं इह पयत्थे ?। एयस्स को णु दोसो ? मह पुन्नविवज्जओ एस ॥ २०९ ॥
कहमन्नहा [तहा]विहनिरुद्धमण-वयण-कायपसरस्स । थेवेणापुन्नमणोरहस्स चित्तं चलिज्ज ममं ? ॥ २१० ॥
किमहं न एत्तियं पि हु मुणेमि ? जं वंछियत्थसिद्धीओ । [1]पंचूहवूहविहुणियपसराओ हवंति पाएण ॥ २११ ॥
देवेण जंपियं भो नरिंद ! सच्चं इमं जओ भावी । विज्जाहरचक्कि च्चिय एवं जविउं लहइ लक्खं ॥ २१२ ॥
तुह पुण थेवेणापुन्नपंचनवकारलक्खजावस्स । कित्तेमि भूवइत्तं [2]सुनिरुत्तं करतलनिलीणं ॥ २१३ ॥
ता एहि [3]सयलतयलोयपणयचरणं जिणं थुणामो त्ति । ता दो वि ते पयट्टा भत्तीए वंदिउं संतिं ॥ २१४ ॥

यस्य स्तुतौ त्रिजगती युगपत् प्रवृत्ताऽप्यन्तं न गन्तुमलमुज्ज्वलसद्गुणानाम् ।
वृ[4]न्दारकाधिपतिवन्द्य[5]पदारविन्दो, जीयात् स शान्तिरुपकल्पितविश्वशान्तिः ॥ २१५ ॥
ब्रह्मा वरीयान् धृतिवृद्धिसिद्धः, ध्रुवः शुभः शोभनहर्षणश्च ।
सत्प्रीतिसौभाग्यसुकर्मसिद्धि [........................... ॥ २१६ ॥
.... ।
....] रित्थं सुयोगमय एव मुदेऽस्तु शान्तिः ॥ २१७ ॥

१ प्रत्यूहव्यूहविधुनितप्रसराः ॥ २ सुनिश्चितं करतलनिलीनम् ॥ ३ सकलत्रैलोक्यप्रणतचरणम् ॥ ४ °न्दारिका° प्रतौ ॥ ५ °पादा° प्रतौ ॥

एवं थुणिउं संतिं हेमपहो जिणहराउ नीहरिओ । वसुहाहिवेण य समं आरूढो वरविमाणम्मि ॥ २१८ ॥
मणविजयिणा जवेणं ससेल-वण-काणणं धराभोगं । [1]पेहंता सुमहल्लं कंपिल्लपुरं लहुं पत्ता ॥ २१९ ॥
हेमप्पभेण तत्तो निवेसिउं पुवपुहइपालपए । सो सिरिदेवनरिंदो दुद्दंतजणं हणेऊण ॥ २२० ॥
सो वि य कामरूयनिवो [2]हेच्छं आणावडिच्छओ विहिओ । अन्ने वि बंग-कालिंगराइणो गाहिया सेवं ॥ २२१ ॥
इय पुवरायसमहियरायसिरिं लंभिऊण तं देवो । जंपइ परं पि साहेहि भो ! पियं किं पणामेमि ? ॥ २२२ ॥

अह [3]हरिसविसप्प[4]तुंद्धरोमंचराईसमहियरुइरंगो पत्थिवो हत्थकोसं ।
कमलमउलसोहं भालवट्टे ठवित्ता, दरविणमियसीसो सायरं वागरेइ ॥ २२३ ॥

दिट्ठो दुल्लहदंसणो मुणिवरो पत्ता य बोही तओ, संपत्तो परमेट्ठिपंचयमहामन्तो य संती थुओ ।
जायं तुज्झऽणुभावओ य सयलं कज्जं च मे वंछियं, किं एत्तो वि पियं परं इह जए जं देव ! जाइज्जए ? ॥ २२४ ॥
तह वि हु विहुणियदारिद्दविद्दवं वंछियत्थदाणखमं । चिंतारयणं व [5]पुणो वि दंसणं तुह महं होज्जा ॥ २२५ ॥
इयजंपिरे नरिंदे देवो सहसा अदंसणीहूओ । राया वि रज्जकज्जाइं चिंतिउं संपयट्टो त्ति ॥ २२६ ॥
अह सुचिरं रायसिरिं उवभोत्तुं मुणियमरणपत्थावो । पुत्तं ठविऊण पए स महप्पा जायवेरग्गो ॥ २२७ ॥

१ °ता सम° प्रतौ । प्रेक्षमाणाः सुमहान्तम् ॥ २ शीघ्रम् आज्ञाप्रतीच्छकः ॥ ३ हर्षविसर्पदूर्ध्वरोमाञ्चराजिसमधिकरुचिराङ्गः ॥ ४ °तुद्धरो° प्रतौ ॥ ५ °णो व दं° प्रतौ ॥

पञ्चनमस्कारस्मरणस्य फलम्

पंचपरमेट्ठिमंतं अच्चंतं माणसम्मि सरमाणो। पंचत्तमणुप्पत्तो चित्तसमाहीए परमाए ॥ २२८ ॥
तो कंपिल्लनिवासी लोगो रायस्स तव्विहं मरणं। दट्ठुं कत्थुववन्नो इमो ? त्ति संजायजिन्नासो ॥ २२९ ॥
जा चिट्ठइ वामूढो ता दढघोसो त्ति केवली पत्तो। सविणयकयप्पणामेण पुच्छिओ सो तओ तेण ॥ २३० ॥
अह केवलिणा सिट्ठो सिरिदेवनराहिवस्स माहिंदे। सुरसिरिलाभो सुंजवियपंचनमोक्कारमाहप्पा ॥ २३१ ॥
तत्तो सुकुलुप्पत्ती कइवयभवभमणओ य सिवलाभो। इय पंचनमोक्कारो सारो नीसेसधम्मस्स ॥ २३२ ॥ किञ्च—
एकैकोऽप्यभिवाञ्छितानि वितरेद् ध्यातोऽर्हदादिर्मुदा, सञ्जेष्ठ्या परमेष्ठिनः किमु परं पञ्चापि चानुस्मृताः ?।
तत् कः स्वस्य रिपुः ? स्वरिच्छति न कः ? काङ्क्षेत मोक्षं न कः ?, योऽस्मिन् श्रीपरमेष्ठिपञ्चकनमस्कारे न बद्धादरः ॥१॥
किं दानैः ? किमु भूरिशास्त्रपठनैः ? किं देवपादार्चनैः ?, किं ध्यानैस्तपसा च किं ? किमथवा कूटैर्विवेकैरपि ?।
चेत् संसारसरित्पतौ तरिसमा नैवास्ति कल्याणभूर्भक्तिः श्रीपरमेष्ठिपञ्चकनमस्कारे नृणां निश्चला ॥ २ ॥
वह्न्युद्दीप्तगृहादनर्घमणिवर्ज्जन्येष्वमोघास्त्रवत्, सिन्धौ मज्जदनल्पनौफलकवत् पातेऽथवाऽऽलम्बवत्।
गृह्णन् पञ्चनमस्कृतिं सकलमप्यन्यद् विहायाऽऽदराद्, जीवो जीवितविप्लवेऽपि न भवत्येवाऽऽपदामास्पदम् ॥ ३ ॥

१ °सुविजय° प्रतौ ॥ २ °क्कारेमा° प्रतौ ॥ ३ सज्ज्येष्ठ्या परमेष्ठिनः किमपरं पञ्चापि नानुस्मृताः ? प्रतौ ॥ ४ °ङ्क्षे न मोक्षं च कः, यस्मिन् प्रतौ ॥ ५ कूटैर्वि° प्रतौ ॥ ६ युद्धेषु ॥

एगत्थ चाव-कुंता-ऽसि-सेल्ल-नाराय-चक्कलेल्लक्कं। आलोकदट्ठुक्कंतं दुवारं वेरिवारबलं ॥ १९९ ॥
अन्नत्थ मच्छ-कच्छभपुच्छुच्छालियमहल्लकल्लोलं। खयसिंधुणो व्व वेलं देहइ पबलं जलुप्पीलं ॥ २०० ॥
इय पेच्छिरो वि राया न पंचपरमेट्ठिमंतमाहप्पा। खुब्भइ भमई विरमइ गुप्पइ तम्मइ किलम्मइ य ॥ २०१ ॥ किञ्च—
क्षणं कृतकचग्रहाकुलितकन्धराकन्दलं, निमेषविमुखस्फुरन्नयनतारतारं क्षणम्।
क्षणं गुरुपरिश्रमश्रवदजस्रघर्मोदकप्लुतावनितलं क्षणं दशनदष्टदन्तच्छदम् ॥ २०२ ॥
क्षणं करसरोरुहप्रहतमेदुरोरस्थलं, क्षणं च परिवर्तनश्लथगलत्कटीशाटकम्।
क्षणं करणकल्पनाप्रकटपाटवाडम्बरं, तयो रतमिवाभवत् स[म]रकर्म चित्रक्रियम् ॥ २०३ ॥
एत्थंतरम्मि चेइयचिंताविणिउत्ततियसवयणाओ। मुणिउं तव्वुत्तंतं हेमपभो तत्थ ओइन्नो ॥ २०४ ॥
निद्धाडिऊण खित्ताहिवं लहुं सायरं निवं भणइ। उवविस विमुंच रणमिण्हि भो महाभाग ! सुणसु गिरं ॥ २०५ ॥
एसो खु पुंडरीय त्ति खेत्तवालो मए इह निउत्तो। चेइय-साहम्मियकिच्चकरणहेउं दुरायारो ॥ २०६ ॥
साहम्मियकिच्चं पुण कयमेवंविहमणेण मूढेण। केलीकिलाणमहवा गुण-दोसवियारणं कत्तो ? ॥ २०७ ॥
ता दुव्विलसियमेयस्स खमह मह सव्वहोवरोहेण। भिच्चावराहदूसणमवणेयं सामिणा चेव ॥ २०८ ॥

१ चापकुन्तादयोऽस्त्रशस्त्रभेदविशेषाः ॥ २—भयङ्करम्। आलोकदृष्टोत्क्रान्तम् ॥ ३ पश्यति ॥ ४ दर्शनशीलः ॥ ५ °रुच्छलं प्रतौ ॥ ६ °भमत् प्रतौ ॥ ७ सादरम् ॥ ८ चैत्यसाधर्मिककृत्य— ॥ ९ °व्वहाव° प्रतौ ॥

जलगलण-भूमिपेहणपमुहा जयणा य सव्वजोगेसु । कायव्वा इत्थ जओ जयणा धम्मस्स सारो त्ति ॥ ९ ॥
कम्मयराण वि इत्थं थेवं पि न वंचणं विहेयव्वं । अवि सविसेसं देयं तेसिं सुहभावबुद्धिकए ॥ १० ॥
इय पढमकीरमाणे जिणभवणे वन्निओ विही एस । जिन्नुद्धारम्मि पुणो एसो च्चिय पायसो नवरं ॥ ११ ॥
जिन्नं विहडियसंधिं निन्नट्ठ[1]धयं च चेइयं दट्ठुं । तमुवेक्खिऊण अन्नं कुसलेण न जुज्जए काउं ॥ १२ ॥
इहरा मग्गुच्छेओ न मा[2]णविजओ जिणे य न य भत्ती । तम्हा स[3]इ य सामत्थे तमुद्धरंतो[4] वरं कुज्जा ॥ १३ ॥
इय भणियविहाणेणं जिणभवणं मणहरं करावितो । विजउ व्व गिही निग्गहइ दुग्गदुग्गइदुहाइं लहुं ॥ १४ ॥ तहाहि—

गिरि-सर-सरिया-ऽऽराम-प्पवा-सभा-वावि-कूवरमणिज्जा । मालवविसयपहाणा चक्कपुरी अत्थि वरनयरी ॥१५॥
रयणेसु वइ[5]रसद्दं देहि च्चिय वि[6]ग्गहं वयंति जहिं । चक्क[7]चलणं च दीसइ कुंभारघरे च्चिय न लोए ॥ १६ ॥
ती[8]यं पुरी[9]ए राया भुयपरिहनिरुद्धवइरिवीरबलो । बलभद्दो त्ति पसिद्धो रज्जसिरिं भुंजइ महप्पा ॥ १७ ॥
लच्छी तं[10]कुयमंदिरेसु निहिया खित्तो दिसासुं जसो, सत्तूणं भ[11]यमुब्भडं वियरियं बुद्धिं च नीया गुणा ।
छिन्ना दुन्नयसंकहा वि वि[12]उणो माहप्पमारोविया, जस्सेवं भुवणब्भुयं हि चरियं किं तस्स वन्निज्जए ? ॥ १८ ॥
तस्स य रन्नो मित्तो अहेसि दढगाढरूढपडिबंधो । आबालकालसहपंसुकीलिओ नाम सिरिगुत्तो ॥ १९ ॥

१ °ट्ठचयं च चेइ° प्रतौ ॥ २ मानविजयः ॥ ३ सति ॥ ४ °तो परं प्रतौ ॥ ५ वज्रं वैरं च ॥ ६ शरीरं युद्धं च ॥ ७ चक्रचलनं परचक्रागमनं च ॥ ८ तस्याम् ॥ ९ °ए जाया प्रतौ ॥ १० स्वजनमन्दिरेषु ॥ ११ भयमुद्भटं 'वितीर्णं' दत्तम् ॥ १२ विद्वांसः ॥

तेणं समुद्दसेवा-किसि-वा[1]णिज्जायबहुविहविहीहिं । निज्जियवेसमणधणोहवित्थरो अज्जिओ अत्थो ॥ २० ॥
सुहि-सयण-बंधवाणं थेवं पि हु नेव देइ ओगासं । धणमुच्छाए परिहरइ दूरओ साहुगोट्ठिं पि ॥ २१ ॥
नवरं चिरपुरिसागयसावयधम्मक्खणं जहावसरं । जिणपूयणा[इ]पमुहं जहापयट्टं कुणइ किं पि ॥ २२ ॥
उक्खणण-खणण-परिय[2]त्तणाहिं गोवेइ तं च नियधणं । अवहारसंकियमणो पइक्ख[3]णं लं[4]छणे नियइ ॥ २३ ॥
कालक्कमेण जाओ पुत्तो विजओ त्तिं[5] ठावियं नामं । सिक्खियकलाकलावो य जोव्वणं सो समणुपत्तो ॥ २४ ॥
[6]कइवयवयस्ससहियं जहिच्छचरियं च तं सुनेवच्छं । तंबोलपाडलोट्ठं कुं[7]सुमोत्थयमत्थयं दट्ठुं ॥ २५ ॥
चिंतेइ पिया सुचिरज्जियस्स अत्थस्स संपयं नूणं । इमिणा सुएण कीरइ अकालहीणं हि निग्गमणं ॥ २६ ॥
कहमन्नह [एयारिस]विलासवित्तीए वट्टए पुत्तो ? । सुप[य]त्तविहियरक्खस्स किं व काही इमो अहवा ? ॥ २७ ॥
सा[8]सेमि किं पि तत्तो भणइ सुयं रे ! किम[9]त्थमत्थवयं । कुणसि ? न मुणेसि [10]किमिमं ? कट्ठेण वि[11]ढप्पए लच्छी ॥ २८ ॥
किं वा न वच्छ ! पेच्छसि ? लच्छी जह रक्खिया पयत्तेण । जलनिहिणा जल-तिमि-मगरदुग्गदेसम्मि खिविऊण ॥ २९ ॥
कह वा हरिणा वि कवाडवियडवच्छत्थलम्मि ठविऊण । पु[12]रपरिहदीहभुयगहणगोविया सोविय व्व इमा ? ॥ ३० ॥

१–वाणिज्यादि– ॥ २–परिवर्त्तनाभिः ॥ ३ °क्खणे लं° प्रतौ ॥ ४ मुद्राः पश्यति ॥ ५ त्ति वाचियं प्रतौ ॥ ६ कतिपयवयस्यसहितम् ॥ ७ कुसुमावस्तृतमस्तकम् ॥ ८ शिक्षयामीत्यर्थः ॥ ९ किमर्थमर्थव्ययम् ॥ १० किममं प्रतौ ॥ ११ अर्ज्यते ॥ १२ पुरपरिघदीर्घभुजागहनगोपिता स्वापिता ॥

समणेण व वेसमणेण जह व भोगं अणीहमाणेण । एसा [1]रसायलोरगफारफणावेढमुवणीया ? ॥ ३१ ॥
इय कित्तिया कहिज्जंतु तुज्झ ? जे [2]उज्झियं सजीयं पि । [3]रक्खिसु चिरं सुहि-सयण-देहदोहं पि काऊण ॥ ३२ ॥
विजएण जंपियं ताय ! जइ इमं ता सिरीए किं व फलं ? । न हि चाग-भोगओ वि [4]हुं कज्जमिमीए परं बिंति ॥ ३३ ॥
दिट्ठंता निद्दिट्ठा जे वि तए ताय ! जलनिहिप्पमुहा । ते वि मुहा बलि-हरिचंदमाइपडिवक्खजुत्तिहया ॥ ३४ ॥
वड्ढइ वहंतकूवयजलं व वित्तं सया वि भुज्जंतं । खिज्जइ तदियरकूवयनीरं व अभोगओ ताय ! ॥ ३५ ॥
तेऽणंता जे लच्छि सव्वपयारेण वड्ढिऊण मया । उवभुंजिऊण [दाऊण] जे पुणो ते जए विरला ॥ ३६ ॥
न य रक्खिया वि चिट्ठइ सुदुट्ठमहिल व्व पुन्नरहियस्स । लच्छी नंदस्स व भूवइस्स ता मुंच [5]तं मोहं ॥ ३७ ॥
आ पाव ! ममावि हु सिक्खणाए बद्धक्खणो [6]सिंहो होउं । बहुजंपिएण बालाणमहव सुलहो महुरभावो ॥ ३८ ॥
किं बहुणा जइ रे ! [7]जीयमिच्छसे ठाहि ता [8]निहुयचेट्ठो । जइ पुण विलासकामी ता मह भवणाउ नीहरसु ॥ ३९ ॥
इय परुसवयणभल्लीहिं सल्लिओ तह कहिं पि तेण सुओ । ऊसासो वि हु नीसरइ [9]तस्स जह कट्ठचेट्ठाए ॥ ४० ॥
जइ वि हु पिउणा सो तह [10]तिरिक्खिओ तह वि नो गओ [11]विगइं । सुकुलुग्गयाण पुरिसाणमहव एसेव होइ गई ॥ ४१ ॥
पिउणा वि अत्थसारो तव्वयणुप्पन्नतिव्वकोवेण । [12]तह कह वि गोविओ ठाविओ य जह नज्जइ दिव्वनाणीहिं ॥ ४२ ॥

१ रसातलोरगस्फारफणावेष्टम् ॥ २ उज्झित्वा ॥ ३ अरक्षन् ॥ ४ हु सज्ज° प्रतौ ॥ ५ त्वं मोहम् ॥ ६ 'शैक्षः' शिशुरित्यर्थः ॥ ७ जीवितम् ॥ ८ निभृतचेष्टः ॥ ९ °स्स कह प्रतौ । उच्छ्वासोऽपि हि निस्सरति तस्य यथा कष्टचेष्टया ॥ १० तिरस्कृतः ॥ ११ विकृतिम् ॥ १२ उत्तरार्द्धेऽत्र मात्राधिक्यम् ॥

स्थिति-गति-सुख-दुःख-स्वप्न-निद्रान्त-हर्म्या-ऽटवि-निशि-दिनपातोत्पातवेलासु येषाम् ।
व्रजति न परमेष्ठिश्रेष्ठमन्त्रो मनस्तस्त इह भवसमुद्राद् द्राग् बहिष्टाद् भवन्ति ॥ ४ ॥

॥ इति कथारत्नकोशे पञ्चनमस्कारे श्रीदेवनृपकथानकं समाप्तम् ॥ १० ॥

चैत्यविधापनाधिकारी तद्विधिश्च

पंचनमोकारे त्रि हु अरहंतपयं पयंपियं पढमं । भत्ती य तम्मि विहिया संसारुच्छेयणं कुणइ ॥ १ ॥
सा पुण नज्जइ कज्जेण तं च जिणभवणकारणेण फुडं । अहिगारिणा [1]तयं पुण कारेयव्वं विहीए परं ॥ २ ॥
अहिगारी [2]य इह च्चिय निम्मलकुलसंभवो विभवभागी । गुरुभत्तो सुहचित्तो अच्चंतं धम्मपडिबद्धो ॥ ३ ॥
बहु[3]सुहि-सयणो सुस्सूसपमुहगुणसंगओ विसुद्धमई । आणापहाणचिट्ठो दट्ठव्वो जिणहरविहाणे ॥ ४ ॥
एत्थ विही पुण सुद्धा दव्वे सल्लाइवज्जिया भूमी । भावे य [4]परापत्तियरहिया पढमं निरूवेज्जा ॥ ५ ॥
वेसा-धीवर-[5]जूयारमाइदुग्गुंच्छणिज्जजणरहिए । गिहि-साहूणं सद्धम्मबुद्धिजणगे पएसम्मि ॥ ६ ॥
[6]दलमवि य सयंसिद्धं विसिट्ठकट्ठिट्टगोवलप्पमुहं । [7]उस्सग्गेणं सम्मं सुसउणवुड्ढीए घेत्तव्वं ॥ ७ ॥
तयभावे बहुगुणसंभवे य अतहग्गहो विऽणुन्नाओ । [8]इहरा मग्गुच्छेओ सद्धाभंगो य सुगिहीण ॥ ८ ॥

१ 'तकत्' जिनभवनम् ॥ २ य विहिय च्चिय प्रतौ ॥ ३ °सुहस° प्रतौ । बहुसुहृत्स्वजनः ॥ ४ पराप्रीतिरहिता ॥ ५—द्यूतकारादिजुगुप्सनीय—॥ ६ दलमपि च स्वयंसिद्धं विशिष्टकाष्ठेष्टकोपलप्रमुखम् । 'दलं' चैत्यविधापनसाधनानि ॥ ७ मुख्यवृत्त्या ॥ ८ इतरथा ॥

अट्ठावयस्स कोडीउ अट्ठ चिट्ठंति भूमिनिहियाओ । ता वच्छ ! किं न ठाणाइं ताइं इन्हिं खणेसि त्ति ? ॥ ५३ ॥
किं वा विज्जंतम्मि धणम्मि एवं किलिस्ससे वच्छ ! ? । अणुचियकम्मायरणेण केवलं खिज्जए देहं ॥ ५४ ॥
तो जणणीवयणेणं बलिखेवपुरस्सरं सुहमुहुत्ते । करगहियखणित्तो सो खणणट्ठमुवट्ठिओ जाव ॥ ५५ ॥
ताव अयंडविहंडियबंभंडुड्डमरमवणिफुडणरवं । जायंतउवलवरिसं स पेच्छए तं पएसं ति ॥ ५६ ॥
अहह ! किमेयं ? ति विभाविऊण सज्झसवसूससियरोमो । संहरियखन्नवाओ वेगेणं पडिगओ सगिहं ॥ ५७ ॥
मह भागधेयदुव्विलसिएण कह विज्जमाणमवि दव्वं । समहिट्ठियं° व देवेहिं ? अन्नहा कह भवे विग्घो ? ॥ ५८ ॥
ता गंतूणं हरिसेणकेवलिं वंदिऊण पुच्छामि । को एसो वुत्तंतो ? त्ति तो गओ केवलिसमीवं ॥ ५९ ॥
तम्मि य समए बलभद्दराइणो चेइयस्स कारवणे । साहेइ केवली फलमुदारसिवसोक्खपज्जंतं ॥ ६० ॥
तो विजओ परिचिंतइ जइ कह वि धणं लभामऽहं पिउणो । ता जिणभवणं तुंगं मणोहरं कारवेमि त्ति ॥ ६१ ॥
अह पत्थावे जाए नमिऊणं केवलिं पयत्तेण । जंपइ भयवं ! को पुण निहाणलाभस्स विग्घकरो ? ॥ ६२ ॥
वज्जरियं केवलिणा तुह पिउणा भद्द ! तिव्वमुच्छेण । पावियवंतरभावेण एस समहिट्ठिओ अत्थो ॥ ६३ ॥

१ सुवर्णस्य ॥ २ किं व ठा° प्रतौ ॥ ३ अकाण्डविखण्डितब्रह्माण्डमहाभयङ्करम् अवनिस्फुटनरवम् । जायमानोपलवर्षम् ॥ ४ बंभड्डुडम° प्रतौ ॥ ५ °रिसं म पे° प्रतौ ॥ ६ साध्वसवशोच्छ्वसितरोमा । संहृतखन्यवादः । साध्वसं–भयः ॥ ७ °य व दे° प्रतौ ॥ ८ पच्छावे प्रतौ ॥ ९ कथितम् ॥

तो विजओ केवलिणं नमिउं गेहं च संठवेऊणं । उत्तरदेसम्मि गओ ठिओ जयंतीपुरीए बहिं ॥ ६४ ॥
भूयलनामो य तहिं खेयन्नू खन्नवायविज्जाए । विप्पो अत्थि पसिद्धो जाया से तेण सह मेत्ती ॥ ६५ ॥
कइवयदिणावसाणे तत्थेव निवासिणा महिंदेण । धणिणा वाहरिऊणं सिट्ठमिमं भूइलस्स जहा ॥ ६६ ॥
पुव्वपुरिसऽज्जियं मे घेत्तुं दव्वं न विन्तरा देन्ति । अद्धं तुह अद्धं मह ता तल्लाभे कुणसु जत्तं ॥ ६७ ॥
तो भूइलेण काऊण मंडलं देवयाउ पूइत्ता । पारद्धं सम्मं मंतसुमरणं गुरुपयत्तेण ॥ ६८ ॥
अह जाव खणं चिट्ठइ झाणत्थो ताव मंडलगमज्झे । संकंता ते भूया °जेहिं तमहिट्ठियं दव्वं ॥ ६९ ॥
तो ते थंभेऊणं सुनिच्चलं तेण सा निहाणमही । विजयस्स समक्खं चिय खणाविउं झत्ति पारद्धा ॥ ७० ॥
खणमित्तकालविगमे विबंधविरहेण पाविया निहिणो । अद्धं घेत्तूण गओ य भूवलो नियगेहम्मि ॥ ७१ ॥
विम्हइयमणो विजओ चिन्तइ एवं ममावि निहिलाभो । भावी एत्तो ता खन्नवायमंते अहिज्जामि ॥ ७२ ॥
तो गरुयभत्तिराएण भूइलो तह पसाइओ तेण । सयमिव जहा विहन्नू स खन्नविज्जाए तेण कओ ॥ ७३ ॥
तो विजओ भूइलपायपंकयं पणमिउं कहिय वत्तं । नियनयरस्साभिमुहं तुरियं गंतुं समारद्धो ॥ ७४ ॥
अक्खेवेण य पत्तो सगिहे गंतूण तो निहाणमही । तेणाभिमंतिया साहरंतु मा वन्तरा निहिणो ॥ ७५ ॥

१ तूय° प्रतौ ॥ २ 'खेदज्ञः' कुशलः खन्यवादविद्यायाम् ॥ ३ तूइ° प्रतौ ॥ ४ वित्तरा देत्ति प्रतौ ॥ ५ सूइ° प्रतौ ॥ ६ ज्झाण° प्रतौ ॥ ७ जेहित्तम° प्रतौ ॥ ८ विसय° प्रतौ ॥ ९ खन्यवादमन्त्राणि ॥ १० 'विधज्ञः' निपुणः ॥ ११ कथयित्वा वार्ताम् ॥ १२ संहरन्तु ॥

अह तं[1]न्निहाणना[से]सवंतरो तस्स मंतमाहप्पा । निहिधरणीसम्मुहमवलोइउं बाढमं[2]चइन्तो ॥ ७६ ॥
उव्विग्गो अच्चत्थं विभंगबलमुणियकज्जपरमत्थो । तां[3]णकए एं[4]गन्ते बलभद्दनिवं समल्लियइ ॥ ७७ ॥
साहेइ य राय ! तुहं मित्तो सिरिगुत्तनामओ सो हं । जाओ म्हि वंतरो नियं[5]निहाणधरणीए चिं[6]ट्ठामि ॥ ७८ ॥
सा पुण संपइ मज्झं सुएण अभिमंतिऊण तह विहिया । निहिगहणत्थं मन्ने जह तीरइं[7] नेव दट्ठुं पि ॥ ७९ ॥
ता राय ! पुं[8]व्वपणयं जइ वहसि सं[9]रेसि किं पि उवयरियं । ता निहिगहणपयट्टं विजयं जत्तेण वारेसु ॥ ८० ॥
इय भणिऊणं भूओ तिरोहिओ राइणा वि विजयस्स । सिट्ठो इय वुत्तंतो तेणावि पयंपियं देव ! ॥ ८१ ॥
धणं[10]मुच्छाए मरिउं जणगो वंतरसुरत्तणं पत्तो । धणगहणं पि हु न मए समीहियं अप्पभरणट्ठा ॥ ८२ ॥
किंतु नरेसर ! सिरिवीयरायभवणस्स निम्मवणहेउं । मा अकयत्थो अत्थो भूं[11]मीसोत्थो मुहा होउ ॥ ८३ ॥
न य ताएण अदिन्नस्स देव ! दव्वस्स जुज्जए भोगो । सं[12]कमागया व सभुं[13]यज्जिया व भोत्तुं सिरी जुत्ता ॥ ८४ ॥
न य दुक्खलक्खसमुं[14]वज्जियस्स एयस्स तायवित्तस्स । जिणभवणाओ अन्नं पुन्नं विणिओगठाण-न्ति ॥ ८५ ॥
इय निच्छिऊण नरनाह ! नूणमारंभियं मए एयं । जइ य न जुत्तं आइसउ [मं] पहू ! जेण विरमेमि ॥ ८६ ॥

---

१ तन्निधानन्यासेशव्यन्तरः ॥ २ °मवइत्तो प्रतौ । अशक्नुवन् ॥ ३ त्राणार्थम् ॥ ४ एगत्ते, बलवद्दमिवं प्रतौ ॥ ५ °यगिहा° प्रतौ ॥ ६ चेट्ठा° प्रतौ ॥ ७ शक्यते ॥ ८ पूर्वप्रणयम् ॥ ९ स्मरसि किमपि उपकृतम् ॥ १० धणुमु° प्रतौ ॥ ११ भूमिसुस्थः ॥ १२ स्वक्रमागता वा स्वभुजार्जिता वा ॥ १३ °भुवज्जि° प्रतौ ॥ १४–समुपार्जितस्य ॥

अह अन्नया कयाई हं[1]रिचावचलत्तणेण जीयस्स । सिरिगुत्तो धणरत्तो जें[2]रेण पंचत्तमणुपत्तो ॥ ४३ ॥
विजएण वि सोगं[3]समुच्छरंतनयणंसुधोयवयणेण । मयकिच्चाइं पिउणो कयाइं 'हा'रावगरुयाइं ॥ ४४ ॥
जिणवं[4]यणायन्नणओ गुरुयणअणुसासणाउ अणुदियहं । जाओ य विगयसोगो कइवयदियएहिं स महप्पा ॥ ४५ ॥
पुव्वपवाहेणं चिय गिहकिच्चाइं विचिन्तिउं लग्गो । नवरं न किंचि पेच्छइ गेहम्मि चउव्विहे वि धणे ॥ ४६ ॥
न य संपुडाइलिहियं लब्भं भूगोवियं पि पेहेइ । न य धन्नसंचयं समुचियं पि नो कुप्प-रुप्पाइं ॥ ४७ ॥
जाओ वाउं[5]लचित्तो कहं वहेयव्वओ गिहिभरो ? त्ति । न हु दव्वविरहिएहिं काउं तीं[6]रंति कज्जाइं ॥ ४८ ॥
सुतवस्सि च्चिय सोहं[7]इ निस्संगो दव्ववज्जिओ य सया । सीयइ जणे विगिज्जं[8]इ अं[9]त्थविहीणो पुण गिहत्थो ॥ ४९ ॥
अहवा किमेरिसेणं विगप्पिएणं ? न भाविणो नासो । नाभाविणो य भावो ता चिंताए कं[10]यमियाणिं ॥ ५० ॥
इय सं[11]त्तभावणारोवणाइ थिरधरियचित्तवावारो । पयदिण पयइसमुं[12]चियकिच्चाइं स काउमारद्धो ॥ ५१ ॥
सिट्ठं[13] जणणीए अन्नया य तुह पुत्त ! संतिं[14]ओ ताओ । सां[15]हिंतो मह कहमवि परितोसगओ गिहाऽदूरे ॥ ५२ ॥

---

१ 'हरिचापं' इन्द्रधनुः ॥ २ 'जरसा' वार्धक्येन ॥ ३ शोकसमुत्सरन्नयनाश्रुधौतवदनेन मृतकृत्यानि पितुः कृतानि 'हा'रावगुरुकाणि ॥ ४ °वन्नणा° प्रतौ ॥ ५ व्याकुलचित्तः कथं वोढव्यः गृहिभारः ॥ ६ शक्यन्ते ॥ ७ शोभते ॥ ८ विगीयते ॥ ९ अज्जवि° प्रतौ ॥ १० 'कृतं' पर्याप्तम् ॥ ११ सत्त्वभावनारोपणया स्थिरधृतचित्तव्यापारः । प्रतिदिनं प्रकृतिसमुचितकृत्यानि । प्रकृतयः–प्राकृतलोकाः ॥ १२ °मुच्चिय° प्रतौ ॥ १३ 'शिष्टं' कथितम् ॥ १४ सत्कः ॥ १५ अकथयत् ॥

सूत्रधारस्य प्रतिपत्तिः

अह तत्थेव पुरीए पुव्वाए दिसाए चंपगुज्जाणे। सिरिसंतिनाहभवणं विहडियसंधि पडियसिहरं ॥ ९९ ॥
पल्हत्थपट्टसालं पहीणचिंतायगं च पेहेत्ता । विजएण चिंतियमिमं जुज्जइ मह उद्धरावेउं ॥ १०० ॥
एयं खीणप्पायं उवेक्खिउं नूणमन्नकारवणे । परमत्थेणं न जिणेसरम्मि भत्ती कया होइ ॥ १०१ ॥
कैमपत्तवत्थुविज्जावियक्खणो हत्थलाहवपहाणो । विजएण सुत्तहारो देवगुरू नाम वाहरिओ ॥ १०२ ॥
तंबोल-वत्थ-भूसणपयाणपरितोसियं च तं काउं । आबद्धकरयलंजलि विजएँण पयंपियं एयं ॥ १०३ ॥
तुममम्ह भीमभवकूवनिवैडिराणं सहत्थदाणेण । हे सुत्तधार ! सद्धम्मसचिव ! कुण दूरमुद्धरणं ॥ १०४ ॥
उद्धरिऊणं एयं जिणालयं दलियसेलसिहरसमं । पाउणसु य ससहर-हरकालियं निम्मलं किंत्ति ॥ १०५ ॥
तेणं पयंपियं विजय ! कीस बहु वाहरेसि ? तह काँहं । जहऽकालविप्पहीणं जिणभवणं सिज्झए एयं ॥ १०६ ॥
तुह अम्हाणं च इमं संसारसमुद्दतारणतरण्डं । ता इह बहुपन्नवणा न सव्वहा जुज्जए काउं ॥ १०७ ॥
तो सुपसत्थे दियहे पारद्धं तेण जिणहरे कम्मं । सैब्भावसारहियया पइट्ठिया तत्थ कम्मयरा ॥ १०८ ॥
अह पैइदिणसविसेसुच्छलंतउच्छाहवड्ढियारंभं । कयभूमिसुद्धिसुनिबद्धपीढदढरइयथरनियरं ॥ १०९ ॥

१ पर्यस्तपट्टशालं प्रहीणचिन्तकम् । पट्टशाला–जिनचैत्यसमीपवर्त्ति जैनश्रमणनिवासस्थानम् ॥ २ क्रमप्राप्तवास्तुविद्याविचक्षणः हस्तलाघवप्रधानः ॥ ३ °एणं प° प्रतौ ॥ ४–निपतनशीलानाम् ॥ ५ करिष्यामि ॥ ६ सद्भावसारहृदयाः ॥ ७ प्रतिदिनसविशेषोच्छलदुत्साहवर्धितारम्भम् । कृतभूमीशुद्धिसुनिबद्धपीठदृढरचितस्तरनिकरम् ॥

॥ ७१ ॥

ध्वजारोपणविधिः

सुनिविट्ठदेवयापीढमुवरिरायंतभूरितैरसिहरं । सुविसालाऽऽमलसारयसिरि विरइयहेममयकलसं ॥ ११० ॥
वित्थिन्नैथोरथिरैत्थंभदारमंडवनिरुद्धदिसिपसरं । मणिसालभंजियाभासमाणमाणोववन्नतियं ॥ १११ ॥
चिररयणाओ सविसेससुंदरं मंदरं व उत्तुंगं । निप्फाइयमक्खेवेण मणहरं संतिजिणभवणं ॥ ११२ ॥
अह सुपसत्थे लग्गे सुगुरुवएसेण बुज्झिउं सम्मं । विजएण समारद्धं मैहद्धयारोयणविहाणं ॥ ११३ ॥
आघोसिया अमारी दीणा-ऽणाहाण दावियं दाणं । पगुणीकओ य वंसो धयजोग्गो सरल-सुसिणिद्धो ॥ ११४ ॥
वट्टैन्तचारुपव्वो अपुच्चडो कीडएहिं अक्खद्धो । अदड्ढो वन्नड्ढो अणुड्ढसुको पमाणजुओ ॥ ११५ ॥
काऊण मूलपडिमान्हाणं चाउद्दिसिं च भूसुद्धिं । दिसिदेवयआहवणं वंसस्स विलेवणं तह य ॥ ११६ ॥
अहिवासियकुसुमारोवणं च अहिवासणं च वंसस्स । मयणफल-रिद्धि-विद्धी-सिद्धत्थारोवणं चेव ॥ ११७ ॥
धूवुक्खेवं मुद्दानासं चउसुंदरीहि उम्मिणणं । अहिवासणं च सम्मं महद्धयस्सिदुधवलस्स ॥ ११८ ॥
चाउद्दिसिं जवारय-फलोहलीढोयणं च वंसपुरो । आरत्तियावयारणमह विहिणा देववंदणयं ॥ ११९ ॥

१ सुनिविष्टदेवतापीठम् उपरिराजद्भूरितरशिखरम् । सुविशालामलसारकशिरसि विरचितहेममयकलशम् ॥ २ °रिउर° प्रतौ ॥ ३ विस्तीर्णस्थूलस्थिरस्तम्भद्वारमण्डपनिरुद्धदिक्प्रसरम् । मणिशालभञ्जिकाभासमानमानोपपन्नत्रिकम् ॥ ४ °थिरिथंभदारिमं° प्रतौ ॥ ५ निष्पादितम् ॥ ६ महाध्वजारोपणविधानम् ॥ ७ वर्त्तमानचारुपर्वा 'अपुच्चडः' दृढः घन इत्यर्थः कीटैरभक्षितः । अदग्धः वर्णाढ्यः अनूर्ध्वशुष्कः ॥

बलि-सत्त[1]धन्न-फल-वास-कुसुम-सकसायवत्थुनिवहेणं । अहिवासणं च तत्तो सिहरे तिपय[2]क्खिणीकरणं ॥ १२० ॥
कुसुमंजलिपाडणपुरस्सरं च न्हवणं च मूलकलसस्स । खित्त[3]दसद्धामलरयणधयहरे इट्ठसमयम्मि ॥ १२१ ॥
सु[4]पइट्ठपइट्ठामंतखेत्तवासस्स तयणु वंसस्स । ठवणं खिवणं च तओ फलोहली-भूरिभक्खाणं ॥ १२२ ॥
तत्तो उज्जुगईए धयस्स परिमोयणं सजयसद्दं । पडिमाए दाहिणकरे महद्धयस्सावि बंधणयं ॥ १२३ ॥
विसमदिणे ओमुयणं जहसत्तीए य संघदाणं च । इय स[5]त्थुत्तविहीए तेण धयारोवणं विहियं ॥ १२४ ॥
तिहुयणसिरिलाभाओ वि भवण[6]दुस्सज्झसिद्धिओ वि परं । जाओ तोसो विजयस्स विहियजिणभवणकिच्चस्स ॥१२५॥

एवं च जा पहिट्ठो [7]चिट्ठइ सो चेइयं पलोइन्तो । जिणवरभवणस्स पुरो ता पेक्खइ [8]मुक्कजीयासं ॥ १२६ ॥
निच्छिन्न[9]कन्न खरपट्ठिसंट्ठियं मसिविलित्तसव्वंगं । रत्तकणवीरसेहर गलखित्तसरावमालं च ॥ १२७ ॥
पुरओ ताडियउद्दंडडिंडिमुम्मिलियपिच्छगजणोहं । रायपुरिसेहिं चोरं नि[10]ज्जंतं वज्झभूमीए ॥ १२८ ॥
तं पेच्छिऊण विजओ चिंतइ जिणसंतिदिट्ठिवडिओ वि । जइ एस इ[ह] विव[11]ज्जइ धिरत्थु ता जीविएणं मे ॥ १२९ ॥

१ धान्यसप्तकं सणबीज-लाज-कुलत्थ-यव-कङ्गु-माष-सर्षपरूपं सण-कुलत्थ-मसूर-वल्ल-चणक-व्रीहि-चपलकरूपं धान्य-मुद्ग-माष-चणक-यव-गोधूम-तिलरूपं वा ज्ञेयम् ॥ २ °**यक्खणी**° प्रतौ ॥ ३ क्षिप्तदशार्धामलरत्नध्वजगृहे । दशार्ध—पञ्च ॥ ४ सुप्रकृष्टप्रतिष्ठामन्त्रक्षिप्तवासस्य ॥ ५ **सच्छुत्त**° प्रतौ ॥ ६ °**दुसज्झ**° प्रतौ ॥ ७ **चेट्ठ**° प्रतौ ॥ ८ मुक्तजीविताशम् ॥ ९ निच्छिन्नकर्णं खरपृष्ठिसंस्थितं मषीविलिप्तसर्वाङ्गम् । रक्तकणवीरशेखरं गलक्षिप्तशरावमालं च ॥ पुरतः ताडितोद्दण्डडिण्डिमोन्मीलितप्रेक्षकजनौघम् ॥ १० नीयमानम् ॥ ११ 'विपद्यते' मरणं प्राप्नोति धिगस्तु ॥

धम्मत्थविग्घकरणं [1]पावं ति विभाविउं भणइ राया । धन्नो सि विजय ! जो चेइयत्थमिय उज्जमं कुणसि ॥ ८७ ॥
अम्हारिसा उ पावा दुग्गइजणगम्मि रज्जकज्जम्मि । अच्चंत[2]वावडा भोयणं पि काउं न पारिंति ॥ ८८ ॥
ता विजय ! वंछियत्थो सिज्झउ तुह होउ नूण निव्विग्घं । इय रन्नाऽणुन्नाओ सु[3]पहिट्ठो पट्ठिओ स गिहं ॥ ८९ ॥

राया वि स[4]ज्झकिच्चं काऊणं जा ठिओ सुहं सयणे । ता सो वंतरतियसो सविसायं भणिउमाढत्तो ॥ ९० ॥
एयं खु महापावं जं पत्थिज्जइ परो महाराय ! । एत्तो वि य तं अहियं जं कीरइ तं पुणो विहलं ॥ ९१ ॥
अह स[5]विलक्खो राया तं जंपइ भद्द ! मा भणसु एवं । कह जाणियजिणवयणो करेमि से[6] धम्मविग्घमहं ? ॥ ९२ ॥
किं वा विहलाए तुह धणमुच्छाए ? विमुंच वामोहं । मूसगववहाराओ न परं सज्झं धणेणं ते ॥ ९३ ॥
अह तं विणा विसीयसि ता गेण्हसु मज्झ संतिए निहिणो । सत्तामेत्तकएणं धणेण जइ तं[7] वहसि पणयं ॥ ९४ ॥
हसिऊण भणइ भूओ तुह निहिणो पिच्छिउं पि न लभामि । तुह वंतरपासाओ किं वा तुमए सुयं न इमं ॥ ९५ ॥
यादृशि तादृशि भूमिभुजि पञ्च पिशाचशतानि । महति तु यानि भवन्ति बत ! [न च] तानि परिकलितानि ॥ ९६ ॥
रन्ना भणियं एत्तो वि किं परं तीरए मए काउं ? । न हु नज्जइ स उवाओ जो लोगदुगे वि अविरुद्धो ॥ ९७ ॥
इय सोउं सविसाओ वंतरदेवो लहुं अवक्कंतो । विजएण वि मंतबलेण उक्खया ज्झत्ति निय[8]निहिणो ॥ ९८ ॥

१ **पावं ति** प्रतौ ॥ २ अत्यन्तव्यापृताः ॥ ३ सुप्रहृष्टः ॥ ४ सान्ध्यकृत्यम् ॥ ५ सविलक्षः ॥ ६ तस्य ॥ ७ त्वम् ॥ ८ °**यगिहि**° प्रतौ ॥

पडिवन्नमिमं रन्ना नीओ विजएण सो घरे नियए । न्हाण-विलेवण-वरव[1]त्थ-भोयणाईहिं उवयरिओ ॥ १४३ ॥
प[2]त्थावम्मि य पुट्ठो भद्द ! कहं तुज्झ एरिसा मुत्ती । नीसेसलक्खणजुया ? विरुद्धकिरिया य कहमेसा ? ॥ १४४ ॥
ता जइ दूरं नो गोवणोचियं सव्वहा कहसु एयं । आमूलाओ वि तुमं अच्चंतं कोउगं मज्झ ॥ १४५ ॥
तेणं पयंपियं किं तवावि नियजीवनिव्विसेसस्स । विज्जइह गोवणिज्जं ? ता उज्जुत्तो निसामेहि ॥ १४६ ॥
कोसंबीए पुरीए पुरोहिओ अत्थि चंडदत्तो त्ति । तस्साहं चिय पुत्तो सयंभुदत्तो त्ति नामेणं ॥ १४७ ॥
बहुविहअणत्थस[3]त्थाहिवोवमं जुव्वणं च संपत्तो । अच्चंतभोगलोलत्तणेण नीयं धणं निहणं ॥ १४८ ॥
नीसारिओ गिहाओ पिउणा देसंतरेसु य भमंतो । पत्तो कामरुयम्मि दिट्ठो य तहिं बलो नाम ॥ १४९ ॥
[4]आगिट्ठि-दिट्ठिमोहण-वसियरणुच्चाडणाइसु पगिट्ठो । जो जोगस[5]त्थकुसलो सीसत्तं से पवन्नो हं ॥ १५० ॥
भ[6]मिओ य भीमरक्खस-पिसाय-साइणिसहस्सदुग्गेसु । गिरि-गहण-सुसाणा-ऽऽसम-विवराईसुं समं तेण ॥ १५१ ॥
सो अन्नया महप्पा पुव्वज्जियकम्मदोसओ बाढं । जाओ रोगाउलिओ सुचिरं च मए वि उवयरिओ ॥ १५२ ॥
जाओ पगुणसरीरो परितुट्ठो मज्झ विणयकम्मेण । भणिओ य सायरमहं वच्छ ! पयच्छामि भण किं ते ? ॥ १५३ ॥
तो भोगलोलुएणं सयमोयं जंपियं मए एयं । अदिस्संजणसिद्धिं, जइ एवं ता पयच्छाहि ॥ १५४ ॥

१ °वच्छभो° प्रतौ ॥ २ पच्छाव° प्रतौ ॥ ३–सार्थाधिपोपमम् ॥ ४ आकृष्टि-दृष्टिमोहन-वशीकरणोच्चाटनादिषु प्रकृष्टः ॥ ५ °सत्तकु° प्रतौ ॥ ६ भ्रान्तश्च भीमराक्षसपिशाचशाकिनीसहस्रदुर्गेषु । गिरिगहनस्मशानाऽऽश्रमविवरादिषु समं तेन ॥

तो तेणंजणसिद्धी सिट्ठा सुजहट्ठिया मए य लहुं । संजोइऊण विन्नासिया य जाया तह च्चेव ॥ १५५ ॥
नवरं तेण इमं मे सिट्ठं मा वच्छ ! कस्स वि कहिस्सं । इहरा सिद्धी तुज्झं विवज्जिही पिसुणमेत्ति व्व ॥ १५६ ॥
अह कइवयदिवसाइं तप्पयपउमप्पसायणं काउं । एगागी वणहत्थि व्व सव्वहिं भमिउमारद्धो ॥ १५७ ॥
तं नत्थि विसिट्ठकुलं पणतरुणीमंदिरं पि तं नत्थि । अंतेउरं पि तं नत्थि जत्थ वुत्थो न भमिओ हं ॥ १५८ ॥
तो जा एत्तियकालं संपइ पुण पावपरियणजणेण । विन्नाओ उवणीओ य एरिसिं दारुणमवत्थं ॥ १५९ ॥
नवरं केणइ सच्चरियकम्मुणा विजियअमयवुट्ठीए । तुह दिट्ठीए प[1]डिओ म्हि गोयरं जीविओ तेण ॥ १६० ॥ छ ॥
विजएण जंपियं भद्द ! के वयं ? मुणसि नेह परमत्थं । अन्नो स तिलोकपहू जद्दिट्ठिगओ धरसि जीयं ॥ १६१ ॥
तेणं भणियं जइ एयमेत्थ ता तं अण[2]प्पमाहप्पं । दंसेसु ममं तद्दंसणेण जा होमि कयकिच्चो ॥ १६२ ॥
अह हसियहिमगिरीसरसिंगारे चेइयम्मि नेऊण । विजएण दंसियं तस्स संतिजयसामिणो रूवं ॥ १६३ ॥
तो अणिमिसदिट्ठीए जिणं च भवणं च पेच्छमाणस्स । जायं जाईसरणं ईहा-ऽपोहं करेंतस्स ॥ १६४ ॥
मुच्छानिमीलियच्छो छिन्नो वच्छो व्व महियले पडिओ । हा हा ! किमेयमेयं ? [ति] झत्ति विजएण उक्खित्तो ॥ १६५ ॥
सिसिरोवयार-संवाहणाहिं उवलद्धचेयणो स[3]न्तो । आपुट्ठो य किमेवं ? ति तेण वुत्तं निसामेहिं ॥ १६६ ॥
एत्तो तइयभवम्मि एत्थेव पुरीए रामदत्तस्स । इब्भसुओ रामो त्ति [य] नाम[4]महं आसि जिणभत्तो ॥ १६७ ॥

१ पयडि° प्रतौ ॥ २ °णत्थमा° प्रतौ । अनल्पमाहात्म्यम् ॥ ३ सत्तो प्रतौ ॥ ४ °मह आ° प्रतौ । नाम अहं आसं जिनभक्तः ॥

स्वयम्भू-
दत्तस्य
पूर्वभवः

सिरिचारुदत्तमुणिवरपासम्मिं संजमं पवज्जंतो । पडिसिद्धो पिउणा वच्छ ! तरुणगो तं सि ता इण्हिं ॥ १६८ ॥
काराविउं जिणहरं साहुजणे पूइउं सुए जणिउं । सम्माणिऊण साहम्मिए य समणो हविज्जासि ॥ १६९ ॥
पडिवन्नमिमं च मए जिन्नुद्धारो य एत्थ संतिहरे । पारद्धो महया सुत्तधार-कम्मयरजोगेण ॥ १७० ॥
जाए य अद्धसिद्धे जिणालए निट्ठियं ममं दव्वं । कह सिज्झिहि ? त्ति चिंतामहन्नवे[3] हं निमग्गो य ॥ १७१ ॥
न छुहा नेव पिवासा न सुहं न दुहं निसा न नेव दिणं । उन्हं न नेव सीयं तच्चिंताए मए नायं ॥ १७२ ॥

एगम्मि य पत्थावम्मि वंदिउं चारुदत्तमुणिवसहं । भूवट्ठम्मि निविट्ठो पुट्ठो गुरुणा य एवमहं ॥ १७३ ॥
अवि वहइ धम्मकिच्चं निच्चं निप्पच्चवायमच्चंतं ? । अवि वट्टइ य सरीरं सज्झाय-ज्झाणचेट्ठासु ? ॥ १७४ ॥
अह रमइ उवसमम्मिं इंदियवग्गो दढं समग्गो वि ? । अवि तरलायइ न सुभे अत्थम्मि मणो मणागं पि ? ॥ १७५ ॥
वुत्तं च मए भयवं ! किं भणसि जिणालएँ वहइ कम्मं ? । नणु नो कुणंति कम्मं कम्मयरा दव्वविरहेण ॥ १७६ ॥

एत्थंतरम्मि हसियं तदसंबद्धं निसामिउं वक्कं । चक्कधरधाउसिद्धेण साहुपासोवविट्ठेण ॥ १७७ ॥
उवउत्तो मुणिसीहो विन्नायं कारणं तओ भणियं । चक्कधर ! हससु मा तुममिमं ति एसो अहसणिज्जो ॥ १७८ ॥
संतिजिणभवणनिम्मवणमीहमाणो धणस्स विरहेण । तदसिद्धीए निन्निट्ठमाणसो एवमुल्लवइ ॥ १७९ ॥

१ सुतान् ॥ २ श्रमणः ॥ ३ °वेहिं नि° प्रतौ ॥ ४ निष्प्रत्यपायम् ॥ ५ °ए विह° प्रतौ ॥ ६ निन्निट्ठ° प्रतौ । निर्नष्टमानसः ॥

तो तं रक्खावेउं खणमेक्कं राइणो समीवम्मि । विजओ गंतुं आबद्धकरयलो जंपए एवं ॥ १३० ॥
देव ! कयभुवण[संति]स्स संतिणो वि हु पुरो वहट्ठाए । निज्जइ चोरो अच्चंतमणुचियं वट्टए एयं ॥ १३१ ॥
ता कुणह मे पसायं मोयावह तं वरागमइकरुणं । घेत्तूण दव्वजायं अहवा मह जीवियव्वं पि ॥ १३२ ॥

इय तेण जंपिए नरवरेण वियसंतकुवलयविलासा । दिट्ठी फुरंततारा ज्झड त्ति खेत्ता अमच्चम्मि ॥ १३३ ॥
भालयलारोवियपाणिणा य भणि[1]यं तओ अमच्चेण । सो एस देव ! पावो जो तुह अंतेउरस्संतो ॥ १३४ ॥
अद्दिस्सअंजणेणं सइ[2]रं वियरन्तओ तुहाऽऽणाए । जोगंधरसिद्धेणं पडिजोगबलेण विन्नाओ ॥ १३५ ॥
उवणीओ तुम्हाणं सिट्ठं तुम्हेहिं अंजणपओगं । जइ साहइ ता निव्विसयकरणओ णं विसज्जेहिं ॥ १३६ ॥
इहरा खरम्मि आरोविऊण सयले भमाडिउं नयरे । बहुहा विडंबिऊण य मारेज्जह दुक्खमारेणं ॥ १३७ ॥
ता देव ! तुम्ह वयणेण सो तहा दंडै[3]वासियनरेहिं । पारद्धो संपइ पुण तुम्हाऽऽएसो पमाणं ति ॥ १३८ ॥

रन्ना पयंपियं विजय ! सो नरो सव्वहा वहस्सुचिओ । बाढं विरुद्धकारि त्ति केवलं गरुयकरुणाए ॥ १३९ ॥
अंजणविहिकहणपणेण मुं[4]चिओ तं पि जा न मन्नेइ । ता हंतुं चिय उचिओ अह अज्ज वि तं कहावेसि ॥ १४० ॥
ता मुच्चइ त्ति नऽन्नो मोक्खोवाओऽत्थि निच्छओ एत्थ । अम्हारिसाण वि गिरो चलंति जइ ता गयं सच्चं ॥ १४१ ॥

विजएण जंपियं देव ! जइ इमं देसु ता तिरत्तं मे । जेणुवलद्धतदिच्छो जहोचियं विन्नवेमि तुमं ॥ १४२ ॥

१ °णियन्तओ प्रतौ ॥ २ सइरं चिय रत्तओ प्रतौ । स्वैरं विचरन् ॥ ३ दाण्डपाशिकनरैः ॥ ४ मुज्झिओ प्रतौ । मुक्तः ॥

अह भूरि[1]भत्तिपब्भारनिस्सरंतुच्चबहलरोमंचा । रायप्पमुहा गंतुं मुणिसीहं तं नमंसंति ॥ १९२ ॥
खामिंति य दुविहियं मुणी वि पीऊस[2]वुट्ठिपडितुल्लं । तेसु खिवंतो चक्खुं धम्मकहं कहिउमारद्धो ॥ १९३ ॥ जहा—
अप्पा[3] अणप्पकुवियप्पकप्पणुप्पन्नपावपरिणामो । हरि-करि-भुयंग-विस-सत्तुणो वि दूरं विसेसेइ ॥ १९४ ॥
हरि-करिपमुहा विमुहा वि कह वि कीरंति मंतमाईहिं । अप्पा पुण पावपरो तीरइ न पुरंदरेणावि ॥ १९५ ॥
अहवा सीहप्पमुहा दिंति विणासं भवे इह सुकुद्धा । अप्पा पुण पडिणीओ पाडेइ अणंतदुहगहणे ॥ १९६ ॥
परमत्थचिंतणाए अप्प च्चिय कूड[4]सामली घोरा । अप्प च्चिय वेयरणी[5] अप्प च्चिय भेरवं जंतं ॥ १९७ ॥
अप्प च्चिय तत्तकलंबु[6]वालुया असिवणं पि अप्पेव । अप्प च्चिय पलय[7]वियंभमाणवज्जग्गिजालोली ॥ १९८ ॥
इय कुप्पहप्पवन्नस्स अप्पणो सव्वदुक्खमूलस्स । पर्डिं[8]पंथी परमत्थेण नत्थि मोत्तुं वरविवेगं ॥ १९९ ॥
सो य विवेगो जलणो व्व अरणिणा वीयरायवयणेण । कीरइ सद्धानिलसंजुओ य निद्दहइ कम्मवणं ॥ २०० ॥
तत्तो स एव अप्पा दाहुत्तिन्नं[9] महासुवन्नं व । कस्स न कस्स व जायइ सुहस्स संपायण[10]पगिट्ठो ? ॥ २०१ ॥
नज्जइ जह तह न फुडं नरिंद ! सिरिवीयरायवयणं पि । ता तन्नाणनिमित्तं जुत्ता निच्चं सुगुरुसेवा ॥ २०२ ॥

१ भूरिभक्तिप्राग्भारनिस्सरदुच्चबहलरोमाञ्चाः ॥ २ पीयूषवृष्टिप्रतितुल्यम् ॥ ३ आत्मा अनल्पकुविकल्पकल्पनोत्पन्नपापपरिणामः । हरिकरिभुजङ्गविषशत्रूनपि दूरं विशेषयति ॥ ४ कूटशाल्मलिः ॥ ५ 'वैतरणी' नरकनदी ॥ ६ कलम्बवालुका-नरकनदी ॥ ७ प्रलयविजृम्भमाणवज्राग्निज्वालावलिः ॥ ८ °**डियंथी** प्रतौ ॥ ९ °**हुतिन्नं** प्रतौ ॥ १० **संपयाण**° प्रतौ । सम्पादनप्रकृष्टः ॥

परिहारो य पमायस्स इंदियत्थे परं च वेरग्गं । दुन्निग्गहकुग्गहवज्जणं च सत्थत्थसवणं च ॥ २०३ ॥
एमाइधम्मकहसवणजायसद्धम्मकम्मपडिबंधा । नियनियसत्त[1]णुरूवं पवन्नकिरिया जणा जाया ॥ २०४ ॥
राया वि देसविरई पडिवज्जइ ते दसग्गहारा य । सासणलिहिए जिणसंतिपूयणत्थं पणामेइ[2] ॥ २०५ ॥
काऊण जिणाययणं[3] सुत्थं[4] नियए तहा कुडुंबम्मि । विजओ वि विभूईए पडिवन्नो संजमुज्जोयं ॥ २०६ ॥
इय कयजणोवयारो सयंभुदत्तो महामुणी तत्तो[5] । आपुच्छिउं नरिंदं बहिं विहारेण निक्खंतो ॥ २०७ ॥
पडिबोहिऊण भव्वे चिरकालं कालमायरित्ताणं । सम्मेयसेलसिहरे सिवमयलमणुत्तरं पत्तो ॥ २०८ ॥
विजओ वि पढियबहुसत्थवित्थरो मुणियवत्थुपरमत्थो । कयभूरिसिस्सवग्गो पडिबोहियभव्वलोगो य ॥२०९॥
अनिययविहारवित्तीए विहरमाणो पुरा-ऽऽगराईसु । चक्क[6]पुरीए पत्तो ठिओ य एगम्मि उज्जाणे ॥ २१० ॥
काऊण सुत्तपोरिसिमह चेइयवंदणट्ठया तत्तो । सिस्सगणेण समेओ सिरिसंतिजिणालयम्मि गओ ॥ २११ ॥
[7]तिनिसीहियप्पहाणं तिक्खुत्तपयाहिणं च तिपणामं । तिपमज्जियपयभूमिं अवत्थतियचिंतणासारं ॥ २१२ ॥
तिदिसिनिरिक्खणविरयं तिमुद्दजुत्तं च तिविहपणिहाणं । वन्नाइतियविभावणपरमं चिइवंदणं च कयं ॥ २१३ ॥

मुनियोग्यानि नव त्रिकाणि

१ शक्त्यनुरूपं सत्त्वानुरूपं वा ॥ २ अर्पयति ॥ ३ °**यणे, सु**° प्रतौ ॥ ४ 'सुत्थं' सुरक्षितं निजे ॥ ५ **सत्तो** प्रतौ ॥ ६ °**कसुरी**° प्रतौ ॥ ७ त्रिनैषेधिकीप्रधानं त्रिप्रदक्षिणं च त्रिप्रणामम् । त्रिःप्रमार्जितपदभूमिं अवस्थात्रिकचिन्तनासारम् ॥ त्रिदिग्निरीक्षणविरतं त्रिमुद्रायुक्तं च त्रिविधप्रणिधानम् । वर्णादित्रिकविभावनपरमं चैत्यवन्दनं च कृतम् ॥

तो समुचियम्मि देसे आसीणो पत्थुया य धम्मकहा । मालइगंधं[1]क्खित्त व्व महुयरा आगया परिसा ॥२१४॥
अह दिट्ठिवायसारे विचित्तजुत्तीवियारगरुयम्मि । साहिज्जंते भट्टो पभाकरो भणिउमाढत्तो ॥ २१५ ॥
भंते ! किमिमं जंपसि ? पुं[2]रिसपणीयत्तणेण अपमाणं । सव्वन्नुणा पणीयं ति सो वि कह तीरं[3]ए नाउं ? ॥२१६॥
न हु पच्चक्खाईणं गे[4]ज्झो सो न य सरागवयणं पि । होइ पमाणं वं[5]भिचारसंभवा धुत्तवयणं व ॥ २१७ ॥
ता[6] वेयवयणमेव हि अपोरिसेयं ति जुज्जए घेत्तुं । तक्कहियाणि य जायाइयाणि धम्मो त्ति किच्चाणि ॥ २१८ ॥
विजएण जंपियं सव्वमणुचियं भाससे तुमं भद्द ! । जम्हा विरुद्धमेयं वयणं च अपोरिसेयं[7] च ॥ २१९ ॥
जइ सच्चं चिय एयं अपोरिसेयं ति कीस निच्चं पि । न[8] सुणिज्जइ ? जं संखा समवेक्खइ पुरिसवावारं ? ॥ २२० ॥
जं जदवेक्खं तं पुण तब्भवमवसेयमेय धूमो व्व । [9]सिहिसावेक्खो न य नहगुणो य गयणोवलंभाओ ॥ २२१ ॥
जं जं खे उवं[10]लब्भइ तं तं जइ तग्गुणो त्ति वत्तव्वं । कुंभाइणो वि एवं च तग्गुं[11]णा हुंतु निच्चा य ॥ २२२ ॥
ता किं पि जमिह वयणं तं पुरिसपणीयमेव घेत्तव्वं । सव्वन्नुं[12]णा पणीयं नवरं दिट्ठिट्ठफं[13]लयं तं ॥ २२३ ॥

१ ˚**धक्खित्त**˚ प्रतौ । मालतीगन्धाक्षिप्ताः ॥ २ पुरुषप्रणीतत्वेन ॥ ३ शक्यते ॥ ४ ग्राह्यः ॥ ५ व्यभिचारसम्भवात् ॥ ६ तद् वेदवचनमेव हि अपौरुषेयमिति युज्यते ग्रहीतुम् । तत्कथितानि च यागादीनि धर्मः ॥ ७ ˚**सेणं च** प्रतौ ॥ ८ **न मुणि**˚ प्रतौ । न श्रूयते ? यत् साक्षात् समपेक्षते पुरुषव्यापारम् ? ॥ ९ 'शिखिसापेक्षः' अग्निसापेक्षः, न च नभोगुणश्च गगने उपलम्भात् ॥ १० ˚**वलंभ**˚ प्रतौ ॥ ११ ˚**ग्गुणो हुं**˚ प्रतौ । तद्गुणाः ॥ १२ ˚**न्नुणो प**˚ प्रतौ ॥ १३ दृष्टेष्टफलदम् ॥

तो चक्कधरो मं खामिऊण जिणभवणनिम्मवणहेउं । कोडीवेहं सूयं सविहाणं सिद्धमज्जेइ ॥ १८० ॥
[1]रसवेहविहियबहुजायरूवदाणेण रंजियमणेहिं । विन्नाणिएहिं तो संतिचेइयं झत्ति निम्मवियं ॥ १८१ ॥
वाहरिओ नरनाहो रिद्धीएं[3] धयाधिरोहणं च कयं । दिन्ना दसग्गहारा ससासणा चेइए रन्ना ॥ १८२ ॥
चिट्ठंति सासणाणि य अज्ज वि जिणभवणनिम्मवणहेउं । सासणसुराए हेट्ठा खित्ताणि तिहत्थं[4]थमित्तेण ॥ १८३ ॥
इय दंसणकिच्चाइं काऊणमहं महापबंधेण । पडिवन्नो सामन्नं सुचिरं च कयं तवच्चरणं ॥ १८४ ॥
नवरं पज्जंतं[5]म्मि कुड्डुंतरवं[6]ड्ढमाणमिहुणगिरं । सोउं सरागचित्तो मरिउं भूएसु उववन्नो ॥ १८५ ॥
तत्तो चुओ य जाओ एसो पुत्तो पुरोहियस्साहं । अवसाणरागभावणपरूढदढगाढविसममई ॥ १८६ ॥
हा हा ! अहं अंधन्नो नूणमकल्लाणभायणं पावो । जो तहसामग्गीय वि बहीकओ चरणलाभाओ ॥ १८७ ॥
कह तेत्तियं पि पढियं तवो वि तवियं तहा मए घोरं । एक्कपए च्चिय विहलं गयमखिलं कासकुसुमं व ? ॥ १८८ ॥
इय सुहभावाओ सो चिरपढियसुयं सरित्तु किरियं च । दे[8]वइविइन्नलिंगो जाओ समणो समियमोहो ॥ १८९ ॥ छ ॥
सिट्ठं च इमं रन्नो विम्हियहियओ इमं तओ राया । जंपइ विचित्तचरिया पुरिसा को पच्चओ एत्थ ? ॥ १९० ॥
तो सासणवुत्तंतो वुत्तो रन्ना खणाविउं च लहुं । तं ठाणं पत्ताइं च सासणाइं जहुत्ताइं ॥ १९१ ॥

१ 'सूतं' पारदम् ॥ २ रसवेधविहितबहुजातरूपदानेन ॥ ३ ˚**प वया**˚ प्रतौ ॥ ४ ˚**हच्छमि**˚ प्रतौ ॥ ५ ˚**तम्मि कु**˚ प्रतौ ॥ ६ ˚**वड्ढमा**˚ प्रतौ ॥ ७ **अवन्नो** प्रतौ ॥ ८ देवतावितीर्णलिङ्गः ॥

सक्को व सोभमाणो चिरपडिबंधेण ताव संपत्तो । देवं मुणिं च वंदिय उवविट्ठो भूमिवट्ठम्मि ॥ २३५ ॥
[1]अणिमिसनयणनिवेसा चित्तालिहिय व लेवघडिय व । दट्ठूण तं च परिसा तदेग[2]चित्ता लहुं जाया ॥ २३६ ॥
साहू वि [3]सुत्तविणिउत्तचित्तविन्नायतियसथिरचित्तो । पुव्वभवगरुयगुरुपक्खवायओ भणिउमाढत्तो ॥ २३७ ॥
सो एस महप्पा जेण मंदिरं संतिणो जिणिंदस्स । उद्धरिउमिमं अप्पा भवा वि [4]भवाउ उद्धरिया ॥ २३८ ॥
कहमन्नह चेइयविरहओ [5]इहं साहुणो फुडं एज्जा ? । अम्हारिसाण य कहं तदभावे होज्ज पडिबोहो ? ॥ २३९ ॥
तदभावाओ जिणसासणस्स कह वा मयंकधवलस्स । जियमोहतिमिरपसरो हविज्ज सव्वत्थ वित्थारो ? ॥२४०॥ किं बहुना ?—

जिनचैत्यविधापनगुणाः

धन्यस्त्वं विजय ! त्वमेव विजयी संसारवारांनिधेस्तीर्णो [6]गोष्पदवत् त्वयैव विशदा कीर्तिश्च संवर्द्धिता ।
जातस्त्वं च निदर्शनं सुकृ[7]तिनां निष्कृत्रिमोन्मीयते, भक्तिस्तीर्थकरे तवैव यदिदं चैत्यं त्वया कारितम् ॥ १ ॥
कृत्वा पापमनेकधाऽधिकरणान्युत्पाद्य चानन्तशो, जीवा मृत्युपथं गता न च गुणस्तैः कश्चिदावर्जितः ।
धन्यस्त्वं विजयैक एव हि परं स्वार्थं परार्थं च योऽकार्षीः श्रीजिनवेश्म विस्मयकरं [8]निर्माप्य शैलोपमम् ॥ २ ॥
मिथ्यात्वप्रचुरो जनः सुयतयो विच्छेदिनोऽतीन्द्रियं, ज्ञानं विप्लुतमेतदेव हि जडा ब्रूयुर्न जैनं मतम् ।

१ अनिमेषनयननिवेशा चित्रालिखिता इव लेपघटिता इव । दृष्ट्वा ॥ २ °गचित्ता प्रतौ ॥ ३ सूत्रविनियुक्तचित्तविज्ञातत्रिदशस्थिरचित्तः । पूर्वभवगुरुकगुरुपक्षपातात् ॥ ४ 'भवात्' संसारात् ॥ ५ इयं सा° प्रतौ ॥ ६ गौःपदवस्त्वयै° प्रतौ ॥ ७ °तिवान्निःकृ° प्रतौ ॥ ८ निर्माप्य सैलो° प्रतौ ॥

न स्यु[1]श्चेज्जिनमन्दिराणि सुचिरस्थायीनि तुङ्गा[2]नि वा, तद्वन्यो जिनशासनोन्नतिकृतेऽमुष्मिन् भवेदुद्यतः ॥ ३ ॥
इति कथयति साधौ विस्मयोत्फुल्लनेत्रैरहमहमिकयैवाऽऽलोक्यमानः स लोकैः ।
प्रणतयतिपदाब्जः शिश्रिये स्वर्गमार्गं, पुरमभिहतमोहः पूर्जनोऽपि प्रतस्थे ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे चैत्याधिकारे विजयकथानकं समाप्तम् ॥ ११ ॥

जिनबिम्बविधापनं तद्विधिश्च

जिणहरकार[व]णे वि हु नो जिणबिंबं विणा [3]हवइ सम्मं । धम्ममई भव्वाणं वो[4]च्छं ता तव्विहाणमहं ॥ १ ॥
सुपसत्थवासरम्मि पूइत्ता सुत्तहारमप्पेज्जा । नियविभवोचिय मुल्लं निद्दोसो जइ स होज्ज परं ॥ २ ॥
अतहाविहे य तम्मि त[5]क्कालुचियं विणिच्छिउं सम्मं । नियमेज्ज बिंबमोल्लं जहतह द[6]व्वप्पणे दोसो ॥ ३ ॥
बिंबअसिद्धी जिणदव्वभक्खणाओ अणंतसंसारो । [7]कारस्सियरस्स य तन्निमित्तभावेण दोसो त्ति ॥ ४ ॥
[8]अप्पत्तियं पि एवं परिचत्तं होइ उभयपक्खाणं । जाजीवं संबंधो जायइ एत्तो य अइपरमो ॥ ५ ॥
न य एत्तो उवयारी अन्नो भुवणे वि विज्जए परमो । इय कुसलबुद्धि[9]जोगा बहुमाणो तम्मि जुत्तो य ॥ ६ ॥
जायंति जेत्तिया खलु तदुब्भवा केइ चित्तपरितोसा । तब्बिंबकार[10]णाइं पि तेत्तिओ नेत्तियाइं से (?) ॥ ७ ॥

१ 'श्चेष्टिनम° प्रतौ ॥ २ °नि तावद्ध° प्रतौ ॥ ३ हवेइ प्रतौ ॥ ४ वक्ष्ये ॥ ५ °क्कालोचि° प्रतौ ॥ ६ °व्पणो दो° प्रतौ ॥ ७ कारकस्य 'इतरस्य' कारयितुः ॥ ८ अप्रीतिकम् ॥ ९ °जोगो, ब° प्रतौ ॥ १० णाइं इं पि प्रतौ ॥

निप्फन्नस्स य बिंबस्स दिवसदसगस्स मज्झयारम्मि । कायवा उ पइट्ठा सा पुण तिविहा विणिद्दिट्ठा ॥ ८ ॥
वत्तंक्खा खलु एक्का खेत्तंक्खा अक्खिया पुणो अन्ना । अवरा य मंहक्खा इह ताण सरूवं इमं नेयं ॥ ९ ॥
जो तित्थवई जइया तइया तब्बिंबठावणा पढमा । उसभाईणं सवेसि जाण बीया पइट्ठ त्ति ॥ १० ॥
तइया सत्तरिसमहियजिणिंदसयगस्स पुण पइट्ठ त्ति । जा जस्स जहा भावं जणेइ सा तस्स तह जुत्ता ॥ ११ ॥
आसायणदोसो वि हु बिंबबहुत्ते न मज्जणाइकओ । संकेयवो जं तीए संभवो भावदोसाओ ॥ १२ ॥
आवस्सयाइचुन्निसु वुत्तो पि हु बिंबठावणाइ विही । चरियाउकित्तणाओ नं सेसपडिसेहगो सो वि ॥ १३ ॥
इय जहसत्तीए गुरुं लहुं व सेलुब्भवं मणिमयं वा । जिणबिंबं कारिंतो पउमो व गिही सिवं लहइ ॥ १४ ॥ तथाहि—

अत्थि पसत्थातित्थमाहप्पपडिहयडिंब-डमरा, मराल-कविंजल-सुय-सारियाऽभिरामाऽऽराममणहरा, हरऽट्टहाससेयकित्ति-पुरिससोहिया, लच्छिवच्छत्थलि व्व अणंतोवभोगसुंदरा, सरासणलट्ठि व्व भूरिभव्वपव्वाणुगया, सयलमहिवलयसुपसिद्धा, जहत्थाभिहाणा सुहंकरा नाम नयरी । तत्थ य नियमहिमविजियपागसासणो, सासणायन्नणमेत्तसंभंतनमंतवइरिविसरो, सरोय-

१ व्यक्त्याख्या ॥ २ क्षेत्राख्या ॥ ३ महाख्या ॥ ४ °बट्ठाव° प्रतौ ॥ ५ सप्ततिसमधिकजिनेन्द्रशतकस्य ॥ ६ बिम्बस्थापनायाः विधिः । चरितायुत्कीर्त्तनात् ॥ ७ न सोस° प्रतौ ॥ ८ प्रशस्तातिथ्यमाहात्म्यप्रतिहतभयविप्लवा ॥ ९ °च्छच्छलि प्रतौ ॥ १० लक्ष्मीवक्षस्थली अनन्तस्य—कृष्णस्योपभोगेन सुन्दरा, नगरी पुनः अनन्तैः—अपरिमितैः उपभोगैः सुन्दरा ॥ ११ शरासनयष्टिः भूरिभिः भव्यैश्च पर्वभिः—ग्रन्थिभिरनुगता, नगरी तु पर्वभिः—उत्सवैः ॥ १२ °पव्वाणु° प्रतौ ॥ १३ इन्द्रः ॥ १४ °सणय° प्रतौ । शासनाकर्णनमात्रसम्भ्रान्तनमद्वैरिविसरः ॥

चंदुवरागाइअइंदियत्थसत्थोवएसणाओ य । अणुमाणेण स नज्जइ तदग्गहणं ता महामोहो ॥ २२४ ॥
वेयापमाणउ च्चिय न जागमाईणि धम्मकिच्चाणि । हुंति सिवकारणाइं बहुजीवविणासगत्तेण ॥ २२५ ॥ किंच—
हिंसेज्जा न य भूए छ च्छागसए हणेज्ज मज्झन्हे । एवं विरुद्धवक्को ही ! वेओ तह वि हु पमाणं ॥ २२६ ॥
एमाइसमयजुत्तीनिवेयणुप्पन्नसम्मपरिणामो । उज्झियमिच्छाभावो पभाकरो गिण्हए दिक्खं ॥ २२७ ॥
अह पढियसयलसत्थो उस्सग्ग-ऽववायविहिविहन्नू य । स महप्पा चिरकालं विहरइ वसुहं समं गुरुणा ॥ २२८ ॥
संलेहणं च काउं विजयमुणी मुणियमरणपत्थावो । काऊण भत्तचायं तिकूडगिरिथंडिले सुद्धे ॥ २२९ ॥
मरिऊणं उववन्नो सोहम्मे हेमनिम्मलसरीरो । तियसो दुसागराऊ, चंदाभम्मि विमाणम्मि ॥ २३० ॥
सो पुण पभाकरमुणी अप्पडिबद्धं धराए विहरंतो । चक्कपुरीए कालक्कमेण नयरीए संपत्तो ॥ २३१ ॥
उचियपएसे वुत्थो पत्थावम्मि य तवस्सिजणसहिओ । पुव्वोवइट्ठजिणसंतिचेइयम्मि गओ तत्तो ॥ २३२ ॥
देवमभिवंदिऊणं आसीणो समुचियम्मि देसम्मि । पारद्धा धम्मकहा समागओ नयरिलोगो वि ॥ २३३ ॥
अह जाव संजलजलहरमणहरसद्देण कहइ सो धम्मं । सोहम्माओ विजओ उज्जोइंतो दिसाचक्कं ॥ २३४ ॥

१ चन्द्रोपरागाद्यतीन्द्रियार्थसार्थोपदेशनात् च । अनुमानेन स ज्ञायते ॥ २ वेदाप्रमाणत एव न यागादीनि धर्मकृत्यानि । भवन्ति शिवकारणानि बहुजीवविनाशकत्वेन ॥ ३ भूतानि षट् छागशतानि ॥ ४ °ज्झन्ने प्रतौ ॥ ५–वाक्यः ॥ ६ एवमादिसमययुक्तिनिवेदनोत्पन्नसम्यक्त्वपरिणामः । उज्झितमिथ्याभावः ॥ ७ उत्सर्गाऽपवादविधिविधज्ञः ॥ ८ स्थण्डिलं–निर्जीवभूमिः ॥ ९ °ढं वसुंधरा° प्रतौ ॥ १० °ऊण आ° प्रतौ ॥ ११ सजलजलधरमनोहरशब्देन ॥

निग्गहियमणपसरा भयवंतो धम्मसिंहाभिहाणा सूरिणो, निवेइया नरिंदस्स, वाहराविया य गउरवेण । कइवयसिस्सपरि-वुडा य आगया सूरिणो रा[1]उलं, निसन्ना समुचियासणे । परमभत्तीए वंदिया रायमहिला[ए] । सिट्ठो य तीए पासंडिय-परूवितो धम्मवियारो । परिभाविओ सूरीहिं, भणिया य देवी—

महाणुभावे ! मुद्धजणजणियचित्तक्खेवो एस धम्मवियारो न जुत्तिभारं सोढुं पारइ । तहाहि—जइ छागवहेण धम्मो ता सुकयकम्माणो छड्डिया । अह मंतपाहन्नेण नत्थि दोसो ता कीस निग्गहिज्जंति साइणीओ ? । जो य कारुन्नेण धम्मपरूवणा-पँवंचो[2] सो वि वयणमेत्तं पत्तनिवडियमंसभक्खणाओ बुद्धसिस्साणं ति । 'दिक्खामित्ताओ वि धम्मसिद्धि' त्ति एयं पि अजुत्तं, जहुत्तकिरिया-नाणविरहेण केवलस्स तस्स फलासाहणाउ त्ति । ता सव्वे वि एएँ[3] धम्मवियारा मुद्धबुद्धीण जोग्गा । कुसलाणं पुण रयणत्तयगहणमेव जुत्तं ।

रायमहिलाए भणियं—किंतु किमेयं रयणत्तयं ? । सूरिणा जंपियं—निसामेहिं—

धम्मो करुणारम्भो असेससत्ताण रक्खणासारो । इंदिय-कसायनिग्गहपडिँबद्धो[4] बाढमविरुद्धो ॥ १ ॥
देवो अट्ठारसदोसवज्जिओ विमलकेवलालोओ । बुद्धो तिजयपसिद्धो अच्चंतनिरंजणो य जिणो ॥ २ ॥
कारावगो य कत्ता धम्मस्स विरागवं च संविग्गो । निग्गहियऽक्खो कयसव्वसत्तरक्खो य धम्मगुरू ॥ ३ ॥
रयणत्तयमेयं कित्तँयंति[5] निद्धुणियरुंददारिद्दं । पुन्नरहियाण एयं च नेव सुँमिणे[6] वि संपडइ ॥ ४ ॥

१ राजकुलम् ॥ २-प्रपञ्चः ॥ ३ °ए व ध° प्रतौ ॥ ४ °डिबुद्धो प्रतौ ॥ ५ कीर्तयन्ति निर्धूनितप्रचुरदारिद्र्यम् ॥ ६ स्वप्नेऽपि सम्पद्यते ॥

नियसुद्धबुद्धिकसवट्टयम्मि हेमं व ता परिक्खित्ता । एयं गिण्हसु भद्दे ! महल्लकल्लाणकोसकरं ॥ ५ ॥

एवं सूरीहिं वुत्ते देवी निउणबुद्धिपरिभावियजहावट्ठियवत्थुसरूवा, विणिच्छियदेव-धम्म-गुरुतत्ता, पीऊसवरिससित्तं पिवँ[1] अप्पाणं मन्नंती जिणधम्मपरिग्गहेण, पडिपुन्नदोहला, मिच्छत्तपरिहारेण जहोचियं वट्टिउं पवत्ता । सूरिणो गया जहागयं ।

अन्नया य पडिपुन्नदोह[ला] सुपसत्थकरण-नक्खत्त-जोगे पसूया देवी दारयं । पँचधावीपरिलालिज्जमाणो[2], पउमो त्ति विहियनामधेज्जो, कमेण पवड्ढंतो, कलाकलावं च गुरुजणातो अहिज्जंतो, जोव्वणमणुपत्तो । अवरवासरे य सो पउमकुमारो 'जोग्गो' त्ति कलिऊण पइट्ठिओ जुवरायपए पिउणा । पारद्धो य तेणं जहावसरं वेरिनरिंदेहिं समं समरवावारो । विणाससं-किएण य वँवरोविओ[3] रन्ना एसो जुवरायपयातो । जाओ य से अवमाणो, परिभाँवियं[4] पवत्तो य—

ठाणब्भट्ठा सिहिँण[5] व निव्वुइं दिंतु कह णु सप्पुरिसा ?। वीसामहत्थाममहवा (?) मुत्ताण वि कह पवज्जंतु ? ॥ १ ॥ तथा—
पुरिसोत्तिमो त्ति गिज्जइ कह सो जो पंचयन्नभावे वि । नो भद्दसद्दसम्मद्दगब्भिणं भुवणमवि कुणइ ? ॥ २ ॥ किंच—
परमाहप्पुप्पन्नो [पैण्णो] वि न वन्नणं जणो लहइ । अन्नत्थ अविन्नाओ ता हं तोलेमिँ[7] अप्पाणं ॥ ३ ॥

इति निच्छिऊण कयवेसपरिवत्तो निग्गओ गिहाओ रायपुत्तो, विविहदेसंतरेसु भमंतो य पत्तो एगत्थ आसमपए । दिट्ठो य तत्थ भीमो नाम तावसो। वुँच्छो[8] कइवयवासराइं तेण समं। गाढसिणेहेण य पडिवन्नो 'पुत्तो' त्ति कुमारो अणेण ।

१ इवार्थे ॥ २ क्षीरधात्री मज्जनधात्री मण्डनधात्री क्रीडाधात्री अङ्कधात्री चेति पञ्चधात्र्यः ॥ ३ 'व्यपरोपितः' दूरीकृतः ॥ ४ परिभावयितुम् ॥ ५ कदली इव ॥ ६ प्राज्ञः ॥ ७ तोलमि प्रतौ ॥ ८ वुत्तो क° प्रतौ । उषितः ॥

अवरवासरे य पायवडणपुरस्सरं कुमारो गमणत्थं तावस[1]मणुन्नविउं पवत्तो । विरहकायरत्तणेण य [2]बाहप्पवाहपवालियाणणेण भणिओ सो णेण—वच्छ ! [3]बाढमणुचियमेय मुणीण पेमकरणं, केवलं अप्पहू वट्टामि अप्पाणं पि पडिखलिउं, न य सिणेहे किं पि उ[4]वयरियं तुम्हारिसे तीरइ मारिसेणं, तहावि इमं विस्समुहाभिहाणजक्खमंतं पुव्वपुरिसागयं वच्छ ! गिण्हसु त्ति, एसो हि जेण तुह देसंतरेसु वच्चमाणस्स सहाई हवइ आवयापडिखलणं च करेइ त्ति। पडिवन्नं कुमारेण । [5]सुहमुहुत्ते पुव्वसेवाइविहिसाहणपुव्वयं दिन्नो तावसेणं । पारद्धो य कुमारो तमाराहिउं सुसाणे कसिणचउद्दसीए ।

अह जाव जा[6]वमुद्दापुरस्सरं मंतसाहणं कुमरो । निग्गहियमणप्पसरो पारद्धो काउमच्चंतं ॥ १ ॥
ताव कयघोररूवो दंसणमेत्ते वि दिन्नभूरिभओ । मच्चु व्व भासमाणो माणाइक्कंतगुरुदेहो ॥ २ ॥
एगो झत्ति पिसाओ पत्तो कुमरंतियं दढं कुविओ । पारद्धमसंबद्धं किमेवमेयं ? ति जंपंतो ॥ ३ ॥
कुमरेण जंपियं किं निरत्थयं भो ! परिस्समं कुणसि ? । एसो न स होइ जणो जो तीरइ भेसिउं तुमए ॥ ४ ॥
नियं[7]जणगरज्जपमुहं परि[8]च्चियंतो वि जो न भीओ हं । सो दुक्खविइन्नउरो तुमं तणायावि न गणेमि ॥ ५ ॥
अह [9]दिसिपसरियदीहरकविलाविलभूरिकेसपब्भारं । तणुभारभरियगयणं भयविक्खेवाउलियलोयं ॥ ६ ॥

---

१ अनुज्ञापयितुम् ॥ २ बाष्पप्रवाहप्लावितानेनेन ॥ ३ बाढमनुचितमेव ॥ ४ उपकर्तुं युष्मादृशे शक्यते मादृशेन ॥ ५ सुहुमु° प्रतौ ॥ ६ जापमुद्रा–॥ ७ निजजनकराज्यप्रमुखम् ॥ ८ °रिचयं° प्रतौ ॥ ९ दिक्प्रसृतदीर्घकपिलाविलभूरिकेशप्राग्भारम् । तनुभारभृतगगनं भयविक्षेपाकुलितलोकम् ॥ क्षय-कालाशुभानिलविलुलद्गुरुगिरिसदृशम् ॥

रदेसो व्व ब[1]हुपत्तकमलालंकिओ, महातरु व्व स[2]उणनिवहसेवणिज्जो, स[3]यलदिसामुहवित्थरियकित्तिकुमुइणीमालियभुयणसरपरिसरो सूरप्पभो नाम राया । सयलंतेउरपहाणा रायलच्छि व्व पच्चक्खा लीलावई नाम से भारिया । तीए य समं समयणाणुरूवं विसयसुहमणुसेवमाणस्स तस्स वच्चंति वासरा ।

अन्नया लीलावई देवी निसि सुहसेज्जाए पसुत्ता अमंदमयरंदबिंदुसंदोहमत्तमहुयरारावमणहरं पउमं सुमिणे वयणम्मि पविसमाणमवलोइऊण पडिबुद्धा । रायवयणेण सबुद्धिविभवेण य पहाणपुत्तजम्मं विणिच्छिऊण सुहेण अच्छिउं पवत्ता । कइवयमासावसाणे य सुगब्भाणुभावतो धम्ममीमंसाविसओ डोहलो समुप्पन्नो । विन्नातो नरवइणा, वाहराविया पासंडिणो, पारद्धा तेहिं धम्मवियारा । तहाहि—

यागच्छागवधेन वैदिकजनैः कारुण्यतः सौगतैः, दीक्षातः शिववर्त्मवर्तियतिभिः स्नानादिभिः स्नातकैः ।
तत्त्वज्ञानत एव कापिलमतैरावेदितोऽनेकधा, स्वस्वग्रन्थयथायथानुसरणाद् धर्मस्तदेवंविधः ॥ १ ॥

तह वि अरंजियत्तणेण न तीसे [5]थेवं पि पडिपुन्नो दोहलो । तदसंपत्तीए य बाढं किसीभूया देवी । उव्विग्गो राया । निरूविया य पहाणपुरिसेहिं तदपरे पासंडिणो । सुनि[6]उणं पलोयंतेहिं य दिट्ठा नंदणवणविजणपएसमल्लीणा सज्झाय-ज्झाण-

---

१ सरोमध्यभागः बहुपत्रैः कमलैः अलङ्कृतः, राजा तु बहुभिः पात्रैः–सत्पुरुषैः कमलया च–लक्ष्म्याऽलङ्कृतः ॥ २ महातरुः शकुनानां–पक्षिणां निवहेन–वृन्देन सेवनीयः, राजा पुनः सगुणपुरुषगणेन सेवनीयः ॥ ३ सकलदिङ्मुखविस्तृतकीर्तिकुमुदिनीमालितभुवनसरःपरिसरः ॥ ४ °तः सोग° प्रतौ ॥ ५ स्तोकम् ॥ ६ °निऊणं प्रतौ ॥

रुद्दक्खमाल-कुंडिय-सावित्तिगं[1]वत्ति-हंसपरियरिओ । चउवयण[2]चवियवेओ, स एस बंभो त्ति जयकत्ता ॥ १ ॥

राजा—रुद्राक्षमालापरावर्तनादज्ञानी, कुण्डिका-वेदगुं[3]णनाभ्यां यतिमात्रः, स्त्र्यादिपरिग्रहाद् रागी, जगत्कर्तेति च प्रत्यक्षविरोधं[4]ः स्त्री-पुंसयोगेनोत्पत्तिदर्शनादिति मृषा पूज्यस्वरूपमाभाति । एत्थंतरे वागरियं केसवभत्तेहिं—महाराय !

उव्वूढमहीवीढो[5] मुर-कंसप्पमुहदणुयदलदलणो । जलहिजलविहियनिद्दो लच्छिप्पिओ एस सो कण्हो ॥ १ ॥

राजा—धृतभूपीठ इति वं[6]र्णनामात्रं स्वस्वभावावस्थितत्वात् क्षितेः, कं[7]सादिवधाच्च विजिगीषुराजन्यरूपः, समुं[8]द्रनिद्राकरणाच्च तरणविद्याविशिष्टः, लक्ष्मीप्रिय इति च कामुकः, तदेतदपि न पारमार्थिकदेवतारूपमवभासते । एत्थंतरे भणियं का[9]रुणियविणेयगणेण—महाराय !

कारुन्नपुन्नहियओ नियतित्थनिं[10]कारमसहमाणो जो । परमपयाओ वि भवं उवेइ सो एस बुद्धो त्ति ॥ १ ॥

राजा—'कथं कारुणिकः ? अथ च पात्रगतमांसभोजनमप्यनुजानीते ? तीर्थपराभवे भूयो भवमुपैति अथ च परमपदस्थः' इति बाढं परस्परव्याहतमेतदपि दे[11]वतत्त्वम् । एत्थंतरे भणियं अरहंतभत्तलोएण—महाराय !

जियकोहाइचउक्को हयमयणो सत्तु-मित्तसमचित्तो । अकलत्तो अममत्तो देवो सो एस अरहंतो ॥ १ ॥

१ °गविन्ति° प्रतौ । सावित्रीपत्नी—॥ २ °णठवि° प्रतौ । चतुर्वेदनकथितवेदः ॥ ३ °गुणिना° प्रतौ ॥ ४ °रोधे स्त्री° प्रतौ ॥ ५ °ढो सुर° प्रतौ ॥ ६ वर्नना° प्रतौ ॥ ७ संकादिवध्वाच्च प्रतौ ॥ ८ °मुद्रानि° प्रतौ ॥ ९ कारुणिकाः—बौद्धाः ॥ १० निकारः—तीर्थपराभवः ॥ ११ °वदत्व° प्रतौ ॥

राजा—सत्यमेतत्[1], कथमन्यथा प्रशान्ता दृष्टिः ? सौम्यं वपुः ? प्रहरणपरिहारः ? न [स]स्त्रीकता ? छत्रत्रयादिपूजाप्रतिपत्तिश्च परदेवविलक्षणाऽस्य, युज्यते तदेष एव परमात्मा सतां सेव्यः संसारोत्तारहेतुरिति निश्चिनोमि, केवलं यद्यन्यतोऽपि मध्यस्थादेतन्निश्चयः स्यात् तदाऽन्यदेवतात्यागेनात्रै[2]व तावत् स्थैर्यं करोमीति ।

अहं[3] नरवइतव्विहवयणसवणसंजायमच्छरुच्छेया । कयसमवाया सव्वे वि तित्थिया भणिउमाढत्ता ॥ १ ॥
राय ! किमेवमजुत्तं जंपह ? संलहेह[4] किं व अरहंतं ? । एसो खु तईबज्झो[5] न पूजितो पुव्वजेहिं[6] पि ॥ २ ॥
न य कुलमग्गपवन्नो देवो य गुरू य उज्झिउं जुत्तो । उद्दिट्ठे अणुरागो न य सप्पुरिसाण उचिओ य ॥ ३ ॥
उप्पह[7]पवन्नचित्तं न तुमं च उवेहिमो वयं कह वि । पुव्वठियं[8] उज्झंते नियजीयं पि हु परिच्चइमो ॥ ४ ॥
रन्ना[9] पयंपियं दूरचत्तमज्जायमेरिसं[10] वोत्तुं । तुब्भाण भो ! न जुज्जइ जाणियबहु[11]समय-सत्थाण ॥ ५ ॥
जह [तह] देवो धम्मो गुरू[12] य कणगं च रयणमाई वि। अपरिक्खिऊ[ण कु]सला गिण्हंता हुंति हसणिज्जा ॥ ६ ॥
पुव्वपुरिसक्कमो वि हु कज्जे जुत्तिक्खमेऽणुसरणिज्जो[13] । अन्नहरूवे वि य तम्मि अभिरई नणु महामोहो ॥ ७ ॥

१ °मेव त° प्रतौ ॥ २ °नात्रेव तात्पर्यं क° प्रतौ ॥ ३ अथ नरपतितद्विधवचनश्रवणसञ्जातमत्सरोत्सेकाः । कृतसमवायाः ॥ ४ श्लाघध्वे ॥ ५ 'त्रयीबाह्यः' वेदत्रयीबहिष्कृतः यद्वा ब्रह्मा विष्णुः महेशश्चेति देवत्रयीबाह्यः ॥ ६ पूर्वजैः ॥ ७ उत्पथप्रपन्नचित्तं न त्वां च उपेक्षामहे ॥ ८ °व्वट्ठियं प्रतौ । पूर्वस्थितिं उज्झति [त्वयि] निजजीवितमपि परित्यजामः ॥ ९ राज्ञा पजल्पितं दूरत्यक्तमर्यादं ईदृशं वक्तुम् । युष्माकं भो ! न युज्यते ज्ञातबहुसमयशास्त्राणाम् ॥ १० °यनेमेरि° प्रतौ ॥ ११ °यपहु° प्रतौ ॥ १२ गुरु य प्रतौ ॥ १३ °णिज्जे प्रतौ ॥

जइ संभवंतबहुदव्वलाभमुवलहइ कोइ वरभंडं । ता किं तं गिण्हंतो गुरूहिं सो वारिउं जुत्तो ? ॥ ८ ॥
पासंडिएहिं वुत्तं नाणी[1] देवो व इय खमो[2] वोत्तुं । सविगप्पकप्पियाइं विस्सं[3]मुहाइं ति न पमाणं ॥ ९ ॥

रन्ना भणियं—सच्चमेयं । तओ वाहरिया नियपुरिसा भणिया—अरे ! सव्वत्थ नयरे पं[4]डहयपडिहणणपुरस्सरमिमं घोसेह, जहा—जइ को वि कत्थइ नाणवंतं सिद्धदेवयाविसेसं वा पुरिसं जाणइ ता सो तं राइणो सिग्घं निवेय[5]उ, महंतं पओयणं ति । 'तह' त्ति उग्घोसियं रायपुरिसेहिं । सुया य एसा आघोसणा पउमरायपुत्तेण । परमकोऊहलाउलिएण य पुच्छिया कुमारेण—किं भो ! पओयणं ? ति । तेहिं भणियं—भो महाभाग ! अम्ह नरिंदो देव-धम्माइविणि[6]च्छयं काउकामो पुरिसविसेसं मग्गइ जं[7]वयणाओ तव्विणिच्छओ हवइ, तदुवलंभनिमित्तं च एस उव[8]क्कमो त्ति[9] । तओ कोऊहलेण रायपुत्तो गओ तं पएसं । पच्चभिन्नाओ य एगेण मागहपुत्तेणं । पढिउमारद्धो सो तग्गुणगणं । जाणिओ रन्ना, उववेसिओ समीवासणे, पुच्छिओ कुसलोदंतं ।

पं[10]त्थावे य भणियं कुमारेण—महाराय ! किमेस सव्वतित्थियमीलगो ? त्ति । तओ रन्ना सिट्ठो सव्वो पुव्वुद्दिट्ठधम्मवियारवुत्तंतो, दंसियाओ य पसुवइपमुहदेवयापडिमाओ । भिन्न[भिन्न]मवलोइयाओ निउणदिट्ठीए रायपुत्तेणं । पुच्छिओ य रन्ना—कुमार ! कहसु को देवो अभिरुइओ ? । कुमारेण वुत्तं—किमिह वुच्चइ ? । राइणा वुत्तं—तहावि संखेवेण जहाभिरुइयं

१ ज्ञानी देवो वा इति क्षमो वक्तुम् ॥ २ °मो वेत्तं प्रतौ ॥ ३ °स्सहमु° प्रतौ । विश्वग्मुखानि ॥ ४ पडिह° प्रतौ । पटहक-प्रतिहनन–पटहकवादन–॥ ५ °यओ मंहं° प्रतौ ॥ ६ °णिच्छियं प्रतौ ॥ ७ यद्वचनात् तद्विनिश्चयः ॥ ८ आरम्भ इत्यर्थः ॥ ९ °त्ति गओ को° प्रतौ ॥ १० पच्छावे प्रतौ ॥

खयकालकलंकलियानिलविलुलिज्जंतगरुयगिरिसरिसं । अच्चंतं नच्चंतं दट्ठूणं ईसि कयहासो ॥ ७ ॥
कुमरो पयंपइ कहं अज्ज वि विरमइ न रायलच्छिलवो ? । पे[1]च्छणयच्छणमेवं कहमन्नह संभवेज्ज[2] इहं ? ॥ ८ ॥
इय सपरिहासपेसलमं[3]क्खुद्धमणो भणेइ जा कुमरो । ता पयडियनियरूवो सविलक्खो वागरइ जक्खो ॥ ९ ॥
होउं[4] बहुकीलिएणं आएसं देसु तुज्झ भिच्चो हं । आजम्मं निरु[5]वमसत्तवित्तसमुवज्जितो दूरं ॥ १० ॥

'एवं' ति पडिवज्जिऊण तव्वयणं रायपुत्तो उ[व]संहरियमंतोवयारो तावसाणुन्नातो पयट्टो उत्तराभिमुहं । सयासन्निहिय-जक्खपूरिज्जंतमणवंछियभोयणाइवावारो अणवरयपयाणगेहिं वच्चंतो संप[6]त्तो तिजयलच्छीनिवासमंदिरं सीहपुरनयरं । तत्थ य पयइसव्वधम्माणुरत्तो पयइसुसीलो पयइकरुणायरो पयइपरोवयाररओ वइरसिंघो नाम राया । सो य तद्दिवसं सव्वधम्माणुरागित्तणेण हर-पियाम[7]ह-महुमह[8]-जिण-बुद्धपडिमाउ तुंगसिंगमंदिरेसु पइट्ठाविऊण सयलतित्थेहिं समं भिन्नभिन्नं देवयासरूवं परिभाविउं पवत्तो । तत्थ य सिवसिस्सेहिं जंपियं—महारायं !

देवतत्त्व-विचारः

देहद्धधरियदइओ निदड्ढमयणो विमुक्कसंगो य । सूल-धणु[9]वावडकरो सो एस तिलोयणो[10] देवो ॥ १ ॥

राजा—'देहार्धन्यस्तभार्यः अथ च दग्धस्मरः, त्यक्तसङ्गः अथ च शूलादिशस्त्रधारी' इति परस्परविरुद्धमाराध्यलक्षणमाभाति । एत्थंतरे जंपियं पियामहसिस्सेहिं—

१ प्रेक्षणकक्षणमेवम् ॥ २ °ज्ज अहं प्रतौ ॥ ३ °मक्खुद्ध° प्रतौ ॥ ४ उ पहु° प्रतौ । भवतु बहुक्रीडितेन ॥ ५ निरुपमसत्त्ववित्तसमुपार्जितः ॥ ६ °पयत्तो प्रतौ ॥ ७ पितामहः–ब्रह्मा ॥ ८ °महं जि° प्रतौ । मधुमथः–कृष्णः ॥ ९ °धणवा° प्रतौ ॥ १० महादेवः शिव इत्यर्थः ॥

बालो वि मुणइ एयं न राग-दोसेहिं परिगया देवा । अह ते वि पूयणिज्जा अपूयणिज्जो न ता कोइ ॥ ४ ॥
अ[1]त्थाहजलपवाहे अप्पाणं जो न तारिउं त[2]रइ । सो वि हु तारेइ परं ति जुत्ति-दिट्ठेहिं य विरुद्धं ॥ ५ ॥
ता राग-दोसरहियं अरहंतं स[3]रेह मुयह कुग्गाहं । स[4]व्वंगिवग्गसुहयं मुंचह संसारिए देवे ॥ ६ ॥
संसारुत्तरणमणा जइ ता एयं विणि[5]च्छयं कुणह । इय संसिऊण जक्खो सहसा अद्दंसणं पत्तो ॥ ७ ॥

पहिट्ठो पुहइपालो सह कुमारेण अकुग्गाहिलोगेण य । विलक्खीभूया गया सं ट्ठाणं कुतित्थियाइणो । राया वि सकुमारो सुचिरं जिणं पूइऊण थुणिऊण य गओ नियघरं । कुमारेण समं कयं भोयणं । 'देवयाविसेसविणि[6]च्छयकरणेण परमोवयारि' त्ति परं हरिसपगरिसमुव्वहंतेण य रन्ना दिन्ना कुमारस्स **सुरसुंदरी** नाम नियधूया । विसिट्ठलग्गे य परिणीया अणेणं । वत्तो वीवाहो महया वित्थरेणं । ठविओ य रन्ना एसो महामंडलेसरपयम्मि, सभवणे व सुहेण अच्छिउं पव[7]त्तो य ।

अन्नया य एगंते **पउमकुमारेण** सह चिट्ठमाणस्स राइणो सहस च्चिय गयणंगणे तं पएसमुवसप्पमाणो दिव्वनाणनयणो **खेमंकरो** नाम चारणसमणो कइवयविज्जाहरकुमाराणुगम्ममाणो चक्खुगोयरमुवगओ । तं च अच्छरियभूयरूयं मुणिवरमवलोइऊण विम्हियमाणसो ज्झड त्ति आसणा उट्ठिऊण राया निडालतडारोवियपाणिपउमकोसो विन्नविउं पवत्तो—भयवं! पसीयह, नियपायदरिसणेणाणुगिण्हह, करेह सफलं अम्ह जीवियं–ति जंपिरे नराहिवे कारुन्नपुन्नहियओ पणयपत्थणाभंगभी-

१ अस्ताघ–॥ २ शक्नोति ॥ ३ स्मरत ॥ ४ सर्वाङ्गिवर्गसुखदम् ॥ ५ °णिच्छियं प्रतौ ॥ ६ °णिच्छिय° प्रतौ ॥ ७ °वन्नो प्रतौ ॥

रुत्तणओ ओयरिओ रायभवणे साहू, दिन्नसमुचियासणो निसन्नो य। एत्थंतरे रायकुमारेण समं राया निडा[1]लतडताडियधरणिमंडलो पंचंग[2]पणिवायपुरस्सरं सव्वायरेण पणमिऊण चरणजुयलं चारणसमणं भणिउमा[3]ढत्तो—

अज्ज कयत्था सु[4]त्था य अज्ज अज्जेव पत्तपज्जंता । संसारमहोयहिणो जं जायं दंसणं तुम्ह ॥ १ ॥
रज्जं रिद्धीसुंदेरमुत्तमं मंतसिद्धिविन्नाणं । मन्ने लब्भइ दुलहं पि न उण तुम्हाण पयसेवा ॥ २ ॥
वा[5]मोहतमंतरिए भयंत ! अम्हे कुतित्थिय[6]घत्थे । सम्मग्गम्मि निजुंजसु काउं कारुन्नमच्चंतं ॥ ३ ॥
अह साहू तज्जोग्गयमुवलब्भ जिणं जिणिंदधम्मं च । साहइ सवित्थरत्थं महत्थदिट्ठंत-जुत्तिजुयं ॥ ४ ॥
ओहिन्नाणबलेण य मुणिउं पुव्वुत्तधम्मवुत्तंतं । भणइ य मुणी नरेसर ! किं वन्निज्जइ तुह मईए ? ॥ ५ ॥
जो य तहावि[7]हसमयत्थसवण-मुणिसेवणाइविरहे वि । निच्छियदेवसरूवो विक्खिवसि तुमं कुतित्थिजणं ॥ ६ ॥
तुमए वि देवयाबलविदलियनीसेसलोयमोहेण । रायसुय ! पउम ! विहियं तं जं जय[8]विम्हयं जणइ ॥ ७ ॥
एत्तो च्चिय [गब्भ]गए तुमए द[9]रिसणवियारपडिबद्धं । तत्तविणि[10]च्छयसारं दोहलयमकासि तुह जणणी ॥ ८ ॥
ता सिवलच्छीए पेच्छियाण पुरिसाण निच्छियं घडइ । मिच्छत्तच्छन्ने वि हु लोए एवंविहा बुद्धी ॥ ९ ॥

१ ललाटतटताडित–॥ २ जानुद्विकं करद्विकं उत्तमाङ्गं चेत्यङ्गपञ्चकम् ॥ ३ आरब्धः ॥ ४ स्वस्थाः ॥ ५ व्यामोहतमोऽन्तरितान् ॥ ६ °यघेत्थे प्रतौ । कुतीर्थिकग्रस्तान ॥ ७ °विहिस° प्रतौ ॥ ८ जगद्विस्मयम् ॥ ९ दर्शनविचारप्रतिबद्धम् । तत्त्वविनिश्चयसारम् दोहदमकार्षीत् ॥ १० °णिच्छिय° प्रतौ ॥

एत्तो अरिहंतं चिय देवं सुतवस्सिणो य गुरुणो त्ति । जिणपन्नत्तं तत्तं च भावसारं पवज्जेह ॥ १० ॥
वज्जह धम्मविरुद्धेहिं [1]संगं मुयह विसयवामोहं । [2]अप्पुव्वापुव्वगुणज्जणम्मि अज्जुज्जमं कुणह ॥ ११ ॥
इय एवमाइपन्नवणवयणनिवहेण निच्चला धम्मे । ते काउमणुन्नाओ [3]मुंणी गओ वंछियं ठ्ठाणं ॥ १२ ॥

नरवइ-कुमारा य पुव्वविणिच्छियधम्मा वि सविसेसं साहुवयणेण मुणियपरमत्था धम्मकज्जाइं चिंतिउं पवत्ता ।

अन्नया य पिउणो संतिया कुमाराणयणत्थं समागया पहाणपुरिसा । पडिहारनिवेइया गया कुमारसमीवं । 'पिउपहाण' त्ति दूराओ अब्भुट्ठिया कुमारेण, अवगूहणाइपडिवत्तिपुव्वयं च उववेसिया समीवासणेसु, पुट्ठा पिउणो कुसलवत्तं देससुत्थयं च । सिट्ठं च तेहिं जहोचियं । एत्थंतरे पत्ता भोयणवेला, उट्ठिओ कुमारो तेहिं समं, कया देवयाइपूया, निवत्तियं भोयणं । अह पत्थावमुव[4]लब्भ तेहिं पिउपुरिसेहिं विन्नत्तो कुमारो—महाभाग ! महाराएण [5]अणिवत्तगरोगजज्जरियसरीरेण परलोगहियमियाणिं काउकामेण रज्जमहाभरं च तुमए आरोविउमिच्छुणा अम्हे तुम्हाणयणत्थं विसज्जिया, 'न य मए अदिट्ठम्मि बीयभोयणं कायव्वं' ति देवस्स आणा, ता अलं सेसकिच्चेहिं, सज्जीहोह गमणत्थं ति ।

एयं च सोच्चा कुमारो [6]आउरपिउसोगपूरपूरिज्जमाणमाणसो खणं किंकायव्ववाउलत्तणमणुभविऊण सयमेवाणुसरियधीरभावो कह कह वि नरिंदं मोयाविऊण पणइणीसमेओ अणवरयपयाणगेहिं गच्छंतो पत्तो सुहंकराभिहाणाए नियनयरीए ।

१ सगं प्रतौ ॥ २ अपुव्वा° प्रतौ ॥ ३ मुणिं प्रतौ ॥ ४ °लब्भं ते° प्रतौ ॥ ५ अनिवर्त्तकरोगजर्जरितशरीरेण ॥ ६ आतुरपितृशोकपूरपूर्यमाणमानसः क्षणं किंकर्तव्यव्याकुलत्वमनुभूय ॥

साहेसु । कुमारेण कहियं—नि[1]सामेसु—

नानाशस्त्रजुषः कथं गतरुषः ? स्त्रीसन्निधानात् कथं नीरागाः ? पशुनाशियागकथनात् कारुण्यवन्तः कथम् ? ।
छत्राद्यष्टमहाविभूतिविरहाद् देवाधिदेवाः कथं ?, तस्मात् सर्वगुणर्द्धिमान् विजयतामर्हन्निहैकः प्रभुः ॥ १ ॥

राइणा भणियं—एवमेयं, अम्हं पि एस पडिहासो, परं जइ देवयाइमुहाओ एयनिच्छओ होइ ता तित्थियलोगो वि बुज्झेज्जा । तओ कुमारेण राइणो कन्नमूलि ठ्ठाऊण सिट्ठो चिरसाहिओ जक्खवुत्तंतो । राइणा वुत्तं—कुमार ! सव्वहा ममाणुग्गहं कुणमाणो तं जक्खं तहा पन्नवेसु जहा एस संसओ पणस्सइ त्ति । 'एवं करेमि' त्ति संसिऊण सुमरिओ जक्खो कुमारेण । आगओ य एसो 'भो जक्ख ! पच्चक्खो होऊण देवयाविसयं लोयस्स नि[3]च्छयं कुणसु' त्ति आइट्ठो कुमारेण ।

फुरंतमणिकुंडलो तयणु [4]नाइ आखंडलो, समारुहिय पा[5]यडो सुर[6]पहम्मि जक्खो ठ्ठिओ ।
विमाणमवचूलयाउललुलंतमुत्ताहलं, रणंतमणिकिंकिणीपडलबद्धकोलाहलं ॥ १ ॥
विसिट्ठहरिसुं[7]दुरा निवपुरस्सरा तित्थिणो, स एस परमेसरो सरियमेत्तओ पत्तओ ।
कहेउ जमिहोचियं इय [8]पयंपिरा सायरं, खिवंति तमवेक्खिउं तयणु सिग्घमग्घंजलिं ॥ २ ॥

एत्थंतरम्मि जक्खेण जंपियं कीस संसयं कुणह ? । भो भो महाणुभावा ! निम्मलमइणो वि होऊण ॥ ३ ॥

१ नेसा° प्रतौ ॥ २ °यानिस° प्रतौ ॥ ३ °निच्छियं प्रतौ ॥ ४ इवार्थकमव्ययम् ॥ ५ प्रकटः ॥ ६ °पहं पि ज° प्रतौ ॥ ७ °सुट्ठुरा प्रतौ । विशिष्टहर्षोद्धुराः ॥ ८ परंपि° प्रतौ । प्रजल्पनशीलाः ॥

गिरि-रन्न-सरिय-सायरलंघणपभिईहिं अज्जिओ अत्थो । धन्नाण धम्मकज्जे वच्चइ इयराण इयरम्मि ॥ २ ॥
निप्पुन्नमप्पयमहं मन्ने विनिवायभायणं पि धणं । जस्स मम नोवओगं वच्चइ एवंविहट्ठाणे ॥ ३ ॥
रज्जं रज्जुं पिव बंधणत्थमुवकप्पियं अहं मन्ने । उवजुज्जइ थेवं पि हु जं नो सद्धम्मकज्जम्मि ॥ ४ ॥
भावत्थयासमत्थो काहं दव्वत्थए न जइ जत्तं ? । ता अप्पण च्चिय परं अप्पा भवकूवए खित्तो ॥ ५ ॥
होउ बहुजंपिएणं इहेव चेईहरम्मि जिणबिंबं । काराविऊण संपइ अप्पाणं निच्चेवेमि त्ति ॥ ६ ॥
सिट्ठो य एस भावो पुरतो सेट्ठिस्स वीरभद्दस्स । तेणावि अणुन्नाओ सो पहरिसमुव्वहंतेण ॥ ७ ॥
अह सुमुहुत्ते रन्ना जच्चज्जुणकंचणेण जिणपडिमा । काराविउमारद्धा विहिणा पुव्वोवइट्ठेण ॥ ८ ॥
सिद्धा य कमेणेसा ससहरलंछणविराइया पवरा । लद्धं च पइट्ठाए जोग्गं लग्गं महबलोग्गं ॥ ९ ॥
पत्तो य तम्मि समए स महप्पा चारणो मुणिवरिट्ठो । गुरुदिन्नगणाणुन्नो सूरी खेमंकरो भयवं ॥ १० ॥
विन्नायतदागमणो हरिसभरुब्भिज्जमाणरोमंचो । पउमो राया गंतुं तं वंदइ परमभत्तीए ॥ ११ ॥
गुरुणा दिन्नासीसो उवविट्ठो केवले महीवट्ठे । पुट्ठो य धम्मविसयं निव्वाहं सो मुणिंदेण ॥ १२ ॥

१ गिरिअरण्यसरित्सागरलङ्घनप्रभृतिभिः ॥ २ भावस्तवासमर्थः करिष्यामि द्रव्यस्तवे न यदि यत्नम् ॥ ३ 'नित्ययामि' शाश्वतीकरोमि ॥ ४ जच्चुज्जण° प्रतौ ॥ ५ शशधरलाञ्छनः-चन्द्रप्रभजिनः ॥ ६ य सम्मि प्रतौ ॥ ७ चारिणो प्रतौ ॥ ८ °न्नगुणा° प्रतौ । गुरुदत्तगणानुज्ञः ॥ ९ °वली म° प्रतौ ॥ १० निर्वाहम् ॥

जिनबिम्ब-प्रतिष्ठा-विधिः

सिट्ठो य तओ तेणं पडिमाकारवणवइयरो सव्वो । पत्थावम्मि य वुत्तो एयपइट्ठं कुणह भंते ! ॥ १३ ॥
गुरुणा भणियं नरवर ! मंता-ऽऽहवणाइ इह असावज्जो । अम्हाण विही उचिओ ण्हवणाई पुण गिहत्थाण ॥ १४ ॥
तो वीरभद्दपमुहा गीयत्था भत्तिसंगया दक्खा । कयकरणा य गिहत्था अत्थिक्कगुणन्निया निउणा ॥ १५ ॥
भत्ति-बहुमाणसारं देवपइट्ठाविहिं निरुव्विग्गा । पुच्छंति गुरू वि तओ जहासुयं कहिउमाढत्तो ॥ १६ ॥
घोसाविज्ज अमारिं रन्नो संघस्स तह य वाहरणं । विन्नाणियसम्माणं कुज्जा खेत्तस्स सुद्धिं च ॥ १७ ॥
तह य दिसिपालठवणं तक्किरियंगाण सन्निहाणं च । दुविहसुई पोसहिओ वेईए ठवेज्ज जिणबिंबं ॥ १८ ॥
नवरं सुमुहुत्तम्मि पुव्वुत्तरदिसिमुहं सउणपुव्वं । वज्जंतेसु चउव्विहमंगलतूरेसु पउरेसु ॥ १९ ॥
तो सव्वसंघसहिओ ठवणायरियं ठवित्तु पडिमपुरो । देवे वंदइ सूरी परिहियनिरुवहय-सुइवत्थो ॥ २० ॥
संति-सुयदेवयाणं करेइ उस्सग्ग थुइपयाणं च । सहिरन्नदाहिणकरो सयलीकरणं ततो कुज्जा ॥ २१ ॥
तो सुद्धोभयपक्खा दक्खा खेयन्नुया विहियरक्खा । ण्हवणंगरा तो खिवंती दिसासु सव्वासु सिद्धबलिं ॥ २२ ॥
तयणंतरं च मुद्दियकलसचउक्केण ते ण्हवंति जिणे । पंचरयणोदगेणं कसायसलिलेण तत्तो य ॥ २३ ॥

१ °काराव° प्रतौ । प्रतिमाकारणव्यतिकरः ॥ २ °पहुणा, गी° प्रतौ ॥ ३ आस्तिक्यगुणान्विताः ॥ ४ 'द्विविधशुचिः' बाह्याभ्यन्तरपवित्रः 'पौषधिकः' कृतोपवासः ॥ ५ चेइए प्रतौ । वेद्याम् ॥ ६ शकुनपूर्वकम् वाद्यमानेषु ॥ ७ °णगिरा° प्रतौ ॥ ८ सिद्धिब° प्रतौ ॥ ९ जिणो प्रतौ ॥ १० माणिक्य मौक्तिक प्रवाल सुवर्ण ताम्र इत्येतानि प्रवाल मौक्तिक सुवर्ण रजत ताम्र इत्येतानि वा पञ्च रत्नानि, तद्भावितेनोदकेन ॥ ११ प्लक्ष-अश्वत्थ-

मट्टियजलेण तो अट्ठवग्ग-सव्वोसहीजलेहिं च । गंधजलेणं तह पवरवाससलिलेण य ण्हवंति ॥ २४ ॥
चंदणजलेण कुंकुमजलकुंभेहिं च तित्थसलिलेण । सुद्धकलसेहिं पच्छा गुरुणा अभिमंतिएहिं तहा ॥ २५ ॥
ण्हाणाणं सव्वाण वि जलधारा-पुप्फ-गंध-धूवाई । दायव्वमंतराले जावंतिमकलसपत्थावो ॥ २६ ॥
एवं ण्हविए बिंबे नाणकलानासमाचरेज्ज गुरू । तो सरससुयंधेणं लिंपेज्जा चंदणद्दवेणं ॥ २७ ॥
कुसुमाइं सुयंधाइं आरोवेत्ता ठवेज्ज बिंबपुरो । नंदावत्तयपट्टं पूइज्जइ चारुदव्वेहिं ॥ २८ ॥
चंदणछड्डुब्भडेणं वत्थेणं छायए य तं पट्टं । अह पडिसरमारोवे जिणबिंबे रिद्धि-विद्धिजुयं ॥ २९ ॥
तो सरस-सुगंधाइं फलाइं पुरओ ठवेज्ज बिंबस्स । जंबीर-बीजपूराइयाइं तो देज्ज गंधाई ॥ ३० ॥
मुद्दामंतन्नासं बिंबे हत्थम्मि कंकणनिवेसं । मंतेण धारणविहिं करेज्ज बिंबस्स तो पुरओ ॥ ३१ ॥
बहुविहपक्कन्नाणं ठवणा वरवेहगंधपुडियाणं । वरवंजणाण य तहा जाइफलाणं च सविसेसं ॥ ३२ ॥

शिरीष-उदुम्बर-वटादीनां मध्यच्छल्या भावितमुदकं कषायसलिलमुच्यते ॥

१ पर्वत-पद्मद्रह-नदीसङ्गम-नदीतटद्वय-गोश्रृङ्गोत्खात-वल्मीकप्रभृतिस्थानानां मृत्तिकाभिः भावितेन जलेन ॥ २ कुष्ठ प्रियंगु वचा रोध्र उशीर देवदारु दूर्वा मधुयष्टिकेति प्रथमाष्टवर्गद्रव्याणि । मेद महामेद कंकोल क्षीरकंकोल जीवक ऋषभक नखी महानखी इति द्वितीयाष्टवर्गद्रव्याणि । हरिद्रा वचा शोफ वालक मोथ ग्रन्थिपर्णक प्रियंगु मुरवास कर्चूरक कुष्ठ एला तज तमालपत्र नागकेसर लवंग इत्यादीनि सर्वौषधिद्रव्याणि । एतैर्द्रव्यैर्वासितं जलं क्रमशः अष्टवर्गजलं सर्वौषधिजलं चोच्यते ॥ ३ **सरिस**° प्रतौ । सरससुगन्धेन ॥ ४ सुगन्धानि ॥ ५ °**णत्थदुब्भवेणं** प्रतौ । चन्दनच्छटोद्भटेन ॥ ६ हस्तसूत्रं कङ्कणं वा ॥

कया नयरिसोहा, पविट्ठो रायभवणं कुमारो, पंचंगपणिवायपुव्वयं पडिओ पीईचलणेसु । उवगूहिओ पिउणा, आरोविओ उच्छंगे, पुच्छिओ पुव्वाणुभूयदेसभमणवुत्तंतं । जणगदुत्थावत्थावलोयणपाउब्भवंतबाहप्पवाहाउललोयणेणं मन्नुब्भरखलंतक्खराए वाणीए जहावित्तं सिट्ठं कुमारेण । तहाससोगं च तं दट्ठूण भणियं रन्ना—वच्छ ! किमेवं कायरो होसि ? सिद्धे मोत्तूण सेसाणं सुप्पसिद्धमेयं, एत्तो च्चिय पुव्वपुरिसा समग्गसंगचागेण पवन्ना संजमुज्जोगं, किं वा वच्छ ! अम्हाणं सोयणिज्जं ? जेहिं तिवग्गसारं किं नो उवभुत्तं संसारसुहं ? कस्स वा सिरसेहरत्तणं नोवणीया आणा ? अहवा किमणेण अप्पविकत्थत्तणेण ? अणंतसंसारसंसरणओ किं नो दिट्ठं ? किं नाणुभूयं ? किं वा नो कयं ? ता पुत्त ! परिच्चय सोगं, कुणसु धम्मसाहेज्जं ति । ततो रायलोएण थेवं पि अपडिवज्जितो रज्जं महाकट्ठेण काराविओ तदब्भुवगमं । पसत्थमुहुत्ते य अहिसित्तो रायपए । जहोचियं सिक्खं दाऊण य रन्ना पडिवन्नमणसणं । समाहीए मरिऊण सोहम्मदेवलोए देवो जाओ त्ति । पउमराया वि तप्पारलोइयकिच्चाइं काऊण भावियभवसरूवो कालक्कमेण विगयसोगो जाओ, रज्जकज्जाणि य चिंतिउं पवत्तो ।

अन्नया य रायवाडियानियत्तमाणेण दिट्ठं वीरभद्दसेट्ठिणा काराविज्जमाणं तुंगसिंगरुद्धदिसावगासं हरहास-हिमधवलं जिणभवणं । कोऊहलेण गओ तत्थ । अब्भुट्ठिओ वीरभद्दाईहिं । दंसिओ पासायकम्मविसेसो । पसंसिओ नरिंदेण सेट्ठी, जहा—

धन्नो तुमं महायस ! नियभुयदंडज्जिएण वित्तेण । जेण तए जिणभवणं गिरिगरुयमिमं विनिम्मवियं ॥ १ ॥

---

१ °**यभुव**° प्रतौ ॥ २ °**दुच्छाव**° प्रतौ । जनकदुस्थावस्थावलोकनप्रादुर्भवद्बाष्पप्रवाहाकुललोचनेन मन्युभरस्खलदक्षरया ॥ ३ समग्रसङ्गत्यागेन ॥ ४ **तदुब्भव**° प्रतौ । तदभ्युपगमम् ॥ ५ तुङ्गश्रृङ्गरुद्धदिगवकाशम् ॥

१५

पुर्प्फ[1]-ऽक्खयंजलीहिं तो गुरुणा घोसणा ससंघेण । थे[2]ज्जत्थं कायव्वा मंगलसद्देहिं बिंबस्स ॥ ४४ ॥

जह सिद्धि-मेरु-कुलपव्वयाण पंचत्थि[3]काय-कालाण । इह सासया पइट्ठा सुपइट्ठा होउ तह एसा ॥ ४५ ॥

जह दीव-सिंधु-ससहर-दिणयर-सुरवास-वासखेत्ताणं । इह सासया पइट्ठा सुपइट्ठा होउ तह एसा ॥ ४६ ॥

एत्थं सुहभावकए अक्खयखेवे कयम्मि बिंबस्स । सविसेसं पुण पूया किच्चा चिइवंदणा य तहा ॥ ४७ ॥

मुहउग्घाडणसमणंतरं च पूया य समणसंघस्स । फासुयघय-गुड-गोरस-णंतगमाईहिं कायव्वा ॥ ४८ ॥

सोहणदिणे य सोहग्गमंतविन्नासपुव्वयमवस्सं । मयणहलकंकणं करयला[4]ओ बिंबस्स अवणिज्जा ॥ ४९ ॥

जिणबिंबस्स य विसए नियनियठाणेसु सव्वमुद्दाओ । गुरुणा उववुत्तेणं पउंजियव्वाउ ता य इमा ॥ ५० ॥

जिणमुद्द १ कलस २ परमेट्ठि ३ अंग ४ अंजलि ५ तहाऽऽसणा ६ चक्का ७ ।
सुरभी ८ पवयण ९ गरुडा १० सोहग्ग ११ कयंजली १२ चेव ॥ ५१ ॥

जिणमुद्दाए चउकलसठावणं तह करेह थिरकरणं । अहिवासमंतनसणं आसणमुद्दाए अन्ने उ ॥ ५२ ॥

कलसाए कलसण्हवणं परमेट्ठीओ उ आहवणमन्तं । अंगाए समालभणं अंजलिणा पुप्फरुहणाई ॥ ५३ ॥

आसणयाए पट्टस्स पूयणं अंगफुसण चक्काए । सुरभीए अमयमुत्ती पवयणमुद्दाए पडिबोहो ॥ ५४ ॥

गरुडाए दुट्ठरक्खा सोहग्गाए य मंतसोहग्गं । तह अंजलीए देसण मुद्दाए कुणह कज्जाइं ॥ ५५ ॥

---

१ °प्फखयं° प्रतौ ॥ २ देज्ज° प्रतौ । स्थैर्यार्थम् ॥ ३ °कालका° प्रतौ ॥ ४ –वस्त्रादिभिः ॥ ५ °ओ य बिं° प्रतौ ॥

चोएइ एत्थ कोई जह किर सामाइयम्मि किं गुरुणो । जुत्तो ठियस्स एसो सावज्जो विहिसमारंभो ? ॥ ५६ ॥

कायवहकरणभंगा तम्मि जओ तस्स नियमओ हुंति । जायइ य अविस्[1]सासो गुरूवएसेसु सिस्साणं ॥ ५७ ॥

गुरुणा भणियं हे मूढ ! कह वि जइ होइ कोइ कायवहो । तह वि हु गुरुवयणाओ आयरणाओ य न हु दुट्ठो ॥ ५८ ॥

विहिवयणं च पमाणं सुत्तुत्तं जेणं[2] ठावणा गुरुणा । कज्जा जिणबिंबाणं तं च सविसयं हवइ करणे ॥ ५९ ॥

अन्नह निव्विसयत्तं पावइ तस्स त्ति तेण सो जुत्तो । तइया तह गुरु[3]ठवणा बिंबस्स य गउरवाइगुणा ॥ ६० ॥

अन्नं च सुत्तविहिणा संभवि[4]जयणाए बिंबठवणाए । नो कायवहाईया दोसा जिणभवणक[5]रणे व ॥ ६१ ॥

जिणभवण-बिंब-पूयाइयं च न विणा गुरू[6] गिही मुणइ । न य तत्थ न कायवहो गुरुणो [7]दोसो य न य वुत्तो ॥ ६२ ॥

अलमेत्थ पसंगेणं ठविए एवं जिणस्स बिंबम्मि । अट्ठोत्तरकलससएण मज्जिए पुण जहाविहवं ॥ ६३ ॥

पूयाइएसु [8]जत्तो परमो पइदियहमेव कायव्वो । भो वीरभद्दपमुहा ! एस पइट्ठाए विहिलेसो ॥ ६४ ॥

[तओ] अव्व[9]क्खित्तचित्ता भालयलारोवियपाणिणो य वीरभद्दाइणो 'भयवं ! अणुग्गहिया अम्हे' इति पुणो पुणो उ[10]ववूहंता गुरुं वंदिऊण पउमराइणो सव्वं परिकहिंति । सो वि तं[11]वयणा[यण्णणा]णंतरमेव तूरमाणमाणवपयट्टियपुरसोहं

---

१ °स्सामो गुरुव° प्रतौ ॥ २ °ण ट्ठाव° प्रतौ । येन स्थापना गुरुणा कार्या जिनबिम्बानाम् ॥ ३ °रुट्ठव° प्रतौ ॥ ४ °वियजणाए बिंबट्ठव° प्रतौ ॥ ५ °कहणे प्रतौ ॥ ६ गुरु प्रतौ ॥ ७ दोसे प्रतौ ॥ ८ यत्नः ॥ ९ °व्वखित्त° प्रतौ । अव्याक्षिप्तचित्ताः ॥ १० अवबू° प्रतौ ॥ ११ तद्वचना[कर्णना]नन्तरमेव त्वरमाणमानवप्रवर्त्तितपुरशोभं प्रमुक्तचारकावरुद्धजनौघं उपाहृतसमस्ततीर्थजलकुसुमसर्वौषधिसुकुमारमृत्तिकाप्रमुखप्रतिष्ठोप-

पमुक[2]चारगावरुद्धजणोहं उवाहरियसमत्थतित्थजल-कुसुम-सव्वोसही-सुकुमारमट्टियापमुहपइट्ठोवगरणं सन्निहिनिहित्तनिइगोवओगिवत्थुवग्गं दूरदेसवाहरियकुसलसाहम्मियगणं अच्चंतपयत्तपडिसिद्धविहारोवट्ठियसुट्ठियसाहुजणं पइट्ठामहूसवमारंभिऊण खेमंकरसूरिं भणिउं पवत्तो—भयवं ! अम्हाणुग्गहं काऊण जिणबिंबपइट्ठं करेह त्ति।

ततो सूरी [3]कयचउत्थतवोविसेसो समाहियप्पा तक्कालोचियविहियनेवच्छो पुव्वग्गाहियसिक्ख-दक्ख-दव्वभावसुद्धिसंपन्नसमालभिया[4]लंकिय-निम्मलोभयपक्खकइवयण्हवणगरसहिओ पढमनिदंसियविहिणा सूरिमंते[5]णाधिवासणाइविहाणेण [6]इट्ठंसवेला-[ए] अविलंबियखित्तबिंबसुरहिवासो समयाविरुद्धकमेण पइट्ठं करेइ। राया वि [7]पुंन्नपगरिसागरभूयमप्पाणं मन्नंतो ताणि ताणि [8]तक्कालोचियचिइवंदणा-ऽऽरत्तियाइकिच्चाणि संघ-साहम्मियदाणाणि सयणवग्ग-पयइलोयसम्माणणाणि य सयं करेइ। अह [9]अवसेसिए पइट्ठाकिच्चे गुरू रायाइसभाए धम्मं कहिउमाढत्तो। जहा—

जिणभवण-बिंबठावण-पूया-जत्ताइकयपयत्तेहिं। धन्नेहिं गो[10]पयं पिव लंघिज्जइ भवसमुद्दोऽयं ॥ १ ॥

करणं सन्निधिनिहितनियतोपयोगिवस्तुवर्गं दूरदेशव्याहारितकुशलसाधर्मिकगणं अत्यन्तप्रयत्नप्रतिषिद्धविहारोपस्थितसुस्थितसाधुजनं प्रतिष्ठामहोत्सवमारभ्य ॥

२ °चारुगा° प्रतौ ॥ ३ कृतचतुर्थतपोविशेषः समाहितात्मा तत्कालोचितविहितनेपथ्यः पूर्वग्राहितशिक्ष-दक्ष-द्रव्यभावशुद्धिसम्पन्न-समालब्धालङ्कृत-निर्मलोभयपक्षकतिपयस्नपनकरसहितः प्रथमनिदर्शितविधिना ॥ ४ °याणंकयनि° प्रतौ ॥ ५ °णाविवा° प्रतौ ॥ ६ इष्टांशवेलायाम् ॥ ७ पुण्यप्रकर्षाकरभूतम् ॥ ८ तत्कालोचितचैत्यवन्दनाऽऽरात्रिकादिकृत्यानि सङ्घसाधर्मिकदानानि स्वजनवर्गप्रकृतिलोकसम्माननानि च ॥ ९ समापिते इत्यर्थः ॥ १० गोष्पदमिव ॥

सागिक्खू-वरसोलय-खंडाईणं वरोसहीणं च। संपुन्नबलीय तहा ठवणं पुरओ जिणिंदस्स ॥ ३३ ॥
[2]घयगुडदीवो सुकुमारियाजुओ चउजुवारया दिसिसु। बिंबपुरओ ठवेज्जा भूयाण [3]बलिं तओ देज्जा ॥ ३४ ॥
[4]आरत्तिय मंगलईवयं च उत्तारिऊण जिणनाहं। वंदिज्जऽहिवासण देवयाए उस्सग्ग थुइदाणं ॥ ३५ ॥
अह जिणपंचंगेसुं ठावेइ [5]गुरू थिरीकरणमंतं। वाराओ तिन्नि पंच व सत्त व अच्चंतमपमत्तो ॥ ३६ ॥
मयणहलं आरोवइ अहिवासणमंतनासमवि कुणइ। झायइ य तयं बिंबं सजियं व जहा फुडं होइ ॥ ३७ ॥
एवमभिवासियं तं बिंबं छाएज्ज सदसवत्थेण। चंदण[6]छडुब्भडेणं तदुपरि पुप्फाइं वि खिवेज्जा ॥ ३८ ॥
न्हावेज्ज सत्तधन्नेण तयणु जीवंतउभयपक्खाहिं। नारीहिं चउहिं समलंकियाहिं वि[7]ज्जंतनाहाहिं ॥ ३९ ॥
[8]पडिपुन्नचत्तुसुत्तेण वेढणं चउगुणं च काऊण। ओमिणणं कारेज्जा तुट्ठाहिं हिरन्नदाणजुयं ॥ ४० ॥
तो वंदेज्जा देवे पइट्ठदेवीए काउ उस्सग्गं। देज्ज थुई तीए च्चिय ठवेज्ज पुरओ य घयपत्तं ॥ ४१ ॥
[9]सोवन्नवट्टियाए कुज्जा महु-सकराहिं भरियाए। कणगसलागाए बिंबनयणउम्मीलणं [10]लग्गे ॥ ४२ ॥
सम्मं पइट्ठमंतेण अंगसंधीसु अक्खरन्नासं। कुणमाणो एगमणो सूरी वासे खिवेज्ज तहा ॥ ४३ ॥

१ °डाईणम्वरो° प्रतौ ॥ २ घयकुडदीवसु° प्रतौ ॥ ३ बलित्तओ प्रतौ ॥ ४ आरात्रिकं मङ्गलदीपकम् ॥ ५ गुरु प्रतौ ॥ ६° छडुब्भ° प्रतौ ॥ ७ 'विद्यमाननाथाभिः' सधवाभिः ॥ ८ प्रतिपूर्णतर्कुसूत्रेण ॥ ९ 'सुवर्णवाटिकायां' सुवर्णकच्चोलिकायाम् ॥ १० शुभलग्ने ॥

जिनबिंब-विधाने पद्म-नृपकथा-नकम् १२।

कर्मणां बलिकत्वम्

अंगुट्ठलघिट्ठा वि हु जेहिं पइट्ठाविया न जिणपडिमा। ते निव्वुईए पुरिसा कहमप्पाणं पइट्ठंतु ? ॥ १३ ॥

एवं सुचिरं ते उववूहिऊण अन्नत्थ विहरिया सूरिणो। राया वि रज्जकज्जाइं धम्मकज्जाणि य चिंतिउं पवत्तो। अन्नया य रज्जसिरिसुहमणुहवंतस्स तस्स पुव्वनिकाइयकम्मदोसाओ राइणो महंतो दाहजरो संवुत्तो। कारविया य मंत-तन्तोवयारा, वाउलीहूओ सव्वो जणो, [1]अणवरयविमुक्कंसुयजालं परुन्नमंतेउरं। अच्चंतमणिवत्तगदाहज्जराभिभूयस्स य रन्नो परिगलिओ सम्मत्तभावो। तहानिबद्धाउयत्तणेण स महप्पा अट्टज्झाणदोसेण मरिउं सयंभुरमणमहासमुद्दे गब्भवक्कम्मियमच्छत्तणेणं उववन्नो त्ति।

[2]तंविहजिणप्पइट्ठाकारवणऽज्जियविसिट्ठपुन्नो वि। अणवरय समयसंसिय[स]किरियाकरणरसिओ वि ॥ १ ॥

आबालकालउ च्चिय नि[3]प्पडिमविवेयपगरिसगुरू वि। तेत्तियज[4]णाण पुरओ कयतित्थपभावणो वि दढं ॥ २ ॥

उवसम-विवेय-अत्थिक्कपमुहगुणभूसितो वि स महप्पा। तह दुग्गइं पवन्नो ही ही ! कम्माण माहप्पं ॥ ३ ॥

अहवा जइ मल्लिजिणो इत्थित्तं [5]बीयगब्भवासं च। वीरो वि कारविज्जइ ता को कम्माण पडिमल्लो ? ॥ ४ ॥

इय सो मच्छो होउं इतो ततो जलनिहिम्मि हिंडंतो। जिणबिंबतुल्लरूवं पेच्छइ एगं महापउमं ॥ ५ ॥

वलयागारं मोत्तुं मच्छा पउमा य किर तहिं हुंति। आगारेहिं सव्वेहिं [6]सव्वविउणि–त्ति निद्दिट्ठं ॥ ६ ॥

१ अनवरतविमुक्ताश्रुजालं प्ररुदितमन्तःपुरम् ॥ २ तद्विधजिनप्रतिष्ठाकारणार्जितविशिष्टपुण्योऽपि । अनवरतं समयशंसितसत्क्रियाकरणरसिकोऽपि ॥ ३ निष्प्रतिमविवेकप्रकर्षगुरुरपि । तावज्जनानां पुरतः कृततीर्थप्रभावनः ॥ ४ °णाणुपु° प्रतौ ॥ ५ द्वितीयगर्भवासम् ॥ ६ 'सर्वविदा' सर्वज्ञेन इति ॥

मत्स्या-नामाकाराः

॥ ८९ ॥

अह [1]तहाविहरूवपलोयणपाउब्भवंतमहंतपरितोसस्स ईहा-ऽपोह-मग्गणं कुणमाणस्स तस्स जायं जाईसरणं। दिट्ठि[2]वह-पइट्ठियं व दिट्ठं पुव्वकारावियं [3]जैयगुरुबिंबं, अणुसुमरितो य [4]करुणामयमयरहरो सूरी खेमंकरो, टंकुक्कीरिय व पयडीहूया हियंयसिलावट्टम्मि तदुवएसा। संवेगमग्गाणुलग्गमाणसो य चिंतिउं पवत्तो—अहो ! मम मंद[5]भग्गया, अहो ! संकिलिट्ठकम्मया, अहो ! नि[6]यइनिरुवक्कमत्तणं, जं तहाविहसद्धम्मसामग्गिसंभवे वि सिंधुतडपत्तं जाणवत्तं व विहडियं तड त्ति मह अंतसमए सम्मत्तं, ता किमित्तो करेमि ? कं पवज्जामि ? [8]कत्थ वच्चामि ? किं वा कयं सुकयं हवइ ?–त्ति सुचिरं संतप्पिऊण अच्चंतसुविसुद्ध[9]मणपसरो 'सो चेव सरय[चंदो] चंदप्पहो जयगुरू सरणं' ति कयविणिच्छओ निरागारमणसणं पवज्जिऊण परमसमाहीए पंचपरमेट्ठिमहामंतमे[10]क्कमेवाणवरयमणुसरंतो कालं काऊण सहस्सारे कप्पे उक्कोसाऊ देवो उववन्नो त्ति। परिसम्मत्तपज्जत्तिभावो य कयतहाविहतकालोचियकिच्चो 'कस्स कम्मणो फलमेयं ?' ति जाव ओहिं पउंजइ ताव पेच्छइ [11]मच्छभवुत्तरं नरिंदभवं पुव्वाणुभूयं ति। तं च दट्ठूण ज्झड त्ति गाढुक्कंठापरिगओ गओ अलं[12]केरियसमुचियअलंकरणो य विमाणमारुहिऊण कइवयपहाणसुरपरियरिओ पुव्वकारियम्मि तम्मि चंदप्पहजिणमंदिरम्मि। वंदिओ परमभत्तिप[13]यरिसमुव्वहंतेण जयगुरू।

१ तथाविधरूपप्रलोकनप्रादुर्भवन्महापरितोषस्य ईहाऽपोहमार्गणां कुर्वाणस्य ॥ २ दृष्टिपथप्रतिष्ठितमिव ॥ ३ जाय° प्रतौ ॥ ४ करुणामृतमकरगृहः । मकरगृहः–समुद्रः ॥ ५ मन्दभाग्यता ॥ ६ नियतिनिरुपक्रमत्वम् ॥ ७ °वकम° प्रतौ ॥ ८ कथ प्रतौ ॥ ९ °मणपणपस° प्रतौ ॥ १० एकमेव अनवरतं अनुस्मरन् ॥ ११ मत्स्यभवोत्तरम् ॥ १२ °लंकारि° प्रतौ । अलङ्कृतसमुचितालङ्करणः ॥ १३–प्रकर्षमुद्वहता ॥

नीहरंतेण य जिणाययणाओ तक्कालमेव विहारेणाऽऽगया दिट्ठा धम्मकहं कुणमाणा खेमंकराभिहाणा सूरिणो। परमपेमुक्करिसमुव्वहंतेण य पणिवइया अणेणं। दिन्नासीसो य आसीणो समीववसुमइतलम्मि। दिव्वनाणोवलद्धभावेण भगवया सायरं संभासिओ य, जहा—भो सुरवर! पुन्नवंतो सि तुमं, तथाहि—

शशधरकमनीयं जैनबिम्बं महीयस्तदिदमुदितभासोद्भासयद्विश्वविश्वम्।
जिनभवनभुवीह स्थापयन् पुण्यभाजां, भवसि न कथमीशो? मादृशां वा न शस्यः? ॥ १ ॥
सुचरितचरणेऽपि प्राकृतैर्दुष्कृतैस्ते, किमपि सुमतिरोधी कण्टकोद्वेधकल्पः।
समजनि य[द]कस्मादन्तकालुष्यविघ्नस्तदिह हृदि विषादं सर्वथा मा कृथास्त्वम् ॥ २ ॥
कृतसुकृतशतोऽपि प्राणिवर्गः कुकर्मव्यतिकरनिहतात्मा प्राप्नुयात् किं न दौस्थ्यम्?।
तदपि शिवमुपेष्यस्यन्यमानुष्यजन्मन्यनुपमजिनबिम्बस्थापनायाः प्रभावात् ॥ ३ ॥
इति गुरुगिरं श्रुत्वा हृष्टः कृतप्रणतिः सुरः, सुरपदमगाद् यानाक्षेपस्फुरन्मणिकुण्डलः।
मुनिपतिरपि प्रीत्या भव्यैः सदा समुपासितः, सह यतिजनेनोर्वी गुर्वीं विहर्तुमशिश्रियत् ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे जिनबिम्बप्रतिष्ठाप्रक्रमे महाराजपद्मकथानकं समाप्तम् ॥ १२ ॥

एएसिं एक्कं पि [हु] [1]नूणं सद्धम्मकारणं गरुयं। किं पुण जिण[2]प्पइट्ठालट्ठा सव्वे वि दट्ठव्वा? ॥ २ ॥
किं भन्नइ इह बहुयं? जिणप्पइट्ठाविहिम्मि कीरंते। तं किं व न कल्लाणं जं नो सूइज्जइ? तहाहि ॥ ३ ॥
जमिह पइट्ठाए जिणं ण्हवंति विविहेहिं सलिलकलसेहिं। तं अत्तणो कुणंती तिलोयरज्जाभिसेयं व ॥ ४ ॥
जं च बहुभेयफल-पाग-सागबलिमुवणमंति जिणपुरओ। तं मो[3]क्खसोक्खसेवहिमक्खेवे[4]णुक्खणंति व्व ॥ ५ ॥
घणसुसिणिद्ध-सुदीहो सोहेई नवजवंकुरप्पूरो। तक्कालुग्गयसुहकप्पसाहिपारोहनिवहं व ॥ ६ ॥
किं वे[5]इविरयणाए जिणस्स? नवरं कुणंति मन्ने हं। तद्दारेणं नि[6]व्वुइवहूए हत्थग्गहं भव्वा ॥ ७ ॥
[7]सुहपुन्नचत्तुतंतूहिं सामिणो जं कुणंति ओमिणणं। [8]तंतुच्छलेण लच्छि व अप्पणो संजं[9]मिंति दढं ॥ ८ ॥
उम्मीलिज्जइ भुवणेक्कचक्खुणो जं च लोयणजुयं पि। तं तइलोय[10]पलोयणपउणं पकुणंति नियचक्खुं ॥ ९ ॥
[11]छलिया छत्तीपत्तं व पावियव्वं बुहेहिं काउमिमं। इय संसिउं व सव्वत्थ निब्भरं भमइ तूररवो ॥ १० ॥
इइ जं [जं] जयगुरुणो कीरइ भव्वेहिं मंगलकएण। परिणमइ तयणुरूवत्तणेण तं तं [12]सुहाए सिं ॥ ११ ॥
ता [13]सुकयकम्मणो च्चिय तुब्भे जेसिं जिणिंदविसयम्मि। एवंविहा पवित्ती सव्वपयत्तेण संभवइ ॥ १२ ॥

१ नूण प्रतौ ॥ २ °णपइ° प्रतौ। जिनप्रतिष्ठाश्रेष्ठानि सर्वाण्यपि द्रष्टव्यानि ॥ ३ मोक्षसौख्यसेवधिम् अक्षेपेण उत्खनन्ति इव ॥ ४ °णुखणं° प्रतौ ॥ ५ वेदीविरचनया ॥ ६ निर्वृतिवध्वाः 'हस्तग्रहं' पाणिग्रहणम् ॥ ७ शुभपुण्यतर्कुतन्तुभिः ॥ ८ तंतच्छ° प्रतौ ॥ ९ संयच्छन्ति ॥ १० °पओय° प्रतौ। त्रैलोक्यप्रलोकनप्रगुणम् ॥ ११ छागी सप्तपर्णमिव ॥ १२ सुखाय तेषाम् ॥ १३ सुकृतकर्माणः ॥

[1]कामियसिद्धीणमिमं दारं सारं गिहत्थधम्मस्स । जिणपूयणं [2]जणाणं निप्पुन्नाणं न संभवइ ॥ ११ ॥
सोक्खं सव्वो वंछइ तं मोक्खे सो य होइ धम्माओ । सो पुण सम्मत्ताओ तं पुण जिणपायपूयणओ ॥ १२ ॥
इय बुज्झिऊण इत्थेव सव्वजत्तेण [3]उज्जओ मणुओ । हवइ भवपारगामी पभंकरो एत्थ दिट्ठंतो ॥ १३ ॥ तहाहि—

अत्थि [4]कयजुगक[5]यणिच्चावयारं व अणवरयपयट्टमहंतमहूसवं, सवणगोयरोवगमे वि दिन्नपहियपरितोसं वसंतउरं नाम नयरं । जहिं च कुलसेल व सुरभवणविसेसा, देवलोयविमाणमाल व मणहरा पासायपरंपरा, दे[6]वगुरुमिहु[7]णंग व नर-नारीगणा, [8]कमल-कल्हार-कुमुयपरागवासियसच्छसलिलपडहच्[9]छा उवहसियमाणसा सरोयरपंती । तत्थ य [10]उद्दंडभुयदंडमंडवावासियरायलच्छिसाणुरायऽच्छिविच्छोहविच्छुरियव[य]णो, सहस्सनयणो व नि[11]हयपरभूधरसत्तुपक्खो, जहत्थक्खो सुदंसणो नाम राया। सयलसीमंतिणीसीमभूयरूवा पभावई नाम से भज्जा। [12]परिभूयदेवगुरुमइविभवो भवदत्तो अमच्चो, पसायट्ठाणं नरवइस्स, दढमणुरत्तो य सव्वन्नुधम्मम्मि । जहानिउत्तरज्जकज्जाणि य सो चिंततो कालं वोलेइ ।

१ इच्छितसिद्धीनाम् ॥ २ **जिणाणं निप्पुन्नाणं म सं**° प्रतौ ॥ ३ उद्यतः ॥ ४ कृतयुगकृतनित्यावतारमिव अनवरतप्रवृत्तमहामहोत्सवम्, श्रवणगोचरोपगमेऽपि दत्तपथिकपरितोषम् ॥ ५ °**यकिच्चा**° प्रतौ ॥ ६ देवगुरुः—बृहस्पतिः ॥ ७ °**णमच्चनर**° प्रतौ ॥ ८ कमलकह्लारकुमुदपरागवासितस्वच्छसलिलप्रतिपूर्णा उपहसितमानससरोवरा सरोवरपंक्तिः ॥ ९ °**च्छाओ उव**° प्रतौ ॥ १० उद्दण्डभुजदण्डमण्डपावासितराजलक्ष्मीसानुरागाक्षिविक्षेपाद्भुतवदनः ॥ ११ इन्द्रपक्षे निहताः—छिन्नाः पराः—महान्तः भूधराः—गिरय एव शत्रवः तेषां पक्षाः—पतत्रा येन सः, राजपक्षे पुनः निहतः—विनाशितः परभूधराः—प्रकृष्टबलगर्विता राजान एव शत्रुपक्षो येन ॥ १२ परिभूतबृहस्पतिमतिविभवः ॥

अन्नया य राया अमच्चो [य] पट्ठिया रायवाडीए । उवणीया त[1]क्कालदेसंतरागयवणियजच्चतुरगा वंदुरावालेणं । कोऊहलेण य एगम्मि राया आरूढो, बीयम्मि अमच्चो । वाहिया जहासत्तीए । विवरीयसिक्खत्तणेण पवणाइरेगवेगत्तणेण य 'एस नरिंदो, एस नरिंदो' त्ति विप्फारियलोयणं वाहरंतस्स वि रायलोयस्स ते तुरगा दीहमद्धाणं लंघिऊण निमेसमेत्तेण वि चक्खुगोयरमइगय त्ति । [2]नरिंदं अमच्चं च तहाहरियं अवधारिऊण रायपरियणो सकरि-तुरग-वाहणो लग्गो तदणुमग्गेण । अमच्च-रायाणो य तुरगेहिं दुट्ठकम्मेहिं व पाडिया भीमाडवीए । अच्चंतपरिस्समविहुरा य [3]जमातिहित्तमावन्ना तुरया । गाढसुढियतणुप्पन्नतण्हाइरेया य राया-ऽमच्चा नि[4]विन्ना बहलपत्तलतरुवरच्छायाए, सिसिरमारुयवसेण य मणागमुवलद्धपडियारा परोप्परं भाविउं पवत्ता—

कज्जाण गई कुडिला अचिंतणिज्जं च [5]आवयावडणं । संपत्तीओ वि कहं ज्झड त्ति ही ! दिट्ठनट्ठाओ ? ॥ १ ॥
दुट्ठमहिल व्व पावा रायसिरी पेच्छ क[6]ट्ठसंतप्पा । दइवम्मि विसंवइए अमयं पि विसत्तणमुवेइ ॥ २ ॥
किल रज्जंगाइं तुरंगमाइणो वि[7]समनित्थरणहेउं । [8]जुज्जंति नवरि ते वि हु वि[9]हुरभरं इय पणामिंति ॥ ३ ॥
इय जा[व] [10]सोगसंगिलणसामलीभूयसंकुइयवयणा । चिट्ठंति सगोट्ठीए सुणंति ता दुंदुहिनिनायं ॥ ४ ॥ तथा—

१ तत्कालदेशान्तरागतवणिग्जात्यतुरगौ मन्दुरापालेन ॥ २ **नरिंद अमच्चं त तहा**° प्रतौ ॥ ३ 'यमातिथित्वमापन्नौ' मृतौ तुरगौ । गाढश्रान्ततनूत्पन्नतृष्णातिरेकौ ॥ ४ उपविष्टौ ॥ ५ आपदामापतनम् सम्पत्तयोऽपि कथं झटिति ॥ ६ कष्टसन्तर्पणीया दैवे 'विसंवदिते' प्रतिकूले जाते अमृतमपि विषत्वमुपैति ॥ ७ कष्टनिस्तरणहेतोः ॥ ८ **जुज्जंत** प्रतौ ॥ ९ 'विधुरभरं' व्याकुलत्वम् एवं अर्पयन्ति ॥ १० शोकसञ्जिलनश्यामलीभूतसङ्कुचितवदनौ तिष्ठतः सगोष्ठिकौ ॥

[1]संवायरहरिसुकरिसजायरोमंचकंचुइयकाया । गयणयले सुरनिवहा विज्जुज्जोयं पिव कुणंता ॥ ५ ॥
[2]उप्पयण-निवयणुम्मिलण-खलण-लुलणाइभूरिसंरंभा । गंधुदय-कुसुमवरिसं चेलुक्खेवं च कुणमाणा ॥ ६ ॥
एगे नच्चंति थुणंति चावरे तदवरे य गायंति । अच्चंतभत्तिपब्भारतरलिया किं व न कुणंति ? ॥ ७ ॥
हरि-हरिण-ससग-सूयर-[3]तरच्छ-[4]भल्लुंकपमुहपसुनिवहा । अन्नोन्नमुक्कवइरा तदभिमुहा पट्ठिया दिट्ठा ॥ ८ ॥
सम्ममुवसंतचित्ता वल्लीबद्धोद्धकेसजूडा य । [5]अडइयणा य पयट्टा तदभिमुहं [6]पेहिया रन्ना ॥ ९ ॥
एगो य थेरसबरो पुट्ठोऽमच्चेण तेण वि य सिट्ठं । एत्थ पएसम्मि मुणी संपत्तो केवलालोयं ॥ १० ॥
[7]तस्सेस पायपूयणकएण सनरा-ऽमरो तिरि[य]वग्गो । परिहरियसेसकज्जो सज्जो निज्जाउमारद्धो ॥ ११ ॥

एवं सोऊण कोऊहलेण सामच्चो राया गतो तम्मग्गेण। दिट्ठो देवकयकणयकमलनिसन्नो रवि व पभासंतो मुणिवरो। कयतप्पायपउमपणामा य उवविट्ठा धरणिवट्ठे । मुणियतिहु[य]णवइयरेण संभासिया केवलिणा । पारद्धा य सव्वसाहारणा देसणा ।

जहा—भो भो भवा ! विभावेह सम्मं [8]भवस्सभावं अच्चंतविरसं दुज्जणसरूवं व मुहमेत्तरमणीयं च, माइंदजालविलसियं व [9]पायडियविविहसरूवं दूरवुक्कंतपरमत्थं च, काउरिसचेट्ठियं व मुद्धसम्मोहकारयं[10] बाढमुव्वियणिज्जं च । एएण वामोहिया पुरिसा

१ सर्वादरहर्षोत्कर्षजातरोमाञ्चकञ्चुकितकायाः ॥ २ उत्पतन-निपतन-उन्मीलन-स्खलन-लुलनादिभूरिसंरम्भाः । गन्धोदककुसुमवर्षां चेलोत्क्षेपं च ॥ ३ तरक्षः—व्याघ्रविशेषः ॥ ४ शृगालः ॥ ५ अटवीजनाः ॥ ६ प्रेक्षिताः ॥ ७ तस्य एष पादपूजनकृते सनरामरः तिर्यग्वर्गः । परिहृतशेषकार्यः सद्यः निर्यातुमारब्धः ॥ ८ भवस्वभावम् ॥ ९ प्रकटितविविधस्वरूपं दूरव्युत्क्रान्तपरमार्थं च, कापुरुषचेष्टितमिव मुग्धसम्मोहकारकं बाढमुद्वेजनीयं च ॥ १० °यं पाढ° प्रतौ ॥

जिनपूजास्वरूपम्

सम्मं पइट्ठिए वि हु जिणिंदबिंबे न पूयणेण विणा । होज्जा [1]निज्जरलाभो ता तप्पूयाविहिं वोच्छं ॥ १ ॥
काले सुइनेवच्छो वरेहिं पूफाइएहिं विहिसारं । [2]सारत्थवण्णपहाणं जिणेंदपूयं रएज्ज गिही ॥ २ ॥
कालो य तत्थ संज्झातियं ति अहवा [3]सवित्तिअणुरूवो । सुइणा य दव्वतो मज्जिएण सुहवित्तिणा [4]भावो ॥ ३ ॥
नेवच्छमवि य एत्थं सुपसत्थमणुब्भडं अहसणिज्जं । [5]सेय-ऽव्वाहय-निद्दोसदूसरूवं मुणेयव्वं ॥ ४ ॥
[6]पुप्फ-ऽक्खय-धूव-पईव-वास-बलि-वारि-पत्त-सुफलेहिं । [7]घुसिण-[8]घणसार-चंदण-[9]मयणाहिविलेवणेहिं च ॥ ५ ॥
कंचण-मणिनिम्मियमउड-कडय-कडिसुत्त-तिलयपमुहेहिं । पवरेहिं भूसणेहिं वत्थेहिं तहा [10]महत्थेहिं ॥ ६ ॥
सेसेहिं वि [11]सिद्धत्थाइएहिं वत्थूहिं सुप्पसत्थेहिं । जुत्ता पूया एत्तो नऽन्नो धन्नो हि उवओगो ॥ ७ ॥
पूयाकरणे य विही [12]वयणं नासं च संजमित्तु दढं । वत्थेण जिणं पूएज्ज इहरहाऽऽसायणा गरुई ॥ ८ ॥
सिट्ठं च इमं जे भूवइस्स वट्टंति जत्तओ किच्चे । पावंति फलं ते तदवरे य नवरं किलिस्संति ॥ ९ ॥
[13]गंभीरपयत्थमहत्थसंथवुद्दंडदंडउद्दामं । कित्तेज्ज गुणग्गामं परमा एसा खु जिणपूया ॥ १० ॥

१ **निरज्जला**° प्रतौ । निर्जरालाभः ॥ २ °**णप्पहा**° प्रतौ । सारस्तवनप्रधानाम् ॥ ३ स्ववृत्तेः—स्वाजीविकाया अनुरूपः ॥ ४ भावतः ॥ ५ श्वेताव्याहतनिर्दोषदूष्यरूपम् ॥ ६ °**प्फखयधूवपइव**° प्रतौ ॥ ७ घुसृणं—केशरम् ॥ ८ घनसारः—कर्पूरम् ॥ ९ मृगनाभिः—कस्तूरिका ॥ १० 'महार्थैः' महामूल्यैः ॥ ११ सिद्धार्थादिभिः ॥ १२ वदनं नासिकां च संयम्य दृढम् ॥ १३ गम्भीरपदार्थमहार्थसंस्तवोद्दण्डदण्डकोद्दामम् । कीर्तयेद् गुणग्रामम् ॥

कह कह वि अणंतं दारुणं दीहकालं, दुहनिवहमपुव्वापुव्वजोणीसएसु ।
दुसहमवि सहित्ता सव्वहा भूरिपावक्खउवसमवसेणं माणुसत्तं लहंते ॥ १ ॥
तमवि य लहिऊणं हीणजाइत्तणेणं, मलिणकुलवसेणं नज्जदेसत्तओ[1] य ।
अकयसुकयकम्मा रुंदं[2]दारिद्द-रोगप्पमुहविहुरदुत्था ही ! मुहा हारविंति ॥ २ ॥
कह वि कुसलजोगा-ऽऽरोग्ग-जाई-कुलाणं, फुडमविकलभावे गाढरूढप्पमाया ।
निहयसुहविवेगा धम्म-देवाइ तत्तं, कहियमवि गुरूहिं णेगसो नो मुणंति ॥ ३ ॥
मुणियमवि कहंची[3] संजमाबाहिगाढाऽऽवरणखलियचेट्ठा नऽज्झवस्संति सम्मं ।
इय गरुयसुभेहिं धम्मसामग्गिजोगो, फलइ सिवसिरीए पेच्छियाणं जणाणं ॥ ४ ॥
न य सँलहियमन्नं[4] वन्नयंतेहिं एत्तो, न य इह उवलद्धे किंचि अत्थी अलद्धं ।
परिणयमइणो वा पत्थयंते न अन्नं, न य सिवसुहलाभो होइ एयं विणा वि ॥ ५ ॥
तदलमिह बहूहिं जंपिएहिं पियं वो, जइ य सुगइसोक्खं दुत्तितिक्खं च दुक्खं ।
परिहरियपमाया ता जिणुत्तम्मि तत्ते, कुणह सँइ[5] पइत्तं मिच्छमुच्छिंदिऊणं ॥ ६ ॥

१ अनार्यदेशत्वतः ॥ २ विस्तीर्णदारिद्र्यरोगप्रमुखक्लेशदुस्थाः ॥ ३ कथञ्चित् संयमाऽऽबाधिगाढावरणस्खलितचेष्टा नाध्यवस्यन्ति ॥ ४ श्लाघितमन्यद् वर्णयद्भिः इतः ॥ ५ सदा प्रयत्नम् ॥

भयह गुंणिसु[1] तुट्ठिं दुव्विणीए उवेहं, दयमवि दुहिएसुं सेससत्तेसु मेत्तिं ।
परिहरह विवायं मायमुम्मायजुत्तं, कुणह पसमसारं धम्मवावारभारं ॥ ७ ॥
परिकलह समग्गं तारतारुन्न-लच्छी[2]-बिसँसयण[3]-धणा-ऽऽऊ-भोग-संजोगमाई ।
खरपवणपणुँन्नुत्ताल[4]कल्लोललोलं, सुमिणमिव खणद्धेणावि ही ! दिट्ठनट्ठं ॥ ८ ॥
पुणरवि दुलहा भो ! धम्मसामग्गि एसा, कुणह जमिह जुत्तं मोत्तुमालस्समाई ।
नहि रयणनिहाणं पाविऊणं पहाणं, कुणइ फुडमुवेहं सव्वहाँ[5] बालिसो वि ॥ ९ ॥

इमं च केवलिणो धम्मदेसणं निसामिऊण पडिबुद्धा अणेगे जंतुणो । अपत्तपुव्वपावियबोहिलाभा य कयसायरपाय-पणामा गया जहागयं । नँवरं[6] तिकालगयवत्थुवित्थरणपवण[जिण]वयणविभावणजायविसेसजिन्नासा अमच्च-रायाणो काऊण [पणामं केवलिणं पुच्छंति—भयवं ! अणुग्गहं काऊण] साहह इमं—किं भे पव्वज्जागहणकारणं ? ति । भगवया भणियं—महती कहा, अवहिया होऊण निसामेह—

पंचालदेसालंकारकप्पे कमलसंडाभिहाणे नगरे सोमप्पभो सेट्ठी, सुभद्दा से भज्जा । ताणं च परोप्परं परमप-णएण वट्टंताणं अहमेको पालगो त्ति नाम पुत्तो जाओ, कमेण पत्तो तारुन्नं, पयट्टो दव्वोवज्जणाइवावारे । असंपज्जंततहा-

१ गुणसु प्रतौ ॥ २ °च्छीविलसय° प्रतौ ॥ ३–मृणालशयन–॥ ४ °णुंमुम्ताल° प्रतौ ॥ ५ °हा पालि° प्रतौ ॥ ६ न तरं ति° प्रतौ । नवरं त्रिकालगतवस्तुविस्तरणप्रवणजिनवचनविभावनजातविशेषजिज्ञासौ ॥

विहविह[व]लाभो य चिंतिउं पवत्तो—अहो ! किमणेण तुच्छलाभेण बहुकिलेसारंभेण[1] ? सव्वहा मंदभग्गो हं, कहमन्नहा एत्तियवावारलेसेण वि अन्ने सुकयकम्माणो वंछियाइरित्तमत्थलाभमज्जिणंति ? अहं पुण भोयणं पि कट्ठेण पाउणेमि[2], ता सव्वहा कम्मदुविलसियमेयं, एयं च अनिग्घाइऊण न वंछियत्थभागी सुचिरपोरिसावलंबणेणावि भविस्सामि, ता तक्कम्मनि-[3]ग्घायणट्ठमुवक्कमो मे जुत्तो-त्ति विभाविऊण गतो पुरिसपरंपरागयस्स वाममग्गनिउणस्स गुरुणो जोगंधर[स्स] समीवे । पाएसु पडिऊण[4] निविट्ठो भूमिवट्ठे । पुट्ठो य अणेण—वच्छ ! कीस विच्छायमुहो दीससि ? किंनिमित्तं वा एत्तियं भूमिमुवागओ सि ? । मए भणियं—भयवं ! विच्छायत्ते दारिद्दं विमोत्तुं को अवरो हेऊ साहिज्जउ ? अन्ने[5] वि बाहुल्लेण एत्तो चेव दोसा पाउब्भवंति । तहाहि—

परिगलइ मई मइलिज्जई जसो नाऽऽदरंति सयणा वि । आलस्सं च पयट्टइ विप्फुरइ मणम्मि[6] रणरणओ[7] ॥ १ ॥
उच्छरइ अणुच्छाहो पसरइ सव्वंगिओ महादाहो[8] । किं किं व न होइ दुहं अत्थविहीणस्स पुरिसस्स ? ॥ २ ॥

जोगंधरेण भणियं—वच्छ ! सच्चमेयं । मए भणियं—भयवं ! एयप्पडियारनिमित्तं च तुम्हपयपायवच्छायं[9] अल्लीणो म्हि। जोगंधरेण जंपियं—वच्छ ! गुरुप्पसाएण जाणिज्जइ एत्थ अत्थे उवाओ, केवलं महासत्तपुरिससज्झो । मए भणियं—कुणह तह पसायं जह तुम्ह पायपूयणे समत्थो भवामि । जोगंधरेण वागरियं—पुत्त ! अम्ह गुरूहिं मडयसाहणमंतो

१ °लेससा° प्रतौ ॥ २ °उणोमि प्रतौ ॥ ३ तत्कर्मनिर्घातनार्थमुपक्रमः ॥ ४ पाडि° प्रतौ ॥ ५ अन्नो वि प्रतौ ॥ ६ मणं पि र° प्रतौ ॥ ७ उद्वेगः ॥ ८ °दाढो प्रतौ ॥ ९ °च्छावं अ° प्रतौ । युष्मत्पदपादपच्छायाम् ॥

अपोरिसे एव पयट्टंति वावारे, न निरूवंति आगामिकालं, नावेक्खंति अप्पणो हियाहियं, नायरंति गुरूवएसं, [न] सुस्सूसंति समसत्थं[1], नाभिलसंति विसिट्ठगोट्ठिं । केवलं मत्त व मुच्छिय व दुद्दन्तिदियग्गामपरायत्तचित्ता[2] सद्द-रूय-रस-गंध-फरिसलुद्धा अच्चंतमुद्धा सारंग-पयंग-मीण-भुयंग-मायंग व तक्खणऽक्खेवेणेवासंखतिक्खदुक्खभायणं[3] भवन्ति, अणंतकालं च तासु [तासु] निंदियजोणीसु भुज्जो भुज्जो[4] उववज्जंति विवज्जंति य । सेलसिरसरंतसरियडोलोवलवट्टत्तनाएण य एगूणस[त्त]रिं मोहणीयस्स, एगूणतीसं च नाणावरण-दंसणावरण-वेयणीयंतरायाणं, एगूणवीसं च नाम-गोत्ताणं पत्तेयं पत्तेयं सागरोपमकोडाकोडीओ अहापवित्तकरणेण खविऊण, एगेगभिन्नसागरोवमकोडाकोडिसेसाए य आउयवज्जकम्मट्ठिईए, राग-द्दोसरूवं वज्जसारं निट्ठुरं गंठिदेसं पाउणंति । तं च पाउणिऊण केइ गरुयगिरिसिलाभग्गदंतदोघट्ट[5] व पच्छाहुत्तं ओहट्टंति, उक्कोसट्ठिइं च सव्वपयडीणं पुणो उवचिणंति । अन्ने पुणापुव्वकरणबलेण तं गंठिं भेत्तुमारभंते, अनियट्टिकरणसामत्थेण य तब्भेयणावसाणे कप्पतरुकप्पं उवसामियं सम्मत्तं लभंते । तदुत्तरं च केइ खाओवसमिगसम्मत्तलाभे उत्तरोत्तरपवड्ढमाणपरिणामा मरुदेवि व तक्कालमेव कयकिच्चा भवंति। अन्ने य[6] अणंताणुबंधिकसायउदयदिप्पमाणासुहभावा भमिऊण चउग्गइं देसूणऽद्धपोग्गलपरियट्टप्पमाणमुक्कोसतो संसार-कंतारमणुपरियट्टंति । तओ य—

१ समयस° प्रतौ । शमशास्त्रम् ॥ २ °द्दन्तिंदि° प्रतौ । दुर्दान्तेन्द्रियग्रामपरायत्तचित्ताः ॥ ३ तत्क्षणाक्षेपेणैवासङ्ख्यतीक्ष्णदुःखभाजनम् ॥ ४ भूयोभूय उपपद्यन्ते विपद्यन्ते च । शैलशिरःसरत्सरिद्दोलोपलवृत्तत्वज्ञातेन ॥ ५ गुरुकगिरिशिलाभग्नदन्तहस्ती इव पश्चान्मुखमवघटन्ते ॥ ६ य तमणं प्रतौ ॥

सोमस्य उदाहरणम्

पु[1]न्नमुवादाणमिहं निमित्त-सहकारिकारणत्तेण । मंताईणि य जुज्जंति सव्वकज्जाण सिद्धीसु ॥ ३ ॥
किं वा मूढा तुब्भे सोमोदाहरणमवि न जाणेह ?। पुं[2]न्नवियलत्तणेणं लाभो वि अलाभसारिच्छो ॥ ४ ॥
जोगंधरेण भणियं देव! पसीयसु कहेसु को सोमो ?। लाभो वि अलाभसमो कह वा तस्स ? त्ति चोज्जमिणं ॥ ५ ॥
मडएण भणियं—निसामेसु,

अत्थि णि[3]यंतुंगिमाभरियगयणंतरालो महल्लसल्लइपल्लवकवलणुद्दाममयगलाउलपरिसरो विंज्झो नाम गिरिवरो । तस्स य पा[4]यंतलभूमीए अ[5]णेगकोडीसरियलोयविहियविलासविस्सुमरावियसुरपुरिविब्भमा अरिट्ठपुरी नाम नयरी। तत्थ य सोमो नाम बंभणो आजम्मदालिद्दुवद्दुओ पइदिणपुरीपरिब्भमणज्जियकणवित्तिमेत्तजीवणो पइवरिसेकेक्कधूयासंभवंतगरुयकुडुंबभारो कह कह वि कालं वोलेइ ।

अन्नया य सो जहिच्छं विलसंतं नयरिलोगमवलोइऊण परमविसायमुवगओ चिंतिउं पवत्तो—आजम्माओ वि दो[6]गच्चचक्कचमढणसुढिओ हं हुयासणं पवज्जामि ? किं वा गिरिसिरातो अप्पाणं मुयामि ? तरुसाहुल्लंबणेण वा पवणपहवत्ती भवामि ?—त्ति जाव सुन्न-निप्फंदचक्खुक्खेवो चिट्ठइ ताव संभासितो सो संकराभिहाणेण मित्तेणं—भो भो ! किमेवं चिंताउरो व्व दीससि ? साहेसु परमत्थं । सोमेण भणियं—भद्द ! किं साहिए[ण]? अप्पडिविहाणो खु एस ववहारो, साहिज्जंतो चित्तसंताव-

१ °न्नमिवा° प्रतौ । पुण्यमुपादानकारणमिह ॥ २ पुण्यविकलत्वेन ॥ ३ निजतुङ्गिमभृतगगनान्तरालः महासल्लकीपल्लवकवलनोद्दाममदकलाकुलपरिसरः ॥ ४ °यवत° प्रतौ ॥ ५ अनेककोटीश्वरिकलोकविहितविलासविस्मारितसुरपुरीविभ्रमा ॥ ६ दौर्गत्यचक्राक्रमणश्रान्तः ॥

मेव तुम्हारिसाण जणइ, ता अलं इमीए संकहाए । संकरेण भणियं—मा मित्त ! एवं संकसु,
हिययब्भंतरपसरंततिव्वचिंताहुयासपरितत्ता । सुहिसंकामियदुक्खा सीईभूय व्व हुंति खणं ॥ १ ॥
फुरइ य मईविसेसो बालस्स वि कहिय[वत्थु]सवणेण । ता हियए च्चिय धरिउं न जुज्जए सव्वहा दुक्खं ॥ २ ॥

सोमेण भणियं—जइ एवं ता निसामेहि, अहं हि संपयं पयंगो व्व हुयासणाइसु निवडिऊण दोगच्चचक्कक्कंतस्स अत्तणो विस्सामं काउमिच्छामि, एसो चिंतापरमत्थो त्ति । संकरेण जंपियं—दूरमजुत्तो एस चिंतासंरंभो, अत्थि एत्थ अत्थे उवक्कमो सु[1]पच्चइयपुरिससिट्ठो, तमणुचिट्ठसु तुमं, जेण निव्विगप्पं वंछियं सिज्झइ त्ति । सोमेण भणियं—कहं चिय ?। संकरेण जंपियं—विंज्झगिरिवरातो पुव्वदिसीए वडविडविकोडरनिबद्धनिवासरई वडवासिणी नामं भगवई तवोकम्मपमुहविणओवयारपरितोसिया कामधेणु व्व कामियफलं संपाडेइ—त्ति सव्वत्थ गिज्जइ, सा य तुज्झ उवसप्पिउं जुत्त त्ति। पडिवन्नं सोमेण—कयं संबलं । गहियतक्कालोच्चियउवगरणो य लग्गो तम्मग्गेण । अ[2]विलंबियगमणेण य पत्तो भगवईभवणं, पूइया पज्जुवासिया य । दिणावसाणे य सविसेसं पूइऊण विन्नत्ता—देवि ! एत्तो उड्ढं तुमए पसन्नाए परं भोत्तव्वं ति । कयाइं वीसलंघणाइं । अवजसभीयाए संभासिओ भगवईए—भद्द ! पयट्टसु सकज्जकरणाय, बाढं निं[3]प्पुन्नओ तुमं, न पत्थुयलाभाओ अब्भहियं तुह पुरंदरेण वि दाउं पारियइ । जोडियकरसंपुडं च भणियं सोमेण—देवि ! एत्तो च्चिय तुम्ह पायपउमाराहणा कीरई, इहरहा सुकयकम्माओ चेव कामियफलसिद्धी होज्जा, नहि सुकयकम्माणो नरिंदाइणो तुहाराहणाओ समिद्धिसुहमणुहवंति ।

१ सुप्रत्ययिकपुरुषशिष्टः ॥ २ अवलं° प्रतौ ॥ ३ निप्पन्न° प्रतौ ॥

देवयाए भणियं—बंभणजाइ त्ति बहुं पलविउं जाणसि–त्ति तिरोहूया देवी ।

सोमो वि निरसणो तहेव जाविउं[1] पयट्टो । जायं बत्तीसइमं लंघणं, पणट्ठा वाणी, विसंठुलीहूया दिट्ठी, पलीणा परिफंदाइणो कायवावारा, पसरिया दीहदीहा समीरुग्गारा । 'उवट्ठिया बंभणहच्च' त्ति भीया भगवई अणग्घरयणपंचग[2]मादाय आगया माहणसमीवं, भणिउं पवत्ता य—भो बंभण ! सो एस तुह बलाभिओगो, जइ एत्तो वि किं पि होइ ता होउ, गिण्हसु ता इमाणि कोडिसुवन्नमोल्लाणि पंच रयणाणि, मुंचसु मे पट्ठिं ति । रयणाइं से समप्पिऊण गया भगवई जहागयं । **सोमो** वि तदुवलंभदिव्वोसहीमाहप्पसविसेस[3][4]पुणन्नवी[भू]यदेहो सणियसणियं समुट्ठिऊण पुव्वाणीयं पच्छयणं[5] उवभुंजइ । उवलद्धसरीरावट्ठंभो य **वडवासिणिं** चिरं नमंसिऊण पट्ठिओ संनयरहुत्तं[6] । अंतरा य वच्चंतो पत्तो तक्करेहिं । निसट्ठं[7] ताडिऊण जट्ठि-मुट्ठीहिं कंठचलणदाणपुव्वयमुद्दालियाणि अमंदमक्कंदंतस्स रयणाणि । गया य तक्करा अभिमयं पयं । इयरो वि चोरविस्सुमरियमेक्कमसिपुत्तियं[8] गहाय गाढकोवो तेहिं चेव पए[हिं] नियत्तिऊण गतो **वडवासिणीए** पुरओ । रत्तच्छिविच्छोयभीमाणणो[9] य भयवइं भणिउमाढत्तो—

आ कडपूयणि ! पावे ! मडयट्ठि[10] ! पइंट्ठियच्छिदुप्पेच्छे[11] ! । वीसत्थभत्तघाइणि ! डाइणि ! इण्हिं कहिं जासि ? ॥ १ ॥

१ यापयितुम् ॥ २ °चममा° प्रतौ ॥ ३ तदुपलम्भदिव्यौषधिमाहात्म्यसविशेषपुनर्नवीभूतदेहः ॥ ४ °सपणुन्न° प्रतौ ॥ ५ पथ्यदनम् ॥ ६ स्वनगराभिमुखम् ॥ ७ अत्यन्तम् ॥ ८ चौरविस्मृतामेकामसिपुत्रिकाम् ॥ ९ रक्ताक्षिविक्षेपभीमाननः ॥ १० मृतकार्थिनि ! प्रकृष्टाक्षिदुष्प्रेक्षे ! विश्वस्तभक्तघातिनि ! ॥ ११ °इट्ठिय° प्रतौ ॥

दिन्नो अत्थि, जइ दढं तुह चित्तावट्ठंभो ता आगमिस्सकसिणचउद्दसीए पउणो हवेज्जासि । मए वुत्तं—भयवं ! एवं काहामि । पइक्खणदिणगणणेण य कह कह वि मणोरहसएहिं समं समागया कसिणचउद्दसी । पुट्ठो गुरू—किमिह किच्चं ? ति । सिट्ठं गुरुणा । तदुवइट्ठोवक्कमसणाहो य गुरुणा समं पत्तो मसाणं । आलिहियं गुरुणा मंडलं । उवणीयं च मए पुव्वदिट्ठमविणट्ठसरीरं तरुवरसाहावलंबियं मडयं । ण्हवियं चंदणविलित्तं च तं करयलारोवियनिसियकरवालं सोवियं मंडले । आइट्ठो अहं गुरुणा—वच्छ ! इमस्स पायतलहट्टिं[1] पयट्टेसु त्ति । 'तह' त्ति काउमारद्धो य अहं । गुरू वि बद्धपउमासणो नासग्गासंगिनिच्चलनयणो कयसरीररक्खो रइऊण समीरं मंतं सुमरिउं पवत्तो । अह जाव महापयत्तसमुच्चारियमंतक्खरो किं पि कालं ज्झाणेण चिट्ठइ ताव गाढजरापरिगयसरीरगमिव पकंपिऊण तं मडयं उट्ठिऊण अट्टट्टहासं पहसिउमारद्धं । अच्चंतं विम्हिओ जोगंधरो अहं च । पम्मुक्कज्झाणाभिनिवेसेण[2] य जोगंधरेण पुच्छियं मडयं—हंहो ! को एस प्पहासविडंबणाडंबरविसेसो ? **असंपाडियसमीहियकज्जस्स हासो हि परं परिभवट्ठाणं**, ता अच्छउ ताव अन्नं, हासस्सेव निवेदेउ देवो कारणं–ति भणिए वागरियं मडएण—

जइ मंत-तंतविहिणा हवेज्ज निप्पुन्नयाण वि य अत्थो । मिउपिंडमंतरेण[3] वि घडो वि सेज्झेज्ज ता नूणं ॥ १ ॥
नोवादाणेण[4] विणा निमित्त-सहकारिकारणुक्करिसो । सामरिसो[5] वि हु कज्जं पसाहिउं थेवमवि सक्को ॥ २ ॥

१ पादसेचनम् । तलहट्टिः–सेचनम् ॥ २ प्रमुक्तध्यानाभिनिवेशेन ॥ ३ मृत्पिण्डमन्तरेणापि ॥ ४ न उपादानकारणेन विना ॥ ५ °सो व हु प्रतौ । 'सामर्षोऽपि' सविचारोऽपि ॥

ति साहिऊण गयावेसं निवडियं भूमीए मडयं । निराणंदा य ते गया सं ट्ठाणं । नवरं मडयवयणमणुसरंतो पालगो लग्गो नयरदुवारदेसवत्तिणं सुंदराभिहाणं भूयं पइदिणपूयाकरणेण आराहिउं । कइवयदिणावसाणे य भत्तिसारपूयापुरक्काररंजिओ [भूओ] सुमिणे पालगस्स कहेइ—भो महाणुभाव !

सित्तो वि चिरं निंबो किं दाउं तरइ [1]अंबयफलाइं ? । आराहिओ य भिच्चो किं [2]वियरइ सामिसम्माणं ? ॥ १ ॥
किं वा रोहणरयणाण गाम[3]गड्डासु संभवो होज्जा ? । अप्प[4]ड्ढिओ हु देज्जा किं वा अम्हारिसो [5]खुद्दो ? ॥ २ ॥
ता भद्द ! वच्चसु तुमं एयादूरड्ढियम्मि जिणभवणे । अच्चेसु य जत्तेणं तिहुयणनाहं जिणं संतिं ॥ ३ ॥
एयस्स दंसणेण वि विलयं गच्छंति पुव्वपावाइं । पूयाकरणेणं पुण वंछियलाभो त्ति किं [6]चोज्जं ? ॥ ४ ॥
देवाण एस देवो पुज्जो ससुरा-ऽसुरस्स वि [7]जयस्स । एत्तो य वंदणिज्जो न पूयणिज्जो य अन्नो वि ॥ ५ ॥

एवं च सुमिणं दट्ठूण पबुद्धो पालगो 'किमिंदजालं ? उय [8]विप्पयारणप्पयारो ? बुद्धिविब्भमो वा ?' इच्चाइ [9]संसयंतो वारिओ गयणगिराए । जायसुमिणनिच्छओ य गतो संतिजिणिंदमंदिरं । दूराओ च्चिय सायरकयप्पणामो 'एसो सो देवाहिदेवो' त्ति [10]हरिसभरनिब्भरुब्भिज्जमाणरोमंचो अमा[णा]णंदसंदोहसंदिरनयणो सविसेसं जयगुरुपायपूयणं पइदिणं काउमारद्धो ।

अह एक्कम्मि वासरे देवाणंदो नाम साहू गुरुवयणेण एगागी विहरंतो आगओ चेइयवंदणत्थं । [11]जयनाहं वंदिऊण

१ आम्रफलानि ॥ २ 'वितरति' ददाति ॥ ३ °गड्डासु प्रतौ । ग्रामगर्त्तेषु ॥ ४ °प्पड्डिओ प्रतौ ॥ ५ क्षुद्रः ॥ ६ आश्चर्यम् ॥ ७ जगतः ॥ ८ विप्रतारणप्रकारः ॥ ९ संशयानः ॥ १० हर्षभरनिर्भरोद्भिद्यमानरोमाञ्चः अमानानन्दसन्दोहस्यन्दनशीलनयनः ॥ ११ जगन्नाथम् ॥

उवविट्ठो समुचियट्ठाणे । दिट्ठो य अणेण पालगो [1]अहाभद्दयत्तणेण देवपूयाई कुणमाणो । 'भद्दगो एसो' त्ति मुणिओ मुणिणा । पूयाविहाणावसाणे य संभासिओ सो, जहा—

भद्द ! सहलं तुह जम्म-जीवियं, अविकला कल्लाणसंपत्ती, पत्तीभूओ अप्पा परमपयसुहस्स, सहस्सहा फलियं [2]सुकयकप्पसाहिणा, साहिणीहूया सुरेसरसिरी जमेवंविहा परमगुरुचरणे रई । केवलं वच्छ ! सव्वा वि किरिया विहिणा कीरंती फलसाहिगा, विवज्जए दोससंभवाओ, तेण तुममिममणुसासिज्जसि—कयहत्थ-पायपक्खालणेण, दव्वओ सुइणा, भावओ य उवसंतकसाएण, [3]धोय-सेया-ऽगंजियबीयवत्थेण उत्तरियसंजमियवयणेण राय व्व कासवएण अच्चंतोवउत्तेण आसायणाजणियसंसारदंडभीरुणा देवाहिदेवस्स पूया कायव्वा । सा य [4]पुप्फ-धूव-गंध-ऽक्खय-पईव-बलि-फल-[5]जलपत्तप्पयाणभेएण अट्ठहा । अतहाविहसामत्थसंभवे य एत्तो एक्केक्कपूयंगसंपाडणमवि परमब्भुदयहेउं वन्नंति गुरुणो । तहाहि—

कंदो[6]ट्ट-कुमुय-केयइ-जाई-वेइल्ल-बउलसरियाहिं । पूयंता जयनाहं हुंति सुपुज्जा किमिह चोज्जं ? ॥ १ ॥
घणसारा-ऽगरुधूवो डज्झंतो [7]पसरिउद्धधूमधओ । कप्पदुमंकुरो इव जिणपुरओ [8]सहइ वड्ढंतो ॥ २ ॥
पसरंतपरिमलेहिं वासेहिं अच्चिओ तिलोक्कगुरू । [9]वासमवस्सं भव्वाण जणइ सग्गा-ऽपवग्गेसु ॥ ३ ॥

१ यथाभद्रकत्वेन ॥ २ सुकृतकल्पशाखिना, स्वाधिनीभूता सुरेश्वरश्रीः ॥ ३ धौतश्वेताऽगञ्जितद्वितीयवस्त्रेण उत्तरीयसंयतवदनेन राजा इव 'काश्यपेन' नापितेन ॥ ४ पुप्फ-गंध-धूव-ऽक्खय-धूव-बलि° प्रतौ ॥ ५ जलपात्रं—जलकुम्भः ॥ ६ नीलकमलकुमुदकेतकीजातिविचकिलबकुलमालाभिः ॥ ७ प्रसृतोर्द्धधूमध्वजः ॥ ८ राजते ॥ ९ 'वासं' निवासम् ॥

तिजयपहुपायं[1]पुरतो अक्खंड-ऽप्फुडियअक्खयक्खेवो। अक्खेवेणं अक्खयसिवसोक्खसिरिं जणे कुणइ ॥ ४ ॥
जिणरूवपयडणपरं पईवमब्भुच्छलंतसिहिजालं। बोहंतो[2] अपईवं पइत्तमज्जिणइ भुवणम्मि ॥ ५ ॥
अक्खंडखंडखज्जयपमुहबली दिज्जए जिणिंदस्स। तत्ती[3] भवाणं पुण अहो! महं[4] नाहमाहप्पं ॥ ६ ॥
परिपाग[5]पिंग-पसरंतपरिमलुंप्पील[6]फलकयच्चस्स। जिणतरुणो उयह अपुप्फविविहफलदाणसामत्थं ॥ ७ ॥
जलपुन्न[7]पुन्नकुंभो पुरओ वि हु भुवणभाणुणो ठविओ। विज्झवइ[8] भवभयग्गिं उग्गं पि महच्छरियमेयं ॥ ८ ॥
संसत्त[9]दुट्ठनिट्ठुरकम्मट्ठयगंठिनिट्ठवणनिट्ठो। अट्ठप्पयार[पू]अं जं [अ]रिहइ ? तेण अरहंतो ॥ ९ ॥
अहवा किमित्तिएणं ? अन्नं पि जमत्थि वत्थु सुपसत्थं। दीसंतसुंदरं तं पि देज्ज पूयाकए पहुणो ॥ १० ॥ किंच—
पुप्फाई दव्वत्थय[10]मकुणंतो कह गिही हवइ जोग्गो। भावत्थयस्स[11] ? ता पढमभूमिगाए जइज्ज इहं ॥ ११ ॥
अन्नो वि सावयविही[12] सुविहियमुणिणा निवेइओ तस्स। तेणावि अब्भुवगतो सम्मं धम्मेक्कचित्तेण ॥ १२ ॥
इय भवकयाणंदो देवाणंदो मुणीसरो तत्तो। पारद्धकिच्चकरणाय विहरिओ विरहिओ[13] तमसा ॥ १३ ॥

१ °यपर° प्रतौ ॥ २ 'बोधयन्' दीपयन् 'अप्रतीपं' प्रतिपक्षवर्जितं पतित्वमर्जयति ॥ ३ तृप्तिः ॥ ४ महद् नाथमाहात्म्यम् ॥ ५ परिपाकपिङ्ग-प्रसरत्परिमलसमूहफलकृतार्चस्य। जिनतरोः पश्यत अपुष्पविविधफलदानसामर्थ्यम् ॥ ६ °लुंपील° प्रतौ ॥ ७ जलपूर्णपुण्यकुम्भः ॥ ८ विध्यापयति भवभयाग्निम् ॥ ९ संपत्त° प्रतौ। संसक्तदुष्टनिष्ठुरकर्माष्टकग्रन्थिनिष्ठापननिष्ठः। अष्टप्रकारपूजां यद् अर्हति तेन अर्हन् ॥ १० द्रव्यस्तवम् ॥ ११ भावस्तवस्य ॥ १२ श्रावकविधिः ॥ १३ विहरिओ प्रतौ। विरहितः 'तमसा' अज्ञानेन पापेन वा ॥

एसो हं तुह कंठे खिवामि नियं[1]अंतमालमविलंबं[2]। रत्तकण्णई[3]रदामं वज्झस्स व मा कुण विगप्पं ॥ २ ॥
रयणप्पयाणकाले वि भिउडिभीमाणणाए तुह नायं। लाभो इमाण न चिरं हढेण जाओ थिरो होही ॥ ३ ॥
इय जा जमजीहं पिव भीमं छुरियं करेणं[4] घेत्तूण। अच्चंतमेगचित्तो न विदारइ नियमुदरं सो ॥ ४ ॥
ता मुणियतन्निच्छयाए[5] जायघिणाए देवयाए खग्गधेणुजुत्तं करं खलिऊण दिन्नाणि अमुल्लाणि दस रयणाणि भट्टस्स। अदंसणीहूया देवया। पहिट्ठो भट्टो पट्ठिओ सनयरं। नवरं गिरिनईमज्झमवयरियस्स तस्स भूरिवारिपूरहीरमाणस्स खलिय[6]गयणो भवियव्वयावसेण सुगोविया वि रयणगंठी पब्भट्ठा। 'देवयादुव्विलसियं एयं' ति पुणो वि समुप्पन्नगाढतरकोवो वडवासिणीए 'सहस च्चिय चियाजलियजलणमज्झे पविसामि' त्ति कयनिच्छओ धाविओ पच्छओमुहं। वियाणियतं[7]दब्भुवगमा य तं वडं उज्झिऊण वडंतरमल्लीणा भगवई। इयरो वि गओ तं वडं। अदिट्ठभयवईरूवो मुणियपरमत्थो विलक्खो 'सच्चं निप्पुन्नतो' त्ति जायबोहो गओ जहागय—न्ति।
ता जोगंधर! सोमो व्व कीस निप्पुन्नओ वि होऊण। मंताइसाहणेणं मुहा कयत्थेसि अप्पाणं? ॥ १ ॥ छ ॥
पडिबुद्धो जोगंधरो, उवसंहरियं मंतसाहणं, खामियं मडयं। एत्थंतरे विहलियपरिस्समो पालग्गो पाएसु मडयस्स पडिऊण विन्नविउं पवत्तो—सामि! पसीयसु पसीयसु, को एत्तो उवाउ ? त्ति। तओ 'देवयापूयणं परं सव्वसंपयाणं मूलं'

१ °मि नियमं निय° प्रतौ ॥ २ निजान्त्रमालाम् ॥ ३ °णइरनामं दामं प्रतौ ॥ ४ °रेणु घे° प्रतौ ॥ ५ ज्ञाततन्निश्चयया 'जातघृणया' जातदयया ॥ ६ स्खलितगतेः ॥ ७ °तदुब्भव° प्रतौ ॥

सारेण पइदिणं जिणिंदचलणे । एवं वचंति वासरा ।

अन्नया य एस तुह अमच्चजीवो अज्जुणतो नाम सावओ, अणेगकुग्गहग्घत्थमाणसो, [1]एगपक्खनिक्खेवखीणमइबलो, अणेगकुभावणाहिं अप्पाणं च परं च वुग्गाहिंतो, सग्गामाओ विसिट्ठलोगेण निवासिओ, गाम-नगराइसु परिब्भमंतो आगतो कोसंबीए । भवियव्वयावसेण य जाओ तुमए सह तस्स मीलगो । सव्वायरेण भणिओ तुमं तेण—भो सत्थवाह ! जहा [2]रूवगो बहुसो सुपरिक्खिऊण पणियं च सम्मं पेहिऊण घिप्पइ एवं धम्मकिच्चं पि सुविणिच्छियं काउं जुत्तं, तुमं च धम्मत्थी वि मुद्धो व्व लक्खिज्जसि, न विचारेसि वत्थुतत्तं, सव्वत्थ वि गड्डरियापवाहेण वट्टसि । तुमए भणियं—वंदामि सावय !, साहेसु केरिसो वत्थुवियारो ? त्ति । अज्जुणेण भणियं—निसामेहि,

एसो हि जिणधम्मो छज्जीवनिकायरक्खणपहाणो, अओ सच्चित्तपुप्फाइपरिहारेण वासाइणा देवपूया उचिया । अक्खय-वत्थ-बलिपूया वि बाढमजुत्ता, तदुवभोगिणो नि[3]द्धम्मसत्त[4]स्साणंतसंसारवडणहेउभावाओ । चेइयवंदणपयट्टस्स य पूयं-गहत्थस्स साहुदंसणे वि नमोकारकरणमजुत्तं, पूयंगस्स नि[5]म्मल्लदोसभवणप्पसंगाओ त्ति । दुद्ध-दहिमाइएहिं जि[6]ण्णहवणकरणं पि तिरि[7]क्खिसरीरसंभवत्तेण दूरमासायणाकरमेव, ता गंधोदयमेव ण्हवणकज्जे निद्दोसं जुज्जइ त्ति । एत्तियपयत्थे सम्ममव-

१ एकपक्षस्थापनक्षीणमतिबलः अनेककुभावनाभिः ॥ २ रूप्यकः बहुशः सुपरीक्ष्य पण्यं च सम्यक् प्रेक्ष्य गृह्यते एवं धर्मकृत्यमपि सुविनिश्चितं कर्तुं युक्तम् ॥ ३ निर्धर्मसत्त्वस्यानन्तसंसारपतनहेतुभावात् ॥ ४ °स्सामंत° प्रतौ ॥ ५ निर्माल्यदोषभवनप्रसङ्गात् ॥ ६ °णभवण° प्रतौ ॥ ७ °रिक्खस° प्रतौ । तिरश्चीशरीरसम्भवत्वेन ॥

गच्छसु, पच्छा अन्नं पि कहिस्सामि तुमए ।

सत्थ[1]वाहेण जंपियं—नाहं एवंविहविचारविवेयमवगच्छामि, ता एहि साहूण समीवे, ततो जं तुमं ते य विणिच्छिऊण साहिस्सह तं करिस्सामि । गा[2]ढधिट्ठिमाभिणिविट्ठचित्तेण पडिवन्नमज्जुणएण । गया दो वि साहूण समीवे । निवेइया नियपरूवणा । भणिओ य साहूहिं अज्जुणतो—

धम्मप्परूवणाए केण निउत्तो सि मूढ ! किं न सुयं ? । धम्मो जिणपन्नत्तो पकप्पजइणा कहेयव्वो ? ॥ १ ॥
हे[3]उनहं नयनयणं चउरणुजोगकमं समयसीहं । अदिट्ठसरूवं को[4]ल्हुगो व्व कह कहसि जणपुरओ ? ॥ २ ॥
उस्सग्ग-ऽववायाणं सरूवलेसं पि नेव जाणासि । धम्मस्स को व कस्स व अहिगारी ? एयमवि मूढ ! ॥ ३ ॥
[5]सव्वारंभरयाणं छज्जीववहाउ अविरयमणाणं । दव्वत्थउ च्चिय परं भवागडावडणआलंबो ॥ ४ ॥
जिणभवण-बिंबठावण-जत्ता-पुप्फाइपूयणारूवो । दव्वत्थओ त्ति सिद्धो गिहीण इयरासमत्थाण ॥ ५ ॥
पुप्फाई वि निसिद्धं जइ थेवोवकमं पि मूढ ! तए । ता चेइयाइकरणं बहुआरंभं सुपडिसिद्धं ॥ ६ ॥
जिणभवणाणमकरणे बिंबाणमठावणे य तुज्झ मए । तित्थुच्छेयाईया हुंती दोसा बहुपयारा ॥ ७ ॥ किंच—
देह-गिहाइयकज्जे आरंभं नो निरुंभसि अणज्ज ! । कायवहो त्ति निसेहसि जिणपूयं अहह ! तुह मोहो ॥ ८ ॥

अधिकार्यपेक्षया विविधैर्द्रव्यैर्जिनपूजनस्यादूषितत्वम्

१ °वाह जं° प्रतौ ॥ २ गाढधृष्टिमाभिनिविष्टचित्तेन ॥ ३ हेतुनखं नयनयनं 'चतुरनुयोगक्रमं' चत्वारोऽनुयोगाः—शास्त्रव्याख्यानभेदा एव क्रमाः—चरणानि यस्यैतादृशं समयसिंहम् ॥ ४ शृगालः ॥ ५ सर्वारम्भरतानां षड्जीववधाद् अविरतमनसाम् द्रव्यस्तव एव परं भवावटापतनालम्बः । अवटः—कूपः ॥

चेइयपूयाईणं करणे तित्थप्पभावणाईया । दीसंति बोहिजणगा वावारा णेगसुहजणगा ॥ ९ ॥
जइ पुण पोसहनिरया सच्चित्तविवज्जया जइसरिच्छा[1] । उत्तरपडिमासु ठिया पुप्फाई ता विवज्जंतु ॥ १० ॥
पूयंगवग्गहत्थो[2] न नमइ साहुं पि जं पि वुत्तमिणं । तं पि हु पलावमेत्तं[3] सबुद्धिपरिकप्पणाजणियं ॥ ११ ॥
विणओ हि धम्ममूलं जहोचियं सो हु साहुमाईसु । वायनमोक्काराई अप्पडिसिद्धो य सिद्धंते ॥ १२ ॥
न य एत्तियमेत्तेण वि दूसणमावडइ करयलगयस्स । पूयंगस्स अभत्ती य जिणवरे जणविरुद्धं वा ॥ १३ ॥
जं पि य दुद्धाईहिं न्हवणनिसेहं करेसि जयगुरुणो । आसायण त्ति तं पि हु न जुत्तिजुत्तं ति पडिहाइ ॥ १४ ॥
सिद्धंते न निसेहो सुम्मइ[4] एयस्स न य विरुद्धमिणं । गोरोयण-मयमय[5]-कुंकुमाण देवे वि जुंजणतो ॥ १५ ॥
अतहाविहुब्भवं[6] पि हु पवित्तभावेण जं पसिद्धमिणं । तं नेव विरुद्धं लोग-सत्थपडिसेहविरहाओ ॥ १६ ॥
न य दुट्ठा वि हु देवा दुद्धाईहिं न्हविज्जमाणंगा । रूसंती थेवं पि हु अवि वरदाणुम्मुहा[7] हुंति ॥ १७ ॥
वत्तणुवत्तपवत्ता[8] दीसइ चिरकालिया य एस विही । गीयत्थाणुन्नाया चिरकइबद्धाऽणुवत्ता[9] य ॥ १८ ॥
आसायणदोसो वि हु विसिट्ठ-अविणट्ठदुद्धमाईहिं । ण्हवणम्मि कीरमाणे होइ जढो भाववुड्ढी य ॥ १९ ॥
जइ पुण न तहा भावो कस्स[इ] दुद्धाइणा उ संभवइ । गंधोदयं पि जुज्जइ जह भावो होइ तह किच्चं ॥ २० ॥

१ यतिसदृशाः ॥ २ पूजोपकरणव्यग्रहस्तः ॥ ३ प्रलापमात्रं स्वबुद्धिपरिकल्पनाजनितम् ॥ ४ श्रूयते ॥ ५ मृगमदः—कस्तूरिका, कुङ्कुमं—केशरम् ॥ ६ अतथाविधोद्भवम् ॥ ७ वरदानसम्मुखाः ॥ ८ व्यक्त्यनुव्यक्तिप्रवृत्ता ॥ ९ चिरकविबद्धाऽनुवर्तिता च ॥

तत्तो अहं 'तह' त्ति गुरुगिरं[1]मवधारिऊण भावसारं सवन्नुपूयापमुहकिच्चेसु सविसेसं बद्धुज्जमो जाओ । पइदिण[2]जिणच्चण[3]ज्जणियसुकयपगरिसेण खओवसमगयतहाविहलाभंतरायकम्मो कालक्कमेण विउलधणलाभभागी सव्वजणपूयणिज्जो परमं सवत्थ पसि[द्धि]मुवागओ । कालक्कमेण मरिऊण सोहम्मे देवत्तणं पत्तो । तत्तो य चुओ वेयड्ढगिरिपरिसरमंडणे देवाण वि दुल्लहे गयणवल्लहे नयरे अवंतिविजयस्स रन्नो पुत्तत्तणेणं उववन्नो, पइट्ठियं च पभंकरो त्ति नामं । सो य एस अहं आबालकाल[4]ओ च्चिय साहुपज्जुवासणपरो, पुवब्भासेण जिणपूयणे बाढं बद्धलक्खो, संसारियकज्जनिरवेक्खो कालं वोलेमि ।

अन्नया य केवलिणो समीवे सुया धम्मकहा, जायं जाईसरणं, पाउब्भूया सविसेसं धम्मवासणा । परूविओ य भगवया अक्खेवेण संसारसमुद्दपारनयणसमत्थो बोहित्थो व भावत्थओ । अभिरुइओ य मज्झं । तओ इहेव अडवीए एगसिंगगिरिम्मि काराविऊण आइदेवाययणं, पयट्टाविऊण जत्तामहूसवं, कयसवसंगपरिच्चागो पवन्नो समणधम्मं मि[5] । ता महाराय ! जं तुमए पुच्छियं[6] पवज्जाकारणं तमिमं भावत्थयजणणसभावं दवत्थयरूवं ति, नावरं इट्ठवियोगाइ संकणिज्जं ति ॥ छ ॥

तुट्ठो राया सम[म]च्चेण, कयप्पणामो पुच्छियं पवत्तो य—भयवं ! पसायं काऊण साहेह, को इमस्स सगिहनिवाससुहपच्चूहस्स हेऊ कम्मविसेसो जेणेवं रोर व वट्टामो ? । केवलिणा भणियं—निसामेह—

अत्थि कोसंबी नाम नयरी । तत्थ तुमं महाराय ! धम्मो नाम सत्थवाहो वत्थवो अहेसि । पूएसि य नियविहवाणु-

१ °गिरिम° प्रतौ ॥ २ प्रतिदिनजिनार्चनजनितसुकृतप्रकर्षेण क्षयोपशमगततथाविधलाभान्तरायकर्मा ॥ ३ °च्चनज्ज° प्रतौ ॥ ४ °कारओ प्रतौ ॥ ५ अस्मि ॥ ६ प्रष्टुम् ॥

एवं निसामिऊण सुमरियपुव्वभववुत्तंता भयभीया निवडिया केवलिचरणेसु अमच्च-रायाणो, विन्नविउं पवत्ता य—भयवं ! अवितहमेयं, ता देह अणुग्गहं काऊण अम्ह एयस्स दोसस्स पायच्छित्तं ति। केवलिणा भणियं—जिणपूयापयत्तो चेव इह पायच्छित्तं, न तुम्ह वयाइसु जोग्गया अज्ज वि अत्थि त्ति। अब्भुवगयमेयं अमच्च-नरिंदेहिं।

केवलिकयपणामा य गया पुव्वुत्ते एगसिंगगिरिवरम्मि। पारद्धा य [1]तद्देसवत्तिसयंपरूढकमल-केयइ-केसर-सरसवेइल्ल-मालईमालाहिं नाभिनरिंदनंदणं आइदेवं तिसंज्झमवि पूइउं। चिरकालेण य खवियं तं दुरज्जियं कम्मसेसं।

समागयं च इओ तओ परिभमंतं तेसि चातुरंगं बलं। दिट्ठो य गाढपरितुट्ठेहिं बलाहिव[पभि]ईहिं राया, महियलविलुलंतमउलिमंडलेहिं पणमिऊण विन्नत्तो य—देव ! कुणह नियदंसणजलेण सगामा-ऽऽगरस्स नियजणवयस्स विरहहुयवहमहादाहोवसमं, आरुहह करेणुगं ति। ततो राया [2]चिरविप्पओगसंभरियसुहि-सयणुक्कंठाहिट्ठियहियओ वि पहाणचीणंसुयाइपूयंगेहिं भावसारं आइतित्थयरं पूइऊण थुणिऊण य सुचिरं, विन्नविउमाढत्तो—

देवाधिदेव ! यदि तावकपादपद्मसङ्कीर्तनस्य फलमस्ति तदाऽस्तु शश्वत्।
[3]त्वत्पूजने जनित[4]सम्मदि मे प्रवृत्तिरासंसृति क्षतपुराकृतदुष्कृतौघा ॥ १ ॥

१ तद्देशवर्त्तिस्वयंप्ररूढकमलकेतकीकेसरसरसविचकिलमालतीमालाभिः ॥ २ चिरविप्रयोगसंस्मृतसुहृत्स्वजनोत्कण्ठाधिष्ठितहृदयः ॥ ३ तत्पू° प्रतौ ॥ ४ °सम्मुदि प्रतौ ॥

दौर्गत्य-रोग-रिपु-दौस्थ्य-विपन्निपात-बन्धूपघातजनिताभिरपि व्यथाभिः।
वात्याभिरद्रिपतिवन्न स पीड[1]यतेऽस्मिन्, यो नित्यमादृतमतिर्जिनपूजनायाम् ॥ २ ॥
मूढाः स्तुवन्तु परिचिन्तितदानशक्तियुक्तानि कल्पविटपिप्रभृतीन्यहं तु।
चिन्ताव्यतीतफलदानसहं भवाब्धेरुत्तारकं च जिनपूजनमेकमीहे ॥ ३ ॥
इति नरपतिरर्हत्पूजना-ऽऽशंसनायां, क्षणमुपहितचित्तः पर्युपास्याऽऽदिदेवम्।
निजनगरमयासीत् केवली च व्यतीताखिलभवकृदघौघा मोक्षलक्ष्मीमवाप ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे पूजाधिकारे प्रभङ्करकथानकं समाप्तम् ॥ १३ ॥

चेइयबिंबाईणं न कालदुत्थाइए विणा दव्वं। काउं तीरइ चिंता ता वड्ढण-रक्खणं भणिमो ॥ १ ॥
[2]निप्पाइयम्मि य गिही जिणभवणाइम्मि सत्तिअणुरूवं। चेइयदव्वं सव्वायरेण चिंतेज्ज [3]वड्ढेज्ज ॥ २ ॥
गाम-पुर-खेत्त-[4]सुंकाइएसु कारेज्ज रायवयणेण। [5]देवद्दायं तक्कारणेण जिणदव्ववुड्ढि त्ति ॥ ३ ॥
वुड्ढिं णीयस्स दढं चेइयदव्वस्स रक्खणुज्जुत्तं। किं पि हु जणं निरूवेज्जऽवज्जभीरुं अलुद्धं च ॥ ४ ॥
जह तह परि[6]व्वओ वि हु कुसलेण इमस्स नेव कायव्वो। देसाइदुत्थिमाए अवि अन्नत्तो अभावम्मि ॥ ५ ॥

१ °डयतस्मि° प्रतौ ॥ २ निष्पादिते ॥ ३ वट्टेज्ज प्रतौ। वर्धयेत् ॥ ४ शुल्कादिकेषु ॥ ५ 'देवदायं' देवभागम् ॥ ६ °रिच्चओ प्रतौ। परिव्ययः ॥

एयस्स रक्खणम्मि सक्खं चिय रक्खिओ भवे धम्मो । न य एत्तो वि हु परमं अन्नं वन्नंति गुणठाणं ॥ ६ ॥
जिणपवयणवुड्ढिकरं पभावगं नाण-दंसण-गुणाणं । जिणदव्वं रक्खंतो परित्तसंसारिओ होइ ॥ ७ ॥
जिणपवयणवुड्ढिकरं पभावगं नाण-दंसण-गुणाणं । जिणदव्वं वड्ढंतो[1] तित्थयरत्तं लहइ जीवो ॥ ८ ॥
चोएइ चेइयाणं इच्चाइगिराए जइ जईण पि । वुत्तं रक्खणमेयस्स ता गिहत्थाण किं वच्चं[2] ? ॥ ९ ॥ तथाहि—
चोएइ चेइयाणं गाम-सुवन्नाइं गाव-रुप्पाइं । लग्गंतस्स हु मुणिणो तिकरणसुद्धी कहं नु भवे ? ॥ १० ॥
भन्नइ एत्थ विभासा जो एयाइं सयं विमग्गेज्जा । न हु तस्स होज्ज[3] सुद्धी अह कोइ हरेज्ज एयाइं ॥ ११ ॥
सव्वत्थामेण[4] तहिं संघेणं होइ लग्गियव्वं तु । सचरित्त-ऽचरित्तीणं एयं सव्वेसि[5] कज्जं तु ॥ १२ ॥
एयं चिय साहारणदव्वं पि करेज्ज तदवरं नवरं । चेइय-बिंबच्चण-संघपोग्गयाईणि (?) से विसओ ॥ १३ ॥
किर चेइयस्स दव्वं कज्जे उवजुज्जई जिणस्सेव । साहारणदव्वं पुण उवजुज्जइ सव्वठाणेसु ॥ १४ ॥
ता इममवि कायव्वं वड्ढेयव्वं[6] च रक्खियव्वं च । अन्नत्तो सइ लाभे वयणीयं[7] एयमवि नेव ॥ १५ ॥
भंगे देसाईणं कुतित्थिएहिं समं च कलहम्मि । दंसणकज्जे य परेऽणुन्नाओ एयदव्वओ ॥ १६ ॥ किं बहुणा ?—
चेइयदव्वं साहारणं च जो दुहइ[8] मोहियमईओ । सो जिणमयं पि न मुणइ अहवा बद्धाउओ पुव्विं ॥ १७ ॥
इय सव्वपयारेहिं अरक्खणे रक्खणे य एयस्स । जे दोस-गुणा तेसु दिट्ठंतो भायरो दोन्नि ॥ १८ ॥ तहाहि—

१ वट्टंतो प्रतौ ॥ २ वाच्यम् ॥ ३ °ज्ज सिद्धी प्रतौ ॥ ४ सर्वस्थाम्ना ॥ ५ °व्वे वि क° प्रतौ ॥ ६ °वट्टेय° प्रतौ ॥ ७ व्ययनीयम् ॥ ८ द्रुह्यति ॥

॥१०२॥

जिणबिंबपूयणाईसु जस्स भावो जहिं जहिं रमइ । सो तस्स मोक्खहेऊ ता न खमो एगपक्खगहो ॥ २१ ॥
अक्खय-वत्थाईणि य परउवओगि त्ति नेव जुत्ताइं । णंतभवहेउ[1]भावा एयं पि विगप्पणामेत्तं ॥ २२ ॥
जइ भावदोसविरहा पूयाकारिस्स एस दढदंडो । ता साहुभूरिदाणे अजिन्न मरणे य रिसिघाओ ॥ २३ ॥
जिणभवणाईणं पि हु कारवणे जं भगाण (?) हेउत्ते । भूरिभवदोसभावा तदकारवणं परं इट्ठं ॥ २४ ॥
मा सवहा वि कुग्गहसिप्पिविकप्पणविमोहिया भद्दा ! । अच्चंतबहुस्सुयसंसिए वि भावे विसंकेह ॥ २५ ॥
न हि पुव्वमुणीसरदिट्ठमग्गमवहाय सम्मइघडिओ[2] वि । अन्नो विज्जइ पंथो सिद्धिपयट्टाण सत्ताण ॥ २६ ॥
एवं सिक्खविओ वि हु अज्जुणतो अज्जुणो[3] व्व जडपयई । अवमन्नियमुणिवयणो न पवन्नो तह वि नियदोसं ॥ २७ ॥
तुमए वि तस्स पंथो सत्थाह ! समत्थिओ हि सुकरो त्ति । सच्छंदपयाराओ[4] सुहे ण विलसंति बुद्धीओ ॥ २८ ॥

एवं च दुवे वि तुब्भे जिणपूया[5]विसयकुग्गहनिग्गहियविसुद्धपरिणामा, परेसिं पि समुप्पाइयमइविब्भमा, जइगुरु[6]पूयाविच्छेयावज्जियसुकयंतरायदोसेण घत्था य मरिऊण, असुभट्ठाणेसु उप्पत्ति-मरणदुक्खाइं अणुभविऊण चिरकालं, तहाविहपुव्वजम्मसुकयवसेण संपइ अमच्च-रायत्तणेण उववन्ना । तस्स पुव्वदुक्कयसेसस्स अजिन्नस्स एसो अडइनिवडणाइरूवो[7] दुव्विलसियविसेसो । ता भो महाणुभाव ! पुव्वदुच्चरियं सरमाणा तह कहं पि सुचरिएसु पयट्टह न जहा एवंविहविडंबणाभायणं हवह त्ति ॥ छ ॥

१ नन्नभ° प्रतौ ॥ २ स्वमतिघटितः ॥ ३ अर्जुन इव ॥ ४ स्वच्छन्दप्रचाराः शुभे न विलसन्ति बुद्धयः ॥ ५ जिनपूजाविषयकुग्रहविनिगृहीतविशुद्धपरिणामौ ॥ ६ जगद्गुरुपूजाविच्छेदावर्जितसुकृतान्तरायदोषेण ग्रस्तौ ॥ ७ अटवीनिपतनादिरूपः ॥

एगया य सो मज्झरत्तसमए कहं पि भवियव्वयावसेण ववगयनिद्दावेगो सेज्जं विमोत्तूण समुट्ठिओ संतो जाव पुव्वदिसि-हुत्तं पलोएइ ताव पेच्छइ उप्पयंत[1]-निवयंतभासुरसुरविसरसरीरपहापडलपल्लवियं व गयणंगणं। तं च पेच्छिऊण चिंतिउं पवत्तो—

मज्झं ताव इमं निसाए समओ नो कोइ भाविज्जए, नूणं सारहिणो रविस्स न घणो विज्जुच्छडाडंबरो।
अच्छिन्नप्पे[2]सरत्तणेण न फुडं उक्का[3]फुलिंगुग्गमो, ता किं होज्ज बिभीसिय ? त्ति अहवा गंतूण दंसामिं[4] नं ॥ १ ॥

तओ निबिडदुकूलनिबद्धपरियरो, परियराओ[5] खग्गं अप्पाणं च भिन्नं काऊणं, केणइ अमुणिज्जंतो, सणियसणियं नीहरिओ रायभवणातो। लग्गो तम्मग्गेण। पुरओ[6] वच्चमाणस्स रायसुयस्स विजियबउल-मालइ[7]परिमलुग्गारो वियंभिओ दिसि दिसि झंकारमुहरमहुयरविलुप्पमाणो सरसपारियायतरुमंजरीजालपरागपब्भारो। सवण[8]गोयरमुवगतो य निच्चलकुरंगवग्गनिसा[9]मिओ मणहरवेणु-वीणाविणिग्गयसरसरसीकयकलयंठकंठगायणपयट्टिओ गीयनिनातो[10]। पयडीहूओ य साणंद[11]विंदारयविंदविहिज्जमाणो चेलुक्खेव-कुसुमंजलीपयाणप्पमुहो पूयासक्कारो। विणिच्छियं च कुमारेण—नूणं एसो सो देवागमो त्ति, किं पुण कारणं एत्थाऽऽगमणस्स ?—त्ति विभाविउं पट्ठिओ पुरओ।

१ °तमिवयं° प्रतौ ॥ २–प्रसरत्वेन ॥ ३ उल्कास्फुलिङ्गोद्गमः ॥ ४ °मिमं प्रतौ। पश्यामि तम् ॥ ५ खड्गपक्षे परिकरः–कोशः, आत्मपक्षे परिकरः–परिवारः ॥ ६ पुरतो व्रजतः राजसुतस्य विजितबकुलमालतीपरिमलोद्गारः विजृम्भितः दिशि दिशि झङ्कारमुखरमधुकरविलुप्यमानः सरसपारिजाततरुमञ्जरीजालपरागप्राग्भारः ॥ ७ °मालाईप° प्रतौ ॥ ८ श्रवणगोचरमुपगतश्च निश्चलकुरङ्गवर्गनिशमितः मनोहरवेणुवीणाविनिर्गतस्वरसरसीकृतकलकण्ठकण्ठगायनप्रवर्त्तितः गीतनिनादः ॥ ९ °ग्गत्तिसा° प्रतौ ॥ १० °निन्नातो प्रतौ ॥ ११ सानन्दवृन्दारकवृन्दविधीयमानः चेलोत्क्षेपकुसुमाञ्जलिप्रदानप्रमुखः पूजासत्कारः ॥

दिट्ठो य तहिं एगो साहू अंतगयजीवियव्वो सायरं सुरा-ऽसुरेहिं थुव्वंतो[1] सक्कारिज्जंतो य। 'किं पुण एयं ?' ति पुच्छितो णेण एक्को सुरो—भो भो ! किंनिमित्तं महाणुभावो अभूमिसंचरणो वि भविय भयवं सुरगणो एवं वट्टइ ? त्ति। सुरेण भणियं—भो रायसुया ! एत्थ एसो तवस्सी निसिपडिमं पडिवन्नो सुक्कज्झाण[2][ऽग्गि]निदड्ढघाइकम्मो समं चिय आउपमुहकम्मेहिं सरीरच्चायं काऊण निव्वाणमुवगओ, तम्महिमाकरणाय[3] एसो सुरा-ऽसुरवग्गो एवं [व]वत्थितो त्ति।

'कहिमे[4]वंविहवइयरो मए दिट्ठो सुओ ?' त्ति ईहा-ऽपोह-मग्गण-गवेसणं कुणंतस्स य रायसुयस्स जायं जाईसरणं ति। अणुसुमरिया पुव्वाणुजम्मसेविया पव्वज्जाइकिरिया। पुव्वाहीयं पि संपइपढियं व कंठे पइट्ठियं पुव्वाइसुत्तं, पच्चक्खीहूओ चक्कवालसमायारो, उज्झियसव्वसंगो य जाओ एस सयंबुद्धसाहू, विसुज्झमाणलेसत्तणेण य उप्पन्नं से ओहिनाणं। एवं च सो जुगंधरसमणो दिव्वनाणनयणो एगत्थ निज्जीवप्पएसे कयसिलासणपरिग्गहो सुत्तं परावत्तिउं पवत्तो।

अह पच्चूस[5]वियंभियसिसिरसमीरुब्भवंतसीयत्ता। गयनिद्दा सेज्जाए न सेज्जवाला पलोयंति ॥ १ ॥
रायसुयं सविसाया सभया ता सव्वओ निरूवित्ता। साहंति मंति-अंतेउरीण राईसराणं च ॥ २ ॥
अह तद्देसजणेणं साहुपउत्ती निवेइया तेसिं। तो ते विम्हियहियया विच्छायमुहा निराणंदा ॥ ३ ॥
अंतेउरं पि गुरुविरहवेयणावाउली[6]कयसरीरं। उज्झियसिंगारं दूरमुक्कनीसेसवावारं ॥ ४ ॥

१ स्तूयमानः संस्क्रियमाणश्च ॥ २ शुक्लध्यानाग्निनिर्दग्धघातिकर्मा ॥ ३ °कार° प्रतौ ॥ ४ कहमे° प्रतौ ॥ ५ प्रत्यूषविजृम्भितशिशिरसमीरोद्भवच्छीतार्ताः ॥ ६–व्याकुलीकृत–॥

करुण-विलापः

[1]अणवरयसोगभरनीहरंतबाहप्पवायधोयमुहं । हा हा हयास ! हयविहि ! किमेवमेयं ? ति जंपंतं ॥ ५ ॥
तं देसमणुप्पत्तं जत्थ महप्पा स चिट्ठइ निविट्ठो । दिट्ठो य तदणुरूवो पत्थिवमाईहिं सो कुमरो ॥ ६ ॥
तो गाढचित्तसंतावववससमुट्ठिंतसोगआवेगा । सव्वे वि रोविऊणं पलावमिय काउमारद्धा ॥ ७ ॥
हा वच्छ ! केसगुच्छो [2]तोविच्छसमच्छवी घणसमिद्धो । कह लुंचिऊण खित्तो तणं व तुमए महीवट्ठे ? ॥ ८ ॥
एवंविहदे[3]हसिरी सिरीसकुसुमाइरेगसुकुमारा । किं वच्छ ! काउमुचिया कट्ठाणुट्ठाणठाणमहो ? ॥ ९ ॥
एयं च वच्छ ! वच्छ[4]त्थलहारिहारावलीविरायंतं । कह सोहिही वहूयणमित्थं तुमए पउत्थम्मि ? ॥ १० ॥
[5]तुहविप्पओगपज्जलिरजलणजालावलीकवलियाण । पुत्त ! न निवाइ तणू सागर-सरियाजलेहिं पि ॥ ११ ॥
तं लायन्नं [तं] तुज्झ विलसियं तं च निरुवमं रूवं । मइपगरिसो य सो वच्छ ! इण्हि कम्मि पलोएमो ? ॥ १२ ॥
इय अवरोह-वहूजण-मंति-पहाणेहि परिवुडो राया । तं दट्ठुं अचइंतो सु[6]दुहत्तो पडिगतो सगिहं ॥ १३ ॥

जुगंधररायरिसी वि 'असमउ' त्ति [7]तेणमकयपन्नवणो सयण-[8]परयणेसु तुल्लचित्तो गामा-ऽऽगराईसु विहरिउं पवत्तो । पडिबोहिया य बहवे महाराय-मंति-सामंत-सेट्ठि-सेणावइसुया गाहिया सव्वविरइं । तेहि य अहिगयसुत्तत्थेहिं परियरितो भद्द-

१ अनवरतशोकभरनिःसरद्बाष्पप्रपातधौतमुखम् ।। २ तमालवृक्षसमच्छविः घनसमृद्धः ॥ ३ °**देवसि**° प्रतौ ॥ ४ °**च्छयल**° प्रतौ । वक्षस्थलहारिहारावलीविराजत् ।। ५ त्वद्विप्रयोगप्रज्वलनशीलज्वालावलीकवलितानाम् । पुत्र ! न निर्वाति तनुः सागरसरिज्जलैरपि ॥ ६ °**दुहुत्तो** प्रतौ । सुदुःखार्त्तः ॥ ७ तेषाम् 'अकृतप्रज्ञापनः' अकृतप्रतिबोधः स्वजनपरजनेषु ॥ ८ °**परिय**° प्रतौ ॥

अत्थि भुवणललामभूया, [1]परपक्खभय-डमरदूरपरिहरिया, हरितणु व [2]सस्सिरीया, विरिंचिमुत्ति व [3]सव्वतोमुही, [4]विसाला वि अलंघ-गुरुपायारपरिगया, वि[5]क्खाया [वि] वलयालंकिया, बंगविसयतिलयतुल्ला **विस्सपुरी** नाम नयरी। तं च अखंडभुयदंडारोवियभूभारो रक्खइ **खेमंकरो** नाम नरवई। जेण य [6]समरंगणवेइमंदिरे अचुक्कमुक्कसरधोरणीविरइयमंडवे चाउद्दि[सि]पयट्टमत्तदोघट्टवियडकुंभयडकलसपरंपरापरिगए सुहडकवयावडंतखग्गनिहसुट्ठियपज्जलंतजलणविजयलच्छी वहु व पढंतेसु भट्टथट्टेसु परिणीया । स महप्पा जयसुंदरीपमुहावरोहपरिगतो सिवदत्ता[7]इमंतिजणारोवियरज्जचिंतो सुहेण कालं [8]वोलेई ।

अन्नया य जातो से [9]सुस्सिमिणसूइओ पुत्तो, कयं वद्धावणयं, प[10]यट्टियं च से जुगंधरो त्ति नामं । एवं च सो कुमारो समं नरवइमणोरहेहिं वड्ढिओ देहोवचएणं कलाकोसल्लेण य, परिणाविओ य कइवयरायधूयातो । दिन्ना य से भुत्ती, तहिं च परमसुहेण रायसिरिं अणुभुंजइ त्ति ।

१ परपक्षभयविप्लवदूरपरिहृता ॥ २ यथा हरितनुः 'सश्रीका' लक्ष्म्याख्यपत्नीयुता एवं पुर्यपि 'सश्रीका' शोभायुक्ता ॥ ३ यथा विरञ्चिमूर्त्तिः चतुर्मुखत्वात् सर्वतोमुखी एवं पुर्यपि द्वारमहाद्वारोपेतत्वात् सर्वतोमुखी ॥ ४ या 'विशाला' विगतप्राकारा असौ कथं अलङ्घ्यगुरुप्राकारपरिगता भवति इति विरोधः, तत्परिहारस्तु 'विशाला' विस्तीर्णा इति ॥ ५ या 'विखाता' विगतखातिका असौ कथं वलयालङ्कृता भवति इति विरोधः, तत्परिहारस्तु 'विख्याता' प्रसिद्धा इत्यर्थविधानात् ॥ ६ समराङ्गणवेदीमन्दिरे अभ्रष्टमुक्तशर(मुक्तासरिक)धोरणीविरचितमण्डपे चतुर्दिक्प्रवृत्तमत्तहस्तिविकटकुम्भतटकलशपरम्परापरिगते सुभटकवचापतत्खड्गनिघर्षोत्थितप्रज्वलज्ज्वलने विजयलक्ष्मीः वधूरिव पठत्सु भट्टसमूहेषु परिणीता ॥ ७ °**इमंतज**° प्रतौ ॥ ८ **वोहेइ** प्रतौ ॥ ९ सुस्वप्नसूचितः ॥ १० °**यट्टियं** प्रतौ । प्रतिष्ठितं च ॥

तप्पुव्वभवजाइपुच्छणत्थं च जाव जोडिय पाणिसंपुडं पवत्तो, ताव [1]वणमुहविणिस्सरंतपूयगंधा[2]णुगमच्छियाजालाउलो, अच्चंतकुट्ठवाहिविणट्ठसव्वंगो, निहाणं व सयलरो[3]गाणं, आगरो व्व गरुयपावरासी[4]णं, आधारो व्व तिक्खदुक्खाणं, खाणि व्व दोगच्चस्स, निवासो व्व स[5]यलजणावमाणणाणं, 'अइसयनाणि' त्ति जणाओ निसामिऊण तं पएसमागओ एगो रोरथेरपुरिसो त्ति। तओ ति[6]पयाहिणिऊणं तं समणं कयसंथवणो उद्धट्ठिओ चेव पज्जुवासिउं पवत्तो। निवडिया य तम्मि सयलस्स सभावत्तिणो जणस्स निब्भरकरुणाभरमंथरा दिट्ठी। 'अहह! किं पुण पुरा कयमणेणं?' ति जि[7]न्नासा जाया। अह जावऽज्ज वि न सो रोगिपुरिसो किं पि जंपइ ताव भणियं राइणा—भयवं! बहुं किं पि पुच्छियव्वमत्थि परं अच्छउ ताव अन्नं, किमणेण महाणुभावेण [8]दुत्थियसत्थसीमापत्तेण रोगिणा पुव्वं कयं? ति साहेह, महंतं कोऊहलं ति। साहुणा कहियं—महाराय! जं पुव्वं तुमए पुच्छिउमिच्छियं तस्स वि एयमेव नि[9]व्वयणं ति एगचित्तो निसामेसु—

कुसुमे व [10]पंहियमणमहुयरमणोहरे कुसुमपुरे नयरे सव्वन्नुपायपूयण[परो] परोवयाराइगुणसंगतो सागरो नाम सेट्ठी अहेसि, सुदंसणा से भज्जा। ताणं दुवे पुत्ता—जेट्ठो अहं नंदो नाम, कणिट्ठो य एसो रोगिपुरिसजीवो नागदेवनामो त्ति। दोण्ह वि अम्हाणं परोप्परगाढसिणेहसारं सव्वत्थ वट्टमाणाण गयाइं कइय वि वच्छराइं। [11]सुरिंदचावचावलत्तणेण य संसारियभावाणमतक्कियमेव तहाविहसरीरकारणं पाविऊण पंचत्तमुवगया अम्मा-पियरो। कयाइं तप्पारलोइयकायव्वाइं। कालक्कमेण जाया अप्पसोगा, चिंतिउं पवत्ता य घरकज्जाइं। अन्नया य अतहाविहं ववहारसुद्धिं पलोइऊण नागदेवस्स भणियमेगंते मए—

> हे भाइ! किं व सीसउ तुह [1]जुत्ता-ऽजुत्तजाणनिउणस्स?। तह वि हु सिणे[2]हचावलऽवलेवओ किं पि साहेमि ॥ १ ॥
> कट्ठेण सं[3]ठविज्जइ अप्पा सुगुणे गिरिम्मि उवलो व्व। पाडिज्जइ पुण तत्तो उ[4]वक्कमेणं सुलहुणा वि ॥ २ ॥
> न य [5]एक्कसिं पि अवजसपंकियसीलस्स पुण मणूसस्स। सुकयसहस्सजलेहि वि तीरइ पक्खालणं काउं ॥ ३ ॥
> ता ववहारविसुद्धिं [6]वयणपइट्ठं च लोभनिग्गहणं। दक्खिन्न-दयासारत्तणं च सीलं च धरसु दढं ॥ ४ ॥ किं बहुणा?—
> लहुओ वि [7]वुड्ढचेट्ठियमणुचिट्ठसु तह कहं पि हे भाइ!। जह होसि तुमं जेट्ठो विसिट्ठमज्झम्मि पुज्जो य ॥ ५ ॥
> गउरवमुविंति हि गुणा न दूरमावज्जिया वि लच्छीओ। [8]सिंबलिकुसुमं पाडलदलं पि कमलं व नो सहइ ॥ ६ ॥
> पुव्वपुरिसज्जियं पि हु माहप्पं जहतहाववहरंतो। हारिहिसि लोयमज्झे ता एत्तो कुणसु जं जुत्तं ॥ ७ ॥

नागदेवेण वुत्तं—सव्वहा खमह मह एगमवराहं, नाहमेत्तो पुव्वपुरिसकमविरुद्धं किं पि करिस्सं, सम्मं कयं तुब्भेहिं [9]जंमहमेयातो दुट्ठचेट्ठियाउ नियत्तिओ। एवं च पुव्वपवाहेण ववहरिउमारद्धा अम्हे। थोयकालेण वि पत्ता लोयमज्झे पसिद्धी,

---

१ वनमुखविनिस्सरत्पूतिगन्धानुगमक्षिकाजालाकुलः अत्यन्तकुष्ठव्याधिविनष्टसर्वाङ्गः ॥ २ °णुगंधम° प्रतौ ॥ ३ °गाणमाग° प्रतौ ॥ ४ °सीणमाधा° प्रतौ ॥ ५ °यणज° प्रतौ ॥ ६ त्रिः प्रदक्षिणां कृत्वेत्यर्थः ॥ ७ जिज्ञासा ॥ ८ दुःस्थितसार्थसीमाप्राप्तेन ॥ ९ उत्तरमित्यर्थः ॥ १० कुसुमपक्षे प्रहृतमनोभिः—आकृष्टचित्तैः मधुकरैः मनोहरे, नगरपक्षे पथिकमनोमधुकरमनोहरे ॥ ११ सुरेन्द्रचापचपलत्वेन ॥

१ युक्तायुक्तज्ञाननिपुणस्य ॥ २ स्नेहचापल्यावलेपतः ॥ ३ संस्थाप्यते ॥ ४ प्रयत्नेनेत्यर्थः ॥ ५ एकशोऽपि अपयशःपङ्कितशीलस्य ॥ ६ वचनप्रतिष्ठाम् ॥ ७ वृद्धचेष्टितमनुष्ठीयताम् ॥ ८ शाल्मलिकुसुमं पाटलदलमपि कमलमिव न राजते ॥ ९ यद् अहम् एतस्मात् ॥

पूयाय पयं गया य रायाईणं। नवरं 'दुपरिच्चया पयइ' त्ति नागदेवो न मुयइ दुट्ठसहावं। ततो विभजिऊण घरसारं दिन्नं मए एयस्स। अणिच्छंतो वि ट्ठाविओ विभिन्नमंदिरे। भिन्नं ववहरिउमारद्धो य एसो।

अन्नया य तन्नयरसामिणा बलभद्दाभिहाणराइणा संभूयमुणिसमीवे पवन्नसावगधम्मेण परमं जिणपक्खवायमुव्वहंतेण काराविय चेईहरं, दिन्नाइं सासणनिबद्धाइं गामाइं, उवकप्पिया अन्ने वि[1] अ दायविसेसा। 'सुइसमायार' त्ति परिभाविऊण देवदविणरक्खण-वड्ढणनिमित्तं अम्हे दो वि भायरो ट्ठाविया गोट्ठियपए। समप्पितो दव्वभंडारो समं कुंचिगाहिं। [2]गाढरायवयणोवरोहेण य पडिवन्नो अम्हेहिं। [3]समयसत्थनिदंसियनाएण तव्वड्ढण-रक्खण-उचियट्ठाणविणिओगाईहिं पयट्टा चिंतिउं।

सरंते य काले किं पि किलिट्ठकम्मवसओ तुच्छ[4]धणीहूओ नागदेवो। 'सीयंता य पाणिणो पाएण निद्धम्मा हवंति' त्ति पारद्धो य एसो किं पि किं पि देवदव्वं पि उवभोत्तुं। वियाणिओ मए पन्नविओ य, जहा—भद्द !

एगत्थ सव्वपावं अन्नत्थ य देवदव्वपरिभोगो। तेणेस परिहरिज्जइ दूरं कल्लाणकामेहिं ॥ १ ॥
वरमुग्गविसं भुत्तं न देवदव्वं सुथेवमेत्तं पि। एगभवे हणइ विसं चेइयदव्वं पि भूरिभवे ॥ २ ॥
सेसाणं पावाणं विज्जइ कत्तो वि किं पि परितार्णं। देवऽत्थभोगपावं अपरित्ताणं परि[5]वंयंति ॥ ३ ॥
[6]पइजम्मरुद्ददारिद्दुवद्दुया दीहरे भवारन्ने। देवत्थभोगनिरया [निरया]इगईसु वच्चंति ॥ ४ ॥

१ वि आदाय° प्रतौ ॥ २ गाढराजवचनोपरोधेन ॥ ३ समयशास्त्रनिदर्शितन्यायेन तद्वर्धनरक्षणउचितस्थानविनियोगादिभिः ॥ ४ °धणूहू° प्रतौ ॥ ५ °रिचयं प्रतौ। परिवदन्ति ॥ ६ प्रतिजन्मरौद्रदारिद्र्योपद्रुता दीर्घे भवारण्ये। देवद्रव्यभोगनिरता निरयादिगतिषु व्रजन्ति ॥

जाइगयनिवहाणुगओ एरावणो व्व विरायमाणो सव्वत्थ विहरिऊण जणणि-जणगाइसयणवग्गपडिबोहणत्थमुवागओ विस्सपुरीए नयरीए, ट्ठिओ एग[म्मि] विजणे उज्जाणे। जाणियतदागमणो य [1]पहरिस-सोगसंभाराऊरिज्जमाणहियओ सममंतेउरी-पमुहपहाणपरियणेण खेमंकरनरिंदो उज्जाणे गओ। वंदिओ सव्वायरं जुगंधरमुणिवरो। दिन्नो य भगवया वि[2]यसियसयवत्तविब्भमं चक्खुं खिवंतेण धम्मलाभो। आसीणो य समुचियट्ठाणे सपरियणो रा[3]या पउरलोगो य।

भगवया वि [4]कुमुय-मयंकाणुगारिदसणमऊहनिव[5]हेजलपक्खालियाए व्व धवलाए भारईए पयंपिउमाढत्तं—भो महाराय ! तइया [6]अम्हअतक्कियसव्वविरइदंसणसमुप्पन्नतिव्वसोगसंभारा अमुणियकारणविसेसा चेव जहागयं पडिगया तुब्भे, अहं पि '[7]असमतो' त्ति समुवेक्खिय तुब्भे अन्नत्थ विहरिओ, संपयं च महाराय ! 'एस सो पत्थावो' त्ति निसामेह तक्कालतहागहियदिक्खानिमित्तं ति। हरिसविसप्पंतवयणवियासेण य भणियं राइणा—भयवं ! एयमेयं, साहेह परमत्थं ति। ततो जुगंधरमुणिणा सिट्ठो सव्वो [8]रयणिमज्झसमुप्पन्नदेवागम-मुणिसक्कारदंसणजायजाईसरणाई वुत्तंतो। तं च निसामिऊण सपउर-परियणो परमं पमोयपब्भारमुवगओ नराहिवो।

१ प्रहर्षशोकसम्भारापूर्यमाणहृदयः ॥ २ विकसितशतपत्रविभ्रमम् ॥ ३ °या पउरपउरलोगो प्रतौ ॥ ४ कुमुदमृगाङ्कानुकारिदशनमयूखनिवह-जलप्रक्षालितया ॥ ५ °हमऊहजल° प्रतौ ॥ ६ अस्मदतर्कितसर्वविरतिदर्शनसमुत्पन्नतीव्रशोकसम्भाराः अज्ञातकारणविशेषाः ॥ ७ 'असमयः' अनवसरः ॥ ८ रजनिमध्यसमुत्पन्नदेवागममुनिसंस्कारदर्शनजातजातिस्मरणादिवृत्तान्तः ॥

देवत्तणेण पंचमकप्पम्मि । [1]अहाउयखएण य चुओ समाणो कुंडिणपुरे इब्भस्स संखसेट्ठिणो पुत्तत्तणेण समुप्पन्नो । कयं धवलो त्ति नामं । पत्तो कालक्कमेण [जोव्वणं] । जाया सुसाहूहिं समं संगई, अभिरुइओ जिणधम्मो, तदेगचित्तत्तणेण कालं वोलेमि। पच्छिमकाले य पवन्ना पव्वज्जा । सव्वसावज्ज[वज्ज]णुज्जमेण य सम्मं पालिऊण पज्जन्तकयाणसणो विहिपरिचत्तपाणो पाणयकप्पे कप्पाहिवत्तसुहं सुचिरमणुभविऊण चुओ समाणो सुमाणुसत्तं समणत्तणं च लद्धूण पुणो अ[2]च्चुए देवत्तं [पत्तो] । एवमणेण कमेण सत्तसु भवेसु चारित्तमाराहिऊण जहुत्तं, जयंतविमाणे देवसुहं च भोत्तूण, भो महाराय ! तुह सुओ जाओ म्हि । [3]रयणिमज्झसमयदिट्ठदेवागमाणुसारगमण-मुणिवइयरसवणजायजाईसरणपच्चक्खीभूयसुय-संजमो य समणो संवुत्तो म्हि । ता महाराय ! एयमम्ह पव्वज्जानिमित्तं ॥ छ ॥

सो पुण नागदेवो तब्भव एव गहिओ महावाहिणा विसन्नो चित्तेणं । देवदव्वोवओगदुच्चरिएण य बाढं दुगुंछमावन्नो, चिंतिउं पवत्तो य—अहो ! महाणुभावेण तइया जेट्ठभाउणा निसिद्धेण वि मए पावकारिणा खणमेत्तसुहलालसेण य अपरिभावियाणं[4]तदुक्खावडणेण अच्चंतमणुचियं देवदव्वभक्खणमणुट्ठियं, तस्सेव मन्ने एस [5]महावाहिविहुरनिवायरूवो कुसुमुग्गमो, फलमज्ज वि अन्नं भविस्सइ, ता एत्तो न जुज्जइ अत्तणो [6]उवेहणं—ति सम्मं परिभाविऊण [7]उवभुत्तदेवत्थपूरणत्थं दिन्नो धण-कणगाइओ अत्थो । थोवरिद्धित्तणेण य न सव्वविसुद्धी जाया । मरणसमए य भणिया पुत्ताइणो—अरे ! एत्तियमेत्तं दव्वं

१ यथायुष्कक्षयेण ॥ २ °च्चुओ दे° प्रतौ ॥ ३ रजनिमध्यसमयदृष्टदेवागमानुसारगमनमुनिव्यतिकरश्रवणजातजातिस्मरणप्रत्यक्षीभूतश्रुतसंयमः ॥ ४ °यानंत° प्रतौ ॥ ५ महाव्याधिदुःखनिपातरूपः ॥ ६ उपेक्षणम् ॥ ७ उपभुक्तदेवार्थपूरणार्थम् ॥

घराउ दाऊण दे[1]वस्सविसुद्धिं करेज्जह—त्ति नि[2]रूविऊण मओ एसो उववन्नो नेगासु हीणजाईसु चिरकालं ।

जहिं जहिं एस महाणुभावो, कुलम्मि उप्पज्जइ पावकम्मो। तहिं तहिं पुव्वधणं बहुं पि, एयप्पभावेण खयं उवेइ ॥ १ ॥
अणत्थसत्था बहवो पडंति, रोगा य जायंति बहुप्पयारा। अयंडचंडो कलहप्पबंधो, बंधूहिं सद्धिं च पवट्टई य ॥ २ ॥
अवन्नवाओ भमई दिसासुं, उप्पज्जई नेव रई खणं पि। दव्वज्जणत्थं च कया उवाया, न कासपुप्फं व फलंति किं पि ॥ ३ ॥
तहोवयारम्मि कए वि कोवो, परेसि संपज्जइ चंडचंडो । मित्ते वि सत्तुत्तणमेव जाइ, न किं पि कत्तो वि सुहं हवेइ ॥ ४ ॥
एवं च सव्वत्थ छुहाभिभूओ, रोगाउरो भूरिभयप्परुद्धो । उज्झिज्जमाणो जणगाइएहिं, अणिट्ठदोगच्चकरो त्ति दूरं ॥ ५ ॥
[3]महाकिलेसेणऽइवाहइत्ता, एसो पभूयं किल कालमेयं । देवत्थभोगेण विणट्ठबोही, कहं पि जाओ पुण माणुसत्ते ॥ ६ ॥
तहिं पि एवंविहभीमरूवो, असेसरोगाण दुहाण खाणी । पए पए सोगभरं धरंतो, सदुक्खसद्दं करुणं रसंतो ॥ ७ ॥
किमागओ अच्छसि कीस एत्थ, हे कुट्ठनट्ठोट्ठ ! विणट्ठदेह ! ?। अच्चंतमु[4]द्देगकरो सि जाहि, हीलिज्जमाणो स जणेण एवं ॥ ८ ॥
उल्लंबणेणं अहवाऽनलेणं, जलेण वा सेलनिवायओ वा। मरामि किं? एव विचिंतयंतो, अम्हं समीवे इय वट्टइ त्ति ॥ ९ ॥ छ ॥

एवं च पुव्वभववित्थरे जुगंधरमुणिवरेण साहिए सो नागदेवो सा य परिसा [अ[5]]वधारियनीसेसदेवदव्वोवभोगभीसणा-सुहसरूवा परमं भयपगरिसं उवगया। रोगी वि सुमरियसव्व[6]जहट्ठियपुव्वभवपरंपरावुत्तंतो भयवओ पाएसु पडिऊण पुव्वभवभाइ-

१ देयस्स वि° प्रतौ । देवस्वविशुद्धिं करिष्यथ ॥ २ 'निरूप्य' कथयित्वा ॥ ३ महाक्लेशेनातिवाह्य ॥ ४ उद्वेगकरः ॥ ५ अवधारितनिःशेष-देवद्रव्योपभोगभीषणाशुभस्वरूपा ॥ ६ °जहिट्ठि° प्रतौ ॥

सुमरणेण अच्चंतदुक्खियत्तणेण य अब्भाहओ[1] समाणो अच्छिन्नवहंतबाहप्पवाहपक्खालियवयणो[2] भणिउं पवत्तो—भयवं ! अवितहमेयं, सव्वं सरीरेण अणुभूयं मए महापावेण, किमियाणिं करेमि ? साहेह दुक्करं पि, निविन्नो हं संपइ पुव्वपावदुविलसियाओ, देह आएसं, पडामि जल-जलणाईसु, नत्थि त्थेवं पि पओयणं जीविएणं, केत्तियं वा अज्ज वि तं असुहकम्ममजिण्णं ? ति । भयवया भणियं—महाणुभाव ! जुत्तमेयं पुव्वदुच्चरियनिंदण-गरहणाईयं, केवलमणलाइपओगेण पाणच्चातो अजुत्तो, तव-नियमा-ऽणसणेहिं चेव अप्पणो परिच्चातो पसत्थो सत्थेसु गिज्जइ[3], निज्जरियप्पायं च तं असुहं कम्मं ति ।

एवं च निसामिऊण परं संसारभयमुव्वहंतो, पवड्ढमाणसंवेग-निव्वेयाइगुणगणो, पवन्नसम्मद्दंसणो, गुरुणो[4] समीवे निरागारं पच्चक्खिऊण चउव्विहाहारं, एक्कम्मि सिलायले सुसाहु व्व निच्चलचित्तो, पुणो पुणो गरिहंतो पुव्वदुक्कियाइं, संलीणंगो ट्ठिउ त्ति । मासियसंलेहणं च काऊण मओ उ[व]वन्नो अच्चुए देवलोए देवो महिड्ढिओ त्ति । तओ चुओ कइय वि भवेसु जहुत्तचारित्तफरिसणेणमपुणागमं[5] पयं पाविहि त्ति ।

अवरवासरे पुणो वि पुहइपाल[6]पुरस्सरा सा सभा[7] जुगंधरसाहुं सायरं पणमिऊण पुच्छिउं पवत्ता—भयवं ! अच्चंतपमत्ताणमम्हारिसाणं संसारसायरतरंडकप्पं किं पि उवइसह तत्तं ति । भयवया भणियं—णणु[8] पुव्वं वित्थरेण कहियमेव, विसेसओ पुण इममवधारह—

१ अब्भहिओ प्रतौ ॥ २ अच्छिन्नवहद्बाष्पप्रवाहप्रक्षालितवदनः ॥ ३ गीयते ॥ ४ °रुणा स° प्रतौ ॥ ५ 'अपुनरागमं पदं' मोक्षम् ॥ ६ °लस्स पु° प्रतौ ॥ ७ °भा ग जु° प्रतौ ॥ ८ नणु पुव्वुत्तवित्थ° प्रतौ ॥

किं बहुणा भणिएणं[1] ? जं जमणिट्ठं जणाण इह पडई । तं तं देवस्सुवभोगपावदुविलसियं जाण[2] ॥ ५ ॥

एयं च निसामिऊण अप्पणो साहुत्तणं दंसितेण असाहुणा वि किंचिसमुप्पन्नकोवेण भणियं नागदेवेण—हे भाइ ! सच्चो कओ तए लोयप्पवाओ 'जो तिणस्स[3] चोरो सो तणसयस्स वि' त्ति, जइ कह वि पुव्वकाले बालभावओ मए अवरद्धं ता किमियाणिं पि मं तहाविहत्थकारिणं[4] समत्थेसि ? किमहं देवदव्वभक्खणलक्खणं पावमायरिस्सामि ? एत्तियमेत्तं पि न जाणामि जं एवं ममाभिमुहमुल्लवसि ? । 'अजोगो' त्ति कलिऊण ठिओ हं तुण्हिक्को[5] । चिंतियं च मए—किमियाणिं कीरइ ? जइ राइणो एयवइयरो[6] साहिज्जइ ता महादंडोवणिवाओ, अह न साहिज्जइ ता देवअत्थविणासोवेक्खणजणियमहापावागमो[7], तमेयं एगत्त दोत्तडी अन्नत्तो सद्दूलो, अहवा किमेस एगजम्मसयणो काही ? अणंतजम्मवासणविवागं[9] देवदव्वभक्खणोवेक्खणं[8], ता होउ किं पि, पभाए गंतूण राइणो देवदव्वभंडारसमप्पणं करेमि—त्ति संपहारिऊण पसुत्तो रयणीए । भवियव्वयावसेण य समुप्पन्नं सूलं, कया केइ मंत-तंताइणो उवाया, न जाओ को वि पडियारो, अवि य वुड्ढिं सविसेसं गयं । तदहिगत्तणेण य निच्छिओ मए अप्पणोऽवसाणसमओ । तओ सुमरितो भावसारं संसारसारंगकेसरिकिसोरो वीयरागो गुरुणो य, कया सव्वसत्तखामणा, विहियं सागारमणसणं, पंचनमोक्कारं परावत्तयंतो मरिऊण उववन्नो

१ °णियं जं प्रतौ ॥ २ देवस्वोपभोगपापदुर्विलसितं जानीहि ॥ ३ तृणस्य ॥ ४ तथाविधार्थकारिणं समर्थयसि ॥ ५ मौनमित्यर्थः ॥ ६ एतद्व्यतिकरः कथ्यते ॥ ७ देवार्थविनाशोपेक्षणजनितमहापापागमः । तदेतदेकत्र दुस्तटी अन्यतः शार्दूलः ॥ ८ °वेखण° प्रतौ ॥ ९ अनन्तजन्मवासनविपाकं देवद्रव्यभक्षणोपेक्षणम् ॥

[1]सत्थत्थभावगा पुण कहं पि चुक्का[2] विसिट्ठमग्गातो । [3]नाणंकुसवसपत्ता[4] गय व मग्गम्मि लग्गंति ॥ ५ ॥
न वि तं करेइ देहो न य सयणो नेय वित्तसंघाओ । जिणवयणसवणजणिया जं संवेगाइया लोए ॥ ६ ॥ किंच—
कंखइ लोगो सोक्खं[5] तं पुण धम्माओ सो विवेयाओ । सो सत्थस्सवणाओ ता त[6]स्सवणुज्जमो जुत्तो ॥ ७ ॥
अच्चंतजीववहनिरयमाणसा विगयसव्वकरुणा वि । निच्चं पि य [...] अवुल्लाविणो वि विणया[उ] हीणा[7] वि ॥ ८ ॥
सत्थसवणाणुरागेण ओयपत्ता[8] इहं महब्भुदयं । पावियसमीहियत्थो **सिरिगुत्तो** [इह] उदाहरणं ॥ ९ ॥

तहाहि—अत्थि **मगहाविसयालंकारकप्पा**, कप्पवासिसमाणरूव[9]सुंदेराइगुणमणुयलोयाहिट्ठिया, जुहिट्ठिलसेण व [10]संयाण-उलविलसियाभिरामा, मरुभूमि व वि[11]द्दुम-रिट्ठनीलुप्पीलुपसोहिया **विजयपुरी** नामं नयरी । रक्खइ य[12] तं च विक्कमेक्कधणो [13]अप्पडिमपयाव-रूव-चाग-सो[ह]ग्गाइगुणावगणियासेसमहीवालो वइरिवरूहिणीमहाखयकालो **नलो** नाम राया । सव्वंतेउर-वरिट्ठा य **पउमावई** से भज्जा । असेसदेसंतरचरणोवज्जियभूरिदव्वपब्भारो **महीधरो** नाम सत्थवाहो । **सिरी** य से भज्जा ।

१ शास्त्रार्थचिन्तका इत्यर्थः ॥ २ भ्रष्टाः ॥ ३ ज्ञानाङ्कुशवशप्राप्ता गजा इव ॥ ४ °**पन्ना ग**° प्रतौ ॥ ५ **सोगं, तं** प्रतौ ॥ ६ °**स्सधणु**° प्रतौ ॥ ७ **हीणो वि** प्रतौ ॥ ८ 'ओजःप्राप्ताः' नीरागद्वेषाः ॥ ९–रूपसौन्दर्यादि–॥ १० युधिष्ठिरसेना सदा नकुलविलसितैरभिरामा, नगरी पुनः सदानकुलानां–दानधर्मपरायणानां कुलानां विलसितैः–विलासैः अभिरामा–मनोहरा ॥ ११ मरुभूमिः विद्रुमाः–अर्कैरण्डकरीरादिक्षुद्रवृक्षाः रिष्टाश्च–काकाः नीलाश्चेत्येतेषां समूहैरुपशोभिता, नगरी पुनः विद्रुमरिष्टनीलाख्यरत्नसमूहैरुपशोभिता ॥ १२ **य तच्च वि**° प्रतौ ॥ १३ अप्रतिमप्रतापरूपत्यागसौभाग्यादिगुणावगणिताशेषमहीपालः वैरिवरूथिनीमहाक्षयकालः ॥

पुत्तो य असेसवसणकारित्तणेणं बहुसो वि[1]गुत्तो **सिरिगुत्तो** नाम ।

सो य सत्थवाहो पयई[ए] च्चिय दाण-दक्खिन्न-दया-सच्च-सोहि[2]च्चसीलो लोगाविरुद्धेणं कम्मेण वट्टंतो वि पु[3]त्ताणत्थसत्थ-उप्पित्थमाणसो आगामिदे[ज्ज]निरुंभणत्थं नरिंदमंदिरं गओ । पडिहारनिवेइओ पविट्ठो रायसभं । कयपंचंगपणिवाओ दवावियासणो निसन्नो समुचियट्ठाणे । संभासिओ सिणेहभरमंथरचक्खुक्खेवपुरस्सरं राइणा—सत्थवाह ! किमेवं ववगयपक्खवाओ व लक्खिज्जसि जमेवं चिरकालाओ आगच्छसि ? ममाणुच्चियपवित्तित्तसओ वा संभावियाबहुमा[4]णत्तउ त्ति न सम्ममवगच्छामो अणागमणनिमित्तं ति । सिरविरइयकरकमलकोसं च भणियं सत्थवाहेण—देव ! मा एवमसब्भूयं विकप्पह, सुमिणे वि [5]अदंसियएवंविहवइयराणं देवपायाणं को हि अणुच्चियं संभावेज्जा ? केवलमव[6]रावरगिहवावारविरयणाउलमाणसाणमम्हारिसाण पइदिणं देवपायारविंददरिसणे सायराणं पि पुव्वकयदुकयनिचओ चेवावरं[7]ज्झइ, न उण कारणंतरं ति । राइणा भणियं—होउ ताव, साहेसु आगम[ण]कारणं । सत्थवाहेण भणियं—देव ! बाढमिमं न कहिउं न सोढुं नावि गोविउं पारियइ,
अन्नत्तो उप्पन्नं दुक्खं अक्खि[8]ज्जई सुहेणेव । [9]अप्पसमुट्ठाणं पुण सीसइ कट्ठेण गरुएण ॥ १ ॥
तह वि हु सामिम्मि निवेइऊण दुक्खं [10]सुंतिक्खमवि होमि । सयमवगयदुक्खो हं, को व समत्थो तुमाहिंतो ? ॥ २ ॥

१ 'विगुप्तः' निन्दितः ॥ २ सौहित्यं–हितैषित्वम् ॥ ३ पुत्रानर्थसार्थव्याकुलमानसः आगामिदेयनिरोधार्थम् ॥ ४ °**णत्तउ** प्रतौ ॥ ५ अदर्शितैवंविधव्यतिकराणाम् ॥ ६ अपरापरगृहव्यापारविरचनाकुलमानसानामस्मादृशाम् ॥ ७ °**रज्जइ** प्रतौ ॥ ८ °**ज्जइ सु**° प्रतौ । आख्यायते ॥ ९ आत्मसमुत्थानं पुनः शिष्यते ॥ १० **सति**° प्रतौ ॥

तओ मुणियाभिप्पाएण राइणा काराविंयं विजणं। भणिओ सत्थवाहो—भद्द! वीसत्थो साहेसु दुक्खं। सत्थवाहेण जंपियं—निसामेउ देवो—

अत्थि कोमुइमयंकधवलस्स अम्ह कुलस्स कलंको अणत्थेक्कचित्तो सिरिगुत्तो नाम पुत्तो। सो य 'एगो' त्ति अणिवारिज्जंतो दुल्ललियगोट्ठिचेट्ठिएसु निरंतरमक्खित्तचित्तो रमइ जूयं, निवसइ पणंगणागिहेसु, पोसइ नड-चेड-चाडुयरपमुहमनिबद्धं बहुं जणं। एवं च सत्तपुरिसपरंपरागओ वि अत्थो निहणमुवागओ। वाहरिऊण य एगंते अणुसासिओ सो मए—अरे! मा अकाले च्चिय निहणमुवणेसु धणं, परिहर कुसंगं, वट्टसु विसिट्ठसमायारेण—इच्चाइ बहुविहं भणिज्जंतो वायामेत्तेण पडिवज्जिऊण सविसेसं जहिच्छं विंयंभिउं पवत्तो। मए वि तव्ववहरणं तहाविहं नाऊण संगोवियं सम्मं सव्वं घरसारं, सव्वत्थ ठविया रक्खगा, भोयणमेत्तं मोत्तुं सेसं तणं पि घेत्तुं न पारइ एसो, तह वि वसणाभिभूयत्तणेण न विरमइ जूयाइप्पसंगाओ। हारियं च बहुयं धणं। बाढं निरुद्धो दव्वत्थं सहिएण। तत्तो कहिं पि अप्पाणं विमोइऊण रयणीए अम्ह गिहसमीववत्तिसोमसेट्ठिणो भवणे पाडियं खत्तं, आयड्ढियं गेहसारं, निजुंजियं च अभिरुइयट्ठाणेसु। वियाणितो य मए एस वइयरो तदभिमयविलासिणिदासचेडियवयणाओ। रायविरुद्धसमायरणाओ य भीओ दूरमहं। सहस्सचक्खुणो य खोणीवइणो भवंति। 'जावऽज्ज वि देवो वइयरमिमं न निसामेइ ताव सयं नियदुच्चरियं साहेमि' त्ति तुम्ह समीवे

१ दुर्ललितगोष्ठीचेष्टितेषु ॥ २ °मखित्त° प्रतौ ॥ ३ 'विजृम्भितुम्' विलसितुम् ॥ ४ °याउप्प° प्रतौ ॥ ५ 'सभिकेन', द्यूतकारमुख्येन ॥ ६ °भिगय° प्रतौ । तदभिमतविलासिनीदासचेटिकावदनात्–वचनाद्वा ॥ ७ कथयामि ॥

देवद्रव्यरक्षणोपदेशः

यदि पथि सतां गन्तुं बुद्धिर्यदि प्रवरं पदं, नृप-दिविषदां प्राप्तुं काङ्क्षा श्रियोऽप्यविनश्वरीः।
यदि करगता लीलाः कर्तुं सदैव हि वासना, यदि च विपदुच्छेदच्छेका मनोरथसन्ततिः ॥ १ ॥
यदि भवमहासिन्धोरन्तं प्रयातुमहो! मतिर्यदि च सुकुलप्रत्यायातिप्रमुख्यशुभस्पृहा।
यदि च कुमुदश्वेतोदात्तत्विषा यशसा दिशः, सितयितुमलं वाञ्छा काचित् समस्ति तदा सदा ॥ २ ॥
जनयेत जनाः! जैनद्रव्याभिवृद्धिममूं विना, क्षययुजि जिनागारादौ यत् तथाविधदौस्थ्यतः।
क्व यतिविहृतिः सम्पद्येत? क्व वा जनबोधनं?, कथमिव तथा वृद्धिं गच्छेत् क्षितौ जिनशासनम्? ॥ ३ ॥
इति क्षमाधीशपुरःसराया, युगन्धरः साधुवरः सभायाः। निगद्य तत्त्वं नृपवन्द्यमानो, विहर्तुमन्यत्र चकार चेतः ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे देवद्रव्यचिन्ताधिकारे भ्रातृद्वयकथानकं समाप्तम् ॥ १४ ॥

जिनागमश्रवणम्

जिणभवणाइविहावणमणहं न विणा उ समयसवणेण। ता सिद्धंतस्सवणे करेज्ज जत्तं ति वोच्छामि ॥ १ ॥
सुस्सूसा पढमं चिय लिंगं जंपंति धम्मवंछाए। तदभावे च्चिय सत्थत्थसावणं कंठसोसकरं ॥ २ ॥
सत्थत्थसवणरहिया पसु व्व पुरिसा न किं पि जाणंति। हियमहियमजाणंता अहियं पि कहं पि कुव्वंति ॥ ३ ॥
तक्करणातो भवसायरम्मि रंगंतदुहमहावत्ते। उम्मज्जण-निम्मज्जणसयाइं कुम्मो व्व कुव्वंति ॥ ४ ॥

१ °रतला ली° प्रतौ ॥ २ °यति ज° प्रतौ ॥ ३ अनघम् ॥ ४ जिनागमश्रवणेनेत्यर्थः ॥ ५ चिह्नम् ॥ ६ शास्त्रार्थश्रावणम् ॥ ७ उम्मोज्ज° प्रतौ ॥

साहु तुह वयणविन्नासो जो तुमं वणियजणं चेव चोरं काउमिच्छसि, किं वाऽमुणा कवोलवाएण ? महायणो साहेउ 'केत्तियमित्तो अत्थो गओ ?' त्ति । सम्ममालोचिऊण जंपियं महायणेण—देव ! पणवीसं सुवन्नसहस्स त्ति । तओ भंडागाराओ दवाविऊण तेत्तियमेत्तं सुवन्नं, तंबोलाइदाणेण सम्माणिऊण विसज्जितो महायणो ।

राइणा वि वाहरिओ सिरिगुत्तो, वुत्तो य—अरे ! जइ कह वि सत्थवाहलज्जाए[1] तुह अजुत्तं न भासेमि करेमि वा ता किं तुह एवं वेट्टिउं[2] खमं ? अतो अज्ज वि जमिमं महाणुभावस्स सोमसेट्ठिणो दव्वमवहडं[3] तं समप्पेसु, मा अप्पाणं[4] विरुद्धकारित्तणेण अपत्तकालं चिय कालातिहित्तणं उवणेसु । सिरिगुत्तेणं भणियं—देव ! को एवंविहमघडंतं[5] खरसिंगं व वाहरइ ? किमम्ह कुले केण वि एवंविहमकज्जमणुट्ठियं ? सच्चं 'नत्थि दुज्जणाणं किं पि अवत्तव्वं' ति, अहवा किमणेण वायावित्थरेण ? एत्तो पाणियं पि पाहामि सुद्धो हं । ततो रन्ना वाहराविओ जूयवालो पुच्छिओ—अणेण सत्थवाहपुत्तेण केत्तियं दविणजायं हारियमासि ? । तेणं संलत्तं—देव ! दस सहस्सा कणयस्स, परं संपयं दिन्ना । रन्ना भणियं—अरे सिरिगुत्त ! ते सुवन्नसहस्सा दस घरे किं पि अपावमाणेण[6] कत्तो तुमए दिन्ना ? । ते[ण] जंपियं—तुम्ह पसायातो अज्ज वि पिउणो वि अत्थि तेत्तियं जेत्तियमहमुवभुंजामि । रन्ना भणियं—निरुद्धघरजहिच्छाचारस्स[7] तुह दूरमसद्दहणिज्जमेयं । तेण भणियं—जइ दूरमपच्चओ मज्झ वयणे ता अणुगिण्हउ देवो ममं दिव्वदाणेण । तओ पच्चक्खावला[वा]ओ[8] जायतिव्वकोवेण

१ °प गुह° प्रतौ ॥ २ वट्टिउं प्रतौ ॥ ३ अपहृतम् ॥ ४ °अप्पणो वि° प्रतौ ॥ ५ अघटमानं खरशृङ्गमिव 'व्याहरति' वक्ति ॥ ६ अप्राप्नुवता ॥ ७ निरुद्धगृहयथेच्छचारस्य तव दूरमश्रद्धानीयमेतत् ॥ ८ प्रत्यक्षापलापात् ॥

नरवइणा निरूविया धम्माहिगरणिया—इमं दुट्ठं देवयापुरओ फालगाहणेण विसोहिऊण मम समप्पह त्ति । 'जं देवो आणवेइ' त्ति चालिओ एसो धम्माहिगरणिएहिं । तओ विन्नत्तं सिरिगुत्तेण—देव ! को पुण एत्थ सिरए ठाहि ? त्ति । आबद्धकोवुब्भडभिउडिणा[1] य भणियं नराहिवेण—अहं सिरए होहामि त्ति । 'जत्थ राया सयमेव सिरोवट्ठावणं कुणइ तत्थ दूरं पउत्था[2] नयववत्थ' त्ति इत्थं[3] वाहरंतो नीओ कारणिएहिं देवयामंदिरं । काराविओ सचेलं ण्हाणं । जलणविंदुड्डामरं[4] बाढं धमावियं फालं । तं च सिरिगुत्तेण उम्मुक्ककेसेण सव्वजणसमक्खं सच्चसावणं[5] काऊण पुव्वकालपढियसिद्धदिव्वथंभणमन्तसुमरणपुरस्सरं सायरं करयले तहापेच्छंतस्स धम्माहिगरणियलोयस्स[6] हिमसिलासगलं व ठवियमक्खेवेण । अचिंतमाहप्पत्तणओ मणिमंताणं न लोममेत्तं पि ज्झामियमेयस्स । तहट्ठियं चेव दिट्ठं करयलं कारणिएहिं । पडिया ताला । 'सुद्धो सुद्धो' त्ति घोसियं बंभणेहिं । पक्खित्ता से सेयसुरहिकुसुममाला कंठदेसे कारणिएहिं । निवेइओ एस वुत्तंतो नरिंदस्स । चमक्किओ य एसो अविभाविय[7]सिरयगहपइन्नापगरणेण परिभाविउं पवत्तो य—

दिव्वगहणेण सुद्धम्मि तक्करे सिरिपरिग्गहपवन्नो । डंडिज्जइ पयडं तक्करो व मिवकरं रन्ना(?) ॥ १ ॥
सयमेव सिरयपक्खं लोयसमक्खं पवज्जिऊणाहं । जइ अप्पाणं चोरं व अप्पणा[8] नो निगिण्हामि ॥ २ ॥
ता सच्चवाइणो राइणो त्ति नूणं इमीए वाणीए । दिज्जउ जलंजली[9] जाव जयमिणं[10] भमउ य अकित्ती ॥ ३ ॥

१ °कोवभड° प्रतौ ॥ २ प्रोषिता ॥ ३ शीघ्रं व्याहरन् ॥ ४ ज्वलनवृन्दभयङ्करम् ॥ ५ सत्यशापनं कृत्वा पूर्वकालपठितसिद्धदिव्यस्तम्भनमन्त्रस्मरणपुरस्सरम् ॥ ६ °रणलो° प्रतौ ॥ ७ अविभावितशिरोग्रहप्रतिज्ञाप्रकरणेन ॥ ८ °प्पणो नो न गि° प्रतौ ॥ ९ °लंघली प्रतौ ॥ १० जगद् इदम् ॥

[1]परियत्तउ नयवत्ता कलुसउ कलिकालकलिलमखिलजणं । उत्तम-जहन्न-मज्झिममग्गो वि[2] समत्तणं लहउ ॥ ४ ॥
इय किं व जीविएणं देहीणं नयविहीविहीणेण ? । वरमिण्हि नवरि मरणं पच्छा वि अवस्समरियव्वे ॥ ५ ॥

एवं च विणिच्छइयमरणकायव्वेण सविसेसं सुमरिया देव-गुरुणो, वाहराविया मंतिणो, साहिओ तेसि निययाभिप्पातो । विसन्ना मंतिणो, भणिउं पवत्ता य—देव ! न जुत्तमेयं तुम्हाणं सयलमहीमहाभारसमुद्धरणधीराणं, [3]पयागरुयपुन्नपब्भारवसउ च्चिय तुम्हारिसाणमुप्पत्ती, न जहत[ह] संभविणी, ता देव ! अप्पदोसमंगीकाऊण बहुगुणं कज्जं काउं जुज्जइ । एवं च जाव पयंपंता ते चिट्ठंति ताव सणियसणियं पसरिया गरुयमंदिरेसु वत्ता, जहा—देवो [4]अपरिभावियसिरंगीकार[5]पडिण्णावसओ अप्पणो चोरदंडं काउमुवट्ठिओ त्ति । सुया य एसा वत्ता सत्थवाहेण । ततो अच्चंतमाउलचित्तो तुरियतुरियमागतो एसो रायमंदिरं, पडिहारनिवेइओ पविट्ठो सभामंडवं, कयरायप्पणामो निसन्नो समुचियट्ठाणे । लद्धावसरेण य विन्नत्तमणेण—देव ! अद्धभुत्तेण मए निसामिया असोयव्वा का वि वत्ता, आचंदकालियं विज[य]उ देवो, सयं काउं समीहिए अत्थे य देउ ममाएसं, अहमेव एयस्स अत्थस्स परमत्थओ हेउ त्ति । राइणा भणियं—साहु साहु सत्थाह ! किं भन्नइ तुह पहुभत्तीए ? । महामंतिणा भणियं—सत्थाह ! जं तुमए देवस्स पुत्तसंतियं दुव्विलसियं साहियं तं किं उद्देसमेत्तओ ? पच्चक्खदंसणाओ ? [6]पच्चइयमाणुसकहणाउ व ? त्ति साहेसु अवितहं । सत्थवाहेण भणियं—किं देवपायाणं स[7]वभिचारं कयाइ कहिज्जइ ?

१ परित्यज्यताम् ॥ २ अपि समत्वं, विषमत्वं वा ॥ ३ प्रजागुरुकपुण्यप्राग्भारवशतः ॥ ४ अपरिभावितशिरोऽङ्गीकारप्रतिज्ञावशतः ॥ ५ °पडिप्पवेसओ प्रतौ ॥ ६ प्रत्ययिकमानुषकथनात् । प्रत्ययिकः—विश्वस्तः ७ सव्यभिचारम् ॥

समागओ म्हि । ता देव ! पुव्वमणागमणस्स संपइ समागमणस्स य एयं निमित्तं ।

इण्हिं च देवो पसायं काऊण घरसारसव्वस्सं एवंविहा[1]वराहकारिणो मे गेण्हउ त्ति । राइणा भणियं—सत्थवाह ! कहं तुमं अवराहकारी । सत्थवाहेण भणियं—अवराहकारिणं जणं पोसंतो कहमिव नावराहकारी ?, यतः—

चौरश्चौरापको मन्त्री मर्मज्ञः काणकक्रयी । अन्नदः स्थानदश्चैव चौरः सप्तविधः स्मृतः ॥ १ ॥

अओ किमवरं देवपायाणं सीसइ ? । राइणा जंपियं—वीसत्थो भव, सा[2]यत्तं चेव तुह धणमम्हाणं, निरुव्विग्गो वच्चसु सगिहं । ततो दावियतंबोलो पडिगओ सत्थवाहो सगिहं ।

एत्थंतरे [3]भुयदंडारोवियसाहुलो 'अनाओ अनाउ' त्ति पोक्करंतो पविट्ठो पउरवणियलोगो । 'किमेयं ?' ति ससंभमं पुच्छियं रन्ना । निवेइयं च पडिहारेण दूरावणयमउलिणा, जहा—देव ! चोरमुसियसव्वसारं सोमसिट्ठिमणुवत्तयंतो पहाणजणो देवदंसणूसुओ चिट्ठइ त्ति । राइणा भणियं—तुरियं पवेसेहि । 'जं देवो आणवेइ' त्ति पवेसिओ लोगो, [4]उवणीयमहरिहपाहुडो पायपडणपुरस्सरं विन्नविउं पवत्तो य—देव ! बाढमसमंजसमेयं, जमेवं विजयंते वि देवे परिभमणसीले वि दंडवासियजणे घरसारो मुसिज्जइ । राइणा भणियं—अरे दंडवासिय ! को एस वुत्तंतो ? । तेण वागरियं—देव ! जइ अन्नत्तो कत्तो वि तक्करागमो हवइ त्ति ता अम्हे मोस[5]रित्थं नित्थरामो । रन्ना भणियं—जइ एवं ता पुरीवत्थव्वा चेव चोरा ? साहु

१ °वहारका° प्रतौ ॥ २ स्वायत्तम् ॥ ३ भुजदण्डारोपितशाखः 'अन्यायः अन्यायः' इति पूत्कुर्वन् ॥ ४ उपनीतमहार्हप्राभृतः ॥ ५ 'मोषरिक्थं' चौर्यद्रव्यं निस्तरामः ॥

कत्थ कत्थ तुह परिस्समो ? । तेण भणियं—किं तुम्ह एएण ? [जं] कज्जं तं साहह त्ति । ततो सिट्ठो तेहिं तहाविहसत्थाहसुयगहियफालवुत्तंतो । सम्मं परिभाविय भणियमणेणं—मह समक्खं गेण्हावेह तं सत्थाहसुयं फालं जेण मुणह जहट्ठियं ति । 'तह' त्ति पडिवन्नं सव्वेहिं । गया य बीयदिणे पुव्वोवइट्ठदिव्वदेवयाभवणं । उवेविट्ठा समुचियट्ठाणेसु नरिंदाइणो । आसीणो एगत्थ **कुसलसिद्धी** । पगुणीकओ उग्गीरियफारफुलिंगजालो फालो । वाहरिओ सत्थाहपुत्तो, वुत्तो य—अरे ! जइ सच्चं सुद्धसमायारो ता गिण्हसु इमं । पुव्वट्ठिईए पयट्टो एसो तग्गहणत्थं । एत्थंतरे **कुसलसिद्धिणा** परविज्जाछेयकारिणा मंतेणाभिमंतिऊण अक्खया पक्खित्ता चाउद्दिसिं । तप्पभावेण न जायं दिव्वथंभणं । दट्ठुं फालग्गिणा **सिरिगुत्तस्स** पाणिणो। उच्छलिओ नरवइस्स जयजयारवो । 'जहत्थनामो' त्ति पूइओ **कुसलसिद्धी** पंचंगप्पसायप्पयाणेण । इयरो निरुद्धो रायपुरिसेहिं । जायं पुरीए परमपमोयभरनिब्भरनच्चंतरामायणं महया रिद्धिसमुदएण वद्धावणं । कयभोयणाइकिच्चो य पमुइयमाणसो आसीणो अत्थाणीमंडवे राया । कयं च मंगलीयमुत्तममुत्ताकलावाइसमप्पणेण सत्थवाहपमुहपहाणजणेण रायसन्निहियलोएण य ।

एत्थंतरे विन्नत्तं रायपुरिसेहिं—देव ! तुम्ह संसयतुलारोवियजीवियस्स को दंडो कीरउ ? त्ति । राइणा भणियं—अक्खयसरीरं चेव तं वरागमेत्थाऽऽणेह त्ति । ततो सो तेहिं उवणीओ रायसभाए विगयजीविउ व्व निरुच्छाहो । संभासिओ राइणा—अरे सत्थवाहसुय ! को एस वइयरो ? त्ति । तेण वुत्तं—देवो जाणइ । राइणा भणियं—तहावि असंखुद्धमणो साहेहि

१ °विट्ठो स° प्रतौ ॥ २ °त्थमेत्थं° प्रतौ ॥ ३ 'पाणी' हस्तौ ॥ ४ परमप्रमोदभरनिर्भरनृत्यद्रामाजनम् ॥ ५ माङ्गलिकम् उत्तममुक्ता– ॥

परमत्थं । 'जं देवो आणवेइ' त्ति पयट्टो सो कहिउं, जहा—पुव्वकाले कालसीहो नाम कउलायरिओ समागओ आसि, समाणसीलत्तणेण य तेण समं मम जाया परममेत्ती, बाढं परिओसिओ य सो मए अणवरयमइरापाणपणामणाइणा, अन्नया तेण देसंतरं वच्चंतेण 'परमोवगारि' त्ति मे दिन्ना दिव्वथंभणाइणो मंता, तम्माहप्पेण य एत्थं मए अप्पा विनडिउ त्ति । मंतिणा भणियं—अरे महापाव ! न केवलमप्पा विनडिओ तुमए, देवो वि संसयतुलमारोविओ । सत्थवाहसुएण भणियं—एवमेयं, ता देह आएसं जेण अत्ताणं सत्थघाय-तरुल्लंबणाइणा वावाएमि त्ति । राइणा जंपियं—सदुकम्मणा वि हणिज्जसि लग्गो । किंच—

एवंविहदूरमकज्जमप्पणा काउमुज्जमंतस्स । जुज्जइ तुज्झ विणासो केवलमाजम्ममेत्तस्स ॥ १ ॥
लज्जिज्जइ सत्थाहस्स होउ ता दाणि दंसणेणं ते । जइ सुचिरजीवियत्थी ता उज्झसु झत्ति मज्झ महिं ॥ २ ॥

एवं च रन्ना वुत्ते किंकरनरेहिं निद्धाडिओ सो रायमंडवाओ, धिक्कारिज्जंतो य नीहरिओ नयरीओ, पयट्टो गंतुमुत्तरावहं । अइक्कंतपुव्वपुहइपालदेसो य वीसंतो कइवयदिणाइं एगत्थ सन्निवेसे, चिंतिउमाढत्तो य—अहो ! तेण पावकारिणा **कुसलसिद्धिणा** मंतवाइणा कहमहमकारणवेरिणा एवंविहं दुत्थावत्थं उवणीओ ? चुक्को नियसुहि-सयण-धणाणं दूरदेसातिहित्तणमणुपत्तो, ता होही तं किं पि दिणं जत्थ सो सहत्थेण मए हंतव्वो त्ति । एवं च सो सामरिसो गामा-ऽऽगरेसु परिभमंतो गओ

१ °म कुला° प्रतौ । नाम कौलाचार्यः ॥ २ °ओयसि° प्रतौ ॥ ३ मदिरापानार्पणादिना ॥ ४ °त्थम्मए प्रतौ ॥ ५ अत्तणं प्रतौ । आत्मानम् ॥ ६ स्वदुष्कर्मणाऽपि ॥ ७ निर्भाग्यः ॥ ८ अतिक्रान्तपूर्वपृथ्वीपालदेशश्च ॥ ९ भ्रष्टः ॥

गयपुरे । दिट्ठो य तत्थ भवियव्वयावसेण वीहीए उवविट्ठो समीवागयाकुसलो कुसलसिद्धी । ततो अविमरिसियजुत्ताऽ-जुत्तेण अंतोवियंभंतकोवानलेण अन्नस्स तिक्खग्गखग्गधेणुणा निद्दयं निहओ एसो, गओ य पंचत्तं । सिरिगुत्तो य पला-यमाणो पाविओ आरक्खियपुरिसेहिं, बद्धो समप्पिओ कारणियाणं । पुच्छिओ सो विणासकारणं । जहावट्ठियं सिट्ठमणेणं । कारणिएहिं भणियं—जइ एवं तहावि

विज्जंतम्मि नरिंदे नयमग्गवियारणाए हुंतीए । सहसाकरणमजुत्तं सेसं पि हु किं पुण विणासो ? ॥ १ ॥
दोसाण संभवे वि हु अन्नोन्नविणासणं जणेऽणुचियं । सच्छंदं चिय इहरा अमाणुसं जायइ जयं पि ॥ २ ॥
जइ रे ! वेरी तुह एस होइ ता कीस अम्ह न कहेसि ? । सयमेव कुणसि दंडं एवं सइ दोसवंतो सि ॥ ३ ॥
आरोवियम्मि दोसे कारणियनरेहिं सो तओ वज्झो । अहिगारिणा निउत्तो तरुम्मि उल्लंबणविहीए ॥ ४ ॥

अह भयभरपकंपंतकाओ चालिओ आरक्खिगेहिं, नीओ वज्झट्ठाणं, निबद्धा कंठदेसे निट्ठुरा रज्जू । भणिओ य तेहिं—आसु रे ! सुदिट्ठं कुणसु जीवलोयं, सुमरसु इट्ठदेवयं, निद्दोसा इह अम्हे, तुह दुव्विलसियाइं चेव एत्थमवरज्झंति त्ति । तओ तं भयथरहरंतदेहं किंकायव्वयवाउलं उल्लंबिऊण साहिसाहाए गया सं ठाणं निउत्तपुरिसा । सो य कढिणकंठपासयसंरुद्धस-मीरप्पयारो गलनाडीनिबिडावेढविहडियचक्खुवावारो

१ °पुरि । दि° प्रतौ ॥ २ वीथ्याम् ॥ ३ ततोऽविमृष्टयुक्तायुक्तेन अन्तर्विजृम्भमाणकोपानलेन ॥ ४ नयमार्गविचारणायां भवन्त्याम् ॥ ५ जगद् ॥ ६ असु प्रतौ ॥ ७ एवम° प्रतौ ॥ ८ भयकम्पमानदेहं किंकर्त्तव्यताव्याकुलम् ॥

अवि चलइ चलंतुत्तुंगसिङ्गग्गलग्गामरमिहुणयकीलारामरम्मो सुमेरू ।
अवि मुयइ मयंको हव्ववाहप्पवाहं, किरइ तिमिरपूरं नूण सूरो वि दूरं ॥ १ ॥
अवि सुसइ समुद्दो लोलकल्लोलरोलाउलियमयर-मीणऽक्कंतपेरंतभागो ।
न उण वयणमम्हं ता वियप्पं विमोत्तुं, कुणह जमिह जुत्तं किं खमं वोत्तुमन्नं ? ॥ २ ॥

इमं च तंन्निच्छयं सुणिऊण, सुहुमबुद्धीए वीमंसिऊण परोप्परं, जंपियं मंतीहिं—देव ! अवितहवयणो सत्थवाहो ता होयव्वमेत्थ मंताइसामत्थेणं, न अन्नहा एस वइयरो एवं संभवइ, सुव्वंति य मंताइविहिणा दिव्वत्थंभणविहीओ असाहूणं पि, तद्देवयाउ वि कयाइ निरहिट्ठाणा भवंति त्ति, अत एवोच्यते—"दिव्यस्य दिव्या गति"रिति, ता एत्थ विसिट्ठमंतवाइणो समक्खं दिव्वगहणं जुज्जइ त्ति ।

एत्थंतरे पायपणामपुव्वं विन्नत्तं पडिहारेण—देव ! दुवारे कुसलसिद्धी नाम सिद्धमंतो असेसदेसपसिद्धो सिद्धसम्म-पुरोहिएण तुम्ह दंसणत्थं उवणीओ वट्टइ त्ति । रन्ना जंपियं—सिग्घं पवेसेसु । 'तह' त्ति पवेसिओ पडिहारेण एसो, दिन्ना-सीवाओ य चेडदिन्ननियडासणे आसीणो य, सायरं संभासितो रन्ना । लद्धावसरेहि य पुच्छिओ मंतीहिं—भो सिद्धमंत !

१ °ङ्गगल° प्रतौ । चलदुत्तुङ्गश्रृङ्गाग्रलग्नामरमिथुनकक्रीडारामरम्यः ॥ २ °मिद्दण° प्रतौ ॥ ३ हव्यवाहः—अग्निः ॥ ४ लोलकल्लोलरोलाकुलितमकरमी-नाक्रान्तपर्यन्तभागः ॥ ५ °यणमीणंक्कंतपे° प्रतौ ॥ ६ तं निच्छय सु° प्रतौ ॥ ७ श्रूयन्ते ॥ ८ °लबुद्धी प्रतौ ॥ ९ °हियण तुम्ह तुम्ह प्रतौ ॥ १० चेटदत्तनिकटासने ॥ ११ रद्धा° प्रतौ ॥

वलंति भासिउं मिच्छा तुच्छा मे[1]च्छ व बालिसा । दीहं दुट्ठमपेच्छंता [2]जणाओ गंजणं तहा ॥ ३ ॥
रि[3]क्का चोरिककज्जेण सज्जो सज्जंति विकमं । न [4]मुणंति णं से भावि बंधणुल्लंबणाइयं ॥ ४ ॥
गि[5]ज्झंती य पुरंधीसु रूव-लायन्नमोहिया । विवज्जंति पयंग व्व पईव[6]ग्गंसिहासु य ॥ ५ ॥
खेत्त-धन्न-हिरन्नाइममत्तदढतंतुणा । बंधं[ति] बाढमप्पाणं कोसियार व्व कीडया ॥ ६ ॥
दुं[7]वारवेरिसं[8]कासचित्तवावारवाउला । किं[9]मिकिन्नंगसाण व्व निचंति न कहिं पि हु ॥ ७ ॥
एवं विरुद्धचेट्ठाहिं अप्पाणं अप्पणा जणा । हणंति ही ! महामोहजोहमाहप्पमेरिसं ॥ ८ ॥

एयं च पढिज्जमाणं निसामिऊण वीमंसिऊण य चिंतियमणेण—अहो ! सुपढियं जहावत्थियत्थपडिबद्धं, ता किं एयस्स समीवे गंतूण पडिवालेमि मुहुत्तमेत्तं ? पुच्छामि य करणिज्जजायं ? धम्मिओ को वि एस संभाविज्जइ एवंविहसुपढणाओ, अहवा सव्वत्थ वि अविस्सासो जुत्तो, विसेसओ अम्हारिसाण पडिकूलविहीणं, ता सिग्घमवक्कमामि एत्तो—त्ति पट्ठिओ मंदमंदमुक्कचरणो एगदिसिविभागेणं । जाव य वणनिउंजमज्झेणं कित्तियं पि भूभागं गओ ताव अत्थमिओ मायंडो । [10]पांसंडिदंडखंडेहिं व सं[11]ज्झब्भरायरेहानिवहेहिं मंडिओ गयणमंडवो, उ[12]ईंडतमकंडसंपिंडियं व मउलियं कमलसंडं, सनीडं पडुच्च

१ म्लेच्छाः ॥ २ जनेभ्यः तिरस्कारम् ॥ ३ 'रिक्ताः' स्वच्छन्दाः चौर्यकार्येण ॥ ४ **ण न सो भा**° प्रतौ न जानन्ति खलु तस्य भावि । अत्र 'ण' इति खल्वर्थे ॥ ५ गृध्यन्ति ॥ ६ °**ग्गसुहा**° प्रतौ ॥ ७ **दुव्वार**° प्रतौ ॥ ८ सङ्काशः—समानः ॥ ९ कृमिकीर्णाङ्गश्वाना इव स्थिरीभवन्ति न कुत्रापि हि ॥ १० **पसं**° प्रतौ ॥ ११ सन्ध्याभ्ररागरेखानिवहैः ॥ १२ उद्दण्डतमःकाण्डसम्पिण्डितमिव मुकुलितम् ॥

उड्डियं कारंडव-भारुंडपमुहपक्खिकुडुंबं, प[1]रिपिक्कदाडिमीफलविसरो व किं पि अरुणो प[2]सरि[ओ र]यणियरो, सुमरियनियनियनिवासा[3]इं नियत्ताइं दिसिमुहेहिंतो मय-महिस-गय-गवयजूहाइं । तत्तो चिंतियमणेण—न जुत्तमित्तो गमणं, सपच्चवाओ खु एस प्पएसो । तत्तो गंभीरसाह-प्पसाहाउलस्स वडविडविणो आरुहिऊण पसुत्तो साहाए । जाव य साहुपढियं परिभाविंतो अच्छइ ताव जाममेत्ताए गयाए रयणीए समागओ तत्थ वडकोडरे मणुयभासुल्लावकुसलो एगो सुगो । अब्भुट्ठिओ सुगीए, पुट्ठो य—किं एत्तियवेलाविक्खेवकारणं ? । तेण भणियं—अच्छरियभूयं भवदुव्विलसियं साहिउं पि न तीरइ । तीए जंपियं—सव्वहा साहेहि ताव । सुगेण भणियं—सुणसु,

अहं हि अज्ज सरस्सइतरंगिणीतीरे के[4]यारफारपरिमलुग्गारकलमकणकवलणमाकंठमणुट्ठिऊण पडिनियत्तंतो एत्तो अदूरतरतरुसण्डमंडणभूयमसोगतरुवरं पत्तो, वीसंतो य तस्स साहाए । दिट्ठो तीए हेट्ठट्ठिओ विजियकलयंट्ठाए भारईए धम्ममाइक्खमाणो एगो समणो एगस्स विज्जाहरजुवाणस्स । संबुद्धो य सो तस्स धम्मकहाए । पाएसु य भत्तिसारं निवडिऊण पुच्छिओ णेण सो नियपुव्वजम्मो त्ति । जहावट्ठिओ य सिट्ठो सो तेण भगवया । पहिट्ठो विज्जाहरजुवाणो । तत्तो मज्झ वि जायं परमकोऊहलं । ओयरिऊण तरुसाहाओ पडिओ हं साहुचरणेसु । रत्तासोयपल्लवपडि[5]च्छाएण य पाणिणा परामुट्ठो हं पट्ठीए साहुणा, पुच्छिओ य—वच्छ ! किं कीरउ ? त्ति । मए भणियं—भयवं ! पसीयसु, साहेसु किं मए पुव्वभवे कयं

१ परिपक्व—॥ २ 'प्रसृतः' उदितः 'रजनिकरः' चन्द्रः ॥ ३ °**साइन्निय**° प्रतौ ॥ ४ केदारस्फारपरिमलोद्गारकलमकणकवलनं आकण्ठं अनुष्ठाय प्रतिनिवर्त्तमानः इतोऽदूरतरतरुषण्डमण्डनभूतम् ॥ ५ °**एन य** प्रतौ । प्रतिच्छायेन—तुल्येन ॥

शुकस्य
पूर्वभवः

जेणेवं तिरियत्तणमणुपत्तो म्हि ? । साहुणा वुत्तं—आयन्नसु,

सावत्थीवत्थव्वो भवो तं भवभएण निक्खंतो । घरवासाओ घेत्तुं पवज्जं सुगुरुमूलम्मि ॥ १ ॥
छट्ठ-ऽट्ठमाइनिट्ठुरतवोविसेसं संमायमायरिउं । पज्जंते वि हु तेंदकयपडियारो वंतरो जाओ ॥ २ ॥
तत्तो य चुओ भद्दय ! मायादोसेण तेण तिरियत्तं । अणुभवसि संपइ तुमं ता एत्तो कुणसु जं जुत्तं ॥ ३ ॥
तो पुंव्वजाइसुमरणरणरणयसमुच्छलंतमुच्छो हं । ठाऊण विवन्नो इव खणमेक्कं जायपडिबोहो ॥ ४ ॥
परिभाविंतो सुत्तं पुव्वं पढियं पि इण्हि पढियं व । संजायभवविरागो तओ मुणिं भणिउमाढत्तो ॥ ५ ॥
भयवं ! किमिण्हि कीरइ ? कीरो हं तुम्ह पायसेवाए । दूरमजोग्गो जोग्गो य नेव तह सव्वविरईए ॥ ६ ॥
न य तिरियजीवियव्वे मायमई मज्झ थोयमेत्तं पि । न य तीरइ अकलंको जिणधम्मो काउमिमिणा मिं ॥ ७ ॥
ता भयवं ! कहसु ममं किं तित्थं सुप्पसत्थमच्चत्थं ? । उज्झामि जत्थ जीयं सत्थुद्दिट्ठेण विहिणा हं ॥ ८ ॥
मुणिणा सिट्ठं तित्थं न विसिट्ठं पुंडरीयसेलाओ । सिद्धाओ जहिं पुंडरियपमुहसाहूण कोडीओ ॥ ९ ॥
जइ एवं ता भयवं ! तित्थे तत्थेव अणसणं काहं । मुणिणा भणियं सिज्झउ निव्विग्घं वंछियं तुज्झ ॥ १० ॥
ता तुज्झ पिए ! इह-पारभवियमिच्छुकडं अहं देमि । खमियव्वं सव्वं सुयणु ! मज्झ थोवं पि अवरद्धं ॥ ११ ॥
एवं च वइयरं से तदेगचित्तो सु[णित्तु सि]रिगुत्तो । तं चिय मुणिउं साहुं सुगमेवं भणिउमाढत्तो ॥ १२ ॥

१ समायं आचर्य ॥ २ तदकृतप्रतीकारः ॥ ३ पूर्वजन्मस्मरणोद्वेगसमुच्छलन्मूर्च्छः अहम् । स्थित्वा विपन्न इव ॥ ४ मय° प्रतौ । मायामतिः ॥ ५ मया ॥

गयणमिव महीए भूमिवट्ठं व वोमे, दिसिंगणमिव चक्के ट्ठावियं कप्पयंतो ।
अगणियससिजुण्हा-वण्हि-मायंडतेयपसरतिमिरफुरंतं (?) मन्नमाणो व लोयं ॥ १ ॥
कहकह वि महं मुक्कं....पसंपायपीडाविहुरमभिरदेहक्खेवसंतुट्टपासो (?) ।
खरपवणपणुन्नो तालरुक्खो व सक्खा, तयणु निवडिओ सो भूमिवट्ठे [3]विचिट्ठो ॥ २ ॥

अह सिसिरसमीरणवसओ मणागमुवसंतदेहदाहो खणंतरेणोवलद्धचेयणो पच्चुज्जीवियं व अप्पाणं मुणंतो सणियसणियं मसाणपएसाओ पलाणो । 'जइ पुण कोइ अणुमग्गेण लग्गिज्जइ' त्ति पयट्टो पविट्ठो एगत्थ वणनिगुंजे । तहिं च वेणु-वीणाविजइनिनायं कत्तो वि समुच्चरंतं निसामिऊण भयतरलच्छं तरुखंधंतरिओ सव्वतो दिसं पेच्छिउं पवत्तो । दिट्ठो य अणेण एगो सज्झायं कुणंतो महातवस्सी । तं च दट्ठूण चिंतियं भयसंभंतेण अणेण—मन्ने एस कोइ अमुणा केयवेणं इय गहणे वट्टन्तो अम्हारिसाण पलोयणं कुणइ, ता रुक्खंतरिओ चेवं सुणामि । 'किं एस पढइ ?'—त्ति तस्सवणत्थं निउत्तो सवणो । एत्थंतरे पढियं साहुणा, जहा—

इंदिउद्दामदोघट्टसंघसंघट्टणट्ठिया । पयट्टंति अकिच्चेसु अणुप्पित्थमणा जणा ॥ १ ॥
कुणंति जीवसंघायघायमायसुहेसिणो । असंखतिक्खदुक्खोहखोहं तत्तोऽणवेक्खिउं ॥ २ ॥

१ भूमिपृष्ठम् ॥ २ °सिमण° प्रतौ ॥ ३ 'विचेष्टः' मूर्च्छितः ॥ ४ कैतवेन ॥ ५ °व मुणा° प्रतौ ॥ ६ इन्द्रियोद्दामहस्तिसङ्घसङ्घट्टनस्थिताः ॥ ७ अत्रस्तमनसः ॥ ८ आत्मसुखैषिणः ॥ ९ °त्तोनवे° प्रतौ ॥

सि, इण्हिं पि तह कहंचि वट्टसु जह परमुन्नइमुवेइ पुव्वपुरिसकमो, पसरइ सरयससहरुज्जला कित्ती, सामलीभवंति खलयणाण वयणाइं, हवसि पढमो सप्पुरिसाणं ति । सिरिगुत्तेण जंपियं—किं बहुणा भणिएण ?

[1]अणुमुंचामि समग्गं दुन्नयमग्गं पवड्ढियवियारं । जं सिक्खाए लग्गइ अणग्गलं पि हु मणो मग्गे ॥ १ ॥

तम्हा न कायव्वो ताय ! मइ अविस्सासो त्ति । ततो जहतह [2]पुव्वाणीयपणियविक्कयं काऊण सनयरीहुत्तं नियत्तो सत्थाहो । महरिहपाहुडपुव्वयं दिट्ठो राया, [कहिया य] सिरिगुत्तवत्ता । पवेसितो य सो राइणा महाविभूईए ।

अह सिरिगुत्तो जिणधम्मकम्मकरणेक्कबद्धपडिबंधो । पुरिसत्थेसु पयट्टो तह जह किंचि परं पत्तो ॥ १ ॥
[3]अप्पुव्वापुव्वं समयसत्थमणवरयमेव य सुणंतो । वे[4]रग्गावडियमई परिभाविंतो तयत्थं च ॥ २ ॥
सत्तीए अणुरूवं बारस वि वयाइं फासमाणो य । सुगमेव संभरंतो कालं वोले[5]इ स महप्पा ॥ ३ ॥

अवरवासरे य रयणीए पढमपओसे कयचिईवंदणस्स सामाइयट्ठियस्स सिरिगुत्तस्स समुज्जोइयदिसिमंडलो नियरूयविणिज्जियाखंडलो समागओ एगो देवो । कयसायरपणामो य पुच्छिउं पवत्तो—भो सिरिगुत्त ! अवि निव्वहइ बाहाविरहियं हियाणुट्ठाणं ? । सिरिगुत्तेण भणियं—बाढं निव्वहइ देव-गुरुपसाएण, सविसेसं च सुगाणुभावाओ । देवेण जंपियं—को पुण सो सुगो ? । ततो सिरिगुत्तेण सिट्ठो तदुवयारवुत्तंतो । '[6]अविस्सुमरिओवयारो [7]महाणुभावो' त्ति परितुट्ठो तियसो

१ अनुमुञ्चामि समग्रं दुर्नयमार्गं प्रवर्धितविकारम् । यत् शिक्षया लगति अनर्गलं अपि हि मनो मार्गे ॥ २ पूर्वानीतपण्यविक्रयं कृत्वा स्वनगर्यभिमुखं निवृत्तः सार्थवाहः ॥ ३ **अपुव्वा**° प्रतौ ॥ ४ वैराग्यापतितमतिः ॥ ५ अतिवाहयतीत्यर्थः ॥ ६ अविस्मृतोपकारः ॥ ७ **मभाणु**° प्रतौ ॥

भणइ—सिरिगुत्त ! परियाणसि तं सुगं ? । सिरिगुत्तेण भणियं—कहासेसभूयस्स कत्तो तस्स परियाणणं ? । तओ सिट्ठं देवेण, जहा—सो अहं सुगो पुंडरियगिरिकयाणसणो सणंकुमारे कप्पे देवत्तणेण उववन्नो, संपयं च तुह समीवे धम्मथिरीकरणत्थं पओयणंतरकहणत्थं च आगओ म्हि । सिरिगुत्तेण भणियं—सम्मं कयं, पसायं काऊण साहेसु [1]पओयणंतरं । देवेण भणियं—इओ दिणाओ सत्तमे दिवसे तुह जीवियंतो होही, ता [2]सम्मं धम्ममाराहेज्जसु—त्ति संसिऊण तेण बाढमभिनंदिज्जमाणो सट्ठाणं गओ तियसो ।

सिरिगुत्तो वि तस्स वयणाणंतरमेव [कय]जिणाययणपूयामहिमो पूजियसंघो खामियसव्वसत्तो दिव्वणाणिणो विजयसूरिणो समीवे संथारयदिक्खं पवज्जिय कयाणसणो पंचनमोकारपरो मरिऊण दिवं ग[उ] त्ति । पत्थावे य नयरीजणेण पुच्छिओ सूरी—भयवं ! अच्चंतनिद्धंधससमायारो वि भविय सिरिगुत्तो कहमेवंविहविसुद्धविवेयजुत्तो संवुत्तो ? । सूरिणा भणियं—सत्थसवणं एवंगुणजणगं ति, तुम्हाण वि एत्थ उज्जमो जुत्तो त्ति । किंच—

सदसदिति विवेका[त्] त्यक्तशङ्काक[3]लङ्कोऽशुभकरमिह वस्तु प्रक्रमेत प्रहर्तुम् ।
स च भवति विवेकः शास्त्रशुश्रूषयैव, श्रमविरहितचित्तस्तेन तस्यां यतेत ॥ १ ॥
स्वयमपगतबोधः प्राणिवर्गः समग्रः, कलिकलिलवशाद् वाऽतीन्द्रियज्ञो न कश्चित् ।
यदि जिनमतमेतत् सूर्यवन्नाभविष्यत्, किमिव हि न तदानीं दौस्थ्यमाप्स्यज्जनोऽयम् ? ॥ २ ॥

१ प्रयोजनान्तरम् ॥ २ **सम्मं** प्रतौ ॥ ३ °**लङ्कः**, **शुभ**° प्रतौ ॥

शिवपथरथकल्पं ध्वस्त[1]कुद्वादिजल्पं, निरुपहति च नेत्रं धीमहोद्यानचैत्रम् ।
स्मररिपुजयशस्त्रं श्री[2]जिनोद्दिष्टशास्त्रं, भवभयमपहन्[3]तुं नाप्नुयात् कोऽधिगन्तुम् ? ॥ ३ ॥
इतीहमानैर्मनुजैः समृद्धिं, गुणावलीनां च सदाऽभिवृद्धिम् ।
जिनेन्द्रशास्त्रश्रवणाभियोगः, कार्यो निरस्ताखिलदुःखयोगः ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे शास्त्रश्रवणाधिकारे श्रीगुप्तकथानकं समाप्तम् ॥ १५ ॥

सि[4]द्धंतसत्थसवणुब्भवंतनिम्मलविवेयपंडिहत्था । अब्भुच्छ[5]हंति दाणे ता तव्विहिमिण्हि वोच्छामि ॥ १ ॥
पढममिह नाणदाणं बीयं अभयप्पयाणमक्खायं । धम्मोवग्गहहेउं तइयमुवट्ठंभदाणं ति ॥ २ ॥
नाणं चिय स-परसरूवपयडणे नूण पायडपभावं । ता तद्दाणे च्चिय पढममुज्जमो जुज्जए काउं ॥ ३ ॥
दिन्नेणऽमुणा जीवो विन्[6]नाया होइ बंध-मोक्खाणं । पुन्नाणं पावाण य त[7]दुंचियकिच्चाणुरागी य ॥ ४ ॥
पावपरिहारपरमो पुन्नोवज्जणसमुज्जओ य भवे । इह-परलोए य सुही नाणपयाणप्पसाएण ॥ ५ ॥
दाणाणं सेसाणं कत्तो वि कहिंचि दीसइ विणासो । दिज्जंतस्स वि निच्चं वुड्ढि च्चिय नाणदाणस्स ॥ ६ ॥

---

१ कुत्सिता वादिनः कुद्वादिनः—दुर्वादिन इत्यर्थः ॥ २ श्रीजनो° प्रतौ ॥ ३ °न्तुं प्राप्नुयात् क्रोधेग° प्रतौ ॥ ४ सिद्धान्तशास्त्रश्रवणोद्भवन्निर्मलविवेकपूर्णाः । अभ्युत्सहन्ते ॥ ५ °पडह° प्रतौ ॥ ६ विज्ञाता ॥ ७ °दुच्चिय° प्रतौ ॥

[1]तिरितो वि तुमं धन्नो कयपुन्नो जेण सो महासाहू । सक्खाऽभिवंदिओ पुच्छिओ य संदेहसंदोहं ॥ १३ ॥
परमेगोऽहमधन्नो दिट्ठो वि स दुट्ठबुद्धिणा जेण । नो वंदिओ न पुट्ठो तहसज्झायं कुणंतो वि ॥ १४ ॥
हा पावजीव ! अज्ज वि जवियव्वो अइचिरं तए अप्पा । चिंतामणि व्व स मुणी जे[2]मवन्नानिब्भरं दिट्ठो ॥ १५ ॥
वोक्कंतवत्थुपरि[3]सोयणेण किं वाऽमुणा ? मुणिज्ज तुमं । [4]सयमुणियकज्जतत्तो ता कह जं मज्झ करणिज्जं ? ॥ १६ ॥
देव-गुरु-धम्मतत्ताइ तयणु सव्वं सुगेण से कहियं । सत्थसवणे य जे[5]त्तो उवइट्ठो इट्ठसिद्धिकरो ॥ १७ ॥
कयखामणो य तेसिं सुगो गओ वंछियत्थकरणाय । सिरिगुत्तो वि दुहट्टो तओ पयट्टो पहे गंतुं ॥ १८ ॥

सो य महीधरसत्थवाहो सनि[6]कारनगरनिवासियसुयसंतावेण सगिहे ट्ठाउमपारयंतो अत्थोवज्जणकई[7]यवेण नीहरिओ उत्तरदिसाभिमुहं । अन्नया गाम-नगराइसु सिरिगुत्तसुद्धिं कुणंतो कम्म-धम्मसंजोएण गयउरमइक्कम्म केत्तियभूभागे दिन्नावासो जाव चिट्ठइ ताव सिरिगुत्तो ततो तरुगहणाओ अइंतो संपत्तो तं पएसं । पच्चभिन्नाओ सत्थाहेण, उवगूहिओ सिणेहसारं, सायरमापुच्छिओ परिभमणवुत्तंतं । सिट्ठो य जहट्ठिओ नयरीनिग्गमाओ कीरदंसणावसाणोऽणेण नियवइयरो । तं च सोच्चा अं[8]सुयपूरपूरिज्जंतलोयणेण सदुक्खावेगगग्गरसरं भणियं सत्थाहेण—पुत्त ! को इमो कालो अम्ह अत्थोवज्जणस्स ? केवलं तुह पवासाणंतरमेव समुप्पन्नदेहदाहो तुमं चेव पलोइउं गिहाओ निग्गओ म्हि, ता पुत्त ! सुंदरं जायं जं तुमं दिट्ठो

---

१ तिर्यगपि ॥ २ यद् अवज्ञानिर्भरं दृष्टः ॥ ३ °रिमोय° प्रतौ । व्युत्क्रान्तवस्तुपरिशोचनेन ॥ ४ स्वयंज्ञातकार्यतत्त्वः ॥ ५ यत्नः ॥ ६ सनिकारनगरनिर्वासितसुतसन्तापेन । निकारः—तिरस्कारः ॥ ७ °इवयवे° प्रतौ । —कैतवेन ॥ ८ अश्रुपूरपूर्यमाणलोचनेन सदुःखावेगगद्गदस्वरम् ॥

सिग्घं पवेसेह । पवेसिया ते अणेणं, ओणपडिया रन्नो चलणेसु, खित्तो लेहो । सयमेव वाइओ नरिंदेण, जहा—

स्वस्ति । मागधवसुधासुधाधामानं श्रीजयचन्द्रं महानरेन्द्रं सुरतरङ्गिणीपरिसरवसुन्धराधिपत्यनियुक्तः सदाऽऽदेशकारी कुरुदेवः पञ्चाङ्गप्रणिपातपुरःसरं प्रणम्य विज्ञपयति । यथा—कुशलं देवपादानुस्मरणात् । केवलं 'शैवलनामा सीमालमेदिनीपालः प्रतिहतसमीपग्रामो देवदेशमुपद्रवति' इति श्रुत्वा देव एव प्रमाणमिति ॥

एवं च वाइऊणं राया पसरंतकोवपब्भारो । अरुणनयणप्पहाहिं अकालसंज्झं व दाविंतो ॥ १ ॥

रे रे ! पेच्छह पेच्छह पसुत्तकेसरिसिरग्गकंडुयणं । सेवालो बालो इव कह काउमुवट्ठिओ दुट्ठो ? ॥ २ ॥

पउरकरि-तुरय-रहवर-वीरुब्भडमिलियसयलमहिवालं । [1]बहिया ट्ठावह सेन्नं इइ भासंतो ससंरंभं ॥ ३ ॥

विन्नत्तो कुमरेहिं देव ! किमेवं समुव्वहह कोवं ? । [4]जलसंगमदुल्ललिए को सेवाले वि संरंभो ? ॥ ४ ॥

देहाऽऽएसं अम्हं जह तद्दप्पं अणप्पमवि दलिमो । को सेवगे वि संते पहुस्स सयमेव वावारो ? ॥ ५ ॥

एवं कुमरगिरं निसामिऊण राइणा पक्खित्ता मंतीसु दिट्ठी । इंगियागारकुसलेहिं तेहिं वुत्तं—देव ! साहु विन्नत्तं रायपुत्तेहिं, को अन्नो एवं पत्थावाणुरूवं वोत्तुं जाणइ ? त्ति । तओ राइणा दिन्नो आएसो जेट्ठस्स विजयचंदरायपुत्तस्स त्ति । तओ कुविओ चंदसेणो दंसियनिडालभिउडिभंगो रायसभाहिंतो नीहरिउमारद्धो । जाओ सभाखोहो । नियत्ताविओ य

१ अप° प्रतौ ॥ २ प्रचुरकरि-तुरग-रथवर-वीरोद्भटमीलितसकलमहीपालम् ॥ ३ पहिया ट्ठावण सेन्नं प्रतौ ॥ ४ सेवालपक्षे जलस्य—पानीयस्य सङ्गमेन दुर्ललिते, राजपक्षे तु जडानां—जडबुद्धीनां सङ्गमेनेति ॥

रन्ना कह कह वि, भणिओ य—वच्छ ! किमेवं कुप्पसि ? किं न याणासि तुमं लोगट्ठिइं ?—

जेट्ठम्मि गुणविसिट्ठे न कणिट्ठट्ठावणं हवइ जुत्तं । एगोयरे वि भाइम्मि वच्छ ! मच्छरियमच्छरियं ॥ १ ॥

केत्तियमेत्तं एयं ? रज्जं पि न दिज्जमाणमिच्छंति । पि[1]उनिव्विसेसबुद्धीए जेट्ठभायम्मि विज्जंते ॥ २ ॥ किंच—

वोक्कं[2]तक्कमसम्माणणं पि अवमाणमेव मन्नंति । सप्पुरिसा इयरे पुण जहतह तं चेव वंछंति ॥ ३ ॥

नयमग्गतुलारूढा वि [3]नायमुज्झंति कह वि जइ पुरिसा । ता दूरमवक्कंता पुत्तय ! [4]खत्तस्स वत्ता वि ॥ ४ ॥

एवं पन्नविओ वि नोवसंतो रायपुत्तो । तओ रायवयणेण भणिओ मंतीहिं—रायपुत्त ! कीस देववयणं पडिकूलेसि ? कीस वा सव्वत्थ वित्थ[5]रंतं 'अविणीउ' त्ति अवजसपंसुं न पसमेसि ? 'निम्मलजसप्पहाणं हि जीवियं सलहंति' त्ति किं न याणइ रायपुत्तो ? त्ति । इच्चाइभूरिवियणप[6]हाणनिवहाणुसासिज्जमाणो नायमग्गं पवन्नो चंदसेणो । इयरो वि चउरंगबलसणाहो सेवलनरिंदं पडुच्च गंतुं पयट्टो, कमेण य पत्तो सदेससीमासंधिं । समाहूया य तद्देसवत्तिणो सामंताइणो । भणाविओ दूयवयणेण सेवलराया, जहा—

अजहाबलमारंभो हि दूसणं भूसणं अओ प[7]णई । ता अप्पाणं परिभाविऊण भो ! कुणसु जं जुत्तं ॥ १ ॥

१ पितृनिर्विशेषबुद्ध्या ज्येष्ठभ्रातरि विद्यमाने ॥ २ °तकम्मस° प्रतौ । व्युत्क्रान्तक्रमसम्माननम् ॥ ३ न्यायम् ॥ ४ क्षात्रस्य वार्त्ताऽपि ॥ ५ °त्थरंतमवणीउ प्रतौ ॥ ६ °हामिव° प्रतौ । —प्रधानिवहानुशिष्यमाणः न्यायमार्गम् ॥ ७ प्रणतिः ॥

तेणं पयंपियं जुज्झभीरु[1]णो उग्गिरंति नयमग्गं । दोघट्ट[2]घडब्भिडणे हरिणो को [3]नीइपहदंसी ? ॥ २ ॥
ता होसु समरसज्जो दंसेसु नियं च विक्कमुक्करिसं । अजहाबलित्तमियरं व साहिही समरमेव धुवं ॥ ३ ॥

एवं भणिए निग्गओ दूओ । निवेइओ य एस वुत्तंतो तेण रायपुत्तस्स । ततो दवावियं पयाणयं । परोप्परथेवन्तरमणुपत्ताइं दो वि बलाइं । तो अं[4]गीकयखत्तसमायाराणि पहुकज्जबहुमन्नियपहरणपहाराणि समुच्छलियतुमुलतूररवपणस्संतकायराणि कुंत[5]ग्गघायघुम्मंतकुंजराणि निठुरमोग्गरपहारजज्जरिज्जंतरहवराणि निवडंतछत्त-धय-चिंधरउद्दाणि उभयपक्खपहीयमाणसूराणि सुचिरं ताइं जुज्झिउं पवत्ताइं ति । अह भवियव्वयावसेण पराजियं विजयचंदसेन्नं, पलाणं च जं जहा तं तह त्ति । विजयचंदो वि मंतीहिं कह कह वि अणिच्छंतो नियत्तिओ समरंगणाओ ।

सुओ य एस वइयरो राइणा, आणाविओ विजयचंदो, पारद्धं सयमेव गमणं । एत्थंतरे उट्ठिओ चंदसेणो—रायं ! पुव्वं पि अहं तुब्भेहिं वारिओ ता इण्हिं न किं पि वत्तव्वं, देह ममाएसं ति । मंतीहिं जंपियं—देव ! रा[य]पुत्तो पुव्विं महाकट्ठेण पडिसिद्धो ता संपयं अजुत्तो रायपुत्तपणयभंगो, सविसेसकरि-तुरय-रह-जोहसमप्पणेण पगुणीकाऊण विसज्जह इमं ति । पडिवन्नं रन्ना, दिन्नो चंदसेणस्स आएसो । भाउणो अब्भहियं करि-तुरगाइँ[6]अं गिण्हिऊण नीहरिओ एसो । अक्खलियप-

१ °रुणा उ° प्रतौ ॥ २ हस्तिघटासम्मुखगमने ॥ ३ नेइप° प्रतौ । नीतिमार्गदर्शी ॥ ४ अङ्गीकृतक्षात्रसमाचारे प्रभुकार्यबहुमानितप्रहरणप्रहारे समुच्छलिततुमुलतूररवप्रणश्यत्कातरे कुन्ताग्रघातघूर्ण्यमानकुञ्जरे निष्ठुरमुद्गरप्रहारजर्जर्यमाणरथवरे निपतच्छत्रध्वजचिह्नरौद्रे उभयपक्षप्रहीयमाणशूरे ॥ ५ °तयरघा° प्रतौ ॥ ६ °इ अगि° प्रतौ ॥

दितेण नाणदाणं नूणमदिन्नं न किं पि जियलोए । एत्तो य नोवयारो पवरो विज्जइ[1] जए अन्नो ॥ ७ ॥
तं पुण पढणत्थमुवट्ठियाण अणुकूलकरणओ नेयं । प[2]ढियमहत्थ[य]पोत्थयवायण-वक्खाणमाईहिं ॥ ८ ॥ किंच—
नाणं[3]मदिंतो वि सयं भेसह-वत्थ-ऽन्नपमुहमुवणिंतो । पढ[4]माणाण परेसिं परमत्थेणेस तद्दाया ॥ ९ ॥
किं जंपिएण बहुणा ? नाणपयाणेण केवलालोयं । लहिऊण पावइ सिवं धणदत्तो एत्थुदाहरणं ॥ १० ॥

तहाहि—अत्थि मगहाजणवयावयंसनिविसेसं, सेसाहिफारफणारयणजालं व प[5]रेसिमलंघणिज्जं, सुरपुरपरिसरं पिव दीसंतगु[6]रुंबुहजणं, जणियसयललोयाणुरायं रायगिहं नाम नयरं । तत्थ य हइ[7]हयकुलनहयलमयंको निहयवयरि[वहू]विहियायंको भुवण[जण]जणियाणंदो जयचंदो नाम राया । निरुवचरियसिणेहभूमी कमल व्व कण्हस्स कमलावई नाम से भारिया । ताणं कलाकलावपत्तट्ठा सोडीरयाइगुणविसिट्ठा दुवे पुत्ता—विजयचंदो चंदसेणो य । ते य एगोदरसंभूया वि केणइ कम्मदोसेण अवरोप्परं सामरिसा असहणा य आ[8]होपुरिसत्तणेण वट्टं[9]न्ता दिणाइं वोलेंति ।

अवरवासरे य राइं[10]णो अत्थाणीनिसं[11]न्नस्स रायपुत्त-मंति-सामंताइपहाणलोयस्स य समुचियट्ठा[12]णनिविट्ठस्स विन्नत्तं पडिहारेण—देव ! अणवच्छिन्नदीहद्धलंघणपरिस्संता लेहहत्था दुवे पुरिसा तुरियं देवदंसणमभिलसंति त्ति । राइणा भणियं—

१ विद्यते जगति ॥ २ पठितमहार्थकपुस्तकवाचनव्याख्यानादिभिः ॥ ३ °णमिदंतो प्रतौ ॥ ४ °माताण प्रतौ ॥ ५ 'परेषां' अन्येषां शत्रूणां च ॥ ६ °रुवहुज° प्रतौ ॥ ७ हैहयकुलनभस्तलमृगाङ्कः निहतवैरि[वधू]विहितातङ्कः ॥ ८ 'आहोपुरुषत्वेन' अभिमानितयेत्यर्थः ॥ ९ °ट्टत्ता दिणाइ प्रतौ ॥ १० °इणा अ° प्रतौ ॥ ११ °सम्मस्स प्रतौ ॥ १२ °णनिवट्ठ° प्रतौ ॥

सत्यमुच्यते "शत्रोरपि गुणा ग्राह्याः" इति वचः, ता बाढं दूयवयणेण अजुत्तमत्तणो उक्करिसपयडणं कयं मए, अप्पपसंसा हि परमं लज्जणं सुकुलुग्गयाण, जओ—

जंपंति थोयथोयं[1] कज्जं च कुणंति भूरिवित्थारं । विबुहजणविम्हयकरो गरुयाणं को वि वावारो ॥ १ ॥
अम्हारिसा उ मुद्धा अतहाविहकज्जकरणदच्छा वि । अप्पाणमप्पण च्चिय विहलमणा कह विकत्थिंति ? ॥ २ ॥

ता सत्तू वि सेवलराया मे गुणवं पडिहाइ, अओ न जहतह जोहणिज्जो त्ति, अविभाविय कयं हि विसं पि विसेसेइ कज्जं ति । ठिओ एगंते रायपुत्तो, वाहराविया मंतिणो, सिट्ठो सव्वो वि तेसिं नियया भिप्पाओ। वीमंसिओ मंतीहिं, भणियं च तेहिं—रायपुत्त ! जहा तुमं भणसि तहा सच्चमेयं, ता पेसिज्जंतु अच्चंतपच्चइया पच्छन्नचरपुरिसा, मुणंतु ते तस्स राइणो करि-तुरगाइसामग्गिं, लक्खंतु तयणुरत्त-विरत्तसामंतवग्गं[2], जाणंतु जाणा-ऽऽसणाणमवसरं, तक्कहणाणुसारेण य वावारिज्जंतु साम-भेयाइणो जहाणुरूवं नयमग्गा, मग्गिज्जंतु य नीसार-पवेसपाउग्गा जल-दुग्गाई[3]मंतो पहविसेस त्ति । पडिवन्नं रायपुत्तेण । पेसिया य गूढचारपुरिसा कयविविहपासंडिनेवच्छा तव्वइयरोवलंभणत्थं[4] ति । ताण य एगो सामवेयपाढित्तणेण पवन्नो रायपुरोहियं, अवरो मंतवाइरूवेण अणुपविट्ठो संधिविग्गहियं, इयरो वि नेमित्तिगत्तणेण लीणो महामंतिणो, अन्नो वि जोतिसियभावेण अब्भुवगओ राइणो मूलं। एवं ते चउरो वि गूढचरा नियनियविज्जासु पत्तट्ठा कयकरणा समयाणुरूवभासिणो आगारिंगियाइवेइणो निउणेणावि अमुणिज्जमाणमज्झा तह कह वि निय[निय]वावारेसु पयट्टा जह कमागय व्व थोवदिणेहिं

१ स्तोकस्तोकम् ॥ २ तदनुरक्तविरक्त–॥ ३ ° इज्जंतो प्रतौ ॥ ४ तद्व्यतिकरोपलम्भार्थम् ॥

पि अब्भंतरीभूया रायाईणं ति । संचारिंति य गूढचरेहिं[1] पइदिणवित्तं जहावित्तं रायसुयचंदसेणस्स । एवं वच्चंति वासरा ।

भणितो य मंतीहिं रायसुओ—अप्पणो परस्स य बलतुलयं काऊण विसेसवाव[रा]रंभो जुज्जइ, ता जावऽज्ज वि सविसेसुज्जमसमओ[2] न जायइ ताव सेवलराइणो बहियादेसुवद्दवो कीरइ, एवं हि उवद्दविज्जंतदेसभोइणो[3] सामंताइणो तुम्ह सेवं पवज्जंति, एवं पि सत्तुणो अवयरियं[4] हवइ । ततो रायसुएण सिग्घवेगतुरंगवग्गपेसणेण तग्गाम-नगराइणो लूंडिउं[5] पारद्धा । नियदेसोवद्दवं सोच्चा कुद्धो सेवलराया, पउणीकयं चाउरंगं बलं, वाहराविया जोइसिया, गणावियं विजयजत्ताजोगं लग्गं, खित्ता आगंतुगजोइसियम्मि दिट्ठी । तेण भणियं—देव ! पत्तियजणदिन्ने[6] लग्गे कहं 'सदोसं' ति भन्नइ ? । राइणा भणियं—कहसु जहट्ठियं । तेण जंपियं—जइ देव ! मं पुच्छह ता न जुत्ता विजयजत्ता, लग्गबलेण इहट्ठियाणं चेव तुब्भं विजयं पेच्छामि । सेसजोइसिएहिं भणियं—देसे लूंडिज्जंते[7] कहं विजओ ? । इयरेण भणियं—पडिवालह पंच दिणाइं जइ न पच्चओ । 'एवं' ति पडिवन्नं रन्ना ।

चारजोइसिएण वि तक्खणं चिय गुत्तपुरिसमुहेण कहावियं चंदसेणस्स, जहा—कवडकलहं काऊण मुणाविय[8]कज्जपरमत्था कइयवि वइरसीह[9]पमुहसामंता सेवलरायं पइ घडावेयव्वा, सनिकारं[10] च खंधावाराओ निव्वासणिज्जा य त्ति । तहेव अणुट्ठियं रायसुएण । तेहिं वि वइरसीहपमुहसामंतेहिं सामिभत्तिं[11] परममुव्वहंतेहिं 'तह' त्ति कज्जमवबुज्झिय पहाणपुरिसपे-

१ मूढ° प्रतौ । गूढचरैः प्रतिदिनवृत्तं यथावृत्तम् ॥ २ सविशेषोद्यमसमयः ॥ ३ उपद्रूयमाणदेशभोगिनः ॥ ४ अपकृतम् ॥ ५ लुण्टितुम् ॥ ६ पत्तिय° प्रतौ । प्रत्ययितजनदत्ते ॥ ७ लुण्ठ्यमाने ८ ॥ ज्ञापितकार्यपरमार्थाः कतिचिदपि ॥ ९ °इरिसी° प्रतौ ॥ १० सापमानं च ॥ ११ °भत्तपर° प्रतौ ॥

सणेण भणावितो सेवलनरिंदो—अम्हे तुह पायसेवं काउमिच्छामो अणेण डिंभराइणा संताविय त्ति। ततो राइणा वाहरावितो संधिविग्गहिओ, भणिओ य—अरे! केरिसा इमे पडिवक्खसामंता? कहिओ य तुह चारपुरिसेहिं कोइ तव्वारो?। तेण भणियं—देव! आगमिस्सा अज्ज अम्ह चाराहिगारनिउत्तपुरिसा, तत्तो तेहिं विणिच्छिऊण साहिस्सं। विसज्जिओ सो गओ सं ट्ठाणं। सो य किर संधिविग्गहिओ तेण वेरिच्चरेण [1]ठंगिओ मंतसामत्थेण दिट्ठं सुयं च सव्वं तस्स साहइ त्ति। आगयमित्तेण कहिओ से रायवुत्तंतो। तेण वि जाणियकज्जमज्झेण भणियं—संधिविग्गहिय! जइ ते वइरसी[2]हायणो सामंता रन्नो सेवगत्तं पवज्जिस्संति ताव चंदसेणो वि सेवं पवन्नो त्ति वत्तव्वं, तव्विरहेण तहाविहसेवगाभावाओ।

एत्थंतरे आगया चारपुरिसा, निवेइओ य तेहिं परबलवुत्तंतो। दंसिया ते रन्नो। तेहिं सिट्ठं—देव! वइरसीहाइणो सामंता अच्चंतं निट्ठुरवयणेण तज्जिया चंदसेणेणं 'न मह सेन्ने अच्छियव्वं' ति, 'निद्धाडिया य' इति पडहेहिं उग्घोसिज्जइ। राइणा भणियं—ता संधिविग्गहिय! किमिह जुत्तं?। तेण वुत्तं—देव! दढं सम्माणजोग्गा ते तुम्हाणं, [3]तद्दारोवलद्धपरपक्खसरूवणायसुलहो परविजओ त्ति। ततो आणाविया ते सामंता, सम्माणिया य पसायदाणेणं। तेण य चरनेमित्तिएण अच्चंतं चिंता-मुट्ठि-नट्ठाइकहणेणं रंजिओ अमच्चो। तेणावि एगंते दंसितो सो राइणो। तेणावि पुच्छिओ—कहसु नेमित्तिय! केरिसं अम्ह बलाबल-न्ति। तेण भणियं—देव! थिरं लग्गं इहट्ठियाण चेव कज्जसिद्धिं साहेइ। ततो 'जोइसियवयणसंवाइ' त्ति पूइओ सो रन्ना। [4]सिंट्ठा य मंतिणो—सपच्चओ जोइसिओ एसो त्ति। तेण वि पुरोहिएण [5]जंयाहियसे-

१ वञ्चितः ॥ २ °हासणो प्रतौ। वैरसिंहादयः ॥ ३ तद्द्वारोपलब्धपरपक्षस्वरूपज्ञातसुलभः ॥ ४ सिट्ठो य प्रतौ ॥ ५ जपाहृतसैन्यव्याधिविशेषेण ॥

याणगेहिं पत्तो सेवलराइणो सीमभूमिं। भणियव्वविसेसं सिक्खविऊण पेसिओ दूओ सेवलराइणो। भणिओ से तेण, जहा—

जइ कह वि दिव्वदुविलसिएण सारंगसंगरे वि हरी। भग्गक्कमो [1]निलुंको किमित्तिएण वि स तज्जेओ? ॥ १ ॥
जइ कह वि [2]जेरढपन्नगफणाकड[3]प्पुप्फिडंतचंचुपुडो। पडिभग्गो गरुडो एत्तिए वि किं [4]विजइणो नागा? ॥ २ ॥
जइ जेट्ठभाउगो मह [5]पमायवं कह वि निज्जिओ तुमए। ता विजइणमप्पाणं मुणिउं मा होसु वीसत्थो ॥ ३ ॥
[6]जलहंतवस्स वि हुयवहस्स गोतुब्भवेण कुलवइरं। दड्ढोयहिसलिलेणं वुब्भइ वडवग्गिणा पेच्छ ॥ ४ ॥
ता उज्झिउं पमायं संपइ तं होसु [7]समरपरिहच्छो। छलणाए निज्जिओ हं ति मा [8]वएज्जासि जणपुरओ ॥ ५ ॥
अह सेवलेण भणियं भो दूय! निरग्गला तुहं पहुणो। जहतह जंपंति किमित्थ जुज्जए भासिउं मज्झ? ॥६॥
एए निद्दोस च्चिय सदोसवं केवलं महीनाहो। एयाण पिया जो एरिसे वि समरम्मि पेसेइ ॥ ७ ॥
दुस्सिक्खिय [त्ति] बहुजंपिर त्ति अच्चंतदुव्विणीय त्ति। पेसणमिसेण मन्ने इय सिक्खविउं स पेसेइ ॥ ८ ॥
ता जाहि दूय! पडिभणसु नियपहुं सिसुजओ हि मह हीला। तुह पुण पिउणा सद्धिं जुज्झं पि हु जुज्जए काउं ॥९॥

एवं निसामिऊण निग्गओ दूओ, पत्तो राय[सुय]समीवं। निवेइओ सव्वो तदुल्लाववुत्तंतो। तं चाऽऽयन्निऊण चंदसेणो विभाविउं पयत्तो—अहो! अजुत्तो एसो अपरिभावियसमुल्लावो, पेच्छ, सत्तुणा वि होऊण सुपसन्नं समुचियं जंपियमणेण,

१ निलीनः ॥ २ जरठपन्नगफणासमूहोत्स्फिटच्चञ्चुपुटः ॥ ३ °प्पुफिडं° प्रतौ ॥ ४ विजयिनः ॥ ५ प्रमादवान् ॥ ६ जलहन्तव्यस्यापि हुतवहस्य गोत्रोद्भवेन कुलवैरम्। दग्धोदधिसलिलेन उह्यते वडवाग्निना पश्य ॥ ७ समरनिपुणः ॥ ८ वदिष्यसि ॥

पुवट्ठिई, विसज्जिओ [य] सं ट्ठाणं ति।

चंदसेणो वि 'बुद्धि-परक्कमेहिं गुणजेट्ठो' त्ति ट्ठविओ जुवरायपए, दिन्ना महई भुत्ती। 'अच्चंतं परिभूओ' त्ति एगागी रयणीए णीहरिओ विजयचंदो, [पयट्टो] य देसंतरे गंतुं। कइवयपयाणगेहिं[1] य समइक्कंता पिउणो भूमी। वुत्थो[2] य एगत्थ क्खुद्दसन्निवेसे। तत्थ य जिन्नुज्जाणे तरुच्छायालीणो उज्जाणविभागं पलोइऊण चिंतिउं पवत्तो—

एत्तो जिन्नतरू विसन्नविडवो वावी इओ निज्जला, एत्तो भट्ठधयं[3] विकिन्नसिहरं कच्चाइणीमंदिरं।
नट्ठुच्छन्नकुलो य भग्गभवणो गामो य एसो इओ, उप्पाएइ सुहं[4] महंतयमिमो जोगो समाणे हि[5] मे ॥ १ ॥

एवं च पयट्टो तत्तो पएसाओ गओ उड्डियायणजणवयं। दिट्ठो य तहिं कित्तिधरो नाम तवस्सी। निसामिओ य तम्मूले साहुधम्मो। जहा—

संसारोयहि[6]निवडंतजंतुनित्थारणेक्कबोहित्थं। सिवपंथसत्थवाहं अवाबाहेक्कसुहहेउं ॥ १ ॥
मुणिधम्माओ वि न धम्म[7]मन्नमब्भुदयसाहगं मन्ने। ता धन्नाणमिह च्चिय जुत्तो जत्तो[8]ऽन्नचागेण ॥ २ ॥
पाविज्जइ रज्जं लच्छिवित्थरो वंछियं च सोक्खं पि। निद्दलियअसुहकम्मो कयसिवसम्मो[9] ण मुणिधम्मो ॥ ३ ॥
रज्जाइणो पयत्था जइ वि हु मुहमहुरयाए रमणिज्जा। तह वि न सलाहणिज्जा परिणइकयविविहदुहनिवहा ॥ ४ ॥

१ °पहाण° प्रतौ ॥ २ उषितः ॥ ३ °ट्ठवयं प्रतौ ॥ ४ सुखं महद् अयं योगः स-माने हि मयि ॥ ५ °हि म्मे प्रतौ ॥ ६ संसारोदधिनिपतज्जन्तुनिस्तारणैकबोहित्थम्। शिवपथसार्थवाहं अव्याबाधैकसुखहेतुम्॥ ७ धर्मम् अन्यम् अभ्युदयसाधकम्॥ ८ °जत्तन्न° प्रतौ। यत्नोऽन्यत्यागेन ॥ ९ °म्मो य मु° प्रतौ ॥

निंबोसहं व जइ वि हु जईण धम्मो मुहम्मि कडुयरसो। परिणइपत्तो तह वि हु अच्चंतसुहावहो होइ ॥ ५ ॥
को नाम किर सकन्नो[1] मुहमहुरं परिणईए विरसं पि। जाणंतो वि न हिच्चा[2] इयरं सवायरं लेज्जा? ॥ ६ ॥
एयं सोच्चा संजाय[3]गेहवासंगचागपरिणामो। पडिवज्जइ [मुणिपासे] पवज्जं विजयचंदो सो ॥ ७ ॥
विहरइ गुरुणा सद्धिं सद्धम्मऽज्झयणबद्धपडिबंधो। कालक्कमेण गुरुणा जोगो त्ति पइट्ठिओ सपए ॥ ८ ॥
भणिओ य वच्छ! निव्वाणलच्छिविच्छड्डदाणदुल्ललियं[4]। गोयमपमुहमहापहुनिसेवियं[5] बिंति पयमेयं ॥ ९ ॥
ता उज्झियप्पमाओ सिस्साणं सारणाइ कुणमाणो। सिद्धंतवायणाईसु सवहा उज्जओ होज्जा ॥ १० ॥
सुहसीलयाए थेवं पि मा वहेज्जसि परिस्समं कह वि। एयं चिय रिणमोक्खो[6] सासणवुड्ढी य एवं च ॥ ११ ॥
इय सिक्खविऊण बहुं सम्मेयमहागिरिस्स सिहरम्मि। मासं पाओवगओ निव्वुइसुहसंपयं पत्तो ॥ १२ ॥

विजयचंदसूरी वि गामा-ऽऽगराइसु विहरिउं पवत्तो। पयट्टिओ य कइयवि दिणाइं सिस्साण पढणाइवावारो। पराभग्गो य पच्छा निच्छइ भासिउं पि, थेरेहिं चोइज्जंतो य भणइ—किमणेण कंठसोसेण? तवे आयरं कुणह, "यः क्रियावान् स पण्डितः" इति वचनात्। 'किं वा पढियं मासतुसाईहिं' [ति] दिट्ठंतोवन्नासं[7] च कुणंतो उवेहिओ थेरेहिं। कालक्कमेणं अपडिक्कंतो ततो ट्ठाणाउ मरिऊण सोहम्मे देवत्तणेण उववन्नो। अहाउयं तहिं पालिऊण चुओ पउमसंडपुरे धणंजयस्स

१ 'सकर्णः' विद्वान् ॥ २ हित्वा इतरत् सर्वादरं लाति ॥ ३ सञ्जातगेहव्यासङ्गत्यागपरिणामः ॥ ४ निर्वाणलक्ष्मीविच्छर्ददानदुर्ललितम् ॥ ५ °यं पिति प्रतौ ॥ ६ ऋणमोक्षः ॥ ७ °तोविन्ना° प्रतौ। दृष्टान्तोपन्यासम् ॥

ज्ञानान्त-रायकर्मनि-वारणोपायः

सेट्ठिणो सिवाए भज्जाए धणसम्मो नाम पुत्तो जाओ त्ति । वोकंतअट्ठवरिसो य आढत्तो पाढिउं । [1]पुव्वभवनिबिडज्जियनाणंतरायदोसेण य नावडइ गाढघुम्मं[तं] पि एक्कं पि अक्खरं । परिस्संतो उवज्झाओ, 'पत्थरो' त्ति परिचत्तो य । जहा एक्केण इमिणा, एवं पंचहिं वि उवज्झायसएहिं ति । विसन्नो से पिया, पारद्धा ओसहाइणो उवयारा, न जाओ को वि विसेसो । पुच्छइ मंताइजाणगे । कहिओ य से एगेण पुरिसेण, जहा—अमुगत्थ पएसे विसिट्ठो जाणगो तवस्सी वसइ त्ति । ततो सेट्ठी सपुत्तो गओ तस्स सा[2]हुणो समीवं, वंदिऊण निसन्नो, भत्तिसारं भणिउं पवत्तो य—भयवं ! किमणेण मम सुएण कयं जेणेवंविहो जडो ? त्ति । ततो भगवया निवेदिओ से णाणहीलणापमुहो पुव्वइयरो । तं च सोच्चा जायं धणसम्मस्स जाईसरणं, निवडिओ साहुचलणेसु, भणिउं पवत्तो य—भयवं ! एवमेयं, संपयं च भीओ हं 'कहमिमाउ नाणंतरायपारावाराओ पारं परं वच्चिस्सामि ?' त्ति, सव्वहा साहेसु उवायं । भयवया भणियं—सोम ! सुण जमेत्थ कायव्वं—

दोसेण जेण केणइ भावस्स सुहस्स होइ विद्धंसो । [3]तप्पडिवक्खपवित्तिं परमं कित्तिंति पच्छित्तं ॥ १ ॥
ता [4]नाणदाणविच्छेय-हीलणोवज्जियस्स कम्मस्स । नाणप्पयाणभावेण होइ तन्निज्जराभावो ॥ २ ॥
तं च तुह नाणदाणं सक्खा नो घडइ निबिडजडिमत्ता । नाणस्स य नाणीण य ता बाढं कुणसु बहुमाणं ॥ ३ ॥

१ पूर्वभवनिबिडार्जितज्ञानान्तरायदोषेण च नापतति 'गाढघूर्णन्तमपि' उच्चैः घोषन्तमपि ॥ २ °हुणा स° प्रतौ ॥ ३ तत्प्रतिपक्षप्रवृत्तिम् ॥ ४ ज्ञानदानविच्छेदहीलनोपार्जितस्य कर्मणः । ज्ञानप्रदानभावेन ॥

न्नवाहिविसेसेण सो सामवेयपाढी पउत्तो संतिहोमट्ठाणे । ते[1]ण य आहिचारिगमंतेहिं पारद्धो होमविही । तव्वसेण य जाया करि-तुरग-लोगाईणं अणेगे रोगविसेसा । एवं च निप्पच्चूहेण चंदसेणेण उवसाहिओ तद्देसो, वसीकया य केई सामंता ।

अवरम्मि य वासरे तेहिं गूढचरेहिं कहावियं चंदसेणस्स, जहा—अवसरो समरस्स त्ति । ततो चाउरंगिणीए सेणाए तेणाऽऽगंतूण पडिरुद्धो सेवलराया । पयट्टाइं परोप्परं दोन्नि वि बलाइं पहरिउं ति । उच्छा[हि]ओ य सेवलराया वइरसीहाइसामंतेहिं—दे[2]व ! पच्छा होह तुब्भे, केत्तियमेत्तो एस डिंभो ?–त्ति जंपिऊण पारद्धं परेहिं सह पहरिउं ताव जाव चंदसेणो समीवमुवागओ । एत्थंतरे वइरसीहाइबलेण चंदसेणबलेण य दोहिं वि अब्भिंतरे घेत्तूण सेवलनरिंदो अणवरयमुक्कसेल-भल्लि-नाराय-खुरुप्पपमुहपहरणेहिं सव्वत्तो पच्छाइओ त्ति । तं च छिन्नच्छत्त-दंडं निकिं[3]त्तविचित्तधयवडं निवाडियंगरक्खं समिक्खिऊण तग्गुणगणरंजिएण भणियं चंदसेणेण—भो भो सेणाहिवा ! सो महारायसासणं अइक्कमइ मह सरीरं च दुहइ जो सेवलरन्नो घायं करेइ त्ति । घोसियं च महया सद्देण । तं च सोच्चा फरगाईहिं चंपिऊण गहिओ सेवलराया, समप्पितो य समं सत्तंगाए लच्छीए रायसुयस्स ।

सो य तमादाय अक्खंडपयाणगेहिं गतो नियनयरिं। वद्धाविओ जयचंदराया । परमविभूईए पविट्ठो रायभवणं । कयतक्कालोच्चियपडिवे[4]त्तिणा य समप्पिओ सेवलभूवई, विन्नत्तो य—देव ! एसो सत्तू वि भविय अच्चंतगुणगुरुत्तणेण गुरु व्व अम्हाणं, ता देवेण महापसाएण दट्ठव्वो हवइ त्ति । ततो रन्ना जायतग्गुणनि[5]व्वहबहुमाणेण सम्मं सम्माणिऊण दिन्ना स च्चिय

१ तेणे य प्रतौ ॥ २ °व पेच्छ हो° प्रतौ ॥ ३ निकृत्तविचित्रध्वजपटं निपातिताङ्गरक्षं समीक्ष्य ॥ ४ °वत्तणा प्रतौ ॥ ५ °वयब° प्रतौ ॥

ज्ञानदानस्य फलम् तदुपदेशश्च

तद्दाणं पुण वक्खाण-वायणाईसु उ[1]ज्जमंतस्स । नाणोवग्गहहेउं उ[2]वणिंतस्सोवगर[3]णं पि ॥ १६ ॥
त[4]प्पाढपडीभग्गं थिरीकुणंतस्स सव्वलोयं पि । नाणगुणु[5]ज्जयमच्चंतमणुखणं संथुणंतस्स ॥ १७ ॥
किं भन्नइ इह भव्वा ! नाणपयाणा-ऽपयाणफलमेयं ? । मह पच्चक्खमुवगयं तं नाउं कुणह जं जुत्तं ॥ १८ ॥
लोगेण जंपियं भणसु ताव भयवं ! तमप्पणो चरियं । तो मुणिवरेण सिट्ठं जह दिट्ठं जह व अणुभूयं ॥ १९ ॥
ता पच्चक्खपसिद्धं सि[6]द्धंतपइट्ठियं कुसलदिट्ठं । कुणह स[7]इ नाणदाणं नियाणमिह सव्वसिद्धीणं ॥ २० ॥ किञ्च—

आत्मानमन्यदपि वस्तु समस्तमस्तजाड्यप्रपञ्चमुपदर्शयितुं समर्थम् ।
ज्ञानं श्रुताश्रयमजस्रकृतश्रियं च, तद्दानमेव हि ततः परमं प्रशस्यम् ॥ १ ॥
कैवल्यवल्लिपिहितोऽपि हितोऽपि दूरं, प्राप्तोऽपि नार्हति जै[8]नं जिनकल्पवृक्षः ।
कर्तुं वितृ[9]ष्णमुपदेशकतां विहाय, तज्ज्ञानदानमिह केन समं समस्तु ? ॥ २ ॥
वैरूप्यवानपि विवागपि निष्प्रभोऽपि, तुच्छाशयोऽपि सरुजोऽप्यपलक्षणोऽपि ।
यन्नम्यते गुरुधिया प्रणतेन मूर्ध्ना, तज्ज्ञानदानलवजृम्भितमाहुरीशाः ॥ ३ ॥

१ उद्यच्छतः ॥ २ उपनयत उपकरणम् ॥ ३ °रणिं पि प्रतौ ॥ ४ तत्पाठप्रतिभग्नम् ॥ ५ °णुव्वयमुच्चंत° प्रतौ । ज्ञानगुणोद्यतम् अत्यन्तम् अनुक्षणम् ॥ ६ सिद्धान्तप्रतिष्ठितं कुशलैः—तीर्थकरगणधरैः दिष्टम्—उपदिष्टम् ॥ ७ सदा ॥ ८ °ति जिनं प्रतौ ॥ ९ °तृष्टमु° प्रतौ ॥

इति किमपि निगद्य स्वं पुराजन्मवृत्तं, प्रकटमपि च दत्त्वा ज्ञानदानोपदेशम् ।
पुरमपर[1]मुपेत्याऽऽरब्धनिर्याणयात्रो, व्यरमदमर-मर्त्यैरर्चितोऽसौ मुनीन्द्रः ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे ज्ञानदानावसरे धनदत्तकथानकं समाप्तम् ॥ १६ ॥

अभयदानम्

पुव्वं चिय उ[2]क्खित्तं दाणावसरम्मि अभयदाणं पि । ता तं सरूव-फलदंसणेण लेसेण वन्नेमि ॥ १ ॥
पुढवाइणो उ पंच उ बेइंदियमाइणो उ चत्तारि । इय नवविहजीवाणं जं रक्खणमभयदाणं तं ॥ २ ॥
सव्वे सु[3]हेसिणो च्चिय सव्वे वि जिय[4]त्थिणो सयाकालं । सव्वेसि वेयण च्चिय सव्वे वि य मरणभयविहुरा ॥ ३ ॥
नवरं निय[5]नियकम्माणुरूवबल-देह-वन्न-संठाणा । नाणाजोणीजम्मणपविभत्त[6]विवित्तचेयन्ना ॥ ४ ॥
ताण [अ]भयप्पयाणं का[7]उमणेणं मणागमेत्तं पि । संघट्टणाइरूवो उवद्दवो वज्जणिज्जो त्ति ॥ ५ ॥
एगच्छत्तं पि महिं मरणे समुवट्ठियम्मि दिंतस्स । न तहा से परितोसो जह अभए दिज्ज[8]माणम्मि ॥ ६ ॥
अवगणियकुलायारा किं किं न कुणंति मरणभयविहुरा ? । दासत्तं पि पवज्जंति ठंति मायंगगेहे वि ॥ ७ ॥
दीणं च[9]वंति दीणं धुणंति निवडंति जंति वेगेण । मरणभयाउरहियया जीवा किं किं व न कुणंति ? ॥ ८ ॥

१ °रमपे° प्रतौ ॥ २ उत्क्षिप्तम् ॥ ३ सुखैषिणः ॥ ४ °यच्छिणो प्रतौ । जीवितार्थिनः ॥ ५ निजनिजकर्मानुरूपबलदेहवर्णसंस्थानाः । नानायोनिजन्मप्रविभक्तविविक्तचैतन्याः ॥ ६ °त्तविच्चित्त° प्रतौ ॥ ७ कर्तुमनसा ॥ ८ °माणं पि प्रतौ ॥ ९ जल्पन्ति ॥

एत्तो च्चिय ताणं रक्खणेण अक्खंति भिक्खुणो धम्मं । बहुचागचागसुपसत्थतित्थदाणाइतो वि बहुं ॥ ९ ॥
जो देइ अभयदाणं जीवाणं विविहदुक्खतवियाणं । [1]अज्जिणइ जयसिरिं सो जउ व निव्वाणमवि नियमा ॥१०॥ तहाहि—

अत्थि जंबुद्दीवतिलयतुल्लभारहखेत्तचूडामणिविब्भमं, [2]मंतपुरिसोत्तमविराइयं, विजयधयवडं व जीवलोयपासायस्स, उप्पत्तिट्ठाणं व धम्ममग्गस्स विजयवद्धणं नाम नयरं। तत्थ य कुमुयकोम[3]लुम्मिलंतदेहप्पहापहसियसीयकिरणो रणरंगपहयपडुपडह-मुइंग-झल्लरीपमुहतूररवायन्नणभीयवइरिचत्तवावारो वारविलासिणीसलीलचालिय[चाम]रुप्पीलपयडियगरुयरिद्धिवित्थरो जयसुंदरो नाम राया । सयलजुवइलक्खणाणुगयसरीरा विजयवई से भज्जा । जुवरायसिरितिलयभूओ भुवणचंदो नाम पुत्तो । मित्ता य तस्स सेट्ठिसुओ संखो नाम, पुरोहियपुत्तो अज्जुणो नाम, सेणावइसुओ सोमो नाम । एवं च तिहिं बालमेत्ते[हिं] परिगओ [4]गओ व निरंकुसो सो रायपुत्तो इओ तओ सच्छंदं विलसमाणो कालं वोलेइ ।

अन्नया य नयरबाहिरुज्जाणकीलागएण मित्ताणुगएण तेण नाणादेसभमणमुणिय[विविह]भासा-नेवच्छो विचित्तमंत-तंत-विन्नाणनिउणो नाणकरंडो नाम कावालियमुणी दिट्ठो, पणिवइओ सव्वायरेण, 'पायालकन्नगानाहो होसु' त्ति दिन्नासीसो निविट्ठो से समीवे । भणियं च सविम्हएण—भयवं ! कह पायालकन्नगाणं संभवो ? कहं वा तासिं लाभो ? त्ति । कावा-

१ अर्जयति ॥ २ किल द्वारिका पुरी एकेन पुरुषोत्तमेन—कृष्णेन विराजिताऽऽसीत्, इदं पुनः पुरं भ्रमद्भिः प्रभूतैः पुरुषोत्तमैः विराजितम्, अत्र पक्षे पुरुषोत्तमैः—उत्तमपुरुषैरित्यर्थः ॥ ३ °लुमिलुंत° प्रतौ । कुमुदकोमलोन्मीलद्देहप्रभाप्रहसितशीतकिरणः रणरङ्गप्रहतपटुपटहमृदङ्गझल्लरीप्रमुखतूररवाकर्णनभीतवैरित्यक्तव्यापारः वारविलासिनीसलीलचालितचामरसमूहप्रकटितगुरुकर्द्धिविस्तरः ॥ ४ गज इव ॥

आयरसु पढंताणं महत्थपोत्थयसुपोत्थियाईहिं । भेसज्जप्पमुहेहि य उवग्गहं नाणवुड्ढिकरं ॥ ४ ॥
इय सोच्चा स महप्पा पच्छायावं परं परिवहंतो । णाणोवग्गहविसए सव्वपयत्तेण वट्टंतो ॥ ५ ॥
मणुयाउयम[1]वसेसिय सोहम्मे देवसोक्खमणुभोत्तुं । तत्तो चुओ य जातो सुकुले धणद[2]त्तनामो त्ति ॥ ६ ॥
तत्थ वि य सावसेसत्तणेण सन्नाणवरणकम्मस्स । सम्ममहिज्जंतस्स वि अक्खरमेत्ते वि अचडंते ॥ ७ ॥
वेरग्गावडियस्स य ईहा-ऽपोहप्पहं पवन्नस्स । जायं जाईसरणं वियाणियं पु[4]व्ववुत्तं च ॥ ८ ॥
तो पुव्वं पिव पढणाइएसु [3]सइ उज्जमंतसत्तेसु । पोत्थयमाईहिं चिरं उवग्गहं काउमारद्धो ॥ ९ ॥
संवेगोवगमेणं दुक्कडगरिहाए सुहपवित्तीए । तेणावि गरहणीयं नाणावरणीयमवणीयं ॥ १० ॥
पडिवन्ना पव्वज्जा संगोवंगं च सुत्तमवि पढियं । तो सं[4]रियपुव्वभावो सव्वायरमवरभव्वाणं ॥ ११ ॥
नाणप्पयाणनिरओ विरओ थेवं पि हु प्पमायातो । निहयघणघाइकम्मो संपत्तो केवलालोयं ॥ १२ ॥
विहिया केवलमहिमा तद्दे[5]सनिवासिदेवनिवहेण । पकयं पंकयमेक्कं च कंचणुद्दामदलकलियं ॥ १३ ॥
तत्थ निसन्नो तत्तो धणदत्तो केवली महासत्तो । सत्ताण निव्वुइकए उवएसं दाउमाढत्तो ॥ १४ ॥ जहा—
सुहमण[6]हमिहं जइणो [7]तत्तव्विवरीयवत्थुचागाओ । तच्चागो णाणाओ नाणं पुण नाणदाणाओ ॥ १५ ॥

१ सावशेषत्वेन सज्ज्ञानावरणकर्मणः । सम्यगधीयानस्यापि ॥ २ °त्वपुत्तं प्रतौ ॥ ३ सदा उद्यच्छत्सत्त्वेषु ॥ ४ स्मृतपूर्वभावः ॥ ५ °द्देवनि° प्रतौ ॥ ६ °हमीह ज° प्रतौ ॥ ७ तत्तद्विपरीतवस्तुत्यागात् ॥

पेच्छइ सयं पि दिट्ठं संदेहपए ठ्वंति दुंवियड्ढा । नियबुद्धिसिप्पिकप्पियदुवियप्पुप्पाइयगिराहिं ॥ २ ॥

एवं च पयंपंतं पलोइऊण मुणियपरमत्थो मोणमल्लीणो मित्तवग्गो । एगया य रायसुतो गतो कावालियसमीवं । जाया य परोप्परं गोट्ठी । पत्थावे य पुट्ठो सो कुमारेण—भयवं ! 'कहं पुण विवरप्पवेसो ? कहं वा पायालबालियाणं लाभो ?' त्ति कोऊहलाउलियं मह मणो न एत्थावत्थाणेण रइं संपैयं पाउणइ, ता किमियाणिं जुत्तं ? ति । कावालिएण भणियं—रायसुय ! किं बहुवायावित्थरेण ? जइ थोवदिणमज्झे वंछियत्थपूरणेणं विगयकोऊहलं भवंतं न करेमि ता अत्तणो नामं पि न वहामि, केवलं 'बहुविग्घाइं सेयाइं' ति [सिग्घं] पउणो गमणाय होसु त्ति । 'एवं करेमु' त्ति भैणियं गओ रायसुतो सगिहं । वाहराविया मित्ता सम्माणपुव्वगमेगंते, सायरं वागरिया य—भो भो वयस्सा ! कीस तुब्भे अैविस्सासं कुणह ? वियप्पजालं वा विरयह ? होह सव्वहा मह सहाइणो, पयट्टामि पायालजत्तानिमित्तं ति । उवरोहसीलयाए पडिवन्नं मित्तेहिं । रायाईणमनिवेइऊण वैत्तं कयवेसपरियत्ता कावालिएण समं रयणीए नीहरिया । पुरओ वच्चंताण य जाया अ[व]सउणा । तहाहि—

दुरालोयं जायं दिवसयरबिंबं रयवसा, पयट्टं दोघैट्टाणुगिई गयणे मेहपडलं ।
कैउव्वेया वाया दिसिसु पडिकूला य सउणा, मैणुच्छाहच्छेओ खलियविलया चेव य गई ॥ १ ॥

१ दुर्विदग्धाः । निजबुद्धिशिल्पिकल्पितदुर्विकल्पोत्पादितगिराभिः ॥ २ **कामालि**° प्रतौ ॥ ३ साम्प्रतं प्रगुणयति ॥ ४ भणित्वा ॥ ५ अविश्वासं कुरुथ ? विकल्पजालं वा विरचयथ ॥ ६ वार्ता कृतवेषपरिवर्त्ताः ॥ ७ °**घटाणु**° प्रतौ । 'हस्त्यनुकृति' हस्त्याकारम् ॥ ८ कृतोद्वेगाः ॥ ९ मनउत्साहच्छेदः ॥

ततो भणितो रायसुतो वयस्सेहिं—न जुत्तं गमणमियाणिं, पडिनियत्तह ताव, भुज्जो पत्थैावंतरे [पत्थाणं] कायव्वं ति । कावालिएण भणियं—भो भो ! किमेवं वाउलीभूया ? न जाणह तुब्भे परमत्थं, पायालजत्ताए एरिस च्चिय सउणा फलसाहग त्ति कप्पपरमत्थो, अह संका तुब्भं ता मम निवडंतु एए अवसउणा, एह तुब्भे निस्संक त्ति । रायसुयाणुवित्तीए य पट्ठिया वैयंसा । पत्ता य कालक्कमेण विंज्झगिरिपैरिसरं—

सैरंतरुरु-सेरिभं भमिरभूरिकिंठीरवं, विसप्पिरमहोरगं घुरुहुरंतकोलाउलं ।
रसंतकरि-दीवियप्पमुहदुट्ठसत्तुब्भडं, गिरिं गुरुदुरं[तयं] तयणु विंज्झमज्झासिया ॥ १ ॥

कमेण य दिट्ठं पुव्वोवइट्ठं जक्खभवणं । कैयचलणसोहणा य पविट्ठा भवणब्भंतरे, पूइओ जक्खो पंकयाईहिं, सायरं पणमिओ य । जाए य वियालसमए कावालिएण पच्चासन्नगोउलाओ आणीया चत्तारि छगलगा, पउणीकतो य अन्नो वि साहणविही, काराविया य रा[यसु]याइणो चत्तारि वि समं छगलगेहिं ण्हाणं, चच्चिक्कया जहोचियं चंदणछडाहिं, भणिया य—भो ! तुब्भे जहक्कमं एक्केक्कं छगलगं मम पणामह जेण तव्विणासणेण देवपूयं काऊण विवरदुवारमुंब्भिदिज्जइ त्ति । ततो अवियाणिऊण तच्चित्तवित्तिं, अविभाविऊण तद्दारेण अत्तणो विणासं, अैविमंसिऊण सच्छंददेव्वविलसियं जहुद्दिट्ठमणुट्ठियं रायसुयाईहिं । नवरं

१ °**त्थायवंतरे** प्रतौ । भूयः प्रस्तावान्तरे प्रस्थानम् ॥ २ वयस्याः ॥ ३ °**परिसं** प्रतौ ॥ ४ सरद्रुरुसैरिभं भ्रमणशीलभूरिकण्ठीरवं विसर्पणशीलमहोरगं घुर्घुरायमाणकोलाकुलम् । रसत्करिद्वीपिकप्रमुखदुष्टसत्त्वोद्भटं गिरिं गुरुदुरन्तकं तदनु विन्ध्यमध्यासिताः ॥ सैरिभाः—महिषाः । कोलाः—शूकराः ॥ ५ °**रुऽरं** प्रतौ ॥ ६ **जहभ**° प्रतौ ॥ ७ कृतपादप्रक्षालना इत्यर्थः ॥ ८ 'उद्भिद्यते' उद्घाट्यते ॥ ९ अविमृश्य स्वच्छन्ददैवविलसितम् ॥

सेट्ठिसुएण तक्कालजायजीवदयाभावेण न पडिवन्नमेयं। पन्नविओ[1] य सव्वप्पयारेहिं एसो कावालिएण। 'अच्चायरो[2] संकाकारि' त्ति सुट्ठुयरं न पडिवन्नो एसो। [तओ कावालिएण] नियमंतसिद्धिनिमित्तं थोभिऊण छगलगा वावाइया[3] कुमाराइणो एगं छगलगं सेट्ठिसुयं च विमोत्तूण। एवं च तदुत्तमंगकमलेहिं निव्वत्तिए पूयाविहाणे कावालिएण दढेण वि हंतुमारद्धो सेट्ठिसुतो। एत्थंतरे भणियं जक्खेण—अरे कावालियचिलाय! अपडिवन्नछगलगविणासछलं जइ इमं वरागं हणिस्ससि ता निच्छयं न भविस्ससि। चत्तो कावालिएणं 'हा हा पावपासंडिडिंडिय! एवंविहपुरिसरयणं हणिऊण केच्चिरं जीविस्ससि? हा रायसुयपरमबंधव! हा सयलगुणरयणनिहाण! कहं मुहा निहणमुवगओ सि?' इच्चाइ पलावं कुणंतो पलाणो ततो ट्ठाणातो पुणजायमिव अप्पाणं मन्नंतो सेट्ठिसुओ, अइक्कंतो विंज्झविसयं, ठिओ एगत्थ गामे, रायसुयाइ सुमरंतो य गहिओ महासोगेण। कयं तप्पारलोइयकायव्वं। वीसंतो कइयवि दिणाइं। 'कहं पडिनियत्तिऊण रायाईणं मुहं दंसिस्सं? किं वा कहिस्सं?' ति पयट्टो पुव्वदिसाभिमुहं।

मिलिओ य मग्गे पव्वज्जं पव्वज्जिउकामो सुमेहो नाम सावगो गुरुसमीवं वच्चंतो एयस्स। जाया परोप्परं संकहा, पइदिणालावेण य पणयभावो य। एगया य पुच्छिओ सो सुमेहेण—भद्द! कीस तुमं विमणो व लक्खिज्जसि? जइ न बाढमकहणिज्जं ता कहेहि। तओ अंसुजलाविललोयणेण सिट्ठो से रायसुयाइविणासवुत्तंतो। सावगेण भणियं—इहलोगि च्चिय फलिओ छगलग[र]क्खण च्चिय सुकयकप्पपायवो, इहरहा रायसुयाइणो व तव्वेलं[4] च्चिय निहणं उविंतो त्ति, पच्चक्खदिट्ठफले

१ प्रज्ञापितः ॥ २ °यरं सं° प्रतौ ॥ ३ 'व्यापादिताः' मारिताः ॥ ४ तद्वेलमेव ॥

लिएण जंपियं—रायसुय! निसामेहि,

अत्थि विंज्झगिरिपायमूले विजयकुंडं नाम उज्जाणं। तम्मज्झभागे भगवतो सुवेलाभिहाणस्स जक्खस्स दक्खिणभवणभित्तिभागे पउमागारसिलमवणेऊण पविसिज्जइ केऊरनामम्मि विवरे। तत्थ य कोसमेत्तं अइक्कंते अच्चंतकंत[1]सव्वावयवसुंदरंगीओ नयणलायन्नावगन्नियकुरंगीओ नियरूव-सोहग्गभग्गरइ-रंभापवायाओ जक्खकन्नगाओ सक्खा दीसंति। ततो य तुम्हारिसाणमसमसाहसावज्जियविजयलच्छीणं निरुवक्कमविक्कमक्कंतभूचक्काणं चक्कवट्टिलक्खणंकियदेहाणं पुहइपालाणं अणन्नपुन्नपगरिसायड्ढियहियया[2] गिहिणीभावमावज्जंति त्ति।

इमं च सोच्चा अच्चंतं विम्हिओ रायपुत्तो समं मित्तवग्गेण। जातो य बाढं तल्लाभसमूसुयमणो। मणागं निरुंभिऊण वियारभावं[3] च कहंतरवक्खेवेण खणंतरं विगमिऊण गतो सगिहं। तहिं गतो वि रायसुओ तमेव पायालकन्नगावुत्तंतं तद्देगच्चित्तो चिंतयंतो सुत्तो व परवसो व वट्टन्तो भणिओ मित्तवग्गेण—रायपुत्त! किमेवमन्नचित्तो व लक्खिज्जसि[4]? खिज्जसि य देहेणं? किं नु सरसि कावालियसिद्धरसायलसीमंतिणीवुत्तंतं? बालजणविमोहणिज्जा खलु एवंविहसमुल्लावा तुम्हाण वि चित्तं विक्खिवंति त्ति चोज्ज[5]मेयं। रायसुएण भणियं—किं तस्स महाणुभावस्स वितहसमुल्लावेणं सज्झं[6]?।

लिच्छाइएहिं[7] मिच्छाविभासणं संभवेज्ज संगिस्स। एवंविहभणणे भूइ[8]-हड्डतुट्ठस्स किं कज्जं? ॥ १ ॥

१ °च्चंतकनस° प्रतौ ॥ २ अनन्यपुण्यप्रकर्षाकृष्टहृदयाः ॥ ३ विकारभावम् ॥ ४ लक्ष्यसे ? खिद्यसे ॥ ५ आश्चर्यमेतत् ॥ ६ साध्यम् ॥ ७ लिप्सादिकैः मिथ्याविभाषणं सम्भवेत् सङ्गिनः ॥ ८ भूत्यस्थितुष्टस्य ॥

एत्थंतरे अंवरोप्पर[1]मंतेउरीणं जाया समुल्लावा—एवमेवमम्हाहिं उत्तरोत्तरं पवड्ढंतो वित्तवओ कओ, एयाए पुण न किं पि कयं ति। थेरीए रायगिहिणीए भणियं—किमेतेण संगिहमंगलुग्गाणेण[2]? एयमेव तक्करं पुच्छह जं जीए अब्भहियं कयं ति। ततो पुट्ठो तक्करो ताहिं—अरे! 'काए तुहऽब्भहियं कयं?' ति सच्चं साहेसु। तक्करेण भणियं—देवीए भउब्भंतहियएण पुच्छिएणं[3] वि पुव्विं न किं पि नायं, संपयं पुण मह इमीए जणणीए दावियम्मि अभए जं पि तं पि भोयणाइयं अमयं व परिणयं, वसिओ[4] मि जीवलोगो, पुन्न व सव्वमणोरहा, ता 'इमीए जं कयं तं न कोइ कुणइ' त्ति ममाभिप्पाओ। पडिवन्नं सव्वाहिं ति च्छिन्नो विसंवाओ ॥ छ ॥

ता भो महाणुभाव! 'नाभयप्पयाणाओ अन्नं किं पि लेट्ठयरं[5]' ति तद्दाणे सव्वहा उज्जमं करेज्जासि। सेट्ठिसुएण भणियं—एवं काहामि। अन्नवासरे य 'भद्दगो' त्ति सिक्खविओ सो सावगेण पंचपरमेट्ठिमंतं, सिट्ठं से तम्माहप्पं, जहा—एस परमभत्तीए तिसंज्झं जविज्जंतो थंभेइ भूय-साइणि-सद्दूल-वेयाल-जलणाइप्पभवं उवद्दवजायं[6] ति। 'तह' त्ति पडिवन्नमणेण। सावगो वि गतो जहाभिमयं।

इयरो वि जहुत्तविहिपुव्वं पंचनमोक्कारमेकचित्तो परियत्तंतो पट्ठिओ जालंधरविसयं। मिलिया य मग्गे कइवय वि संत्थिया[7]। तेहिं समं वच्चंतस्स एगत्थ अयंडे च्चिय कुंडलियचंडकोडंडुड्डीणकंडखंडिज्जंतपहियमुंडमंडियमहिमंडला[8] मंडलवाव-

१ परस्परमन्तःपुरीणाम् ॥ २ स्वगृहमङ्गलोद्गानेन ॥ ३ °ण व पु° प्रतौ ॥ ४ °ओ सि जी° प्रतौ ॥ ५ श्रेष्ठतरम् ॥ ६ उपद्रवसमूहमित्यर्थः ॥ ७ सार्थिकाः ॥ ८ कुण्डलितचण्डकोदण्डोड्डीनकाण्डखण्डयमानपथिकमुण्डमण्डितमहीमण्डला मण्डलव्यापृताग्रहस्तात्रस्तसमुत्सरत्सुभटसार्था ॥

डग्गहत्थाणुप्पित्थसमुत्थरंतसुहडसत्था निवडिंया[1] चिलायधाडी। तओ तं ससत्थियं बंदिग्गाहेणं[2] घेत्तूण गया पल्लीए। समप्पियं बंदं पल्लिवइणो मेहनायनामस्स। तेण भणियं—अरे! केत्तिंया[3] एए चिट्ठंति?। भिल्लेहिं भणियं—दस जण त्ति। मेहनाएण भणियं—सुरक्खिया करेह जाव एक्कारसमो लब्भइ, जेण भूयाभिभूयस्स जेट्ठपुत्तस्स जायपगुणसरीरस्स चंडिगाए बलिविहाणसंपायणेण उवंजाइयं[4] दिज्जइ त्ति। 'जं सामी आणवेइ' त्ति तेहिं दढं निरुद्धा सेट्ठिसुयाइणो।

अवरवासरे य आणिओ कत्तो वि भिल्लेहिं एक्कारसमपुरिसो। ततो ते सव्वे काराविया ण्हाणं, पंरिहाविया[5] सेयवत्थजुयलं, नीया चंडियापुरओ, पूइयं मंडलग्गं, गहियं पल्लीवइणा, भणाविया य एए—अरे! सुदिट्ठं कुणह जियलोयं, सुमरह इट्ठदेवयं। एत्थंतरे धाहावियं पुरिसेण—हा! धाव धाव, एस तुब्भं पुत्तो भूएण बाढमभिभविज्जइ त्ति। तओ ते विमोत्तूण पल्लीवई धाविओ पुत्ताभिमुहं, आउलीहूओ गेहजणो। पुट्ठो य सेट्ठिसुएण एगो पुरिसो—किमेयं? ति। सिट्ठो तेण भूयवुत्तंतो। तओ पंचनमोक्कारमाहप्पमणुचिंतंतेण भणिओ सो सेट्ठिसुएण—दंसेसु भो! तं पल्लीवइसुयं, जेण तद्दोसोवक्कमाय किं पि अप्पणो विन्नाणमुवदंसेमि त्ति। कहिओ एस वुत्तंतो पुरिसेण पल्लिनाहस्स। तेणावि आणाविऊण भणिओ सो—भो भो महायस! जइ किं पि विन्नाणमत्थि ता तं पउंजिऊण पगुणेसु मे सुयं, साहेसु य तदुवक्कमोवायं जेण तं संपाडेमु त्ति। सेट्ठिसुएण भणियं—पल्लिनाह! अलमलं पसंभमेण, न बज्झोवगरणमवेक्खइ एस दोसु त्ति। पारद्धो पंचनमोक्कारं[6] जविउं। कहं चिय?—

१ °डियचि° प्रतौ ॥ २ °ण मोत्तू° प्रतौ ॥ ३ कियन्तः ॥ ४ उपयाचितम् ॥ ५ परिधापिताः ॥ ६ °क्कारपरं ज° प्रतौ ॥

नि[1]प्फंदतारलोयणनासग्गोलग्गथिमियपम्हउडं । उदरविचरंतनिब्भरकुंभयपवमाणवावारं ॥ १ ॥
नि[2]यनियविसयऽच्चासंगविरयसमरसियइंदियग्गामं । पंचपरमेट्ठिसुमरणसमकालुच्छलियगुरुनायं ॥ २ ॥
ए[3]क्केक्कऽक्खरससहर[4]झरंतपीऊसपवहपब्भारं । निव्वविउमुट्ठियं पिव तिहुयणदुहनिवहहव्ववहं ॥ ३ ॥
प[5]सरंतसूरलक्खाइरेगपप्फुरियफारपहचक्कं । दूरो[6]सारियजणपच्चणीय[7]भूयाइदुट्ठगणं ॥ ४ ॥
इय जा[8]व जवइ जोगि व्व निच्चलो निब्भओ निरासंको । पंचपरमेट्ठिमंतं स महप्पाऽणप्पमाहप्पं ॥ ५ ॥
ताव अ[9]यंडविहंडियबंभंड[10]ऽप्फुडणरवसमइरेगं । रसि[11]यं काउं भूओ दूरीहूओ सुयाहिंतो ॥ ६ ॥

जातो पगुणो पल्लिवइसुओ । सम्माणिओ पल्लिवइणा संखो । जोडिय पाणिसंपुडं च भणियं—अहो महासत्त ! तुमए मम सुयपरमोवयारकरणेण बाढमा[12]गरिसियं मह हिययं, ता साहेसु किं पि जं प[13]णामिज्जउ त्ति । संखेण भणियं—पल्लिनाह ! जइ एवं ता अभयं दाऊण विस[14]ज्जेसुमऽहागयं एए वरागा दस वि व[15]इदेसिय त्ति । 'जं तुमं आणवेसि' त्ति जंपिरेण पल्लि-

१ निष्पन्दतारलोचननासाग्रावलग्नस्तिमितपक्ष्मपुटम् । उदरविचरन्निर्भरकुम्भकपवमानव्यापारम् ॥ पवमानः—वायुः ॥ २ निजनिजविषयात्यासङ्गविरतशमरसिकेन्द्रियग्रामम् । पञ्चपरमेष्ठिस्मरणसमकालोच्छलितगुरुनादम् ॥ ३ एकैकाक्षरशशधरक्षरत्पीयूषप्रवाहप्राग्भारम् । निर्वापयितुमुत्थितमिव त्रिभुवनदुःखनिवहहव्यवाहम् ॥ ४ °रज्झरं° प्रतौ ॥ ५ प्रसरत्सूरलक्षातिरेकप्रस्फुरितस्फारप्रभाचक्रम् । दूरापसारितजनप्रत्यनीकभूतादिदुष्टगणम् ॥ ६ °सारीय° प्रतौ ॥ ७ °यदूया° प्रतौ ॥ ८ यावद् जपति ॥ ९ अकाण्डविखण्डितब्रह्माण्डास्फुटनरवसमतिरेकम् । रसितं कृत्वा भूतः दूरीभूतः सुतात् ॥ १० °डफुड° प्रतौ ॥ ११ °सिउं का° प्रतौ ॥ १२ आकृष्टम् ॥ १३ अर्प्यताम् ॥ १४ विसर्जय यथागतम् ॥ १५ वैदेशिकाः ॥

वि किमवरं सीसइ ? किंच—जीवियव्वे संते सव्वं सुहं पडिहाइ न इहरहा । तहाहि—

दिव्वविलेवण-भूसण-सयणा-ऽऽसण-वसण-भोयणपयारा । तंबोल-पुप्फ-सुहफाससेज्ज-वरभवण-गेयरवा ॥ १ ॥
अ[1]च्चंतकंतरेहंतरूयरामाकडक्खविक्खेवा । पज्जंतपत्तजीयस्स तोसमीसिं पि नो दिंति ॥ २ ॥
एत्तो च्चिय चोराहरणमेत्थ वन्नंति मु[2]णियसम[य]त्था । सेट्ठिसुएणं भणियं किं पुण साहेसु तं मज्झ ॥ ३ ॥

सुमेहेण जंपियं—निसामेसु,

वसंतपुरे जियसत्तू राया अग्गमहिसीए समं ओ[3]लोयणगतो चिट्ठइ । तम्मि य समए खेत्तदुवारे च्चिय उवलद्धो नवजुवाणो एगो तक्करो तलवरेण, दंसिओ रन्नो, वज्झो समाणत्तो । ततो अच्चंतं त्रिद्दा[4]णवयणं वज्झभूमिं निज्जमाणं तमवलोइऊण संजायदयाभावाए 'अदिट्ठजियलोयसुहो मा विव[5]ज्जउ' त्ति एगदिणं जाव मोयाविऊण देवीए नीओ नियभवणे, काराविओ परमविभूईए ण्हाण-विलेवणा-ऽलंकाराइपरिग्गहं, जातो सव्वग्गेण पंचसयद[6]म्मव्वओ । बीयदिणे बीयरायमहिलाए वि, नवरं साहस्सिओ वओ । एवं उत्तरोत्तरप[7]वड्ढमाणदविणवएण लालिओ सो एक्केक्कदिणं सेसाहिं वि रायमहिलाहिं । नवरं पज्जंतदिणे थेराए रायगिहिणीए रायाणं गाढोवरोहेण विन्न[8]विऊण दवावियं अभयं तस्स तक्करस्स, वासियभत्ताइणा जेमाविऊण जहाभिमयं विसज्जितो य एसो ।

१ अत्यन्तकान्तराजमानरूपरामाकटाक्षविक्षेपाः । पर्यन्तप्राप्तजीवितस्य तोषमीषदपि न ददति ॥ २ ज्ञातसमयार्थाः । समयः—सिद्धान्त ॥ ३ अवलोकनं—गवाक्षः ॥ ४ 'विद्राणवदनं' म्लानमुखम् ॥ ५ 'विपद्यताम्' म्रियताम् ॥ ६–द्रम्मव्ययः ॥ ७–प्रवर्धमानद्रविणव्ययेन ॥ ८ विज्ञप्य दापितम् ॥

इयरो वि पविट्ठो नियघरं। आणंदिया जणणि-जणगाइणो। पुच्छितो पुव्ववुत्तंतं। कहितो तेण मूलातो आरब्भ। निसामिओ एस वइयरो रायाईहिं पि। जातो य तेसिमच्चंतसंतावो। एवं ते सोय[1]णिज्जदसं पत्ता। इयरो पुण गेहसामी जाओ, तिवग्गसारं जीवियफलं सुचिरमुवभुंजिऊणं मओ समाणो भवणवईणं मज्झे पलियाऊ देवो उववन्नो। तत्थ जाई सरिया। 'अभयप्पयाणकप्पपायवफलमेयं' ति [2]अवगयं चित्तेण। पज्जंतसमए पुच्छिओ केवली—भयवं! कहिं अहं एत्तो उववज्जिस्सामि?। भगवया भणियं—विजयपुरे नयरे विजयसिंहस्स रन्नो विजयवईए देवीए कुच्छिसि पुत्तत्तणेणं ति।

एवं सोच्चा सो महप्पा अप्पणो पुणो पडिबोहनिमित्तं विजयसिंहस्स रन्नो सुमिणे साहइ, जहा—सभाभवणभित्तीसु इमं वुत्तंतं निउणचित्तगरेहिं आलिहावेसु, जहा—रायसुयाइणो तिन्नि वि जणा विंज्झ[3]गिरिकडयकुडंगदुग्गजक्खाययणट्ठियविवरदुवारपूयाकवडेण कावालिएणं छगलोवहारच्छलेण विणिहया, एगो य तव्विणासविहाणमणिच्छंतो न विणट्ठो इच्चाइ ताव जाव सगिहं सुहेण सो पत्तो त्ति। इमं च सुमिण[4]ब्भुयं सो दट्ठूण विउ[5]द्धो विभाविउं पवत्तो—किमेयं अदिट्ठ-सुयं अणणुभूयमपयइवियारं मए सुमिणं दिट्ठं ति मन्ने? अच्चंतदीहरत्तणेण आलप्पालमिमं? ति। बीयरयणीए पुणो वि इममेव से दरिसियं। 'कारणेण होयव्वं' ति रन्ना लिहावियं तं सव्वं स[6]होवइट्ठभवणभित्तीसु।

अवरवासरे सो देवो चविऊण तस्सेव राइणो महिलाए गब्भे पुत्तत्तणेण उववन्नो, पसूओ य समुचियसमए, कयं

१ शोचनीयदशाम् ॥ २ 'अवगतं' ज्ञातम् ॥ ३ विन्ध्यगिरिकटककुडङ्गदुर्गयक्षायतनस्थितविवरद्वारपूजाकपटेन ॥ ४ °मिणुब्भु° प्रतौ ॥ ५ 'विबुद्धः' जागृतः ॥ ६ सभोपदिष्ट– ॥

वद्धावणयं, पइट्ठियं च जओ त्ति नामधेयं, मंदरगिरिकंदरगओ व्व पायवो वड्ढिउमारद्धो, अहिगयकलाकलावो य पत्तो तरुणत्तणं। अन्नया य पिउणा कुसुमिणाणुमाणेण [1]मुणियपच्चासन्नमरणसमएण सो ठविओ नियपए, सयं च गतो वणवासं। इयरो य रायसिरिमुवभुंजिउं पवत्तो।

एगम्मि य समए अत्थाणनिसन्नस्स तस्स जाओ सहसा कोलाहलो। तओ वाउ[2]लीभूयं इओ तओ धावमाणं जणमवलोइऊण पुच्छियं रन्ना—किमेयं? ति। जणेण भणियं—देव! एते तुम्हपायपउमोवजीविणो सहपंसुकीलिया तिन्नि वि धणवाल-वेलंधर-धरणिंधरनामाणो चित्तभित्तिमवलोयमाणा केणइ कारणेण मुच्छानिमीलियच्छा 'धस' त्ति धरणीयले निवडिया। ततो जायविम्हओ गतो राया तयंतियं। कोऊहलेण पारद्धा सा चित्तभित्ती मूलाओ पलोइउं। दिट्ठं च रायसुयाइपडिवन्नं विंज्झगिरिपल्लिपज्जवसाणं नियय[3]वित्तगालिहणं। तं च दट्ठूण ईहा-ऽपोहाइ कुणमाणस्स जायं जाईसरणं। मुच्छ[4]ासमुच्छाइयचेयन्नो निवडिओ महीवट्ठे। अच्चंताउलिएण य सेवगजणेण कतो सिसिरोवयारो। खणद्धेण य राया इयरे वि उम्मिलियलोयणा सुत्तपबुद्ध [व्व] उट्ठिया। 'देव! किमेयं?' ति पुच्छिओ राया पहाणलोगेण। सिट्ठो य सव्वो वि [5]अभयप्पयाणपयडणपहाणो पुव्वभववइयरो। इयरे [वि] य[6] पुट्ठा मुच्छागमकारणं। तेहिं वि इणमेव सिट्ठं। ततो राइणा [7]पुव्वभवसिणेहसमुब्भवंताणंदंसुप्पवाहपक्खालियाणणेण सायरमवगूहिया तिन्नि वि जणा। जोडियपाणि-

१ ज्ञातप्रत्यासन्नमरणसमयेन ॥ २ व्याकुलीभूतम् ॥ ३ निजकवृत्तकालेखनम् ॥ ४ °च्छासिमु° प्रतौ। मूर्च्छासमुच्छादितचैतन्यः ॥ ५ अभयप्रदानप्रकटनप्रधानः ॥ ६ य वुद्धा मु° प्रतौ ॥ ७ पूर्वभवस्नेहसमुद्भवदानन्दाश्रुप्रवाहप्रक्षालिताननेन सादरमवगूढा ॥

संपुडेहिं विन्नत्तं तेहिं—देव ! तुल्ले वि पुव्वभवभमणाइवइयरे कहं एरिसी रायसिरी तुब्भेहिं आवज्जिया ? । नरवइणा वि 'अभयदाणकामधेणुविलसियमिममसेसं' ति निवेइयं तेसिमियरेसिं च । वित्थरियं च इमं सव्वत्थ जणवए । जाओ य जहासत्तीए अभयप्पयाणपडिबद्धचित्तो जणो ।

अणुसुमरियपंचनमोक्कारेण य रन्ना पडिवन्नो सुगुरुपायमूले जिणधम्मो, काराविआइं जिणभवणाइं, पयट्टाविया सुचिरं दीणाईण दाणसाला, पभावियं जिणसासणं । घोसावियं नियभुत्तीए, जहा—जो [1]उवेच्चाए जीवघायं काही तस्स सव्वस्सदंडो कायव्वो त्ति । एवं [2]बुहसलहणिज्जं सरयससहरधवलकित्तिपावणिज्जं रज्जं उवभुंजिऊण एगम्मि पत्थावे अत्थाणगओ [3]वेरग्गवग्गुवग्गुरानिरुद्धचित्तचित्तंतो राया सभावत्तिलोयं भणिउं पवत्तो—अहो ! पेच्छह तुच्छमाउयं, विरसावसाणो [4]विसयवासंगो, विविह[5]वाहिविहुरं सरीरं, [6]खणदिट्ठ-नट्ठं विभवविर्यभियं, अच्चंतपच्चासन्नो मच्चू, पच्चूहवूहो अभिलसियकज्जसमारोहो, सकज्जाणुवित्तिसारो सयणवग्गो, अवस्समणुभवियव्वं सकम्मदुविलसियं, तहावि पमायमयपत्तो जणो [7]थोयसुहलवनिमित्तमणवेक्खियासंखदुक्खसंपाओ दिट्ठेट्ठविरुद्धं पि जीवघायमायरइ, एयं पि न परिभावइ—जमप्पणो वि अणभिप्पेयं तं कह परस्स कीरइ ?

अणंतभवकारणं रणमिवं[8]गिदुक्खावणं, वणं व कयविप्पियं पियविओगसंपायणं ।
न जीववहणं करे सुहसमुच्चए [9]सी बुहो, विसं [10]असइ को वि किं सुचिरजीवियत्थी जणो ? ॥ १ ॥

१ 'उपेत्य' हठात् ॥ २ बुधश्लाघनीयं शरच्छशधरधवलकीर्त्तिप्रापणीयम् ॥ ३ वैराग्यवल्गुवागुरानिरुद्धचित्तचित्रीयमाणः ॥ ४ विषयव्यासङ्गः ॥ ५ –व्याधि–॥ ६ क्षणदृष्टनष्टं विभवविजृम्भितम् ॥ ७ स्तोकसुखलवनिमित्तम् अनपेक्षितासंख्यदुःखसम्पातः दृष्टेष्टविरुद्धम् ॥ ८ अङ्गिदुःखापणम् व्रणमिव ॥ ९ असि ॥ १० अश्नाति॥

वइणा संबलगदाणपुव्वगं विसज्जिया सव्वे वि । बंधु व्व सहोयरो व्व महईए पडिवत्तीए धरिऊण कइवयदिणाइं हिरन्नदाणाइणा य पूइऊण य भणितो संखो—आइससु किमियाणिं कीरइ ? त्ति । संखेण जंपियं—पल्लिनाह ! किं तुममहं भणामि ?—

बहुकट्ठकप्पणाहिं पाणी पाउणइ देहपारोहं । हम्मइ य थेवकज्जे वि सो य ही ही ! महापावं ॥ १ ॥
[1]कंटगवेहे वि दुहं उप्पज्जइ अप्पणो सुदुव्विसहं । निसियासिहणिज्जंतस्स जं च तं को मुणइ वोत्तुं ? ॥ २ ॥
जं दिज्जइ तं लब्भइ [2]जवा पइन्ना न सालिणो हुंति । जीववहेणं मूढा कह दीहरमाउमीहंति ? ॥ ३ ॥
जइ सुहमणहं दीहं च आउयं अइथिरं च पियजोगं । वंछह तुब्भे ता मुयह निच्छियं जीवघायमई ॥ ४ ॥

एवं भणिए 'तह' त्ति पडिवन्नमभयप्पयाणं पल्लिनाहेण । कइवयदिणाणंतरं च संखो नियजणगसमुक्कंठिओ पट्ठिओ नियनयराभिमुहं । ततो पल्लिवई वत्थाइणा सक्कारिऊण एयं दूरं अणुगच्छिऊण य नियत्तो सगिहाभिमुहं । इयरो वि गंतुमारद्धो।

अह कइवयपंथियसहातो एगम्मि पच्चंतसन्निवेसे भोयणकरणत्थमुवट्ठिओ पडिरुद्धो [3]विविहुग्गीरियपहरणेहिं 'हण हण' त्ति भणिरेहिं [तक्करेहिं]। असंभंतेण य भणियं संखेण—अरे! घायमकुणंता जमत्थि तं घेत्तूण मुंचह त्ति । एवं वुत्ते पारद्धो सो इयरे य चोरेहिं लुंटिउं। एत्थंतरे [4]जायपच्चभिन्नाणेहिं तक्करमज्झाओ कइवयनरेहिं वारिया अवरे—सो एस महप्पा अम्ह जीवियदाया बंदग्गाहमोयगो त्ति, ता अम्हे [5]पेच्छिऊण [ण] एयस्स अणुचियमायरियव्वं ति । [6]ओसक्का तक्करा । तेहिं नीओ संखो नियघरे, काराविओ ण्हाण-भोयणाइकिच्चं, पूइतो जहोचियपडिवत्तीए, सुहं सुहेण पराणिओ विजयवद्धणपुरं । खामिऊण पडिनियत्ता ।

१ कण्टकवेधे ॥ २ यवाः प्रकीर्णाः ॥ ३ विविधोद्गीर्णप्रहरणैः ॥ ४ जातप्रत्यभिज्ञानै ॥ ५ प्रेक्ष्य न एतस्य ॥ ६ 'अवष्वष्किताः' पश्चाद्वलिताः ॥

उपग्रहदानस्य चातुर्विध्यम्

॥१३३॥

ताणमुवट्ठंभो पुण उवग्गहो सो य वत्थ-पत्ताणं । ओसह-सेज्जा-सयण-ऽन्न-पाणमाईण दाणेण ॥ ३ ॥
जं तेहि उवग्गहिया मयं हि [1]पागाइपावविरयमणा । साहिंति सुहेणं चिय सज्झाय-ज्झाण-तव-विणए ॥ ४ ॥
देहो साहणरहिओ न खमइ मोक्खाणुकूलमायरिउं । तस्साहणाइं भन्नंति तेण वत्थाइदाणाइं ॥ ५ ॥
धम्मरयाण मुणीणं [2]उग्गहकिच्चेसु संपयट्टंतो । तद्धम्मदीवणेणं गिही वि तन्निज्जराभागी ॥ ६ ॥
चोरोवग्गहकारी जह चोरो गिण्हई अचोरो वि । साहूवग्गहकारी गिही वि तह होइ साहु व ॥ ७ ॥
ता सव्वहा गिहीणं सया वि सावज्जजोगनिरयाणं । दाणं चिय भवभयजलहितरणबोहित्थम[3]च्चत्थं ॥ ८ ॥
तव-सील-भावणाओ बल विरई चित्तरोह सज्झाओ । दाणं च सुदेयमओ तम्मि [4]पयत्तो सया जुत्तो ॥ ९ ॥
तं पुण दायगसुद्धं गाहगसुद्धं च कालसुद्धं च । भावविसुद्धं च तहा दिज्जंतं बहुफलं होइ ॥ १० ॥
[5]रोमंचंचियदेहो मयरहिओ कम्मनिज्जराहेउं । जो देइ कप्पणिज्जं दायगसुद्धं तु तं नेयं ॥ ११ ॥
जो साहू नियकिरियापवण्णचित्तो य उज्झियममत्तो । अकसाओ अतिही जत्थ तं भवे गाहगविसुद्धं ॥ १२ ॥
जं जम्मि उ उव[6]उज्जइ काले वत्थऽन्नमाइ साहूण । तं तत्थ दाणमाहं[7]सु निच्छियं कालसुद्धं तु ॥ १३ ॥
देयं पत्तं च वरं संपत्तं जेण तस्स मे सफलो । गिहवासो त्ति मई जत्थ भावसुद्धं तयं बिंति ॥ १४ ॥

१ पाकादिपापविरतमनसः ॥ २ उपग्रहकृत्येषु सम्प्रवर्त्तमानः ॥ ३ अत्यर्थम् ॥ ४ प्रयत्नः ॥ ५ रोमाञ्चाञ्चितदेहो मदरहितः कर्मनिर्जराहेतोः । यः ददाति 'कल्पनीयं' योग्यम् ॥ ६ °ववज्ज° प्रतौ । उपयुज्यते ॥ ७ आहुः ॥

उग्गम-उप्पायणदोसवज्जियं संजमेकवुड्ढिकरं । दोण्हं पि य पियजणयं दे[1]यं देयं च कुसलेहिं ॥ १५ ॥ किं बहुणा ?—
क[2]यं-निट्ठियमत्तट्ठं सम्ममणुट्ठाणिणो मुणिजणस्स । सुजउ व पावइ सुहं दिंतो असणाइ भत्तीए ॥ १६ ॥

तथाहि—अत्थि कोसलदेसावयंसतुल्ला महल्लपासायसहस्सोवसोहिया इक्खागुवंससंभूयभूवइविजयरायभुयपरिहपयत्तपडिहयपडिवक्खभया धण-धन्न-सुवन्नपडिपुन्नपयइलोयाणुगया अउज्झा नाम नयरी ।

किं वन्निज्जइ तीए[3] जीए जइबंधवो जुगाइजिणो । रज्जं पवज्जं तह [4]वज्जियवज्जं पवज्जित्था ? ॥ १ ॥

तत्थेव निच्चवासी सभावउ च्चिय विवेयसंगओ संगमओ नाम नावावणिओ सकुलक्कमाविरुद्धाए वि[5]त्तीए कालं गमेइ । अन्नया य हीयमाणे चिरोवज्जियदव्वसंचए परिभावियमणेण—दव्वं हि जीवियं जणस्स, ए[6]यविउत्तो हि जणो जीवंतो वि मओ व्व अवगणिज्जइ सव्वत्थ, न मन्निज्जइ पिउणा वि, नावेक्खेज्जइ कलत्तेण वि, न संभासिज्जइ सुहिणा वि, न बहुमन्निज्जइ पुत्तेण वि, ता पुव्वपुरिसकमागयं पारंभेमि जाणवत्तववसायं, अज्जिणामि दव्वसंचयं ति । ततो पगुणावियं बोहित्थं, भरियं च विविहभंडाणं, सज्जीहूओ निज्जामगजणो । सुमुहुत्ते य कयमज्जणो विहियदेव-गुरुपाय[7]-पूओ संपाडियतकालोचियकायव्ववित्थरो संगमओ समारूढो बोहित्थं ।

१ 'देयं' दातव्यं वस्तु ॥ २ कृतनिष्ठितमात्मार्थं सम्यगनुष्ठानिनः ॥ ३ तस्या यस्यां जगद्बान्धवः यतिबान्धवो वा ॥ ४ वज्रिवर्यं वर्जितवर्ज्यं वा राज्यं वर्जितवर्ज्यां प्रव्रज्यां च प्रापयत ॥ ५ 'वृत्त्या' व्यापारेण ॥ ६ एतद्वियुक्तः ॥ ७ °यमूले संपा° प्रतौ ॥

प्रवहणम्

उ[1]ब्भवियकूवखंभारोवियवित्थरियसियवडाडोवं । प[2]वहियवाउवेगं पहसंतं विययपक्खिं व ॥ १ ॥
सु[2]महल्लाऽवल्लयवहणवेगवोलंतगरुयकल्लोलं । परतीरगमुक्करिसा[3] कयक्कमकमणुप्पयन्तं व ॥ २ ॥
[4]वज्जंतातोज्जसमुच्छलंतपडिसद्दभूरिघोररवं । निम्महणासंकियसलिलदेवयावड्ढियायंकं ॥ ३ ॥
इ[5]य अणुकूलखरानिलधुव्वंतमहंतसियवडुग्घायं । पवणाइरेगवेगं संपत्तं तीरभागम्मि ॥ ४ ॥

तत्तो मुक्का नंगरा, पाडिओ सियवडो, समुत्तिण्णो नावाजणो । नि[6]व्विग्गमोयारियाणि भंडाणि, समागया त[7]यत्थिणो, जाओ ववहारो, विक्किणियाइं भंडाइं, गहियाइं पडिभंडाइं, समासाइओ पभूयदव्वलाभो । तओ 'कयसयलकिच्चो' त्ति जाणवत्तं पगुणीकाऊण पट्टिओ संगमओ सदेसाभिमुहं । समुद्दमज्झमणुप्पत्तस्स य तस्स वि[8]वरम्मुहीहूया कम्मपरिणई । गं[9]यण-यलमोगाहिउं पवत्तं च पवहणपुरओ गरुयगिरिसिहराणुगारं सलिलपडलं । एत्थंतरे कू[10]वखंभोवरिभागगएण विसिट्ठंजण-निम्मललोयणावलोइयजलगयमयराइदुट्ठसत्तवग्गेणं[11] सभय-चमक्कारं वाहरियं निज्जामएण—अरे रे ! वा[12]एह पलयपक्खुहिय-

1 ऊर्ध्वीकृतकूपस्तम्भारोपितविस्तृतसितपटाटोपम् । प्रव्यथितवायुवेगं प्रहसमानं विततपक्षिणमिव ॥ 2 सुमहाऽवल्लकवहनवेगव्युत्क्रामद्गुरुकल्लोलम् । परतीरगमनोत्कर्षात् कृतक्रमक्रमणोत्पतदिव ॥ 3 °साकयकयकमकमणुप्पयत्तयत्तं व प्रतौ ॥ 4 वाद्यमानातोद्यसमुच्छलत्प्रतिशब्दभूरिघोररवम् । निर्मथनाशङ्कितसलिलदेवतावर्धितातङ्कम् ॥ 5 इति अनुकूलखरानिलधुनन्महासितपटोद्घातम् । पवनातिरेकवेगं सम्प्राप्तं तीरभागे ॥ 6 °णिवग्ग° प्रतौ ॥ 7 तदर्थिनः ॥ 8 विपराङ्मुखीभूता ॥ 9 गगनतलमवगाहितुम् ॥ 10 कूपस्तम्भोपरिभागगतेन विशिष्टाञ्जननिर्मललोचनावलोकितजलगतमकरादिदुष्टसत्त्व-वर्गेण सभयचमत्कारं व्याहृतं निर्यामकेण ॥ 11 °ण भभयवचम° प्रतौ ॥ 12 वादयत प्रलयप्रक्षुब्धपुष्करावर्तगर्जिगम्भीराणि ॥

किञ्चापरेण ?—

वयमपघृणचित्ताः सत्त्वसङ्घातघाताशुभमपि गृहवासं बुध्यमानाः सुबुद्ध्या ।
विपदमनुपदं च प्रेक्षमाणा अमीतः, तदपि न विसृजामो ही ! महामोहराजः ॥ १ ॥
परमिह मुनयस्ते वन्द्यपादारविन्दाः, वचन-तनु-मनोभिर्येऽभयं प्राणवद्भ्यः ।
ददति न च मनागप्यर्दिताः क्रूरसत्त्वैर्विदधति रुषमन्तर्जीवितव्यव्ययेऽपि ॥ २ ॥
अयि हतक ! किमेतज्जीव ! जीवोपघातोपहितसुखलवं स्वं शाश्वतं मन्यसे त्वम् ? ।
स्मरसि किमु न पूर्वं निन्दनीयेन्द्रियार्थाचरणजनितदुःखं ? यत् त्वयाऽनन्तमाप्तम् ॥ ३ ॥
इति समुदितशुक्लध्यानवह्निप्रबन्धज्वलितनिखिलसम्यग्घातिकर्मेन्धनौघः ।
स धृतसुयतिवेषश्चारुचारित्रिमुख्यो, भरत इव विजह्रे केवलश्रीसनाथः ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे अभयप्रदानप्रस्तावे जयराजर्षिकथानकं समाप्तम् ॥ १७ ॥

उपष्टम्भदानस्य लक्षणम्

पुव्विं पि पिसु[2]णियमिमं दाणमुवट्ठंभकरं ति किंचेमि । धम्मिट्ठाणं तं पुण इट्ठमुवट्ठंभकरणेण ॥ १ ॥
धम्मिट्ठा पुण एत्थं स[3]मत्थसावज्जजोगपडिविरया । परमत्थेण मुणि च्चिय मोक्खत्थं विहियवावारा ॥ २ ॥

1 °सत्त्वसङ्घाति° प्रतौ ॥ 2 'पिशुनितं' सूचितम् ॥ 3 समस्तसावद्ययोगप्रतिविरताः ॥

पेच्छइ एला-लवंग-नालियर-कयली-पणसपमुहफल[1]भरोणमंतसाहं साहिनिवहं। ततो जायजीवियवपच्चासो पच्चासन्नसरोयरे कर-चरण-मुहविसुद्धिं काऊण तरुवरफलाइं [2]आहरिउं पवत्तो। उवाहरियसमीहियफलो य कयदेव-गुरुपायसुमरणो य भोयणट्ठ-मुवट्ठिओ चिंतेइ—

जइ वि हरि-हरिण-सद्दूल-[3]पीलु-[4]भल्लुंक-भिल्लदुविगमं। रन्नमिमं माणुसचारविरहियं तह वि मा कोइ ॥ १ ॥
अहमिव [5]विकूलहयविहिविहियाणिट्ठो कहं पि इह एज्जा। ता तद्दाणं काउं मह संपइ कप्पई भोत्तुं ॥ २ ॥
तं भुत्तं जं अतिहीण दिन्नसेसं स एव विभवो य। जो सामन्नो मन्ने सव्वस्स वि नियलोयस्स ॥ ३ ॥
संसारम्मि अणंते किं नो पत्तं ? न किं व परिभुत्तं ?। मोत्तुं परोवयारं किं वा न [6]कयं च ? संके हं ॥ ४ ॥
ता हियय ! छुह[7]किलंतं पि दीणयं मा खणं पवज्जिहसि। एवंविहपत्थावे अतिहिपयाणं सुहनिहाणं ॥ ५ ॥
इय जाव सो महप्पा तक्कालुच्छलियवीरिउल्लासो। दिसिवलयं पेहंतो अच्छइ अच्छिन्नदाणिच्छो ॥ ६ ॥
ताव कुरंगो एक्को तं पगुणियभोयणं पलोइत्ता। मण-पवणविजइवेगेण पडिगतो पुव्वदिसिहुत्तं ॥ ७ ॥
अविभीसणो वि य अहं [....]अणाउस्सविय किं पलाणोऽयं ?। अहवा भयाउर च्चिय सभावओ च्चिय तिरियजाई ॥ ८ ॥
इय चिंतंतस्स य तस्स तक्खणं धरियविमलसियछत्तो। एगो महातवस्सी खंदकुमारो व पच्चक्खो ॥ ९ ॥

---

१ –भरावनमच्छाखम् ॥ २ **आहारि**° प्रतौ ॥ ३ पीलु–हस्ती ॥ ४ °**भल्लंग-भि**° प्रतौ ॥ ५ विकूलहतविधिविहितानिष्टः। विकूलः–प्रतिकूलः ॥ ६ **कहिं च** प्रतौ ॥ ७ ° **किलंतंमि दी**° प्रतौ। क्षुधाक्रान्तमपि दीनतां मा क्षणं प्रपत्स्यसे ॥

[1]अग्गट्ठियविज्जाहरबंदिसमुग्घुट्ठविजयवरचरिओ। हरिणुवदंसियमग्गो बलदेवसिरि व्व संपत्तो ॥ १० ॥
[2]तो मुणियसुमुणिमाहप्पबुद्धसारंगगमणपरमत्थो। अप्पत्तपुव्वपहरिसविणिंतरोमंचचिंचइओ ॥ ११ ॥
सागयमि[3]इं जंपंतो सत्त-ऽट्ठपयाइं सम्मुहं गंतुं। कयपायपउमनमणो कयलीफलमाइणा तेण ॥ १२ ॥
पडिलाहइ अत्तट्ठं कडेण तह निट्ठिएण अत्तट्ठं। तो वंदिय[4]मणुगच्छिय सत्त-ऽट्ठपयाइं परितुट्ठो ॥ १३ ॥
[5]नीरनिहिनिहणपावियपवहणदुच्छं पि परममब्भुदयं। मन्नंतो मुणिवरवि[6]यरणेण अह जिमिउमारद्धो ॥ १४ ॥

कयभोयणो य पुन्नायतरुतले वीसमंतो परिभावेइ—अहो ! कहं एस महामुणी अच्चंतनीरागो ? कहं वा पुं[7]रिसधरिज्जंतसियायवत्तो ?, कहं परिभाविज्जंतनिज्जियमयाइवियारो ? कहं वा पुरतो मागहगीयमाणमाणवाइरित्तकित्तिवुत्तंतो ?, कहं अच्चंतकिसियकाओ ? कहं वा सुराभिभवकारिकंतिपब्भारो ? त्ति, अहो ! महापुरिसाणं निस्सीमाओ विभू[8]ईओ अम्हारिसाण तुच्छमईणं न वियारगोयरे वि वियरंति।

एत्थंतरे सो मागहो पत्तो तमुद्देसं, भणिउं पवत्तो य—भो भो महायस ! सुकयकम्माणं पढमकित्तणिज्जनामो समुवल-

---

१ अप्रस्थितविद्याधरबन्दिसमुद्घुष्टविजयवरचरितः। हरिणोपदर्शितमार्गः बलदेवश्रीरिव सम्प्राप्तः ॥ २ ततः ज्ञातसुमुनिमाहात्म्यबुद्धसारङ्गगमनपरमार्थः। अप्राप्तपूर्वप्रहर्षविनिर्यद्रोमाञ्चमण्डितः ॥ ३ °**मिई जं**° प्रतौ ॥ ४ वन्दित्वा अनुगत्य ॥ ५ नीरनिधिनिधनप्राप्तप्रवहणदौःस्थ्यमपि ॥ ६–वितरणेन–दानेन ॥ ७ पुरुषध्रियमाणसितातपत्रः ? कथं परिभाव्यमाननिर्जितमदादिविकारः ? कथं वा पुरतो मागधगीयमानमानवातिरिक्तकीर्तिवृत्तान्तः ? ॥ ८ °**ईए अ**° प्रतौ ॥

द्धजम्म-जीवियफलो असेसमणुयमत्थयचूडामणी तुमं निच्छियं होसि, कहमन्नहा विज्जा[1]हरनरिंदसंदोहमणिमउडटिविडिक्कि-यक[2]मस्स तणं व परिचत्तविज्जाहररायलच्छिणो तिहुयण[3]सरसीसमुग्गयकित्तिकुमुयवणस्स एयस्स खयररायरिसिणो संपइ संपत्तचउमासतवपारणयपत्थावस्स नीसेसदोसविरहियऽन्न-पाण[4]पणामणेण करयलकमलोवणीयतिलोयलच्छिविच्छ[5]ड्डो होसि ? नहि अभाविभद्दा दूरोहा[6]मियकामधेणु-चिंतामणि-कप्पपायवं एवंविहं मुणिं दट्ठुं पि लभंते किमंग पाराविउं ? किं वा न सुओ तुमए एस सव्वजयपयडो वि महाणुभावो ? । संगमएण भणियं—जइ उलुएण अंसुमाली न पलोइओ किमित्तिएण वि न सो सयलतिहुयणपच्चक्खो ? ता सव्वहा स[7]वणपीऊसवरिसकप्पं साहेसु एयसरूवं । मागहेण भणियं—एवं करेमि ।

एसो हि [8]पभूयरयणड्ढवेयड्ढपव्वयपइट्ठियदाहिणसेढिपरिविढो निप्पुन्नयनरदुल्लहगयणवल्लहपुरपहू अणंतविरिओ नाम विज्जाहरचक्कवट्टी विसट्ट[9]कंदोट्टदलदीहरच्छीहिं रूयाइसयविजियामररामाहिं अंतेउरीहिं परिगओ सक्को व देवलोए विलसंतो कालं वोलेइ । तस्स दुवे पुत्ता सयलकलाकलावकुसला सिद्धसव्वेज्जा महाबला—एगो मेहनाओ अवरो सिंहनाओ त्ति । पढमो ठविओ जुवरायपए, इयरो य कुमारभुत्तीए । सरंतेसु य वासरेसु कणिट्ठपुत्तस्स पुव्वकयकम्मदोसेण कुट्ठवाहिणा विणट्ठं सरीरं, पउत्ता विविहदव्वोसहप्पओगा, न जातो थेवमित्तो वि उवयारो । विसन्नो एसो, परिचत्ता जीवियासा । दु[10]हट्टिएण

1 विद्याधरनरेन्द्रसन्दोहमणिमुकुटमण्डितक्रमस्य ॥ 2 °कम्मस्स प्रतौ ॥ 3 °णसिर° प्रतौ ॥ ४—अर्पणेन ॥ ५ विच्छर्दः—विस्तारः ६ ओहामिय—अभिभूत ॥ ७ श्रवणपीयूषवर्षकल्पं कथय ॥ ८ प्रभूतरत्नाढ्यवैताढ्यपर्वतप्रतिष्ठितदक्षिणश्रेणिपरिवृढः निष्पुण्यकनर— । परिवृढः—स्वामी ॥ ९ विकसितनीलकमलदलदीर्घाक्षिभिः रूपातिशयविजितामररामाभिः ॥ १० दुःखार्त्तेन ॥

[1]पोक्खलावत्तगज्जिगंभीराइं [तूराइं,] पक्खिवह हुयवहजालाकलावाउलाइं अग्गितेल्लाइं, 'एस दूर[2]मुल्लासियनीरनिउरंबो ससूर-तारमंबरं भरिउं पिव उड्ढं उच्छलइ तिमिंगिलो नाम दुट्ठजलयरो मन्ने न खेमंकरो' त्ति कुणह कायवाइं, स[3]रह सरियव्वाइं—ति जाव भणिउं न विरमइ ताव पवहणपिट्ठओ एवं चिय उट्ठिओ बीयदुट्ठसत्तो । तओ[4] भूरिभयपब्भारभरिज्जंतहियओ परिचत्तजीवियासो भणिउं भुज्जो पवत्तो—हंहो नावाजणा ! मुयह जीवियसं[5]कहं, सुमरह इट्ठदेवयं, दोण्हं क[6]यंताणमंतरे निवडियाणं] नत्थि मे मोक्खो—त्ति वाहरं[7]तस्सेव तस्स एगेण तिमिंगिलेण जु[8]गविगमतिजयकवलणमणकीणासमुहकुहररउद्दाणणेण तं जाणवत्तं गहियं पुव्वओ, इयरेण पिट्ठदेसउ त्ति । ए[9]वं च आयड्ढ-वियड्ढिं कुणमाणाण ताण निमेससद्देण वि वि[10]लवंतवाणिउत्तं विसंठुलविचेट्ठंतबंठलोयं भयभरवेवंतकायरं सयखंडयं पत्तं जाणवत्तं । सत्तुयमुट्ठि व पणट्ठो सव्वतो नावाजणो । संगमतो वि कहं चिय भवियव्वयावसेण पत्तफलगखंडो म[11]हल्लकल्लोलपरंपरावुब्भमाणो कइवयदिणेहिं पत्तो पारावारपारभागम्मि सुवेलाचल-परिसरं । अच्चंतपरिस्सम[12]किलामियकाओ वि धरियधीरिमावट्ठंभो छुहापिवासोवसम[ण]त्थमिओ ततो गिरिनिगुंजेसु परिभमंतो

१ °पोग्गला° प्रतौ ॥ २ दूरम् उल्लासितनिरनीकुरुम्बः ससूरतारम् अम्बरं भरितुमिव ॥ ३ स्मरत स्मर्त्तव्यानि ॥ ४ °ओ सूरि° प्रतौ । भूरिभयप्राग्भारभ्रियमाणहृदयः परित्यक्तजीविताशः ॥ ५—सङ्कथाम्, स्मरत ॥ ६ कृतान्तयोः अन्तरे ॥ ७ °रत्तस्स वि त° प्रतौ ॥ ८ युगविगमत्रिजगत्कवलनमनःकीनाशमुखकुहररौद्राननेन ॥ ९ एयं च प्रतौ । एवं च आकृष्टविकृष्टिम् ॥ १० विलपद्वणिक्पुत्रं विसंस्थुलविचेष्टमानवण्ठलोकं भयभरवेपमानकातरं शतखण्डतां प्राप्तं यानपात्रम् ॥ ११ महाकल्लोलपरम्परोह्यमानः ॥ १२ °मकाउकिलामियकाउ वि चरिय° प्रतौ । अत्यन्तपरिश्रमक्लान्तकायोऽपि धृतधीरिमावष्टम्भः क्षुधापिपासोपशमनार्थम् इतस्ततः ॥

संतावं, पडिवज्जसु धीरत्तणं, अणुचिंतेसु दुट्ठचेट्ठियाणं कडुयविवागं ति । इमं च सोच्चा चिंतियं विज्जाहरनरिंदेण—

अवि पलयलुलंतो[1] लोलकल्लोलमालाउलजलहिजलोहो[2] रुब्भए वित्थरंतो ।
कह वि सुहुम[3]खोमक्खंडमुत्तोलिमज्झे, पडुपवणपवाहो कीरए निच्चलो य ।। १ ।।
अवि य सुचिरकालं लिस्सई[4] य प्पयंडं-जलिरजलणजालाजालमंतो[5]ऽनलस्स ।
सुरगिरि[6]पिणगेणं पाणिपंचंगुलीसुं, घडिय[7]निहठिएणं नूण कीलिज्जई य ।। २ ।।
न उण विगुण[8]जीवुज्जोगसंजोगजम्माऽसुहठिइ-रसकम्मुप्पीडपीडं असोढुं ।
अवि[9] असुर-सुरेहिं सेरसंचार[10]सारं, समयमवि य ठाउं निच्छियं[11] लब्भईह ।। ३ ।।

ता सव्वहा संकडमिममावडियं, न संकेमि कुसलमिमस्स—त्ति गओ पुत्तसमीवं । साहिओ देवयानिवेइयपुव्वजम्मवुत्तंतो । जायजाईसरणेण सम्मं पडिवन्नो य कुमारेण । ततो जायगरुयवेरग्गेण अच्चंतविलीणकिमिकुलाउलकलेवरावलोयणविणिच्छियहुयासणपवेसेण भालयलघडियपाणिसंपुडं विन्नत्तमणेण—ताय ! विसमो दसाविवागो, पडिकूला कम्मपरिणई, न य पे-

१ °लुलंत लो° प्रतौ ॥ २-जलौघो रुध्यते ॥ ३ सूक्ष्मक्षौमखण्डमुक्तावलीमध्ये ॥ ४ श्लिष्यते च प्रचण्डज्वलनशीलज्वलनज्वालाजालमताऽनलेन ॥ ५ °तो जल° प्रतौ ॥ ६ सुरगिरिपञ्चकेन पाणिपञ्चाङ्गुलीषु घटिकानिभस्थितेन नूनं क्रीड्यते च ॥ ७ °यविह° प्रतौ ॥ ८ विगुणजीवोद्योगसंयोगजन्माशुभस्थितिरसकर्मोत्पीडपीडामसोढुम् । अपि असुरसुरैः स्वैरसञ्चारसारं समयमपि च स्थातुं निश्चितं लभ्यते इह ॥ ९ °वि य सु° प्रतौ ॥ १० °रसञ्चार° प्रतौ ॥ ११ °च्छिउं ल° प्रतौ ॥

च्छामि किं पि आरोगत्तणे[1] उवायं, ता मग्गेमि किं पि जइ तुब्भे देह त्ति । विज्जाहरचक्कवट्टिणा भणियं—वच्छ सिंहनाय ! किमेवं जंपसि ? तुज्झ वि किं पि अदेयं ? निस्संको भणसु जेण तं पयच्छामि त्ति । सिंहनाएण भणियं—ता[य !] जइ एवं ता तुब्भेहिं न कायव्वो थेवो वि हुयासणप्पवेसेण अप्पविघायं[2] कुणंतस्स मह विग्घो त्ति । ततो अविभावियवयणच्छलसमुच्छलंतातुच्छपच्छायावो[3] खयरचक्कवट्टीसरो महंतं चित्तसंतावमुवगतो । इयरो वि वारिज्जंतो वि नियगलोगेण पयंगो व्व पडिओ हुयासणे । जाओ य नयरे महंतो हाहारवो । तम्मग्गमणुसरंतो कट्ठेण पडिसिद्धो तदंतेउरीजणो ।

‘हा ! कीस मए देवयासिट्ठपुव्वजम्मवइयरो एयस्स कहिओ ? कीस वा एय[4]ऽब्भत्थणा [अ]ब्भुवगय ?’ त्ति बाढं संतप्पंतो, कत्थइ रइं अलभंतो य, अच्चंतं निवारिज्जमाणो य रायलोएण, मेहनायं रज्जे ठविऊण महाबाहुपहुसमीवे इममेव वेरग्गकारणमुव्वहंतो विज्जाहरीसरो समणो जातो, पढमपव्वज्जादिणाओ वि पक्खक्खमणाइतवं करेइ । अणवरयं अवरावरविज्जाहराहिवकीरमाणीं वंदण-पूयापडिवत्तिं पि ‘धम्मज्झाणविग्घं’ ति मन्नमाणो ‘मुणियधम्मसारो’ त्ति गुरुजणाणुन्नातो इमं सुवेलाचलविजणवणविहारमल्लीणो । अणिच्छंतस्स वि य एयस्स महामुणिणो एस छत्तधारगो अहं च मागहो मेहनायनरिंदेण पिउणो परमभत्तीए सबहुमाणं धारिया समीवे। जद्दिवसं एयसरीरवत्तं नो लहइ तद्दिवसं भोयणं पि परिहरइ नरिंदो । एत्तो य उवरोवरिं एयपउत्तिजाणणत्थं इंति जंति य विज्जाहरा । संपयं च इमिणा मुणीसरेण कयं चाउम्मासखमणं । पज्जंतमुवगए तम्मि ‘अज्जदिणे कहमेसो पारिहि ?’ त्ति वाउलीहूया अम्हे । एसो य महप्पा पहरदुगसमए पगुणीकयपडिग्गहो

१ °त्तणं उ° प्रतौ ॥ २ आत्मविघातम् ॥ ३ अविभावितवचनच्छलसमुच्छलदतुच्छपश्चात्तापः ॥ ४ °यतुब्भ° प्रतौ ॥

जाव चिट्ठइ ताव एयं[1]संसग्गसमुग्गयविवेयवससमासाइयजाईसरणेण हरिणेण सव्वओपलोयणमुणियतुहसरूवेण आगंतूण दरिसिया कल्लोसु निवडिऊण तहाविहा चेट्ठा। मुणियतदिंगियागारो य एस अणगारो हरिणोवदंसिज्जमाणमग्गो [समा]गतो तुहंतियं ति। ता भो महाणुभाव ! न तुमं सामन्नपुन्नो सि ॥छ॥

इमं च सोच्चा वं[2]वगयसव्वपुव्वुत्तकुवियप्पो परमं पमोयपब्भारमुव्वहंतो पसुत्तो रयणीए संगमतो । बहुलंघणाणुचियकंद-मूल-फलाइवसतो समुप्पन्नं उदरसूलं, जाया बाढं अरई, तहाविहपडियाराभावओ य मरिऊण तीए चेव अवज्झाए नयरीए नरिंदविजयराय[3]ग्गमहिसीए सीयानामाए देवीए गब्भम्मि संभूओ पुत्तत्तणेणं ति। जम्मणसम[ए य] एयस्स महादुग्गट्ठियपच्चंतपुहइपालविजएण वद्धाविओ जणगो । [4]कयं च से समहिगहरिसुल्लासपुव्वयं जम्मणवद्धावणयं, बारसाहे य पयं[5]ट्ठियं सुजओ त्ति नामं । समइक्कंतबालभावो य पढमं पडिवन्नो बाहत्तरीए कलाहिं, पच्छा बत्तीसरायकन्नगाहिं । अवि य—

चउरगुणो भुयदंडु[6]न्नामियकोदंडकोडिभागम्मि । चोज्जमिणं चउदिसि नमइ भीयअरिरायसिरिविसरो ॥ १ ॥
घोर[7]घणथणियविब्भमपयंडकोदंडगुणझणक्कारो । कुणइ अकाले च्चिय रायहंस[8]वग्गं भउव्विग्गं ॥ २ ॥
एगो वि से पयावो सक्खा दीसइ दुहा परिणमंतो । हिमसिसिरो पणयाणं इयराण य पलयजलणसमो ॥ ३ ॥

१ एतत्संसर्गसमुद्गतविवेकवशसमासादितजातिस्मरणेन हरिणेन सर्वतःप्रलोकनज्ञातत्वत्स्वरूपेण ॥ २ व्यपगतसर्वपूर्वोक्तकुविकल्पः ॥ ३ °**धमग्ग**° प्रतौ ॥ ४ **कयश्च से** प्रतौ ॥ ५ प्रतिष्ठितम् ॥ ६ °**दंडनमिय**° प्रतौ ॥ ७ घोरघनस्तनितविभ्रमप्रचण्डकोदण्डगुणझणत्कारः ॥ ८ राजहंसाः राजानश्च ॥

य विज्जाहरचक्कवट्टिणा पयट्टिया मंत-तंता, तेहिं वि समहिगतरं वड्ढिओ वाही । सो[1]गसंभारपूरिज्जंतगलरंधो य रोयंतो सो वारिओ पन्नत्तिमहाविज्जादेवयाए, जहा—

भो खयराहिव ! किमेवं गरुयविज्जाहरवंसजम्मसहसंभूयं पि धीरिममवहाय पागयनरो व्व [2]निवेयमुव्वहसि । पुव्वकयदुक्कयाणं पि किं देवो दाणवो वा सयमेव तित्थयरो भयवो वा गोयरमगतो दिट्ठो निसामिओ वा ? जमेवं संतप्पसि। एएण हि महाणुभावेण पुव्वजम्मे कंचीपुरेसरसिरिवम्मनरिंदपुरोहियभवे वट्टमाणेण अच्चंतरायसं[3]म्माणजायजणपूयाइरेगपरिवड्ढियऽट्ठविहमयट्ठाणेण सगिहभोयणकरणपयट्टेण तक्खणमासखमणपारणयागयगयउररायरिसिणो सणंकुमारस्स हीलाए उच्चिट्ठा भुत्तावसेसा दवाविया भिक्खा । मुणिणा वि [4]मुणियतका[लो]च्चियदव्वाइसुद्धिणा गहिया आगमसुत्तविहिणा, परिभोत्तुमारद्धा य । नवरं देवयानिवारिएण परिहरिया अणेण, तहा वि देवयाए जायगरुयामरिसाए पुरोहियसरीरे निव्वत्तिया समकालं सोलसमहारोगायंका । तेहिं अच्चंतबाहिज्जमाणो मीणो व्व थोवजलखित्तो तल्लु[5]वेल्लिं कुणंतो मतो, उववन्नो य निंदियजाईसु, तत्थ वि रोगनिवहविहुरिओ विवन्नो । एवं कइवयभवगहणाइं अणुभविय तिक्खदुक्खाइं दुकम्मसावसेसयाए कयतहाविहसुकयविसेसो संपयमेसो तुह पुत्तत्तणं पत्तो, पुव्वुत्तदोसलेसओ य इमं दुत्थावत्थमुवगओ त्ति । ता विभावियभवभावसरूवो महाराय ! मुंच[6]

१ शोकसम्भारपूर्यमाणगलरन्ध्रः ॥ २ **निव्वेय**° प्रतौ ॥ ३ °**समाणजाणजण**° प्रतौ । अत्यन्तराजसम्मानजातजनपूजातिरेकपरिवर्धिताष्टविधमदस्थानेन स्वगृहभोजनकरणप्रवृत्तेन तत्क्षणमासक्षपणपारणकागतगजपुरराजर्षेः सनत्कुमारस्य हीलया उच्छिष्टा ॥ ४ ज्ञाततत्कालोचितद्रव्यादिशुद्धिना ॥ ५ तीव्रव्याकुलीभावम् ॥ ६ °**च सभावं**° प्रतौ ॥

दक्षेभ्यो दक्षिणात्यीयगाथकेभ्यश्चतुर्दश । हाटकस्य स्फुटं कोटीरदिशद् गीततोषितः ॥ ४ ॥

संवराय कृतोद्दामचित्रमायेन्द्रजालिने । अत्यन्तविस्मयस्मेरो हेमकोटीरदा नव ॥ ५ ॥

तथा कोटीर्हिरण्यस्य पञ्च पञ्चमगानतः । तुष्टः प्रदत्तवान् देवः पथिकाय प्रवासिने ॥ ६ ॥

विचित्रनाट्यविज्ञानतुष्टः कोटयेककाञ्चितम् । सर्वाङ्गीणमलङ्कारं केरलीसादचीकरत् ॥ ७ ॥

उदीर्णाजीर्णसम्भूतज्वरातङ्कविघातिनम् । देवोऽष्टहेमकोटीभिः सद्यो वैद्यमपूपुजत् ॥ ८ ॥

प्रकीर्णदानतो जग्मुः स्वर्णकोटयोऽष्टविंशतिः । पञ्चाशीतिश्च कोटीनां तदेवं सर्वसङ्ख्यया ॥ ९ ॥

इत्थं निवेद्य निःशेषं व्ययस्थूलसमुच्चयम् । भूपतेर्वर्षसम्बद्धं विरराम स बुद्धिमान् ॥ १० ॥

इमं च सोच्चा जायचित्तसंतावो राया भणिउं पवत्तो—के वयं दायारो ? केत्तियं वा दिन्नं ? जमेत्तिएण वि निट्ठिया कोस-कोट्ठागारा, अज्ज वि सुव्वइ—केहिं वि सप्पुरिसेहिं नीसेसा वि सागरावसाणा मेइणी [1]निरिणीकय त्ति, अहं पु[ण] [2]केइवयजणतुच्छयरवियरणे वि कहं सुस्समणो व [3]निग्गंथो जाओ म्हि ? अहो ! निप्पुन्नया, अहो ! अदिन्नदाणया, अहो ! विहलालीयसंभावण त्ति । इच्चाइ अप्पाणं ज्झूरंतो विसज्जियसेवागयजणो उवसंहरियपेक्खणयाइवावारो कयपाओसियदेवयापूयाकायव्वो ठिओ सुहसेज्जाए । कट्ठेण समागया निद्दा । विउद्धो य पहायसमए य मंगलतूररवेणं। ततो संपाडियपभायकिच्चो निसन्नो अत्थाणमंडवे । एत्थंतरे विन्नत्तं कोसागाराइनिउत्तेहिं, जहा—देव ! वद्धाविज्जह तुब्भे, केणइ हेउणा न याणामो

१ निरणी° प्रतौ । अनृणीकृतेत्यर्थः ॥ २ कतिपयजनतुच्छतरवितरणेऽपि । वितरणं—दानम् ॥ ३ 'निर्ग्रन्थः' निष्परिग्रहः ॥

कणगाइणा भंडारा सव्वे पडिपुन्ना गयणग्गसिहा जाय त्ति । ततो राया [1]ईसिविहडियओट्ठउडाणुमेयपमोयाइसओ पुणो वि जहिच्छाए अच्छिन्नपसरो दाउमारद्धो ।

नवरं पणट्ठकोसाइनिसामणेण [2]विउव्विया पच्चंतपत्थिवा, पारद्धा य देसोवद्दवं काउं । सुयं च एयं सुजयराइणा, पयट्टो महया संरंभेण तदुवरि [3]विक्खेवेणं, कइवयपयाणएहिं पत्तो सदेससीमं । जातो य पच्चंतराईणं महासंखोभाइरे[गे]ण [4]अभयाभक्खणेण व अच्चंतमइसारो । आलोचियं विज्जेहिं व मंतीहिं रोगुट्ठाणं, निच्छियं च तदणुप्पवेसलक्खणं से ओसहं । ततो ते पच्चंतराइणो लंबंतमुक्ककेसकलावा कंठारोवियकुठारा सेवं पवन्ना सुजयरन्नो, दिन्नाभयप्पयाणा य गया जहागयं ।

राया वि कोउगेण इओ तओ काणणंतरेसु वियरंतो पविट्ठो बहलतलतमालसामलमेगं वणनिगुंजं । पेच्छइ य तत्थ—

आयावणभूमिगयं उवरिधरिज्जंतसेय[ध]य-छत्तं । पुरतो पढंतमागहमइसयसुंदरागारमेगमणगारं ॥ १ ॥

ततो दूराउ च्चिय पम्मुक्करायरि[5]हिंचिंधो पडिओ साहुणो चलणेसु । 'कहिं मए एवंविहं रूवं दिट्ठं ?' ति ईहा-ऽपोहाइपयट्टेण य सरिओ पुव्वभवो, जाणितो परमत्थो । विन्नत्तो य मुणी—भयवं ! परियाणह तुब्भे ममं ? ति । साहुणा भणियं—भो देवाणुप्पिया ! न सम्मं परियाणामो । राइणा भणियं—सुवेलसेलपरिसंठिएहिं कुरंगदंसिज्जमाणमग्गेहिं तुब्भेहिं चाउम्मासियपारणगे तहाविहकंदफलाइग्गहणेण जोऽणुग्गहिओ सो हं तद्दिणरयणीए अणुचियाहार[6]वसुप्पन्नपोट्टसूलो

१ ईषद्विघटितौष्ठपुटानुमेयप्रमोदातिशयः ॥ २ गर्विता इत्यर्थः ॥ ३ 'विक्षेपेण' सैन्येन ॥ ४ 'अभयाभक्षणेन' हरीतकीभक्षणेन इव अत्यन्तम् 'अतिसारः' विरेचनम् । आलोचितं च वैद्यैरिव ॥ ५ °रिंसिंचिं° प्रतौ । प्रमुक्तराजार्हचिह्नः ॥ ६—वशोत्पन्नोदरशूलः ॥

तइया मरिऊण तुम्ह पसाएण कोसलदेसाहिवत्तणं पत्तो, धम्मो य अहं जेण विजियकप्पपायवं संसारारण्णवत्तीणं जंतूणं परमदुल्लहं तुह दंसणं लद्धं ति ।

एत्थंतरे 'भोयणपत्थावो' त्ति विन्नत्तो सूवगारेणं राया । ततो हरिसुल्लसंतरोमंचकंचु[इ]यकाएण वंदिऊण रन्ना 'कुणसु भयवं ! पसायं जहासिद्धअसणाइगहणेणं' ति निमंतितो साहू । 'पक्खदिणपारणगं' ति जुगमेत्तखेत्तदिट्ठिपसरो रायाणुमग्गेण गतो रायावासं । लूहिया केसपा[सेण] से चलणा रन्ना, निज्जीवपएसे दिन्नमासणं, निसन्नो साहू । 'तमिममुत्तमं पत्तं, सा य एसा विसिट्ठदेयसामग्गी, सो य एसो एगंतविसिट्ठो दाणपरिणामो, सव्वहा सहलीहूओ अज्ज घरवासो' त्ति हरिसपगरिसमुव्वहंतेण नरिंदेण असण-पाण-खाइम-साइम-वत्थ-कंबल-भेसहाईणि पणामियाणि तस्स । साहुणा वि उग्गमुप्पायणेसणाविसुद्धिं परिभाविऊण जहोवयारं अरत्त-दुट्ठेण गोणीवच्छगंवत्तगहणनाएण गहियं किं पि । वंदितो य सपरियरेणं रन्ना । गतो सो जहागयं ।

परिचत्तसयलवावारंतरेण य पुहईवइणा पज्जुवासिओ कइवयदिवसाणि । जाणिओ मुणिमुहातो जिणिंदधम्मपरमत्थो ।

१ हर्षोल्लसद्रोमाञ्चकञ्चुकितकायेन ॥ २ **सलहीहू**° प्रतौ । सफलीभूतः ॥ ३ हर्षप्रकर्षमुद्वहमानेन ॥ ४ °**कंवणभे**° प्रतौ ॥ ५ 'गौवत्सकत्यक्तग्रहणन्यायेन' यथा गोः वत्सः मनुष्यैः त्यक्तं–शेषतया रक्षितं स्वमातुः दुग्धं गृह्णाति–पिबति तद्वद् मुनिरपि लोकैः शेषतया रक्षितं यत्किमपि आहारादि भिक्षायां गृह्णाति इत्यसौ **गोवत्सकत्यक्तग्रहणन्याय** उच्यते; यद्वा यथा गोवत्सः–वत्सतरः चारीं चरन् शेषरक्षणेन चारीं गृह्णाति–चरति, न तु समूलोत्खातं चरति, एवं मुनिरपि शेषरक्षणेन भिक्षाचर्यां चरति इत्ययमपि **गोवत्सकत्यक्तग्रहणन्याय** उच्यत इति; एवमुभावप्यर्थावत्र मुनिगोचरचर्यायां सङ्गताविति ॥ ६ °**गवत्त**° प्रतौ ॥

ताव कहा इयराणं चाँगे जाणे नए य विणए य । दक्खत्ते दक्खिन्ने य जाव नो थुव्वई एस ॥ ४ ॥

एवंगुणो य सो पिउणा पइट्ठिओ नियपए । सयं च पडिवन्ना समणदिक्खा । गुरुणा समं गामा-ऽऽगर-[नगर]सुंदरं वसुंधरं विहरिउमारद्धो । सुजयमहानरिंदो वि मिउकरकयकुवलयाणंदो चंदो व्व पइदिणपवड्ढमाणंगो रायसिरिमुवभुंजंतो [वि]-लसइ । अन्नया य अचंतचागेण तुच्छकरग्गहणेण [य] निट्ठिया कोस-कोट्ठागारा । निवेइयमिणं रन्नो तन्निउत्ताहिगारेहिं । विसन्नो य एसो—अहो ! किमेयं जूयपमुहवसणविरहियस्स वि, गरुयदाणजोग्गे वि तुच्छं चिय पयच्छंतस्स वि, लोएहिंतो सव्वं चिय करं गिण्हंतस्स वि एगपए च्चिय कोस-कोट्ठागाराणं रित्तत्तणं ? ति, मन्ने ममाणुचियदाणाइणा एवं भविस्सइ—त्ति वाहराविओ भाणुदत्ताभिहाणो सिरिहरपारिग्गहिओ । पुच्छिओ य एसो—अरे ! अच्छउ ताव सेसं, एत्थ संवच्छरे किं मए कस्स दवावियं ? ति । तेण भणियं—देव ! निसामेसु—

कोटीर्दश सुवर्णस्य चेदीशदयिने ददौ । लक्षवीराय वीराय देवः सौडीर्यरञ्जितः ॥ १ ॥
दुर्लक्षलक्षवेधेन राधावेधविधायिने । नेपालसूनवे तुष्टो निष्ककोट्यावदापयत् ॥ २ ॥
म्लेच्छराजजयावाप्तौ बन्दिवृन्दारकैः स्तुतः । देवस्तेभ्यः प्रहृष्टोऽष्टौ स्वर्णकोटीरकल्पयत् ॥ ३ ॥

१ 'त्यागे' दाने ज्ञाने नये ॥ २ चन्द्रपक्षे—मृदुभिः करैः–किरणैः कृतः कुवलयानां–रात्रिविकासिकमलानामानन्दो येन, राजपक्षे—मृदुभिः–अत्यल्पैः करैः–राजग्राह्यभागैः कृतः कुवलयस्य–महीवलयस्य आनन्दो येन सः । पुनश्चन्द्रः प्रतिदिनं वर्धमानानि अङ्गानि–कलारूपाणि यस्य, राजपक्षे तु अङ्गानि–देहावयवानि । 'राजश्रियं' चन्द्रलक्ष्मीं राजलक्ष्मीं च ॥ ३ °**गार नि**° प्रतौ ॥ ४ 'श्रीगृहपरिग्रहिकः' भाण्डागारिकः ॥

जह सुकुमारमहीए तणुं पि बीयं जलेण संसित्तं । जं[1]णइ महंतं विडविं[2] गुरुविडवाडोवरमणिज्जं ॥ १ ॥
तह थेवं पि सुपत्ते सद्धाजलसित्तमोप्पियं[3] दाणं । जणइ जणाणमवस्सं महल्लकल्लाणवल्लिधणं[4] ॥ २ ॥
वत्थ-ऽण्ण-पाण-भेसह-कंबल-सेज्जा-ऽऽसणाणमेक्केकं । उवउत्तं साहूसुं किं व सुहं तं न जं कुणइ ? ॥ ३ ॥
इयरम्मि वि उवयरियं पच्चक्खं दिट्ठमिट्ठफलजणगं । किं पुण महग्घगुणरयणरोहणेसुं सुसमणेसु ॥ ४ ॥
मुणिवसहो नित्थामो दुव्वहसंजमभरं न वोढुमलं । ता तव्वहणुवगरणं इट्ठं अन्नाइदाणमिणं ॥ ५ ॥
आहं[5] कहं संजमवज्जियस्स लिंगावसेसमेत्तस्स । एवं सइ दाणविही विसिट्ठफलया हवइ गिहिणो ? ॥ ६ ॥
तद्दाणोवग्गहिओ अणिट्ठचेट्ठासु वट्टइ विसंकं[6] । तक्कारवणेण गिही अच्चंतं दोसवं[7] नेओ ॥ ७ ॥
सच्चमिणं जइ दाया करेज्ज एवंविह नणु विकप्पं । देमि अहं जेण इमो वट्टइ अविसिट्ठचेट्ठासु ॥ ८ ॥
अह दरिसणाणुरागेण धम्मखिंसानिवारणट्ठाए[8] । लिंगि त्ति उचियदाणे कह गिहिणो वुच्चई दोसो ? ॥ ९ ॥
इहरा[9] [से]णियराया सुरमुणिमीणग्गहं निवारिंतो । सामुल्लावपुरस्सरमसारसम्मत्तवं हवउ ॥ १० ॥

१ जइन म° प्रतौ ॥ २ 'विटपिनं' वृक्षं गुरुविटपाटोपरमणीयम् । विटपः—शाखा पल्लवविस्तारश्च ॥ ३ श्रद्धाजलसिक्तमर्पितम् ॥ ४ महाकल्याणवल्लिधनम् ॥ ५ °ह अहं प्रतौ ॥ ६ निःशङ्कम् ॥ ७ दोषवान् ज्ञेयः ॥ ८ दर्शनानुरागेण धर्मनिन्दानिवारणार्थाय ॥ ९ इतरथा श्रेणिकराजा सुरमुनिमीनग्रहं निवारयन् । सामोल्लापपुरस्सरम् असारसम्यक्त्ववान् भवतु ॥ अत्रार्थे इदं शास्त्रोपनिषद्विदां पारम्पर्यम्—एकदा किल मगधराजश्री**श्रेणिक**स्य धर्मदार्ढ्यपरीक्षार्थं कश्चित् सुरः तद्गमनमार्गान्तः साधुरूपेण जलमध्याद् मत्स्यान् गृह्णाति । व्रजता च तेन वर्त्मना मगधराजेन मीनग्रहणप्रवृत्तः स कृतकमुनिः साम्ना निषिद्धः सन् प्रोवाच,

न य धम्मखिंसवज्जणमुवइट्ठं एयमवि न वत्तव्वं । परमं अबोहिबीयं एयं तिव्वाइभणणाओ ॥ ११ ॥
इमिणा अवन्नवाओ वि वज्जणीयत्तणेणमवसेओ । जइ होज्ज गुणलवो वि हु ता तग्गहणं चिय विहेयं ॥ १२ ॥
परपरिवाए परदोसदंसणे परविहंडणे य रया । हारिंति ही ! सकज्जं मूढ त्ति कयं पसंगेण ॥ १३ ॥
नियभूमिगाणुरूवं जहोचियं दाणधम्ममकुणंतो । उद्धरिही अप्पाणं भवकूवाओ कहं व गिही ? ॥ १४ ॥ किञ्च—

शास्त्रार्थचिन्तन-परप्रतिबोधना-ऽर्थव्याख्या-तपो-विनय-संयम-सत्त्वरक्षाः ।
क्षुत्पीडितो यतिरलं न विधातुमस्माद्, धीरैरगद्यत[1] उपग्रहदानधर्मः ॥ १ ॥
द्यूता-ऽनल-क्षितिप-तस्कर-वारि-वेश्या-दायाद-तर्कुक-सुहृत्सुतभोगभङ्गि ।
वित्तं विमूढहृदयो हि विदन्नपीदं, साधूपयोगि न करोति तदाऽन्तरायः ॥ २ ॥
तत्पाणिपङ्कजपुटीमटतीव लक्ष्मीः, स्वप्नेऽपि वाञ्छति न तं विपदुद्धताऽपि ।
यस्यानिशं सुमुनिदानविधौ रमन्ते, वाक्काय-चित्तकरणानि शरीरभाजः ॥ ३ ॥

यत्—राजन् ! त्वं न जानासि परमार्थम्, किञ्च सर्वेऽपि साधवो मादृशा एव । तथाऽप्यनुपशममप्राप्नुवता मगधेशेन पुनरप्यसौ मीनग्रहणप्रवृत्तः सुरमुनिः साम्नैव प्रतिबोधितः सन् स्वं रूपं प्रकटीचकार । स्तुत्वा च मगधापुरेशधर्माचलत्वं स नाकी नाकलोकमलञ्चक्रे ॥

१ अत्र सन्धिर्न विहित इत्यसन्धित्वदोषः ॥

कुग्रहस्य स्वरूपम्

इति नियतमनिष्टाद्रीन्द्रवज्रोपमानं, शुभनिवहनिधानं यत्युपष्टम्भदानम् ।
खचरनृपमहर्षिः कीर्तयित्वा सभायाः, कृतविहरणबुद्धिः शिश्रिये स्थानमन्यत् ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे यत्युपष्टम्भदानाधिकारे सुजयराजर्षिकथानकं समाप्तम् ॥ १८ ॥

सम्मत्ताइगुणेसुं पुव्वुत्तेसुं पयट्टमाणो वि । कुग्गाहवं विसीयइ ता तच्चागे [1]जएज्ज दढं ॥ १ ॥
तुच्छा[2] बुद्धी थोवं पयत्थविसयं च नूण विन्नाणं । भावा अइंदिया केवलीण विसया परं हुंति ॥ २ ॥
जो तेसु वि समईगारवेण सुंदर-असुंदरविवेओ । विहि-पडिसेहपहाणं परूवणं वा तयं मोहो ॥ ३ ॥
कुग्गहिणो[3] वि सरूवं जत्थ मई तत्थ नेइ जुत्तीओ । इयरो य अन्नहा तेण निंदियं कुग्गहग्गहणं ॥ ४ ॥
निय[4]मइपमाणयाए पयट्टमाणे समत्थकिच्चेसु । अइसइनाणीण गिरं गरुयं पि असारयं निंति ॥ ५ ॥
तह भावम्मि अतीए अइदुक्करकारिणो वि सीयंति । विज्ज[5]यविवज्जियाए किरियाए रोगविहुर व्व ॥ ६ ॥
जह[6] मंत-[तंत-]जोइस-चिगिच्छसत्थाइ अइसइपणीयं । कज्जकरं तह समईवियप्पियं न उण थेवं पि ॥ ७ ॥

१ यतेत ॥ २ °च्छा बुद्धी थो° प्रतौ ॥ ३ कुग्राहिणोऽपि स्वरूपं यत्र मतिः तत्र नयति युक्तीः । 'इतरश्च' सद्ग्राही च 'अन्यथा' यत्र युक्तिः तत्र मतिं नयति, तेन निन्दितं कुग्रहग्रहणम् ॥ ४ निजमतिप्रमाणतया प्रवर्त्तमानाः समस्तकृत्येषु । 'अतिशयिज्ञानिनां' तीर्थकृतां गिरं गुर्वीमपि असारतां नयन्ति ॥ ५ वैद्यकविवर्जितायां क्रियायाम् ॥ ६ जइ मं° प्रतौ ॥

पत्थावे य समुप्पन्नवेरग्गेण विन्नत्तो मुणी—भयवं ! सवहा कुणसु कोसलपुरीए विहारं, जेणाहं पुत्तारोवियरज्जभरो तुम्ह समीवे पवज्जं अणुचरामि । मुणिणा भणियं—महाराय ! जुत्तमेयं तुम्हारिसाणं, वयमवि वट्टमाणजोगेण एवं काहामो त्ति ।

ततो वंदिऊण विज्जाहररायरिसिं गओ राया सनयरिं । निवेइतो निययाभिप्पाओ मंति-सामंताईणं । अणुमन्नि[1]यं तेहिं । निरूवाविय अभिसेयजोग्गं लग्गं पइट्ठिओ पुत्तो रज्जे, काराविओ बंदिमोक्खो, उग्घोसाविया अमारी, पारंभिया जिणभवणेसु महूसवा, दवावियं तिय-चउक्क-च्चरेसु दीणा-ऽणाहाईणं दाणं ।

संपत्तो य समुचियसमए भयवं विज्जाहररायरिसी । महया रिद्धिवित्थरेणं रायसुयसयसमेएण य पवन्ना रन्ना तदंतिए दिक्खा, संवेगसारं च पवत्तो संजममणुट्ठिउं । विहरंतो य गुरुणा समं गतो य पोयणपुरं नयरं । तहिं च सो पालियजहुत्तसामन्नो मरिउं अच्चुए कप्पे देवत्तणेण उववन्नो त्ति । 'सम्ममाराहियं' ति अहासन्निहियदेवेहिं [कया] से निसीहियामहिमा ।

गाढकोऊहलाउलिज्जमाणेण य पुच्छिओ गुरू लोगेणं—भयवं ! को एस महप्पा महप्पभावो समणसीहो जस्स सुरेहिं पि एवं वट्टिज्जइ ? । ततो विज्जाहररायरिसिणा सिट्ठो सव्वो मूलातो आरब्भ तव्वुत्तन्तो । तं च जहट्ठियमवगम्म विम्हियमणेण भणियं जणेण—भयवं ! थोवं[2]तहाविहदाणाओ वि कहमेवंविहपरमफलवित्थरुत्थंभियसुकयकप्पपायवुप्पाओ संभवइ ? । गुरुणा भणियं—सुणसु,

१ °न्नियन्तेहिं प्रतौ ॥ २ स्तोकतथाविधदानादपि कथमेवंविधपरमफलविस्तरोत्तम्भितसुकृतकल्पपादपोत्पादः ॥

समकालजम्मणाणुभावेण य वड्ढमाणपीइणो समगं कीलंति, समगं भमंति, समगं भुंजंति, न परोप्परविरहिया मणागं पि चिट्ठंति। अट्ठवारिसिया य खेत्ता लेहसालाए। पढियसमुचियकलाकलावा य कीलंता ते अमच्चभवणं गया, दिट्ठा भत्त-पाणनिमित्तमागएण मुणिसंघाडएणं। तम्मज्झाओ जेट्ठेण अइसइनाणिणा 'विजणं' ति सिट्ठ[1]मियरस्स, जहा—एयाणं कुमाराणं एगो कुडिलबुद्धी कुगइगामी य, इयरो य पयइपसन्नमइविभवो पयइभद्दो सुगइगामी य। इमं च कडगंतरिएणं[2] निसामियममच्चेण। जायविम्हयभरेण य चिंतियमणेण—अहो! किंनिमित्तं [एवं] जंपियमणेण साहुणा? न ताव राग-दोसाइवियारो संभाविज्जइ एयस्स पओयणविरहातो[3], न य वितहभासणे निमित्तं किं पि संभाविज्जइ धम्मकिच्चेसुं[4] सज्जमाणातो[5], ता निच्छियं अवितहमेयं वयणं, केवलं 'को पुण एयाण कुमाराण मज्झातो एवंविहसरूवो?' त्ति न मुणिज्जइ निच्छ[य]ओ, ता तज्जाणणत्थं करेमि किं पि उवायं–ति विभाविऊण भूमीए आलिहिया देवयापडिमा। भणिया य कुमारा—पुत्ता! एयं उल्लंघिऊण आगच्छह जेण तुम्ह आरोग्गया कल्लाणपरंपरा य संभवइ त्ति। ततो रायसुतो चिंतिउं पवत्तो—'न जुत्तमेयं, समग्गकुसलपच्चूहो[6] क्खु एसो पूयणिज्जपूयाविइक्कमो' त्ति विभाविय[7] तेण भणियं—नाहमिमं लंघयिस्सामि। बीओ भणितो। तेण पुण वयणाणंतरमेव अइक्कंता एसा। ततो ज्झत्ति चमक्किओ अमच्चो अंतोपसरंतगरुयसंतावो वि आकारसंवरं काऊण रायसुयं पुच्छइ—वच्छ! कीस तुमए पडिमा[8] न लंघिय? त्ति। रायसुएण भणियं—

१ कथितम् ॥ २ कटकः–यवनिका ॥ ३ प्रयोजनविरहात् ॥ ४ °सु सुज्ज° प्रतौ ॥ ५ 'सजमानात्' तत्परात् ॥ ६ °पच्चहो प्रतौ ॥ ७ विचार्येत्यर्थः ॥ ८ परित्ता न लंघयति। राय° प्रतौ ॥

जो भूमीयलविलुलंतसीसकेसुच्चएहिं निच्चं पि। पणमिज्जइ पूइज्जइ वंदिज्जइ संथुणिज्जइ य ॥ १ ॥
सो कह भूमीयलविलिहिओ वि कयठावणो[1] वि अक्खादो। अइलंघिउं हि जुत्तो अभत्तिभावा अजुत्तमिणं ॥ २ ॥
जप्पय[2]पसायणाओ वंछिज्जइ कामियत्थसंपत्ती। सो मणसा वि न जुत्तो अइलंघेउं किमुय वयसा[3]? ॥ ३ ॥
जो पूइओ पसीयइ रूसइ आसाइओ स नियमेण। ता पूयणिज्जपूयावइक्कमो सव्वहाऽणुचिओ ॥ ४ ॥

तओ पुच्छिओ मंतिणा नियपुत्तो—वच्छ! जइ एवं ता कीस तुमए देवयारूवमइलंघियं? ति। तेण भणियं—ताय! जहतहरेहाविलिहणमेत्तसंपत्तदेवयारूवे वि को अइलंघणदोसो?–त्ति लंघिया मए एसा, परमत्थो य एसो, अन्नहा रेहामेत्तसंभविभुयंगसंगमाओ वि दंससंभवो, चित्तविलिहियकरवालाइनिसियसत्थफरिसणाओ वि सरीरछेयाइदोसप्पसंगो, ता न जहतहदेवयागाराइलंघणाइणा अकल्लाणसंका काउमुचिय त्ति। ततो मंतिणा पलोइयं[4] रायसुयवयणं। ततो भणिओ सो रायसुएण—भद्द! अणुचियमुल्लवसि,

सायारा[5]ऽणायारा नामस्स वि ठावणा वि पुज्जाणं। तब्बुद्धिभावजणगत्तणेण पूयारिहा चेव ॥ १ ॥
तप्पूयणा-ऽवमाणणजणिया दीसंति अत्थ-ऽणत्था य। ता कह निव्विसया होज्ज आगिई देवयाईण? ॥ २ ॥
जं च तए भणियमिणं न हु रेहासंभवो डसइ भुयगो। न हु चित्तविलिहियं पि हु पहरणमंगम्मि पक्कमइ ॥ ३ ॥

१ कृतस्थापनोऽपि अक्षादौ। 'अक्षादौ' इति सिद्धसंस्कृतरूपात् 'अक्खादो' इति प्रयोगसिद्धिः ॥ २ यत्पदप्रसादनात् ॥ ३ वएसा प्रतौ। वचसा, उपलक्षणात् कायेनाऽपीति भावः ॥ ४ °इउं रा° प्रतौ ॥ ५ साकाराऽनाकारा ॥

अणुचियमिमं पि हु जओ तव्विहझाणुब्भवंतमाहप्पा । एवंविहभावो सिं[1] दीसई सीसइ य कुसलेहिं ॥ ४ ॥
विमलेण ततो भणियं कंटगवेहे वि भुयगसंकाए । जइ होइ विसविगारो अन्नत्थ वि सो तहा नेओ ॥ ५ ॥
ता संक च्चिय दोसाण नूणमेवंविहाण जणिगेयं । तच्चागे चत्तो च्चिय दूरे एवंविहो दोसो ॥ ६ ॥
रायसुएणं भणियं जइ एवं ता सि णेह न उ देहं (?) । खाउ विसं निस्संको होऊणं कीस सो भाइ ? ॥ ७ ॥
ता[2] ते निव्विसए च्चिय संका दोसाण साहिगा जुत्तो[3] । नत्थियवाओ[4] इय मो[5] सलाहणिज्जो न कुसलाण ॥ ८ ॥
एवंविहो य भावो न भाविभद्दस्स संभवइ पायं । न य तज्जम्मे वि न दुक्खकारओ नूण हरिणो व ॥ ९ ॥
अमच्चेण भणियं—रायसुय ! को एस हरी ? । कुमारेण जंपियं—निसामेसु,

कुल्लागपुरे[6] नयरे एगो उच्छन्नवंसकुलपुत्तओ [हरी नाम] दोगच्चदंतो तण[7]-कट्ठोवाहरणेण जीवइ । अन्नया य जाय[8]मव-रिसणं, निट्ठियमासन्नतण-कट्ठाइयं । ततो पच्छयण[9]समेओ सो दूरयरदेसाउ उवाहरियतण-कट्ठाइणा जीविउं पवत्तो । एगम्मि य दिणे तण-कट्ठुच्चयं कुणंतेण रय-कयवरपच्छाइयसरीरा पायडसीसमेत्ता दिट्ठा अणेण जक्खपडिमा । पहिट्ठो एसो, 'जइ पुण एत्तो वि दारिद्दावगमो हवइ' त्ति आढत्तो पुप्फाईहिं पूइउं । गयाणि केच्चिराणि वि दिणाणि, न मणागं पि पसंतो जक्खो । 'मुक्खो लो[ओ] देवयापूयणाइणा अप्पणो कल्लाणं मग्गइ' त्ति विपडिवन्नो एसो पारद्धो सिला-गल-लिंड-डहणाइणा

१ सिं, न दी° प्रतौ ॥ २ ता तो नि° प्रतौ ॥ ३ जुत्ता प्रतौ ॥ ४ नास्तिकवादः ॥ ५ 'मो' इति पादपूरणार्थकमव्ययम् ॥ ६ कल्ला° प्रतौ ॥ ७ तृणकाष्ठोपाहरणेन ॥ ८ 'अवर्षणम्' अवृष्टिः ॥ ९ पथ्यदनं—शम्बलम् ॥

इहलोइयं पि कज्जं कुणंति जे कुग्गहं अणि[1]ग्गहिउं । ते पाउणंति निंदं न य कज्जं किं पि सा[2]हिंति ॥ ८ ॥
[किं पु[3]ण सव्वन्नुपयासियम्मि अत्थम्मि कुग्गहो जोउ । हो]ज्ज न सोऽनत्थकरो ? विमलस्स व मंतिपुत्तस्स ॥९॥

तहा हि—अत्थि वच्छावच्छत्थलीभूयं, भुयणत्तयपडिबिंबं व असुर-सुर-नरसुंदरमंदिरपरिगयत्तणेण, ति[4]णीकयतिणयणा-वासमहिमं हेमपुरं नयरं । तहिं च उवज्झाओ नयसत्थत्थपत्थावणेण, [कुलगुरू सप्पुरिसमग्गगामित्तणेण,] ....[कप्प]रुक्खो चिंतियफलपयाणेण, गणणा[इ]क्कंतगुणरयणमयरहरो हरितेओ नाम राया ।

नयर[6]क्खियगोमंडललद्धं दुद्धं व जस्स जसमसमं । बंभंडभंडयाओ पयावकढियं व लुठइ बहिं ॥ १ ॥

तस्स य रन्नो रत्ता विव रविणो रोहिणि व्व ससिणो विजया नाम देवी । [विसुद्धबुद्धिपगरिसागरो सागरो से अमच्चो ।][8] ....[एवं च] रज्जसुहाणि अणुभुंजमाणा सव्वे दिणाइं गमिंति । अवरवासरे रन्नो अमच्चस्स य समकालं जाया पुत्ता, कयं वद्धावणयं, पइट्ठियं रायसुयस्स सूरतेउ त्ति नामं मंतिसुयस्स य विमलो त्ति । दो वि

१ अनिगृह्य ते प्रगुणयन्ति ॥ २ साधयन्ति ॥ ३ अत्र हस्तलिखिततालपत्रीयप्रतिसत्कं पत्रम् एकपार्श्वतः प्रान्तभागे घृष्टफुसिताक्षरं वर्त्तते, अतोऽत्र यान्यक्षराणि सर्वथा न दृश्यन्ते तत्स्थाने सूक्ष्मबिन्दवः स्थापिताः, यानि च अक्षराणि कथञ्चन वाच्यन्ते शङ्कितानि च तानि चतुरस्रकोष्ठकान्तः स्थापितानि सन्तीति ॥ ४ तृणीकृतत्रिनयनावासमहिमम् । त्रिनयनावासः—कैलासः—हिमालयः ॥ ५ अत्र अष्टादशाक्षराणि न वाच्यन्ते ॥ ६ नयेन—विधिना न्यायेन च रक्षितात्—पालिताद् गोमण्डलात्—गवां समूहाद् महीमण्डलात् च लब्धं यस्य असमं यशः दुग्धमिव ब्रह्माण्डभाण्डात् 'प्रतापक्कथितमिव' प्रतापेन—अग्न्युष्मणा राजतेजसा च क्कथितमिव लुठति बहिः ॥ ७ दुद्धं च जस्स जसमजसं प्रतौ ॥ ८ अत्र द्वादशाक्षराणि न दृश्यन्ते ॥

णेण, ता अवस्सं जहट्ठियं साहेसु । 'अहो ! देवस्स आगारिंगियाइकुसलत्तणं' ति विभावितेण मंतिणा सिट्ठो एगंतट्ठियस्स राइणो सव्वो पुव्ववुत्तंतो । [1]वियाणियदोमणस्सनिमित्तेण य भणियं रन्ना—भो अमच्चवर ! मुंच संतावं, कुणसु सुयवि[ण]यणे पयत्तं । अमच्चेण भणियं—देव ! जा जस्स पयई सा तस्स विणयणसएण वि न अन्नहा काउं पारियइ । रन्ना जंपियं—अत्थि एवं, केवलं साइसयपुरिसपरिग्गहेण असुहसहावो वि सुहसहावत्तणं पवज्जइ, तहा हि—अप्पडिममंतमाहप्पपुरिसपरिजवियं विसं पि रसायणभावं पवज्जइ, अइदुस्सहो वि हुयवहो हिमसिसिरसिरिमवलंबेइ, वियडफडाडोवदुप्पेच्छो वि भुयंगो [2]रज्जुंकरणिमणुसरइ, ता केत्तियाइं तुह कहिज्जंति एवंविह[3]संविहाणगाइं ? सव्वहा मुक्ककुवियप्पो जेण मुणिणा तुह सुयसरूवं वियाणियं तं चेव कहिं पि उवलंभिऊण एयस्स विणयणत्थं निजुंजाहि, जेण [4]नाइमग्गे इमो लग्गइ त्ति । 'जं देवो आणवेइ' [त्ति] नीहरिओ रायभवणाओ मंती । [5]पुरिसपेयालपेसणेण सव्वत्थ पलोयाविओ सो तवस्सी, दिट्ठो य कुसुमसेहराभिहाणे उज्जाणे । ततो महया रिद्धिवित्थरेणं दोहिं वि कुमारेहिं समं समणसमीवे गतो, परमायरपुरस्सरं च तच्चरणसरोरुहं पणमिऊण निविट्ठो अमच्चो, सिरोवरि रइयपाणिसंपुडो य विन्नविउं पवत्तो—

भयवं ! कुणसु पसायं [6]दुन्नयमयरायरे निवडिराणं । अम्हारिसाणमुवएसजाणवत्तप्पयाणेण ॥ १ ॥
सविसेसं पुण एयाण अम्ह कुमराण बालपयईण । [7]ईसरियाइमहामयपच्छाइयसुद्धबुद्धीण ॥ २ ॥

१ विज्ञातदौर्मनस्यनिमित्तेन ॥ २ 'रज्जुकरणिं' रज्जुसादृश्यम् ॥ ३ संविधानकानि–कथानकानि ॥ ४ ज्ञप्तिमार्गे ॥ ५ प्रधानपुरुषप्रेषणेन ॥ ६ दुर्नयमकराकरे निपतनशीलानाम् अस्मादृशाम् उपदेशयानपात्रप्रदानेन ॥ ७ ऐश्वर्यादिमहामदप्रच्छादितशुद्धबुद्धयोः ॥

तो मुणिणा करुणाभरमंथर[1]पम्हउडनयणनलिणेण । साहारणधम्मुवएससारमिय भणिउमाढत्तं ॥ ३ ॥
अच्चंतं गुरुपणई देवेसु य पूयणापराऽभिरुई । सत्थत्थसवणचिंता जहसत्तीए य तक्करणं ॥ ४ ॥
[2]मन्नाण माणणं चिय उचियपवित्तीए [3]वट्टणं सम्मं । परपरिवायच्चाओ असदग्गहवज्जणे जत्तो ॥ ५ ॥
सपणयपुव्वुल्लावो अजुत्तकरणम्मि दढयरं लज्जा । [4]नयभंगभीरुभावो भवविगुणविभावणा बुद्धी ॥ ६ ॥
लोगविरुद्धविवज्जणमणुदिणदीणप्पयाणपरिणामो । वय-नाणवुड्ढ-सुवियड्ढसेवणं गुणिसु उवयरणं ॥ ७ ॥
दुत्थियजणाणुकंपा [5]अपक्खवाएण नायवागरणं । परपीडापरिहारो सुदीहदरिसित्तनिउणत्तं ॥ ८ ॥
एमाइ तह कहं पि हु जइणा कायव्ववित्थरो सिट्ठो । जह तेसि भद्दगाण वि जाया जिणसासणेऽभिरुई ॥ ९ ॥
नवरं वेलुयकवलो व्व नीरसं तं न रोयइ कहं पि । विमलस्स सुंदरं पि हु खीरं पिव पित्तविहुरस्स ॥ १० ॥

एवं च खीरासवलद्धित्तणेण मुणिणो पइदिणजिणसासणपणीयपयत्थपरूवणं निसामिंता मंतिपमुहा जीवा-ऽजीवाइवियारकुसला जहट्ठियावधारियपुन्न-पावा-ऽऽसव-संवर-बंध-निज्जरा-मोक्खसरूवा जाय त्ति । नवरं मुग्गसेलो व्व कुग्गहपरिच्चायं पडुच्च अणवरयमुणिवरोवएसवारिधारासिच्चमाणो वि न मणागं पि भिन्नो मंतिपुत्तो । अहह ! मंदपुन्नया, जं तहाविहस्स वि गुरुणो अणुसासिंतस्स ते च्चिय धम्मोवएसा एगेसिं कुग्गहनिग्गहे ण परिणय त्ति । कइवयदिणावसाणे य अन्नत्थ विहरिओ मुणिवरो । रायसुय-मंतिपमुहा य परमसम्मदिट्ठिणो, अखोभणिज्जा देव-दाणवाणं पि, 'जिणसास-

१–पक्ष्मपुट–॥ २ मान्यानाम् ॥ ३ वर्त्तनम् ॥ ४ नयभङ्गभीरुभावः । नयः–नीतिः ॥ ५ अभक्ख° प्रतौ । अपक्षपातेन न्यायप्रकटीकरणम् ॥

णमेव अट्ठो, सेसो अणट्ठो' त्ति मन्नमाणा कालं वोलेंति ।

अन्नया य सुमिणरमणीयत्तणेण संसारियभावाण दिवंगतो हरितेयभूवई । पइट्ठिओ य तप्पयम्मि सूरतेयरायसुओ, पणिवइओ मंति-सामंताईहिं, धम्म-लोगाविरुद्धवित्तीए य रायसिरिमुवभुंजिउं पवत्तो । सागरो वि अमच्चो मच्चुमवलोइऊण [1]रायणो 'अप्पणो वि एस च्चिय गइ' त्ति चिंततो राइणो निवेइऊण पवन्नो पवज्जं । सूरतेयराइणा वि पइट्ठिओ पिउणो पए विमलो । चिंतेइ सो रज्जकज्जाइं । [एवं] वच्चंति वासरा । अह समहियभुत्तस्स व अजिन्नुग्गारा कयसविसभोयणस्स व विसवियारा [स विमलामच्चो] वियंभिउं पवत्तो—

जं सुत्ते निद्दिट्ठं तं चिय कुसलाण जुज्जए काउं । लोयपवाहेणं पुण कुणमाणाणं च मिच्छत्तं ॥ १ ॥
ता चिइवंदणविसए तिहिं चेव थुईहिं वंदणा जुत्ता । वेया[2]वच्चगरा चिय अविरयभावा न थुइजोग्गा ॥ २ ॥
सि[3]द्धत्थए वि तिसिलोगमेत्तयं सेसयं न पढणिज्जं । पच्छा सबुद्धिपरिकप्पणाए रइयं ति हेय[4]व्वं ॥ ३ ॥
सुत्तेणं अत्थेण य जइ सुद्धं जुज्जए तया काउं । चिइवंदणं पि इहरा अविहिकयाओ [य] वरमकयं ॥ ४ ॥
जिणपडिमा वि हु विहिणा कया परं होइ वंदं[5]णाइपयं । अविहिअणुमोयणाओ इय[6]रा पुण पावहेउ त्ति ॥ ५ ॥
जिणपूयणाइ वि परं कम्मक्खयगोयरं चिय विसिट्ठं । धण-पुत्ताइनिमित्तं तं पि हु मिच्छत्तमवसेयं ॥ ६ ॥

१ राज्ञः ॥ २ 'वैयावृत्यकराः' जैनप्रवचनसेवाप्रभावनादिकारका देवाः ॥ ३ सिद्धस्तवः-"सिद्धाणं बुद्धाणं" इति सूत्रम् ॥ ४ 'हातव्यं' वर्जनीयम् ॥ ५ वन्दनपूजनादियोग्येत्यर्थः ॥ ६ 'इतरा' अविधिकृता ॥

उवसग्गिउं । पइदिणतहाविहगंधविधुरियसरीरो जक्खो विचिंतेइ—अहो ! कीणासवयणं पविसिउकामस्स[1] मोक्ख[2]लोयस्स दुविलसिएसु पयत्तो जं एवं अम्हारिसेसु वि च्छड्डिज्जइ, ता दंसेमि सवंकसविणासकरणेण दुविणयफल-न्ति विभाविय पच्चक्खीहूओ एसो जंपिउं पवत्तो—भो कुलपुत्तय ! तुह [3]असरिसभत्तिपगरिसेण दूरमागरिसियं मह हिययं, ता इमं गंध[4]वडियं घेत्तूण वच्चसु सगिहं, दुवारनिरोहं काउं सपरिवारो गेहब्भंतरे दहिऊण गंधं गेण्हेज्जासि जेण कयकिच्चो होसि त्ति । 'अउ च्चिय कज्जकारि' त्ति पहिट्ठो सायरगहियगंध[5]गुलिगो गतो सगिहं । 'तह' त्ति निवत्तियं सव्वं, गतो य तग्गंधदोसेण निहणं ति ॥ छ ॥

ता मुंच कुग्गहं मंतिपुत्त !, वच्चसु पसिद्धमग्गेण, कुविगप्पणाए इहरा पाणेण वि काहिसि विणासं । एमाइभूरिभणितो वि कुग्गहाओ न थेवं पि विरओ विमलो, केवलं मोणमवलंबिऊण ठिओ । ततो मंतिणा परिभावियं—अहो ! जो साहुणा सिट्ठो कुडिलबुद्धी दुग्गइगामी य सो एस निच्छियं मह पुत्तो, इयरो य रा[य]सुओ त्ति, ता किमियाणिं काउमुचियं ? दुपुत्तपज्जवसाणाणि कुलाणि, सव्वहा बाढमणिट्ठमुवट्ठियमिमं-ति [6]चिंताप्भारसमुट्ठितवियप्पकल्लोलाउलस्स तस्स समागतो रायपुरिसो । भणियं च तेण—देवो वाहरइ त्ति । ततो [7]कयायारसंवरो गतो रायसमीवं अमच्चो । कुमारा वि पारद्धकिच्चेसु वट्टिउं पवत्ता । सुहासणासीणो य संभासिओ अमच्चो राइणा—भो ! किमेवं कालविलंबो तुह ? [8]कसिणवयणया य ? त्ति । मंतिणा भणियं—देव ! न किं पि ताव निमित्तं, एवमेव जइ परं । राइणा जंपियं—होयव्वं निच्छियं केत्तिएण वि कार-

१ °स्स सोक्ख° प्रतौ ॥ २ मूर्खलोकस्य ॥ ३ असदृशभक्तिप्रकर्षेण दूरमाकृष्टम् ॥ ४ गन्धवटिकाम् ॥ ५ °धगुलि° प्रतौ ॥ ६ चिन्ताप्राग्भारसमुत्थितविकल्पकल्लोलाकुलस्य ॥ ७ कृताकारसंवरः ॥ ८ कृष्णवदनता ॥

तुमए सिट्ठं "जं सुत्ते निद्दिट्ठं" इच्चाइ एयं हि सुयकेवलिणो चेव जुज्जए वुत्तुं, न तुम्हारिसस्स सुयलवमेत्तधारिणो । जं च "लोयपवाहेणं" इच्चाइ उच्चरियं तं पि विचारणिज्जं, लोगो वि दुविहो—सामइओ असामइओ य, तत्थ सामइयलोगस्स गीयत्थस्स पवाहो अणुसरणिज्जो चेव, असामइयलोगस्स वि विरुद्धवत्थुचागेण कहं पि पवाहो अभिमओ त्ति । चिइवंदणविसए वि 'थुइतिगेणेवं[1] चिईवंदणं' ति अवधारणमजुत्तं, जइ सुत्ते देवावग्गहमहिगिच्च मलमलिणसरीरस्स मुणिणो "तिन्नि वा कड्ढई जाव, थुईओ तिसिलोइया ।" इच्चाइ वुत्तं, किमेत्तिएणं कयसरीरसिंगाराणं नवधोय-धवलवसणाणं सुइभूयाणं जिणजम्मणाईसु वि महई वेलं वट्टंताणं थुइतिगमेत्तमेव चिइवंदणं पि वोत्तुं जुज्जइ ? पंचसक्कत्थयचिइवंदणस्स कत्थइ दंसणाओ । किंच—

निच्चं भावत्थयसेवणेण चिइवंदणं तिथुइयं पि । जुज्जइ मुणीण गिहिणो य सव्वसावज्जनिरयस्स ॥ १ ॥
अं[2]भहियदेववंदणविहिणा भावत्थएण अप्पाणं । निप्पावं खणमेक्कं कुणमाणस्स वि य कह दोसो ? ॥ २ ॥
वेयावच्चगरथुई वि भद्द ! एगंतसो न पडिसिद्धा । आवस्सयनिज्जुत्तीए जेण जइणो विऽणुन्नाया ॥ ३ ॥
चाउम्मासियवरिसे उस्सग्गो खेत्तदेवयाए उ । पक्खिय सेज्ज[3]सुराए करेंति चउमासिए वेगे[4] ॥ ४ ॥
तक्कालियसाहूण वि जइ वुत्तमिमं तदेयराणं पि । संपइ[5]पमायमुणिणो तक्करणं ता कहमजुत्तं ? ॥ ५ ॥
एत्तो च्चिय चिइवंदणपज्जवसाणे वि त[6]त्थुईदाणं । संजमविग्घविघायणहेउं निद्दोसमाहंसु ॥ ६ ॥

---

१ °गेण व प्रतौ ॥ २ अभ्यर्हितदेववन्दनविधिना ॥ ३ 'शय्यासुर्याः' भवनदेवतायाः ॥ ४ अप्येके ॥ ५ वर्तमानकालीनप्रमादिमुनेरित्यर्थः ॥ ६ वैयावृत्यकरदेवतायाः स्तुतिकरणमित्यर्थः ॥

जइ जइणो वि हु एवं ता किं गिहिणो न दिंति ताण थुई ? । न हु होइ कह वि एवं तिक्खो खग्गाउ प[1]डियारो ॥ ७ ॥

अच्चंतबहुस्सुयपरंपरापसिद्धत्तणेण चेव सिद्धत्थयस्स तिसिलोगब्भहियस्स वि सवणाओ तिसिलोगमेत्तभणणं पि अजुत्तं, जीयकप्पपहाणत्तणेण तदब्भहियभणणेण वि दोसाभावाओ त्ति । जं पि 'सुत्तत्थसुद्धं चिइवंदणं चेव काउं जुत्तं "अविहिकया वरमकयं" ति वयणाओ' तं पि

अविहिकया वरमकयं असूयवयणं भणंति समयन्नू । जम्हा अकए अन्नं कए य अन्नं तु पच्छित्तं ॥ १ ॥

ता मग्गपविसिकारणत्तेण सु[3]त्त-ऽट्ठाविसुद्धं पि चिइवंदणमपुण[4]बंधगाणं ई[5]यरेसिं पि बीयरूवगतुल्लत्तणेण अदुट्ठमेव । जो वि अविहिकयबिंबे वंदणाइपडिसेहो तदणुमोयणादोसभावाओ सो वि अजुत्तो, "निस्[6]सकडमनिस्सकडे, वा वि चेइए सव्वहिं थुई तिन्नि ।" इति सुसा[हू]ण वि वंदणाकारवणाउ त्ति । जं पि 'इहलोयत्थेण तित्थयरवंदणाइयं असब्भूयभावारोवणाओ मिच्छत्तं' ति तं पि अजुत्तं, को हि न याणइ जहा जिणा निव्वुइं गया न कस्स वि किं पि दिंति अवणिंति वा ? केवलं तब्बहुमाण-भत्तिवसओ साभिस्संगत्तणेण य "आ[7]रोग-बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ।" इइवयणं व तहाविहवत्थुपत्थणं पि न दुट्ठं, विसिट्ठगुणट्ठाणपगरिसहेउत्तणेण वागुरसेट्ठिपमुहाणं व एयस्स विसयब्भासाओ । चंडिगाईणं पुण पत्थणे दूर-

---

१ तीक्ष्णः खड्गात् प्रत्याकारः॥ २ **परिया**° प्रतौ ॥ ३ सूत्राऽर्थाविशुद्धमपि ॥ ४ ये जीवा ज्ञानावरणादीनां सप्तानां कर्मणां अन्तःसागरोपमकोटाकोट्यभ्यधिकां स्थितिं न कदाचनाऽपि बध्नन्ति भन्त्स्यन्ति च ते अपुनर्बन्धकाः प्रोच्यन्ते ॥ ५ इतरे-मार्गाभिमुख-मार्गपतितादयः ॥ ६ गाथेयं बृहत्कल्पभाष्ये १८०४ तमी, तत्र च **निस्सकडमनिस्से वा** इति पाठो वर्तते ॥ ७ गाथोत्तरार्धमिदं चतुर्विंशतिस्तवे गाथा ६ सत्कम् ॥

हओ चेव उत्तरो गुणलाभो त्ति, ता कह इच्छा-परिग्गहारोवणदूसणं जिणेसरे संभवइ ?। जं च 'सुस्समणा चेव वंदणिज्ज' त्ति भणियं तं च अम्हाणमणुमयमेव, केवलं पासत्थाईण वि धम्मखिंसाइकज्जकारणभावेण वायानमोक्काराइवंदणं सुसाहूण वि अणुमयं, सत्थयारवयणपमाणभावातो चेव तप्पमायाणुमोयणदूसणं पि दूरपरिचत्तमेव। एवं च अइ सुजईण वि लोयववहारावेक्खा ता का वत्ता मायंगेसु वि सिरोनमणाइपयट्टाणं गिहत्थाणं ? ति। किं च—

न समणगुणठाणाओ अब्भहियं बिंति गिहिगुणट्ठाणं। जणचित्तग्गहणत्थं ता कह ते तन्न कुव्वंति ? ॥ १ ॥

तम्हा अमच्चवर ! वरं मोणं, न पुण [1]अवियाणियागमरहस्सस्स धम्मविसेसकहणं, ता पडिवज्जसु पच्छित्तं, मुयसु भुज्जो कुग्गहपरिग्गहं ति।

इमं च सोच्चा अमच्चो [2]अंतोवियंभंतकोवो 'अहो ! सिद्धंतसव्वस्सचोरो पासत्थाईसुं संपत्तो एसो साहू, ता अवंदणिज्जो' त्ति कोलाहलं काऊण गतो जहागयं। वाहराविओ सपक्खमग्गलग्गो कुग्गहियलोगो, पन्नविओ य जहा—एस साहू पूया-गारवाइपडिबद्धो पासत्थसंगइपरो य, अओ मिच्छदिट्ठिनिव्विसेसस्स एयस्स भिक्खादाणं वंदणं च तित्थंतरीयस्स व मा करेज्जह, इहरा तदणुमोयणोवट्टंभभावेण तुब्भे वि मिच्छदिट्ठिणो भविस्सह त्ति। 'रायपुज्जो' त्ति 'तह' त्ति पडिवन्नो जणो। जाणिओ य एस सव्वो वि वइयरो सूरतेयनरवइणा। कुविओ एसो, वोत्तुमारद्धो य—

रेऽमच्च ! मलीमसचेट्ठिओ वि नामेण वहसि विमलत्तं। कालाणुसारिसुंदरकिरियानिरयं पि जं साहुं ॥ १ ॥

१ अविज्ञातागमरहस्यस्य ॥ २ अन्तर्विजृम्भमाणकोपः ॥

न हु दिंति जिणा कस्सइ न हरंति य नेव किं पि कुव्वंति। कह तव्विहा न चिंता निव्विसया जणइ मिच्छत्तं ? ॥ ७ ॥
इच्छा-परिग्गहाई लोइयदेवाण चेव सिंगारो। कम्मक्खयसिद्धाणं घडेज्ज कह तं जिणिंदाण ? ॥ ८ ॥
समणा वि वंदणिज्जा विहियाणुट्ठाणिणो परं चेव। लोगाणुवित्तिओ वि हु इयरे पुण सव्वहा नेव ॥ ९ ॥
तेसिं पि वंदणाओ पमायदुव्विलसियं बहुवियप्पं। [1]अणुमन्नियमन्नाण वि कुमग्गघडणा बहू दोसा ॥ १० ॥
इय [2]एगपक्खनिक्खेवसारमविमंसिऊण सोयारं। बालाइरूवमणुदिणमारद्धो जंपिउं पयओ ॥ ११ ॥
तो सव्वसत्तसुहओ वि समयसारो असारपत्तम्मि। पत्तो [3]पयं व भुयगे विसविरसो ही ! लहुं जाओ ॥ १२ ॥

कयं पसंगेण। सो विमलामच्चो गाढपरिग्गहिय[मु]साभिप्पाओ एवंविहपरूवणाहिं मग्गाणुलग्गं पि भव्वजणं [4]असुयतहाविहसुयनिहसं अपज्जुवासियहेउ-नयकुसलमुणिजणं अदिट्ठगीयत्थसामायारिविसेसं अविमंसियाणेगंतवायवियारं वामोहिंतो भणिओ तक्कालागयगीयत्थदिवायरमुणिवरेण—

भो अमच्च ! मुद्धबुद्धी पाएण लोगो, [5]थोवा पारमत्थियवत्थुवियारवेइणो, न तहाविहा पारिणामिया मई, सुंदरमग्गपडिवत्तिपडिकूलो कालो, [6]दुप्परिणामं पाएण जिणवयणं, ता जहा तुमं [7]किंचविसेसपरूवणं कुणसि तहा बाढमजुत्तं। तहाहि—जं

१ अनुमतम् अन्येषाम् ॥ २ 'एकपक्षनिक्षेपसारम्' एकपक्षस्थापनप्रधानम् अविमृश्य श्रोतारम् ॥ ३ पयंग भु° प्रतौ। 'पय इव' दुग्धवद् 'भुजगे' सर्पे ॥ ४ अश्रुततथाविधश्रुतनिकषम् अपर्युपासितहेतुनयकुशलमुनिजनम् अदृष्टगीतार्थसामाचारीविशेषम् अविमृष्टानेकान्तवादविचारं व्यामोहयन् ॥ ५ स्तोकाः ॥ पारमार्थिकवस्तुविचारवेदिनः ॥ ६ °रिणामं° प्रतौ ॥ ७ कृत्यविशेषप्ररूपणाम् ॥

ततो राया जोडियकरसंपुडो साहुं भणइ—भयवं ! तुब्भेहिं तस्स दुरायारस्स कूडमइणो थेवं [पि] न वयणं मणसि धरणीयं, अकल्लाणभागी खलु सो वरागो, नीरागेसु वि तुम्हारिसेसु जो एवं पओसमु[व]हइ त्ति। मुणिणा भणियं—महाराय ! केत्तियमिमं ?

अक्कोस-हणण-तज्जण-धम्मब्भंसाण बालसुलभाण । लाभं मन्नइ धीरो जहुत्तराणं अभावम्मि ॥ १ ॥

धन्नाणं खु कसाया सुरंगधूलि व उक्खया वि खरं । अंतो च्चिय जंति लयं जलबुब्बुयग[1] व वा सलिले ॥ २ ॥

एवं सोच्चा राया भत्तिसारं साहुं वंदित्ता गओ सठाणं। विमलो वि रायपुरिसावहरियसवस्सो रोरो व एगागी देसंतराइं परिभमिउमारद्धो, जाओ य पहपरिस्सम[2]-छुह-पिवासापमुहदुहनिवहस्स भायणं। परिभमंतो य गओ गयपुरं। तहिं च पयंडतवविसेसवससमुप्पन्नासीविसाइलद्धिदुद्धरिसो[3] धम्मरुई नाम तवस्सी संविग्गसावगवग्गस्स धम्ममाइक्खमाणो दिट्ठो अणेणं। ततो जायमच्छरो पुवड्ढिईए दुव्विणयपुरस्सरं विभाविंतो मुणिणा कुविएण कयवायावहारो मूओ व अच्चंतं बुडबुडिंतो निच्छूढो लोगेणं। विविहदुब्भावणाहिं अप्पाणं परं च वुग्गाहिंतो दुहट्टो[4] मरिऊण कुजोणीजणियदुक्खाण भागी अणंतकालं जाओ त्ति।

इय कुग्गहनिग्गहविरहिएण[5] गुरुणा वि धम्मकिच्चेण । कीरइ न परित्ताणं[6] भवकूवगयस्स थेवं पि ॥ १ ॥

ता तच्चागो च्चिय चिंतियत्थसंपाडणेककप्पतरू[7] । मग्गाणुसारिसुहभाववारिणा सिंचिउं जुत्तो ॥ २ ॥

१ बुद्बुदा इव ॥ २ पथपरिश्रमक्षुधापिपासाप्रमुखदुःखनिवहस्य ॥ ३ प्रचण्डतपोविशेषवशसमुत्पन्नाशीविषादिलब्धिदुर्धर्षः ॥ ४ दुःखार्त्तः ॥ ५ कुग्रहनिग्रहविरहितेन ॥ ६ परित्राणम् ॥ ७ चिन्तितार्थसम्पादनैककल्पतरुः । मार्गानुसारिशुभभाववारिणा ॥

कुग्रहत्यागोपदेशः

अपि च—गुरुमपि तृणराशिं जातवेदः[1]कणोऽपि, प्रचुरसुकृतमेकं हन्ति दुष्कर्म यद्वत् ।
उपचितमपि पुण्यं कुग्रहस्तद्वदेकोऽप्युपनयति नितान्तं स्फीतमप्यन्तमाशु ॥ १ ॥

यदि जिनवचःप्रामाण्येनाऽऽश्रिता श्रमणक्रिया, गृहिसमुचितो यद्वाऽऽरब्धः स्फुटो विरतिग्रहः ।
तदयमधमः कस्मादन्तर्भवन् ननु कुग्रहः, स्व-परमनसां क्लेशाधायी न जातु निवार्यते ? ॥ २ ॥

यद्यप्यङ्गमनङ्गभङ्गजनकज्यायस्तपःकल्पनास्वल्पीभूतपला-ऽसृगुल्वणनसान्यासास्थिबन्धक्रमम् ।
व्यावृत्तेन्द्रियवर्त्मनोऽपि हि मुनेः कस्यापि पापोदयाद्धा ! धिक् कष्टमयं तथाप्युदयते दुर्निग्रहः कुग्रहः ॥ ३ ॥

गोष्ठा[2]-ऽश्वमित्रीयक-तिष्यगुप्त-यमालिमालिन्यमितो निशम्य ।
सम्यक् प्रवर्तेत चिरन्तनर्षिदृष्टेन मार्गेण सुधीर्विशङ्कः ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे कुग्रहत्यागे विमलोपाख्यानकं समाप्तम् ॥ १९ ॥

माध्यस्थम्

निग्गहियकुग्गहो वि हु मज्झत्थो चेव उचियमियरं च । नाउं काउं च खमो त्ति तं निदंसेमि लेसेण ॥ १ ॥

मध्यस्थः

तत्थ य मज्झत्थो राग-दोस-मोहेहिं कुगइहेऊहिं । बुद्धिविवज्जयजणगेहिं जो न पुट्ठो स विन्नेयो ॥ २ ॥

मूढः

विगुणं[3] पि कुणइ रागी सुगुणं दुट्ठो गुणड्ढमवि विगुणं । मूढो न कज्जमज्झं बुज्झइ बहुहा वि पन्नविओ ॥ ३ ॥

१ जातवेदाः-अग्निः ॥ २ कोष्ठा-ऽश्वमि° खं० ॥ ३ गुणरहितमित्यर्थः ॥

इय ते सुद्धं सद्धम्मकम्ममाराहिउं न पारेंति । गुण-दोसवियारखमो मज्झत्थो चेव तज्जोगो ॥ ४ ॥
लोगे वि नायवाई मज्झत्थो चेव कीरइ पमाणं । अत्थं जसं च धम्मं च सो परं लहइ अवियप्पं ॥ ५ ॥
रागो दोसो मोहो एए कालुस्सकारिणो गरुया । [1]ताणमणुदिन्नयाए य निम्मला जायए बुद्धी ॥ ६ ॥
[2]तीए [3]समिक्ख थेवं पि धम्मकिच्चं परं पकुव्वाणो । नारायणो व्व निव्वाणभायणं जायइ कमेण ॥ ७ ॥

तहाहि—अत्थि [4]नियचंगिमावगन्नियावर[5]पुरसोहासमुदयपत्तपहाणनरनियरनिवारियकलिजहिच्छाविहारं, हारभूयं व मेइणीरमणीए, मणीहियत्थसंपाडणपसिद्धं सिद्धत्थपुरं नाम नयरं । तहिं च बुद्धो व्व करुणापरो लोगो, अच्छ[6]रायणो व्व अक्खंडियरूव-लायन्नो सुंदरीजणो, [7]पिणायपाणि व्व निग्गहियवम्महो लिंगिवग्गो । तहिं च पयंडभुयदंडारोवियपुहइभारस्स सिरिविस्ससेणरन्नो छकम्मनिरयचित्तो चउद्दसविज्जाठाणपारगो जन्नदत्तो नाम पुरोहिओ, हिओ नरवइस्स, वइस्स-सुद्द-खत्तिय[8]पूयापयरिसपत्तो नियकम्मनिरओ कालमइक्कमइ । पुत्तो य तस्स सव्वविज्जावियक्खणो नारायणो नाम पयईइ च्चिय लोभाइदोसविरहिओ परलोयभीरू य अहेसि ।

सो य पुरोहिओ [9]पारद्धिपमुहपउरपावपब्भारसुद्धिनिमित्तं राइणा वाहराविऊण निउत्तो जन्नकज्जे । उवाहरिया जागनि-

१ 'तेषां' रागादीनाम् अनुदीर्णतायाम् ॥ २ 'तया' निर्मलबुद्ध्या ॥ ३ समीक्ष्य ॥ ४ निजचङ्गिमावगणितापरपुरशोभासमुदयप्राप्तप्रधाननरनिकरनिवारितकलियथेच्छाविहारं हारभूतमिव मेदिनीरमण्याः मनईहितार्थसम्पादमप्रसिद्धम् ॥ ५ °पुरिसो° खं० ॥ ६ °राइणो खं० । अप्सरोजन इव अप्सरोगण इव वा ॥ ७ 'पिनाकपाणिः' महादेव इव 'निगृहीतमन्मथः' वशीकृतकामः ॥ ८ –पूजाप्रकर्षप्राप्तः ॥ ९ पापर्द्धिः–मृगया ॥

अवमन्नसि [1]मन्नसि अप्पयं पि विन्नायसव्वनायव्वं । थोवे वि उ[2]त्तुणत्तं न सव्वहा सच्चरियचिंधं ॥ २ ॥
नाणपईवा सिवपंथसत्थवाहा य चत्तपरबाहा । हीलिज्जंती जइणो न भिल्लपल्लीसु वि य एवं ॥ ३ ॥
को वा तुह इह दोसो ? दोसो मम चेव एस नीसेसो । जो एवंविहदुव्विलसियं पि न तुमं निगिण्हामि ॥ ४ ॥
एवंविहतुहदुच्चेट्ठिएण नीहार-हारधवलं पि । मज्झ जसो चिरकालज्जियं पि मालिन्नमुवणीयं ॥ ५ ॥
जेहिंतो जिणवयणं किच्चा-ऽकिच्चं पि जाणियमसेसं । ते वि हु गुरुणो हीलंत ! पाव ! पत्तो न पायालं ॥ ६ ॥
कह तेसु वि तुह वाणी अगुणु[2]ग्गिरणम्मि एत्थमुत्थरिया ? । जाण न गु[3]णलेसं पि हु सक्कइ वोत्तुं सुरगुरू वि ॥ ७ ॥
इय गरुयकोवभरभिउडिभीमभालेण तेण भूवइणा । निव्वासिओ सदेसाओ [4]साहुदुट्ठो लहुं विमलो ॥ ८ ॥

पुरे वि उग्घोसावियं—जो [5]एवंविहकुग्गहवग्गवग्गुरापडिओ सो अन्नो वि लहुं नीहरउ, इहरा सव्वस्सावहारेणं दंडिस्सामि त्ति । पत्थावे य राया गओ दिवायरसाहुवंदणत्थं । [6]सव्वायरकयपायवडणो य आसीणो समीवे, भणिउं पवत्तो य—भयवं ! एवंविहकुग्गहनिग्गहियमयिणो असमंजसपलाविणो मणुयस्स केरिसो गइविसेसो ? । साहुणा भणियं—किमिह भन्नइ ?

वि[7]ग्गह-विवायरुइणो कुल-गण-संघेण बाहिरकयस्स । नत्थि किर देवलोए वि देवसमिईसु ओ[8]गासो ॥ १ ॥
अपि च—कुप्पहपरूवगाणं समइपवित्तीए गुरुविभासीण । केत्तियमेत्तं एयं ? दंडो दीहं भवब्भमणं ॥ २ ॥

१ सगर्वत्वमित्यर्थः ॥ २ °रणं पि ए° प्रतौ । अगुणोद्गीरणे इत्थं निःसृता ? येषाम् ॥ ३ °णसेसं प्रतौ ॥ ४ साधुद्विष्टः ॥ ५ एवंविधकुग्रहवर्गवागुरापतितः ॥ ६ सर्वादरकृतपादपतनः । पतनम्–नमनम् ॥ ७ विग्रहविवादरुचेः ॥ ८ 'अवकाशः' स्थानम् ॥

रक्तत्वे शिवोदा-हरणम्

॥१५१॥

[1]रत्ता दुट्ठा मूढा सिव-ससि-संख व जइ अरे ! तुब्भे । [2]बुज्झाविउं न सक्का ता सक्खा सक्कगुरुणा वि ॥ १ ॥
एवंविहभावठियाण तुम्ह [3]वइवित्थरो सुगरुओ वि । कज्जंतरं पसाहइ न कंठसोसाउ अब्भहियं ॥ २ ॥
निय[4]उज्जुबुद्धिविहवाउ किं पि गुरुवयणतो य [5]किंचेव । विसयविभागे ठवियं हवइ [6]सुसुत्तं लहुं सुत्तं ॥ ३ ॥
ता कीस[7] अंगुलीभंगभावणेणुब्भवंतकुवियप्पा । पुव्वरिसिदिट्ठमविणट्ठमित्थमत्थं विणासेह ? ॥ ४ ॥

सीसेहिं भणियं—उवज्झाय ! अच्छउ ताव [8]सुत्तपज्जणुजोगपच्चवत्थाणं, महंतं कोऊहलं, के इमे सिवाइणो रत्ताइसु अत्थेसु दिट्ठंता सिट्ठ ? त्ति साहेह । उवज्झाएण जंपियं—आयन्नह—

अवंतीजणवए जयखेडं नाम गामो । तहिं वत्थव्वो सिवो नाम कुलपुत्तगो । तस्स दुवे भायरो—जेट्ठो कणिट्ठो य । तत्थ जो कणिट्ठो सो अच्चंतं सिवस्स इट्ठो, तदुत्तमजुत्तं पि जुत्तं पडिवज्जइ । इयरो य अणिट्ठो, सुंदरं पि जंपंतो ‘असंबद्ध-पलावि’ त्ति खिंसिज्जइ । एवं जंति दिवसा ।

अन्नदियहे य ते तिन्नि वि भायरो गया पओयणवसेण [10]पोलिगापच्छयणं घेत्तूण अडवीए । तहिं च समारद्धा ते तिन्नि वि तरुवरे च्छिंदिउं । गाढपरिस्समकिलामिया य जाया तण्हाउरा, पेहिउमारद्धा य सलिलं। दिट्ठा य थोयसलिला एगा तडा-

१ रक्ता द्विष्टाः ॥ २ बोधयितुं न शक्यौ ततः साक्षात् ॥ ३ वचोविस्तरः ॥ ४ निजऋजुबुद्धिविभवात् ॥ ५ किञ्चिदेव ॥ ६ सुसूत्रं लघु सूक्तम् ॥ ७ कस्माद् अङ्गुलीभङ्गभावनेन उद्भवत्कुविकल्पौ पूर्वर्षिदृष्टम् अविनष्टम् इत्थम् अर्थं विनाशयथः ? ॥ ८ ‘सूत्रपर्यनुयोगप्रत्यवस्थानम्’ सूत्राक्षेपस्य उत्तरम् ॥ ९ °**पियमाय**° खं० प्र० ॥ १० पोलिकाशम्बलमित्यर्थः ॥

गिगा, [1]मायण्हियासरोवरं च गरुयं । तं च दट्ठूण भणियं सिवेण—किमिमाए थोय-[2]पूइसलिलाए तडागिगाए ? एहि भूरि-भंगुररंगंततरंगपरंपराविराइयं इमं सरोयरं वच्चामो त्ति । जेट्ठेण भणियं—मायण्हियासरमपारम[3]त्थियं, इमीए वि सरसीए कुणह कायव्वं ति । कणिट्ठेण [4]वुत्तं—नं एसो न किं पि जाणइ, [5]करवत्तयं घेत्तूण सिव ! [6]वच्चाहि तुममिह त्ति । ततो तव्वय-णगाढाणुरागेण सविसेससमुल्लासियमई जेट्ठेण निरुब्भमाणो वि वेगेण पट्ठिओ सिवो तदभिमुहं । तओ—

जह जह वच्चइ एसो तह तह तं [7]अंग्गए व पक्कमइ । निप्पुन्नगुरुमणोरहपारद्धा धाउसिद्धि व ॥ १ ॥
निमिसद्ध-निमेस-मुहुत्तमे[8]त्तमित्तो वि लग्गइ न नूण । तुरियं पि धाविरो तं महोसहिं पिव नियइ दूरे ॥ २ ॥

ततो सुचिरं किलिस्सिऊण अकयकज्जो चेव नियत्तो एसो । पुव्वुत्ततडागिगाए चेव कयं जलपाणाइ, वुत्था तत्थेव । बीयदिवसे वि तरुच्छेयणं काऊण मज्झंदिणसमए भोयणं काउमारद्धा । दिट्ठं च अदूरे सवच्छं चरंतं गवयमंडलं । ततो सिवेण भणियं—सुक्काउ पोलिगाओ न तीरंति गोरसं विणा भक्खिउं, अओ जइ एत्तो गोमंडलाओ दुद्धं आणिज्जइ ता लट्ठं हवइ त्ति । जेट्ठेण भणियं—[9]गवलमंडलमेयं माणुसोवघायगं, न गोमंडलं ति । कणिट्ठेण जंपियं—भो सिव ! वच्चसु तुमं, एत्तो दुद्धं घेत्तुं लहुमागच्छसु त्ति । [10]तव्वयणपेरिओ भायणहत्थो पट्ठिओ एसो, जेट्ठेण वारिओ वि न ठिओ । ततो [11]दूरनिल्ला-

१ मृगतृष्णिकासरोवरम् ॥ २ °**पूयस**° खं० । स्तोकपूतिसलिलया । पूति-दुर्गन्धि ॥ ३ °**त्थियमिमी**° खं० प्र० ॥ ४ **वुत्तं—एसो** प्र० ॥ ५ करपात्रकं करवर्त्तकमिति वा, कलशमित्यर्थः ॥ ६ व्रज ॥ ७ अग्रत एव प्रक्राम्यति ॥ ८ °**त्तमेत्तो** प्र० ॥ ९ **गवयमं**° प्र० ॥ १० तद्वचनप्रेरितः ॥ ११ दूरनिर्लोलितध्यामकपरुषदीर्घजिह्वाक्रकचेन ॥

लिय-ज्झामय-फरुस-दीहजीहाकरमएण पारद्धो सो मवएहिं [1]परामरिसिउं। कंठगयपाणो य महया कट्ठेण मोयाविओ इयरेहिं।

जत्थ दढं अणुरागो तव्वयणेणेव [2]संपयट्टइ जो। न सयं न परेणुत्तो बुज्झइ रत्तो स एसो त्ति ॥ १ ॥ ॥ छ ॥

दुट्ठदिट्ठंतं निसामेह—सोरट्ठाविसए परुक्खो नाम सन्निवेसो। तत्थ य ससी नाम आभीरो परघरेसु कम्मकरणेण जीवइ। सो य अन्नया एगेण वणिएण अप्पणो बीओ चालिओ। गामंतरे गच्छंताण य ताण जाया गोट्ठी। कहंतरे य पसंसिया आभीरेण नियगा जाई। वणिएण भणियं—तुम्हाण पसूण य [3]विवेयविरहत्तणेण तुल्ला चेव जाई। रुट्ठो आभीरो, ठिओ तुण्हिक्को। [4]सरुक्खचक्खुक्खेवेण लक्खिओ वणिएण, दाण-सम्माणाइणा अणुवत्तिओ वि न पसन्नो। साहियकज्जा य पडिनियत्तंता गहिया तक्करेहिं। [5]लुंडियं सवस्सं। 'मम किंचं तक्करेहिं वि कयं' ति तुट्ठो आभीरो। [6]निस्संसट्ठं बद्धा दो वि, कुट्टिउमारद्धा य। वणिएण भणियं—[7]कीस एयं हणह एयं वरायं ? कम्मयरो खु एसो। समुट्ठंतगुरुकोवेणं भणियं आभीरेणं—वरागो एयस्स पिया, कम्मयरो वि एसो चेव ममं, ता मुयह इमं ति। ततो तक्करेहिं पलोइयं [8]वणियवयणं। वणिएण भणियं—जमेस जंपइ तं अवितहं ति। मुक्को वणिओ [9]पलाणो वेगेणं। इयरो वि धणनिमित्तमारद्धो ताडणाइपगारेण बाहिउं ति। एवंविहो दुट्ठो त्ति ॥ छ ॥

इयाणिं मूढो भन्नइ—कुणालाविसए कोसंबो नाम गामो। तहिं संखो नाम कुलपुत्तगो। दत्तो नाम से बाल-

१ परामर्षितुम् ॥ २ सम्प्रवर्त्तते ॥ ३ विवेकविकलत्वेन ॥ ४ सरूक्षचक्षुःक्षेपेण ॥ ५ लुण्टितम् ॥ ६ 'निःसृष्टं' अतिशयेन ॥ ७ कस्माद् एवम् ॥ ८ वणिग्वदनम् ॥ ९ पलायितः ॥

मित्तं पसुपमुहा उवगरणविसेसा, [1]उब्भविओ जूयत्थंभो, निवत्तिओ जागमंडवो, पारंभिओ महया पबंधेण पसुमेहो। तं च भीमं जीवघायं दट्ठूण नारायणो सुहुममइवियारियकिच्चा-ऽकिच्चो पियरं भणइ—ताय! तुब्भे जन्नकज्जे पसुविणासणं कुणह, अथ च "आत्मवत् सर्वभूतानि, यः पश्यति स पश्यति।" इति वदत, किमत्र तात्पर्यम् ?। पुरोहिएण भणियं—वच्छ! "उक्तानि प्रतिषिद्धानि, पुनः सम्भावितानि च।" इत्यनेकधा वेदवाक्यानि, को बोद्धुमीशस्तात्पर्यम् ?। नारायणेण भणियं—ताय! जइ एवं ता [2]अबुज्झंता तप्परमत्थं कहं कुणह एयं ? जोइसं चिकिच्छियं पायच्छित्तं धम्मकिच्चं च अवियाणियं कीरंतं विवज्जासफलमेव। पुरोहिएण भणियं—वच्छ! पुरिसपरंपरागयजन्नाइविहाणपमाणीकरणेण पवित्ती अविसेसेण जाया, सा य न अन्नहा काउं तीरइ। नारायणेण भणियं—ताय! अणुभवेण ताव जीवघायणं अच्चंतं पलोइज्जंतमवि [3]लोमुद्धोसकरं, एवं पि जइ तं सग्गाइकारणं ता 'तालउडभक्खणं पि जीवियहेउं' ति [4]किं न भन्नइ ?। पुरोहिएण भणियं—वच्छ! अम्ह गुरू नरसिंहो नाम अज्झावगो [5]वेयंतरहस्सवेदी इहेव चिट्ठइ, ता [6]एहिं, तं गंतूण दुवे मिलिय च्चिय एयमत्थं पुच्छामो त्ति। पडिवन्नं नारायणेण। गया दो वि नरसिंहअज्झावगसमीवं। कयसायरपायवडणा य लद्धासीसा सीसजणोचिए निविट्ठा भूमिवट्ठे। तक्खणं च [7]वेयरहस्सवक्खाणपयविप्पडिवन्ना बहुविहहेउ-दिट्ठंत-जुत्तिकहणे वि कज्जमज्झमबुज्झमाणा सिस्सा भणिया अज्झावगेण—

१ ऊर्ध्वीकृतः यूपस्तम्भः, निर्वर्तितो यागमण्डपः ॥ २ अब्भुज्झंता खं० ॥ ३ रोमोद्धर्षकरम् ॥ ४ किन्न प्र० ॥ ५ वेदान्तरहस्यवेदी ॥ ६ एहि प्र० ॥ ७ वेदरहस्यव्याख्यानपदविप्रतिपन्नौ ॥

तलवरेहिं, नोवलद्धा कत्थ वि सुद्धी । आउलीहूओ संखो कह कह वि रुयंतो निसिद्धो सयणेहिं । दिन्नं च तेणोवजाइयं गामदेवयाए—जइ भयवइ ! दत्तो एही ता तुज्झ जागरं दाहामि त्ति । अत्थगंठिं संठविऊण अवरवासरे आगओ दत्तो । तुट्ठो संखो, कयं वद्धावणयं, पारद्धो जागरूसवो गामदेवयाए । सन्निहियपाडिहेरत्तणेण एगाए जुवईए आगयं पंत्तं[1], तेण भणियं—संख ! तुह कुमित्तदुच्चेट्ठियमेयं अत्थहरणं, ता अमुगट्ठाणे तं खित्तं तुमं गंतुं गिण्हसु त्ति । तं सोच्चा रुट्ठो संखो—आ पावे ! कुग्गामवासिणि ! कडपूयणि ! असच्चसंभावणादूसियं कुणसि मह मित्तं ?—ति आहयं पत्तं तेण करचवेडाए। कयरंगभंगो य कन्ने पच्छाइऊण गओ सगिहं ।

एवंवि[2]हो हि मूढो कज्जा-ऽकज्जं कहिज्जमाणं पि । अच्छउ दूरे सेसं सोउं पि हु नेव पारियइ ॥ १ ॥ ॥ छ ॥

इय रत्त-दुट्ठ-मूढाण संतिए संसिऊण दिट्ठंते । अज्झावगो महप्पा पुणरवि सिस्से इमं भणइ ॥ १ ॥

पु[3]व्वुत्तदोसवज्जण-सुगुणज्जणजणियपक्खवाएहिं । पुव्वावरअविरुद्धत्थपेहणुप्पेहडमईहिं ॥ २ ॥

इह-परलोयविरुद्धत्थकारिपरिहारठवियचित्तेहिं । निच्चं अलुद्ध-सुविसुद्धबुद्धिजणसेवणपरेहिं ॥ ३ ॥

[4]परमपयपउणपयवीअणुगुणकिरियाकलावकुसलेहिं । नियनियविसयविसंठुलकरणरणा[5]वलिसुगुत्तेहिं (?) ॥ ४ ॥

पुरिसेहिं परं परमं समयरहस्सं हि तीरए नाउं । संसारपारवारस्स पारमवि पाविउं नियमा ॥ ५ ॥

---

१ 'पात्रं' रूपम् ॥ २ °हो उ मू° प्र० ॥ ३ पूर्वोक्तदोषवर्जनसुगुणार्जनजनितपक्षपातैः । पूर्वापराविरुद्धार्थप्रेक्षणोद्भटमतिभिः ॥ ४ इयं गाथा प्र० नास्ति । परमपदप्रगुणपदव्यनुगुणक्रियाकलापकुशलैः । निजनिजविषयविसंस्थुलकरणरणावलिसुगुप्तैः ॥ ५ °वणिसु° प्रतौ ॥

इय ग[1]रुयभावगब्भं सिक्खविउं जा न विरमए एसो । ता गरुयसूलवियणाए झत्ति पंच[2]त्तमणुपत्तो ॥ ६ ॥

पायडियासेसपयत्थं च सुरगुरुं व अत्थमियं तमवलोइऊण 'हा ! किमेयं ?' ति भणंता धाविया सीसा । उक्खित्तो सो महियलाओ । दिट्ठो य विप्फारियाणिमेसनयणो ईसिवियासियवयणो निप्फंदसरीरो । ततो कया से सिसिरोवयारा, संवाहियमंगं, वाहरिया जाणगा, सिट्ठो वुत्तंतो, पलोइऊण 'गयजीओ' त्ति परिचत्तो तेहिं । जाओ य अच्चंतसोगभरनिब्भरो अक्कंदियरवो, कयं पारलोइयकिच्चं । अणुवलद्धजागविसयसंसयपरिच्छेया 'सव्वहा अकल्लाणभाइणो वयं' ति जंपंता ग[3]रुयसोगभरुब्भवंतबाहप्पवाहाउललोयणा पुरोहिय-नारायणा गया सगिहं ।

अन्नसमए य नारायणेण भणिओ पुरोहिओ—ताय ! परमत्थओ उवइट्ठं चेव महाणुभावेण अज्झावगेण सव्वं सामन्नेण कज्जतत्तं, केवलं तं चिय [4]सुनिरुत्तं जाणियव्वं, तं च महप्पभावपुरिसविसेसविरहेण न संभवइ, अओ जइ तुममणुजाणसि ता अहं कइवयदिणाइं [5]तदन्नेसणं काऊण आगच्छामि, न जुत्तमालस्सोवहएहिं एवं चिय ट्ठाउं, जओ तडितरलमाउयं, समीववत्ती स[6]मवत्ती, अच्चंतदुन्निवारातो आवयाउ त्ति । पुरोहिएण भणियं—वच्छ ! एवं कुणसु त्ति ।

तओ सोहणतिहि-मुहुत्त-जोगे किं पि संबलमादाय निग्गतो नारायणो । पवड्ढंतसउणचित्तुच्छाहो य सुनिउणं पुरिसविसेसं निरूविंतो गओ एगं गिरिनिगुंजं । दिट्ठो य तहिं अणेगकट्ठकप्पणाहिं अप्पाणं तुलंतो अट्ठमपारणगे चि[7]रविणिवाइय-

---

१ गुरुकभावगर्भं शिक्षयित्वा ॥ २ 'पञ्चत्वं' मरणम् ॥ ३ गुरुकशोकभरोद्भवद्बाष्पप्रवाहाकुललोचना ॥ ४ विशेषेणेत्यर्थः ॥ ५ तदन्वेषणम् ॥ ६ 'समवर्त्ती' यमराजः ॥ ७ चिरविनिपातितवनवारणपिशितकल्पितप्राणवृत्तिः । विनिपातितः—मारितः ॥

वणवारणपिसियकप्पियपाणवित्ती एगो हत्थितावसो। तं च तहाविहधम्मपरं पेहिऊण नारायणो कयनमोकारो भणिउं पवत्तो—भयवं ! को एस धम्मपरमत्थो जं हत्थिपिसिएण भिल्लजणजोग्गेण पारणयं कीरइ ?, किल—

"अवधूतां च पूतां च प्रशस्तामृषिसेविताम् । चरेन्माधुकरीं वृत्तिमपि म्लेच्छकुलादपि ॥ १ ॥"

इत्यविगानेन मुनिजनक्षुंण्णः[1] पन्था इति । तावसेण भणियं—भद्द ! अम्ह धम्मे जीवदया सारो, सा पुण पइघरभिक्खाभमणाणेगजीवसंघायणेण न संभवइ, पइकणमेक्केक्कजीवसंभवाओ तब्बहुमीलणेणाऽऽहारपागे वि बहुजीवघाओ, अओ अणेगसत्तसंताणरक्खणत्थं एगमहासत्तवावायणमणुमयं पाणवित्तिहेउं ति । नारायणेण भणियं—भयवं ! संदिद्धचेयणालक्खणजीवगुणं कणनियरं रक्खंताण परिफुंडजीवणं[2] पि वणकरिणं घायंताण का जीवदया ? कहं वा न तज्जाइयजीवुप्पत्ती तप्पिसियपेसीसु विस्सभावोवगयासु[3] संभवइ ? रक्खसभक्खं च इमं, तथा—

"स्वमांसं परमांसेन यो वर्द्धयितुमिच्छति । उद्विग्नं लभते वासं यत्र यत्रोपजायते ॥ १ ॥
मां स भक्षयिताऽमुत्र यस्य मांसमिहाद्मयहम् । एतन्मांसस्य मांसत्वं प्रवदन्ति मनीषिणः ॥ २ ॥"

इत्यादिवाक्यैः स्मृत्यादावपि निषिद्धमेतत् । तावसेण भणियं—भद्द ! अलं अलं विसंवादेण, एस ताव अम्हं धम्ममग्गो न वियारगोयरसहो त्ति । नीहरिओ नारायणो, पट्ठिओ देसंतरं ।

दिट्ठो य एगत्थ सन्निवेसे मुद्धजणसेविज्जमाणो एगो भागवयमुणी तिकालसिणाणेण वट्टंतो त्ति । गओ य तस्स-

१ °क्षुन्नः खं० प्र० ॥ २ °फुट्टजी° खं० ॥ ३ विस्रभावोपगतासु । विस्रं–दुर्गन्धि ॥

मित्तो अच्चंतं वल्लहो सव्वकज्जेसु आपुच्छणिज्जो [य], परं मायावी । इयरो उज्जुपयई । दोण्ह वि तहासरूवेण जंति दिणाइं । अज्जिओ य केणइ सुकयवसेण संखेण केत्तिओ वि अत्थसारो । पुच्छिओ अणेण दत्तो—कहमेसो अत्थसारो रक्खियव्वो ? पच्चवायबहुलो गामो त्ति । दत्तेण भणियं—वरमित्त ! एवमेयं[1] पगुणीकरेहि दव्वसंचयं, जेण गंतूण अडवीए जक्खाययणे भूमिनिहित्तं करेमो । पडिवन्नं संखेण । दुट्ठाभिसंधिणा य दत्तेण किं पि दाऊण संकेइया अद्धपहे दुवे पुरिसा—एवमेवं अम्हे पहे इंता तुब्भेहिं भेसियव्व त्ति । अह जाए मज्झरत्ते कोडंड[2]-कंडवावडकरेण दत्तेण वाहरिओ संखो—एहि, समीहियकज्जकरणाय वच्चामो त्ति । ततो पच्छयणहत्थो[3] अत्थसारगंठिं घेत्तूण केणइ अमुणिज्जंतो दत्तेण समं पट्ठिओ एसो । गामबाहिणीह[4]-रिओ य भणिओ दत्तेण—दुल्लक्खो देव्वपरिणामो, अविभावणिज्जागमाओ आवईओ, अतो तुममिमं अत्थगंठिं मेमं[5] समप्पेसु, पच्छयणं च सयं गिण्हाहि, कह वि तक्कराइभयं उवट्ठाइ ता मा काहिसि दव्वपडिबंधं, लहुं एगदिसं अंगीकाऊण पलाएज्जासि, भुज्जो जीविए विज्जंते न दुल्लहा वित्तसंपत्ती । उज्जुपयइत्तणेण 'तह' त्ति पडिवन्नं संखेण । तुरियंतुरियं[6] पयट्टा गंतुं । अद्धपहमेत्तं च जाव पत्ता ताव पुव्वदिन्नसंगारा आयड्ढियनिसियासिणो[7] 'हण हण' त्ति वाहरंता उट्ठिया दुवे पुरिसा । तिमिरनियराऊरियत्तणेण रयणीए खाणुं पि 'तक्करं' ति मन्नंतो पलाणो संखो गामहुत्तं[8] । दत्तो वि दिसंतरमादाय गंठिहत्थो नट्ठो वेगेण । संखेण वि उज्जुसीलयाए गंतूण साहियं तलवरस्स—अत्थो तुज्झ, मित्तं मज्झ अक्खयसरीरमुवणेहि त्ति । पेहिउमारद्धो

१ एवमेवम् ॥ २ कोदंड° प्र० ॥ ३ पथ्यदनं–शम्बलम् ॥ ४ °हिनीह° प्र० ॥ ५ मज्झ स° प्र० ॥ ६ °रियं तु° खं० ॥ ७ आकृष्टनिशितासी ॥ ८ ग्रामाभिमुखम् ॥

मङ्गुमाइणो हि चउरो अणेगतवन्न-गंध-रसजीवा । पच्चक्खभूरिजीवाइं जाण पंचुंबरिफलाइं ॥ ३ ॥
एकस्स तुच्छनियजीवियस्स कज्जेण णेगजीवाणं । कह कीरउ विणिवाओ मुणिउं सव्वन्नुवयणं पि ? ॥ ४ ॥
नारायणेण भणियं गज्जरमाईसु णंतजीवत्तं । कह[1] तीरइ विन्नाउं [2]सक्खा अद्दिस्समाणत्ता ? ॥ ५ ॥
जिणदत्तेणं भणियं जिणवयणपमाणओ हि विन्नेयं । न हु नाण-दाण[3]-तवसंभवं पि दीसइ फलं सक्खा ॥ ६ ॥
रागाईणमभावा वयणं तेसिं न संभवइ मिच्छा । न य [4]समइकप्पणाए अइंदियत्थाण संसिद्धी ॥ ७ ॥

'अहो ! गिहत्थो वि सुहुमपयत्थवियारकुसलो एस, एयगुरुणो पुण सुट्ठु विसिट्ठतमा होहिंति' [त्ति] विभा[5]वितेण भणियं नारायणेण—भद्द ! कस्स समीवाओ तुज्झ एवंविहविवेयसारो धम्मवावारो ? त्ति । जिणदत्तेण भणियं—संति एत्थेव पएसे भयवंतो सुगहियनामधेया भव[6]कूवनिवडंतजंतुदिन्नहत्थावलंबा करुणामयमयरहरा हर व निद्दड्ढमणोभवा भवंतकारिणो जयसिंहसूरिणो ।

जेसिं [7]खमाए न खमा वि भायणं तुंगिमाए नहु सेलो । गंभीरिमाए पडिहाइ गोपयं पिव[8] समुद्दो वि ॥ १ ॥
सूरो वि दिवसपरिणइपरिमियतेयत्तणेण [9]तणुसोहो । [10]सज्झो खज्जोयज्जुइं धरइ व अइगुरुपयावस्स ॥ २ ॥

१ °ह कीर° खं० प्र० । कथं शक्यते विज्ञातुं साक्षाद् अदृश्यमानत्वात् ? ॥ २ संखा अ° खं० ॥ ३ °णसंतसंभ° खं० ॥ ४ स्वमतिकल्पनया अतीन्द्रियार्थानाम् संसिद्धिः ॥ ५ °भावंते° प्र० । 'विभावयता' विचारयता ॥ ६ भवकूपनिपतज्जन्तुदत्तहस्तावलम्बाः करुणामृतमकरगृहाः । मकरगृहः—समुद्रः ॥ ७ 'क्षमायाः' क्षान्त्याः 'क्षमा' पृथ्वी ॥ ८ पिय खं० ॥ ९ 'तनुशोभः' अल्पशोभावान् ॥ १० सद्यः खद्योतद्युतिम् ॥

॥१५५॥

चंदो वि सोमयाए ता गिज्जइं[1] दिज्जइं य उवमाणं । हरिणारी वि हु सोडीरिमाए ता मा इमो हियए ॥ ३ ॥
जावऽज्ज वि सुज्जं[2]वियबारसंगसुयमुणियतिजयवावारा । ते[3] सुकयपावणिज्जा[4] ने चक्खुपहं पवज्जंति ॥ ४ ॥
तेहिंतो बहुनय-भंग-हेउगंभीरसमयसिंधुभवो । अइथोयसुकयकम्मत्तणेण पत्तो विवेयलवो ॥ ५ ॥

इमं सोच्चा तुट्ठो नारायणो भणिउं पवत्तो—न रोहणाओ अन्नत्थ निरुवमरयणसंभवो, न वा [5]अणेरिसगुरूहिंतो एवंविहसुहुमधम्मपरिन्नाणं, ता भो जिणदत्त ! सव्वहा कयं तए सव्वमम्ह कायव्वं, दंसेहि ताण नियगुरूण चरणंबुरुहं, जइ पुण [6]कहं पि तहिं मम मणमहुयरोऽभिरइं पावइ त्ति । जिणदत्तेण भणियं—एवं करेमि त्ति ।

ततो पंचजोयणंतरिए सेयपुरे नयरे दो वि गया । दिट्ठा सूरिणो तक्कालागयनरवइपमुहपहाणजणकीरमाणपूयामहिमा धम्मकहं कहिंति-त्ति । ततो [7]समुट्ठिंतरोमंचसूइज्जंतबहुमाणा जिणदत्त-नारायणा निवडिया गुरुणो चलणेसु । चक्खुक्खेवपुरस्सरं च दिन्नासीसा सीसारोवियकरकमला निलीणा समुचियधरामंडले । एत्थंतरे गुणावज्जियहियएण राइणा [8]कूडीकयाओ पंच सुवण्णकोडीओ चीणंसुयपमुहवत्थरासीओ य गुरुपुरओ, भणियं च—भयवं ! अणुग्गहं काऊण गिण्हसु इमं ति । सूरिणा भणियं—महाराय !

१ °इ गिज्ज° प्र० ॥ २ सुजपितद्वादशाङ्गश्रुतज्ञातत्रिजगद्व्यापाराः ॥ ३ तो सु° खं० प्र० । ते सुकृतप्रापणीयाः ॥ ४ °ज्जा, नो च° खं० प्र० । 'ने' अस्माकम् ॥ ५ अनीदृशगुरोः ॥ ६ कहिं पि खं० प्र० ॥ ७ समुत्तिष्ठद्रोमाञ्चसूच्यमानबहुमानौ ॥ ८ 'कूटीकृताः' राशीकृताः ॥

माध्यस्थ-गुणे नारा-यणकथान-कम् २०।

अत्थो अणत्थहेऊ अत्थो संसारकारणं गरुयं । अत्थो संजमवणसंडचंडगुरुदाव[1]हव्ववहो ॥ १ ॥
अत्थो उम्मायकरो सयंवरो दुम्मईमहिलियाए । तेणेस वज्जिओ मुणिवरेहिं दूराउ दूरेण ॥ २ ॥
जं पुण [2]अमहद्धणसेयवत्थ-कंबलपमोक्खमुवगरणं । संजमहेउं तं किं पि किं पि गिण्हंति परिसुद्धं ॥ ३ ॥
ता संपइ पज्जत्तं सव्वेणं भूमिनाह ! एएणं । पत्तं चिय दाणफलं तुमए इय कयपयत्तेण ॥ ४ ॥
इच्छेज्ज न इच्छेज्ज व तह वि हु पयओ निमंतए साहू । परिणामविसुद्धीए य निज्जरा हो[3]अगहिए वि ॥ ५ ॥
इय पन्नविओ वि निवो अणणुग्गहिओ गुरूहिं अप्पाणं । निप्पुन्नं मन्नंतो जहागयं पडिगओ नमिउं ॥ ६ ॥
नारायणो य चिंतइ अहो ! महप्पा दढं विजियलोहो । एत्तियमेत्तं पि धणं तणं व जो चयइ दिज्जंतं ॥ ७ ॥

जायं विजणं । तओ जिणदत्तेण दंसिओ परमपरितोसोवगतो नारायणो, गुरूण सिट्ठो य, जहा—एस महप्पा तुम्हपायपउमाणुरागेण एत्तियभुवमागओ, ता नियसेवाणुरूवफलभायणं कुणह एयं ति । ततो गुरुणा उवइट्ठो साहुधम्मो गिहिधम्मो य सवित्थरो एयस्स । तं च सोच्चा लहुकम्मयाए अच्चंतमज्झत्थयाए य सुहुममइविभावियभावत्थो पडिबुद्धो एसो, चिरकालं पज्जुवासिऊण समुवलद्धसद्धम्मसारो कयगुरुखामणो गओ नियनयरं ।

दिट्ठो पिया । कहिओ धम्मसारोवलंभवुत्तंतो । पसंसिओ पिउणा । परिचत्तो य जन्नकज्जाइसावज्जवावारो । एवं च ते दोन्नि वि सम्ममणुव्वय-गुणव्वय-सिक्खावयपरिवालणेण सुमुणिपज्जुवासणेण सिद्धंतरहस्ससवणेण य पइदिणं सविसेसधम्मु-

१ हव्यवाहः—अग्निः ॥ २ अमहाधनश्वेतवस्त्रकम्बलप्रमुखमुपकरणम् ॥ ३ भवत्यगृहीतेऽपि ॥

॥१५६॥

शौचवाद-प्रतिक्षेपः

मीवं । कयपायवडणो उवविट्ठओ समीवे, पत्थावे भणिउं पवत्तो य—भयवं ! [1]सव्वगयत्तेण विण्हुणो तदहिट्ठियजलपूरेण ण्हाणं, एवं कुणंताणं कहं न हरिणो विराहणा हवइ ? अप्पहाणं च इमं सामन्नजणेण वि सेवणाओ, परमत्थियं तु एयं गिज्जइ—

आत्मा नदी संयमतोयपूर्णा, सत्याम्बुजा शील-दयातटोर्मिः ।
तत्राभिषेकं कुरु पाण्डुपुत्र !, न वारिणा शुद्धयति चान्तरात्मा ॥ १ ॥

काविलेण भणियं—झाणहुयासणेण [2]तदुक्कयकयवरनिद्दहणाओ नत्थि एत्थ दोसो । नारायणेण जंपियं—झाणेण पावपंकस्स सुद्धी, [3]पउरपयपूरसरीरपक्खालणेण पुणरवि तस्संभवो त्ति एयं तं गयवरण्हाणं ति । काविलेण भणियं—होउ किं किं पि । 'एसो वि [4]पढमेल्लुयतुल्लो' त्ति पुरओ पयट्टो नारायणो ।

मिलिओ मग्गे वच्चमाणस्स जिणदत्तो नाम सावगो । 'सत्थिओ' त्ति जाया अणेण समं गोट्ठी । 'वियड्ढो' त्ति समु-प्पन्नो तं पइ पक्खवाओ । लद्धा य कत्तो वि गज्जराइणो कंदविसेसा नारायणेण । 'सत्थिउ' त्ति दिन्ना कइवय वि जिणदत्तस्स । न गहिया जिणदत्तेणं । 'कीस न गिण्हह ?' त्ति [पुच्छिएण] जिणदत्तेण भणियं—

[5]पडिपुन्नकेवलालोयकलियतइलोक्कगयपयत्थेहिं । पडिसिद्धो भोगो गज्जराइकंदाण नाणीहिं ॥ १ ॥
[6]एएँ हि णंतजीवंगवग्गनिव्वत्तिय त्ति नो भुज्जा । महु-मज्ज-मंस-मक्खण-पचुंबरिफलविसेसा वि ॥ २ ॥

अनन्त-कायादीनां सदोषत्वम्

१ सर्वगतत्वेन विष्णोः ॥ २ तद्दुष्कृतकचवरनिर्दहनात् ॥ ३ प्रचुरपयःपुरशरीरप्रक्षालनेन ॥ ४ प्राथमिकतुल्यः ॥ ५ प्रतिपूर्णकेवलज्ञानालोककलितत्रैलोक्य-गतपदार्थैः ॥ ६ °एहिं तन्न जी° खं० । एते हि अनन्तजीवाङ्गवर्गनिर्वर्तिता इति नो भोज्याः ॥

सामर्थ्यस्य स्वरूपम्

मज्झत्थबुद्धिजुत्तो वि जं विणाऽणुट्ठिउं न धम्ममलं । किं पि समत्थसरूवं तमहं संपइ पवक्खामि ॥ १ ॥
भन्नइ इह स समत्थो धम्मं [1]बीहेइ न कुणमाणो जो । माइ-पिइ-भाइ-सयणाइयाण धम्माण[2]भिन्नाण ॥ २ ॥
अहवा [3]पुव्वच्चियदेवयाण तक्कालपूयणाविरहे । पडिकूलकम्मकारीण जो न [4]बीहेइ समत्थो सो ॥ ३ ॥
संभवइ य उभयं पि हु विग्घकरं धम्ममारभंतस्स । न य लब्भइ रयणनिही घेत्तुं पच्चूहविरहेण ॥ ४ ॥
हुंतीह केइ पुरिसा सरभसमु[5]क्खिविय गरुयधम्मभरं । पच्छा विग्घोवहया [6]हय व्व उज्झंति दुद्दंता ॥ ५ ॥
ता दव्व-भावसामत्थसंजुया जिणवरिंदधम्मविहिं । काउं तरंति विचलंति नेव [7]विग्घोहविहया वि ॥ ६ ॥
सो धम्मे पडिबद्धो विग्घोवहओ वि जो समुज्जमइ । तयभावे सव्वो वि हु धम्महिगारी भवे इहरा ॥ ७ ॥
धम्मत्थ[8]निहियचित्तो सामत्थं मुयइ जो न विग्घे वि । सो होइ भूरिसुभनिवहभायणं अमरदत्तो व्व ॥ ८ ॥

तथाहि—अत्थि [9]वित्थिन्नसालवलयतुंगकविसीसयसमारोवियविजयद्धयपहसियसेसपुरसिंगारं गारवगुणग्घवियपवरपुरिससमूहसंकुलं कुलहरं व्व परमब्भुदयदइयाए रयण[10]पुरं नयरं । तं च नियपुन्नपयावपडिहयपडिवक्खो सव्वसत्थपरमत्थवियारदक्खो रक्खेइ विजयधम्मो नाम नराहिवो ।

१ बिभेति ॥ २ धर्मानभिज्ञेभ्यः ॥ ३ पूर्वार्चितदैवतेभ्यः ॥ ४ **बीहेइ** खं० प्र० ॥ ५ उत्क्षिप्य ॥ ६ अश्वा इवेत्यर्थः ॥ ७ विघ्नौघविहताः ॥ ८ °**निहय**° खं० प्र० ॥ ९ विस्तीर्णशालवलयतुङ्गकपिशीर्षकसमारोपितविजयध्वजप्रहसितशेषपुरशृङ्गारं गौरवगुणार्घितप्रवरपुरुषसमूहसङ्कुलम् ॥ १० °**पुरन्नय**° खं० प्र० ॥

एका वि [1]खग्गलेहा समरहरे धरइ जस्स दो रूवे । सुहडाण [2]कुट्टणी [3]दारिया य वइरीभकुंभाण ॥ १ ॥

तस्स रन्नो परमपसायट्ठाणं समकालसकलकलागहणसविसेससमुप्पन्नविस्सासो जयघोसो नाम सेट्ठी, सुजसाभिहाणा य से भारिया । सुगयपायपूयणपरो य सेट्ठी दिवसे गमेइ । सा य तब्भज्जा 'वंज्झ' त्ति अणवरयं अमराभिहाणाए कुलदेवयाए पूयापडिवत्तिपरा वट्टइ । कालक्कमेण य तदणुभावेण पाउब्भूओ गब्भो । पडिपुन्नसमए य पसूया एसा, जाओ य दारगो, कयं वद्धावणयं । वाहराविओ संवच्छरिओ, कया से पूया-पडिवत्ती । पुच्छिओ सायरं सेट्ठिणा—भो नेमित्तिग ! एवंविहसुमुहुत्तसंपत्तजम्मणो केरिसगुणो एस सुओ होहि ? त्ति । संवच्छरिएण वि नियसत्थाभिप्पाएण निच्छिऊण भणियं—एसो हि तुज्झ पुत्तो सव्वगुणसंपुन्नो होही, केवलं पुव्वपुरिसपरंपरागयधम्ममुज्झिहि त्ति । इमं सोच्चा झमकिओ ज्झड त्ति सेट्ठी चिंतिउं पवत्तो—

[4]पुत्तुप्पत्ती जणयइ पीइं पिउणो हि एत्तिएणेव्व । जं पुव्वपुरिसकमपत्तधम्मकम्माइं [5]वड्ढेइ सो ॥ १ ॥
अह तं पि निययदुस्सीलयाए [6]सिढिलेइ कलुसपरिणामो । ता किं व तेण जाएण ? सायरं वड्ढिएणं वा ? ॥ २ ॥

इमं च निज्झायंतं [7]विच्छायमुहं पेच्छिऊण सेट्ठिं संवच्छरिएण भणियं—भो महाभाग ! कीस एत्तिएण संतप्पसि ? जं वा तं वा गुणविसेसं पवन्नो पुत्तो पिउणो कित्तिकारणं चेव । 'एवं होउ' त्ति तुट्ठो सेट्ठी । पइट्ठियं सुमुहुत्ते 'अम-

१ खड्गलेखा समरगृहे ॥ २ 'कुट्टनी' पुंश्चली विनाशिनी च । ३ 'दारिका' विदारणी पुत्री च ॥ ४ **पुत्तुप्प**° खं० प्र० ॥ ५ **वट्टइ** खं० प्र० ॥ ६ शिथिलयति ॥ ७ **विज्झाय**° प्र० ॥

सामर्थ्य-गुणे अमर-दत्तकथा-नकम् २१।

रदेवयाविइन्नो' त्ति 'अमरदत्तो' त्ति पुत्तस्स नामं । पंचधावीपरिग्गहिओ य समइक्कंतो बालभावं, पाढिओ सयलकला-कलावं, जोव्वणमणुपत्तो य परिणाविओ इब्भकन्नयं । धम्मंतरपरिहारनिमित्तं च पिउणा सविसेसं पइदिणं निज्जइ सो सुगय-पायपूयणत्थं, पाडिज्जइ य भिक्खूण पाएसु, सुणाविज्जइ य सुगयसत्थाइं, उज्झाविज्जइ सेसलिंगिजणेण सह संगं ति । एवं वच्चंति वासरा । 'बुद्धधम्मपरमत्थवियक्खणो सुपडिलग्गो य एसो' त्ति बाढं रंजिओ य सेट्ठी । ठविओ य सव्वेसु अब्भंतरिय-नियकिच्चेसु अमरदत्तो । एवं च से तिवग्गसंपाडणपरस्स आगओ वसंतसमओ । सम्मओ जो पक्खीण वि, दंसियवियारो तरुवराणं पि, उक्कंपियपियविउत्तकामिणीजणो, जणियपुहइपमो[ओ] य । अवि य—

वसन्त-वर्णनम्

विसंतकुमुयनयणेहिं कमलवयणेहिं वड्ढिउक्करिसा । वणलच्छीओ सोरब्भनिब्भरं जं[2] नियंति[1] व ॥ १ ॥

जम्मि य पहिया सहयारमंजरीरेणुपुंजपिंजरिया । अंतो[3] नियंतदइयाणुरायरत्त व्व रेहंति ॥ २ ॥

गाढुक्कंठाकंठग्गलग्गजीया[4] वि जावयंति जहिं । कंकेल्लिपल्लवोत्थयहियया ओ पउत्थवइयाओ ॥ ३ ॥

जयडिंडिमो व्व पडिहाइ मणहरो परहुयारवो[5] जत्थ । सो महुसमओ भण कस्स सम्मओ होज्ज न जियस्स ? ॥ ४ ॥

एवंविहगुणाभिरामे य तम्मि अमरदत्तो भणिओ य वयस्सेहिं—भो पियमित्त ! दट्ठव्वदंसणफलाणि भण्णंति लोयणाणि,

१ नीयते ॥ २ 'यं' वसन्तं पश्यन्तीव ॥ ३ अन्तः नितान्तदयितानुरागरक्ता इव राजन्ते ॥ ४ गाढोत्कण्ठाकण्ठाग्रलग्नजीविता अपि यापयन्ति यत्र । कङ्केल्लिपल्लवावस्तृतहृदयाः प्रोषितपतिकाः ॥ ५ 'परभृतारवः' कोकिलाशब्दः ॥

॥१५८॥

ज्झया जाया । कमेण य फासियदेसविरइणो सव्वविरइजोग्गयमुवगम्म सम्ममाराहियसंजमा निव्वाणमुवगय त्ति । एवंविह-कल्लाणावलीकारणं मज्झत्थं ति । किंच—

माध्यस्थस्य माहात्म्यम्

विमलम्मि दप्पणे जह पडिबिंबइ पासवत्तिवत्थुगणो । मज्झत्थे तह मणुए संकमइ[1] समग्गधम्मगुणो ॥ १ ॥

मज्झत्था दोसं उज्झिऊण गिण्हंति वत्थु घेत्तव्वं । नियनिउणयाए हंस व्व नीरचागेण खीरलवं[2] ॥ २ ॥

अपि च—अशास्त्रजं संस्करणं हि बुद्धेरलोचनं वस्तुविलोकनं च ।

आचार्यशिक्षाव्यतिरिक्तमेव, माध्यस्थमाहुः परमं पटुत्वम् ॥ १ ॥

माध्यस्थ्यतः स्यादगुणोऽपि पुंसामाराध्यपादः सुहृदांवरश्च ।

माध्यस्थमेकं प्रतिपद्य जीवाः, प्राप्ता जवात् संसृतिसिन्धुपारम् ॥ २ ॥

उदीर्णदुष्कर्मसमूहयोगे, माध्यस्थमासादयते न जीवः ।

न सन्निपातोपहतः कदाचिच्छुभा-ऽशुभं वस्तु विवेक्तुमीशः ॥ ३ ॥

इति सर्वाग्रहत्यागाद् माध्यस्थशरणः[3] सुधीः । क्षीराब्धिरिव सिन्धूनां सम्पत्तीनां[4] पदं भवेत् ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे माध्यस्थगुणचिन्तायां[5] पुरोहितसुतनारायणकथानकं समाप्तम् ॥ २० ॥

१ सक्कम° खं० प्र० ॥ २ °रवलं खं० प्र० ॥ ३ °ध्यस्थे श° प्र० ॥ ४ सपत्नीनां प्र० ॥ ५ °न्ताया उ पु° खं० प्र० ॥

कुणइ कुसुमुच्चयं [1]सरइ सरसीतडं, विसइ सलिलम्मि [2]तडदिन्नझंपुब्भडं ।
दोलकीलाए वट्टइ खणं रंजिओ, रमइ अक्खेहिं जोगि व अविग्गंजिओ ॥ ४ ॥

इय एवंविहबहुविहविलासलीलाहिं वणनिगुंजेसु । वणवारणो व सो भमइ निब्भरं मित्तवग्गजुओ ॥ ५ ॥

एवं च भमंतो स महप्पा असोगतरुपट्टए निसन्नं समणं एक्कं अच्चंतकरुणपलावस्स एगस्स वइदेसियनरस्स भूरिमंडल-[मज्झ]गयस्स वाहिवेयणाविहुरस्स किं पि उवइसंतं पेच्छइ । ततो भणिया अणेण नियवयस्सा—अरे ! आगच्छह, एस साहू आइक्खइ किं पि तं निसामेमो त्ति । वयस्सेहिं जंपियं—पियमित्त ! तुमं पिउणा सुचिरं वारिओ, जहा—विधम्माणो मिलंति तथा तस्संगमो य धम्मविणासगो त्ति सो मोत्तव्वो, ता न जुत्तमेत्थावत्थाणं । अमरदत्तेण भणियं—[3]ऍतेण वि को दोसो ? न हि जलण-तालउड-खग्गाईणं दंसणं सवणं वा अणिट्ठं [4]जणिउमलं, ता अलं संभमेण, एह खणमेत्तं निसामेह—किमेस वइ-देसिओ जंपइ ? किं वा एस मुणी समुल्लवइ ? । तुण्हिक्का ठिया वयस्सा । गओ अमरदत्तो मुणिणो समीवं । एत्थंतरे रुयंतो सो वइदेसिओ पुच्छिओ जणेण—भद्द ! किं रुयसि ? त्ति । तेण भणियं—कडुई [5]कन्नाण मे संकहा तहा वि निसामेह—

अहं हि कंपिल्लपुरे संकरस्स घरवइस्स घरिणीए दुट्ठलक्खणो सुओ जम्मणदिवसे च्चिय निहणोवणीयधणो जाओ म्हि । [6]जाव य छम्मासिओ संवुत्तो ताव माया-पियरो परलोगमुवगया । तप्पभिइं पालिओ हं जेहिं सयणेहिं [7]ते वि महाणुभावा

१ सरति ॥ २ तटदत्तझम्पोद्भटं यथा स्यात् तथा ॥ ३ एत्तेण प्रतौ ॥ ४ °णिच्छं ज° प्रतौ ॥ ५ कर्णयोः ॥ ६ जाय व छ° प्रतौ ॥ ७ तेहिं म° प्रतौ ॥

[1]महदुक्कम्मजम्मोवहया दिवं गया । वरिसमेत्तो य इओ तओ [2]कट्ठकप्पणाकप्पियपाणवित्ती विसरुक्खो व [3]सैवसंतावकारी वड्ढिओ सरीरेण दुक्खेण [य] एत्तियं कालं । संपयं च गंडोवरि [4]पिडिंमुब्भेयविब्भमेण दुस्सहमहावाहिनिवहेण वेरिविसरेणेव पइक्खणुप्पाइयतिक्खतरदुक्खलक्खेण पडिवन्नो म्हि । एत्तिएण य न ट्ठियं, अंतरंतरा अदिट्ठो कोइ भूओ पिसाओ वा तं वेयणमुव[ज]णइ जा जीहासएण वि वोत्तुं न पारियइ । एवंविहमहादुहोवहओ य इण्हिं जीवियवभग्गो नग्गोहसाहाए उल्लंबि-ऊण अप्पाणं मरणट्ठमुवट्ठिओ । तत्थ वि पडिकूलदेव्वसओ असंपुन्नमणोरहो तुट्टपासो निवडिओ धरणिवट्ठे । गरुय-वेरग्गोवगओ य 'किं मए पुरा कयं ?' ति साहुमिममापुच्छिउमेत्थ आगओ म्हि ॥

ततो विम्हिओ जणो 'किं कहिस्सइ साहु ?' त्ति जाओ एगचित्तो । एत्थंतरे भणियं साहुणा–भो महाणुभाव ! निसामेहि–

तुमं हि एत्तो तइयभवे पच्चंतगामे देवलओ नाम कुलपुत्तओ अहेसि । पओयणवसेण य मेत्तसमेओ गामं वच्चंतो मिलिओ एगस्स पहियस्स । जाओ संकहावसेण तेण सह पणओ । उवलद्धो य तुमए सो पहिओ, जहा—निच्छियं धणड्ढो एसो त्ति । ततो नियमित्तेण सह मंतिऊण रयणीए निब्भरपसुत्तो सो पोत्तेण वयणं गाढं पच्छाइऊण गलदेसोमोडणेण मारिओ तुब्भेहिं, गहियं [5]तद्दव्वं । पट्ठिया दो वि । दव्वलोभेण य जाओ अवरोप्परं वहपरिणामो ।

अह भोयणस्स समए तुमए इयरस्स मारणकएण । खिविऊण महुम्मि विसं दिन्नं तेणावि तुज्झं पि ॥ १ ॥

१ महुष्कर्मजन्मोपहताः ॥ २ कष्टकल्पनाकल्पितप्राणवृत्तिः ॥ ३ सत्तसं° प्रतौ ॥ ४ पिडिमोद्भेदविभ्रमेण ॥ ५ तद्दव्वं प्रतौ ॥

[1]पुंव्वसुसंभियविसमिस्सपक्खिमंसं पणामियं तइया । दो वि विणासं पत्ता ही ही ! अत्थो महाणत्थो ॥ २ ॥

ता भो देवल ! संकिलिट्ठगरुयकम्मपब्भारनिहयसुकयकम्मो तुमं मरिऊण उववन्नो नरए । चिरकालं च [2]कलणाइक्कंतं दुक्खं सहिऊण संपयं एवंविहदुहाभागी जाओ सि । सो हि पहिओ तहा वहिओ उववन्नो भवणवासिदेवेसु, [3]सरियचिरभववइयरो य एवंविहजायणाहिं तुमं बाहइ । जो वि उल्लंबणपासो तुट्टो सो वि 'चिरकालं किलिस्सउ एसो' त्ति [4]तक्कओ चेव । ता भद्द ! एयं तुह पुव्वदुकयं ति ।

शुश्रूषाया माहात्म्यम्

अन्नाण-मोहवामोहिया मुहा [5]अज्जिऊण पावरयं । किच्चमकिच्चमनाउं अंध व पडंति भवकूवे ॥ १ ॥
इट्ठविओगा-ऽणिट्ठप्पओगसंतावतत्तसव्वंगा । चिट्ठंति चिरं च तहिं तण्हा-छुहवेयणाइहया ॥ २ ॥
[6]उम्माहिज्जंति चिरोवभोत्तसोक्खाण गुत्तिखित्त व । बहुसो वि य विलवंता लहंति थेवं पि न विमुत्तिं ॥ ३ ॥
ता भो देवाणुपिया ! पच्चक्खं पेक्खिउं दुहविवागं । नियं[7]दुकयाणमभिरमह सव्वहा कुसलकम्मेसु ॥ ४ ॥
अवि हालाहलगिलणं पि गलतले जुंजणं पि खग्गस्स । सुहसुत्तसिंहकंडूयणं पि पत्तं कह वि होज्जा ॥ ५ ॥
न उण [8]निरंकुसमयसत्तमत्तकरिदुट्ठचेट्ठियं कह वि । खेमाय होज्ज कस्स वि अवि सुरवइतुल्लसिरिणो वि ॥ ६ ॥

१ **पुव्वं सु**° प्रतौ । पूर्वसुसम्भृतविषमिश्रपक्षिमांसं अर्पितं तदा ॥ २ 'कलनातिक्रान्तं' कल्पनातिक्रान्तम् ॥ ३ स्मृतचिरभवव्यतिकरश्च एवंविधयातनाभिः ॥ ४ तत्कृतः ॥ ५ अर्जयित्वा पापरजः । कृत्यमकृत्यम् अज्ञात्वा ॥ ६ उन्माथ्यन्ते चिरोपभुक्तसुखेभ्यः ॥ ७ निजदुष्कृतानाम् ॥ ८ निरङ्कुशमदसक्तमत्तकरिदुष्टचेष्टितम् ॥

ता कुणसु सिंगारं, पिच्छसु वसंतूसवं ति । ततो जायवसंतावलोयणकोऊहलो **अमरदत्तो** पियरं विन्नविउं पवत्तो—ताय ! जइ तुब्भे आइसह ता वसंतसिरिं अदिट्ठपुव्वं अवलोएमि त्ति । सेट्ठिणा भणियं—वच्छ ! किमजुत्तं ? केवलं तव्विलोयणगयाण अणेगविभिन्नधम्माणो कुबुद्धिदायारो य संभवंति, ता जह न तेहिं तरलिज्जइ मणो [न] हवइ धम्मविणासो दक्खओ य तहा अभिरमसु, कहं तुह कीलाभिलासपडिकूलं वट्टामि ? त्ति । एवं च पिउणाऽणुन्नाओ कइवयवयस्सपरिवुडो सुंदरनेवच्छो गओ पुप्फावतंसयम्मि उज्जाणे, पविट्ठो तयब्भंतरे, जहिच्छमारद्धो य कीलिउं । कहं चिय ?—

वसन्तक्रीडा

[1]कत्थई नियइ रणझणिरमणि-कंचणं, हिट्ठवयणं पणच्चंतमबलाजणं ।
फुल्लनलिणं रणंतालिमालागणं, खरसमीराहयं नाइ नलिणीवणं ॥ १ ॥
[3]कत्थई पंचमुग्गाररवनिब्भरं, गेयमायन्नई वेणु-वीणारवं ।
पहियपमयाण कयगाढमुन्नागमं, थोभणं मंतपढणं व भूरिब्भमं ॥ २ ॥
[4]पेच्छई कहिं वि फुल्लंतवेइल्लयं, कोरइज्जंतकंकेल्लिसाहोल्लयं ।
पेहई [5]भत्तुणा चाडुसयचड्डियं, अणुणइज्जंतियं पणइणिं खंडियं ॥ ३ ॥

१ कुत्रचित् पश्यति रणझणनशीलमणिकाञ्चनं हृष्टवदनं प्रनृत्यदबलाजनम् । पुष्पितनलिनं रणदलिमालागणं खरसमीराहतमिव नलिनीवनम् ॥ २ °**यरइ रणज्झणि**° प्रतौ ॥ ३ कुत्रचित् पञ्चमोद्गाररवनिर्भरं गेयमाकर्णयति वेणुवीणारवम् । पथिकप्रमदानां कृतगाढविषादागमं स्तम्भनं मन्त्रपठनमिव भूरिभ्रमम् ॥ ४ प्रेक्षते कुत्रापि पुष्प्यद्विचकिलं कोरकत्कङ्केल्लिशाखम् । प्रेक्षते भर्त्रा चाटुशतमृदितां अनुनीयमानां प्रणयिनीं खण्डिताम् ॥ ५ **भणुणा** प्रतौ ॥

विरहियस्स । तइयदिणे य वयस्समुहेण भणाविओ सेट्ठी, जहा—मुद्दारयणं अंगुलीकिसलयाओ गलियमुज्जाणदेसे, ता जइ तुब्भे अणुजाणह ता तमहं गंतूण पलोएमि त्ति । पिउणा भणियं—एवं करेहि, परं कालक्खेवं विव[1]ज्जेज्जासि । तओ गओ **अमरदत्तो** उज्जाणं, भावसारं वंदिओ साहू, आसीणो समीवे, सुओ सव्वन्नुधम्मपरमत्थो अच्चंतमभिरुइओ य । तओ सबायरं भणितो तवस्सी—भयवं ! गिहिधम्मप्पयाणेण अणुगिण्हह ममं ति । साहुणा भणियं—भो महायस !

नाउं जिणिंदधम्मं सम्मं भेय-प्पभेयओ पच्छा । वड्ढंतसुद्धभावो विहिपुव्वं तं पवज्जेज्ज ॥ १ ॥

जीवा-ऽजीवाइपयत्थगोयरं न हु अबुज्झिउं तरइ । हिंसाईण निवित्तिं काउं धम्मेक्कचित्तो वि ॥ २ ॥

न य जह तह पारद्धा विसुद्धधम्मत्थसाहणी किरिया । होउमलं ता भद्दय ! वीसत्थो सुणसु सत्थत्थं ॥ ३ ॥

अमरदत्तेण भणियं—भयवं ! एयमेवं, केवलं अम्ह पिया [2]दंसवलमग्गाणुगामी धम्मंतरं सोउं पि नेच्छइ, न य अम्हारिसं पि सुणंतमणुजाणइ, तब्भएण अहमेत्थ संखेवओ धम्मं घेत्तुमिच्छामि त्ति । मुणिणा भणियं—भद्द ! उत्तमव[3]त्थुगहणपयट्टेहिं न भाइयव्वं जणगाइ[4]ज्जणाओ, न लज्जियव्वं सामन्नलोगाओ, न खुभियव्वं पच्चूहवूहातो, अयं हि जिणधम्मो महानिहिं व गरुयपुन्नपब्भारलब्भो परमब्भुदयहेऊ य, अओ संभवइ एत्थ विग्घकारी, ता होसु एगचित्तो, चयसु पियराइपडिभयं, अणंते हि इह संसारे सरंतजंतुणो अणंता माया-पियराइणो जाया, परं न तेहिंतो थेवो वि उवलद्धो दुक्खपडियारो, न य एत्तो [5]सरियावारिपूरहीरमाणेण व तडविडविपालंबो अहवा जलहिगएण व पोओ पत्तो जिणधम्मो तुमए

१ विवर्जयिष्यसि ॥ २ बौद्धमार्गानुयायी इत्यर्थः ॥ ३ °वत्थग° प्रतौ ॥ ४ °जणओ प्रतौ ॥ ५ सरिद्वारिपूरह्रियमाणेन इव ॥

उवेहिउं जुत्तो त्ति । [1]एवमाइजुत्तिसारवयणपरंपराजियकुवियप्पो **अमरदत्तो** नीसेससंखोभवग्गमवहाय जहुत्तविहीए जिणसासणं पवन्नो, नियसामत्थाणुरूवा य पाणवहविरइपमुहा पडिग्गहिया अभिग्गहविसेसा ।

भणिओ य तओ मुणिणा देवाणुप्पिय ! पवन्नजिणधम्मो । संकाइदोसजालं एत्तो दूरं च[2]एज्जाहि ॥ १ ॥

संकाइदोसदुट्ठो लद्धं पि जिणिंदधम्ममाणिक्कं । उज्झइ ततो य दारिद्दरुंददुहभायणं होइ ॥ २ ॥

जिणधम्मसंगओ दुग्गओ वि परमत्थओ [3]महाइब्भो । एयविउत्तो पुण ईसरो त्ति दारिद्दियब्भहिओ ॥ ३ ॥

अत्थो जणणी जणगो बंधू सयणा य भिच्चसंघाओ । काउं तं न समत्था जं जिणधम्मो दढं चिन्नो ॥ ४ ॥

[4]चिरमुवइरिया वि इमे इहलोइयमेव किं पि कुव्वंति । जिणधम्मो पुण तं नत्थि जं न मणवंछियं कुणइ ॥ ५ ॥

किं बहुणा भणिएणं ? एत्तो भद्दं न अन्नमिह किं पि । ता उज्झियसव्वभओ [5]भएज्ज धम्मं इमं सम्मं ॥ ६ ॥

'एवं का[6]ह'–न्ति भालयलपरामुट्ठमुणिपायवट्ठो 'नित्थारगपारगो होज्जाहि' त्ति गुरुणा दिन्नासीसो जिणधम्मरयणं मुद्दारयणं च घेत्तूण गओ नियघरं । तिकालचेइय-साहुपूयारओ य जहापारद्धपओयणेसु वट्टिउमारद्धो । उवलद्धसव्वत[7]व्वुत्तंतो य पिया परं कोवमुव्वहंतो भणिउं पवत्तो—अरे दुट्ठसुय ! पुव्वपुरिसपरंपरागयं सुगयधम्ममुज्झिय धम्मंतरं कुणंतो दट्ठुं पि न जुज्जसि किं पुण संभासिउं ? केवलं दुपुत्तपडिबंधो एवं विडंबेइ त्ति । **अमरदत्तेण** भणियं—ताय ! कणगमिव धम्मो सुपरि-

१ एवमादियुक्तिसारवचनपरम्पराजितकुविकल्पः अमरदत्तः निश्शेषसंक्षोभवर्गम् अपहाय ॥ २ त्यक्ष्यसि ॥ ३ 'महेभ्यः' महर्द्धिकः ॥ ४ चिरमुपचरिताः ॥ ५ भजेः ॥ ६ 'करिष्यामि' इति भालतलपरामृष्टमुनिपादपृष्ठः ॥ ७ °तवुब्वंतो यं पि° प्रतौ । उपलब्धसर्वतद्वृत्तान्तश्च ॥

क्खिऊण घेत्तवो, न उण पुवपुरिसकमपाहन्नेणं । किंच—

पाणिवहा-ऽलिय-चोरिक्कविरइ-परजुवइवज्जणपहाणो । पच्चक्खदिट्ठसारो धम्मो एसो कहमजुत्तो ? ॥ १ ॥
पच्चक्खेण वि दीसइ एवंविहधम्मविहिविहीणाणं । जीवाण जायणाओ[1] विविहाओ दुक्खजणिगाओ[2] ॥ २ ॥
किं वा इमिणा ? तुब्भं वेसाईवसणवज्जणे जेत्तो[3] । कीउं जुत्तो धम्मुज्जमे[4] य मे किं व वयणिज्जं ? ॥ ३ ॥
उत्तमपणियं[5] लिंतो जहा न निंदापयं हवइ वणिओ । उत्तमधम्मपवन्नो[6] न हीलणिज्जो तहा हं पि ॥ ४ ॥

पिउणा भणियं—अरे दुरायार ! अतिमुहरो सि, कुणसु जं ते रोयइ, न एत्तो वत्तवो सि त्ति । वित्थरियमेयं च नयरमज्झे—जहेस चत्तनियमग्गो धम्मंतरं पवन्नो त्ति । सुयमिमं ससुरेण । भणाविओ तेण एसो—जइ मह धूयाए कज्जं ता सज्जो[7] वज्जेसु मग्गमिमं ति । तह वि न संखुद्धो एसो । विसज्जिया पियहरं[8] भज्जा । अवरवासरे य संलत्तो एसो जणणीए—वच्छ ! किं पि कुणसु धम्मं, केवलं अमराभिहाणं कुलदेवयं पूएसु सवायरेणं, एयप्पसायपभवो हि तुज्झ जम्मो त्ति । अमरदत्तेण भणियं—अम्मो ! सवन्नुमेक्कं चिय अच्चयंतस्स जं होइ तं होउ, अलाहि देवंतरपूयणेणं । तओ कुविया कुलदेवया । भेसिओ सुहपसुत्तो रयणीए भीमभुयंग-मायंग-वेयालपमुहोवसग्गेण । भणिओ य—अरे दुस्सिक्खिय ! दुक्खियं काहामि त्ति । तह वि न भीओ एसो, परं परुट्ठदेवयाजणियगरुयरोगवग्गविहुरो वि थिरयरीभूओ जिणिंदधम्मम्मि, चिंतिउं पवत्तो य—

१ यातनाः ॥ २ °जणगा° प्र० ॥ ३ जुत्तो खं० प्र० ॥ ४ धम्मुज्जुत्तो प्र० ॥ ५ उत्तमपण्यं 'लान्' आददानः ॥ ६ °वत्तो न प्र० ॥ ७ सद्यः ॥ ८ पितृगृहम् ॥

सुगुरुवएसंकुसविरहओ य न सुमग्गलग्गणं पायं । ता सुस्सूसाए[1] मणो पढमं पि निजुंजणीयमिमं ॥ ७ ॥
तग्गाढारूढमणो पईवपडिमं सुहं सुयं[2] लहइ । तत्तो य विरइभावं तओ लहुं आसवनिरोहं ॥ ८ ॥
तप्फलमसमतवोबलमह[3] तत्तो निज्जराफलं विउलं । किरियाविगमं तत्तो ततो य परमं अजोगित्तं ॥ ९ ॥
तत्तो भवसंतइखंडणं च मोक्खं च तप्फलमुयारं । इय सवकुसलमूलं वयंति सत्थत्थसुस्सूसं[4] ॥ १० ॥

एवं मुणिणा सिट्ठे[5] सवकज्जपरमत्थे परमं पमोयमुवगओ पेच्छगो लोगो । सो वि वइदेसिओ सरियपुवभवसववुत्तंतो अंतोवियंभंतगरुयसोगावेगो[6] 'भयवं ! अवितहमेयं, अणुभूयं निरवसेसं ससरीरेणं' ति वागरंतो[7] अणसणं पवन्नो ॥ छ ॥

अमरदत्तो वि तदायन्नणपवड्ढंतसुहभावो[8], भवियवयावसेण लद्धदंसणावरणविवरो, 'वरं मरणमेवंविहधम्मविरहियाणं' ति चित्तनिहितविवेगमुद्दो, मुद्दारयणं तत्थेव गोविऊण, मुणिणो नाणाइसयं पुणो पुणो सरंतो वयस्साणुवित्तीए[9] गतो सगिहं । संभासिओ पिउणा—वच्छ ! किमच्छेरयभूयं किं पि तहिं दिट्ठं ? ति । संखुद्धमणो य अमरदत्तो जाव न किं पि जंपइ ताव सिट्ठो वयस्सेहिं साहु-वइदेसियवुत्तंतो । तं च सोच्चा चिंतियं सेट्ठिणा—एस पढमुग्गमो संवच्छरिओवइट्ठधम्मविघायपायवस्स त्ति । जायगरुयरोसेण य भणिओ एसो—वच्छ ! पज्जत्तमित्तो[10] वसंतलच्छीपेच्छणच्छलेण, अच्छसु गिहे च्चिय पेच्छणयाइपलोयणपरो त्ति । एवं च पिउवयणरज्जुसंदाणियस्स[11] महाकट्ठेणं वोलीणं दिणमेगममरदत्तस्स साहु-

१ शुश्रूषायाम् ॥ २ श्रुतम् ॥ ३ तत्फलम् असमतपोबलम् अथ ॥ ४ शास्त्रार्थशुश्रूषाम् ॥ ५ 'शिष्टे' कथिते ॥ ६ अन्तर्विजृम्भमाणगुरुकशोकावेगः ॥ ७ व्यागृणन् ॥ ८ तदाकर्णनप्रवर्धमानशुभभावः ॥ ९ वयस्यानुवृत्त्या ॥ १० पर्याप्तम् इतः ॥ ११ सन्दानितः—बद्धः ॥

तद्वज्जिनेन्द्रगदितामलधर्मकर्मनिर्मापणावसरविघ्नगणं विहत्य ।
आसादयन्ति शिवमद्भुतचित्तदार्ढ्यात्, सीदन्ति केवलमनीदृशचेतसश्च ॥ २ ॥ अपि च—

तावद् दुर्विषहा हिमाचलमरुद्-वैश्वानरा-ऽर्कद्युतः, तावद् भीमभुजङ्गसङ्गविषमाः पाताल-भूकुक्षयः ।
तावद् दुःखगमाश्च सिंह-शरभैः शैलस्थलीभूमयः, यावच्चित्तदृढत्वरूपविलसत्सामर्थ्यभाजो नहि ॥ ३ ॥
इति सामर्थ्यं सर्वार्थसाधनं धनमिवानिर्धनमाप्य । दौर्गत्य-दुःखविषयं न यान्ति सन्तः किमाश्चर्यम् ? ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे सामर्थ्यगुणचिन्तायां अमरदत्तकथानकं समाप्तम् ॥ २१ ॥

अर्थित्व-स्वरूपम्

सामत्थे संते वि हु न जं विणा संभवेज्ज धम्ममई । तं अत्थित्तं संपइ लेसुद्देसेण दंसेमि ॥ १ ॥
जह भोयणम्मि इच्छा भ[2]ज्जा-वइयाण जह व अणुरागो । तह अत्थित्तं सारं परलोयपहाणचेट्ठासु ॥ २ ॥
अत्थी एत्थं सो पुण जो संसारियभयं परिवहंतो । एसो च्चिय परमत्थो सेसोऽणत्थो त्ति मन्नंतो ॥ ३ ॥
पुच्छइ गुरुणो तब्भेय-विसय-ववहार-निच्छयाइगयं । तस्स सरूवं अणुदिणमब्भहियं कयसमुट्ठाणो ॥ ४ ॥
धम्मिय[3]जणेऽणुसज्जइ सज्जइ य ससत्तिओ अणुट्ठाणे । वज्जइ य [4]तंविरुद्धप्पवित्तिपवणं जणं दूरे ॥ ५ ॥
तक्कहनिसामणेण वि [5]हरिसिज्जइ खिज्जई असुहकिच्चे । ध[6]म्माणत्थीणमिमे दूरविरुद्धा समायारा ॥ ६ ॥

१ अखण्डमित्यर्थः ॥ २ **भज्जोव°** खं० प्र० । भार्यापत्योः ॥ ३ धार्मिकजनान् ॥ ४ तद्विरुद्धप्रवृत्तिप्रवणम् ॥ ५ हृष्यति खिद्यते ॥ ६ धर्मानर्थिनाम् इमे ॥

॥१६३॥

इयलक्खणो [1]विणेओ अत्थी जोग्गो विसेसधम्मस्स । एयविलक्खणरूवो य जाणियव्वो अजोग्गो त्ति ॥ ७ ॥
[2]एवंविहस्स वि धुवं धम्मारोवणमरन्नरुन्नसमं । केवलकिलेसमेत्तं विन्नेयं सुंदरस्सेव ॥ ८ ॥

तहाहि—अत्थि सु[3]रसरिलोलकल्लोलभुयपरिहालिंगियतुंगपायारविराइया अणवरयपयट्टारहट्टजलुप्पीलसद्दलजंबु-जंबीर-कयंबंबपमुहतरुसंडमंडियपरिसरा मेहरहमहानरिंदपुन्नपयावपडिहयपडिवक्खभया जयंती नाम नयरी। तहिं च पुव्वभवाव-ज्जियगरुयसुकयसंभारोवलद्धविभववित्थरो दया-दक्खिन्न-गंभीरिमाइनिम्मलगुणगणागरो **संवरो** सेट्ठी, **सयंपभा** से भज्जा । उभयलोगाविरुद्धेणं आयारेणं गमंति दियहाइं। कालक्कमेण य जातो ताण पुत्तो, **सुंदरो** त्ति पइट्ठियं से नामं। पढियकइव-यकलाविसेसो य काराविय‌दारसंगहो सो पयट्टो गिहकिच्चेसु । 'एसो च्चिय घरकज्जचिंतं काहि' त्ति चिंतियं **संवरसेट्ठिणा**—जइ वि पिउ-पियामहा[इ]पुरिसपरंपरासमज्जिओ विज्जइ पउरो दव्वसंभारो तहावि परिभावेमि अप्प[4]णो लाभविसेसं, परिक्खेमि कम्माणुकूलयं, अवलोएमि ससरीरसामत्थं, [5]ससामत्थाणुरूवं च अणुकंपेमि दीण-दुत्थियजणं देसंतरजत्ताकरणेणं—ति सविसेसं पुत्तं घरे निरूविऊण पडिगाहियभूरिभंडो पट्ठिओ पुव्व[6]देसाभिमुहं । धणसत्थवाहनाएण घोसावियं नयरीए—जो को वि

१ विज्ञेयः ॥ २ **एयंविहस्स अ धुवं** प्र० । 'एवंविधस्यापि' अयोग्यस्य अनर्थिनो वेत्यर्थः ध्रुवं धर्मारोपणम् अरण्यरुदितसमम् । केवलक्लेशमात्रम् ॥
३ सुरसरिल्लोलकल्लोलभुजपरिघालिङ्गिततुङ्गप्राकारविराजिता अनवरतप्रवृत्तारघट्टजलसमूहशाद्वलजम्बूजम्बीरकदम्बाऽऽम्रप्रमुखतरुषण्डमण्डितपरिसरा मेघरथमहा-नरेन्द्रपुण्यप्रतापप्रतिहतप्रतिपक्षभया ॥ ४ **°णो भालवि°** खं० । 'भालविशेषं' भाग्यमित्यर्थः ॥ ५ **सासम°** खं० प्र० ॥ ६ **°व्वदिसा°** प्र० ॥

देवभद्दसूरि-
विरइओ
कहारयण-
कोसो ॥
सामन्नगु-
णाहिगारो।
॥१६४॥

पुव्वदेसमागच्छिहो तस्स संवरो सेट्ठी * [1]उंदंतं वहिहि त्ति । पगुणीहूओ तद्दिय-कप्पडियपमुहो अणेगो जणो । सुमुहुत्ते दिन्नं पयाणयं ।

[2]दिज्जंतऽनिवारियपउरभत्तपरितुट्ठपहियगिज्जंतो । अप्पुव्वापुव्वपुरा-ऽऽगराइठाणे पलोयंतो ॥ १ ॥
धम्म-ऽत्थ-कामकिच्चाणुकूलचेट्ठाए वच्चमाणो य । सुरभिपुरं संपत्तो स महप्पा [3]संवरो सेट्ठी ॥ २ ॥*
[4]एत्थंतरम्मि फुल्लंतनीवपसरंतपरिमलुग्गारो । तंडवियसिहंडिकुलो वियंभिओ पाउसारंभो ॥ ३ ॥
[5]दिसिविलयाविगलियहारविमलमुत्ताहलाण पंति व्व । घणसिप्पिउडविमुक्का जलधाराधोरणी सहइ ॥ ४ ॥
दो[6]सुट्ठाणं घणसंपया वि संपाडइ त्ति कलिउं व । चंदुज्जोएण समं हंसउलं लहु अवक्कंतं ॥ ५ ॥
[7]अच्चंतकसिणघणमंडलीसु विज्जुच्छडं पहियलोगो । कीणासकडक्खं [8]पियं पेक्खंतो सगिहमणुसरिओ ॥ ६ ॥

प्रावृड्-
वर्णनम्

एवंविहे य विलसंते वासारत्ते संवरेण तहाविहजणभाडयमंदिराणि घेत्तूण ट्ठाणे कराविय भंडं, जहिच्छाचारेण चरिउं विसज्जिया वसह-वेसराइणो, निउत्ता य तक्कालोचियकिच्चेसु कम्मयरा । सयं च अट्ठावयाइकीलाहिं कीलिउं पवत्तो ।

१ * * एतच्चिह्नमध्यवर्त्ती पाठः खं० प्रतौ पतितः ॥ २ दीयमानानिवारितप्रचुरभक्तपरितुष्टपथिकगीयमानः ॥ ३ सुंदरो प्र० ॥ ४ पुष्प्यन्नीपप्रसरत्परिमलोद्गारः । ताण्डवितशिखण्डिकुलः विजृम्भितः प्रावृडारम्भः ॥ ५ दिग्वनिताविगलितहारविमलमुक्ताफलानां पङ्क्तिरिव । घनशुक्ति[illegible]विमुक्ता जलधाराधोरणिः राजते ॥ ६ 'घनसम्पत्' प्रभूतसम्पत्तिः मेघसम्पच्च 'दोषोत्थानं' दोषाणां–दूषणानां दोषायाः–रात्रेश्चोत्थानं सम्पादयति इति 'कलयित्वा इव' ज्ञात्वा इव ॥ ७ अत्यन्तकृष्णघनमण्डलीषु विद्युच्छटां पथिकलोकः । कीनाशकटाक्षमिव प्रेक्षमाणः स्वगृहमनुसृतः ॥ ८ पिव पे° प्र०॥

अर्थित्व-
व्यतिरेके
सुन्दर-
कथानकम्
२२ ।

॥१६४॥

पडिकूला [1]हवउ सुरा माया-पियरो परम्मुहा होंतु । पीडंतु सरीरं वाहिणो वि खिंसंतु सयणा वि ॥ १ ॥
निवडंतु आवयाओ गच्छउ लच्छी वि केवलं एक्का । मा [2]जाउ जिणे भत्ती तदुत्ततत्तेसु तत्ती य ॥ २ ॥
इय निच्छयप्पहाणो दुत्थावत्थं पि परममब्भुदयं । मन्नंतो स महप्पा एगग्गो कुणइ जिणधम्मं ॥ ३ ॥

एवं च दव्व-भावसामत्थाणुगयस्स तस्स महाणुभावस्स वच्चंतेसु वासरेसु, परिहीयमाणेसु धम्मविग्घकारिसु असुह-कम्मपोग्गलेसु, धम्मनिच्छ[3]यं पेच्छिऊण पराभग्गा कुलदेवया, उवसंहरिया रोगा, सपायपणामं कयखामणा गया उवसमं । अम्मा-पियरो वि [4]तव्ववहारसुद्धिरंजियजणगिज्जंतगुणगणसवणुब्भवंतपरमपमोया पुव्वमिव सिणेहसारं [5]परिचत्तधम्मविग्घा वट्टिउं पवत्ता । अणुकूलीहूओ सयणवग्गो, विलक्खीहूओ ससुरो, खामणापुव्वगं च अणेण पेसिया पइहरं धूया । [7]अणुदिणमि-उपन्नवणाए य जिणधम्माभिमुहीकओ माया-पियाइलोगो अमरदत्तेणं ।

इत्थं सामत्थगुणं [8]स-परुवयारप्पहाणमवगम्म । पडिभयचक्कविमुक्को तत्थेव ठवेज्ज अप्पाणं ॥ १ ॥
पाएण विग्घवग्गग्गलाइं गिज्जंति धम्मकिच्चाइं । कीरंति न खलिउं ताइं उभयसामत्थविरहेण ॥ २ ॥ किंच—
चोराकुलं मकर-मीन-तिमिङ्गिलादिरौद्रं समुद्रमरिदुर्विषहं रणं च ।
सामर्थ्यतः समतिलङ्घ्य [9]शमाप्नुवन्ति, सीदन्ति तद्विरहिताश्च यथा मनुष्याः ॥ १ ॥

सामर्थ्यस्य
माहात्म्यम्

१ यातु ॥ २ °णे सत्थी त° खं० ॥ ३ 'तसिः' चिन्ता ॥ ४ °यं काऊण प्र० ॥ ५ तद्व्यवहारशुद्धिरञ्जितजनगीयमानगुणगणश्रवणोद्भवत्परमप्रमोदौ ॥ ६ परित्यक्तधर्मविघ्नौ ॥ ७ अनुदिनमृदुप्रज्ञापनया ॥ ८ स्वपरोपकारप्रधानमवगत्य ॥ ९ 'शं' सुखम् ॥

विणस्सइ' त्ति विभाविऊण गओ तुह समीवं, एगंते य निवेइयं—

भो मित्तवर ! अहं पओयणवसेण सगामं गओ । तुह घरे य केवलं चंदलेहा तक्कालं केणइ विडेण सद्धिं अणुचियकम्म-मायरंती मए दिट्ठा । ततो दुवारातो पडिनियत्तंतो दिट्ठो हं तीए । [1]गरुयसज्झसावेसवसविसेसविसंठुलविगलंतमंसुयं एगेण पाणिणा [2]संठवन्ती अवरेण उत्तरीयं [3]सिहिणत्थलीए वित्थरंती झड त्ति उट्ठिया, भणिउं पवत्ता य—भो पियमित्त ! कहिं गच्छसि ? त्ति । अहं पि लज्जायमाणो 'कहं मुहमिमीए दंसिस्सामि ?' त्ति वेगेण पलाणो । सा वि [4]हिययब्भंतरसमुब्भवंत-कुकम्मायरणसंखोभाइरेगविभिन्नहियया पंचत्तमणुपत्ता । ता भद्द ! एवंविहो चेव जुवइजणो होइ त्ति न सोइयव्वं तुमए ।

तुममवि सोऊण इमं [5]संविलियसोगुब्भवंतगुरुदुक्खो । चिंतिउमिमं [6]पवत्तो दुव्विन्नेयं अहो ! दइव्वं ॥ १ ॥
कहमन्नहा तहाविहसारयरयणियरविमलसीला वि । उभयकुलकलंककरं करिज्ज सा एरिसमकज्जं ? ॥ २ ॥
जे वि हु मिणंति गयणं तुलन्ति बुद्धीए तियससेलं पि । अइदूरभूमिनिहियं निहिं पि लीलाए जाणंति ॥ ३ ॥
ते वि य [7]दूरोहामियमइविहवा जुवइहिययपरिकलणे । [8]वामुज्झंति विसीयंति आउलिज्जंति खिज्जंति ॥ ४ ॥
जइ सा वि कुणइ एवंविहाइं कम्माइं धम्मविमुहाइं । ता जुवईणं दिन्नो सीलस्स जलंजली लोए ॥ ५ ॥
एवंविहाए तीए अलमेत्तो मज्झ चिंतियाए वि । दुग्गइनिबंधणेणं गिहवासेणावि पज्जत्तं ॥ ६ ॥

१ गुरुकसाध्वसावेशवशविशेषविसंस्थुलविगलद् अंशुकम् ॥ २ संस्थापयन्ती ॥ ३ स्तनस्थल्यां विस्तारयन्ती ॥ ४ हृदयाभ्यन्तरसमुद्भवत्कुकर्माचरणसंक्षोभातिरेकविभिन्नहृदया ॥ ५ संव्रीडशोकोद्भवद्गुरुदुःखः ॥ ६ °वन्नो दु° खं० ॥ ७ दूराभिभूतमतिविभवाः ॥ ८ व्यामुह्यन्ति ॥

ततो रयणिमज्झम्मि [1]कस्सइ वत्तमणाइक्खिऊण एगागी नीहरितो तित्थाइं पेच्छिउं, वच्चंतो य पडिओ [2]महाडवीए, तुट्टं संबलं, छुहापरिगओ इओ तओ कंदमूलाइं अन्नेसिंतो दिट्ठो तुमं एगेण वणयरेणं । [3]गाढकरुणारसाउरेण य तेण नीओ सि नियगिरिगुहाए । भणिया य घरिणी—पिए ! अत्थि किं पि जमिमस्स महाणुभावस्स [4]दीहपहपरिभमणुच्छलियछुहाइरे-गस्स पणामिज्जइ त्ति । तीए भणियं—अत्थि नीवारन्नतंदुलंजलिमेत्तं, तं च सयं वा भुंज अतिहिस्स वा देहि त्ति । वणयरेण भणियं—

चिरकालं भुत्तेण वि जा तित्ती नेव [5]दड्ढजरढस्स । जाया सा किमियाणिं होही ? ता मुक्कपरिसंका ॥ १ ॥
[6]तं देहि लहुं सव्वं इमस्स गेहंगणं उवगयस्स । निम्माणुसाडवीए पुरोऽवयरणं पुणो कत्तो ? ॥ २ ॥
किं नाम जीवियमिमं सलहिज्जइ निज्जई य परिवुड्ढिं । भुज्जइ न जत्थ दाउं [7]नियगासाओ वि गासद्धं ? ॥ ३ ॥
इय तेण तह कहं पि हु पन्नविया सा जहा लहुं तीए । सव्वायरेण भुंजाविओ तुमं सोविओ य सुहं ॥ ४ ॥

वियालसमए य पुणो वि दिन्नं किं पि [8]वेयालियं, विगलिया तुज्झ छुहा । एवं च समागओ रयणिसमओ । [9]घणघुसिण-रसाइरेगेणा[10]णुरागेण समुम्मिलंतनवपल्लवुल्लेहं व तरुगणं कुणंती पसरिया संज्झा, [11]मित्तमंडलमत्थमंतमवलोइऊण सज्जणेहिं व

१ कस्यापि वार्त्तामनाख्याय ॥ २ °ए, नट्ठं सं° खं० ॥ ३ गाढकरुणारसातुरेण ॥ ४ दीर्घपथपरिभ्रमणोच्छलितक्षुधातिरेकाय अर्प्यते ॥ ५ दग्धजरठस्य ॥ ६ त्वम् ॥ ७ निजग्रासादपि ग्रासार्द्धम् ॥ ८ 'वैकालिकं' सायङ्कालीनभोजनम् ॥ ९ घनघुसृणरसातिरेकेणानुरागेण समुन्मीलन्नवपल्लवोल्लेखमिव ॥ १० °णुगारेण समुमिल्लंत° खं० प्र० ॥ ११ 'मित्रमण्डलं' सूर्यमण्डलं सुहृद्वर्गं च ॥

अर्थित्व-व्यतिरेके सुन्दर-कथानकम् २२ ।

अतिथि-सत्कारः

रात्रि-वर्णनम्

सदुक्खेहिं दूरमकंदियं चक्कवायचक्केहिं, दिट्ठदोसा[1]गमेणं खलयणेण व किलिकिलियं हरिसभरनिब्भरेण कोसियकुलेण, साहुजणो व नियनियकुलायनिलयं निलीणो पक्खिगणो ।

एत्थंतरम्मि म[2]उलंतकमलउड्डीणभमरपालि व । सव्वेसु दिसिमुहेसुं वियंभिया तिमिर[3]रिंछोली ॥ १ ॥
वित्थरिओ गयणतमालसाहिणो दिसिविसालसालस्स । कुसुमुक्करो व दहिपिंडपंडुरो तारयानियरो ॥ २ ॥
उच्छलिओ धवलियगयणमंडलो इंदुणो पहापसरो । खयसमयसमीरुक्खयखीरोयहिवारिपूरो व ॥ ३ ॥

एवंविहे य पयट्टे रयणीसमए वणयरेण भणिओ तुमं, जहा—गुहामज्झट्ठिओ रयणिं तुममइवाहेसु, अहं पुण गुहादुवारट्ठिओ अं[4]गिट्ठियापासपसुत्तो केसरिणं पडिक्खलिस्सामि त्ति । तुमए जंपियं—अजुत्तमिमं, तुमं गुहामज्झे भव, अहं बाहिं वसिस्सामि । वणयरेण भणियं—न जाणासि तुमं, बहुपच्चवाओ खु एस पएसो त्ति । अणिच्छंतो वि तुमं पक्खित्तो गुहब्भंतरे, वणयरो ठिओ बाहिं । अह निमि[5]त्तमेत्तप्पेहणुप्पेहडकीणासागरिसिओ व मज्झरत्तसमए दिप्पंते वि हुयासणे सणियसणियमागंतूण निद्दायमाणो विणासिओ सो केसरिणा । पत्ते य पभायसमए, समुग्गए मायंडमंडले, उड्डीणसउणिउलकोलाहलाउलिए दिसिचक्कवाले, गुहब्भंतरं पविट्ठासु मंजिट्ठारुणासु रविपहासु, पणट्ठनिद्दावियारो समुट्ठिओ तुमं वणयरगिहिणी य । 'कीस दुवारे न किं पि को वि जंपइ?' त्ति नीहरिऊण तुब्भेहिं सो पलोइओ तात्र दिट्ठो करंकावसेसो । तओ 'हा

१ दोषा—रात्रिः दूषणानि च ॥ २ मुकुलयत्कमलोड्डीनभ्रमरपङ्क्तिरिव ॥ ३ तिमिरश्रेणिः ॥ ४ अग्निष्ठिका—अग्निशकटिका ॥ ५ निमित्तमात्रोत्प्रेक्षणतत्परकीनाशाकृष्ट इव ॥

अवरवासरे य एगेण पुरनिवासिणा सिट्ठमेयस्स, जहा—इह नयरे सुमेहो नाम बंभणो तीया-ऽणागयजाणगो परिवसइ त्ति । जायपरमकोऊहलेण य वाहराविओ संवरेण एसो, दिन्नासणो सविणयपणामपुव्वयं संभासिओ य—भद्द ! कुसलं ? ति । नेमित्तिएण जंपियं—आमं । सेट्ठिणा भणियं—निरवग्गहो निसामिज्जइ तुम्ह नाणपय[1]रिसो, सो य किं नट्ठ-मुट्ठि-चिंताइसु चेव ? अहव भवंतरपरिन्नाणे वि ? । नेमित्तिएण भणियं—महाभाग ! भगवंत-गुरुजणपायप्पसायातो सव्वत्थ वि अत्थि थेवथेवो अब्भासलेसो त्ति । सेट्ठिणा भणियं—नट्ठ-मुट्ठि-चिंताइणो जम्मि तम्मि वि पुरिसविसेसे उवलब्भंति, भवंतरपरिन्नाणं पुण न कहिं पि दिट्ठं सुयं वा, ता सव्वहा साहेसु—किमहं भवंतरे हुंतो ? त्ति । तओ पण्हबलपरिभावियभूयभवंतरवित्तं निरवसेसं निच्छिऊण भणियं नेमित्तिएण—भो वणियवर ! एगग्गमणो निसामेसु—

तुमं हि पंचालदेसे कणयउराभिहाणे सन्निवेसे वइसदत्तो नाम कोडुंबिओ अहेसि । चंदलेहा य भज्जा । परोप्परं अच्चंतसिणेहो, विसेसओ तुमं पडुच्च चंदलेहाए । [एवं] वच्चंति वासरा । एगया य गामं गओ पओयणवसेण तुमं । एगेण अणत्थसीलेण मित्तेण पडिनियत्तिऊण सिणेहपरिक्खानिमित्तं कवडविरइयसोगावत्थेण स[2]गग्गिरगिरं भणिया चंदलेहा—तुह पई विसहरेण ड[3]क्को मओ य । तओ व[4]ज्जवडणं व दारुणं तव्वयणं निसामिऊण भणियं तीए—पियमित्त ! किं सच्चमेयं ? । तेण वुत्तं—कहमेवंविहमसब्भूयं भन्नइ ? । तिक्खुत्तमिममेव य उच्चरंती ज्झड त्ति [5]विदिन्नहियया पंचत्तमुवगया एसा । 'अहो ! महाणत्थो' त्ति चमक्किओ मित्तो, 'निच्छियं सो वि विवज्जइ एयमरणं निसामिऊण, ता तहा करेमि जहा सो न

१ ज्ञानप्रकर्षः ॥ २ सगद्गदगिरम् ॥ ३ दष्टः ॥ ४ वज्रपतनमिव ॥ ५ विभिन्न° प्र० । विदीर्णहृदया ॥

ते धन्ना कयपुन्ना पुंन्नं[1] चिय चिंतियं जए ताण । कुल-इट्ठ-देसनासो जेहिं जियंतेहिं नो दिट्ठो ॥ ३ ॥
हाऽणज्ज ! वज्जघडियं, व हियय ! सज्जो विलज्जसि न कीस । पलयसमदुक्खहुयवहतविज्जमाणं पि अणवरयं ? ॥ ४ ॥
इय बहुविहप्पयारं परिदेविय तित्थनिच्छइयमरणो । तुमम[2]क्खलियगईए पयागपडणं लहुं पत्तो ॥ ५ ॥

तहिं च कयसरीरसुद्धी परिहियविसुद्धवत्थजुयलो तक्कालाणुरूवपुप्फाइसामग्गिपुरस्सरं पूइऊण देवयाजणं, गमिऊण धम्मकिच्चकरणेण कंचि कालं, निबिड[3]निबद्धनियंसणो संजमियकेसपासो जाव पडणे[4] निवडिउमुवट्ठिओ तुमं ताव धरिओ एगेण साइसएण कारुणियनरेण, पुच्छिओ य—भद्द ! केण वेरग्गकारणेण एवं जीवियव्वं परिच्चयसि ? त्ति । तुमए भणियं—जइ एगं होइ ता साहेमि, अओ अकहिज्जंतमेव रमणीयमिमं, मुंचसु महाणुभाव ! ममं पारद्धवत्थुकर[णे]णं ति । तेण जंपियं—होउ किं पि, सव्वहा निवेदेसु इमं ति । तदणुरोहेण य सिट्ठो तुमए जहट्ठितो सव्वो पुव्ववुत्तंतो । तं च सोच्चा भणियं तेण—भद्द ! जइ वणयरसोगेण मरिउमिच्छसि ता सव्वहा अणुचियमिमं, तुमं हि जइ तम्मि सिणेहमुव्वहसि ता कारवेसु तन्नामपडिबद्धं सुरागाराइ कित्तणविसेसं किं पि, दवावेसु दीणाणाहाण दाणं च । तुमए जंपियं—अहो महाभाग ! दव्वेण विणा कहमेवंविहकित्तणाइं काउं पारीयंति ? । तेण भणियं—भद्द ! जइ एवं ता गिण्ह इमं फरुसपाहाण[5]खंडमेगं, एयफरुसजायतेयसंसग्गजायजायरूव[6]भावं लोहं पि काही मणिच्छियं संपत्तिं ति । ततो तुमं तदणुरोहेण तं घेत्तूण पयत्तेण

१ पुण्यं खलु चिन्तितं जगति तेषाम् । कुल-इष्ट-देशनाशः यैः जीवद्भिः न दृष्टः ॥ २ °मखलि° खं० प्र० ॥ ३ निबिडनिबद्धनिवसनः ॥ ४ प्रयागपतने इत्यर्थः ॥ ५ °पाहण° प्र० । स्पर्शपाषाणः—पारसमणिः ॥ ६ °रूवं लो° खं० ॥

पडिनियत्तो सग्गामं । तदुत्तविहिणा य[1] पाडियं भूरि कणयं, काराविय वणयरनामेण तुमए एगं सुरभवणं, पयट्टावियं च दीणा-ऽणाहाईणमणिवारियं सत्तं[2], अब्भुद्धरिओ सुहि-सयणवग्गो, कया अन्ने वि लोगमग्गाणुलग्गा धम्मविसेसा । मरणसमए य तस्स देवभवणस्स अब्भिंतरेक्ककोणे निक्खित्तो सो फरिसपाहाणो[3] । आराहियपरलोयकिच्चो मरिऊण एस संवर ! तुमं जातो सि त्ति । एसो ताव पुव्वभवो ॥ छ ॥

इमं च अवक्खित्तचित्तो निसामिंतो संवरसेट्ठी ईहा-ऽपोहाइपयारपच्चक्खीभूयसव्वपुव्वाणुभूयभावो वत्थ-तंबोलप्पयाणाइणा सक्कारिऊण विसज्जियनेमित्तिगो चिंतिउं पवत्तो—किमणेण कयवरप्पायपणियविक्कएण होही ? ता जहतह इमं विणिवट्टिऊण वच्चामि कणयउरसन्निवेसं, आयड्ढेमि[4] पुव्वनिहित्तं फरिसपाहाणं[5], पुव्वट्ठिईए अट्ठावय[6]करणेण अप्पाणं च परं च उवट्ठंभिऊण सफलीकरेमि[7] जयजम्म[8]-जीवियं ति । एवं च कयसंकप्पो अकालक्खेवेण कयसव्वसंवाहो[9] वरिसायाले वि अविलंबियपयाणगेहिं गतो पंचालतिलयभूयं कणयउरसन्निवेसं, पुव्वुत्तदेवउलसमीवे बद्धो आवासो, पइदिणं च देवच्चणं सव्वपयत्तेण काउमारद्धो य । एवं च समइक्कंतप्पाए पाउसे देवउलकोणनिहित्तं घेत्तूण फरिसपाहणं गतो सनयरं । आणंदिओ नयरलोगो ।

फरिस[10]वसुट्ठावियाणिट्ठियकणयकोसप्पयाणेण य चिरकालं पीणिऊण पणइणो तक्कुय[11]जणं च, पडिपुन्नवंछं नियसुयं च

१ य पडि° खं० प्र० ॥ २ 'सत्रं' दानशाला, अभ्युद्धृतः सुहृत्स्वजनवर्गः ॥ ३ °पाहणो प्र० ॥ ४ आकर्षामि ॥ ५ पाहणं प्र० ॥ ६ अष्टापदं—सुवर्णम् ॥ ७ °मि निय° प्र० ॥ ८ जगज्जन्मजीवितम् ॥ ९ संवाहः—सज्जीभावः ॥ १० स्पर्शमणिवशोत्थापितानिष्ठितकनककोशप्रदानेन ॥ ११ प्रीणयित्वा प्रणयिनः स्वजनजनं च ॥

काऊण मरणमणुपत्तो संवरो । कयमच्चंतसोगापूरपूरियहियएण सुंदरेण पुरलोगेण य से पारलोइयकिच्चं । तव्विप्पओगदुक्ख-संतत्तो य सुंदरो न घरे न दुवारे न दिणे न रयणीए न जणे न वणे न सयणे न आसणे कत्थइ रइं लहंतो भणिओ सयण-वग्गेण—भो सेट्ठिसुय ! किमेवमप्पा सोगावेगेण पीडिज्जइ ? न चिंतिज्जंति गिहकिच्चाइं ? न पउणिज्जंति पणियाइं ? न पेसिज्जंति वणियसुया देसंतरेसु ? त्ति । तत्तो सो तदणुरोहेण निरुच्छाहो वि लग्गो गिहवावारं निरूविउं ।

अवरवासरे य भणिओ सो जणणीए—वच्छ ! तुज्झ पिया धम्मसत्थं वायाविंतो धम्मे य अच्चंतमुज्जओ हुंतो, तुमं पुण उभयत्थ वि उदासीणो, न जुत्तमेयं, तिवग्गसंपाडणपरं हि सलहंति जीवियं, न य धम्मसत्थसवणं विणा मुणिउं तीरइ इमं, ता वाहराविज्जइ सत्थपाढगो, काराविज्जउ पोत्थावाइयं ति । अकामेण य भणियं सुंदरेण—अम्मो ! एवं करावेसु त्ति । ततो वाहराविंतो तीए सत्थपाढगो । पारद्धा अणेण पोत्थावाइया, उच्चारिओ नमोक्कारो । एत्थंतरे गेहदुवारदिन्नदिट्ठिणा भिक्खट्ठा पविट्ठं कप्पडियं पलोइऊण आबद्धभिउडिणा भणियं सुंदरेण—अरे अरे ! को दुवारे चिट्ठइ ? । सिग्घमुवसप्पिऊण जंपियं दुवारपालेण—आइससु सेट्ठि ! किं कीरइ ? त्ति । सुंदरेण भणियं—रे दुरायार ! न पेच्छसि विलुप्पंतमेवं घरं भिक्खायरेहिं ? ति । तओ कंठग्गहपुरस्सरं दुवारपालेण निच्छूढो भिक्खाचरो, दिन्नं भुयग्गलासहियं कवाडसंपुडं । अह चिंतियगिहकिच्चं च सावहाणं तं विभाविऊण पुरओ वाइउमारद्धो सत्थपाढगो । एत्थंतरे परोप्परकयजुद्धाइं रोविउं पवत्ताइं डिंभाइं । ततो संभंतो धाविओ सुंदरो, निवारियाइं डिंभाइं, खणं इओ तओ रमाविऊण ट्ठिओ सट्ठाणे । पुणो पारद्धं धम्मक्खाणं सत्थपाढगेण । एत्थंतरे—

पाणनाह ! कहमेवंविहमवत्थमुवगतो सि ?' त्ति निबिंडकरतलतालिज्जमाणवच्छत्थलगलियगुंजाहलच्छलेण[1] सोगभरभिन्नहिययनीहरंतरुहिरबिंदुपरंपरं[2] व विक्खिवंती मुच्छानिमीलियच्छी निवडिया धरणिवट्ठे वणयरवहू । 'हा निग्घिणकयंत ! को एस सव्वंकसविणासकीलापबंधो ?' त्ति गरुयमुक्कपोक्कं[3] तुमं पि रोविउं पवत्तो । वणयरवहू वि सिसिरसमीरोवलद्धमुच्छावच्छेया संभासिया तुमए—अम्मो ! मुयसु भूरिसोगसंरंभं, एरिसो च्चिय एस हयविही न सहइ सुहियं जणं दट्ठुं, सव्वसाहारणो य एस मग्गो सुरा-ऽसुराणं पि, ता धरसु धीरिमं, परिभावेसु संसारसमुत्थसमत्थपयत्थाणमेवंविहभावसुलभसीलयं ति । वणयरीए भणियं—अलमियाणिमवरुल्लावेण,[4] विरएसु संपइ च्चियं, पक्खिवसु नियभायरं ममं च, अणुजाणेसु तमेवाणुसंरंती,[5] पियविरहियाए मह किममाणुसाडवीपरिभमणेणं ? ति । ततो तव्वयणायन्नणविभावियपरमत्थेण 'तह' त्ति संपाडियं तुमए सव्वं । एत्थंतरे पज्जलिरजलणजालावलीकवँचियाए[6][7] [चियाए] पक्खित्ते वणयरकलेवरे वणयरी वि पयंगि व्व निवडिया वेगेणं, मुहुत्तमेत्तकालेण य कवोतकंधराधूसरं[8] भूइभावं दो वि पत्ताइं ति ।

तो पढमं तुमए भूरिसोगनीयंतनयणसलिलेण । दिन्नो जलंजली ताण तयणु सरियाए नीरेण ॥ १ ॥
परिभावियं च तुमए किमियाणिं जीविएण कायव्वं ? । एवंविहोत्तरोत्तरदुहाणि दीसंति जत्थ दढं ॥ २ ॥

१ निबिडकरतलताड्यमानवक्षस्थलगलितगुञ्जाफलच्छलेन शोकभरभिन्नहृदयनिःसरद्रुधिरबिन्दुपरम्परामिव ॥ २ °बिंदुवरंपरं व खं० प्र० ॥ ३ गुरुकमुक्तपूत्कारम् ॥ ४ अलमिदानीमपरोल्लापेन ॥ ५ °सरंति, पि° खं० प्र० । अनुसरन्तीम् ॥ ६ प्रज्वलनशीलज्वलनज्वालावलीकवचितायाम् ॥ ७ °वलियाए प° खं० प्र० ॥ ८ °वोलकं° खं० प्र० ॥

कारुण्यवानपि परोपकृतौ रतोऽपि, रात्रिन्दिवं च निगदन्नपि धर्मतत्त्वम् ।
साक्षाद् बृहस्पतिसमोऽपि गुरुर्न नूनं, धर्मस्पृहाविरहितं प्रतिनेतुमीशः ॥ २ ॥
अपि च—योऽशेषदोषमुषि सौख्यपुषि प्रसिद्धसिद्धान्ततत्त्वकथनेऽपि भवेदनर्थी ।
अर्थी स भूरिविपदां स्वगृहोद्गतां च, श्रीकल्पवृक्षलतिकामधमश्छिनत्ति ॥ ३ ॥
मा भूद् भवो निखिलधार्मिकमोक्षयानाच्छून्योऽयमित्यभिलषन्निव पद्मयोनिः[1] ।
धर्मार्थिताविमुखमप्यसृजज्जनौघमित्थं सुनिश्चितमहं परिभावयामि ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे धर्मार्थिव्यतिरेकचिन्तायां सुन्दरकथानकं समाप्तम् ॥ २२ ॥

अत्थित्तमुवहंतो वि धम्मविसयं हि साहिउं तरइ । आलोचगो च्चिय नरो लेसेणेमं निरूवेमि ॥ १ ॥
काउं किमिमं उचियं ? इयरं वा ? किं च मे सरीरबलं ? । को वेस देस-कालो ? का वा वि सहायसंपत्ती ? ॥ २ ॥
किं वा एत्तो य फलं ? कीरंते वा भवे किमिह खलियं ? । जो एवं परिभावइ तमाहु आलोयगं पुरिसं ॥ ३ ॥
एसो[2] च्चिय धम्मविहिं विहियाणुट्ठाणगोयरं नियमा । पारं पावेवेउं[3] होइ समत्थो न उण इयरो ॥ ४ ॥
उत्तमजिणप्पणीओ उत्तमजणसेविओ महाफलदो । निव्वाहिउं न तीरइ तुच्छमईहिं इमो धम्मो ॥ ५ ॥

१ ब्रह्मा ॥ २ एत्तो च्चि° खं० ॥ ३ प्रापयितुम् ॥

संपय[1]पलोयणामेत्तजायअच्चंतचित्तउच्छाहा । धम्मम्मि के न लग्गा ? भग्गा य न के सुणिज्जंति ? ॥ ६ ॥
जह इहलोइयकिच्चं सम्ममणालोचिऊण[2] कीरंतं । सिज्झइ न किं पि तह जाण निच्छियं धम्मकम्मं पि ॥ ७ ॥
सम्ममणालोचियं[3] धम्मकारिणो विग्घविहणिउच्छाहा । सीयंति धम्मदेवो व सव्वहा उभयलोगे वि ॥ ८ ॥

तथाहि—अत्थि सुपसत्थवणहत्थिकुंभत्थलि व अंतोदिप्पंतकंतमुत्ताहलनिउरंबसोहिया, खीरमहासमुद्दमज्झभागभूमि व विदुम[4]प्पमुहमहग्घमहारयणसंचयसमुच्छरंत[5]पंचवन्नमऊहनहनिम्मवियसुरिंदाउहा, सव्वदरिसणसभामंडलि व नायविसेसदव्वपज्जायनिउणकारुणियजणालंकिया वइदेसा नामं[6] नयरी । राया य तहिं तिहुयणातिहीकयमयंकनिम्मलुम्मिलंत[7]गुणपब्भारो भूरिकित्तिकुमुइणीमुणालजालजडिलीकयदिसाचक्को चक्कवट्टि व निम्मलुप्पन्नपयाव-कित्तिधरो कित्तिधरो नाम ।

निच्चामरत्तपत्ता[8] पवालसेज्जा सुरिद्धिविद्धिजुया । विलयाउला सुरिउणो परममुहं जस्स माणिंति ॥ १ ॥

तस्स य रन्नो चंदलेह व संयल[9]लोयलोयणाणंददाइणी चंदलेहा अग्गमहिसी । गुविल[10]विविहचारोवलद्धरायंतरवावारो वइरिसेणो नाम सेणावई, अच्चंतपिया पियसेणा नाम [से] भज्जा, ताण पुत्तो धम्मदेवो नाम । सव्वाणि वि ताणि पुव-

१ सम्पत्प्रलोकनामात्रजातात्यन्तचित्तोत्साहाः ॥ २ °लोचिऊ° प्र० ॥ ३ °य कम्म° प्रसं० ॥ ४ विद्रुमप्रमुखमहार्घमहारत्नसञ्चयसमुत्सरत्पञ्चवर्णमयूखनभोनिर्मापितसुरेन्द्रायुधा ॥ ५ °मुच्चरं° खं० प्र० ॥ ६ नाम प्र० ॥ ७ °लुमिल्लंत° खं० प्र० ॥ ८ नित्यामरत्वप्राप्ता निश्चामरत्वप्राप्ताश्च, प्रवालशय्याः नवपत्रशय्याश्च, सुऋद्धिवृद्धियुताः सुरर्द्धिवृद्धियुताश्च, वनिताकुलाः विलयाकुलाः—विनाशाकुलाश्च, सुरिपवः, परमसुखं परम् असुखं च, यस्य मानयन्ति ॥ ९ सयलो° प्र० ॥ १० गुपिलविविधचारोपलब्धराजान्तरव्यापारः ॥

भवकयसुकयसमणुरूवमुवभुंजमाणाणि संसारियसुहं कालं गमिंति ।

अह एगम्मि अवसरे अत्थाणमंडवोवगयस्स नरवइस्स, सन्निहियनिसन्नसेणावइस्स,[1] नियनियट्ठाणट्ठिएसु य मंति-सामंताइएसु, पणच्चिउं पयट्टे[2] पुरओ पवरवारविलासिणीजणे, परमपमोयभरनिब्भरे य पेच्छगलोगे समीवमागम्म पडिहारो विन्नविउं पवत्तो—देव ! दूरदेसंतरा[ग]ओ असेसजोइससत्थपरमत्थपारदरिसी सिवभूई नाम जोइसिओ कइवयसिस्सपरिवुडो दुवारनिरुद्धो देवदरिसणं अभिलसइ त्ति । राइणा भणियं—असमओ एस जोइसियस्स । सेणावइणा जंपियं—देव ! दूरदेसागयत्तेण साइसओ संभाविज्जइ ता न[3] जुत्तो विसज्जिउं । राइणा भणियं—जइ एवं ता लहुं पवेसेहि । 'जं देवो आणवेइ' त्ति भणिऊण पवेसिओ अणेण जोइसिओ, आसीवायं च दाउं पवत्तो । यथा—

आदित्यः श्रियमादधातु शशभृत् सौम्यं शिवं मङ्गलः, सद्बोधं च बुधो धियं सुरगुरुः सौभाग्यवृद्धिं कविः ।
सौरिः केतु-तमोन्वितश्च विपदं विद्वेषिणां[4] स्थेयसीमित्थं पार्थिवचन्द्र ! सन्तु सततं सानुग्रहास्ते ग्रहाः ॥ १ ॥

एवं दिन्नासीसो विणयँणिउत्त[5]नरदिन्नसुहासणासीणो य एसो सायरथेवविणमियमउलिमंडलेण य नरवइणा संभासिओ—भद्द ! कुसलं ? ति । जोइसिएण जंपियं—देव ! तुम्हपायप्पसाएण जइ परं कुसलं, सेसं न किं पि कुसलकारणमवलोएमि । सभय-चमक्कारं च संलत्तं राइणा—भो संवच्छरिय ! किंसमुट्ठाणं पुण अकुसलं संभावेसि ? । जोइसिएण भणियं—

१ °न्नस्स से° खं० प्र० ॥ २ °यट्टेसु पु° खं० प्र० ॥ ३ न जुत्तो खं० प्र० ॥ ४ °द्वेषणां प्र० ॥ ५ °यनिउ° प्र० ॥

निद्दयकरताडियपडह[1]-मुरव-ढक्कापमोक्खतूररवो । उच्छलिओ पलयरसंतमेहसंदोहदुव्विसहो ॥ १ ॥
सव्वदिसिपेसियच्छो किं किं एयं ? ति गरुयसंरंभो । सो गंतुं रायाणं निग्गच्छंतं पलोएइ ॥ २ ॥
चक्खुपहाउ अइगए पुहईपाले गए सठाणम्मि । तो सत्थपाढगेणं सविलक्खेणं इमं वुत्तो ॥ ३ ॥
सत्थत्थसवणकाले घरचिंताईणि नेव जुत्ताणि । वासंगसंगि[2]चित्ताण होइ नो तत्तविन्नाणं ॥ ४ ॥
तेणं पयंपियं तत्तनाणभावे वि किं पि नत्थि फलं । जं तत्तन्नाणी वि हु परगेहे भमसि तं[3] भिक्खं ॥ ५ ॥
इयरेणं पडिभणियं मा एवं उल्लवेसु नाणातो । सक्खं चिय दिट्ठातो रिद्धीओ तह य सिद्धीओ ॥ ६ ॥
तो सुंदरेण वुत्तं जेहिं[4] वि लद्धातो रिद्धि-सिद्धीओ । ते वि हु कीणासाणणमणुपत्ता को उण विसेसो ? ॥ ७ ॥
इय जंपिरम्मि तम्मि नीहरिओ सत्थपाढगो तुरियं । काही तुह वक्खाणं तुज्झेव पिय त्ति जंपंतो ॥ ८ ॥
एवंविहो अणत्थी निदंसितो समयसत्थकुसलेहिं । अणुसासणं पि एवंविहस्स दूरं चिय निसिद्धं ॥ ९ ॥
न य विज्जो[5] वि हु विज्जंतगरुयरोगं पि रोगिणं दट्ठुं । अणभिमयचिकिच्छं पि हु चिकिच्छिउं वंछई कह वि ॥ १० ॥

किञ्च—सन्धुक्ष्यमाण इव भस्मनि वह्निशून्ये, सम्भाष्यमाण इव वा बधिरे मनुष्ये ।
आर्थित्ववर्जितहृदि प्रविधीयमानः, सम्पद्यते हि विफलः सकलः प्रयासः ॥ १ ॥

१ °पयडमु° खं० ॥ २ व्यासङ्गसङ्गिचित्तानाम् ॥ ३ त्वम् ॥ ४ जेहिं ल° प्र० ॥ ५ वैद्यः ॥

इय जंपिरे जणोहे जाव निवो सोगसामलियवयणो । नयरीहुत्तं पेच्छइ [1]विरेल्लिया ताव जलरेल्ली ॥ ६ ॥
पच्छाइयपायार-ऽट्टालय-टलटलियगेह-देवउला । उल्लसिरगुरुतरंगा संपत्ता रायपयपीढं ॥ ७ ॥

'तमेव जोइसियसूइयं अकुसलं' ति चिंततो ज्झड त्ति उट्ठिओ राया सिंहासणाओ । 'कहमियाणिं होयव्वं ?' ति खित्ता दिट्ठी सेणावइम्मि । एत्थंतरम्मि [2]कइवयमहल्लावल्लयपेल्लियजलकल्लोलंतरमग्गसंचरणा विसिट्ठकट्ठफारफलगनिम्मविया थेवंतरेण नरवइणो समुवणीया निज्जामएण नावा । कयप्पणामेण य विन्नत्तमणेण—देव ! पसीयह, आरुहह नावमिमं ति । ततो ईसि समूससियहियओ व्व पुहइवई सेणावईखंधरारोवियहत्थो उद्धमुप्पाडियदाहिणचलणो न जाव आरुहइ नावं ताव न नावा, न नावावाहगो, न जलं, न जलहरो, सव्वं सुत्थावत्थं पिव पलोइऊण लज्जिरो सिंहासणे निसन्नो 'अहो ! महच्छरियं' ति जंपिरो संवच्छरियं भणिउं पवत्तो—भो ! किमेयं ? ति । जोइसिएण भणियं—देव ! माइंदयालमेयं मए तुम्हचित्तक्खेवनिमित्तमेत्थमुवदंसियं, अहं हि माइंदजालिओ वि भविय तुम्ह भवणे पवेसमलभमाणो संवच्छरियच्छलेण पविट्ठो । विम्हिओ रायलोगो । सव्वंगीणाभरणदाणेण तद्वरभूरिदविणवियरणेण य सम्माणिऊण विसज्जिओ माइंदजालिओ रन्ना ।

सेणावई वि तहाविहमाइंदजालावलोयणवससमु[3]म्मिलंतगरुयवेरग्गावेगो 'सव्वो संसारसमुत्थवत्थुवित्थरो एवंविहसरूवो' त्ति परि[4]भाविंतो 'अलमित्तो संसारवासेणं' ति कयनिच्छओ भालयलारोवियपाणिसंपुडो रायाणं विन्नविउं पवत्तो—देव !

१ विस्तृतस्तावद् जलप्रवाहः ॥ २ कतिपयमहाऽवल्लकप्रेरितजलकल्लोलान्तरमार्गसञ्चरणा ॥ ३ °मुमिल्लंतगरुयगरुयवेर° खं० प्र० ॥ ४ °भावेंतो 'अलमेत्तो प्र० ॥

॥१७१॥

तुम्हपायप्पसाएण तं नत्थि सुहं जं नोवभुत्तं, सुदुकरं पि तं नत्थि जं न कयं, केवलं विरत्तं संपयं भववासाओ मह मणं, पच्चक्खदिट्ठमाइंदजालतुल्लं व सयलं पडिबंधट्ठाणं, न पारमत्थियं, ता अणुजाणउ देवो ममं तावसदिक्खापडिवत्तिनिमित्तमरन्नगमणाय । महिवइणा जंपियं—सेणाहिव ! किमेवमाउलो होसि ? अज्ज वि न को वि पत्थावो एवंविहकिच्चविसेसस्स, पच्छिमकाले च्चिय एयमायरेज्जासि, न य तुह विप्पओगे खणं पि रइमहमुवलभामि, [न वा] को वि तुमाहिंतो वि मह पडिबंधभायणं ति । सेणावइणा जंपियं—देव !

[1]पत्थावाऽपत्थावो किं को वि अवट्ठिओ जए अत्थि ? । [2]जेत्थुग्गडंडचंडो भमइ कयंतो समीवगओ ॥ १ ॥
कस्स वि पडिहाइ इमं सुदुक्करं देव ! घोरतव-चरणं । माइंदजालसरिसा किंतु भवत्था ठिई सयला ॥ २ ॥
किं वा न मुणामि[3] तुमं नरिंद ! अच्चंतपणयपडिबद्धं ? । केवलमणिच्चभावा होयव्वमवस्सविरहेण ॥ ३ ॥
ता जावऽज्ज वि तुह चलणकमलममिलाणलच्छिलायन्नं । नो अन्नहा पलोएमि देव ! जा देहबलममलं ॥ ४ ॥
जाव न अन्नं पि हु दुक्खकारणं किं पि संघडइ विसमं । ताव तएऽणुन्नाओ वणवासमहं पवज्जामि ॥ ५ ॥
नरनाह ! संपयमिमं सुमिणम्मि वि मा करेज्ज जह कोइ । निच्चावट्ठियरूवो अहवा अजरो व अमरो वा ॥ ६ ॥
चिरपुरिसा सयमेव हि मुणिऊण विणस्सरं भवसरूवं । परिचत्तसयलसंगा मुणिमग्गमदुग्गमं लग्गा ॥ ७ ॥
अम्हे पुण गुरुयणकीरमाणअणुसासणा[4] वि पइदियहं । कह कह वि की[5]वहियया धम्मट्ठमुवट्ठिया इण्हिं ॥ ८ ॥

१ पच्छावा° खं० ॥ २ यत्र उग्रदण्डचण्डः ॥ ३ °मि एवं न° खं० ॥ ४ °णा इ प° प्र० ॥ ५ क्लीबहृदयाः ॥

इमं च सोच्चा भाविविप्पओगदुक्खग्गिरगिरो नरवई विभावियतच्चिच्छओ भणिउं पवत्तो—भो सेणाहिव ! साहेसु किमेवंविहकज्जसज्जीकयचित्तस्स तुह संपइ पियं पणामिज्जउ ? । सेणाहिवेण भणियं—देव ! तुम्हाणुभावाओ अणुभूयपभूयपियपबंधस्स मह किमवरमणणुभूयपुव्वं पियं ठियं जमियाणि मग्गिज्जइ ? केवलं देव ! इममेव पियप्पयाणं—एस मह सुओ जहा नियपायकप्पपायवच्छायाणुवित्ती[1] हवइ निच्चं तहा किच्चं ति । 'एवं काहं'[2] ति पडिस्सुयं भूवइणा । सुमुहुत्ते निवेसिओ धम्मदेवो सेणावइपए । सेणावई वि गतो वणवासं । धम्मदेवो वि पुव्वट्ठिईए रज्जकज्जाइं चिंतिउं पवत्तो ।

एवं वच्चंतम्मि काले विप्पडिवन्नो सिंहलदेसाहिवो पारद्धो गाम-नगर-पुरपउरं वसुंधरमुवद्दविउं । निवेइयं च इमं चाराहिगारनिउत्तनरेहिं सेणाहिवस्स । तेणावि सिट्ठं पुहइवइणो । तं च सोच्चा अच्चंतनिप्फंदलोयणपिसुणियचिंतापब्भारं नरिंदमवलोइऊण भणियं धम्मदेवेण—देव ! अलं चिंताकरणेण, देह एयकालोच्चियं ममाऽऽएसं ति । 'अहो ! पत्थावोचियकारि' त्ति परितोसमुव्वहंतेण नरवइणा पउरकरि-तुरगाइसामग्गीसणाहो सिंहलेसरं पडुच्च पेसिओ एसो । तओ चउरंगबलभरसम्मद्दनिद्दयनिद्दलियमेइणीवट्ठो[3] अकालविलंबं पत्तो सिंहलेसरदेससीमं[4] । संधिं च काउकामेण मुणियतदागमणेण सिंहलरन्ना पेसिया पहाणपुरिसा । कयपायपडणा य विन्नविउं पवत्ता—सेणाहिव ! वयं परमेसरसिंहलाहिवेण तुम्ह समीवे नियदोसनिग्घायणनिमित्तं जाजीवविरोहपरिहारत्थं च कइवयकरि-तुरय-पहाणवत्थुदाणेण संधिं घडिउं पेसिया ता परिच्चयसु कोवकंडं,

१ निजपादकल्पपादपच्छायानुवर्ती ॥ २ काहिं ति खं० प्र० ॥ ३ चतुरङ्गबलभरसम्मर्दनिर्दयनिर्दलितमेदिनीपृष्ठः ॥ ४ °लेसदेससीमसंधिं खं० । °लेसरं देससीससंधिं प्र० ॥

देव ! सट्ठाणचलियंगारयाइगहप्पभवमहामेहमुक्कनीरपूरसमुट्ठाणं[1] ति । रन्ना वुत्तं—केत्तियकालेण पुण इमं ? केत्तियं वा तं जलं ? ति । संवच्छरिएण सिट्ठं—देव ! स[धरा]धरधरावोलणपबलं मुहुत्तमेत्तकालाओ उवरिं ति । ततो भूरिभयतरलतारयं नरवइपुरस्सरसभालोगो गयणंगणे अब्भपडलं पलोइउं पवत्तो । निरुत्तचक्खुक्खेववसतो य महाकट्ठकप्पणाए दिट्ठं हलहरसिचयसामं हत्थप्पमाणमेगमब्भखंडं । 'किमियमप्पवित्थारं काहि ?' त्ति परोप्परदिन्नहत्थतालं हसिऊण जावऽज्ज वि सट्ठाणे न निसीयइ ताव तं दसहत्थप्पमाणं मसीपुंजसच्छायं च जायं ति । अह सविम्हयविप्फारियलोयणाणमेव लोयाणमवलोयंताण तमब्भखंडं अयंडतंडवियसिहंडिमंडलं फुरियसोयामिणीमालं गहिरगज्जिरवावूरियगयणचक्कं[2] उक्कंपियपंथियसत्थं वित्थरियं सयलदिसिवलयम्मि, पयट्टं च मुसलमेत्तधाराहिं वरिसिउं । अवि य—

फालिहदंड व परूढविसहरोह[3] व कयलिथंभ व । उभयंतरुद्धनह-धरणितलविभागा सलिलधारा ॥ १ ॥
नीरंधरुद्धचक्खुप्पहा लहुं भरियभुवणसम-विसमा[4] । आसुत्तियपलयन्नववेल[5] व वियंभिया दूरं ॥ २ ॥
अह खणमेत्तं जा नेव जाइ ता पबलसलिलपूरेण । पूरिज्जंते नयरे समुट्ठिओ लोयतुमुलरवो ॥ ३ ॥
हा नयरदेवयाओ ! किमुवेहह निग्घिणं घणं एवं ? । हा हा जुगक्खय ! कहं तुमं अयंडे वि पत्तो सि ? ॥ ४ ॥
हा पुहइपाल ! पलयंगय व सा तुम्ह पुन्नलच्छी वि ? । कहमन्नहमेवंविह वुट्ठी समुवट्ठिया दुट्ठा ? ॥ ५ ॥

१ स्वस्थानचलिताङ्गारकादिग्रहप्रभवमहामेघमुक्तनीरपूरसमुत्थानमिति ॥ २ °चक्कमुक्कं° खं० प्र० ॥ ३ °सहरो° खं० ॥ ४ °यभव° खं० प्र० ॥ ५ आसूत्रितप्रलयार्णववेला इव ॥

विसहंति य धीमंतो अंतोपसरंतवइरपब्भारा । गूढायारा किं पि हु निमित्त[1]मवलंबिउं गरुया ॥ ५ ॥
ता अपरिभाविऊणं सामुल्लावे वि दूयमग्गम्मि । तव्विहवयणं फरुसं दूरमजुत्तऽम्ह पडिहाइ ॥६॥ किंच—
जइ विमलयाए सलिलस्स तलगए दंसए मणी उदही । तह वि स जाणुपमाणो त्ति मा मणे संठवेज्जासि ॥ ७ ॥
भूरिकरि-तुरय-रह-जोह-कोससंभारसारसामत्थो । सामुल्लावे वि य सिंहलेसरो तुज्झ नो सज्झो ॥ ८ ॥
आयबलं च परबलं भूमिबलं नि[2]तुलं सहाइबलं । बलवइणा परिभाविय भवियव्वं जुज्झसज्जेण ॥ ९ ॥

एवमाइमंतिवग्गगिरं निसामिऊण दिट्ठि[3]सोणिमाजाणावियगरुयकोवावेगो सेणावई भणिउं पवत्तो—मंतिणो वि भविय पागय व्व असमिक्खियभासिणो सयममुणंता वि कज्जपरमत्थं समयसमुचियवत्तारं पि अम्हारिसं निरसंता कुणह जं भे रोयइ—त्ति आसणाओ उट्ठिऊण वच्चंतो बला धरिओ मंतीहिं । 'छंदाणुवित्तिगिज्झो मुक्खो' त्ति लक्खंतेहिं य सायरं संलत्तो एसो—सव्वहा खमसु पढममवराहं, न भुज्जो अकज्जमेवंविहमायरिस्सामो त्ति । ततो सेणावइणा [4]परितोसवसपवसंतवयणसामिगाइकोववियारेण ज्झड त्ति दवावियं पयाणयं । तव्वयणाणंतरमेव चलियं चाउरंगं बलं ।

वियाणियतम्मज्झेण सिंहलेसरेणावि सचिवेहिं सह सु[5]विवेचियकिच्चविसेसेण पगुणीकयसेससामंतसेवगलोगेण विसज्जिओ गरुयारंभो नाम सेणाहिवो परबलाभिमुहं, सिक्खविओ य जहा—रिउसेन्नस्स दंसणं दाऊण [6]पच्छाहुत्तं निं[7]यत्तेज्जासि जाव

१ °मविलं° खं० प्र० ॥ २ निरुपमम् ॥ ३ दृष्टिशोणिमाज्ञापितगुरुककोपावेगः ॥ ४ परितोषवशप्रवसद्वदनश्यामिकादिकोपविकारेण ॥ ५ सुविवेचितकृत्यविशेषेण ॥ ६ पश्चान्मुखम् ॥ ७ °यत्तिज्जा° प्र० ॥

गोदावरीगुहागंभीरपएसं ति । 'जं देवो आणवेइ' त्ति भणिऊण जच्चतुरंगवाहिणीपरिवुडो गरुयारंभो सेणाहिवो नाणा[1]विहविजयचिंधचिंचइयगयणवट्ठो सुहडभुयदंडकुंडलियपयंडकोडंडुड्डीणकंडसंडुड्डमरियपरबलपुरोवत्तिकइवयसुहडो जहुत्तं गोदावरीकंदरोदरं पडुच्च ज्झड त्ति पडिनियत्तो । धम्मदेवसेणावई वि गाढकोवभरदट्ठोट्ठक्खलियक्खराए गिराए संरंभनिब्भरं—

[2]सन्नहह [3]गुडह प[4]क्खरह जाह पहरह पडिक्खलह तुरियं । इय सेणि[5]ए तुरंतो सेणाए समं लहुं चलिओ ॥ १ ॥
पडिबलमणुवच्चंतो संपत्तो गहिरकंदरीविसमं । गोदावरीपरिसरं बहुविहतरुनिवहदुव्विगमं ॥ २ ॥
एत्थंतरम्मि विसमावणीगयं तं वियाणिउं राया । सिंहलनाहो वि ठिओ सवत्तो घडियरिउवेढो ॥ ३ ॥
अणवरयमुक्कसरविसर-सेल्ल-वावल्लि-भल्लि-नाराया । सिंहलसुहडा लग्गा य पहरिउं पडिरिऊहिं समं ॥ ४ ॥
भूमिबलं देहबलं सामिबलं अविकलं धरंतेहिं । तेहिं कलीहिं व लहु धम्मदेवसेणा कया दीणा ॥ ५ ॥
दक्खा वियक्खणा सुकुलसंभवा विस्सुया वि विसमगया। किं नाम कुणंतु भडा खीणधणा परमपुरिस व्व ? ॥ ६ ॥

एवं च निमेसमित्तेण वि हयसुहडे निवडियमहंतसामंते [6]दोहंडियवेयंडे खंडियतुरगतुंडे [7]मुसुमूरियचारुरहवरे दिसोदिसिं पक्खित्ते सिंहलेसरेण रिउबले धम्मएवसेणावई से सावसेसबलसमेओ कह कह वि पलाणो [8]समराजिराओ । 'किमणेण वरागवइदेसियमारणेणं ?' ति पडिनियत्तो सिंहलेसरो । धम्मदेवो वि [9]अच्चंतविलक्खोवगओ तुरियतुरियं दूरं पच्चोसक्किऊण

१ नानाविधविजयचिह्नव्याप्तगगनपृष्ठः सुभटभुजदण्डकुण्डलितप्रचण्डकोदण्डोड्डीनकाण्डषण्डभापितपरबलपुरोवर्त्तिकतिपयसुभटः ॥ २ सकवचा भवत ॥ ३ हस्तिनः कवचयत ॥ ४ अश्वान् कवचयत ॥ ५ सैनिकान् ॥ ६ द्विखण्डितहस्तिनि ॥ ७ भग्नचारुरथवरे ॥ ८ समराङ्गणात् ॥ ९ अत्यन्तवैलक्ष्योपगतः ॥

कयखंधावारनिवेसो ठिओ पच्छिमभूमीए । कमेण य इओ ततो मिलिएसु कइवयसामंताइसु पट्ठिओ सदेसाभिमुहं ।

जाणियपराजयवत्तेण य अंतरा केरलदेसाहिवइणा नियडीसीलयाए सायरमुवनिमंतिऊण सम्माणिओ भोयण-पवरवत्था-ऽलंकाराइदाणेण । भणिओ य एगंते, जहा—सेणावरिट्ठ ! एत्तो सन्निकिट्ठदेसवत्ती महाबलो सामंतो पउर[कोस-]कोट्ठागारो संपयं अप्पबलो वट्टइ, ता जइ तुमं सहाई हवसि ता तं मिलिया चेव गिण्हामो, अद्धद्धेण य तदुवलद्धरिद्धिवित्थरं संविभजामो य । इमं सोच्चा अविभावियकज्जमज्झेण अणालोच्चिय नियमंतिजणेण पडिवन्नं सेणाहिवेण । ततो दोहि वि दिन्नं पयाणयं । अद्धपहे संकेइयनियसुहडेण केरलवइणा सवतो निरुंभिऊण लूडिओ धम्मदेवसेणाहिवई । उद्दालियकरि-तुरगाइपरिग्गहो य सुसाहु व सरीरमित्तो पलाणो एगाए दिसाए । पत्तो य कह कह वि गुरुकिलेसा-ऽऽयासविसोसियसरीरो एगं तावसासमं । कंद-फलाइदाणेण पीणिओ तावसेहिं । वुत्थो य तत्थेव कइवयदिणाणि, चिंतिउं पवत्तो य—अहो ! मे मंदभग्गया, अहो ! असमिक्खियकारिया, जमेवं भुज्जो पराजिओ परेहिं, अवहरियं सवस्सं, संचारिओ सवदिसासु अजसो, जाजीवं पराभवपयमुवणीओ अप्पा, दूरवत्ती जाओ रायपायसेवाए, ता अलं एत्तो सगिहगमणेण, एत्थेव आसमपए पवज्जामि पुवपुरिससेवियं धम्ममग्ग–न्ति पडिवन्नो कुलवइसमीवे तावसदिक्खं । पारद्धा य असमिक्खियनियबलेण निवारिज्जमाणेण वि सेसतावसेहिं विविहा दुक्करतवोविसेसा ।

इओ य सुओ एस वइयरो कित्तिधरनराहिवेण मंतिपमुहलोयातो, जहा—इत्थमित्थं च अणालोच्चियवत्थुसमत्थणेण निन्नासियं सेन्नं धम्मदेवेणं, एगागी य संवुत्तो कत्थइ तावसासमे तावसदिक्खं पवन्नो त्ति । 'हा हा ! कहं तारिसमहापुरिस-

अंगीकरेसु दक्खिन्नं, पडिवज्जसु पणयवच्छल्लेण सप्पुरिसमग्गं, हवउ आचंदकालियं परोप्परपाहुडपेसणेण सिणेहववहारो त्ति । अह अणालोच्चियसमुचियकिच्चविसेसेण कोवभररइयभालवट्टभिउडिणा भणियं सेणाहिवेण—अरे रे दुरायारा ! अम्ह पहुणो देसमसेसं लूंडिऊण[1]मियाणिं संधिकवडेण ममं विप्पलंभिउमुवट्ठिया, किमहं डिंभो जमेवं मुहमहुरवयणमित्तेण वि विप्पयारिज्जामि ? ता रे ! साहह तस्स रन्नो नीसेसकरि-तुरय-कोस-कोट्ठागारसमप्पणेण आजीवं निब्भिंच[2]भिच्चभावदंसणेण य सेवावित्तिं पडिवज्जसु, विसिट्ठं ट्ठाणंतरं वा अप्पणो पलोएसु त्ति, एस सेणावइणो संधिबंधमुद्दाविन्नासो त्ति । तेहिं भणियं—सेणाहिव ! कइवयनिस्सारखेडयलूडणेण वि[3] एवंविहपयंडडंडडामरमजुत्तं ?–ति परिभाविऊण आएसमुचियं वियरसु त्ति । सेणाहिवेण भणियं—अत्थि कोइ एत्थ जो कंठे धरिऊण निच्छुभइ इमे अलियजंपिरे दूयाहमे ? त्ति । ततो निद्धाडिया ते सेवगेहिं । गएसु य तेसु अवक्खंददाणाय दवाविया सन्नाहभेरी, पउणीकराविय चाउरंगं बलं । 'अहह ! सहसाकारि' त्ति जायचित्तसंतावेण भणियं से मंतिं[4]जणेण—भो सेणाहिव !

सम्ममणालोच्चियकीरमाणकज्जाण पमुहमहुराण । परिणइदुहाण जाणसु किंपागफलेहिं तुल्लत्तं ॥ १ ॥
जइ कह वि कज्ज-कारणवसेण केणावि सिंहलनिवेण । संधिं पडुच्च पणई पयासिया दंसिओ सामो ॥ २ ॥
ता किं तं[5]मेत्तिएण वि उत्तुणओ भविय कयफडाडोवो । संभावियरिउविजओ रणत्थमित्थं पयट्टो सि ? ॥ ३ ॥
किं मुणसि तुमं न इमं दूरं ओसरइ पहरिउं मेसो । संकुइय केसरी कोवओ य पुण उप्पइउकामो ? ॥ ४ ॥

१ लुण्टयित्वा ॥ २ निर्भृत्यभृत्यभावदर्शनेन ॥ ३ वि न प° खं० प्र० ॥ ४ °तिणा ज° खं० प्र० ॥ ५ त्वमेतावताऽपि गर्वितो भूत्वा ॥

अनालोचि-तकारित्वे दोषः

इहलोय-पारलोइयसुहाणऽणालोचियं करिंतेण । सव्वं च किच्चमबुहेण उयह[1] सलिलंजली दिन्नो ॥ १ ॥
सव्वा वि कज्जसिद्धी असमिक्खापबलपवणपडिहणिया । दीवयसिहि[2] व्व विज्झाइ विहियबहुविहपयत्ता वि ॥ २ ॥
असमिक्खिउं पयट्टा सुहे वि कज्जम्मि नंदिसेणाई । सुव्वंति पडिनियत्ता करिणो गिरिभग्गदसण व्व ॥ ३ ॥

किञ्च—यद् वारि[3]बन्धविधुराः करिणो यदग्निदीप्यत्प्रदीपकलिकाकुलिताः पतङ्गाः ।
गानावधानविपदो हरिणाश्च यच्चानालोचनाविलसितं तदशेषमाहुः ॥ १ ॥
कार्यप्रसाधनविधावधिकान्तरङ्गरङ्गद्दला गतमला मतिरेव मुख्या ।
पूर्वा-ऽपरव्यतिकरव्यवलोकनेन, सा कामधेनुरिव किं न शुभं विधत्ते ? ॥ २ ॥
धर्मक्रियासु विशदास्वपि सम्प्रवृत्तः, नानापदां पदमभूदयशस्ततेर्वा ।
को नाम नेह रभसादविचिन्त्य कृत्या-ऽकृत्यस्वरूपमनिरूपितभाविभावः ? ॥ ३ ॥
तदेवमालोच्य विशुद्धबुद्ध्या, स्वयं परेणापि बहुश्रुतेन ।
प्रवर्तमानः सकलक्रियासु, स्याद् भाजनं निर्मलधर्मसिद्धेः ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे आलोचकपुरुषव्य[4]तिरेके धर्मदेवकथानकं समाप्तम् ॥ २३ ॥

१ पश्यत ॥ २ प्रदीपाग्निः ॥ ३ हस्तिग्रहणार्थं बन्धनार्थं वा कृता कचवरादिपूर्णा महती गर्त्ता 'वारि' इत्युच्यते ॥ ४ °व्यतिकरे धर्म° प्र० ॥

उपाय-चिन्तायाः स्वरूपम्

आलोयगो य पुरिसो उवायदरिसी हविज्ज[1] जइ सम्मं । आराहिज्जा[2] ता धम्ममग्गमिति संपयं वोच्छं ॥ १ ॥
पारद्धम्मि उवेए[3] वत्थुम्मि विग्घसंभवे कह वि । तव्विग्घघायणखमो वावारो भन्नइ उवाओ ॥ २ ॥
सो पुण कस्सइ सुविसुद्धबुद्धिणो तक्खणं पडिप्फलइ । कुसला वि विसमकज्जे बहवो मुज्झंति पाएण ॥ ३ ॥
सिज्झंति अत्थ-कामा धम्मो य उवायओ परं धम्मे । सम्मं उवायचिंता काम-ऽत्थाणं हवउ किं पि ॥ ४ ॥
धम्माउ च्चिय जम्हा अत्थो कामो य दीसए हुंतो । तेहिंतो पुण धम्मो सक्खा लक्खिज्जए नेव ॥ ५ ॥
इय धम्मविहाणम्मि उवायपरिमग्गणं गुणोहकरं । सेसपयत्थेहिंतो सव्वपयत्तेण कायव्वं ॥ ६ ॥
संभवइ सो वि देसो कालो वा जत्थ विक्कमुक्करिसो । होइ विहलो[4] हि केवलमुवायओ कज्जनिप्फत्ती ॥ ७ ॥
समुचिय[5]विसयनिजुंजियउवायवावारनिरसियावाया । साहिंति वंछियत्थं नीसेसं विजयदेवो व्व ॥ ८ ॥

तहाहि—अत्थि दाहिणदिसाविलासिणीभालतिलयभूया, आइवराहमुत्ति व्व सुरवरविसरविराइया, कणयसेलमेहल[6] व्व पुन्नागसंताणयसमलंकिया, पोक्खरणि व्व बहुविह[7]नीरयविराइया वि अवणीरयविरहिया, जायव[8]कुलनहयलमयंकमहासामं-

१ हवेज्ज प्र० ॥ २ °राहेज्जा प्र० ॥ ३ 'उपेये' साध्ये ॥ ४ °हलेहिं के° खं० प्र० ॥ ५ समुचितविषयनियुक्तोपायव्यापारनिरस्तापायाः । साधयन्ति ॥ ६ 'कनकशैलमेखला' मेरुमेखला पुन्नागवृक्षैः सन्तानककल्पपादपैश्च समलङ्कृता, नगरी पुनः पुंनागसन्तानकेन–उत्तमपुरुषसमूहेन समलङ्कृता ॥ ७ पुष्करणीपक्षे—बहुविधैः नीरजैः–कमलैः विराजिता अपि 'अपनीरजविरहिता' कमलसहिता इत्यत्र किमाश्चर्यम् ? आश्चर्यसूचनं त्विहैवम्—अपनीरजैः–दुष्टकमलैः विरहिता, यद्वा अवनीरजसा कर्दमेन विरहिता । नगरीपक्षे तु—बहुविधैः नीरजोभिः–निष्पापैः श्रमणादिभिः जनैः विराजिता, 'अपि' पुनः अपनीरजोभिः–दुष्टश्रमणादिभिः वीथ्यादीनां स्वच्छत्वेन वा अवनीरजसा विरहिता । नगरीपक्षे विरोधाऽऽश्चर्यादिकं स्वयमभ्यूह्यम् ॥ ८ यादवकुलनभस्तलमृ-

ताणंतदेवभुयदंडचंडिमापडिरुद्धडिंब-डमरा महुरा नाम नयरी । तहिं च वत्थव्वो, तिवग्गसंपाडणपयडपुरिसयारो, सायरो[1] व सम्मग्गगुणरयणावासो सिरिदेवो नाम सेट्ठी । रूवाइगुणमाणिक्कमंडिया भवणदेवय व्व विरायमाणा वसुमई से भज्जा । ताण य वेयं[2] व सव्वलोगाहिमया, महुमहणभुयपरिह व्व दूरमुल्लासियलच्छिणो चउरो पुत्ता—पढमो जओ नाम, बीओ विजओ, तइओ देवो, चउत्थो विजयदेवो त्ति । सव्वे वि कलाकुसला जहासामत्थमत्थोवज्जणाइसु वावारेसु अणवरयं पयट्टंता दियहाइं विइक्कमाविंति, नियनियदविणोवज्जणा[णु]रूवं च दाण-भोगाइसु अभिरमंति ।

अवरवासरे विजयदेवेण पुव्व[3]देसागयगायणुग्गाइयगीयाइपरितोसिएण दवावियं दम्मसोलसयं पारितोसियं, वित्थरियं च सव्वनयरीए एयं । निसामियं च जेट्ठभाउणा जएण, कुविओ एसो, साहियमिमं सेसभाउयाणं पिउणो य । ते य कोवभरायंबिरच्छिविच्छोहा विच्छायमुहा एगत्थ मिलिया विजयदेवं भणिउं पवत्ता—

रे दुट्ठ ! धिट्ठ ! निट्ठविउमेवमब्भुज्जतो सि कीस धणं ?। किं इमिणा णे[4] भुज्जो कज्जं थेवं पि न हु होही ? ॥ १ ॥

किं वा पिया-पियामहपमुहमहापुरिसमज्झयारातो । केणावि सुयं तुमए दिन्नं एवंविहं दाणं ? ॥ २ ॥

किं वा न मुणसि पइदिणघय-तंदुल-वत्थ-गोरसाइगयं । दव्वयमइगरुयं हुंतं मणसा वि दुव्विसहं ? ॥ ३ ॥

गाङ्कमहासामन्तानन्तदेवभुजदण्डचण्डिमप्रतिरुद्धभयविप्लवा । अनन्तदेवः—शेषशायी कृष्णः ॥

१ सागरपक्षे समग्रगुणानि यानि रत्नानि तदावासः, श्रेष्ठी पुनः समग्रगुणा एव रत्नानि तदावासः ॥ २ वेदाः इव सर्वलोकाभिमताः, मधुमथनभुजपरिघ इव दूरम् उल्लासितलक्ष्मीकाः ॥ ३ पूर्वदेशागतगायनोद्गीतगीतादिपरितोषितेन ॥ ४ अस्माकम् ॥ ५ °सयं खं० ॥

पुत्तो वि होऊण एवं मुद्धबुद्धी एस जाओ ?' त्ति सपरिसो राया सोइउं पवत्तो ।

धम्मदेवो वि विगिट्ठतवोविसेसकिसीकयसरीरो उट्ठिउं पि सयमपारिंतो कुलवइणा निवारिज्जमाणो वि पाओवगमणविहिं पवन्नो । सव्वाहारपरिहारवसेण य अच्चंतकिलंतो छुहाए कहं पि रइमलहंतो य भणिओ वुड्ढतावसेण—भो मुणिवर ! बाढमजुत्तो इत्थं हढेण जीय[1]चागो, पुराणेसु वि एवंविहमरणे कुगइकित्तणाओ, तहाहि—

अ[2]सुर्या[3] नाम[4] ये लोका अ[5]न्धेन तमसाऽऽवृताः । तां[6] गतिं ते गमिष्यन्ति ये[7] के चाऽऽ[8]त्महनो जना[9]ः ॥ १ ॥ इति ।

उज्झसु अणसणविहिं, करेसु ताव तावसजणसमुचियं पि कंद-कयलाइभोयणं, पच्छा ज्झाणपयरिसारोहणेण अप्पाणं उ[10]ज्झोसिज्जासि त्ति । समिक्खारहियत्तणेण य 'तह' त्ति पडिस्सुयं धम्मदेवेण, भुत्तं च जहिच्छं चिरछुहावाएण कंद-कइला[11]इयं । केसियकायत्तणेण य सं[12]मुप्पन्नोदिन्नविसूइयावियारो विरसमारसंतो रा[13]सभो व्व पंचत्तमुवगओ एसो त्ति ।

१ जीवितत्यागः ॥ २ असूर्या खं० प्र० ॥ ३ "असुर्याः परमात्मभावमद्वयमपेक्ष्य देवादयोऽप्यसुराः, तेषां च स्वभूता लोका असुर्या नाम ।" इति ईशावास्योपनिषद्भाष्ये ॥ ४ °म ते लो° ईशावास्योपनिषदि ॥ ५ "अन्धेन अदर्शनात्मकेन अज्ञानात्मकेन तमसा" इति ई० वा० भाष्ये ॥ ६ ताँस्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति ईशावास्ये ॥ ७ ये नात्महनो...ज° खं० । ये आत्महनोर...ज° प्र० ॥ ८ "आत्मानं घ्नन्तीत्यात्महनः, विद्यमानस्यात्मनो यत् कार्यं फलं अजरामरत्वादिसंवेदनलक्षणं तद् हतस्येव तिरोभूतं भवतीति प्राकृता अविद्वांसो जना आत्महन उच्यन्ते । तेन ह्यात्महननदोषेण संसरन्ति ते ।" इति ई० वा० भाष्ये ॥ ९ मन्त्रोऽयम् ईशावास्योपनिषदि तृतीयः ॥ १० जुषिष्यसे ॥ ११ °कयलाइयं । किसि° प्र० ॥ १२ समुत्पन्नोदीर्णविसूचिकाविकारः ॥ १३ °सभु व्व प्र० ॥

सरीरावट्ठंभो 'तमिमं गुरुवयणावयन्नणदुक्कयकिंपागकुसुमुट्ठाणं' ति भुज्जो भुज्जो परिभाविंतो अच्छिउं पवत्तो । सत्थलोगो वि नियगसयणजणेण तहाविहदाणपुव्वयं मोयाविओ गओ नियनियट्ठाणं ।

ततो चिंतियं विजयदेवेण—कहमहमियाणिं नरयभीसणे एगागी निवसिस्सामि ? करेमि किं पि उवायं जेणोवलद्ध-मोक्खो मुणि व्व निव्वुत्तो हवामि त्ति । 'को पुण मोक्खोवातो ?' त्ति सम्मं पलोइंतेण गुत्तिवालसुओ उप्फेरमहावाहिविहुरो दिट्ठो । अह तक्कालसमुवलद्धोवाएण भणिओ अणेण गोत्तिपालो—अहो भद्द ! कीस एवमायासिज्जंतं विसीदंतं च उवेहसि बालयं ? न करेसि किं पि उवायं ? ति । गुत्तिवालेण भणियं—महाभाग ! कयाणि काणि वि ओसहाणि परं न जातो को वि उवयारो । विजयदेवेण भणियं—अत्थि बहुसो उवलद्धपच्चयं पच्चंतवासिणा सबरमुणिणा सिट्ठं एगं महोसहं । तेण जंपियं—जइ एवं ता साहेसु कयरं तं ? ति । विजयदेवेण भणियं—निसामेहि—

छायातरु-सिरिफल-फलिणिकंद-कंदोट्टकाढओ पीओ । उप्फेरं फारं पि हु फेडइ असणं व अहिफोडो ॥ १ ॥

गुत्तिवालेण भणियं—अत्थि एसो जोगो, केवलं ओसहाण[1]भिन्नेण न मए मीलिउं तीरइ । विजयदेवेणं भणियं—किमिह अन्नं भण्णइ ? जइ एत्थ पत्थावे न इमं जोगं कुणइ एस बालो ता निच्छियं कालाइक्कंतकरणे वि न गुणंतरं किं पि[2] समासाइस्सइ त्ति । 'अवितहमेयं' ति भीओ गुत्तिवालो, आउलसरीरो य पुच्छिओ गेहिणीए, सिट्ठो अणेण सव्वो वइयरो ।

कर्णनदुष्कृतकिम्पाककुसुमोत्थानम्' इति भूयो भूयः ॥

१ औषधानभिज्ञेन ॥ २ पि न समासाईयइ त्ति खं० प्र० । किमपि न समासादयिष्यति ॥

तीए जंपियं—किमणेण कालविलंबेण ? गुत्तिगिहातो कड्ढिऊण दिणमेगं मुचइ एस पुरिसो, ओसहमीलणे कए पुणरवि घेत्तव्वो, न को वि किं पि मुणिहि त्ति । तहेव विहियं गु[1]त्तिवालेण । संबलहत्थसहाइणा य समं विसं[2]ज्जिओ एसो ओसहमीलणत्थं, गतो य विविहोसहीसहस्ससंकुलं गिरिनिगुंजवणं, इओ तओ ताव तदब्भंतरे भमिओ जाव आगया रयणी, पसुत्तो तत्थेव । ततो निब्भरनिद्दामंदीकयचेयन्ने पसुत्ते सहायम्मि पलाणो विजयदेवो । पभायसमए पडिबुद्धो विलक्खो गओ सगिहमियरो ।

विजयदेवो वि वच्चमाणो पत्तो दसपुरं, उवविट्ठो एगस्स वणियस्स आ[3]वणे । पुडिगाइबंधणेण कयमणेण वणियस्स साहेज्जं । भोयणसमए य नीतो वणिएण सगिहं, समपडिवत्तीए कारावितो भोयणं, 'सुइसील-समायारो' त्ति धरिओ अप्पणो समीवे । मासावसाणे य कया पंचदीणार[4]पयाणमेत्ता एयस्स वित्ती । ठिओ विजयदेवो सायरं, ववहरिउं पवत्तो य । कइवयमासेहिं लद्धा पन्नासं दीणारा । 'जायं पच्छयणं' ति वणियमापुच्छिऊण गतो गयपुरं । तहिं च इतो ततो परि-भममाणस्स मिलिओ एगो रयणवणिओ । तेण य दंसियमेगंते महामोल्लं माणिक्कं । सव्वरयणगुणोववेयं महाइसयं च तमव-लोइऊण विजयदेवेण चिंतियं—

अच्चंतसिणिद्धं विप्फुरंतकिरणावलीदलियतिमिरं । पुन्नेहिं लब्भइ परं एवंविहमुत्तमं रयणं ॥ १ ॥

भूय-पिसाया साइणि-रक्खा जक्खा य ताव पीडंति । जाव न अज्ज वि नूणं पाविज्जइ एरिसं रयणं ॥ २ ॥

१ गोत्ति° प्र० ॥ २ विज्झविओ खं० ॥ ३ आसणे खं० ॥ ४ °पयमे° खं० ॥

दोगच्चचक्कमक्कमइ निक्किवं विक्कमंति रिउणो वि । ताव नरं नो घिप्पइ जावऽज्ज वि एरिसं रयणं ॥ ३ ॥
इय [1]एवंविहविलसंतभूरिसंकप्पवाउलियहियओ । तल्लाभोवायमपेच्छिरो य विच्छायमुहसोहो ॥ ४ ॥
सुन्नो व मुच्छिओ इव चित्तालिहिओ व कयसमाहि व । वट्टंतो सो भणिओ सविम्हयं रयणवणिएण ॥ ५ ॥

भो भो वणियसुय ! किमेवं सामलमुहो ज्झायसि ? त्ति । विजयदेवेण जंपियं—न किं पि । रयणवणिएण भणियं—तह वि कहेसु किं पि रयणगयं गुण-दोसं जमवलोइऊण तुममेवं विमणदुम्मणो संवुत्तो सि । विजयदेवेण जंपियं—पत्थावे साहइस्सामि । तओ लग्गो इयरो [2]गाढग्गहेण पुच्छिउं । एत्थंतरे रायपट्टहत्थी उम्मूलियालाणखंभो निवाडियभवणभित्तिभागो संखोभियपुरजणो तं पएसमणुपत्तो । पलाणो तद्देसवत्ती लोगो । विजयदेवो वि इमिण च्चिय कइयवेण अवक्कंतो ततो पएसाओ ।

अवरदिणे [3]पइरिक्के कहिं पि दाणाभिनंदियं काऊण पुच्छिया रयणवणियदासी—भद्दे ! तुह सामिणा माणिक्कमिमं कहमुवलद्धं ? ति । तीए जंपियं—भिल्लपल्लिमुवगएण मह सामिणा पहविणासियसत्थवाहोवलद्धरिद्धिवित्थराओ भिल्लसयासातो कइवयदीणारोवलद्धं ति । एवं च [4]वियाणियमाणिक्कुट्ठाणपारियावणियाविसेसो विजयदेवो चित्तब्भंतरुब्भिन्नोवायविभागो गतो एगया रयणवणियसमीवे । दिन्नासणो य भणितो तेण—भो विजयदेव ! सव्वहा साहेसु संपयं पुव्वपुट्ठं ति । विजयदेवेण भणियं—

[5]अच्चंतपयत्तुवलद्धवत्थुविसयम्मि दोस-गुणकहणं । जुत्तं न होइ कुसलाण हियय[6]कालुस्सजणयं ति ॥ १ ॥

१ एवंविधविलसद्भूरिसङ्कल्पव्याकुलितहृदयः ॥ २ गाढाग्रहेण ॥ ३ एकान्ते इत्यर्थः ॥ ४ विज्ञातमाणिक्योत्थानपरियापनिकाविशेषः ॥ ५ अत्यन्तप्रयत्नोपलब्धवस्तुविषये ॥ ६ °यस्सलु(सल्ल)स्स ज° प्र० ॥

सोहसि दिंतो वि तुमं अच्चत्थं रि[1]त्थरासिमज्जिणिउं । पुव्वपुरिसज्जिए पुण किं गिज्जइ चागसामत्थं ? ॥ ४ ॥

इमं च निसामिऊण मन्नुभरसगग्गिरसरेण भणियं विजयदेवेणं—सव्वहा खमह मह एक्कमवराहं, न भुज्जो एरिसं काहामि, तहा अणुगिण्हह देसंतरेसु दविणोवज्जणनिमित्तमणुन्नादाणेणं ति । एत्थंतरे [2]कणिट्ठावच्चमहापेमाणुबंधकायरीकयहियओ ईसिनयणनलिणनीसरंतंसुजलो जणगो भणिउमारद्धो—रे पुत्ता ! सव्वहा एगवयणेण वि निसिद्धा तुब्भे अच्छह, मा मइ जीवंते[3] देसंतरगमणं कहं पि करेज्जह, पच्छा जहावंछियमणुट्ठेज्जह त्ति । एवमायन्निऊण सभय-सलज्जेहिं जंपियं जयप्पमुहेहिं—ताय ! एवं काहामो त्ति । ततो निम्मविया चत्तारि हट्टा, उवविट्ठा य तेसु पिहो पिहो चउरो वि भायरो, पारद्धा ववहरिउं । मासावसाणे य [4]आय-वयविसुद्धिं विभाविंति दव्वोवज्जणं ति ।

अन्नया य विजयदेवो[5] य तहाविहविहवोवज्जणारहियं हट्टवावारमसारमवधारिऊण [6]सरियपुव्वाणुसतो संबलगमेत्तमादाय पट्ठिओ उत्तरावहं । सत्थेण सह वच्चंतो य पडिओ महाडवीए । तम्मज्झमणुपत्तस्स य अयंडे च्चिय [7]पयंडकंडवरिसदुद्धरिसा कीणासदासनिव्विसेसा चिलायधाडी आवडिया, [8]निवाडियसत्थसुहडा बंदिग्गाहपग्गहियजणा गया जहागयं ति । विजयदेवो वि [9]तंविसमदेव्वदसावागवागुराकूडनिरुद्धो मुद्धहरिणो व्व दिवसावसाणोवलद्धपज्जुसियविरसावसेसासणमुट्ठि[क]य-

१ 'रिक्थराशिं' धनराशिम् ॥ २ कनिष्ठापत्यमहाप्रेमानुबन्धकातरीकृतहृदयः ईषन्नयननलिननिःसरदश्रुजलः ॥ ३ °तेहिं दे° खं० ॥ ४ आयव्ययविशुद्धिम् ॥ ५ °वो अ तहा° खं० ॥ ६ स्मृतपूर्वानुशयः ॥ ७ प्रचण्डकाण्डवर्षादुर्धर्षा कीनाशदासनिर्विशेषा ॥ ८ निपातितसार्थसुभटा बन्दिग्राहप्रगृहीतजना ॥ ९ तद्विषमदैवदशापाकवागुराकूटनिरुद्धः मुग्धहरिण इव दिवसावसानोपलब्धपर्युषितविरसावशेषाशनमुष्टिकृतशरीरावष्टम्भः 'तदिदं गुरुवचनाप-

देवभद्दसूरि-
विरइओ

कहारयण-
कोसो ॥
सामन्नगु-
णाहिगारो।

॥१७९॥

उपाय-
चिन्तायां
विजयदेव-
कथानकम्
२४।

केणइ पुव्वकयसुकयाणुभावेण मुक्को सत्थवाहो अहं पि, ता भद्द ! [1]अणुसरियपुव्वएयसंसग्गसमुवलद्धाणत्थो सामसुहच्छायत्त-मुवग[2]ओ त्ति। इमं च सोच्चा रयणवणिएण भणियं—अत्थि एवं जहा तुमं भणसि, पल्लीए वाणिज्जोवगएण भिल्लसयासातो मए इममुवलद्धं, अहो ! ते पन्नातिसओ जं ईसिदंसणे वि इमं एवं नाम पच्चभिजाणसि? एवं च किमणेण घरे धरिएण? ता सव्वहा भो विजयदेव ! तुममेव केणइ अमुणिज्जंतो जह तह विकिणसु इमं, बहुजणदंसिज्जमाणं हि मा कोइ पच्चभिजाणिहि त्ति। विजयदेवेण भणियं—करेमि अहं एयं, केवलं विक्कीयमाणं किमिमं लहिहि ? त्ति, थोवलाभे चित्तसंतावो तुज्झ होही, ता सयं चेव विकिणसु। रयणवणिएण भणियं—लहउ किं पि, कुणसु मह कज्जमिमं ति। अणिच्छंतस्स वि तस्स समप्पियं तं माणिक्कं। अंतोपसरंतपमोयपब्भारो तमादाय इओ तओ वीहिमज्झे भमिऊण पुव्वविढत्ते पन्नासं दीणारे घेत्तूण समागओ रयणवणियमंदिरं। समप्पिया से दीणारपोत्तिया 'एयं तव्विक्कतोवलद्धं धणं' ति। तुट्ठो रयणवणिओ, पडिगाहिया दीणारपोत्तिया, 'साहु ! पडिवन्नवच्छल ! साहु !' त्ति अभिणंदिओ विजयदेवो। तंबोलाइदाणकयसम्माणो य गतो [3]सं ठाणं।

जाए य रयणिसमए रयणुवलंभुब्भवंतपरितोसो। चिंतेइ सो न जुत्तं ए[4]त्तो [5]अत्थं अवत्थाणं ॥ १ ॥
मा इह कहं पि कत्तो वि को वि मुणिऊण वइयरमिमस्स। ववसेज्जऽणज्जकज्जं सज्जो काउं तयत्थी मे ॥ २ ॥
अहवा एयद्दाया वि दइवदुज्जोगतो मुणियसारो। संजायपच्छयावो पुण घेत्तुमिमं समीहिज्जा ॥ ३ ॥
न य एत्थावत्थाणे पेहेमि पओयणं पि किं पि परं। सिद्धे य एयलाभे सिद्धं मज्झं पि नीसेसं ॥ ४ ॥

१ अनुस्मृतपूर्वैतत्संसर्गसमुपलब्धानर्थः ॥ २ °ओ त्ति। इ° खं० प्र० ॥ ३ सट्ठाणं प्र० ॥ ४ एसो अ° प्र० ॥ ५ अत्र ॥

॥१७९॥

एवं परिभाविऊण पडिवन्नतिदंडिवेसो कन्नवट्टिनिबिडसीवि[1]यरयणं कोपीणयपट्टं संवट्टियं दंडग्गे गाढं [2]बंधिऊण मज्झरत्तसमयम्मि नीहरितो गयउराओ। पच्चवायसंकिओ य [3]पगुणपहपरिहारेण गओ पाडलिपुरं। दूरातो च्चिय पासायगवक्खगयाए कयमणहरसिंगारसारनेवच्छाए मयणमंजूसाभिहाणाए सलीलं रायमग्गमवलोयंतीए दिट्ठो एसो विलासिणीए।

अह [4]फलिहकुंभअंतो जलंतदीवयपह व्व सव्वंगं। बहिया उज्जोयन्ती छाया रयणाणुभावभवा ॥ १ ॥
दिट्ठा से कुसलाए तीए तो चिंतियं हिययमज्झे। दिव्वमणि-मंतजुत्तेण नूण हो[5]यव्वमिमिण त्ति ॥ २ ॥
[6]रससंभियजोयणसंभवे वि दीसइ न एरिसी जोण्हा। सव्वंगसंगिणी रिद्धिवित्थ[7]रुत्थंभियस्सावि ॥ ३ ॥
कासायवत्थधारी जइ वि हु सकारवज्जियसरीरो। तह वि हु कोइ महप्पा दीसंतमहप्पभावोऽयं ॥ ४ ॥

एवं परिभाविऊण जाव सा गवक्खाओ ओइन्ना गया भवणंगणं ताव पत्तो तमुद्देसं विजयदेवो। ततो सविलासपेसियकुवलयदलदीहरच्छीए अंजलीबंधपुरस्सरं भणितो तीए—भो देवाणुप्पिय ! पसीयसु इह वीसामकरणेणं ति। ततो सुसंगोवि[8]यत्तणेण दूरपमुक्कमाणिक्कपणासासंको 'सायरं तीए उवनिमंतितो' त्ति पविट्ठो भवणं। दवावियं तीए आसणं, पक्खालाविया चलणा। खणंतरे परमायरेण काराविओ मज्जणं, गोसीसचंदणविलित्तगत्तो य सुसंभियभूरिरसोवेयं भुंजावितो भोयणं, अक्खजूयाइणा कीलाविसेसेण दिणावसाणं जाव रमाविओ य।

१ °यरयणं के। पणय° खं० ॥ २ बंधेऊ° प्र० ॥ ३ 'प्रगुणपथपरिहारेण' मुख्यमार्गत्यागेन ॥ ४ स्फटिककुम्भान्तः ॥ ५ °व्वममिण खं० प्र० ॥ ६ रससम्भृतलोचनसम्भवेऽपि। 'जोयण'शब्दो लोचनार्थको देशीनाममालायाम् ॥ ७ °रच्चिय° खं० ॥ ८ °यअत्त° खं० प्र०। सुसङ्गोपितत्वेन ॥

॥१७९॥

जाए य रयणीसमए सुकुमालहंसतूलीनिंव्विसेसमिउफासाए उभयंतठविओवहाणमणहराए सोयाविओ सेज्जाए। निरूविया य नियधूया सरीरसंवाहणाइसुस्सूसाकरणत्थमेयस्स। भणिया य सा रहसि—वच्छे मयणसुंदरि ! मंतसिद्धिवसतो रयणाइस-आणुभावतो वा सस्सिरीतो एस कोइ महप्पा तुहपुन्नपगरिसागरिसितो व इहइं वट्टइ ता सम्ममणुचरेज्जासि त्ति। 'तह' त्ति पडिसुणिय पारद्धा सा तहेव वट्टिउं। अह सुहभोयण-सयण-सरीरसंवाहणाइपीणियसरीरो निप्पच्चूहगेहोवगतो निब्भरं पसुत्तो एसो।

पम्मुक्कघोरघुरुडुक्कनिब्भरं सोविरं च तं नाउं। अच्चंतविमलबुद्धी परिचिंतइ मयणमंजूसा ॥ १ ॥
संसिरीयसरीरो कोइ एस वइदेसिओऽम्ह पडिहाइ। न य दीसइ पच्चक्खेण किं पि तक्कारणं ताव ॥ २ ॥
जइ मंत-तंतसिद्धीए एस एवं विरायमाणंगो। ता विणयवित्ति-सम्माणदाण-सेवाइणा गिज्झो ॥ ३ ॥
अह बज्झं पि हु संभवइ किं पि पेहेमि डंडबद्धं ता। कोवीणमिमं मा होज्ज एत्थ रयणाइ संजमियं ॥ ४ ॥
इय सुहुमबुद्धिनिच्छइयकज्जमज्झाए डंडगयवत्थं। तं पेहिरीए निउणं सहसा माणिक्कमुवलद्धं ॥ ५ ॥
पुणरवि डंडग्गे बंधिऊण पुव्वट्ठिईए तं वत्थं। उवलद्धवंछियत्था वीसत्था निब्भरं सुत्ता ॥ ६ ॥

जाए य पभायसमए, समुग्गयम्मि मायंडमंडले, विगलंतीसु दिसिवहूगंडत्थलीमियमयपत्तवल्लीसु व तिमिरमंजरीसु, आणंदनिब्भरं रसिएसु चक्कवायकुलेसु, पडिदेवभवणं ताडिएसु संझाबलिपडुपडह-मुयंगपमुहजयतूरेसु पबुद्धो विजयदेवो।

१ °निवेसविसेसमि° प्र० ॥ २ °इसुआणुभावत्तो वा खं०। °इसुअणुभावतो वा प्र०। रत्नातिशयानुभावतः ॥ ३ ससरीरसरी° खं० ॥ ४ °मिया प्र० ॥ ५ °यट्ठा वी° प्र० ॥ ६ दिग्वधूगण्डस्थलीमृगमदपत्रवल्लीषु ॥ ७ सन्ध्याबलिः—प्रभातसन्ध्यापूजा ॥

भवियव्वं जं जह जम्मि देस-कालम्मि जत्थ वा देसे। तं तम्मि तहा तत्थेव होइ किं भूरिभणणेण ? ॥ २ ॥
इय कइयवेण गंभीरवयणनिवहं निसामिउं तस्स। अविमुणियरयणगुण-दोसवित्थरो संकिओ वणिओ ॥ ३ ॥
सायरविलइयभालयलपाणिकमलो पयंपए एवं। भो विजयदेव ! सव्वायरेण मह पुच्छिरस्सावि ॥ ४ ॥
कीस न फुडक्खरं कहसि ? किं पि नो सुंदरेण वि इमेण। गिहधरिएणं कज्जं जइ दुट्ठं तुज्झ पडिहाइ ॥ ५ ॥
अच्चंतमणहरेण वि दुट्ठेण गिहट्ठिएण को व गुणो ?। ता निस्संको माणिक्कदोस-गुणविसयमुवइससु ॥ ६ ॥

एवं निसामिऊण बुज्झियतम्मज्झेण अलक्खावियतदत्थिचित्तेण भणियं विजयदेवेण—भो महायस ! को हं ? को वा मे सत्थपरमत्थपरिन्नाणपरिस्समो ? किं वा मए दिट्ठं जेण भुज्जो भुज्जो पुच्छसि ममं ? न हि विन्नाणलवमित्तेण जह तह जंपिउं जुत्तं। रयणवणिएण भणियं—अलं बहुवायावित्थरेण, परिकहसु सव्वहा, कीस तुममिमं पलोयंतो सामसुहच्छवी संवुत्तो सि ?। विजयदेवेण जंपियं—जं जस्स अणिट्ठं तं तस्स जइ वि संसिउमजुत्तं तहावि तुह गरुयवयणोवरोहओ सीसइ, केवलं न रूसियव्वं तुमए, इमस्स हि माणिक्कस्स पसाएण अहमिममवत्थं पत्तो। रयणवणिएण भणियं—कहं च्चिय ?। इयरेण वुत्तं—निसामेसु, जस्स सत्थवाहस्स हत्थे इमं माणिक्कमासि तस्स सत्थे मिलिओ अहं पि संबलगसणाहो इंतो, जायमेत्तीभावेण सत्थवाहेण पलोयाविओ इमं रयणं, एयकिरणुज्जलयाइगुणेण अहं सत्थवई य परं पहरिसमुवगया,

अह अडविमज्झनिवडिया गहिया भिल्लेहिं बंदिगाहेण। नीया [अम्हे] पल्लिं सहाविया विविहदुक्खाइं ॥ १ ॥

१ °विरइ° प्र० ॥ २ °ज्झेणं अ° प्र० ॥ ३ °ल्लेण बं° प्र० ॥

धीमंतो पुण अन्तो पहरिसमतिउद्धुरं पि धारिंता । रयणायर व्व कलिउं कुसलेण वि नो तं[1]रिज्जंति ॥ ३ ॥

ता वे[2]ट्टिज्जसु तह कह वि पुत्ति ! सुनिउत्तचित्तवावारा । जह हरिस-विसायाणं वेरीण व देसि नोगा[3]सं ॥ ४ ॥

'अम्मो ! जं तुमं आणवेसि तं काहामो' त्ति भणंतीओ नियनियकिच्चाइं चिंतिउं गयातो चेडीओ **मयणसुंदरी** य । अह जाममेत्तम्मि संपत्ते दिवसे, समीवमुवगए देवपूयावसरे **मयणमंजूसाए** भणिया **मयणसुंदरी**—वच्छे ! जावऽज्ज वि भोयणवेला न संपज्जइ ताव इमं नियनायगं सुरसरितीरसंपाडियण्हाण-पिंडप्पयाण-देवपूयणाइवावारं दवावियजहिच्छियातिहि-दाणं धम्मसहाइणी होऊण समीवोवगया लहुं करेसु त्ति । 'अम्मो ! जं तुमं आइससि' त्ति भणिऊण गया सा नियवासभवणं। पबोहिओ कवडपसुत्तो **विजयदेवो**, भणिओ य—भो देवाणुप्पिय ! अइकालो वट्टइ ता पयट्टसु सुरसरियाण्हाण-पिंडपयाणा-ऽतिहिदाणादिकिच्चकरणत्थं ति । ततो दरिसियंगभंगो जिंभायमाणो उट्ठिओ **विजयदेवो**, अदंसियमुहसामाइवियारो पट्ठिओ सुरसरियतीरं । **मयणसुंदरी** वि कइवयदासचेडीपरिवुडा पुप्फ-बलि-अक्खयाइपडलगसमेया पयट्टा तयणुमग्गओ । गयाइं **मंदाइणी**तीरं, कयं **विजयदेवेण** ण्हाणं, परिहियं वत्थजुयलं, पूइया देवया, कयं मंतसुमरणं, दिन्नो अग्घंजली अंसुमालिणो ।

एत्थंतरे भणितो सो **मयणसुंदरीए**—पिययम ! मा दव्वसंकिन्नयं करेज्जाहि, पिंडप्पयाणाति अणुचिट्ठसु । **विजय-देवेण** भणियं—एवं करेमि, वाहरावेसु वेयवियक्खणे बंभणे जेण कयपिंडपाओ ताणं दाणं देमि । 'तह' त्ति वाहराविया

१ शक्यन्ते ॥ २ वट्टेज्ज° प्र० ॥ ३ न अवकाशम् ॥

तीए कुसला चउरो बंभणा । कयं तेहिं पिंडविहाणाइ किच्चं । तदवसाणे य जोडियपाणिसंपुडं भणियं **विजयदेवेण**—भो बंभणा ! निसुणह मह वयणं—मज्झं दइवदुज्जोगवसेण रयणमेगं संपडियं, तेण य दुट्ठलक्खणेण लक्खसंखं धणं नीसेसं कुलं च खयमुवणीयं तह वि कूडपडिबंधाओ न मए तमुज्झियं, संपयं च केणइ पुन्नवसेण तं अवक्कंतं, एत्तो य जस्स घरे तं वीसंतं तस्स चेव अणत्थो होउ मा अम्हं ति, एत्थ अत्थे मंतुच्चारं तालं च पाडेह जेणाहं वे[1]वगयणत्थो सुहं ववहरामि त्ति । इमं च अयंडवज्जासणिडंडनिवडणदारुणं रय[2]णवुत्तंतं निसामिऊण **मयणसुंदरी** भणिउं पवत्ता—भो बंभणा ! पडिवालेह ताव खणमेक्कं जाव चेडीओ मायरं दट्ठूण पडिनियत्तंति । बंभणेहिं भणियं—एवं होउ । तओ तीए तव्वुत्तंतकहणत्थं रयणा[णय]णत्थं च पेसियाओ तुरियं चेडीओ । गंतूण सिट्ठं जहट्ठियं **म[3]यणमंजूसाए** ताहिं नीसेसं । तं च सोच्चा विच्छाईहूया ज्झड त्ति एसा, 'जइ पाणच्चायं करेमि तह वि माणिक्कमिमं न उज्झामि' त्ति निच्छयं ववसिया य । उवलद्धतन्निच्छयातो य पडि-नियत्ताओ चेडीओ । सिट्ठो **म[4]यणसुंदरीए** वुत्तंतो । कोव-संतावभरकिलामियवयणकमला य सयं पट्ठिया **मयणसुंदरी** । संलत्ता य **विजयदेवेण**—पिए ! कीस पत्थुयत्थविग्घं करेसि ? जीविओ म्हि चिरकालाओ जमेरिसं कल्लाणमुवट्ठियमिच्चाइ । जह जह सो भणइ तह तह इत्थीसहावसुलभनिव्विवेययाए अहिययरमु[5]त्तम्ममाणमाणसा [सा] सिग्घं गया **मयणमंजूसा-**समीवम्मि, वोत्तुमारद्धा य—अम्मो ! चेडीमुहेण निसामियमाणिक्कवइयरा वि तदप्पणपरम्मुही तुमं कीस ठिया ? ।

किमिमं जुत्तं पडिहाइ तुज्झ सज्झसकरे वि जं कज्जे । पक्खिप्पइ अप्पा एवमावयावडणदुव्विसहे ? ॥ १ ॥

१ व्यपगतानर्थः ॥ २ °णवित्तं° प्र० ॥ ३ मदनमञ्जूषायै ॥ ४ मदनसुन्दर्यै ॥ ५ उत्ताम्यन्मानसा ॥

लच्छी भवणं भिच्चाइपरियरो वत्थमंडणपयारो । कीरंति सरीरकए तं पि [1]विवज्जइ जइ इमाओ ॥ २ ॥
ता किं इमिणा माणिक्ककइयवुव्वाहिणा कयंतेण । गेहधरिएण अम्मो ! ? ता मुंचसु एयकुग्गाहं ॥ ३ ॥
सव्वगुणसुंदरेण वि अलाहि जीवियविणासिणा तेण । [2]कणगमइया किवाणी किं जुज्जइ वाहिउं देहे ? ॥ ४ ॥
एयस्स ववगमे सो न [3]नियसि वियसंतवयणसयवत्तो । उवलद्धजीवियं पिव अभिनंदइ दूरमप्पाणं ? ॥ ५ ॥
एगवराडयनासे वि किन्न [4]तम्मंतमिक्खसि जणोहं ? । वाहिविगमो व एसो य परमपरितोसमावन्नो ॥ ६ ॥
किं भूरिजंपिएणं ? पिएण जइ जीविएण मह कज्जं । ता उज्झसु झत्ति इमं तुह प्पसाएण किमपुन्नं ? ॥ ७ ॥
इय तीए तह कहं पि हु पन्नविया सा जहा लहुं [5]तिस्सा । माणिक्कमप्पियं तीए गरुयदुक्खं वहंतीए ॥ ८ ॥

ततो **मयणसुंदरी** तं गहाय गया तुरियतुरियं **अमरतरंगिणी**तीरं, समप्पियं अणिच्छंतस्स वि **विजयदेव**स्स, गहियं च तेण परमतदुवरोहेण । अणुवलद्धदक्खिणा य विलक्खीहूया गया बंभणा । 'अहो ! पडिकूलया देव्वस्स, जमिमं मे रयणं पणट्ठं पि भुज्जो कत्तो वि आगयं, ता **मंदाइणी**महद्दहे कत्थइ अणत्थपत्थारीपडितुल्लं खिवामि एयं' ति कइयवेण ततो ट्ठाणाओ अवक्कंतो **विजयदेवो** । सुसंगोवियरयणो य अणवरयपयाणगेहिं पत्तो नियनयरिं, परितुट्ठो पिया, आणंदिया बंधुणो । पत्थावे सिट्ठो रयणलाभवइयरो, संसितो य सव्वकुडुंबेण । माणिक्कपभावेण य पाउब्भूया पभूया सिरी । तीए य सुहट्ठाणविणिओगेण उभयभवियसुहसंदोहभायणं जाओ त्ति ।

१ 'विपद्यते' विनश्यति यदि 'अस्माद्' माणिक्यात् ॥ २ कनकमयी कृपाणी ॥ ३ पश्यसि ॥ ४ ताम्यन्तम् ॥ ५ तस्यै ॥

[1]परामुट्ठा [5]कोवीणबद्धा रयणगंठी, 'अंतो सुन्न' त्ति ज्झमकितो ज्झड त्ति हिययम्मि । 'हुं, निच्छियं छलिओ इमीए [2]कयंतदाढाकडप्पकुडिलाए विलासिणीए, किमियाणि लोगोवहासकारगेण परहत्थीभूए रयणे कोलाहलेणं ? उवायातो चेव विहडियकज्जसंघडण' त्ति आयारसंवरं काऊण पुव्वं पिव कइयवेण पुणो निब्भरं पसुत्तो एसो ।

मयणमंजूसा वि चेडीकरयलसंवाहणा[3]ववगयनिद्दा समुट्ठिया सयणिज्जातो । परमपमो[4]यपब्भारवियसियवयणसयवत्ताए य पुच्छिया **मयणसुंदरी**—वच्छे ! सो वइदेसिओ सुवइ गतो व ? त्ति । तीए भणियं—अम्मो ! अज्ज वि केणइ कारणेण निब्भरं निद्दायइ त्ति । **मयणमंजूसाए** जंपियं—वच्छे ! एत्तो वरागातो कोवीणणूमियं जं माणिक्कमेक्कं मए उवलद्धं तं पुरंदर-कुबेरपमुहाणं पि असंभावणिज्जं, ता देहि आसत्तवेणियं जलंजली दोगच्चस्स, [6]अवहत्थेहिं भूय-पिसाय-साइणीपडिभयं ति । ततो विम्हिया **मयणसुंदरी**, भणिउं पवत्ता य—अम्मो ! महंतं [7]मम कोउयं, दंसेसु तयं ति । ततो [8]मायंडखंडं पिव भूरिसमुच्छलंतकिरणजालविणिम्मियहरिचावचक्कं माणिक्कं दंसियमिमीए । 'अहो ! महालाभो' त्ति सह चेडीहिं हरिसिया **मयणसुंदरी** । अह ताण हरिसुक्करिसनिरुंभणत्थं पढियं **मयणमंजूसाए**—

अइहासो अइतोसो अईवरोसो असम्मए वासो । अच्चुब्भडो य वेसो पंच वि गरुयं पि लहुयंति ॥ १ ॥
[9]अइगरुयहरिसदंसियइंगियसवियारदिट्ठ-संलावा । करजलरुहट्ठियं पि हु लच्छिं हारिंति ही ! मूढा ॥ २ ॥

१ **परमुद्धा को**° खं० प्र० । परामृष्टा ॥ २ कृतान्तदंष्ट्रासमूहकुटिलया ॥ ३–व्यपगतनिद्रा ॥ ४ °**यविय**° प्र० ॥ ५ कौपीनगोपितमित्यर्थः ॥ ६ अपहस्तय ॥ ७ **मह** प्र० ॥ ८ मार्त्तण्डखण्डमिव भूरिसमुच्छलत्किरणजालविनिर्मितहरिचापचक्रम् ॥ ९ अतिगुरुकहर्षदर्शितेङ्गितसविकारदृष्टसंलापाः ॥

एएसु उदिन्नेसुं विफलो च्चिय धम्मकम्मसंरंभो । न य एत्तो वि हु अन्नं वन्नंति [1]भवत्थदुत्थकरं ।। ४ ।।
कोहो सयणविरोहो [2]हयसोहो दिन्नदारुणदुहोहो । माणो य हयसुनाणो कयावमाणो गुरुजणे वि ।। ५ ।।
माया कुडिलियवाया पए पए दिन्नपच्चवाया य । लोभो य सयणदोहो कयसम्मोहो सुगइरोहो ।। ६ ।।
एक्केक्कसो वि कक्कस-किलेस-कालुस्सकारिणो एए । मिलिया य अणुवसंता य कह णु कुसलावहा होंति ? ।। ७ ।।
ता एयाणं उवसममसेसकल्लाणमूलमक्खंति । कंखंति भिक्खुणो तेण तक्खयं मोक्खसोक्खकए ।। ८ ।।
जं भावि पुरा भूयं हवइ य दुक्खं सुतिक्खमिह लोए । तं जाण कसायाणं कलुसं दुव्विलसियमसेसं ।। ९ ।।
जं [3]मुज्झइ बाहुबली [4]गिज्झइ भरहो तहित्थिया तित्थं । कुगइं [5]जाइ सुभूमो तं जाण कसायविप्फुरियं ।। १० ।।
ते धन्ना सप्पुरिसा तेहिं परं पाविया जयपडाया । जेहिं सोढो पोढो कसाय[6]फणिणो फडाडोवो ।। ११ ।।
उवसमसेढिं बाढं आरूढं पि हु लहुं [7]निवाडिंति । तूलं व कसाया [8]पलयकालवाय व्व दुव्विसहा ।। १२ ।।
इय ताण दारुणत्तं परवागरणातो नियमईए वा । [9]णाउं जो उवसंतो सो होइ सुही सुदत्तो व्व ।। १३ ।।

तहाहि—अत्थि समत्थावरविदेहदेहसोहाकारिणी, कारुणियमुत्ति व्व परोवयारसारोयारलो[10]याभिरामा, रामएवसरीरजट्ठि व्व [11]सीयासयपसाहिया, साहियासेसविपक्खमहानरिंदजियसत्तुपयंडभुयदंडमंडवजणियच्छाया सावत्थी नाम नयरी । जहिं च [1]वरुडगेहेसु [2]वंसविदलणं, वेज्जहट्टेसु [3]नागरचुन्नणं, जूयसालासु [4]दंडुक्खेवो, तरूसु [5]साहापरिग्गहो न कयाइ लोएसु । तहिं च निच्चनिबद्धनिवासो वासवदत्तो नाम सेट्ठी, ललिया नाम भज्जा । पयई[इ] च्चिय सच्छसहावो सुदत्तो नाम ताण पुत्तो । नियकुलक्कमाविरुद्धवित्तीए सव्वाइं कालं वोलेंति ।

एगया य सुदत्तो सहपंसुकीलियस्स मेत्तस्स खेमाभिहाणस्स कज्जवसेण मंदिरं गओ, दिन्नमासणं खेमेण, आसीणो एसो । पारद्धा य दो वि [6]सारखेड्डेण कीलिउं । परमपयरिसमणुपत्ते य सारिकीलाविसेसे सहस त्ति समुट्ठितो भवणंतो कोलाहलो । 'किमेयं ?' ति आउलो धाविओ [7]गिहहुत्तं खेमो । महाकट्ठकप्पणाए परोप्परं कयकलहं मुसलघायजज्जरियसिरनिस्सरंतरुहिरो[8]रालियसरीरं निवारियं कुडुंबं । मिलितो कोऊहलेण लोगो । विम्हय-सज्झसपरव्वसेण य पुच्छिओ सुदत्तेण खेमो—भो मित्त ! को एस अयंडे च्चिय विडंबणाडंबरप्पवंचो ?। खेमेण भणियं—वीडावसेण कहिउं पि न तीरइ । सुदत्तेण भणियं—[तहावि] तहाविहासमंजसजणणे होयव्वं गरुयनिमित्तेण, ता साहेसु लेसमेत्तं । खेमेण भणियं—निसामेसु—

मह घरिणीए कुंभो भग्गो सलिलं उव्वाहरंतीए । सा जणणीए कुवियाए ताडिया करचवेडाए ।। १ ।।
मह धूयाए नियजणणिताडणुप्पन्नगरुयकोवाए । मह जणणीए कंठातो तोडिओ नवसरो हारो ।। २ ।।
अह मह भइणीए [9]नियगमायपरिहवभवंतदुक्खाए । मुसलेण सिरे पहया सा धूया निद्दयमणाए ।। ३ ।।

१ भवुत्थ° खं० प्र० । भवस्थदौस्थ्यकरम् । भवस्थाः–संसारिणः ।। २ हतशोभः ।। ३ मुह्यति ।। ४ गृध्यति ।। ५ याति ।। ६ °यपलिणो खं० ।। ७ °वाडेंति प्र० ।। ८ प्रलयकालवाता इव ।। ९ नाउं प्र० ।। १० लोकाभिरामा–प्रकाशेन लौकैश्चाभिरामा ।। ११ सीताऽऽशय(ऽऽश्रय)प्रसाधिका सीताशतप्रसाधिता च ।।

१ वरुडेति अन्त्यजजातिविशेषः ।। २ वंशाः–वेणवः कुलानि च ।। ३ नागरस्य–शुण्ठ्याः नगरवासिनां च चूर्णनम् ।। ४ दण्डः–दण्डनम् ।। ५ शाखा पक्षश्च ।। ६ पाशकक्रीडया ।। ७ गृहाभिमुखम् ।। ८ ओरालियं–खरण्टितम् ।। ९ निजकमातृपरिभवभवदुःखया ।।

नियधूयं भिन्नसिरुच्छलंतसोणियभरं नियंतीए। मह भज्जाए वि हया मुसलेण सिरे नियनणंदा ॥ ४ ॥
इय अवरोप्परकयघोरघायघुंम्मंतमित्थमच्चत्थं। दुत्थावत्थं पत्तं, पावकुडुंबं नियंसु मज्झ ॥ ५ ॥
निक्कारणं रणं पइदिणं पि अन्नोन्नमवि अणुल्लवणं। कह सांहिज्जइ लज्जाए तुज्झ वत्ता कुडुंबस्स ? ॥ ६ ॥

सुदत्तेण भणियं—अहो! विसमो दसावागो, अंहो! पडिकूलकारिणी कम्मपरिणई, जं परमपेम्मट्ठाणे वि एवंविहगरुयवइरभावो, भवियव्वं ता एत्थ भवणभूभागसल्लदोसेण पूयाविवज्जयवसकुवियदेवयाकयवियारेण वा विसमट्ठाणगयकुग्गहदुविलसिएण व त्ति। खेमेण भणियं—निच्छियं संभवइ एवं, कहमन्नहा अतहाविहकज्जे वि सज्जो लज्जाविवज्जयं वंयणिज्जकरणमित्थं घरयणो ववसेज्जा? किं कीरइ? नत्थि कोइ दिव्वनाणालोयपच्चक्खीकयजीवलोयवावारो महप्पा जो सक्खा गंतूण पुच्छिज्जइ 'किं कारणमेयं?' ति। सुदत्तेण भणियं—एवमेयं, परं सावहाणो एत्थ अत्थे होज्जासिं, मा कोइ कयाइ एवंविहो वि होज्ज त्ति। एवं च खणमेक्कं विगमिऊण गओ सुदत्तो नियगिहं।

अवरम्मि य अवसरे सो सुदत्तो खेमेण समं रायमग्गमोगाढो अन्नमन्नं जणं जंपंतं निसामेइ, जहा—कोइ अंप्पडिमरूय-

१ पश्यन्त्या ॥ २ घूर्णमानम् ॥ ३ पश्य ॥ ४ कथ्यते ॥ ५ अहो! अप° प्रतौ ॥ ६ वचनीयकरणमित्थं गृहजनो व्यवस्येत् ॥ ७ दिव्यज्ञानालोकप्रत्यक्षीकृतजीवलोकव्यापारः ॥ ८ °सि, कामोइ क° प्रतौ ॥ ९ अप्रतिमरूपलावण्यावमतकन्दर्पः अनल्पमाहात्म्यप्रतिहताशिवादिसङ्क्षोभः त्रिजगद्दुर्जेयमन्मथमथनाभिभूतहरिहरहिरण्यगर्भपौरुषारम्भः रम्भाप्रमुखाप्सरःप्रारब्धप्रेक्षणकप्रपञ्चप्रपञ्चितपूजातिरेकः रङ्गत्तारतरतरङ्गविराजमानमहाप्रमाणविजयवैजयन्तीशताकुलविमलमणिकलधौतरजतविशालशालवलयाभिरामसिंहासनासीनः ॥

एवं उवायदरिसी जह इहलोइयमसेसमवि कज्जं। तह पारलोइयं पि हु साहइ सिग्घं सुहेणेव ॥ १ ॥
धम्महिगारी सविसेसमेस तेणोवदंसिओ समए। न हु दुम्मईहिं धम्मो घेत्तुं तीरइ वरनिहि व्व ॥ २ ॥ अपि च—

धनलवमपि कश्चिन्निश्चितोपायवन्ध्यो, यदि भवति न लब्धुं सर्वथाऽलं तदानीम्।
कथमिव निरुपायः प्राज्यकल्याणकर्त्रीं, निखिलसुखविधात्रीं प्राप्नुयाद् धर्मसिद्धिम्? ॥ १ ॥
उपर्युपरि पापीयान् व्युपायान् पापकर्मणि। प्रेक्षते धर्मकृत्ये च जन्मान्ध इव न क्वचित् ॥ २ ॥
तुच्छं भूरितरव्यपायकलिकाकोशाकुलं सर्वतः, सर्वं संसृतिकार्यमित्यपफलस्तत्राप्युपायक्रमः।
पापक्षेप्तरि शर्मधातरि यशःसन्दोहरत्नोदधौ, सम्यग्धर्मविधौ पुनः स फलदस्तंत् तत्र यत्नः सताम् ॥ ३ ॥
इति विमर्शितकृत्यपथः सुधीरधिकधर्मनिवेशितमानसः। भवति कामिकसर्वसमीहितोत्तमसमृद्धिसमूहपदं जनः ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे उपायचिन्तायां विजयदेवकथानकं समाप्तम् ॥ २४ ॥

उवसंतो च्चिय पुव्वुत्तगुणगणालंकिओ परं धम्मं। निव्वाहिउं समत्थो त्ति संपयं तं पवक्खामि ॥ १ ॥
कोहो माणो माया लोहो चत्तारि हुंति हु कसाया। दिन्नविविहाववाया कलुसियसद्धम्मववसाया ॥ २ ॥
ते उदयनिरोहाओ उदए वा विफलभावजणणेण। जंस्सोवसमंति फुडं सो भन्नइ एत्थ उवसंतो ॥ ३ ॥

१ °स्तत्तत्र यत्नः प्र० ॥ २ °कृत्याप° खं० प्र० ॥ ३ °यं संप° खं० प्र० ॥ ४ यस्योपशाम्यन्ति स्फुटम् ॥

राया वि [1]भत्तिपयरिसपसरंताणंदसंदिरच्छिजलो । तित्थयरं पणमिय भत्तिसारमिय थुणिउमाढत्तो ॥ ६ ॥

संसारपङ्कजतुषार ! निरस्तमार !, सज्ज्ञानसार ! निहतान्तरवैरिवार ! ।
विश्वप्रभो ! प्रभव ! धर्म[विधे]र्विधेहि, मामीश ! मोहमकराकरतो बहिष्टात् ॥ १ ॥
कोऽयं भ्रमो जडधियोऽस्य जनस्य नाथ !, [यन्नाथ]तेऽभवभयच्छिदमन्यदेवम् ? ।
[2]ईष्टे किमिष्टतमरत्ननिधिं प्रदातुमाजन्मदुर्गतनरो बहुयाचितोऽपि ? ॥ २ ॥
एकस्त्वमीश ! बहुशोऽर्तिजुषो मनुष्यान्, तुल्यक्षणं प्रतिविभिन्नफलार्थिनोऽपि ।
दूरस्थितोऽपि कुरुषे परिपूर्णवाञ्छान्, चिन्तामणेरिति विजेतृ विजृम्भितं ते ॥ ३ ॥
स्वस्वक्रमागतनमस्करणीयवर्गं, तीर्थ्या विहाय यदधीश ! भवन्तमीयुः ।
त्वामेकमेव भुवि देवतया वदन्तो, लोकोत्तरः स भवतो भुवि सिंहनादः ॥ ४ ॥
प्रत्यक्षमेव वितरन् निखिलार्थसार्थं, विश्वप्रभो ! तनुभृतां मनसाऽप्यसाध्यम् ।
किं नानुमापयसि दृग्विषयव्यतीतस्वर्गा-ऽपवर्गसुखसंहतिदानशक्तिम् ॥ ५ ॥
यैरत्र देव ! भवदीयपदप्रसादादासादितानि न मनोऽभिमतानि पुम्भिः ।
तेषां सुरा हरि-विरिञ्चि-विरोचनाद्या, दातुं मनागपि मनोऽभिमतं किमीशाः ? ॥ ६ ॥

१ भक्तिप्रकर्षप्रसरदानन्दस्यन्दनशीलाक्षिजलः ॥ २ याचते इत्यर्थः ॥

तीव्रस्मरा[1]नलिनि रोगभुजङ्गभीमे, कीनाश-राक्षसवतीह भवस्मशाने ? ।
यावद् वसामि तव तावदधीश[2] ! नाममन्त्राक्षराणि मम चेतसि विस्फुरन्तु ॥ ७ ॥
इति नरपतिरर्हत्फुल्लवक्त्रारविन्दप्रहितगतनिमेषस्फारनेत्रद्विरेफः ।
स्तवनमनुविधाय क्षोणिपीठे निषण्णोऽलिकफलकनिविष्टस्पष्टहस्ताब्जकोशः ॥ १ ॥

अह ससुरा-ऽसुर-नर-तिरिय[3]सत्तसाहारणाए वाणीए । पारद्धा धम्मकहा धम्मा[4]इगरेण जयगुरुणा ॥ २ ॥
इह निच्चभमिरभवजंतजंतुगोनाणमोयणसमत्थो (?) । धम्मो चिय किच्चो तदुचियत्थसंपाडणेण सया ॥ ३ ॥
उचियं च किच्चमिह देववंदणं पूयणं च पइदियहं । भवकूवनिवडिराणं हत्थालंबोऽयमेव जओ ॥ ४ ॥
सेवेयव्वा सिद्धंतवेइणो पइखणं च वरमुणिणो । तव्वियलो विहलो चिय सयलोचियधम्मवावारो ॥ ५ ॥
[5]चेइयव्वो य पमाओ न [हु] कायव्वा कुसीलसंसग्गी । सयमवि अलसो निद्धम्मजोगओ होइ अहिययरो ॥ ६ ॥
अणिदाणं दाणं पि हु सद्धा-सक्कार-कमजुयं देयं । तव-सील-भावणा[6]अक्खमाण एयं चिय पहाणं ॥ ७ ॥
विरई य विहे[7]यव्वा अणुसरियव्वा य पइखणं सम्मं । जं नत्थि न वि य होही तं पि मणो म[8]णइ अनिरुद्धं ॥ ८ ॥
[9]समयत्थचिंतणं पि हु कायव्वं एगचित्तयाए परं । न हि राग-दोस-कलुसस्स सो[10]हणं विज्जए अवरं ॥ ९ ॥

१–अनलिनि–अनलवति ॥ २ °श ! मानम° प्रतौ ॥ ३-तिर्यक्सत्त्वसाधारण्या ॥ ४ °इरेगेण प्रतौ ॥ ५ त्यक्तव्यः ॥ ६ अक्षमाणाम्–असमर्थानाम् ॥ ७ विधातव्या अनुसर्तव्या च ॥ ८ 'मनुते' विचारयति ॥ ९ सिद्धान्तार्थचिन्तनम् ॥ १० 'शोधनं' शुद्धिकरम् ॥

इय मोहमहानलडज्झमाणदेहाण भवसत्ताणं । [1]निस्सट्ठाऽमयवुट्ठि व्व देसणा मणहरा पहुणा ।। १० ।।

एत्थंतरे निदरिसणं दुक्खियाणं, सीमा विविहवाहिविहुराणं, आदरिसो कुदरिसणाणं, निवासो दालिद्दोवद्दवस्स, अच्चंतविरूवो, चउहिं अवच्चेहिं पिसाएहिं व परियरिओ पविट्ठो एगो थेरपुरिसो । सायरकयपायपडणो य विन्नविउं पवत्तो—भयवं! विजियकामधेणु-चिंतामणि-कप्पपायवं तुम्हदरिसणं निसामिऊण नियतिक्खदुक्ख[2]नित्थरणत्थमहं किं पि पुच्छिउमिच्छामि । भगवया वाहरियं—भो देवाणुप्पिय ! वीसत्थो सवित्थरं साहेसु । थेरेण भणियं—भयवं ! एत्थेव पुरीए [3]अहमाजम्मरोरो नीसेससुकयपुन्नलोयाणं चक्खुपरिहरणत्थं व विहिणा निम्मिओ महाकिलेसकप्पणाए दिणगमणियं करेमि, जायाणि य चंड-पयंड-चुडली-वोमनामाइं चत्तारि पुत्तभंडाइं, तेहि य कलिकालजणद्दणबाहुदंडेहिं व इओ तओ विप्फुरंतेहिं तं नत्थि जं न मे दुक्खमुवणीयं, कम्मि वा आवयावत्ते न पाडिओऽहमिमेहिं ? । तहा—

पढमो कलहेक्करुई [4]उव्वियणिज्जो समत्थलोयस्स । परपरिभवी य बीओ [5]अत्तुक्कासी य दुव्विणओ ।। १ ।।
धूया य दुट्ठसीला अच्चग्गलजंपिरी कुडिलचित्ता । तइया सुतो चउत्थो य एस नीसेसदोसघरं ।। २ ।।
एवंविहेहिं संपइ सुएहिं संतावियस्स मे कहसु । किं पुव्वकयं पावं दारुणमवरज्झइ जमेवं ? ।। ३ ।।

भगवया वागरियं—भो देवाणुप्पिय ! निसामेसु,

१ निःसृष्टा अमृतवृष्टिरिव ॥ २ °निब्भर° खं० प्र० । –निस्तरणार्थम् अहम् ॥ ३ अहम् आजन्मरोरः । रोरः–दरिद्रः ॥ ४ उद्वेजनीयः समस्तलोकस्य ॥ ५ आत्मोत्कर्षी ॥

लायन्नावमन्नियकंदप्पो अणप्पमाहप्पपडिहयासिवाइसंखोभो तिजयदुज्जेयवम्महमहणोहामियहरि-हर-हिरन्नगब्भपोरिसारंभो रंभापमुहच्छरापारद्धपेच्छणयपवंचपवंचियपूयाइरेगो रंगंततारतरतरंगविरायमाणमहप्पमाणविजयवेजयंतीसयाउलविमलमणिकलहोय-रययविसालसालवलयाभिरामसिंहासणासीणो 'सव्वन्नु' त्ति गिज्जंतो महापुरिसो पुरिपरिसरे धम्मं साहइ, ता तद्दंसणेण [1]पूयपावमप्पाणं काउं उज्झियसेसकायव्वा पगुणीहवउ जेण वच्चामो त्ति । इमं च असुयपुव्वं सोच्चा जाव विम्हयविफारियच्छो 'किमेयं ?' ति अंतो[2]विफुरंतवियक्को सो अच्छइ ताव गयणमंडलं मंडयंती वियसंतपुंडरीयसंडाणुगारिणी सुरयणविमाणमालापरंपरा चउदिसावगासमणुरुंधंती सव्वतो पसरिया । 'अरे ! सुनिच्छियमेस महाणुभावो नियप्पभावविहणियविग्घो सुरसंघो तस्स भगवओ पायदंसणत्थमित्थं पत्थितो संभाविज्जइ, ता अहं पि नियनयणनिम्माणं तद्दंसणेण सहलीकरेमि' त्ति विभाविय मित्तेण समं पट्ठिओ भगवओऽभिमुहं ।

अह जाव नयरिगोउरसमीवदेसं कहं पि संपत्तो । ताव सियधरियछत्तो जयकरिवरकंधरारूढो ।। १ ।।
रह-तुरय-जाण-जंपाण-सिबियगयरायलोयपरियरितो । राया वि रुद्धमग्गो चलिओ तच्चलणनमणत्थं ।। २ ।।
अन्ने य सेट्ठि-सत्थाह-इब्भ-कोडुंबियाइणो लोया । नियनियविहवणुरूवं जिणनाहं वंदिउं चलिया ।। ३ ।।
[3]पउरयरपउरजणगमणसंकडीहूयगरुयरायपहं । अहमहमिगाए लोगो कह कह वि जिणंतियं पत्तो ।। ४ ।।
अह दूराओ च्चिय मुक्कजाण-जंपाणपमुहविच्छड्डो । सो सव्वो वि निसीयइ जहविहिकयजिणपयपणामो ।। ५ ।।

१ पूतपापम् ॥ २ अन्तर्विस्फुरद्वितर्कः ॥ ३ प्रचुरतरपौरजनगमनसङ्कटीभूतगुरुकराजपथम् ॥

विहत[1]विज्जापउंजणाइणा जीवइ । सो य तुह बीयसुएण कयतिपुंडगाइमंडणेण दंसियफडाडोवेण भणिओ—अरे दुट्ठ ! धिट्ठ ! मइरालुद्ध ! मुद्ध ! को तुमं ? किं वा ज्झाणं ? किं धेयं ? का वा [2]ओली ? कइ वा पुप्फाणि ? । इच्चाइ पुच्छितो भीतो संखुद्धो सो पडिओ से पाएसु, दवावियं भोयणं, [3]एयंते य सुवन्नदाणपुव्वयं भणिओ से जोगायरिएण—अहं एत्थ जीवामि मंताइवित्तीए, ता न तुब्भेहिं किं पि वत्तव्वं ति । एवं च तदुवलद्धधणो सो इममेव [4]अत्तुक्करिसाइरूवं अत्थपयं निस्सीकाऊण सव्वत्थ परिब्भमिओ, उवज्जियं च किंचि दव्वं । [आ]गतो तुह समीवं, सिट्ठं माणप्पहाणं नियवित्तं, पसंसिओ सायरं तुमए, जाओ य एत्थेव से पयरिसो त्ति ।

तइओ वि तुह सुओ तहाविहं अत्थोवज्जणोवायं किं पि अपेच्छमाणो कवडविरइयधाउवाइयरूवो धाउवाइयविज्जं सिक्खिऊण [5]विप्पयारियमुद्धलोगोवलद्धकइवयकणयगदियाणगो इओ ततो भमंतो पत्तो कंपिल्लपुरं, उवविट्ठो एगत्थ हट्टे । दिट्ठो [6]तत्थ वणिओ धणकणयसमिद्धो । पुच्छिओ सो सपणयं—किं तुम्ह नामं ? ति । तेण भणियं—धणदेवो त्ति । इयरेण वि कवडसीलयाए जंपियं—ममं पि एयमेव नामं, ता तुमं सव्वहा मह भाउगो सि, पसीयंति य मह लोयणाणि तुह दंसणेण वि, ता काउमिच्छामि किं पि तुज्झोवयारं, अतो समप्पेसु सुवन्न[7]धरणमेगं गदियाणगं वा जेण धाउवायसिद्धीए दुगुणीकाऊण समप्पेमि त्ति । 'तह' त्ति गदियाणगमेगं[8]सुवणीयं वणिएणं । दुगुणीकाऊण तमप्पियं तेण । ततो वणिएण काराविओ

१ °तविज्जा° खं० प्र० ॥ २ परिपाटी ॥ ३ एगन्ते प्र० ॥ ४ आत्मोत्कर्षादिरूपम् ॥ ५ विप्रतारितमुग्धलोकोपलब्धकतिपयकनकगद्याणकः ॥ ६ तव्वणि° खं० प्र० ॥ ७ माषचतुष्कमित एको धरणः ॥ ८ °मेवमु° खं० प्र० ॥

सायरं सो भोयणं, समप्पियाणि पुणो वि दस गदियाणगाइं । ताणि वि पुव्वाणीयनियकणगपक्खेवेण भुज्जो दुगुणि[1]याणि तुह सुएण । ततो लोभेण अंधीकतो वणिओ, वीससिओ य बाढं । सपुरक्कारं समप्पियाइं तेण पंच स[2]याइं भुज्जो से सुवन्नस्स । तुह सुएण भणियं—भाउग ! अच्छंतु तुह घरे च्चिय जाव ओसहसामग्गिं करेमि । इयरेण भणियं—तुह पासट्ठियाणं को एयाण दोसो ? । 'एवं होउ' त्ति पडिवज्जिय तुह सुओ रयणीए घेत्तूण आगओ तुह समीवं । सविसेसं पसंसिओ तुमए, थिरीकतो य एवंविहपरप्पयारणपावट्ठाणे ।

चउत्थो वि तुह पुत्तो पउत्तदव्वोवज्जणविविहोवाओ महालोभाभिभूयत्तणेण जलहिलंघण-नरिंदसेवाइणा पगारेण किं पि अज्जिऊण एगस्स लिंगिणो पउररिद्धिणो पवन्नो सिस्सभावं । विणयवित्तीए य आवज्जियं से हिययं, जातो य अहियं वीसासट्ठाणं । कइवयदिणावसाणे य तस्स सव्वस्सं गिण्हिऊण मज्झरत्तसमए तुरियतुरियं पलाणो समागओ तुह समीवं । निवेदियं च दव्वजायं नियकिच्चं च । सो वि य उववूहिओ तुमए, पयट्टो य जहिच्छाए ववहरिउं ।

इय कोह-माण-माया-लोभज्जियरित्थरंजियमणेण । भो थेर ! ते सुया तह कहं पि ठविया तएऽणत्थे ॥ १ ॥
जह ताण न सुमिणे वि हु उप्पज्जइ तव्विवज्जणेऽभिरुई । अवि तेसु बहुपयारं अच्चंतं उज्जया जाया ॥ २ ॥
किंपागतरुफलं पिव मुहमहुरं तेण संभविय पुव्विं । अइकडुयविवागत्तेण ताण ते परिणया पच्छा ॥ ३ ॥
जइ कह वि कम्मवसओ अकिच्चकरणे वि अत्थसंपत्ती । विसदिद्धभोयणं पिव तहा वि सा मरणहेउ त्ति ॥ ४ ॥

१ °याणि अन्नाणि वि तुह खं० प्र० ॥ २ °याणि भु° प्र० ॥

जइ कह वि बिले हत्थप्पवेसणे रयणमालियालाभो । तह वि हु तहकरखेवे कयाइ भुयगातो मरियव्वं ॥ ५ ॥
एवं च ते वरागा कोहाइसु गाढबद्धपडिबंधा । रिद्धिं पत्ता कम्माणुभावओ कइयवि दिणाणि ॥ ६ ॥
पच्छा मुणियसरूवा पुरम[1]यहर-तलवराइलोगेण । निल्लुणियकन्न-नासा-कर-चरणा भूरिदुक्खत्ता ॥ ७ ॥
अइकलुण-दीणवयणा बहुसो धिक्कार-तज्जणाभिहया । सयणकयनिंदणा अह कहं पि मरणं समणुपत्ता ॥ ८ ॥
[2]तम्मरणदुक्खअइतिक्खभल्लिभिज्जंतहिययसव्वस्सो । भो थेर ! तुमं पि मतो निंदिज्जंतो पुरजणेण ॥ ९ ॥
निंदियनर-निरय-तिरिक्खदुक्खलक्खाइं अणुभविय बहुसो । भो थेर ! एत्थ जम्मे एस तुमं इह पुरे जातो ॥ १० ॥
ते वि य चत्तारि वि तुज्झगरुयपडिबंधरज्जु[3]बद्ध व्व । उप्पन्ना एवंविहअवच्चभावेण भीमेण ॥ ११ ॥
[4]पडिजम्मऽब्भत्थकसायओ य इण्हिं पि तह पयट्टंति । पाविंति जह विडंबणमणुचियदुक्कम्मनिम्मायं ॥ १२ ॥
एत्तो च्चिय पढमसुतो कूरो [5]आयंबिरच्छिविच्छोहो । विघि[6]णो चंचलचित्तो पाणिवहम्मि पवत्तो य ॥ १३ ॥
[7]बीतो वि सेलथंभो व्व [8]नम्मयावज्जिओ परुसभासी । परवि[9]क्खेवासत्तो अप्पपसंसी विणयहीणो ॥ १४ ॥
तइया वि हु मायाजणियदोसओ इत्थिभावमणुपत्ता । देहेण सहावेण य कुडिला दिट्ठा य भुयगि व्व ॥ १५ ॥
एस चउत्थो वि सुओ संतोसविवज्जितो किससरीरो । न कहं पि हु लद्धरई इतो ततो भमणसीलो य ॥ १६ ॥

१ °मइह° प्र० ॥ २ तन्मरणदुःखातितीक्ष्णभल्लिभिद्यमानहृदयसर्वस्वः ॥ ३ °ज्जुबंध व्व खं० प्र० ॥ ४ प्रतिजन्माभ्यस्तकषायतः ॥ ५ आताम्राक्षिविक्षेपः ॥ ६ 'विघृणः' दयावर्जितः ॥ ७ द्वितीयोऽपि ॥ ८ नम्रतावर्जितः ॥ ९ विक्षेपः—निन्दा ॥

तुमं हि एत्तो भवातो सत्तमभवे कुम्मापुरे नयरे चरणाणं मज्झे दुग्गो नाम बंभणो अहेसि । ए[ए] य तुज्झ संपयं व तज्जम्मे वि चत्तारि वि पुत्तत्तणेण उववण्णा, कुसलीकया य समुचियकलासु । सरंते य काले तुच्छत्तणतो अत्थोवज्जणस्स, अणुप्पायातो खेत्तसस्ससंपयाए, सीयमाणे कुडुंबे तुमए चत्तारि वि पुत्ता वाहरिऊण भणिया—अरे ! कहमियाणिं होयव्वं ? सव्वओ पणट्ठो जीवणोवातो त्ति । सुएहिं भणियं—ताय ! वीसत्थो होसु, तहा काहामो जहा अकिलेसेण निव्वाहो संपज्जइ त्ति । तए भणियं—जुत्तमेयं तुब्भाणं ति ।

ततो पढमपुत्तो गओ अवरगामवासिणो पिउभाउणो पाहुणगो । दिन्नं तेण भोयणं, पुच्छिओ य—किमागमणकार[1]णं ?—न्ति । सुएण जंपियं—पिउणा भागावसेसमग्गणत्थं पेसिओ म्हि । ततो परुट्ठो इयरो, फरुसं जंपिउं पवत्तो य । उप्पन्नो य तुह सुयस्स कोवानलो, पयट्टो असमंजसमुल्लविउं, जातो कोलाहलो, उवट्ठिया जुज्झेणं, कह वि फुट्टं सिरं तुह सुयस्स । [2]घायरुहिरप्प[3]वाहकिलिन्नकाओ बंभणहच्चमुच्चरंतो य पट्ठितो सो [4]राउलं । भीओ इयरो, महाकट्ठेण नियत्तिओ तुह सुओ । दिन्नाणि पंच दम्मसयाणि, खामिऊण विसज्जितो गओ रंजियमणो एसो सघरं । सिट्ठो तुह वुत्तंतो । रंजितो बाढं तुमं, 'वच्छ ! साहु साहु विहियं' ति पसंसितो । तहपसंसणे य सुट्ठुयरमारूढो एस कोहपारोहे, असमंजसुल्लाव-उदरविदारणुग्गिरणाइणा य भेसियजणेहिंतो अत्थोवज्जणं काउमाढत्तो ।

बीओ य सुओ सहाइसामग्गिं काऊण गतो कुसत्थलपुरं । दिट्ठो य तहिं भूइल्लो नाम जोगायरिओ लोयपुज्जो तहा-

१ °रणं ? ति प्र० ॥ २ घातरुधिरप्रवाहक्लिन्नकायः ब्राह्मणहत्यामुच्चरन् ॥ ३ °वातोहकि° प्र० । –प्रपातौघक्लिन्न– ॥ ४ राजकुलम् ॥

कोहे पाउब्भूए चिंतेज्ञा ही ! इमो महापावो । सव्वंगजणियदाहो वइरपबंधाण बंधू य ॥ १ ॥
सं[1]-पराणुद्वेगकरो सुगइपुरीगोउरग्गलादंडो । ते धन्ना कयपुन्ना जेहिं इमो वज्जिओ दूरं ॥ २ ॥
माणे वि इमं भावेज्ज पेच्छ एयस्स दारुणं रूवं । जं एतेणोवहया नमंति पूइंति न गुरुं पि ॥ ३ ॥
सुय-सीलविलयहेऊ तिवग्गसंपत्तिनिम्महणकेऊ । दुम्मइ-कलहालाणो ही ही ! माणो दुहामाणो ॥ ४ ॥
उदयगयाए मायाए भावियव्वं इमं हि ही ! पावा । विस्सासविणासयरी लोयम्मि लहुत्तजणणी य ॥ ५ ॥
विबुहजणनिंदणिज्जा अणुसरणिज्जा य नीयलोयाणं । ते धन्ना जेहिं इमा समुज्झिया सुगइनिम्महणी ॥ ६ ॥
लोहे वि विभावेज्ञा तव्वसगाणं पए पएऽणत्थं । लाभे वि असंतोसं चोरिकाईपसंगं च ॥ ७ ॥
दविणज्जण-रक्खण-वड्ढणाहिं बाढं सरीरसंतावं । परिभोगे वि य दुक्खं तव्विरयाणं च परमसुहं ॥ ८ ॥
एवं क़सायपडिवक्खभावणाभावणे[ण] पडिसमयं । तह किंचं जह तेसिं न कयाइ वि होज्ज अवगासो ॥ ९ ॥
एवं निसामिऊणं खेमो खेमं परं समीहंतो । दिक्खं जिण[2]पामूले पडिवन्नो तिव्वसद्धाए ॥ १० ॥

सुदत्तो वि पडिवज्जिऊण जिणधम्मं कसायपडिवक्खभावणं च गतो नियघरं, पयट्टिउमारद्धो य समुचियकरणेसु । अन्नया य पिउणा तज्जितो एसो—अरे सुदत्त ! साहु व्व अदंसियकोववियारो कम्मयराणं पि हीलापयं भविस्ससि, घरजणेण वि अवगणिज्जिहसि, किं वा न सुयं तुमए ?—

१ स्वपरयोरुद्वेगकरः सुगतिपुरीगोपुरार्गलादण्डः ॥ २ जिनपादमूले ॥

जे भद्दजाइणो हुंति हत्थिणो सुप्पसंतवावारा । ते[1] अवियाणेहिं फुडं वाहिज्जंतीह जवसाई ॥ १ ॥
जे पुण दुट्ठा करिणो हणंति भंजंति जंति य जहिच्छं । ते गिज्जंति पहाणा कीरइ पूया य तेसिं च ॥ २ ॥
ता वच्छ ! एस कालो न पसंताणं न साहुचेट्ठाणं । जलनिहिणो वि हु उवरिं ठंति तरंगा तले मणिणो ॥ ३ ॥

सुदत्तेण जंपियं—ताय ! होउ किं पि, कडुयविवागो खु कसायपरिणामो, कहं मुणियतव्विवागो असमंजसायरणेण तुच्छजीवियकए पउरपारभवियकिलेसायासभायणमप्पाणं करेमि ? त्ति । पिउणा भणियं—जं रोयइ तं कुणसु त्ति ।

एगया य जायं अवरिसणं, पीडिओ लोगो, दुत्थावत्थमणुपत्ता पागयनरा पयट्टा चोरकिच्चेसु, सचमक्कारो अप्परक्खणत्थं सावहाणत्तं पवन्नो इड्ढिपत्तो लोगो । एवं च कत्थइ ओगासमलभमाणा जहि[2]च्छासोविरजामरक्खगं, इतो ततो विप्पइन्नगिहवक्खरं, असंघडियनिबिडकवाडसंपुडं पविट्ठा तक्करा सुदत्तमंदिरं । लूडियं सव्वस्सं, सिरोवरिट्ठवियपोट्टला य निग्गया घराओ. कम्मजोगेण नीहरंता पत्ता आरक्खिगेहिं, ससंरंभं संभासिया——अरे ! के तुब्भे ? किं वा पोट्टलएसु ? । इमं सोच्चा संखुद्धा तक्करा, पमुक्कपोट्टलया य पलाइउमारद्धा । उच्छलिओ तो कोलाहलो, उट्ठिओ सुदत्तो । प[3]च्चभिजाणियं च तेण तं सव्वं नीयं नियघरे । चोरा वि के वि तव्वेलमेव विणासिया, के वि बंधिऊण खेत्ता तलवरेहिं गोत्तीए[4] । 'न धणहाणी जाय' त्ति सैलहितो[5] सुदत्तो लोगेणं । 'अहो ! खंतिमूलस्स जिणधम्मस्स माहप्पं' ति सविसेसं उज्जुत्तो जातो धम्मकिच्चेसु ।

१ तेऽवि° खं० । ते उ वि° प्र० । ते अविज्ञायकैः ॥ २ यथेच्छास्वपनशीलयामरक्षकम् इतस्ततो विप्रकीर्णगृहोपस्करम् ॥ ३ प्रत्यभिज्ञाय ॥ ४ कारागारे इत्यर्थः ॥ ५ श्लाघितः ॥

अन्नया य कुडुंबकिच्चेसु ठविऊण कणिट्ठभायरं पव्वइतो एसो। अहिगयसुत्तत्थो य विहरंतो गामाणुगामं गओ कलंबुयाभिहाणं सन्निवेसं। तहिं च गामबहिया काउस्सग्गट्ठिओ दिट्ठो य तेहिं पुंव्वुत्ततक्करमयसेसेहिं,[1] पच्चभिजाणितो य। तओ 'एयकओ पुव्वकालिओऽणत्थो' त्ति संकंतेहिं अणेगप्पयारं पारद्धो सो उवसग्गिउं। सम्ममहियासमाणो य चिंतिउं पवत्तो—

जिणवयणरहस्सं पसमसारमुवलक्खिऊण मा जीव!। काहिसि पओसमेएसु बालिसेसुं हणंतेसु ॥ १ ॥
केत्तियमेत्तं एयं अज्ज वि? सिरिअज्जखंदगमुणीहिं। जंततणुपीलणं पि हु दुव्विसहं सम्ममहिसहियं ॥ २ ॥
सव्वाणुभूइपमुहेहिं समणसीहेहिं जियकसाएहिं। गोसालग[2]ऽग्गिजँलिएहिं[3] तिक्खियं तिक्खदुक्खं पि ॥ ३ ॥
जइ पुव्वभवज्जियदुक्कडाण सोढुं विवागमरिहंति। अँरहंता[4] वि हु विहुरत्तणं तुमं भयसि ता कीस? ॥ ४ ॥
इय निम्मललेसाजलपक्खालियसयलकलिलकालुस्सो। मरिऊण सो महप्पा सव्वट्ठे सुरवरो जाओ ॥ ५ ॥
इय उवसंताण सुहं इह-परभवसंभवं पि भाविंतो। को निक्कसाययाए सम्मं न ठवेज्ज अप्पाणं? ॥ ६ ॥
ताव गुणा ताव मई ताव जए भमइ निम्मला कित्ती। ताव य गुरु व्व देवो व्व नूण पूइज्जइ जणेण ॥ ७ ॥
जाव न कसायकालुस्सदूसणं कह वि पाउणइ पाणी। अह तं पि कह वि पत्तो होइ लहू ता तणातो वि ॥ ८ ॥
किं बहुणा भणिएणं? उवसमविहलाण निप्फलो धम्मो। ता सव्वपयारेणं कसायविजयाय जइयव्वं॥ ९ ॥ अपि च—

१ पूर्वोक्ततस्करमृतशेषैः ॥ २ गोशालकाग्निज्वलितैः ॥ ३ °जणिए° खं० प्र० ॥ ४ अरिहं° प्र० ॥

इय कोह-माण-माया-लोभा सक्खं व पयडियसरूवा। ते तुज्झमप्पणो वि य दुहावहा सेसगाणं पि ॥ १७ ॥
संसग्गिसंभवे वि हु एएसिं ज्झत्ति विमलसीलो वि। उँज्झियनिययववत्थो[1] किं तमकिच्चं न जं कुणइ? ॥ १८ ॥
ता थेरपुरिस! तप्पच्चयं इमं अणुमईभवं तह य। दुक्कम्मविलसियं सहसु कीस संतप्पसे बाढं? ॥ १९ ॥

एवं तिहुयणदिवायरेण भगवया जिणेण भणिए सो थेरो जाईसरणपच्चक्खीभूयपुव्वाणुभूयभावो भाविऊण भवविरूवयं वयपडिवत्तिकाउमसमत्थो सम्मद्दंसणपडिवत्तिसारमगारधम्मं पडिवन्नो। तप्पुत्ता पुण अँईतोदिन्नकसायकालुस्सपणट्ठविवेया[2] पुव्वमग्गमेव ओइँन्न[3] त्ति ॥ छ ॥

एत्थंतरे निसाँमियथेरकुडुंबवित्तंताणुसारविमरिसियमित्तमाणुसदोसविसेसेण[4] जंपियं सुदत्तेण—भो मित्त! परिभावियं तुमए एत्थ किं पि?। खेमेण भणियं—सामन्नेण किं पि परिभावियं, न विसेसओ। ततो सुदत्तेण सिट्ठो भावत्थो, जहा—भद्द! तुमए थेरेण व कसायाणुमइभावेण एवंविहकम्ममज्जियं संभाविज्जइ। खेमेण भणियं—एवमेयं, परं 'कहमियाणिं इमातो घोरघरजणजणियदोसपासाओ मोक्खो होहि?' त्ति एसँ[5] तेलोक्कचक्खू सक्खा आपुच्छिउं जुत्तो, जेण तँदाइट्ठाणुट्ठाणनिट्ठा[6] पवट्टामो त्ति। 'एवं होउ' त्ति दोहिं वि पणमिऊण सामी भणिओ—भयवं! कहमियाणिं एवंविहपावकसायदुव्विलसियातो मोक्खो? त्ति। भगवया जंपियं—तव्विरुद्धाणुट्ठाणाओ, नऽन्नहा, तं च एवं—

१ उज्झितनिजकव्यवस्थः ॥ २ अतीवोदीर्णकषायकालुष्यप्रणष्टविवेकाः ॥ ३ अवतीर्णाः ॥ ४ निशमितस्थविरकुटुम्बवृत्तान्तानुसारविमृष्टमित्रमानुषदोषविशेषेण ॥ ५ °स तिलो° प्र० ॥ ६ तदादिष्टानुष्ठाननिष्ठाः ॥

बहुसत्थपाढगा वि हु नीसेसकलाकलावनिउणा वि । दक्खा न हुंति जइ ता हीलापयविं पवज्जंति ॥ ४ ॥
सं[1]त्थत्थअपरिहत्थो वि तुच्छजाणो वि हीणपयई वि । दक्खत्तगुणग्घविओ पूइज्जइ निवसभासुं पि ॥ ५ ॥
एत्तो च्चिय जाइ-कुलाइगुणजुयाणं पि वारियं समए । पवज्जाए दाणं अच्चंतं करणजड्डाणं ॥ ६ ॥
पडिलेहणाइकिच्चं मुणमाणा वि हु ण जेण ते काउं । सम्मं तरंति धम्मत्थिणो वि थूरयरकिरियत्ता ॥ ७ ॥
इय सव्वं चिय दक्खा पुरिसा परमं सिरिं पवज्जंति । इह लोए च्चिय सुरसेहरो व्व परदेसवत्ती वि ॥ ८ ॥

तहाहि—अत्थि एत्थेव भारहे वासे कुसट्टाविसए नि[2]च्चपयट्टनट्टविहिविहियपहियपरितोसं असेसदेससविसेससमिद्धि-समुदयपत्तपवित्तपुरिसप्पव[3]रविराइयं रायपुरं नाम नयरं । तं च पुन्न-पयावाइगुणेहिं पालेइ पणमंतसीमालभूवालमउलि-मणिकिरणालीजलपडलपक्खालियपायवीढो असमसाहसावज्जियव[4]ज्जहरो हरिसेणो नाम राया । असेसंतेउरीतिलयभूया विजयवई नाम महादेवी। उत्तरोत्तरकलाकोसल्लसमलंकिया य जयदेव-दे[5]वधर-धरणिंधर-सुरसेहराइणो पुत्ता । मंतिणो य सुमइ-वामदेवप्पमुहा । तेसु य निहित्तरज्जकज्जचिंताभरो सो राया तिवग्गसंपाडणपरमं सुहमुवभुंजइ ।

[अन्नया] जाया य पच्छिमरयणीए सुहपसुत्तस्स तस्स राइणो चिंता—एच्चिरं हि कालमविकलं लीलाए च्चिय करकिसलयट्ठियं वलयं व धरियं धरणिवलयं, पइट्ठियं चउद्दिसिनिउंजेसु नीहार-हारधवलं जसपडलं, कुसुममालिय व नरवइसिरेसु संकामिया

१ शास्त्रार्थानिपुणोऽपि तुच्छज्ञानोऽपि हीनप्रकृतिरपि । दक्षत्वगुणपूर्णः पूज्यते नृपसभास्वपि ॥ २ नित्यप्रवृत्तनाट्यविधिविहितपथिकपरितोषम् अशेषदेशसविशेषसमृद्धिसमुदयप्राप्तपवित्रपुरुषप्रवरविरागराजितम् ॥ ३ °वरविरायराइयं राय° खं० ॥ ४ वज्रधरः–इन्द्रः ॥ ५ °वजयधरणिं° खं० ॥

नि[1]व्विसंकं आणा, पणामियं च नियविभवाणुरूवमणिंवारियप्पसरं [सरं]तदीणाईणं धणं, रेहामित्तं पि नाइक्कंता चिरपुरिसमज्जाया, नेव समइरेगदंड-करभराइणा थेवं पि उवद्दवितो जणो । एत्तो उत्तरं च जराजज्जरिए मह सरीरे मंदीभूए य आणा-इस्सरिया-इसारे रज्जवावारे किमिमे करिस्संति कुमारा ? कहं वा पु[2]व्वपुरिसट्ठिईमणुयत्तिस्संति ? को वा एएहिंतो परमपयरिसपत्तकलाकोसल्लाइभावो ? त्ति । जइ सम्मं मूले च्चिय सुविवेचियं इमं होइ ता सविसेसोवलद्धपुरिसारोवियरज्जभरस्स मह उभयलोगसफलजीवियसंपाडणेण समीहियं किं न सिज्झइ ? त्ति । ता पच्चूसे मंतिजणेण सह विमरिसिऊण, सयलकुमारपरिक्खं च काऊण तदुच्चियमायरामि—त्ति विभाविरस्स ताडियं पडुपडह-ज्झल्लरीज्झंकारुम्मिस्सपउरभेरीभंकारभासुरं पाभाइयं मंगलतूरं ।

कमेण य पभाया रयणी, समुग्गतो दिवायरो । कयपाभाइयकिच्चो य निसन्नो अत्थाणमंडवे मेइणीवई । निविट्ठं समुच्चियट्ठाणे मंति-सामंतमंडलं । खणमेक्कं चिंतियरज्जकज्जो य विसज्जियसेवगवग्गो कइवयपहाणमंतिपरिवुडो एगंते रयणि-परिभावियं निययाभिप्पायं मंतीण कहिउं पवत्तो । तेहिं वि विमलमइकोसल्लावगयकायव्वविभागेहिं समुल्लवियं—देव ! जुत्तमेयं, एवं कीरउ त्ति । ततो वाहराविया कुमारा, वागरिया य—अरे वच्छा ! दंसेह एच्चिरकालपरिकलियकलाप[3]रिहत्थयं ति । 'जं ताओ आणवेइ' त्ति भणिऊण जयदेवपमोक्खकुमारेहिं पारद्धा दंसिउं चित्त-पत्तच्छेय-निजुद्धाइणो कलाविसेसा ।

समकालं पढियाण वि [4]एगज्झावगविइन्नविज्जाण । जाणियसत्थत्थाण वि पुणरुत्तकयस्समाणं पि ॥ १ ॥

१ अनिरं वारितप्रसरं सरद्दीनादीनाम् ॥ २ पूर्वपुरुषस्थितिं अनुवर्त्तयिष्यन्ति ? को वा 'एतेभ्यः' एतेषु परमप्रकर्षप्राप्तकलाकौशलादिभावः ॥ ३ परिहत्थयं—निपुणताम् ॥ ४ एकाध्यापकवितीर्णविद्यानाम् । ज्ञातशास्त्रार्थानामपि (ज्ञातशस्त्रास्त्राणामपि) पुनरुक्तकृतश्रमाणामपि ॥

रायसुयाण ससत्तीए दंसिराणं पि पत्तछेज्जाइं । सुरसेहरस्स दक्खत्तपयरिसो असरिसो कोइ ॥ २ ॥
जेत्तियमेत्तं सव्वे चित्तालिहणाइयं किर कुमारा । कुव्वंति तेत्तियं एक्कगो वि सुरसेहरो कुणइ ॥ ३ ॥

अह [1]उवलक्खियदक्खत्तणऽक्खित्तसविसेससिणिद्धचक्खुणा पलोइतो मंतीहिं सुरसेहरो । राइणा वि चित्तब्भंतरुच्छलियपरमपमोएण वि कयागारसंवरेण ईसि अन्नवयएसेण एसो । सव्वायरं पसंसिया य जयदेवाइणो कुमारा, न किंचि संलत्तो सुरसेहरो । [ततो] विलक्खीहूओ सो मणम्मि, मणागममरिसितो य । दावियतंबोला य कुमारा गया जहागयं । मंतीहिं भणियं—देव ! अति हि नाम दक्खत्तणगुणेण सेसकुमारेहिंतो [2]अइसइज्जइ सुरसेहरो । राइणा जंपियं—एवमेयं, केवलं अज्ज वि धणुव्वेयविसए परिक्खियव्वो एसो । पडिस्सुयमिमं मंतीहिं । अवरवासरे य पुणो वाहराविया सव्वे कुमारा भणिया—अरे ! पयडेह नियनियकोदंडदंडवेयवियड्ढिमं ति । 'तह' त्ति पडिवन्ननरिंदाएसा रायसुया पयट्टा धणुदंडारोवणाईसु । नवरं—

तडडंतअडणिकोडिं निबिडकरुक्करिसितो गुणो चडइ । [3]संज्जियसरासणाणं जा नऽज्ज वि सेसकुमराण ॥ १ ॥
ता वलइय-संधिय-कड्ढिउग्गकोदंडजंतनिप्फिडितो । लक्खं पडुच्च पत्तो कुमारसुरसेहरस्स सरो ॥ २ ॥
एक्केक्कं जाव सरं खिवंति कुमरा सरासणेहिंतो । ताव सुरसेहरो हरिसितो व्व सरधोरणिं मुयइ ॥ ३ ॥
एक्केक्कं सरलक्खं जा न वि विंधंति सेसरायसुया । ता सुरसेहरकुमरो विंधइ सत्तऽट्ठ लक्खाइं ॥ ४ ॥
दक्खत्तणं धणुम्मि व सेसेसु वि पहरणेसु पेच्छंतो । सुरसेहरस्स राया परं मणे वहइ परितोसं ॥ ५ ॥

१ उपलक्षितदक्षत्वाक्षिप्तसविशेषस्निग्धचक्षुषा ॥ २ अतिशीयते ॥ ३ सज्जिय° खं० ॥

उपशा-न्तानुप-शान्त्योः फलम्

यद्वच्छमीदलपुटै रसकूपिकायाः, कोटीप्रवेधकरसं कणशो विगृह्य ।
निर्व्यग्रधीः प्रचुरकालमखिन्नकायः, पात्रं सुदुर्भरमपि प्रपिपर्ति कश्चित् ॥ १ ॥
पश्चात् कथञ्चन भवत्कुविकल्पयोगात्, तं स्वर्गपत्रपुटकैर्झटिति प्रजह्यात् ।
वर्षायुतार्जितमपि क्षणमात्रकेण, तद्वत् कषायकलुषः सुकृतं विहन्ति ॥ २ ॥
यद्वत् कषायवति वाससि रङ्गयोगः, तैलोपलेपिनि वपुष्यपि पांशुपूरः ।
नैर्मल्यभाजि मुकुरे प्रतिबिम्बभावस्तद्वत् कषायिणि शरीरिणि पापलेपः ॥ ३ ॥
सर्वङ्कषोल्वणकषायकृशानुतीव्रसन्तापसम्पदुपशान्तिसुनिर्वृतात्मा ।
संसारवेश्मनि वसन्नपि मुक्तिसौख्यसख्यश्रियं समधिगच्छति नात्र चित्रम् ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे उपशान्तप्रक्रमे सुदत्तकथानकं समाप्तम् ॥ २५ ॥

दक्षत्वस्य स्वरूपम्

सिक्खाण गुणाण य हुंति भायणं पाउणंति मोक्खं पि । दक्ख च्चिय पुरिसा तो भणामि दक्खस्सरूवमहं ॥ १ ॥
[1]जो कम्म-[2]सिप्पं-वणियाइएसु समतोच्चियप्पवित्तिसु य । अक्खेवेण पयट्टइ साहइ किच्चं च सो दक्खो ॥ २ ॥
कयकरणो वा दक्खो आगारिंगियपमुक्खहेऊहिं । जो वा [3]परचित्तविऊ तं पि हु अक्खंति दक्खमिह ॥ ३ ॥

१ यः कर्मशिल्पवाणिज्यादिकेषु समयोचितप्रवृत्तिषु च ॥ २ °प्पविणया° खं० प्र० ॥ ३ परिचित्त° खं० प्र० । परचित्तवित् ॥

संसयतुलाए नियजीवियव[1]मारोविंयं पयट्टंता । इच्छं लच्छि करकमलकोडरं निंति सप्पुरिसा ।। २ ।।
करिणो केसरिणो वि य भयावहा ताव नूण भासंति । जाव न विफुरइ [2]अन्नन्नविक्किमं वीरियं हियए ।। ३ ।।
इय गुरुहिययावट्ठंभनिब्भरं तं [3]पंयंपिरं दट्ठुं । लज्जामिलंतनयणा झमक्किया ज्झत्ति रायसुया ।। ४ ।।

'किं वा निबिडवीडाविच्छायत्तणमुवणीएहिं इमेहिं वरागेहिं ?' ति विभाविय गाढनिबद्ध[4]कडिल्लदुकूलंचलो, सुसंजमियकेसपासो, [5]कुंडलीकयावरिल्लं करपल्लवेण धरिंतो सुरसेहरो पधावितो करिं पडुच्च वेगेणं । दिट्ठो य सो कयहक्कापोक्कारो [6]सरोसं ऽच्छिविच्छोहेण ताविच्छपुप्फगुच्छाणुरूवमयगंधिणा हत्थिणा । ततो [7]उल्लालियपयंड-चडुलसुंडादंडो सो वेगेण जमो व धावितो कुमराभिमुहं । अवि य—

कालोयहिणा खरपलयपवणउच्छालि[8]उ व कल्लोलो । [9]उब्भवियअग्गहत्थो तमोत्थरंतो सहइ हत्थी ।। १ ।।
अइगरुयकोवसंरंभनिब्भरं धाविरो वि मत्तकरी । अमुणियकमसंचारो वियरइ दुक्कम्मनिचउ व ।। २ ।।
[10]बहुवेगभमणसंते य तम्मि कुमरेण अप्पणो वत्थं । [11]कुंडलियं तयभिमुहं पक्खित्तमखुद्धचित्तेण ।। ३ ।।
हत्थी वि य तक्कोवं निज्जविउं जाव तत्थ वत्थम्मि । [12]उन्नामियग्गकातो बाढं परिणमिउमारद्धो ।। ४ ।।

१ आरोप्य प्रवर्त्तमानाः शीघ्रं लक्ष्मीम् ।। २ अन्यान्यविक्रमम् ।। ३ प्रजल्पनशीलम् ।। ४–कटिवस्त्रदुकूलाञ्चलः ।। ५ कुण्डलीकृतोपरितनवस्त्रम् ।। ६ °सच्छवि° खं० । सरोषाक्षिविक्षेपेण तापिच्छपुष्पगुच्छानुरूपमदगन्धिना । तापिच्छः–तमालवृक्षः ।। ७ उल्लालि° खं० प्र० ।। ८ °लिय व क° प्र० ।। ९ ऊर्ध्वीकृताग्रहस्तः तम् आक्रममाणो राजते हस्ती ।। १० बहुवेगभ्रमणश्रान्ते ।। ११ कुण्डलयित्वा ।। १२ उन्नामिताग्रकायः ।।

ताव अइदक्खयाए कुमरो खंधम्मि से समारूढो । गाइउमारद्धो वेणुविजइणा सुंदरसरेण ।। ५ ।।
गारुडमंतुच्चारो व कन्नविवरं अहिस्स व गयस्स । गेयसरो पविसंतो दप्पविसं से पणासेइ ।। ६ ।।

अह समुवलद्धसाभावियसरूवे सयमेवाऽऽलाणसालासमीवमणुपत्ते जयकरिम्मि निबिडखंधनिबद्धासणं रायसुयमवलोइऊण पुच्छियं राइणा—को एस कुमारो ? त्ति । सेवगजणेण भणियं—देव ! तुम्हपायपउमोवजीवीण चीण-हूण-कलिंग-बंगरायसुयाईण मज्झातो न ताव एसो, अतो देसंतरिओ व संभाविज्जइ, दक्खत्तणाइगुणेण य विसिट्ठकुलुब्भवो व लक्खिज्जइ त्ति । तओ वाहराविओ सुरसेहरो राइणा, दवावियं किं पि आसणं । 'गउरवविरहियं' ति न उवविट्ठो रायसुतो । 'गरुयरायकुलसंभवो' त्ति निच्छिऊण य रन्ना सायरं उववेसितो समीवसिंहासणे, आपुच्छिओ य—वच्छ ! कत्तो आगओ सि ? के वा अम्मा-पियरो ? किं वा कुलं ? कत्तो वा कलासु दक्खत्तणं ? ति । सुरसेहरेण जंपियं—महाराय ! वइदेसियसरूवे पच्चक्खमुवलक्खिज्जमाणे [1]सेससविकत्थणावित्थरो विडंबणामित्तो चेव पडिहाइ । राइणा जंपियं—वच्छ ! मा एवं उल्लवसु, [2]दिस्समाणमणहरमाहप्पेसु वि रयणाइसु आगराइपुच्छा छेयजणस्स वि सुप्पसिद्धा चेव, ता किं तुममित्थमत्थाणे च्चिय किलिस्ससि ? । सुरसेहरेण जंपियं—

सुयस्स सीलस्स कुलस्स अप्पणो, सयं सरूवं पकहेइ जो नरो ।
न सोहए तस्स तमिंदुसुंदरं, सचामरं छत्तमिवऽप्पणो ट्ठियं (?) ।। १ ।।

१ शेषस्वविकत्थनविस्तरः ।। २ दिप्पमा° खं० ।।

वरं हि मूयत्तणमेव सव्वहा, अमाणुसाए अडवीए वा ठिई ।
न जत्थ थेवं पि हु अप्पणो कहापवंचचिंताए मणो पयट्टदि ॥ २ ॥

अह निच्छियतयभिप्पाएण पुहईवइणा भणिया नियसेवगा—अरे ! सम्मं पेहेह, इमिणा सह कोइ सहाई आगतो न व ? त्ति । समीवोवगएण जंपियं भीमेण—देव ! एसो हं एयस्स रायसुयस्स नाममित्तेण सहाई, परमत्थतो पुण पुव्वजम्मसमुवज्जियसुकयसंभारो चेव एयस्स महाणुभावस्स सहाइ त्ति । राइणा भणियं—एवमेयं, तहावि ममोवरोहेण कहेसु—अलंकिय-कयरगोत्तो किमभिहाणभूवइसुओ एसो ? त्ति । ततो भीमेण सिट्ठो सव्वो से वुत्तंतो। परितुट्ठो राया । सव्वायरमालिंगिऊण सुरसेहरो आरोविओ उच्छंगे, भणितो य—वच्छ ! किमेवं सरूवमेत्तकहणे वि अप्पपसंसादोसमुप्पाएसि ? त्ति । परोप्परपणयप्पहाणुल्लावेण खणमेक्कं विगमिऊण उट्ठिया भोयणकरणत्थं । भोयणावसाणे य वाहराविऊण संवच्छरियं कतो पाणिग्गहणलग्गविणिच्छओ । पउणीकयं विवाहोवगरणं राइणा, समुचियसमए य सप्पणयं अमच्चमुहेण भणाविओ सुरसेहरो, जहा—ललियसुंदरी नाम रन्नो धूया नेमित्तिएण आइट्ठा—‘जो पट्टहत्थिं अवहत्थियालाणखंभं अवगन्नियारोहगवग्गं निरग्गलं वियरंतं दक्खत्तणेण आरुहिऊण आलाणट्ठाणे आणेही सो इमीए पाणिग्गाहो भविस्सइ’ त्ति, एयप्पओयणप्पसाहणत्थं च पढमयरमेवाणेगे उवाहरिया रायसुया, न य तेहिंतो केणइ किं पि पत्थुयत्थे सिद्धं, तुमए य भो रायसुय ! करिवरं विणयंतेण सयमेव उवज्जिया एसा रायसुया, ता संपयं पउमे पउम व्व तुमम्मि निसीयउ, अणुरूवपइसंपत्तीए सहलीकरेउ य नियं-

१ °तो निव खं० ॥ २ °उमो व्व खं० प्र० । पद्मे ‘पद्मा इव’ लक्ष्मीरिव ॥ ३ निजनिर्माणम् इयमिति ॥

का. ... को ...

तह वि हु अवायभीतो ताण पुरो नेव तं पसंसेइ । हरिसेणमहीनाहो अहो ! अलक्खा[1] महापुरिसा ॥ ६ ॥
हरिसट्ठाणे रुट्ठा कोवट्ठाणे य दरिसियप्पणया । नज्जंति[2] कहं गरुया रुट्ठा तुट्ठा व इयरेहिं ? ॥ ७ ॥

अह अदिन्नसाहुक्कारो सुरसेहरो सेसरायसुया य कयसक्कारा गया जहागयं। पत्थावे य दिन्ना नरिंदेण पत्तेयं कुमाराणुभुत्ती। सुरसेहरो वि अणुवलद्धतहाविहगामाइपसायत्तणेण अप्पाणं परिभूयं मन्नंतो रयणीए नीहरिओ नयराओ भीमाभिहाणेण एगेण सहाइणा समं । कमेण य वच्चंतो संपत्तो लच्छीविलासविच्छड्डरिल्ले[3] कमलसंडे व कमलसंडपुरे नयरम्मि पविट्ठो नयरमज्झम्मि । एत्थंतरम्मि तन्नयरसामिणो कत्तविरियराइणो गंधहत्थी करप्पहारजज्जरियालाणखंभो[4] जहिच्छाविहारमुसुमूरियपेक्खगजणो[5] अकालकुवियकयंतविब्भमो निरंकुसं सव्वत्थ वियरिउं पवत्तो । ‘तं च जो किर अंकुसपहारमकुणंतो आलाणथंभदेसमाऽऽणेही तस्स राया दुहियरं दाहि’ त्ति पणविसेसनिसामणुप्पन्नामरिसा[6] बहवो खत्तियकुमारा गंधवाइकलाविसेसविन्नाणगव्वुद्धुरा करिवरखलणत्थमुवट्ठिया । अह तं रायधूयापयाणपणपहाणं तहाविहवुत्तंतं जणमुहातो सुरसेहररायसुओ निसामिऊण गओ कुंजराभिमुहं । दिट्ठा य पुरतो पिट्ठतो पासओ य रविं व तिमिरुक्केरा[7], केसरिं व कुरंगवग्गा, दूरगया गयवरमुवसप्पमाणा णेगरायसुया । ततो ईसिपहसिरेण[8] भणिया ते सुरसेहरकुमारेण—

किं दूरगया अच्छह ? आरुहह न जं गयस्स खंधम्मि । जीवियनिरविक्खाणं कज्जाणं होइ निप्फत्ती ॥ १ ॥

१ अलक्ष्याः ॥ २ ज्ञायन्ते ॥ ३ कमलषण्डपक्षे लक्ष्मीदेव्या विलासैर्व्याप्ते, नगरपक्षे पुनः ऋद्धिजनितैर्विलासैरित्यर्थः ॥ ४ करः—शुण्डादण्डः ॥ ५ मुसुमूरिय—भञ्जित ॥ ६ प्रतिज्ञाविशेषश्रवणजाताभिलाषा इत्यर्थः ॥ ७ ‘तिमिरोत्कराः’—अन्धकारसमूहाः ॥ ८ ईषत्प्रहसनशीलेन ॥

आणत्तो अवराजिओ, माराविया य घायगा, 'जीवियदायगो' त्ति सवायरं पूइतो सुरसेहरो, पणामियं च नियरज्जं ।

तं च अणिच्छंतो पाएसु पडिऊण रायसुओ विन्नविउं पवत्तो—देव ! ममोवरि पसायं कुणमाणा खमह अवराजियस्स अवराहमिममेक्कं, अजाणो क्खु एसो, कहमन्नहा देवाण वि दुल्लहाणं देवपायाणमणिट्ठं काउं ववसेज्जा ? एयाणं पि घायगाणं देउ देवो अभयदाणं नियदुक्कयहयाण कीडप्पायाणं, किमिमिणा [1]मयमारणेण ? । 'तह' त्ति पडिवन्नं रन्ना, नियत्तिओ अवराइयरायपुत्तो । 'अहो ! महापुरिसया, अहो ! निरीहत्तणं, अहो ! परोवयारि' त्ति वित्थरिओ सवत्थ सुरसेहरस्स साहुवाओ । अवरवासरे य राया वेरग्गोवगतो चिंतिउं पवत्तो—

हा धी ! निरत्थयं मुद्धबुद्धिणो पुत्तसंतइनिमित्तं । सुहि-सयण-मेत्तहेउं च कह कयत्थिति अप्पाणं ? ॥ १ ॥
न मुणंति सकज्जणुरागिणं इमं सवमेव थेवे वि । कज्जविसंवायम्मि विसंवयंतं [2]सपन्नं व ॥ २ ॥
एक्कपए चिय एत्थं [3]पल्हत्थियसवपुवउवयरियं । वट्टंते वि कुडुंबे डुंबि व विडंबणा मोहो ॥ ३ ॥
धण-सयण-[4]जाय-जोवण-विसयवासंगदूसियमणस्स । हा हा ! निरत्थओ कह मह कालो वोलिओ दूरं ? ॥ ४ ॥
अज्ज वि एत्थेव चिरं अणुरज्जंतोऽहमुज्झियविवेगो । धम्मसहाई हुंतो जइ एस सुओ न एवं मे ॥ ५ ॥
ता दोसो वि गुणत्तेण परिणओ पुत्तसंतिओ इण्हिं । उज्झियरज्जो [5]सज्जो वणवासं चिय पवज्जामि ॥ ६ ॥

१ मृतमारणेन ॥ २ 'सपत्नमिव' शत्रुमिव ॥ ३ पर्यस्तितसर्वपूर्वोपकृतम् ॥ ४ °जीय° प्र० । धनस्वजनजायायौवनविषयव्यासङ्गदूषितमनसः ॥ ५ सद्यः ॥

एवं विभाविऊणं ठविउं सुरसेहरं अणिच्छंतं । कह कह वि नियपयम्मि पडिवन्नो तावसाण वयं ॥ ७ ॥

एवं च सुरसेहरो ससुरसमप्पियरज्जो रज्जुनद्धो व पुवपुरिसप्पवाहेण जाव वसुंधरं पालेइ ताव पिउणो पहाणपुरिसा समागया, पत्थावे सिट्ठं च तेहिं, जहा—देवस्स हरिसेणस्स वणवासोवगयकत्तविरियमहारायरिसिणो वित्तंतं निसामिऊण तुट्टा भववासवासणा, वुच्छिन्ना विसयवंच्छा, विहडियं पेमनिगडं, उल्लसियं जीवविरियं; तुह समप्पियरज्जभरो य संपयमेव समीहइ सवविरइं, ता कुणह संवाहं, दवावेह पत्थाणढक्कं, सज्जावेह वाहणगणं ति । ततो 'तह' त्ति पडिसुणिऊण तवयणं, नियरायपए पइट्ठिऊण अवराजियं अक्खंडियपयाणएहिं गतो नियनयरं, पवेसिओ महया विभूईए । कयपायपंचंगपणिवाओ य निवेसितो राइणा उच्छंगे, पुच्छिओ सवं पुववुत्तंतं, सुमुहुत्ते निवेसिओ रायपए । सयं च राइणा गुणसेणसूरिणो समीवे पडिवन्ना सवविरई, विहरिओ अप्पडिबद्धविहारेण, आराहिऊण य संजमं पत्तो देवलोयसिरिं ति । सुरसेहरो वि राया नियदक्खत्तणेण सुचिरमाणासारं रायसिरिमुवभुंजिऊण एगया परिभाविउं पवत्तो—

दक्षत्वस्य फलम्

भवणे भवणे बहुसुकयसालिणो संति नरवईण सुया । नीसेसकलाकुसला य सबसत्थत्थविउणो य ॥ १ ॥
तेसिं मज्झे य मए विजयपडाया अणेगहा पत्ता । दक्खत्तगुणेण परं उवज्जिया रायलच्छी वि ॥ २ ॥
केवलमेयं दक्खत्तणं परं कारणं भवदुहाणं । ता तं दक्खत्तं अणुसरामि न पडेमि जेण भवे ॥ ३ ॥
इय भाविउं स धीमं रज्जे आरोविउं नियगपुत्तं । पवज्जं पडिवन्नो दिवं पत्तो य देवसिरिं ॥ ४ ॥
एवं संसारियकज्जसाहगं जह वयंति दक्खत्तं । तह धम्मकज्जविसयं पि तं धुवं परमपयजणगं ॥ ५ ॥ अपि च—

शस्त्रेऽपि शास्त्रेऽपि कृतश्रमोऽस्तु, भवत्वशेषासु कलासु विज्ञः ।
विज्ञानभेदांश्च विदाङ्करोतु, काव्यप्रबन्धं च परं तनोतु ॥ १ ॥
चेत् कार्यकाले समुपस्थितानां, प्रावादुकानां कृतमत्सराणाम् ।
गर्वं न खर्वं क्षमते विधातुं, तदा स विज्ञोऽपि जडत्वमेति ॥ २ ॥
स्वल्पेऽपि विज्ञानबले बलीयान्, दक्षः पुनर्न्यत्कृतदुष्टपक्षः ।
पूजाप्रकर्षं च परां च कीर्तिं, श्रियं च मोक्षं च लभेत सद्यः ॥ ३ ॥
इति निखिलगुणानां चण्डजाड्यान्धकारावरणपिहितभासां दीपवद् व्यञ्जकोऽयम् ।
कथमिव न विशिष्टो दक्षभावः ? कथं वा परमसुखसमृद्धेर्नैव हेतुर्भवेच्च ? ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे दक्षत्वगुणचिन्तायां सुरशेखरराजपुत्रकथानकं समाप्तम् ॥ २६ ॥

दक्खो वि नरो दक्खिन्नवज्जिओ भुवि लभेज्ज वयणिज्जं । ता दक्खिण्णसरूवं किं पि निरूविज्जए एत्तो ॥ १ ॥
जो हि सुहासयगब्भो जोगो मच्छरियदोसनिम्महणो । परकिच्चेसु पयट्टइ तं वन्नंतीह दक्खिन्नं ॥ २ ॥
तग्गुणपहाणयाए पुरिसो वि हु दक्खिणो त्ति निद्दिट्ठो । जह दं[1]डजोगउ च्चिय नरो वि दं[2]डो त्ति किर्त्तिति ॥ ३ ॥

१ डंड° प्र० ॥ २ डंडो प्र० ॥

निम्माणमिम त्ति । सुरसेहरेण जंपियं—किमिह अम्हारिसा [जाणंति ?] गुरवो च्चिय उचिया-ऽणुचियं मुणंति त्ति । अह जाणियतयभिप्पाएण पुहइवइणाऽणुकूलगहबलोवेए विवाहजोग्गे लग्गे सुरसेहरस्स सायरं दिन्ना ललियसुंदरी, कयं पाणिग्गहणं, वित्तो महया रिद्धिसमुदएण विवाहो । पिईभवणाओ वि सविसेसं रायसुओ सुहेण तत्थ दिणाइं गमेइ त्ति ।

अन्नया य राया तेण समं कइवयपहाणपुरिसपरिवुडो पमयवणे वणलच्छिं पेच्छिउं पविट्ठो, सुरसेहरखंधारोवियकरतलो य इओ तओ तरुवरमवलोइंतो विवित्तविभागावट्ठिए पविट्ठो कयलीहरे । एत्थंतरे 'हण हण' त्ति जंपंता दुवे भीसणायारा महामल्ला निक्किवकिवाणीपाणिणो[2] राइणो घायकरणत्थमुवट्ठिया वेगेणं । अह ज्झड त्ति दक्खयाए अखुद्धेणं सुरसेहरेणं खोणीवइं पिट्ठओ पक्खिविय दोहिं वि हत्थेहिं गहाय सपहरणा चेव मल्ला निजुद्धकुसलयाए पण्हिपहारेहिं चूरिऊण निवाडिया धरणिवट्ठे । पत्ता य तक्खणं राइणो अंगरक्खा, पडिरुद्धा सव्वओ तेहिं, पुच्छिआ य—अरे ! केण तुब्भे एवंविहकज्जकरणाय निउत्त ? त्ति । सव्वपयत्तसमुल्लाविया वि जाव न किं पि जंपंति ताव निवेइयं राइणो । ततो वाहराविऊण पुट्ठो उज्जाणपालगो—अरे ! को इह पुव्वं पविट्ठो ? त्ति । तेण जंपियं—देव ! तुम्हाण पुत्तो अपराजिओ विमोत्तूण न अन्नो को वि इहाऽऽगयपुव्वो । ततो राइणा कसप्पहारेहिं ते ताडाविया सुनिट्ठुरं । अह घोरघायवाउलीहूयजीवियव्वाणं पायडीहूओ सब्भावो, विस्सुमरिओ वयणबंधो[1] । ततो भणियं तेहिं—देव ! तुम्ह सुएण अवराजिएण रज्जाभिलासिणा दीणारलक्खप्पयाणेण उवलोभिऊण तुह वा[3]वायणत्थमित्थं वावारिया अम्हे । इमं च सोच्चा गरुयकोवावेगरत्तनयणेण राइणा निव्विसओ

१ °वयणा° खं० ॥ २ निष्कृपकृपाणीपाणी ॥ ३ व्यापादनार्थमित्थं व्यापारितौ आवाम् ॥

कोववियारेसु न धम्मववहारेसु, अलियजंपणं भालयलकित्तणेसु न नीइनिव्वत्तणेसु, सउलविणासो धीवरेसु नाहिगारिमंदिरेसु। तीए य पुरीए वत्थव्वो भूरिदव्वोवज्जणजाणावियववसायवित्थरो मंथरो नाम सेट्ठी, कमलदलविसालच्छी लच्छी नाम से भज्जा। सव्वगुणजुत्ता सावदेव-भवदेवनामाणो दुवे पुत्ता, अणुरूवकुलुब्भवबालियाकयपाणिग्गहणा य उचियठिईए कालं वोलेंति।

एगम्मि य अवसरे गेहपुरतो मंडवकरणत्थं वेलिं निहणंतस्स सेट्ठिणो जेट्ठसुयस्स सव्वदेवस्स[1] खडक्कितो निहाणकंठओ। 'किमेयं ?' ति सवित्थरं खणिंतस्स पयडीहूओ तंबकलसो। विहाडिऊण मुहमुहं तम्मज्झमवलोयंतस्स पुव्वभवनिहित्ताभरण-दंसणे जायं जाईसरणं, मुच्छानिमीलियच्छो य पडिओ धरणिवट्ठे। 'हा हा ! किमेयं ?' ति वीजिओ सो वत्थंचलेण। खणं-तरेण य उवलद्धचेयणो पुच्छिओ—वच्छ ! किमेयं ? ति। सावदेवेण भणियं—ताय ! पुव्वभवसरणनिमित्तमेयं[2] ति। पिउणा भणियं—कहमेवं संभवइ ?। तेण वागरियं—सम्मं निसामेसु—

एत्तो पंचमे भवे अहं वसू नाम वणियसुओ उज्जेणीपुरीओ पहाणपणियनिवहमादाय एत्थ पुरीए आगतो। विणिव-ट्ठियं भंडं, समासाइओ भूरिदव्वलाभो। जाया य पइदिणदंसणेण सपणयालावेण य एयभवणसामिणा संभुणा सद्धिं मेत्ती। एगम्मि य पत्थावे संवुत्तो[3] परचक्कसंखोभो। ततो मए एगंते सिट्ठं संभुणो, जहा—किमियाणिं कायव्वं ? एसो अत्था-ऽऽभ-रणसंभारो न तीरइ जह तह गोविउं। तेण जंपियं—वीसत्थो[4] होसु, एत्थ तंबमयकलसे खिविऊण सव्वसारं एत्थ भवणंगणे निहणसु त्ति। 'तह' त्ति जायपरमविस्सासेण सव्वं निवत्तियं मए। सुद्धबुद्धित्तणेण य इओ तओ पेसियनियपरियणो तीए चेव

1 °स्स घड° खं० ॥ 2 पूर्वभवस्मरणनिमित्तमेतत् ॥ 3 'संवृत्तः' सञ्जातः ॥ 4 विश्वस्तो भव, अत्र ताम्रमयकलशे ॥

रयणीए एगागी सुत्तो तत्थेव। उप्पन्नगाढलोभेण य संभुणा निबिडकंठावीडणविहिणा विणासिओ हं उववन्नो तत्थेव घरे मूसगत्तणेण। उवलद्धसरीरबलो य पुव्वज्जियधणट्ठाणे ओहसन्नाए दरिं[1] काऊण ट्ठाउं पवत्तो। सविसेसवड्ढिउच्छाहो तं चेव हेट्ठओ खणं[2] वच्चंतो खइतो विसहरेणं मतो भुज्जो तम्मि य घरे उववन्नो भुयगत्तणेण। पुव्वपडिबंधेण य तहिं चेव निहाणपएसे पुणो पुणो संचरंतो तद्देसपरिसप्पिणा मारिओ हं नउलेण। गयजीवितो य पुणो एत्थेव घरे घरवइणो जाओ पुत्तभावेण, बालत्तणमइक्कंतो पढाविओ किं पि समुचियकलं, पत्तो कमेण तारुन्नं।

ताव रई ताव मई ताव च्चिय दिसिविभागविन्नाणं। ताव य कुसलं चित्तं ताव य परमुज्जमो कज्जे ॥ १ ॥
जावऽज्ज वि नो गेहे तत्थ अहं आवसामि निब्भंतं। गेहागयस्स सव्वं ज्झड त्ति तं वच्चए नासं ॥ २ ॥
अह पिउणा पडियारा णेगे मंताइणो समारद्धा। तह वि न मे उवयारो थेवो वि हु सक्किओ काउं ॥ ३ ॥
एगम्मि य पत्थावे निम्मलनाणोवलद्धभवभावो। पत्तो तहिं महप्पा संवरनामो मुणिवरिट्ठो ॥ ४ ॥
दिट्ठो स कहं पि मए पुट्ठो य तमप्पणो सरूवं च। तेणं भणियं भद्दय ! आघायट्ठाणमेयं ति ॥ ५ ॥
कहमेवं ? तो मुणिणा पयंपियं इयभवाउ तुरियभवे। एयघरसामिएणं हओ तुमं दव्वलोभेण ॥ ६ ॥
घरसामी वि हु रन्ना हणाविओ तुह विणासरुट्ठेण। तत्थेव निहाणोवरि मरिउं सप्पो समुप्पन्नो ॥ ७ ॥
तं च निहाणस्सोवरि वट्टंतो तेण भद्द ! निहओ सि। भुज्जो य अही हुंतो तेणं नउलेण निम्महिओ ॥ ८ ॥

1 'दरिं' बिलम् ॥ 2 खनन् ॥

संपइ एत्थेव घरे एस सुयत्तेण तं समुप्पन्नो । लहसि न एत्थं च रइं हउ त्ति काऊण तिक्खुत्तो ॥ ९ ॥
जत्थ पएसे मरणं उवघाएणं हवेज्ज जंतूण । दिसिवामोहाईया हुंति तहिं चित्तवाघाया ॥ १० ॥
एवं सिट्ठे मुणिणा अणुसुमरियसव्वपुव्ववुत्तंतो । अच्चंतं भीओ हं गेहं कलिउं मसाणं व ॥ ११ ॥
पिउणो [1]अकहिय वत्तं तित्थाइं पलोइउं लहु पलाणो । [2]सरिवारिपूरविहओ तत्थ वि पंचत्तमणुपत्तो ॥ १२ ॥
एसो पुणो वि एत्थेव मंदिरे ताय ! तुह सुतो जातो । जमवयणं पिव भीमं दिट्ठं च निहाणमवि एयं ॥ १३ ॥
ता जह एयं दिट्ठं तह दिट्ठो च्चिय धुवं कयंतो वि । एवं ठिए य संपइ गेहनिवासो धुवं मच्चू ॥ १४ ॥
अह जाव किं पि तच्चित्तधीरिमुप्पायणं कुणइ जणगो । ता नीहरिओ गेहाउ झत्ति पत्तो स आरामं ॥ १५ ॥
दिट्ठो य तेण सो पुव्वकालिओ संवरो मुणिवरिट्ठो । भणिओ य वंदिऊणं भयवं ! सरणं तुमं एत्तो ॥ १६ ॥
कुणसु परित्ताणं मे मुणिणा भणियं [3]चयाहि भद्द ! भयं । गिण्हसु जिणिंददिक्खं दुक्खाण जलंजली देसु ॥ १७ ॥
तो गिण्हिऊण दिक्खं स महप्पा तेण मुणिवरेण समं । विहरइ वसुहं एगग्गमाणसो धम्मकम्मम्मि ॥ १८ ॥

सुया य तप्पव्वज्जागहणवत्ता पिउणा, जाओ चित्तसंतावो। पन्नविओ य भवदेवेण—ताय ! "गतं मृतं प्रव्रजितं शोचन्ते न विचक्षणाः ।" अओ कीस कुणसि सोगं ? ति । पिउणा भणियं—वच्छ ! तुब्भे दोन्नि वि चक्खुपडितुल्ला मज्झ, तदे[4]गविगमे य कहं न सोयामि ? । भवदेवेण जंपियं—अत्थि एवं, तहावि विइक्कंतपयत्थे निरत्थयं सोयकरणं । 'एवमेयं' ति

१ अकथयित्वा वार्ताम् ॥ २ सरिद्वारिपूरविहतः ॥ ३ त्यज ॥ ४ °देयवि° खं० ॥

---

[1]समए वि हु दक्खिन्नं लिंगं वुत्तं सुधम्मसिद्धीए । एयविउत्तो लोए वि तूललहुयत्तणमुवेइ ॥ ४ ॥
दक्खिन्नसुन्न[2]हिययतो पुत्तो वि हु वेरिउ व्व पडिहाइ । दक्खिन्नाणुगओ पुण दीसइ बंधु व्व अवरो वि ॥ ५ ॥
दक्खिन्नमलंकारो दक्खिन्न[3]मखन्नवायधणलाभो । दक्खिन्नमुन्नइपयं दक्खिन्नं परमवसियरणं ॥ ६ ॥
दक्खिन्नमुत्तरोत्तरगुणभवणारोहणेक्कनिस्सेणी । दक्खिन्नमखिन्ना जे धरंति ते हुंति [4]जयपुज्जा ॥ ७ ॥
दक्खिन्नभावउ च्चिय सुपुरिसमग्गम्मि जायबहुमाणो । पत्तो परमपयं पि हु भवदेवो नाम वणियसुओ ॥ ८ ॥

तथाहि—अत्थि सुहडावलि व्व [5]वणलच्छिविराइया, पंडियमंडलि व्व [6]सुहासियासयंपसोहिया, वसिमभूमि व्व [8]गयमयराय-सावया बंगजणवयावयंसपडितुल्ला विस्सपुरी नाम नयरी । [9]जहिं च विरोयणकुलकुवलयचंदो रायलच्छिनलिणीकंदो निवारियवेरिरायपयावपसरो समुचियसमयदिन्नसव्वावसरो गुणरयणसायरो दिवायरो नाम राया । [10]जीए य खणभंगुरत्तणं

१ 'समयेऽपि' सिद्धान्तेऽपि ॥ २–हृदयः ॥ ३ °मखिन्न° खं० प्र० । अखन्यवादधनलाभः ॥ ४ जगत्पूज्याः ॥ ५ सुभटावली पणलक्ष्म्या–प्रतिज्ञालक्ष्म्या विराजिता, नगरी पुनः वनलक्ष्म्या विराजिता ॥ ६ पण्डितमण्डली सुभाषितशतप्रशोभिता, नगरी पुनः सुखासिकाशतप्रशोभिता ॥ ७ °यणप° खं० ॥ ८ वसिमभूमिः गतमृगराजश्वापदा, नगरी पुनः गतमदरागशापा ॥ ९ यस्यां च नगर्याम् ॥ १० यस्यां च नगर्याम् कोपविकारेष्वेव 'क्षणभङ्गुरत्वं' क्षणनाशित्वम्, न धर्मव्यवहारेषु । भालतलवर्णनप्रसङ्गे एव अलिकशब्दोच्चारणम्, अलिकशब्दस्य भालसमानार्थकत्वात्, न पुनः राजनीतिनिर्वर्तनप्रसङ्गे 'अलीकजल्पनम्' असत्यभाषणम् । 'शकुलविनाशः' मत्स्यविनाशनं 'धीवरेषु' मात्स्यिकेष्वेव, न पुनः अधिकारिमन्दिरेषु सकुलानाम्–उत्तमवंशजानां स्वकुलानां वा विनाशः ॥

केवलं किं पि सरीरमपडुयं ति । भवदेवेणं[1] भणियं—जइ एवं ता कहं तुममेवंविहावयावडियमुज्झिऊण वच्चामि ? सव्वहा कहेसु 'किं ते बाहइ ?' त्ति । ततो तदुवरोहेण सिट्ठो से भूवइणा सूलवइयरो । मुणियविसूइयावइयरेण य भवदेवेण सरीरसंवाहण-ओसहपाणाइणा उवयारेण पगुणीकओ राया । पयट्टा गंतुं,पत्ता पुरीपरिसरे । भवदेवेण निमंतितो राया—एहि मह भवणे, भुंजसु त्ति। रन्ना जंपियं—अत्थि मे एत्थ सयणो तग्गिहे च्चिय भुंजिस्सामि, अओ अणुजाणाहि ममं गमणाय त्ति । 'एवं कुणसु' त्ति य तेणाणुन्नाओ कइवयपयाइं गंतूण नियत्तो राया, भणिउमाढत्तो य—भो भो महाभाग ! कत्थ भुज्जो तुमं दट्ठव्वो सि ? त्ति । भवदेवेण जंपियं—[2]देवो जाणइ । रन्ना जंपियं—मा एवमुल्लवसु, सव्वहा साहेसु—कत्थ तुमं वससि ? कस्स सुओ ? किं नामधेयो सि ? त्ति । ततो तदणुरोहेण सिट्ठं भवदेवेण, जहा—खंदमंदिरसमीवे मंथरसेट्ठिसुओ भवदेवाभिहाणो हं वसामि त्ति ।

इमं च सम्ममवधारिऊण वेगेण पट्ठिओ राया । भवदेवो वि 'अकयतप्पडिपुच्छो' त्ति सोगं कुणंतो गओ सगिहं । राया वि पच्छन्नवित्तीए चेव दिट्ठिं वंचाविऊण चेडाईणं पविट्ठो रायभवणं । दिट्ठो य एगपए च्चिय उम्मग्गो[3] व्व धरणियलाओ रायलोएणं[4] । ततो कयं वद्धावणयं । अह समइक्कंतेसु केच्चिरेसु वासरेसु चिंतियं रन्ना—

चिरमुवयरियं परिभाविऊण अहवा भविस्समुवयारं । दंसंति पणयभावं परस्स पयडो इमो मग्गो ॥ १ ॥
तस्स पहियस्स पुण एयविसरिसो कोइ पणयवावारो । पहपेहणे वि तहभोयणाइणा जमहमुवयरिओ ॥ २ ॥
धरइ धरं भुयगवई भणइ जणो अहमिमं नु तक्केमि । पच्चुवयारपरम्मुहपुरिसेहिं धरिज्जए धरणी ॥ ३ ॥ अहवा—

१ °ण जंपियं प्र० ॥ २ देवो प्र० ॥ ३ 'उन्मग्न इव' बहिर्निर्गत इव ॥ ४ राया लो° खं० प्र० ॥

पच्चुवयारं जे नऽहिलसंति जे वि य सरंति उवयारं । दोहिं पि धरिज्जइ तेहिं वसुमई इय मई मज्झ ॥ ४ ॥
सो च्चिय परं महप्पा पहिओ जेणोवयारिणा वि अहं । एयं पि न पुट्ठो कत्थ वससि ? किं तेऽभिहाणं वा ? ॥ ५ ॥
ता किं होही सो कोइ वासरो जत्थ सो सहत्थेण । ठविऊणं नियपए सयं गमिस्सामि वणवासं ? ॥ ६ ॥

इय जाव तदुवयारेक्कचित्तो पुहइवई अच्छइ ताव विन्नत्तो पडिहारेण—देव ! दुवारे चिरदंसणूसुयं महायणं चिट्ठइ त्ति । रन्ना जंपियं—लहुं पवेसेसु । 'तह' त्ति पवेसियं तं पडिहारेण । समप्पियपाहुडं कयसायरप्पणामं च सुहासीणं पुच्छियं नरिंदेण—अवि कुसलं महायणस्स ? न अभिभवंति तक्करा ? न खलीकरेंति उस्सिंखला खला ? न य परितावेंति लंचोवजीविणो ?। महायणेण भणियं—देव ! तुम्ह पायपंकए पभवंतम्मि दुक्करमेयं, केवलं तक्करेहिं उवद्दविउमारद्धा किं पि किं पि पुरी । सामरिसं व जंपियं रन्ना—कस्स संपयमेव मंदिरं लुंटियं ? ति । महायणेण भणियं—देव ! मंथरसेट्ठिणो । नामसवणुब्भवंतपरितोसेण य भणियं रन्ना—जो भवदेवस्स जणगो खंदमंदिरादूरनिवासी य[2] ? । महायणेण भणियं—देव ! एवमेयं । तओ वाहरिऊण[3] मंथरसेट्ठी राइणा अणिच्छंतो वि ठविओ अमच्चपए, दिन्नो पंचंगपसाओ, निरूविओ रज्जकज्जचिंताए । गयाइं कइयवि दिणाइं । विन्नत्तं मंथरेण—देव ! जराजज्जरसरीरोऽहमसमत्थो रज्जचिंताए, ता रज्जमहाभरुत्तारणेण अणुगिण्हसु मम—न्ति । रन्ना जंपियं—जइ एवं ता नियपुत्तसंकामियरज्जभरो निच्चिंतो अच्छसु त्ति । 'महापसातो[4]' त्ति भणंतेण मंथरेण ठविओ नियपए भवदेवो, दंसिओ रन्नो[5] । एवं च सो रज्जकज्जमणुदिणमणुपालिंतो विम्हइयमाणसो—

१ °रिभाविं° खं० प्र० ॥ २ य मंथरसेट्ठी ? । महा° प्रसं० ॥ ३ °हराविऊण खं० ॥ ४ महाप्रसादः ॥ ५ रन्ना खं० प्र०॥

अइपवररयणभूसणसणाहसोहंतकंतसव्वंगं । अमुणंतो तं भूवं पहदिट्ठं पि हु विचिंतेइ ॥ १ ॥
पुव्वपुरिसप्परूढीए अहव गुणपगरिसेण केणावि । सेवावित्तीए वा उवयरणेणं व अइगुरुणा ॥ २ ॥
आवज्जिया नरिंदा दिंति पसायं ठवेंति अहिगारे । कारिंति अप्पतुल्लं पि सेवगं किमिह किर [1]चोज्जं ? ॥ ३ ॥
जं पुण एवंविहभावविरहिए [2]मारिसे वि सम्माणं । दंसइ एवं एसो नराहिवो तं [3]महाचोज्जं ॥ ४ ॥
ईय पइदियहपुणन्नववियप्पकल्लोलमालियाउलिओ । अविमुणियकज्जमज्झो किच्छेण दिणाइं वोलेइ ॥ ५ ॥
सो वि य दिवायरनिवो जं जं वेलं उवेइ भवदेवो । पच्चभिजाणणभीओ तं तं छाएइ नियवयणं ॥ ६ ॥
थेवं पि उवयरंता [5]नीया अंगे वि नेव मायंति । पयडमुवयारकरणे गरुया लज्जाए [6]झिज्झंति ॥ ७ ॥

अवरम्मि अवसरे ण्हाणत्थमुज्झियसयलालंकारो पगुणीभूतो राया । तव्वेलं च समागओ कज्जवसेण भवदेवो । ततो अणावरियसरीरत्तणेणं पच्चभिन्नातोऽणेण नरवई । 'निच्छियं सो एस महप्पा पहसहाइ त्ति, अहो ! महापुरिसया, अहो ! पच्चुवयारकरणलालसत्तणं, अहो ! अलद्धमज्झत्तणं' ति विभाविंतो परमं परितोसमुवागओ एसो । मुणिओ इंगियागारकुसलयाए रन्ना । 'नूणं पच्चभिन्नाओ अहमणेणं' ति लज्जावलियकंधरो य ट्ठिओ अहोमुहो । अवरसमए य विजणम्मि पुच्छिओ भवदेवेण राया—देव ! कहं तारिसं वसणं तम्मि काले निवडियं ? ति । ततो कहिओ से दुट्ठतुरयावहाराडवीपड-

१ आश्चर्यम् ॥ २ मादृशे ॥ ३ महाश्चर्यम् ॥ ४ इति प्रतिदिवसपुनर्नवविकल्पकल्लोलमालिकाकुलितः । अविज्ञातकार्यमध्यः कृच्छ्रेण दिनानि व्यतिक्रामति ॥ ५ नीचाः ॥ ६ क्षीयन्ते ॥ ७ वयणं खं० ॥

पडिवन्नं पिउणा । पइदिणतद्दंसणाभावे य पणट्ठो कालक्कमेण से सोगो । भवदेवो वि अप्पणो परेसिं च कज्जाणि चिंतिउं पवत्तो, दक्खिन्नसीलयाए य पत्तो परमं जणवल्लहत्तं [1]किर्त्तिपब्भारं च ।

अन्नया य कज्जवसेण भवदेवो पियरमापुच्छिऊण संबलगहत्थो एगागी चेव गतो गामंतरं । निव्वत्तियपओयणस्स नियत्तंतस्स तद्देसाहिवई राया दिवायरो कहिं पि पडिकूलयाए विहिणो तुरगवाहियालीनिग्गओ अवहरिओ दुट्ठतुरगेण, निवाडिओ अडवीए । सव्वत्थ वि पलोइओ वि परियणेण अमुणिज्जंतो पलीणम्मि तुरगे पयप्पचारेण धरियगामीणवेसो सनयराभिमुहं [2]उवेंतो मिलितो भवदेवस्स । पुच्छिओ य सो राइणा—भद्द ! कहिं गंतव्वं ? ति । भवदेवेण जंपियं—विस्सपुरीए । रन्ना भणियं—जइ एवं ता आगच्छ समगं चिय जेण वच्चामो त्ति । पयट्टा दो वि सणियसणियं गंतुं । पत्ते य मज्झंदिणे पत्ते भोयणकाले संबलगं घेत्तुं भोयणट्ठमुवट्ठिएण परिभावियं भवदेवेण—एसो हि वइदेसितो को वि महाणुभावो [3]अविज्जमाणपाहेज्जो छुहाकिलंतो य अच्छइ, अओ कहं सयं भोत्तुं [4]जुज्जइ ? । ततो अद्धद्धीकाऊण संबलं भुत्ता दो वि । खणमेगं वीसमिऊण सममेव पुरतो पट्ठिया । अह चिरदिणोवलद्धसिणिद्धभोयणवसेण रयणीए जायं रायस्स उदरसूलं । अच्चंतधीरयाए सहिऊण गोवियवेयणावियारो य सुत्तोऽवट्ठिओ राया । पभायसमए य गमणत्थं पगुणीभूओ भणिओ रन्ना भवदेवो—भद्द ! वच्चसु तुमं, अहं पुण इहेव अज्ज पडिवालिस्सामि त्ति । ततो दक्खिन्नसीलयाए भणियं भवदेवेण—भद्द ! 'विस्सपुरिं पडुच्च गंतव्वं' ति भणिय किं संपयमेत्थाऽऽवसिउमिच्छसि ? त्ति । रन्ना जंपियं—अत्थि एवं,

१ °त्तियपब्भा° खं० प्र० ॥ २ उविंतो प्र० ॥ ३ अवेज्ज° खं० । अविद्यमानपाथेयः ॥ ४ जुंजइ प्र० ॥

दाक्षिण्य-गुणस्य माहात्म्यम्

दाक्षिण्यमप्रतिघ एव गुणो महत्सु, चेन्नाभविष्यदतुलोज्ज्वलशीलशाली।
वीरस्तदा कुलपतेरवगूहनार्थमभ्युद्यतस्य किमिति स्वभुजं न्यधास्यत्? ॥ १ ॥
यद्वाऽतिदूरतरदेशपदप्रचारखिन्नात्मने कृतवते चिरसंस्तुताय।
अभ्यर्थनां द्विजसुताय स एव देवो, देवांशुकार्द्धमखिलं च किमित्यदास्यत्? ॥ २ ॥ किञ्च—
निर्दाक्षिण्यो मुच्यते बन्धु-भृत्यैस्तन्मुक्तस्य क्षीयतेऽस्य त्रिवर्गः।
क्षीणे चास्मिन् मेदिनीभारकारी, कारीषाभो जीवति व्यर्थमेषः ॥ ३ ॥
इति दाक्षिण्यगुणर्द्धिं वर्धितसुखसम्पदं पदं सुगतेः। अवबुद्ध्य शुद्धबुद्धिः कः स्यादस्यामनवधानः? ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे दाक्षिण्य[गुण]चिन्तायां भवदेवकथानकं समाप्तम् ॥ २७ ॥

धीरत्वस्य स्वरूपम्

दक्खिन्नपवन्नो वि हु न जं विणा पाविउं [1]तरइ पारं। पारद्धधम्मविसए तमिण्हि दंसेमि धीरत्तं ॥ १ ॥
[2]गरुयावयानिवाए वि दव्वनासे वि पणइविरहे वि। जम्माहप्पा न मणो खुप्पइ तं बिंति धीरत्तं ॥ २ ॥
[3]तज्जोगाउ नरो वि हु भन्नइ धीरो स एव वोढुमलं। उक्खित्तं धम्मभरं इयरो तं चयइ किच्छम्मि ॥ ३ ॥
जाव भवो ता देहो जा देहो ताव आवयावडणं। तप्पडणे वि न धीरा मुयंति मज्जायमुयहि व्व ॥ ४ ॥

१ शक्नोति ॥ २ गुरुकापन्निपातेऽपि द्रव्यनाशेऽपि प्रणयिविरहेऽपि। यन्माहात्म्याद् न मनो मज्जति ॥ ३ तद्योगात् ॥

धीराण कायराण य [1]अविसेसेणाऽऽवयाउ निवडंति। नवरं सहंति धीरा इयरे य दढं किलम्मंति ॥ ५ ॥
[2]पुव्वकडदुक्कडाणं फलमेयमुवट्ठियं कडुय-ऽणिट्ठं। सहियव्वमवस्स मए त्ति चिंतिउं पभवई धीरो ॥ ६ ॥
एवंविहभावे च्चिय कम्मविणिज्जरणमुत्तमं बिंति। इहरा पसू वि अइदुक्खिओ वि नाऽऽरसइ नो रुयइ ॥ ७ ॥
इय [3]सुहविवेयसुंदरधीरिमसन्नाहनूमियसरीरो। न दुहेहिं अभिभविज्जइ [4]किंच्छे वि निवो महिंदो व्व ॥ ८ ॥

तहाहि—अत्थि कुवलय-कमल-कल्हार-सयवत्तपवित्तनीरपूरपूरियसरोवरविराइयपरिसरा सुय-सारिया-कवि-कविंजल-जलवायस-जीवंजीवयाभिरामाऽऽरामरमणीया अवराजिया [5]नामं नयरी। जीए तरुणो वि [6]नीलकंठविराइया, पक्खिणो वि [7]सरामलक्खणा, [8]अणीसरघराणि वि गोरीमणोहराणि कुमारविणायगाणुगयाणि य। तहिं च [9]नीइचउक्कचरणो फुरंततार[10]चार-नयणो निसियकरवालदाढो उग्गाढसोडीरिमालद्धखंधबंधो असमसाहसघोरघोणाघुक्कारभीसणो असेसविबुहाहिट्ठियसरीरो अतु-

१ अवसे° खं० प्र० ॥ २ पूर्वकृतदुष्कृतानाम् ॥ ३ शुभविवेकसुन्दरधीरिमसन्नाहच्छादितशरीरः ॥ ४ किच्चे वि खं० ॥ ५ नाम प्र० ॥ ६ आश्चर्यपक्षे नीलकण्ठः—महादेवः, तरुपक्षे तु नीलकण्ठाः—मयूराः ॥ ७ आश्चर्यपक्षे रामलक्ष्मणाभ्यां सहिताः, पक्षिपक्षे पुनः सरस्सु अमलः क्षणः—उत्सवो येषाम् ॥ ८ ईश्वरगृहाणि—शिवमन्दिराणि गौर्या—पार्वत्या मनोहराणि कुमारः—कार्त्तिकेयः विनायकश्च—गणेशः ताभ्याम् अनुगतानि—युक्तानि च भवन्त्येवेति न किमप्याश्चर्यम्; किन्त्वस्यां नगर्याम् अनीश्वरगृहाण्यपि गौरीमनोहराणि कुमारविनायकानुगतानि चेत्याश्चर्यम्। अत्र पक्षे अनीश्वराः—अधनाढ्याः, गौर्यः—स्त्रियः, कुत्सितो यो मारः—कामः तद्विनायकानुगतानि—तदपनयनानुगतानि च इति भावः ॥ ९ साम-दाम-दण्ड-भेदेति नीतिचतुष्कम् ॥ १० चाराः—गुप्तपुरुषाः ॥

च्छच्छेययापुच्छच्छडो सयमिव महावराहो महिमब्भुद्धरिउमुवट्ठिओ महिंदो नाम राया ।

मा[1]यंगवाहणो मेइणीवई कुप्प[2]हूहिं कयसेवो । तह वि स धम्माभिरई मग्गणगणपूरियासो य ॥ १ ॥

तस्स य रन्नो परमपणयभायणं पभावई भज्जा । तदंगजाया य जयंत-जयसेणाभिहाणा दुवे पुत्ता । मंतिजणारोवियरज्जवित्थरचिंताभरो य [राया] सुहेण कालमइवाहेइ । अह पुव्वजम्मसरियवइरभावेण स महप्पा रयणीए सुहपसुत्तो कालनामधेएण जक्खेण उप्पाडिऊण पक्खित्तो पुव्वमहोयहितडे, पभावई वि देवी पच्छिमदेसे महाडवीए, पुत्तो वि जेट्ठो दाहिणदिसीए, इयरो वि उत्तराए पक्खित्तो त्ति । ततो 'कय[3]चिरवइरनिज्जवणो' त्ति परितुट्ठो गओ जहागयं जक्खो ।

राया वि पारावारपुलिणे खणमेत्तनिद्दायमाणो वि ख[4]रतरसमीरसमुल्लासियमहल्लकल्लोलपरोप्परपेल्लणुच्छलियमहानिनायपडिबुद्धो 'किमेयं ?' ति जाव उम्मीलियनयणनलिणो दिसिवलयमवलोएइ ताव एगत्तो पेच्छइ तुंगरंगंततरंगपरंपरापरिगयं सायरं, अन्नत्तो पुण तमाल-साल-हिंतालपमुहमहद्दुमालीपच्छाइयदिसावगासं सिंधुवेलावणावलिं ति । 'किं पुण एयं ? क[5]हिं चित्तसालियाविसालसुहसेज्जाए सयणं ? क[6]हिं वा मच्छ-कच्छभुच्छालियकल्लोलरोलाउले जलहिपरिसरे एत्थ इत्थमवत्थाणं ? ता किं सुमिणमिणमो मइमोहो व ?' त्ति सविसेसविं[7]फारियच्छो वि समहियं किं पि अपेच्छंतो 'हुं, निच्छियं होयव्वमेत्थ केणइ पुव्वकयदुक्कम्मदुविलसियसमुल्लासियखुद्ददेवयाइसंपाडिएण अणत्थविसेसेणमेवंविहेणं, कहमन्नहा

१ मातङ्गाः—चाण्डाला हस्तिनश्च ॥ २ 'कुप्रभुभिः' कुत्सितस्वामिभिः पृथ्वीपतिभिश्च ॥ ३ कइवयचिरवइर° खं० । कृतचिरवैरनिर्यापनः ॥ ४ खरतरसमीरसमुल्लासितमहाकल्लोलपरस्परप्रेरणोच्छलितमहानिनादप्रतिबुद्धः ॥ ५-६ कहं खं० प्रं० ॥ ७ °विफालियच्छो खं० ॥

णवुत्तंतो राइणा । 'अहो ! कहं एवंविहपुरिसरयणेसु वि आवयावडणं ?' ति विसन्नो भवदेवो, खणंतरे य गओ नियभवणं ।

एत्थंतरे वद्धाविओ सो जेट्ठभाउणो पवन्नपव्वज्जस्स आगमेणं एगेण पुरिसेणं । ततो भवदेवो गओ तव्वंदणत्थं, निसामिया धम्मकहा, पज्जुवासिओ कइ वि दिणाणि । क[1]प्पावसाणे य वुत्तो भवदेवो साहुणा—भद्द ! विहरिउमिच्छामि संपयं ता अणुगच्छसु ममं ति । 'तह' त्ति पडिवज्जिय राइणो निं[2]वेइय वुं[3]त्तं, पुत्तं च निजुंजिऊण रज्जकज्जेसु, पट्ठिओ भवदेवो साहुं अणुगंतुं । अह दक्खिन्नसीलयं से कलिऊण साहुणा तदुवयारत्थं जोयण[4]मेत्तमणुगच्छिय नियत्तिउकामो भणिओ एसो—भो महाणुभाव ! एचिरकालोवभुत्तभवसोक्खस्स वि न जाया[5] तित्ती, सा किमियाणिं[6] पेरंतपत्तस्स होही ? ता संपयं परिहर भववासपडिबंधं, समुज्जमसु धम्मकज्जेसु, तुच्छं जीवियं, विया[7]रबहुला विसयवामोहा, पच्चासन्नो य मच्चू महापच्चूहो मणोरहाणं ति । ततो दक्खिन्नसीलयाए अकामेण वि भणियं भवदेवेणं—भयवं ! देहाऽऽएसं, किं करेमि ? त्ति । मुणिणा जंपियं—कुणसु पव्वज्जं ति । तओ पवन्नो एसो साहुदिक्खं । आगमोवलंभे य परमुल्लसंतसंवेगो भावओ आराहिऊण सामन्नं पज्जंतसमए य आराहिउत्तिमट्ठो सव्वट्ठविमाणे सुरो जाओ त्ति ।

एवं जं स महप्पा जए पसिद्धिं नरिंदपुज्जत्तं । सुगइं च परं पत्तो तं दक्खिन्नस्स विप्फुरियं ॥ १ ॥ अपि च—

१ मासकल्पावसाने इत्यर्थः ॥ २ निवेद्य वृत्तम् ॥ ३ वुत्तंतं, पु° प्रसं० ॥ ४ °णमित्त° प्र० ॥ ५ °या तेत्ती प्र० ॥ ६ °याणिं थेरत्तपत्त प्र० । किमिदानीं पर्यन्तप्राप्तस्य ॥ ७ विकारबहुलाः ॥

एत्थावसरे 'चिलायधाडी आवडइ' त्ति उट्ठिओ हलबोलो, संखुद्धो सत्थो, इओ तओ वियरिओ अबला-बालगजणो। तव्वेलं च ढोइयं कवयं पहरणाणि य नरवइस्स। ततो सो कवयावरियसरीरो नाणाविहपहरणहत्थो सत्थाहसुहडसमूहपरियरिओ नीहरंतो पेच्छइ चेडयमज्झवत्तिणं जयसेणाभिहाणं नियसुयं ति। तओ 'कह मह सुओ ?' त्ति संकंतो भुज्जो भुज्जो वलियकंधरो तमऽणिमेसाए अच्छीए पेच्छंतो ताव गओ जाव दंसणपहमोगाढं भिल्लबलं ति।

तो बाहपरिहकुंडलियचंडकोदंडडंडयाहिंतो। अमुणियसंधाणो च्चिय दीसइ निंतो सरसमूहो ॥ १ ॥

सरधोरणीहिं मेहो व्व वारिधाराहिं पत्तपसराहिं। छायंतो भिल्लबलं रणंगणे सोहइ नरिंदो ॥ २ ॥

एगो वि भयभराउलचक्खूण स भूवई चिलायाण। जाओ अणेगरूवो व्वं[1] मुक्कलह्लकसरचक्को ॥ ३ ॥

जाव खणद्धं न पहारदाणदीणाणणीकयचिलाओ। चिट्ठइ रणम्मि राया ता भिल्लबलं लहु पलाणं ॥ ४ ॥

तओ सलहिज्जंतो लोगेण गतो नरिंदो आवासं। कयमज्जण-भोयणोवयारो य सीसारोवियपाणिकोसेणं भणिओ सत्थवाहेणं—भो महाभाग! तुज्झ आयत्तो एसो जणो विभवसारो य, ता आइससु जत्थ उवजुज्जइ, तुह उवयारस्स सव्वं थोवमिमं, परं किमन्नं कीरउ ? त्ति। राइणा भणियं—भो! एवमेवं, तुह सप्पुरिसवित्तीए किमदेयं ? किं वा अकरणिज्जं ?।

एत्थंतरे तं पएसं आगओ सो बालगो। 'एस सो मम सुओ' त्ति निच्छिऊण भणियं रन्ना—भो सत्थवाह! कस्स एस डिंभो ? त्ति। सत्थाहेण जंपियं—भो महायस! मम उत्तरदिसिविभागवत्तिभीमाडवीमज्झे आवासियस्स सेवगेहिं

१ व मोक्क° खं०। इव मुक्तभयङ्करशरचक्रः ॥

इंधणाइयमाहरंतेहिं रुक्खगहणे रुयंतो एस बालगो निसामिऊण बिंभीसियासंकिएहिं[1] रुक्खंतरिएहिं होऊण पलोयंतेहिं थेवेणासंपत्तजरकोल्हुगमुहकुहरो[2] सभय-चमक्कारं पलवंतो सैणियसणियं[3] पच्चोसक्कंतो य दिट्ठो, ततो करुणाए घेत्तूण मह उवणीओ, मए वि एच्चिरं कालं पुत्तो व्व उवलालिओ त्ति। रन्ना जंपियं—एसो हि मम पुत्तो दइवदुज्जोगेण इत्थं दुत्थावत्थं अणुपत्तो। ततो विम्हिओ सत्थाहो चिंतिउं पवत्तो—अहो! सच्छंदचारित्तणं हयविहिणो, जं केसरिकिसोरगो वि एवं विसीयइ, कप्पतरुपोयगो वि एरंडो व्व अवगणिज्जइ त्ति। ततो सो डिंभो समप्पिओ नरवइस्स। सो वि तं गाढमालिंगिऊण निवेसिउं च उच्छंगे किं पि किं पि ईसिबाहाविललोयणमंतो निज्झाइउं पवत्तो। पाएसु पडिऊण सत्थाहेण सव्वायरं पुट्ठो—को एत्थ परमत्थो ? त्ति। [ततो] नियकहालज्जिरेण वि रन्ना उवरोहेण सिट्ठो से एगंते नियवइयरो। तं च सोच्चा परं सोगावेगमुवगतो सत्थवाहो। आलविओ य रन्ना—भो कीस संतप्पसि ? एवंविहो चेव एस संसारवइयरो—

सोक्खं दुक्खाणुगयं जोगो वि विओगनिच्चपडिबद्धो। संपत्ती वि विपत्तीए परिगया किमिह होउ सुभं ? ॥ १ ॥

एवंठिए य सत्थाह! कीस संतावमेवमुव्वहसि ?। सुलभमिमं जीवाणं किं चोज्जं भवनिवासीण ? ॥ २ ॥

सत्थाहेण जंपियं—महाराय! जाव तुमं कयकज्जो नियरज्जे न मुक्को न ताव अहमप्पणो कज्जं करिस्सामि, अतो न एत्थ पैंच्चत्थिणा[4] होयव्वं ति। राइणा भणियं—मा एवं जंपसु, अहं हि गज्जणगपुरे केच्चिराणि वि दिणाणि ट्ठाउकामो, अओ तुमं मम वयणोवरोहेण सकज्जाइं चिंतेसु, पडिनियत्तो य जं तुमं भणिस्ससि तं काहामि त्ति। ततो तन्निच्छयमुवलब्भ

१ विभीषिकाशङ्कितैः ॥ २ स्तोकेनासम्प्राप्तजरच्छृगालमुखकुहरः ॥ ३ शनैः शनैः प्रत्यवष्वष्कमाणः ॥ ४ 'प्रत्यर्थिना' विघ्नकरेण ॥

[stamp]

पच्चइयपुरिससहाओ सपुत्तो राया पोढ[1]पत्थयणदाणपुव्वगं गज्जणगपुरे निवेसिऊण दिन्नं सत्थाहेण तओ पएसाओ पयाणगं।

राया वि कणिट्ठसुयस्साडविनिवडणसंभावियजेट्ठसुयविप्पओगो अप्पणो किलिट्ठकम्मयमणुचिंतंतो जाव अच्छइ ताव नियविभूइसमुदयपरिभूयसुरलोयसोहाविसेसो चउव्विहदेवसमूहसेविज्जमाणचरणो समोसरिओ भयवं मुणिसुव्वयजिणवरो। समागतो वंदणत्थं पुरलोगो। राया वि अप्पणो तहाविहावयावडणनिमित्तं पुच्छिउं पत्तो भयवओ अंतियं। तिपयाहिणादाणपुव्वयं पणमिऊण सव्वो समुचियभूमिभागे आसीणो जणो। आयन्निया धम्मकहा, जाओ भवविरागो, उल्लसियं वीरियं, पवन्नो य सामन्नं[2] बहू जणो। पत्थावे य महिंदभूवइणा पुट्ठो जयगुरू—भयवं! मम कणिट्ठसुयस्स किमेवंविहं वसणमावडियं? ति। भगवया जंपियं—महाराय! न केवलं तुज्झ [कणिट्ठ]सुयस्स, किंतु जेट्ठसुयसमेयाए तुह भज्जाए वि इमं चेव वसणं ति। विम्हिओ राया 'भयवं! को पुण एवंविहाणत्थकारि?' त्ति [पुच्छइ]। भगवया वि दंसिओ तक्कालमेव वंदणत्थमुवागओ कालो नाम जक्खो सक्खं चिय वट्टमाणो त्ति। 'किं पुण इमिणा सह विरोहपयं?' ति पुट्ठेण भगवया जंपियं—निसामेहिं,

एत्तो सत्तमे भवे विजयपुरे नयरे विजयस्स गिहवइस्स पंच पुत्ता जाया। जेट्ठो तुमं महाराय!, कणिट्ठो पुण एस जक्खजीवो, देवी दुवे [य] तुह सुया मज्झिमगा। एवं तुब्भे पंच वि भायरो गिहकज्जेसु वट्टह। नवरं कणिट्ठेण समं नत्थि चउण्हं पि सिणेहो। पए पए कलहो, ठाणे ट्ठाणे विसंवाओ, खणे खणे केसाकेसि जुज्झं। अण्णया य भग्गो कणिट्ठभाया वेरग्गोवगओ चिंतिउं पवत्तो—

१ प्रौढपथ्यदनदानपूर्वकम् ॥ २ श्रामण्यम् ॥

पुव्वदिणेसु दुस्सुमिण-दुन्निमित्ताईणं अणिट्ठसूयगाणं तहासंभवो होज्जा? एयाणुमाणेण य देवीए वि पभावईए न कुसलं तक्केमि, पुत्ताण वि संसइओ सुहेण घरनिवासो' त्ति विभावितो सयं चिय धरियधीरिमाभावो समुग्गयम्मि मायंडमंडले दीहरतरुगहणरुद्धरविकरपसरत्तणेण अमुणंतो वि दिसाविभागं पयट्टो एगेण मग्गेणं। देव-गुरुसुमरणपुव्वगं च कया कंदमूलाइणा पाणवित्ती। मज्झंदिणमइवाहिऊण य उत्तरदिसिहुत्तं पट्ठिओ राया, पत्तो य[2] मलयाभिहाणं पुरवरं। तत्थ य वीसमिऊण कइवयदिवसाइं चलिओ गज्जणयपुराभिमुहं। अंतरा य मिलिओ सँवडम्मुहो[3] इंतो कुबेरो व्व पउररिद्धिविच्छड्डो कुबेरो नाम सत्थवाहो। आवासिओ य सो तं वेलं।

एत्थंतरे य जायं चिलायपडिभयं, भीओ सत्थवाहो, पारद्धा सुहडमग्गणा, दिट्ठो य तक्खणं तरुतले वीसमंतो नराहिवो। सयमेव सत्थवाहेण निच्छिँयं[4]—न सामन्नरूवो एसो—त्ति विभावितेण सगउरवं नीओ राया निययावासं, काराविओ ण्हाण-भोयणाईयं। सुहासणत्थो य विन्नत्तो—भो महाभाग! जइ वि आजम्माओ पढमं तुब्भेहिं सह दरिसणं तहा वि आगार-विसेसोवलक्खिज्जमाणविसिट्ठकुल-कला-कोसल्लाइगुणा तुब्भे, अओ इमं भणिज्जह—एसो हि संपइ उवट्ठियचिलायपडिभओ सत्थो इत्थी-बाल-वुड्ढजणाइन्नो, ता नित्थारह इमातो आवयामहन्नवाउ त्ति। राइणा भणियं—भो सत्थवाह! के वयमेवंविहकज्जनिव्वाहे? केवलं जीवंताण न संभाविज्जइ एयं ति। ततो मुणियदढचित्तावट्ठंभेण भणियं सत्थाहिवेण—महाणुभाव! एवमेयं, को सूरमंडले पभवन्तम्मि तिमिरनियरस्सावगासो? त्ति।

१ °मयवा° प्र० ॥ २ य कल° प्र० ॥ ३ अभिमुखम् आयन् ॥ ४ °च्छियनस्सामन्न° खं० प्र० ॥

ता सरियपुव्ववेरेण तेण विणिवाइया तहिं तुब्भे । चउरो वि भायरो घोरंजलिरविज्जुच्छडाए लहुं ॥ १४ ॥
तो कावेरीपुरीए मज्झिमगुणभावओ समुप्पन्ना । चउरो वि वणियपुत्ता परोप्परं बद्धदढपणया ॥ १५ ॥
तत्थ वि दाऊण विसं विणासिया णेण चेव जक्खेण । कोसंबीए चउरो वि पुण हया खग्गघाएहिं ॥ १६ ॥
कायंदीए पुरीए पुणरवि चउरो वि लद्धमाणुस्सा । इमिण च्चिय कुविएणं कियाडियामोडणेण हया ॥ १७ ॥
रायगिहम्मि पुणरवि चउरो वि कहिंचि पत्तमणुयत्ता । खित्ता इमिण च्चिय लवणजलहिमज्झे विवन्ना य ॥ १८ ॥
पुणरवि उज्जेणीए विप्पसुया संभवित्तु चउरो वि । कयबालतवा इमिणा विणासिया वाहिकरणेण ॥ १९ ॥
इयँ सत्तमे य जम्मे तुमं च देवी य दुन्नि पुत्ता य । नरवर ! कुडुंबभावेण उवगया ते य चउरो वि ॥ २० ॥
तो इमिण च्चिय जक्खेण ईसिउवसंततिव्वकोवेण । अडवीए पक्खित्ता सहंतु सुचिरं दुहाइं ति ॥ २१ ॥
इय नरवर ! चिरभवदुकयकम्मदुव्विलसियं निरवसेसं । अवरज्झइ सव्वत्थ वि निमित्तमित्तं परो नवरं ॥ २२ ॥ छ ॥

इय सोच्चा पच्चक्खीभूयपुव्वाणुभूयसव्वभवो भूवई अतुच्छपच्छायावसारं जोडियकरसंपुडो तं जक्खं भणिउं पवत्तो—अहं तुज्झ पायवडिओ पुव्वदुच्चरियं खामेमि, नत्थि थेवो वि ते अवराहो, अहमेव पावकारी अवरज्झामि, पसीयसु एत्तो, सव्वहा न भुज्जो एवं करिस्सामि, जुत्तं च कयं तुमए पुव्वकालेसु जमेवंविहदुव्विणयस्स मह सिक्खाऽणुट्ठिया, इण्हिं पि समुच्चियदंडनिवाडणेण

१ घोरज्वलितृविद्युच्छटया ॥ २ इमण खं० प्र० ॥ ३ कृकाटिकामोटनेन ॥ ४ प्राप्तमनुजत्वाः ॥ ५ इमण खं० प्र० ॥ ६ 'विपन्नाः' मृताः ॥ ७ इह स° प्र० ॥ ८ इमण प्र० ॥ ९ अपराध्यति ॥ १० वि मे अ° खं० ॥

अणुगिण्हसु ममं, जहतह परिचइयव्वा इमे पावकारिणो पाणा जइ तुह समीहियसंपाडणेण चइज्जंति ता सुट्ठु लट्ठं भवइ त्ति । एवमायन्निय जक्खो अच्चंतविलक्खो नियदुच्चरियविभावणुब्भवन्तगरुयसंवेगावेगो करुणापूरपूरिज्जमाणमाणसो चिंतिउं पवत्तो—

अइच्चिरदुक्करतव-चरणखीणकायत्तणेण संजणियं । चिरकालसुगुरुसेवा-दंसण-नाणोवज्जणियं पि ॥ १ ॥
पुन्नमइगरुयगिरिसच्छहं पि पज्जंतदारुणफलेण । नीयं नियाणबंधेण धी ! मए कहमसारत्तं ? ॥ २ ॥
सो एस कागिणिकओ अणग्घरयणाण कोडिदाणेण । तमिमं इंगालकए हरिचंदणदारुनिद्दहणं ॥ ३ ॥
चिंतामणिप्पयाणेण लेट्ठुकिणणं व तं इमं नूणं । जं सुकयरासिणा तारिसेण जीवोहवहजणणं ॥ ४ ॥
दुप्पट्ठियस्स पावस्स अप्पणो किं व संपइ करेमि ? । अहवा तव्विहसुहनिवहविहलणेणं कयं किच्चं ॥ ५ ॥
को एत्तो वि हु दंडो होउ पयंडो इमस्स पावस्स ? । सुकयविमलो वि जं गुरुकसायकलुसत्तणं पत्तो ॥ ६ ॥
इय संवेगोवगओ जेट्ठसुयं तह पभावइं देविं । रन्नो समप्पिऊणं सविणयपणओ इमं भणइ ॥ ७ ॥
भो धीरिमागुणागर ! नरवर ! सुचिरं मए तुहऽवरद्धं । खमसु ममं सकुडुंबो डुंबस्स व सव्वदुच्चरियं ॥ ८ ॥
एवं खमाविऊणं रायाणं नियपुरे य मोत्तूण । उवसंतपुव्ववइरो जहागयं पडिगतो जक्खो ॥ ९ ॥
राया वि रज्जसिरि-पुत्त-पणइणीलाभसंभवे वि परं । मुणिसुव्वयपयविच्छोहिओ त्ति सोगाउरो जाओ ॥ १० ॥
एत्थंतरे भणिओ पभावईए—देव ! किमेवमुव्विग्गो व लक्खीयसि ? किमेगागिणो वि रई जाया जमेवं मणोरहदु-

१ अतिगुरुकगिरिसमानम् ॥ २ काकिणीक्रयः ॥ ३ दुष्प्रस्थितस्य ॥ ४ तद्विधशुभनिवहविफलनेन ॥ ५ सुकृतविमलः ॥ ६ लक्खिय° खं० ॥

ल्लभे वि पियजोगे जोगि व्व उदासीणो वट्टसि ? त्ति । अह कयागारसंवरेण रन्ना भणियं—देवि ! मा[1] मेवमुल्लवसु, एच्चिरदिणाइं कहिं गया ? कहं वा वुत्थ ? त्ति । देवीए भणियं—महाराय ! निसामेहि—

अहं हि पच्छिमदिसाडवीए निवडिया वि एगाए दिसीए वच्चंती पडिया सीहस्स चक्खुगोयरं । ततो भयवेविरंगी इतो ततो पलोयंती पत्ता पारद्धिएणं । सपणयालावं संभासिऊण नीया हं तेण नियभवणं । उवयरिउमारद्धा तंबोल-भोयणाइदाणेणं । अहं च [तुह] गरुयविरहहुयासणसंतावनिस्सहंगी अवगन्नियतदुवयारा परिचत्तपाण-भोयण-सरीरसक्कारा सीलभंगभएण मणसा पवन्ना अणसणं । अट्ठमोववासावसाणे य करुणाए 'मह कणिट्ठभगिणि' त्ति पडिवज्जिय तेण पारद्धिएण काराविया किच्छेण भोयणं । ठिया पिउघरे व्व निव्वाबाहमेच्चिराइं दिणाइं ति । देव ! तुब्भे वि साहह निययवित्तं ति ।

ततो राइणा वि पुव्वजलहिपेरन्तपडणपमुहो सत्थवाहसमप्पियसुयपज्जवसाणो निवेइओ नियवुत्तंतो । अह रन्ना संभासिओ जेट्ठसुओ—वच्छ ! कहिं एच्चिरं कालं वुत्थो ? त्ति । तेण जंपियं—ताय ! दाहिणदिसीभीमाडवीनिवडिओ वि जहिच्छपरिभमणसमासाइयतावसासमो कंदमूलवित्तीए सुहेणाहं तावससमीवे निवसिओ म्हि ।

इय अवरोप्परसुह-दुक्खसंकहावड्ढमाणपरितोसो । चिंतिउमाढत्तो सो महीवई रज्जकज्जाइं ॥ १ ॥
एगम्मि य पत्थावे विरत्तचित्तो भ[3]वुब्भवसुहाण । रज्जे ठविउं पुत्तं पोसहसालाए पोसहिओ ॥ २ ॥
पारद्धतव-चरणो सज्झाय-ज्झाणविहियपडिबंधो । स महप्पा संविग्गो सम्मं दिणगमणियं कुणइ ॥ ३ ॥

१ मा मा एवम् ॥ २ °भवण° खं० प्र० ॥ ३ भवोद्भवसुखेभ्यः ॥

धन्ना चिर[1]भवसुविढत्तसुकयसंभारजायसुंदेरा । जं किं पि कुणंता वि हु सलहिज्जंतीह लोएण ॥ १ ॥
अणुचियमवि जंपंता अब्भहियभवंतभूरितोसेहिं । सु[2]सिलिट्ठ-लट्ठवयण त्ति माणवेहिं थु[3]णिज्जंति ॥ २ ॥
रोस[4]वसायंबिरलोयणा वि दिन्ता वि कडुकरचवेडं । को एत्तो वि पसंतो ? त्ति सायरं चेव गिज्जन्ति ॥ ३ ॥
अहयं तु निरु[5]त्तकरो वि उचियभासी वि पसमजुत्तो वि । ही ही ! नियभाऊण वि उव्वियणिज्जो दढं पावो ॥ ४ ॥
एवंविहस्स य ममं घरवासो नणु विडंबणामित्तं । चिरकालजीवियं पि हु तिवग्गविमुहं विहलमेव ॥ ५ ॥
इय वेरग्गोवगओ विणिग्गओ सो गिहाओ रयणीए । पडिवन्नो पव्वज्जं खेमंकरमुणिवरसमीवे ॥ ६ ॥
अह अहिगयसुत्तत्थो अभिग्गहं गिण्हई गुरुसमीवे । मासं मासेण मए तवो विहेयं ति जाजीवं ॥ ७ ॥
एवंविहेण तवसा खीणंगो जीविए निरभिलासो । घेत्तूणमणसणं सो सावत्थीए पुरीए ठिओ ॥ ८ ॥
दिट्ठो य कह वि कज्जागएहिं तुब्भेहिं चउहिं भाऊहिं । हसिओ य एस सो गेहकम्मभग्गोऽत्थ पव्वइओ ॥ ९ ॥
इच्चाइजंपिराणं तुब्भाण निसामिऊण सो वयणं । उप्पन्नगरुयकोवो विभाविउं एवमाढत्तो ॥ १० ॥
एते ते कहमज्ज वि मुयंति पावा न भाउणो पट्ठिं ? । उज्झियगिहस्स वि ममं निक्कारणवेरिणो दूरं ॥ ११ ॥
ता जइ तव-नियमाणं वयाण किं पि हु फलं इहं अत्थि । एयाण तो धुवमहं पइजम्मं घायगो होज्ज ॥ १२ ॥
इय कयनियाणबंधो वारिज्जंतो वि गुरुजणेण बहुं । एसो स कालनामो मरिउं जक्खो समुप्पन्नो ॥ १३ ॥

१ चिरभवसुअर्जितसुकृतसम्भारजातसौन्दर्याः ॥ २ सुश्लिष्टश्रेष्ठवचनाः ॥ ३ मुणि° खं० ॥ ४ रोषवशाताम्रलोचनाः ॥ ५ 'निरुक्तकरः' कथितकारी ॥

भय-सोग-हरिस-कोवाइणो हि भावा न जम्मि नज्जंति । अच्चंतनिउणेण वि तं गंभीरत्तमाहंसु ॥ २ ॥
गंभीरिमापरिगया पुरिसा हीणे कुले वि संभूया । उत्तमकुलप्पसूय व्व पूयणिज्जा दढं हुंति ॥ ३ ॥
सत्तू वि होइ मित्तो परो वि सयणो खलो वि गुणगाही । गंभीराण नराणं सुरा वि सेवं पवज्जंति ॥ ४ ॥ किञ्च—
सव्वन्नुणा पणीया उस्सग्ग-ऽववायरूविणो भावा । परिणामिउं न तीरंति नूण गंभीरयाए विणा ॥ ५ ॥
अन्नोन्नमबाहाए अमय-विसाइं व सिंधुमज्झम्मि । गंभीरे[1] ठंति नरे सामन्न-विसेससुत्ताइं ॥ ६ ॥
इयरे विसेससुयलवमित्तेण वि उत्तुणा[2] न मायंति । वयमेव परं विउणो त्ति सेसमुणिणो उवहसंति ॥ ७ ॥
न वि ते गुरू ण पुज्जा सुयसागरपारगा य नो हुंति । भइणीदंसियनियरिद्धिवित्थरो थूलभद्दो व्व ॥ ८ ॥
इय गंभीरा पुरिसा सकज्ज-परकज्जसाहणसमत्था । सुहसंपयमुत्तममुवचिणंति सिरिविजयसूरि व्व ॥ ९ ॥ तथाहि—
आसि[3] सढकमढकयगरुयजलहरासारपिहियदेहो वि । सिरिपासजिणो सविसेसजलिरझाणानलुप्पीलो ॥ १ ॥
किर विहरंतो पुर-नगर-खेड-कब्बड-मडंब-गामेसु । सो य महप्पा पत्तो महुरानयरीए बाहिम्मि ॥ २ ॥
सुरविरइय[4]सालत्तयपरिगयसिंहासणे य आसीणो । ससुरा-ऽसुरपरिसाए धम्मकहं कहिउमाढत्तो[5] ॥ ३ ॥
अह तिय-चउक्क-चच्चर-सभा-पवाईसु विविहठाणेसु । धम्मं साहेइ जिणो त्ति पसरिया सव्वओ वत्ता ॥ ४ ॥

१ °रे संति खं० प्र० ॥ २ गर्विताः ॥ ३ आसीत् शठकमठकृतगुरुकजलधरासारपिहितदेहोऽपि । श्रीपार्श्वजिनः सविशेषज्वलितृध्यानानलसमूहः ॥ ४ सुरविरचितशालत्रयपरिगतसिंहासने । शालत्रयं–वप्रत्रयम् ॥ ५ कथयितुमारब्धः ॥

तो राईसर-तलवर-सेणावइ-सेट्ठि-मंति-सामंता । भत्तिभरनिब्भरंगा जिणवइणो वंदणाय गया ॥ ५ ॥
कयसविणयप्पणामा धम्मकहासवणविहुयरयविहुरा । परितोसवियसियच्छा य पडिगया नियनियं ठ्ठाणं ॥ ६ ॥

अह भयवओ जसघोसो नाम तवस्सी छट्ठ-ऽट्ठमाइनिट्ठुरमहातवसुसियसरीरो पारणगदिणे पडिग्गहमादाय अतुरियमचवलं जुगमेत्तमहीनिहित्तचक्खुपसरो य तीए चेव पुरीए उच्च-नीएसु मंदिरेसु भिक्खं भमंतो पत्तो कणयदत्तपुरोहियघरे। तस्स य पुरोहियस्स तं कालं देवयाइआराहणाइणा पसूओ विजओ नाम पुत्तो । 'सो य छम्मासवओ[1] वि गहिओ विविहरोगेहिं, न उवायसहस्सेण वि तीरिओ पगुणीकाउं' ति सोगसंरंभनिब्भरो संतावमुव्वहंतो पुरोहिओ पेच्छइ भवणंगणोवगयं थिमियलोयणं[2] तं तवोहणं । ततो 'अहो ! स एस पच्चक्खसुकयरासि' त्ति परं पमोयमुव्वहन्तो सायरं पाएसु पडिऊण सविणयं विन्नविउं पवत्तो—भयवं ! तुम्ह दंसणं पि साहेइ निरुवमं कारुणियत्तणं, चक्खुक्खेवो वि पडिहणइ दुरियरासिं, पायपंसू वि पसमेइ पाववियारं[3], अतो पसायं काऊण पलोयह कहमेस वराओ[4] मम सुओ नीरोगो होहि ? त्ति । साहुणा भणियं—महाभाग ! अम्हे य सज्झाय-ज्झाणाइसु चेव पहुणा निउत्ता, एवंविहकिच्चेसु बाढं निसिद्ध त्ति । पुरोहिएण जंपियं—को पुण तुम्ह पहू ?। साहुणा जंपियं—

जप्पायप्पणई पणासइ भयं भूय-प्पिसाउब्भवं, जन्नामग्गहणं हणेइ गहणं रोगाइवल्लीण वि ।
जस्संकित्तणमेत्तओ वि न भवे भुज्जो भवे संभवो, सो पासो तिजयप्पयासचरिओ अम्हाण नूणं पहू ॥ १ ॥

१ षण्मासवयाः ॥ २ स्तिमितलोचनम् ॥ ३ पापविकारं पापविचारं वा ॥ ४ वराकः ॥

पुरोहिएण वुत्तं—जो धरणिंदफणाफलगनिम्मवियमंडवो खंडियपयंडकोवकमढमंडप्फरो[1] फारफुरंतचरणनहमणिमऊहमंडियदिसिमंडलो सेवापवन्ननीसेसाखंडलो ? । साहुणा भणियं—एवमेयं । ततो सहत्थेण मुणिं पडिलाभिऊण सव्वायरेण वंदिऊण य निव्वत्तियघरकायव्वो तं सुयमादाय गतो सो भगवओ समीवे ।

भयवं पि तव्वेलं गयणयलविलसंतसियायवत्त-समणिपायवीढसीहासणो उभयपासढलंतसेयचामरो पयट्टधम्मचक्काणुमग्गकयचंकमणो परिवाडिनिवडंतकणयकमलनिवेसियचलणो पट्ठिओ विहारजत्तं । तओ भगवंतं अणेगविंदारयविंदाणुगम्ममाणमग्गं[2] पेच्छिऊण वच्चंतं पुरोहिओ 'हा हा ! कहमभग्गो ?' त्ति सोइंतो[3] भणिओ एगेण सावगेण—किं भो ! संतप्पसि ? । पुरोहिएण वि कहिओ सरोगसुयपँडियार[4]निमित्तमागमणवुत्तंतो । सावगेण भणियं—मुद्धा ! किं न पेच्छसि भगवओ चलणकमलावलीविन्नासपवित्तं महीरेणुपडलमुत्तिमंगे निक्खिप्पमाणं सरीरे य सव्वायरेणं इमिणा रोगिणा जणेण ? ता वच्च, तुमं पि इमं डिंभरूयं इमिण च्चिय रेणुणा सव्वंगियं[5] उद्धूलेसु भगवतो पाएसु पाडेसु य त्ति । तओ पहिट्ठेण पुरोहिएण 'तह' त्ति भत्तिसारं सव्वं निव्वत्तियं । उवसंतपरुट्ठदुट्ठवंतरीकयरोगो य अमयकुंडसित्तगत्तो व्व पसंतीहूओ पुत्तो । गतो य सघरं पुरोहिओ । तद्दिणाओ चेव आरब्भ पवन्नो सुसावगत्तणं । पुत्तो य नीरोगो पवड्ढंतो जातो तरुणो ।

अह सम्मेयसेलम्मि निव्वाणमुवगए तिलोगबंधवे पासजिणवरे, हल्लोहलाउलिए[6] विसेसतव-चरणपरायणे समणसंघे,

१ मडप्फरो—मानः ॥ २ अनेकवृन्दारकवृन्दानुगम्यमानमार्गम् ॥ ३ शोचमानः ॥ ४ °पडीया° प्र० ॥ ५ सव्वंग उ° खं० ॥ ६ त्वराकुलिते ॥

॥२०८॥

पुव्वभवकम्मदोसेण सास-कासाइणो महारोगा । जाया तह वि य सो धीरमाणसो तेऽहियासेइ ॥ ४ ॥
एत्थं[1] पज्जंतविहिं सम्मं आराहिऊण कालगओ । सोहम्मे उववन्नो पलियाऊ भासुरो तियसो ॥ ५ ॥
जो संपयं व मन्नइ आवयं[2] बाढमविचलियचित्तो । सो धीरो तं च समोयरंति सव्वाउ रिद्धीओ ॥ ६ ॥ किञ्च—

कृच्छ्रे कनीयस्यपि धैर्यहीनो, नरो विमुह्यत्युपयाति शोकम् ।
मूढश्च शोकाभिहतश्च पश्चात्, स निश्चितं धर्मविधेरपैति ॥ १ ॥
धर्मव्यपेतश्च विवर्धमानाः, कल्याणवल्लीरखिलाश्छिनत्ति ।
तच्छेदनाच्छिन्नपतत्रपालिः, पक्षीव कर्त्तुं क्षमते न किञ्चित् ॥ २ ॥
तथाविधश्चैष भवाम्बुराशौ, निमज्जनोन्मज्जनखिन्नकायः ।
कदाचिदप्राप्तविमुक्तिमार्गः, कस्या विपत्तेर्भविता न धाम ? ॥ ३ ॥

इति धैर्या-ऽधैर्यवतोर्गुणांश्च[3] दोषांश्च सम्यगवधार्य । गुणवत्पक्षं दक्षः कक्षीकुर्यादविक्षेपात् ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे धैर्यगुणचिन्तायां महेन्द्रनृपकथानकं समाप्तम् ॥ २८ ॥

धैर्यगुणस्य माहात्म्यम्

दीसंति गुणा के वि हु कहिं पि गंभीरिमा न सव्वत्थ । इय तीए परिगयाणं[4] सकज्जसिद्धि त्ति दंसेमि ॥ १ ॥

गाम्भीर्यस्य स्वरूपम्

१ इत्थं प्र० ॥ २ सम्पदमिव मन्यते आपदम् ॥ ३ °वतो, गु° खं० प्र० ॥ ४ 'परिगतानां' युक्तानाम् ॥

कयनिच्छया हि पुरिसा विसंति किं नो जलंतजलणम्मि ?। निवडंति किं न वा भुयगभीसणे भइरवे पडणे ? ॥ ४ ॥
किं वा कलत्तसंगह-कुलवुड्ढीहिं पि ताय ! कायव्वं ?। जेहिंतो साहारो थेवो वि न भव[1]भयट्टाण ॥ ५ ॥
तो जावऽज्ज वि वज्जासणीसमो न वि जमो समुत्थरइ। ताव तएऽणुन्नातो सामण्णमहं चरामि त्ति ॥ ६ ॥

अह[2] तज्जणणी एवंविहमुल्लावं आयन्निऊणं[3] ताणं तणं व अप्पाणं मन्नंती सोगभरुच्छाइयचेयणा मुच्छानिमीलियच्छा निवडिया महीए। अह सायरपधाविरपरियणकयसिसिरोवयारलद्धचेयणा भुज्जो रुयंती भणिया विजएण—अम्मो ! किमेवमन्नाणजणोचिय[4]माचरिज्जइ ? जइ तुज्झ सुओ उत्तमसेवियं पयमारोहइ [एत्तो] किं तुज्झ य कल्लाणं ? ति। जणणीए जंपियं—तुज्झ अत्थि एवं, परं तुह विओगं खणं पि न तरामि सोढुं। विजएण जंपियं—अम्मो ! मुयसु महामोहदुविलसियं, जहतह अवस्समरणसंभवे किमसोढं नाम[5] ? विओगदुक्खे वि नेय अजरामरो विज्जइ जए कोइ। पुरोहिएण जंपियं—भो बंभणि ! सुक्कवणगहणपयट्टो हुयवहो कयनिच्छतो य पुरिसो न निरुंभिउं पारीयइ[6]। माहणीए भणियं—जइ एवं ता अम्हे वि पुत्ताणुचरियमेव मग्गं अणुसरामो, किं निरवच्चाण घरनिवासेणं ? ति। पडिवन्नमिमं पुरोहिएण। ततो तिन्नि वि ताइं सव्वाणुभूइगणहरसमीवे पवन्नाइं समणत्तणं। पिउणा जणणीए य अहिगयाइं कालक्कमेण एक्कारस वि अंगाइं। विजएण पढियाइं ससुत्ताइं सअत्थाइं चउद्दस वि पुव्वाइं।

१ भवभयार्त्तानाम् ॥ २ ता त° खं० ॥ ३ °ण तणं व खं० ॥ ४ °जणोच्चिय° खं० ॥ ५ नामं विओ विओगदुक्खे य नेय खं० ॥ ६ पारिय° खं० ॥

अन्नया य सव्वाणुभूइगणहरो विजयं सूरिपए पइट्ठिऊण कयाणसणो निव्वाणमुवगओ। विजयसूरि वि गंभीरिमापमुहगुणरयणायरो भव्व[1]सत्तसंताणताणकरणत्थं पयट्टियाविच्छिन्नधम्मकहापबंधो संजमुज्जोगसज्जीकयसाहुवग्गो निरुवसग्गं वसुहाए अणिययवित्तीए गामा-ऽऽगराईसु विहरइ। अन्नं च—

पंचसयसाहुगच्छे को वि य कोवाउरो जइ वि बाढं। जइ वि य विणयविहूणो य को वि अहवा वि माइल्लो[2] ॥ १ ॥
जइ वि य माणग्घत्थो[3] य को वि[4] लोभाउरो य जइ को वि। जइ वि य कोइ पमाया समिई-गुत्तीसु अनिरुत्तो[5] ॥ २ ॥
तह वि मुणिणो स सूरी सिंधु व्व सुदुट्ठजलयरकुलं व। गंभीरिमाइरेगेण अविगिओ[6] सहरिसं धरइ ॥ ३ ॥
न य स महप्पा केणइ सुरगुरुमइणा वि जाणिउं सक्को। अभओ सभओ व सुही दुही व दुट्ठो य रुट्ठो वा ॥ ४ ॥

एवं च तस्स सूरिणो गणं सबाल-वुड्ढाउलं सुत्तवुत्तविहिणाऽणुपालेंतस्स सारण-वारणाईहिं जहावसरमणुसासिंतस्स य वच्चंति वासरा। अन्नया य पव्वाविया णेण चत्तारि रायसुया, तंजहा—पढमो कुरुनरिंदनंदणो वरुणो नाम, बीओ य पंचालभूवइसुओ सयंभुदत्तो, तइओ य सिंधुसोवीरदेसाहिवतणओ ईसाणचंदो, चउत्थो सावत्थीपत्थिवंगरुहो अरिहतेउ त्ति। ते य चउरो वि नय-विणय-सच्च-सोय-खमा-दम-संजमाइगुणगणाणुगया, गहणा-ऽऽसेवणासिक्खावियक्खणा, अणुक्खणं वीरासणाइकट्ठकिरियासु पयट्टंता, अभिक्खणं उग्गकाउस्सग्गचेट्ठासु उज्जममाणा, अप्पणो सामत्थं ताहिं ताहिं

१ भव्यसत्त्वसन्तानत्राणकरणार्थम् ॥ २ मायावी ॥ ३ मानग्रस्तः ॥ ४ वि लाभा° खं० प्र० ॥ ५ स्खलित इत्यर्थः ॥ ६ अविकृतः सहर्षम् ॥

दुकराहिं पि किरियाहिं तुलिऊण गया सूरिणो समीवं, भत्तिसारं वंदिय विन्नविउं पयत्ता—भयवं ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया वयं किं पि सविसेसं कट्ठाणुट्ठाणमणुट्ठिउमिच्छामो त्ति । गुरुणा जंपियं—निविग्घं देवाणुप्पिया ! जहावंछियं हे[2]च्छमाचरेह त्ति । तत्तो 'तह' त्ति सिरविरइयंजलिणा सविणयं पणमिऊण वरुणरायरिसी वेयालवसहिं गंतूण ट्ठिओ काउस्सग्गेण, सयंभुदत्तो वि कुमारसमणो वडवासिणीखेत्तदेवयाए पुरो, ईसाणचंदो भूयगुहाए, [3]अरिहंतेतो वि रायरिसी सुसाणम्मि त्ति । एवं ते चउरो वि समणसीहा कुलसेल व थिरप[य]इणो महासत्ता महाबला महामइणो महातेयंसिणो परमसंविग्गा परमभवभीरुणो सुप्पणिहियमण-वयण-काया जाव नियनियट्ठाणेसु काउस्सग्गगया चिट्ठंति ताव पढमस्स मुणिणो खोभणत्थमुवट्ठियं वेयालवंद्रं । कहं चिय ?—

[4]रुंदं-रउद्ददीहमुहकंदरदढदाढाकं[5]डप्पयं, कालकरालकायगरुयत्तणनिब्भरभरियगयणयं ।
निसियकिवाणकप्पगुरुकत्तियउक्कत्तियनरंगयं, पइखणमुक्कहक्क-पोक्कारवकिलिकिलि-कलिलसद्दयं ॥ १ ॥
एवंविहं पि वेयालवग्गमविभग्गमाणसो दट्ठुं । ईसिं पि न झाणातो चलितो वरुणो मुणिवरिट्ठो ॥ १ ॥
बीयस्स वि साहुणो वडवासिणीदेवयाए खोभणत्थं पारद्धो उवक्कमो । जहा—
जालाकरालहुयवहहुणणपयट्टस्स स[6]रियमंतस्स । विज्जासाहणअब्भुज्जयस्स किर मंतवाइस्स ॥ १ ॥

१ शीघ्रम् ॥ २ °चरह त्ति । ततो प्र० ॥ ३ अर्हत्तेजाः ॥ ४ विस्तीर्णरौद्रदीर्घमुखकन्दरादृढदंष्ट्रासमूहं कालकरालकायगुरुकत्वनिर्भरभृतगगनम् । निशितकृपाणकल्पगुरुकर्त्तिकोत्कर्त्तितनराङ्गकं प्रतिक्षणमुक्तहक्कपोकारवकिलिकिलिकलिलशब्दम् ॥ ५ °कणप्प° खं० ॥ ६ स्मृतमन्त्रस्य ॥

सविसेसजिणपूयापरे सावगवग्गे, चेइयवंदणत्थं गएण [1]उवरोहिएण निसामिऊण वत्ता कतो तद्दिणमुववासो । परिचत्तगिहवावारो पिईजणे व परोक्खीहूए महंतं चित्तसंतावमुव्वहंतो गिहिक्कोणनिविट्ठो दिट्ठो विजएण, पुट्ठो य—ताय ! किमेवं [2]कसिणाणणो वट्टसि ? किं मए किं पि अवरद्धं ? परि[3]यण[मज्झा]तो केणइ आणाखंडणं वा कयं ? ति । पुरोहिएण जंपियं—वच्छ ! नत्थि कस्स वि किं पि अवराहपयं, केवलं केवलालोयावलोइयलोया-ऽलोयसरूवो रूवविजियकंदप्पो दप्पसप्पनागदमणी मणीहियत्थसंपाडणकप्पपायवो पायवोवगमणविहाणेण सो पासजिणो निव्वुइं पत्तो, जस्स भगवतो पायपंसुफरिसणेण पुत्त ! तुममारोग्गयमुवगतो, जम्मग्गलग्गो अम्हारिसो य जणो न भायइ ईसिं पि भववेरिवाराओ, जदत्थमणे य नीरंधतिमिरपूरपूरियं व नज्जइ तिहुयणं ति, तप्पायपंकयविरहदुहनिवहो चेव मम एवंविहावत्थाकारणं ति । एवं च आयन्निऊण विजतो जायवेरग्गो जंपिउं पवत्तो—ताय ! जइ एवं तस्स भगवओ पायप्पसाएण अहं नीरोगसरीरो संवुत्तो, जो य एवंविहनीसामन्नगुणो, तस्स निव्वुइगयस्स विरहे किं सं[4]सारवासवासंगेण ? ता मुयह ममं जेण तदणुचिन्नं सामन्नमणुसरामि त्ति । पिउणा जंपियं—वच्छ ! किमजुत्तं ? केवलं—

अज्ज वि कोमलकाओ काउमसक्को य कक्खडं किरियं । निवससु सगिहे चि[5]यं किच्चिरं पि कालं कुमार ! तुमं ॥ १ ॥
कुणसु य कलत्तसंगहमणुगिण्हसु दीण-सय[6]णलोगं च । वड्ढियसंताणो सव्वविरइकिरियं करेज्जासि ॥ २ ॥
विजएण जंपियं ताय ! केरिसं कोमलत्तणं मज्झ ? । किं वा वि दुकरं धम्ममग्गनिच्छइयचित्तस्स ?॥ ३ ॥

१ पुरोहितेनेत्यर्थः ॥ २ कृष्णाननः ॥ ३ °यणातो के° खं० प्र० ॥ ४ संसारवासव्यासङ्गेन ॥ ५ °य केच्चि° प्र० ॥ ६ °यललो° खं० ॥

गाम्भीर्यस्य माहात्म्यम्

तो अइसय[1]सुयनाणावलोयविन्नायतस्सरूवेण । अप्पयडियदोसेणं तेण वि तह कह वि उल्लविया ॥ ४ ॥
जह झाणथिरमणाणं सविसेसथिरत्तणं समुल्लसइ । इयराण वि अविलियमाणसाण[2] दढमुज्जमो हवइ ॥ ५ ॥
जइ पुण अचलियझाणा दो च्चिय सलहेज्ज[3] साहुणो सूरी । पंचारिज्ज[4] य इयरे फुडक्खरं पउर[5]जणपुरओ ॥ ६ ॥
ता दोण्हं उक्करिसो दोण्हं पुण लज्जणेण संतावो । उभयं पि अणुच्चियमिमं विवेगिणो साहुवग्गस्स ॥ ७ ॥
एवंविहं च वोत्तुं न तरइ गंभीरिमं विणा नूणं । वत्तवविसेसं न वि मुणंति[6] हरिसाइणाऽऽउलिया ॥ ८ ॥
एवमवरे[7] वि मुणिणो गरुयं गंभीरिमं धरिंतेण । विलियं पेच्छंतेण वि तेणमपेच्छंतएणं व ॥ ९ ॥
निसुणंतेण[8] वि अणुच्चियमसुणंतेणं व कस्सइ कहिं पि । अन्नववएसओ मिउगिराए सिक्खं च दिंतेण ॥ १० ॥
अखलियलज्जापसरा अक्खंडियविणय-संजमायारा । अविमुक्कभया अविलुत्तसुत्तपाढा अणालस्सा ॥ ११ ॥
तहविह[9]साहुगुणे[सुं] सुठाविया जह पहीणकम्ममला । ते वि महप्पा सूरी वि सिवपयं परममणुपत्ता[10] ॥ १२ ॥
इय अप्पणो परस्स य परमुन्नइनिवहभाइणो होंति । गंभीरिमापरिगया पुरिसा सइ[11] सलिलनिहिणो व ॥१३॥ अपि च—

१ अतिशयश्रुतज्ञानावलोकविज्ञाततत्स्वरूपेण । अप्रकटितदोषेण ॥ २ अव्रीडितमानसानाम् ॥ ३ °लहिज्ज प्र० ॥ ४ उपालभेत ॥ ५ प्रचुर- ॥ ६ जानन्ति हर्षादिनाऽऽकुलिताः ॥ ७ एवमपरेऽपि मुनयः गुर्वी गम्भीरतां धरता । व्रीडितं प्रेक्षमाणेनापि तेनाप्रेक्षमाणेन इव ॥ ८ निश्रृण्वताऽपि अनुचितमश्रृण्वता इव कस्यचित् कुत्रापि । अन्यव्यपदेशतः मृदुगिरा शिक्षां च ददता ॥ ९ °वि हु सा° खं० प्र० ॥ १० °पत्तो खं० प्र० ॥ ११ सदा ॥

गाम्भीर्य-भावाऽभाव-योः गुण-दोषौ

गम्भीरताविरहितः[1] पुरुषः परेषां, रोषाद्युपाधिविधुरीकृतचित्तवृत्तिः ।
मर्माण्यपि प्रकटयत्युचितेतरच्च, वक्तुं विवेक्तुमपि न क्षमते कथञ्चित् ॥ १ ॥
एवंविधश्च लघुतां महतीमुपैति, प्राप्नोति चाऽऽपदमसङ्गतवाक्क्षतेभ्यः ।
वाक्कण्टका हि विकटाः श्रुतिरन्ध्रमग्ना, नोद्धर्तुमुद्यतधिया हरिणाऽपि शक्याः ॥ २ ॥
तत्प्रत्ययः प्रतिभवं च महान् व्यपायः, वैरानुबन्धमधिकं परिवर्धते च ।
तत् सर्वथोचितवचःप्रविवेचनायाः, गम्भीरतैव जनिकेति न किञ्चिदन्यत् ॥ ३ ॥
इति तस्यां मतिमद्भिः, सद्भिर्भववैरिविजयमिच्छद्भिः । परिहृतपरपरिवादैर्नियोजनीयं मनो नित्यम् ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे गाम्भीर्यगुणचिन्तायां विजयाचार्यकथानकं समाप्तम् ॥ २९ ॥

इन्द्रिय-विजयस्य स्वरूपम्

सवे वि गुणविसेसा इंदियविजयं विणा विसीयंति । ता तज्जइणा[2] होयवमेवमित्तो[3] पवक्खामि ॥ १ ॥
इंदो जीवो तस्स उ इमाइं तो इंदियाणि भन्नंति । सोय-ऽच्छि-घाण-रसणा-फरिसणरूयाइं पंचेव ॥ २ ॥
सोयं हि वेणु-वीणा-गेयनिनायाइपावियपमोयं । अच्छी वि पवररूवावलोयणेणऽज्जियसुहत्थी ॥ ३ ॥
घाणं च परमपरिमलमालइगंधाइवड्ढियप्पाणं । रसणा वि सरसभोयण-पाणाइसु गहणबद्धखणा ॥ ४ ॥

१ °रहतः खं० ॥ २ 'तज्जयिना' इन्द्रियजयिना ॥ ३ °वमेत्तो प्र० ॥

फ[1]रिसणमविरयमउयासणाइपरिभोगविहियसवसणं । अवगच्छ भिन्नविसयं इय सयलं इंदियाण गणं ॥ ५ ॥
एक्केक्कं पि हु एयाण जाण जीवाण मच्चुजणणखमं । सीसइ[2] समए वि इमं दीसइ पयडं चिय तहा हि ॥ ६ ॥
गेयरव-दीवयसिहा-कुसुमा-ऽऽमिस-वा[3]रुयासु आसत्ता । हरिण-पयंग-भुयंगम-मीणेभा ही ! विणस्संति ॥ ७ ॥
एक्केकविसयसंगे वि एवमेते विणासमणुपत्ता । एक्को वि पंचसु रओ ज्झड त्ति कह जाइ नो निहणं ? ॥ ८ ॥
इंदियवाउलियमणा मणागमेत्तं पि सुहमविंदंता । रण-सिंधुतरण-विवरप्पवेसवसणेसु निवडंति ॥ ९ ॥
पेच्छंति बहुविहाइं दुहाइं वच्चंति दुग्गईसु चिरं । इंदियविसयपरद्धा किं वाऽणत्थं न पेच्छंति ? ॥ १० ॥
जं नेव जंति सग्गं जं च विडंबणमुविंति इह घोरं । दुद्दंतिंदियदारुणदुव्विलसियमेव तं जाण ॥ ११ ॥
पढियं पि सुयमुयारं तवं पि तवियं तहा बहुपयारं । जइ नत्थि इंदियजओ ता तं विहलं मुणसु सयलं ॥ १२ ॥
तरिओ चिय भवजलही जेहिं जिओ एस इंदियगइंदो । वामेण य चलणेणं आ[4]वइचक्कं पि अक्कंतं ॥ १३ ॥
एयजए अजए वि य सुह-दुक्खाइं तु जणग-पुत्ताणं । दिट्ठंतनिबद्धाणं सुजसाईणं निसामेह ॥ १४ ॥

तथा हि—अत्थि जंबुद्दीवविसेसयतुल्लदाहिणद्धभारहविसयवसुंधरापसिद्धा समिद्ध-सद्धम्मवंतलोयाहिट्ठिया माहेसरी नाम नयरी । जा य दिव्वकुं[5]डलजुयलालंकियजुवइपरिगया एगकुंडलालंकरणगव्वियमुवहसइ अलयापुरिं, खलयण[6]विवज्जिया य

१ स्पर्शनं अविरतमृदुकासनादिपरिभोगविहितसव्यसनम् ॥ २ शिष्यते समयेऽपि ॥ ३ वारुया—हस्तिनी ॥ ४ आपच्चक्रम् ॥ ५ °डलालंकिय° प्र० । दिव्यकुण्डलयुगलालङ्कृतयुवतीपरिगता सती एककुण्डलालङ्करणेन गर्वितां हसति अलकापुरीम् । अलकापक्षे एककुण्डलः—कुबेरः ॥ ६ °णसुय°

साहणविहिम्मि चुक्कस्स कह वि लल्[1]लक्कमुक्कफेक्कारा । वडवासिणी सिरं से रुट्ठा समुवट्ठिया छेत्तुं ॥ २ ॥
अह निब्भ[2]रकरुणाभरविस्सुमरियनियविहिस्स साहुस्स । झाणाओ ज्झत्ति मणं चलियं हा ह ! त्ति भणिरस्स ॥ ३ ॥
अह तइयसाहुणो वि हु भूएण पारंभिओ खुद्दोवद्दवो । कहं चिय ?—
कुवलयदलदीह[3]रलोयणाए जुवईए परिगतो सहसा । नव[4]जुव्वणो जुवाणो निमेर[5]सुंदेर-सारंगो ॥ १ ॥
बहुहाव-भाव-विब्भममणोहरं र[6]यसुहं अणुभवन्तो । तह कीलिउं पयट्टो जह चलइ[7] मणो मुणीणं पि ॥ २ ॥
साहू वि तं तहाविहरइवइयरमणवलोयमाणो व्व । सविसेसझाणपयरिसमारूढो अविचलियचित्तो ॥ ३ ॥

चउत्थस्स वि साहुणो सुसाण[8]चिन्नकाउस्सग्गस्स एमेव कह वि गुंजापुंजरत्तलोयणो व[9]णकरिकरकरणिकायदंडो प[10]यंडफणाकडप्पदुप्पेच्छो महाभुयंगमो पाएहिंतो सीसदेसमारूढो, तत्तो वि य कक्ख[11]-खंधसिहरेसु वियरिओ ।
तहदेहविहियभमणस्स भीमरूवस्स पन्नगवइस्स । नवनलि[12]णिनालसीयलसरीरफरिसेण संभूओ ॥ १ ॥
रोमु[13]द्धोसो मुणिणो झाणातो कंपियं च किं पि मणो । भुयगो वि अकयडंसो सणियं सणियं अवक्कंतो ॥ २ ॥
इय ते मुणिणो चउरो वि उग्गए मंडलम्मि दिणवइणो । पारियकाउस्सग्गा गया सयासम्मि सूरिस्स ॥ ३ ॥

१ भयङ्करमुक्तफेत्कारशब्दा ॥ २ निर्भरकरुणाभरविस्मृतनिजविधेः ॥ ३—दीर्घलोचनया ॥ ४ °वजोव्व° प्र० ॥ ५ निर्मर्यादसुन्दरसाराङ्गः ॥ ६ रतसुखम् ॥ ७ °इ चलो मु° खं० प्र० ॥ ८ °णदिन्न° खं० प्र० । श्मशानचीर्णकायोत्सर्गस्य ॥ ९ वनकरिणः करेण—शुण्डादण्डेन करणिः—तुल्यः कायदण्डो यस्य ॥ १० प्रचण्डफणासमूहदुष्प्रेक्षः महाभुजङ्गमः पादेभ्यः ॥ ११ °क्खडखं° खं० ॥ १२ °लिणना° प्र० ॥ १३ रोमोद्धर्षः ॥

विद्दविस्संति, निवारिया य चित्तसंतावं उव्वहिस्संति, तह वि निवारणा चेव जुत्ता, उवेहिया हि अंगुब्भवा रोगा सुया य न सुहावहा होंति त्ति। ततो पारद्धा पंच वि सिक्खविउं सेट्ठिणा—

रे रे मूढा ! को एस उव्वणो[1] भोगभयणवावारो ?। किं नेव बुज्झह धणं सगिहे ? किं वा न कोसल्लं ? ॥ १ ॥
किं वा न सबाहुबलं अवगच्छह ? किन्न पेच्छह जणं च। परिमियपरिभोगुवभोगविजियसव्विंदियपयारं ? ॥ २ ॥
किं वा नो परिभावह असाहुवातो[2] जए पवित्थरिही। एवमनिहुयमसंकं सच्छंदं विलसमाणाण ? ॥ ३ ॥
किं सो वि इह गणिज्जइ जो मइलिणइ[3] नियकुलं च सीलं च। खिविऊणं अप्पाणं नूणमसंभावणापंके ? ॥ ४ ॥
किं बहुणा ? जइ वंछह मज्झ घरे निवसिउं सिरिं भोत्तुं। ता उज्झियअइरेगा निहुया होऊण ठाह चिरं ॥ ५ ॥
इय दंसियगुरुतरकोवनिब्भरं पेच्छिऊण नियपुत्ते। सासिज्जंते[4] पिउणा रुट्ठा सुलसा इमं भणइ ॥ ६ ॥
मइ[5] जीयंतीय वि पेच्छ कह सुया निट्ठुरं भणिज्जंति ?। सुहसीला-ऽऽयारा वि हु अकयविणासा विणीया वि ॥ ७ ॥
ता सरियमियाणिं[6] मज्झ गेहवावारविरयणाए मुहा। जत्थित्तिए वि पुत्ताण एरिसी कीरइ अवन्ना ॥ ८ ॥

ततो सा जायगरुयाभिमाणा परिचत्तपाण-भोयणा एगंतदेसे परिमिलाणवयणकमला सोविऊण ठिया। भोयणसमए दुवाराओ आगतो सेट्ठी। सयं पि पायपक्खालण-देवयादंसणाइ काऊण भोयणमंडवमुवगतो य पुच्छइ—कत्थ गया सुलस ? त्ति। परियणेण भणियं—कज्जमज्झमबुज्झमाणेहिं किं कहिज्जइ ? परं कोवाउर व्व सेट्ठिणी उज्झियगिहकिच्चा

१ उल्वणो भोगभजनव्यापारः ॥ २ असाधुवादः जगति प्रविस्तरिष्यति ॥ ३ मलिनयति ॥ ४ शिष्यमाणान् ॥ ५ मयि जीवन्त्यामपि ॥ ६ सृतम् ॥

अमुगत्थ पसुत्ता अच्छइ त्ति। इमं च सोच्चा संभंतो गतो सेट्ठी तीए समीवं, संभासिया य—भद्दे ! किमेवं कुविय व्व दीससि ? किं कारणं न चिंतेसि गिहकिच्चाइ ?–न्ति। सा य इममसुणमाणि व्व वत्थपच्छाइयवयणा ठिया परम्मुही। विलक्खीहूओ सेट्ठी गतो ततो पएसाओ। ततो पेसिया तीए समीवे नियजेट्ठभइणी सेट्ठिणा। तीए वि सामवयणविन्नासपुरस्सरं तहा कहं पि पन्नविया[1] जहा ईसिंपसंतकोवावेगा सम्मुहीहोऊण भणिउं पवत्ता—तुह भाउणा इत्थमित्थं च सुया निद्दोसा वि अणुचियवयणेहिं तज्जिया, तद्दुक्खेण य मए भोयणाइ सव्वं परिचत्तं ति। नणंदाए भणिया—सव्वहा खमाहि एक्कवारं, न भुज्जो सेट्ठी किं पि जंपिही। एवं भुज्जो भुज्जो सा पन्नविज्जमाणी[2] उज्झियकोवा भुत्ता समं सेट्ठिणा। तद्दिणातो आरब्भ चत्ता पुत्ततत्ती सेट्ठिणा। दव्वविणासे वि न सिक्खवइ[3] किं पि, कज्जविणासे वि चिट्ठइ तुसिणीए। एवं च उवेहिज्जंतं पलीणप्पायसारं जायं घरं। गरुयवेरग्गोवगयचित्तो य परिभाविऊण माइंदजालविलसियं[4] व अपारमत्थियं पियपणइणी-पुत्ताइयं, निरिक्खिऊण खणजोग-विओगं पेमप्पवंचं दमघोससूरिणो समीवे पव्वइओ सुजसो। विसिट्ठोवहाणपुरस्सरं च सव्वं सामायारिमणुपालिंतो गामा-ऽऽगराईसु गुरुणा समं विहरिउं पवत्तो।

अह सुचिरकालमकलंकसीलपरिपालणपरो सम्ममहिगयसुत्तत्थो 'मा कुडुंबमज्झातो को वि पडिबुज्झिहि' त्ति गुरुणा चेव समं समागतो सो माहेसरीपुरीए। आगओ य वंदणवडियाए जणो, धम्ममायन्निऊण य गतो जहागयं।

पढमजामावसेसे य दिवसे सूरिसमीवोवविट्ठस्स सुजससाहुणो 'विजणं' ति काऊण पुव्वदुच्चरियचिंतणुप्पज्जमाणलज्जा-[5]

१ 'प्रज्ञापिता' अनुनीता ॥ २ 'प्रज्ञाप्यमाणा' अनुनीयमाना ॥ ३ शिक्षयति ॥ ४ मायेन्द्रजालविलसितमिव ॥ ५ पूर्वदुश्चरितचिन्तनोत्पद्यमान-

भरोणयवयणा सदुक्खं रुयंती समागया सा सुलसा सेट्ठिणी। वंदिओ सूरी सुजससाहू य। आसीणा समुचियट्ठाणे। इंगियाईहिं मुणियसंबंधेण य संभासिया सूरिणा—भद्दे! अवि निव्वहइ धम्मकिच्चं? धम्मसहाई य पुत्ताइपरियणो? त्ति। ततो घट्टियहिययसल्ल व्व सगग्गरं सा रोविउं पवत्ता। भणिया य गुरूहिं—महाणुभावे! कीस रोयसि?। तीए जंपियं—भयवं! एवंविहाणत्थपत्थारीकारणं अप्पाणं चिय रुवामि, जीए मए सम्ममणुसासिंतो वि निद्धाडिओ घरसामी, अणुचियं वट्टंता वि 'सुसमायार' त्ति उववूहिया सुया, पत्ता य मंदभागिणी नियदुन्नयपायवमूलं पावफलं। गुरुणा भणियं—कहं चिय?। तीए जंपियं—घरसामिणो पव्वज्जागहणेण एगं तुमं पच्चक्खमेव, बीयं पुण विलुत्तवित्तपुत्तवुत्तंतं च निसामेह—

इमम्मि घरनाहे पव्वज्जोवगए मए ठविया पुत्ता गिहकज्जेसु। ते य पढमं सलज्जं वट्टिय पच्छा मं अवगन्निऊण सच्छंदा निरंकुसा करिणो व्व वियरिउं पवत्ता। तत्थ जेट्ठो धरो पुत्तो ममं। सो य अच्चंतगीयाभिरई पोसेइ गायणवग्गं, गेयं विणा य न सक्कइ ठाउं।

अवि चयइ भोयणं पि हु उज्झइ तंबोल-वत्थ-ऽलंकारं। परिहरइ बंधुवग्गं पि न उण गेयं मणागं पि ॥ १ ॥
थेवं पि हु तयभावे मयं व मुसियं व मुणइ अप्पाणं। सेसविसओवलंभे वि लहइ ईसिं पि नेव रइं ॥ २ ॥
लज्जं मोत्तूण मए वि जंपिओ पुत्त! अणुचियं बाढं। जेट्ठो वि तुमं होउं जं वियरसि एवमनिबद्धं ॥ ३ ॥

लज्जाभरावनतवदना ॥
१ ज्ञातसम्बन्धेन ॥ २ सगद्गदम् ॥ ३ विलुप्तवित्तपुत्रवृत्तान्तम् ॥ ४ °वगन्नि° खं० ॥ ५ विचरसि ॥

दुज्जीहकुलकलंकियमवमन्नइ नागरायनयरिं। तीए पुरीए निरवग्गहपरोवग्गहसंपाडणपंडिट्ठो नीसेसलोयइट्ठो सुजसो नाम सेट्ठी, सुलसा से भज्जा। ताणं च पुव्वभवज्जियसुकयाणुरूवं सुहमुवभुंजंताण कालक्कमेण पंच पुत्ता जाया—पढमो धरो, बीओ धरणो, तइओ जसो, चउत्थो जसचंदो, पंचमो चंदो त्ति।

पढमे गब्भोवगए जणणीए डोहलो समुप्पन्नो। गेयसवणम्मि बीए रूवाण पलोयणे बाढं ॥ १ ॥
तइए य सुरभिकुसुमाइएसु तुरिए य सरसभोज्जेसु। पंचमगे वि य मिउ-मउयतूलिसेज्जा-ऽऽसणाईसु ॥ २ ॥
तद्दोहलाणुसारेण तव्विहो चेव पुत्तपरिणामो। नियबुद्धिकुसलयाए विणिच्छिओ सेट्ठिणा तत्तो ॥ ३ ॥

एवं च पंच वि सुया परिवड्ढमाणा कमेण वाणिज्जाइकलाहिगमवंतो पत्ता तरुणत्तणं, काराविया य जहोचियं पाणिग्गहणं, निउत्ता य गिहकिच्चेसु। अह पुव्वकम्मनिम्माणवसेण ते धराइणो पंच वि कइयवि दिणाणि पिउणो उवरोहेण वट्टिऊण गिहकायव्वेसु, आवज्जिऊण किं पि दविणजायं, लद्धावगासा अणवरयगीय-पेच्छणय-मणहरविलेवणाइ-सुहसेज्जा-ऽऽसणोवभोग-भंगिवड्ढमाणुकरिसा जहिच्छं वियरिउं पवत्ता। तओ एक्केक्कविसयसंगिणो ते पेच्छिऊण पिउणा चिंतियं—अहो! एस दोहलगाणुरूवो एयाणं वरागाण पवत्तिओ पयरिसो, एवं ठिए य किं काउमुचियं? अणिवारिज्जमाणा हि एए गिहसारं कमेण

खं०। खलजनविवर्जिता सती द्विजिह्वकुलेन कलङ्कितां नागराजनगरीमवमन्यते। नागराजनगरीपक्षे द्विजिह्वाः—नागाः, न तु खलाः ॥
१ निरवग्रहपरोपग्रहसम्पादनपटिष्ठः ॥ २ °पविट्ठो खं० ॥ ३ °सुकयकम्म° प्रसं० ॥ ४ °हसिज्जा° प्र० ॥ ५ उपभोगः—भोजनम् ॥ ६ पवित्तियं प° खं० प्र० ॥

तइओ य जसो नाम सुओ अच्चंतं सुरभिकुसुमाइपरिमललंपडो एगया काणणं गओ। तत्थ य तं[1]कालवियसंतमालईमउलमंसलपरिमलं दिसिमुहेसु पसरंतमग्घाइऊण परमपरितोसमुव्वहंतो, कीणासचोइउ व्व निवारिज्जमाणो वि मालाकारेहिं, पविट्ठो तयब्भंतरं। अह तं[2]वेलुल्लसंतसोरभभरमासाइंतेण मालईगहणादस्समाणसरीराभोगेण डक्को सो महाभुयंगमेण। अच्चुक्कडयाए विसवियारस्स, अणुचिंतेसु वि गारुडिएसु, पगुणीकएसु वि तंतोवयारेसु, अभिभूओ महानिद्दावेगेण, निमिसद्धेण य जमरायरायहाणिं गतो त्ति ॥

चउत्थो वि जसचंदनामधेयो सुओ अच्चंतसरसभोयणलंपडो घरे तहाविहवित्तविरहेण तव्विहभोयणमपाउणंतो वाणिज्जववएसेण सयणाइसंतियं भं[3]डोल्लमादाय गओ देसंतरं। पारद्धा य ववसायविसेसा, आवज्जियं किं पि दविणजायं, जाया य एगेण खुद्दप्पायपुरिसेण समं से मेत्ती। जाणिओ य तेण सरसभोयणाभिलासलालसो सभावो जसचंदस्स। ततो तेण पुरिसेण तद्दव्वोवरि जायमुच्छेण हणणोवायंतरमपेच्छमाणेण उ[4]ग्गविससंजोजिओ निप्फाइतो मोयगो। अह कयविसिट्ठभोयणस्स वि पे[5]णामिओ तेण जसचंदस्स। समीवपत्तकयंतपेरिएण व तेण रसलंपडयाए भोत्तुमारद्धो य।

भुज्जंतमोयगरसो जह जह उदरंतरं उवगओ से। तह तह अमायमाणि व्व वेयणा अइगया दूरं ॥ १ ॥
लोयणनिमेसं[6]मित्ते काले कालेण कवलिओ सो य। अहह ! दुरंता रसणा असणि व्व विणासमुवणेइ ॥ २ ॥

१ तत्कालविकसन्मालतीमुकुलमांसलपरिमलम् ॥ २ तद्वेलोल्लसत्सौरभभरमास्वादयता मालतीगहनादृश्यमानशरीराभोगेन दष्टः ॥ ३ भाण्डसमूहमित्यर्थः ॥ ४ उग्रविषसंयोजितः ॥ ५ अर्पितः ॥ ६ °समेत्ते प्र० ॥

एवं सो जसचंदो दुज्जणजणहिययवड्ढियाणंदो। पंचत्तं अणुपत्तो जाओ अत्थो य वि[1]डसोत्थो ॥ ३ ॥

पंचमगो वि चंदाभिहाणो सुओ अहिअं सुहफरिसवेसासंभोगप्पसत्तो भणितो मए—अरे पाव ! निहणगयप्पायं कुडुंबं, ता तुममेव एक्को संपइ जइ वट्टसि विसिट्ठचेट्ठासु, उज्झसि दुट्ठगोट्ठिं, अणुट्ठेसि सुंदरमत्थोवज्जणं, ता अणुगिण्हसि अप्पाणं कुडुंबं च, अणुचियपवित्तिवसेण य वच्छ ! किं न दिट्ठं तए नियभाउगाणं अकाले वि तहाविहं विणासपज्जवसाणं विडंबणाडंबरं ? ति। तेण जंपियं—जत्थ तुज्झ सारिच्छा जणणी दुट्ठमुही न तत्थ दुल्लभमेवंविहमसमंजसं, ता कालरयणि व्व सव्वं कुडुंबं निट्ठविय फुडं तुमं मोणेण ट्ठाइस्ससि। इमं च सोच्चा अयंडजमदंडताडिय व्व 'जणणी त्ति कालरयणी, अहो ! पावस्स भत्तिपयरिसो' त्ति अहं सोगसंरंभनिब्भरं रोविउं पवत्ता, 'एत्तो य होउ किं पि, न किं पि मए वत्तव्वं' ति मोणमल्लीणा। सो य दुट्ठसुतो इतो ततो वेसागिहेसु वसंतो संकंतो वसंतसेणाघरं। आसत्तो य दढं तदंगफरिसम्मि। नवरं दविणवियलत्तणेण निवारितो घरप्पवेसो तं[2]वा[3]इगाए। अन्नववएसेण दंसिज्जइ सेऽवमाणं, तत्तप्पओयणेण य निवासिज्जइ मंदिरातो, 'अणवसरु' त्ति रुब्भइ दुवारे वि, तह वि निल्लज्जत्तणेण य न मुयइ तदभिगमं उवपुप्फ-फलाइणा। एवं च सो कहं पि अणवबुज्झमाणो भणितो वाइगाए—रे वणियसुय ! एगं अप्पणा न किं पि विय[4]रसि, बीयं अन्नेसिं पि इंताण पच्चूहो तुमं, ता मा एत्तो अम्ह घरे एज्जासि त्ति।

एवं पि पावबुद्धी भणिओ फरुसक्खरेहिं सो तीए। तह वि परिओसमुव्वहइ ही ! महं मयणमाहप्पं ॥ १ ॥

१ विटसुस्थः ॥ २ तन्मात्रा-अक्कया इत्यर्थः ॥ ३ अक्कया ॥ ४ 'वितरसि' ददासि ॥

हीला लील त्ति परुट्ठजंपियं नूण पणयकोवो त्ति । कम्मे निजुंजणं पि हु सकुडुंबसमाणगणणं त्ति ॥ २ ॥
आरुट्ठपयपहारप्पयाणमवि अइमहापसाउ त्ति । पडिहाइ कामुयाणं अहो ! कहं मइविवज्जासो ? ॥ ३ ॥

एवं च 'बहुहा निवारणं पि पवत्तणं' ति मन्नंतो वसंतसेणाभवणं खणं पि अचइंतो अवरवासरे वाइगाए संकेइऊणावरं पुरिसं माराविओ एसो, लोए य पयडियं—अन्नपुरिसक्खणयपविट्ठो एस इत्थं हओ त्ति ॥ छ ॥

एवं पंच वि पुत्ता भयवं ! मह मंदभाइणीए मया । एसो वि गेहसामी मह दोसा चेव निक्खंतो ॥ १ ॥
हा हा ! अहं हयासा जीसे न पई न यावि अंगरुहा । नियतुच्छबुद्धिदुव्विलसिएण विसमं दसं पत्ता ॥ २ ॥
एवंविहविसमदसं गयाए भयवं ! न जुज्जइ उवेहा । सरियचिरप्पणयाणं भवारिसाणं सुपुरिसाणं ॥ ३ ॥
इय करुणाभरनिब्भरपयंपिरं बाहपवहधोयमुहिं । तं पेच्छिऊण सुजसो साहू तत्तो अवक्कंतो ॥ ४ ॥
परिभाविउमारद्धो य पेच्छ अजिइंदियाण जीवाण । कहमावयाउ निवडंति जीवियव्वंतजणणीओ ? ॥ ५ ॥
धन्ना कयपुन्ना तह मुणिणो च्चिय इय जयम्मि भयवंतो । जेहिं सुहहरिणहंता निहओ दुट्ठिंदियमइंदो ॥ ६ ॥
इममेव सो महप्पा वेरग्गपयं पधारिउं चित्ते । सविसेसतवच्चरणेण झोसिउं बाढमप्पाणं ॥ ७ ॥
कयपज्जंताणसणो सणंकुमारम्मि देवलोयम्मि । देवत्तेणुववन्नो उक्कोसाऊ महिड्ढीओ ॥ ८ ॥

१ °ण–न्ति प्र० ॥ २ आरुष्टपदप्रहारप्रदानमपि अतिमहाप्रसाद इति ॥ ३ अल्पजन् ॥ ४ अक्रया ॥ ५ स्मृतचिरप्रणयानां भवादृशानाम् ॥ ६ बाष्पप्रवाहधौतमुखीम् ॥

आ रंडे ! चामुंडि व दुट्ठतुंडे ! न ठासि तुसिणीया । इय जंपिरो य भुज्जो न मए थेवं पि आलविओ ॥ ४ ॥

तत्तो सविसेसं सच्छंदं गीयसुणणासत्तो पाणगायणकुडुंबं उवचरिउं पवत्तो। अमुणियपत्थावा-ऽपत्थावो अवमन्नियावजसो अगणियलोयलज्जो गेयसवणत्थं वच्चइ पाणगायणघरे । मउ व निसामेइ एगचित्तो तग्गीयरवं ति । एवं च एगकुडुंबवित्तीए पाणेहिं समं अच्छंतो निवेइओ राउले, जहा—एसो सुकुलपसूतो वि एवमेवं पाणेसु अभिरमइ त्ति । तओ 'वन्नसंकरकारिणो विणासो चेव दंडो' त्ति विभाविंतेण डंडिगेण महायणसमक्खं माराविओ एसो त्ति ॥

बीओ वि सुतो धरणाभिहाणो निरंतरं सुरूवरामायणावलोयणाभिरई एगया नडपेच्छणए गओ मंडिय-विभूसियं नडदुहियरं पेच्छिऊण बाढमज्झोववन्नो अवहत्थियकुलाभिमाणो गेहसारं दाऊण नडं भणइ—नियधूयं मह देहि त्ति । नडेणं भणियं—एसा हि अम्ह जीवियभूया, ता जइ तुमं एईए अत्थी ता एहि देसंतरेसु अम्हेहिं समं, अहिज्जसु नडविज्जं ति । तत्तो रुदंतिं घरणिं ममं च मोत्तूण गतो नडेण समं । नडधूयावयणावलोयणाणंदिओ पयट्टो नडविज्जं सिक्खिउं । छेयत्तणतो य अहीया थेवकालेणं । पारद्धो य कालसेणाभिल्लपल्लीए वंसं महंतमारोविऊणं नच्चिउं । अह णडधूयाए तीए चेव रूवक्खित्तेण पल्लीवइणा सयं उव्वोढुमिच्छंतेण छिंदावियाउ वंसनाडीओ, निराधारो डोल्लिओ वंसो, खग्ग-फरगहत्थो निवडिओ तत्तो धरणो । पत्ता य पंचत्तोवगएण तेण घरिणि त्ति ॥

१ चाण्डालगायनगृहे इत्यर्थः ॥ २ अभिभूतकुलाभिमानः ॥ ३ °डेहिं भ° प्र० ॥ ४ एतस्या अर्थी ॥ ५ °ण पारद्धं न° खं० प्र० ॥ ६ नटपुत्र्याः तस्या एव ॥ ७ घरणि प्र० ॥

संता-ऽसंते दोसे परस्स[1] पउणेइ जो सपिउणो वि । तक्कम्मं पेसुन्नं किलिट्ठमण-वयणवावारो ॥ २ ॥
[2]नयससिगहकल्लोलो विसिट्ठयाहंसपाउसारंभो । कारुन्नहरिणसिंहो सद्धम्ममहीक[3]सणसीरो ॥ ३ ॥
[4]दक्खिन्नमयणहीरो सकुलक्कमकमलिणीहिमासारो । नयवेईणाऽवमओ दूरं पेसुन्नसंबंधो ॥ ४ ॥
पे[5]सुन्नावन्नमणा दिवा-निसं चिय परेसि दोसगणं । पेहंता नियकज्जं पि बालिसा तो परिहरंति ॥ ५ ॥
[6]सामिम्मि परिचिए वि य उज्जलवेसे य आमिसदए य । उज्झियभसणं विणियं पिसुणाओ सुणं सगुणमाहु ॥ ६ ॥
हीलाए पयं अक्कोसभायणं वइरठाणमच्चंतं । तेणऽप्पा उवणीओ पेसुन्नं जेण आरद्धं ॥ ७ ॥
पेसुन्नयस्स चागे अचागे वि य गुणा य दोसा य । पयडं चि[7]यं दिट्ठंतो धणवालो बालचंदो य ॥ ८ ॥

तथाहि—अत्थि देवकुरुभूमि[8] व अणिंदजणाहिट्ठिया, सुररायरायहाणि व सुलेहरामारमणीया कायंदी नाम नयरी । तहिं च हेहयकुलनलिणीवणवियासणेक्कसूरो नरवीरो नाम राया ।

१ °स्स पिउणेइ जो सपिउणो त्ति प्रतौ ॥ २ नयशशिग्रहकल्लोलः (ग्रहकल्लोलः—राहुः) विशिष्टताहंसप्रावृडारम्भः । कारुण्यहरिणसिंहः सद्धर्म-महीकषणसीरः ॥ ३ कसिण° प्रतौ ॥ ४ दाक्षिण्यमदनहरः स्वकुलक्रमकमलिनीहिमासारः । नयवेदिनाऽवमतः ॥ ५ पैशुन्यापन्नमनसः ॥ ६ स्वामिनि परिचितेऽपि च उज्ज्वलवेषे च आमिषदये च । उज्झितभषणं विनीतं पिशुनात् शुनकं सगुणमाहुः ॥ ७ °य चिट्ठं° प्रतौ ॥ ८ देवकुरुभूमिः अनिन्द्र-जनैः—स्वतन्त्रविहारिजनैः अधिष्ठिता, नगरी पुनः अनिन्द्यजनाधिष्ठिता । इन्द्रराजधानी सुष्ठु लेखरामाभिः—अप्सरोभिः अभिरामा, नगरी तु सुलेखाभिः—सद्भाग्याभिः रामाभिः—रमणीभिः रमणीया ॥

[1]चउरंगबलमहोयहिमऽरीण महिऊण खग्गसुरगिरिणा । जेणाऽऽणीया सगिहं जयलच्छी लच्छिवइण व ॥ १ ॥

तस्स राइणो वीसासभवणं भवणचंदो नाम सेट्ठी, बंधुमई भज्जा । ताण धणपालो नाम पुत्तो परमपयरिसपत्तो सप्पुरिसचेट्ठिएहिं कलासु कुसलो य उभयलोगाविरुद्धवित्तीए वट्टंतो कालं वोलेइ । जाया य संकरसेट्ठिसुएण बालचंदाभिहाणेण समं मेत्ती । नवरं उज्जुसीलो धणपालो, इयरो य दुट्ठपयई, तह वि अविभावियदो[स]संपाडियपेमसव्वस्सं खणं पि न तं विणा रइं लहइ धणवालो ।

भमइ य तेणेव समं कीलावण-भवण-देवगेहेसु । दविणज्जणाइकिच्चं चिंतइ तेणेव सह निच्चं ॥ १ ॥
अह एगम्मि दिणम्मि उज्जाणगएहिं गयवरो व मुणी । दीसंतसस्सिरीओ सुहदंतो वंदिओ तेहिं ॥ २ ॥
अच्चंतसोम-सुहलक्ख[णे]हिं उवलक्खिउं असामन्नं । तं पुच्छिउं पवत्ता पव्वइतो किं निमित्तं ? ति ॥ ३ ॥
मुणिणा भणियं भद्दा ! अणंतवित्तंतगहणभीमम्मि । सीसंति केत्तियाइं भवम्मि दिक्खानिमित्ताइं ? ॥ ४ ॥
तह वि हु जइ कोऊहलमायन्नह ता भवित्तु एगमणा । लेसुद्देसेणाहं तुम्हं साहेमि सनिमित्तं ॥ ५ ॥

रामदेव-मुनेरात्म-कथा

अहं हि अवंतिजणवए बहुलसन्निवेसे पुरंदरस्स सत्थाहस्स पुत्तो रामो नाम, सहोयरी य रामाभिहाणा भइणि त्ति । अन्नो य बहू भाइ-भइणिपमुहसयणो सुहेण वसइ ।

अन्नया य निवडिओ दुक्कालो, खीणो धन्नसंचयो, पलीणो कय-विक्कयववहारो, खीणो पागयलोगो, सुन्नीहूयाइं

१ चतुरङ्गबलमहोदधिम् अरीणां मथयित्वा खड्गसुरगिरिणा । येनाऽऽनीता स्वगृहं जयलक्ष्मीः 'लक्ष्मीपतिना' कृष्णेन इव ॥

जायाणेगजणविणासाइं मंदिराइं । अहं हि परलोयगएसु जणणि-जणएसु, [से][1]सावसेसकुडुंबे विज्जंते, से सावसेसं[2]मसणं विमोत्तूण गतो देसंतरं । जीवणनिमित्तमारद्धा बहवे उवाया । दव्व-ववसायवसओ य उवज्जिय चिरकालाओ सुमरियं घरयणस्स—कहं गया बंधुणो ? कहं वा हूया सा वराइणी कणिट्ठभइणि ? त्ति ।

ततो कयसव्वसंवाहो णेगभंडभरियकरह-वसहनिवहो गतो नियगामं । दिन्नो गामसमीवे आवासो, पुच्छितो गामलोगो नियबंधु-सयणवत्तं । चिरकालपलीणत्तणेण न किं पि केणइ साहियं, तह वि जम्मभूमिपक्खवायमुव्वहंतो पविट्ठो हं गाममज्झे । दिट्ठं सुगुंदमंदिरं, आसीणो तत्थ । पयट्टं च तव्वेलं ललियलीलावईनेउरारावरमणीयचरणचंकमणमणोहरं पेच्छणयं । दिट्ठा य विलासिणीण मज्झगया, सद्विज्ज [व] विज्जाणं, कप्पतरुलय व लयाणं, कामधेणु व धेणूणं, सविसेससस्सिरीया, सुंदरागारा, सिंगारसारनेवच्छविराइया एगा पणंगणा । तं च दट्ठूण जायाणुरागेण रयणीसमए मए तंबोल-कुसुम-विलेवणाई उवयारो किंकरहत्थेण पेसितो तग्गिहे । पडिच्छितो य सायरं तीए, सज्जितो य पल्लंको, पबोहिओ मंगलपईवो । कयसविसेससिंगारा य जाव सा दप्पणमवलोयमाणी चिट्ठइ ताव नियत्तियसेवगवग्गो पविट्ठो हं भवणब्भंतरं, अब्भ[र]हिओ ससंभ[मं] तीए, आसीणो हं सुहसेज्जाए ।

एत्थंतरे मच्चरणसोहणत्थमुदगमुव्वाहरंतीए छीयं अणाए, जंपियं च—जीवउ चिरं रामदेवो त्ति । तं च निययनामाभिलावसरिसमायन्निऊण ईसिसमुप्पन्नकणिट्ठभइणीसंकेण जंपियं मए—भद्दे ! अच्छउ ताव चलणपक्खालणोवक्कमो, इमं

१ स्वसावशेषकुटुम्बे ॥ २ °सेससमणं प्रतौ । तस्यै सावशेषमशनं विमुच्य ॥

इय गुण-दोसा पच्चक्खमेव जिय-अजियइंदियाण दट्ठं । दीसंति संतु तव्विजयबद्धलक्खा अओ धीरा ! ॥ ९ ॥
करकमलगोयरगयं ताण परं मुत्तिसोक्खभमरउलं । जेहिं निरुद्धा जंगजगड[1]णुब्भडा इंदियगइंदा ॥ १० ॥ किञ्च—

यद्वद् विभिन्नहृदयेऽधिपतिः कुटुम्बे, स्वच्छन्दचारिणि नृपो यदि वा स्वसैन्ये ।
कार्यं मनागपि न किञ्चन कर्तुमीशः, सौडीर्य-वीर्य[2]-मति-नीतिगुणान्वितोऽपि ॥ १ ॥
तद्वद् विभिन्नविषयामिषलब्धिलुब्धे, जीवोऽपि नेन्द्रियगणे भवभीरुकोऽपि ।
संवेगवानपि सुदृष्टिरपीष्टसिद्धिं, सम्प्राप्तुमुद्यतमना अपि जातु शक्तः ॥ २ ॥
निर्मानुषाटविनिवास-जपोपवास-स्नेहोपचारपरिहारसुदुष्कराणि ।
कुर्वन्त्यमूनि मुनयो हतकेन्द्रियार्तिनिर्मूलखण्डनकृते न निमित्तमन्यत् ॥ ३ ॥
इति वाञ्छितार्थसाधनधनमिन्द्रियदमनमेव विमलमतिः । कुर्वीत मुक्तिवनिताहृदयाकर्षणपरममन्त्रम् ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे इन्द्रियपञ्चकविजय-व्यतिरेकवर्णनायां[3]
सुजसश्रेष्ठि-[तत्]सुतकथानकं समाप्तम् ॥ ३० ॥

पैशुन्यस्य स्वरूपम्

पेसुन्नसुन्नहियओ इंदियविजयाइयं हि काउमलं । ता पेसुन्नविणिग्गहहेउमहं किं पि जंपेमि ॥ १ ॥

१ जगत्कदर्थनोद्भटाः ॥ २ °धीर्य° प्रतौ ॥ ३ °वर्त्तना° प्रतौ ॥

तुज्झ अन्नस्स वा एत्थावराहो ? ।

ववसाय-साहसधणो वि नीइकुसलो वि किं कुणइ पुरिसो । पुव्वभवज्जियदुक्कयकम्ममहानडनडिज्जंतो[1] ? ॥ १ ॥
किं भइणि ! तुज्झ संभवइ एरिसी सुकुलदूसियावत्था ? । चिंताइक्कंतो नवरि विसरिसो देव्ववावारो ॥ २ ॥
एयावत्थोवगयाए[2] कह व तुह दंसणं महं जायं ? । विहिविलसियाइं अघडन्तघडणपडुयाइं को मुणउ ? ॥ ३ ॥
मन्ने एवंविहदूसियत्थकरण[त्थ]मेत्थमम्हाण । आणयणं जणणं जीवणं च विहिणा विणिम्मवियं ॥ ४ ॥
इय सो परिदेवन्तो अप्पाणं भूरिभणितिभंगीहिं । जाणियवुत्तंतेहिं उल्लविओ गामवुड्ढेहिं ॥ ५ ॥
भो सत्थवाहसुय ! कीस असरिसं कुणसि चित्तसंतावं ? । को एत्थ तुज्झ दोसो ? दिव्वनाणी किमिह कोइ ? ॥ ६ ॥
सवियारदंसणुब्भवमिहोकहासंभवस्स पावस्स । पच्छित्तं पडिवज्जसु वज्जसु एत्तो महासोगं ॥ ७ ॥
अन्नाणतिमिरपडिहणियचक्खुणो गे[हिणो] किमु कुणंतु ? । उल्लसइ जेसि ईसिं पि नेव नाणंजणुज्जोओ ॥ ८ ॥
ता एहि घरं परिहरसु सव्वहा गत्त[3]-चित्तसंतावं । नहि गुप्पंति[4] सुपुरिसा गरुए वि हु क[ज्ज]गहणम्मि ॥ ९ ॥

एमाइबहुवयणनिवहेण पन्नविऊण नीओ हं गामवुड्ढलोएणाऽऽवासं । भइणी पुण महंतं सोगसंरंभमुव्वहंती, अच्छिन्ननिवडंतबाहप्पवाहाउललोयणा लज्जाए चेडीणं पि मुहं दंसिउमपारयंती, सरीरचिंताछलेण नीहरिऊण मरणकयनिच्छया निवडिया पुरोहडावडम्मि । धाहावियं दूरट्ठियाहिं दासीहिं । धावितो गामलोगो । जाव इओ तओ तयायड्ढणोवक्कमा काउमा-

१ पूर्वभवार्जितदुष्कृतकर्ममहानटनाट्यमानः ॥ २ एतदवस्थोपगतायाः ॥ ३ गात्रचित्तसन्तापम् ॥ ४ व्याकुलीभवन्ति इत्यर्थः ॥

रद्धा ताव मया[1] एसा, तहाविहा य आयड्ढिया कूवाओ । मुणियतव्वइयरो सविसेससोगाइरेग[2]मुव्वहंतो संपत्तो य अहं । ततो मए वि कयमरणनिच्छएण रयाविया चिया, दिन्नं च दीणा-ऽणाहाणमनिवारियप्पसरं सहत्थेण महावित्थरेण दाणं । एवं च जायनिच्छओ जाव जलणजालावलीनिचियं चियं आरुहिउमुवट्ठिओ हं ताव चलणेसु निवडिऊण धरितो गामवुड्ढेहिं, भणितो य—सत्थवाहसुय ! निद्दोसो वि जइ तुमं हुयासणं पवज्जिहसि ता वयमवि तुह मग्गमणुसरिस्सामो त्ति । एवं चावधारियतन्निच्छओ मंदीहूतो हं मरण[3]वइयरातो । नीतो य थोवंतरिओ[4] सोगतरुणो तले । तत्थ य धम्मसीहो नाम चारणसमणो तव्वेलं चेव पारावियकाउस्सग्गो निसन्नो समुचियासणे । ततो वंदितो सो मए । दिव्वनाणोवओगओ विमरिसियसव्वपुव्ववुत्तंतेण संभासिओ हं तेण—

भो सत्थवाह ! वहसीह किमंग ! सोगं !, एसेव पुव्वकयदुक्कयभायणाणं ।
जीवाण होइ हु गई तदलं इमेण, तच्छेयणत्थमहुणा तुममुज्जमेसु ॥ १ ॥
जइ सच्चमेव अवगच्छसि दुक्खरूवं, दुक्खप्फलं च भवमुज्झिउमिच्छसी य ।
ता सव्वहा समणधम्ममसम्म[5]दारुदावानलं कुणसु वज्जसु सव्वसंगं ॥ २ ॥
एवंविहाण विविहाण दुहाण तेण, दिन्नो जलंजलिरलं दलिओ य कामो ।
कोहाइणो वि रिउणो निहणं[6] हि नीया, जेणुज्जएण जइयं इह चेव सम्मं ॥ ३ ॥

१ मृता ॥ २ **सविवेगसो**° प्रतौ ॥ ३ मरणव्यतिकरात् ॥ ४ °**रिओ असो**° प्रतौ ॥ ५ अशर्मदारुदावानलम् ॥ ६ °**हणं निहीया,** प्रतौ ॥

आइच्चकंतिकलिय व महंधयारं, धूमद्धयेद्धुडलि व तरुप्पबंधं ।
आमूलओ च्चिय इयं चिय (?) साहुदिक्खा, दक्खा निहंतुमवरा पुण नेव चेट्ठा ॥ ४ ॥
एत्थं रया न मुणिणो सलहंति सग्गं, मन्नंति सुत्थियरतं न गिरीसरं पि ।
कप्पिंति तुल्लमरि-मित्त सुवन्न-लेट्ठुं, मुत्ताहलोवलदलाणमवि स्सरूवं ॥ ५ ॥
अग्गीए डज्झइ सरीरगमेव बज्झं, अब्भंतरं तु तह चिट्ठइ कम्मदेहं ।
तस्सऽत्थि दाहजणणे जइ तुज्झ वंछा, दिक्खाहुयासणचियाए चयाहि ता तं ॥ ६ ॥
इय तेण समणसीहेण सुहनिरीहेण सरलदीहेण । अणुसासिओऽहमित्थं जातो समणो करणदमणो ॥ ७ ॥ ॥छ॥

इमं च पव्वज्जापडिवत्तिवित्तंतं अच्चंतचित्तुद्देगाइरेगुप्पायगमायन्निऊण धणपालो संवेगावन्नमणो मुणिणो पाएसु पडिऊण पडिवन्नकइवयवयविसेसो समं बालचंदेण 'दिणावसाणं' ति कलिऊण गओ सगिहं । कयसंज्झासमयसमुचियचिईवंदणाइकिच्चो य सगोट्ठीनिविट्ठो बालचंदं भणइ—भो वयस्स ! पेच्छ तस्स साहुणो असरिसं सप्पुरिसत्तणं, अतुच्छा अकज्जविचिगिच्छा, गरुयसंरंभो तवारंभो, पगिट्ठा सचेट्ठा, कयामयावन्नं वयणलायन्नं ति । अइसंकिलिट्ठयावसेण अरोयमाणेण वि साहुकिरियाकलावं तयणुवित्तीए भणियं बालचंदेण—एवमेयं, पयरिसभूमि क्खु सो महाणुभावो सद्धम्मकम्मनिम्माणस्स त्ति ।

१ आदित्यकान्तिकलिका इव ॥ २ °येव चु° प्रतौ । धूमध्वजेद्धोल्का इव ॥ ३ °सुतिरिथ° प्रतौ । सुस्थिततरतं न 'गिरीश्वरं' महादेवमपि ॥ ४ न गरी° प्रतौ ॥ ५ °पविति्तवित्तंतमच्चं° प्रतौ । प्रव्रज्याप्रतिपत्तिवृत्तान्तं अत्यन्तचित्तोद्वेगातिरेकोत्पादकम् ॥ ६ कृतामृतावर्णम् ॥

साहेसु—को एस तए छीयंते रामदेवो समुक्कित्तिउ ? त्ति । तीए भणियं—भो देवाणुप्पिय ! को वि सो होउ, किं तवाणेण ? । मए भणियं—भद्दे ! सव्वहा गरुयसवहसाविया सि, कहेसु जहाइट्ठं ति । एवं च भुज्जो भुज्जो भणिज्जमाणीए संभरियनियकुलचंगिमाए तक्कालविरुद्धनियववहारावधारणेण हिययंतोपसरंतमन्नुब्भरनिस्सरंतंसुजालाविललोयणाए सगग्गिरगिरं भणियमणाए—भो अज्जपुत्त ! महई एसा कहा कहिज्जंती वि महंतं दुक्खमुप्पाएइ, परं तुहाभिओगेण भन्नइ—

अहं हि एत्थेव गामे निच्चलनिवासिणो पुरंदरसत्थाहस्स विमलकुलकलंकभूया धूया सज्जणमणाणभिरामा रामा नाम । अच्चंतदुक्कालकवलिए कुले मम मंदभाइणीए एगो चेव जेट्ठभाउगो रामदेवो देसंतरगओ । अहं च बालिया विउच्छन्नकुल त्ति पडिगाहिया एगाए इह वुड्ढविलासिणीए, परिपालिया य सव्वपयत्तेण, सिक्खाविया वेसाजणजोग्गं गीयनट्टप्पमुहं कलाकोसल्लं, वट्टामि य संपइ एवंविहवित्तीए । सरामि य अज्ज वि से नियकुलकेउणो भाउणो त्ति ।

इमं च सव्वं मूलातो कहियमायन्निय अहं बाढं विसन्नमाणसो जायतप्पच्चभिन्नाणो 'भइणीभोगाभिलासाकज्जमज्झवसियं' ति संतप्पंतो संभरियसव्वकुडुंबनिहणो मोक्कपोक्कं वत्थेण मत्थयमवगुंडिय रोविउं पवत्तो । 'हा हा ! किमेयं ?' ति दूरं विसन्ना इयरी निब्बंधं काऊण पुच्छिउमारद्धा । मए वि अच्चायरेण पुच्छंतीए तीए साहितो सव्वो नियवइयरो । सा वि तक्कालाणुचियसंलावदुक्खेण चिरकुलखयसंभारणेण य विलवंती मुच्छानिमी[लि]यच्छी परसुच्छिन्न व कयलीलया निवडिया महीवट्ठे । सायरचेडीकयसिसिरोवयारोवलद्धचेयणा संभासिया मए भइणी—धीरा भव, [मुंच] सोगावेगं, को

१ यथादिष्टम् ॥ २ हृदयान्तःप्रसरन्मन्युभरनिःसरदश्रुजालाविललोचनया सगद्गदगिरम् ॥ ३ व्युच्छन्नकुला ॥ ४ मुक्तपूत्कारम् ॥

बलि-दीवयाइपूयापब्भारेण संभाविऊण 'देवि ! तुह पायप्पसायातो उवलद्धवरो चेव भुंजिस्सामि' त्ति निच्छयं काऊण पडितो तीए पुरओ पाडिच्चरणेण । भेसितो य रयणीए अहं दसमोववासा[वसा]णे । कहं चिय ?—

एगत्तो करयलतालतालणुत्तालकालवेयालं । अन्नत्तो [1]डंकारुक्कडामरं डाइणीडमरं ॥ १ ॥
एगत्तो कयकिलिकिलिरवभीसणभूय-पूयणाचक्कं । अवरत्तो दिट्ठीविसभुयंगगुरुभोगभंगभयं ॥ २ ॥
अन्नत्तो [2]चटुलजलंतचुडलियाफारपसरियफुलिंगं । अवरत्तो य विडंबियमुहधावियगरुयपंचमुहं ॥ ३ ॥
इय एवंविहमवलोइउं पि भीमं बिभीसियानिवहं । ईसिं पि जा न भीओ ता तुट्ठा देवया सहसा ॥ ४ ॥
नीहारखीरधवलं एगावलिहारजुगलम[3]मैलपहं । मज्झं समप्पिऊणं सप्पणयं भणिउमाढत्ता ॥ ५ ॥
पुत्त ! किलिट्ठो कालो पडिपुन्ना नेव पुन्नसामग्गी । अवहारकारिणो वंतरा य ता जाहि तुममेत्तो ॥ ६ ॥
कायंदीए पुरीए कस्सइ लहु सुकयसालिणो वणिणो । देसु इमं हारदुगं रक्खिस्समहं अवायं ते ॥ ७ ॥
इय तीए भणिएणं दिन्नो एगो इहेव बीओ य । एसो तुह उवणीओ जं जोग्गं तं लहुं देसु ॥ ८ ॥
तो धणपालेणं नियमईए नियमित्तु मोल्लमेयस्स । एगंते चिय दिन्ना दस उ सहस्सा सुवन्नस्स ॥ ९ ॥
विप्पो गओ सठाणं धणपालेण वि य हरिसियमणेण । खित्तो रयणकरंडे रुइरो एगावलीहारो ॥ १० ॥
दूरट्ठिएण दिट्ठा कहं पि कंतिच्छडा य हारस्स । छिड्डालोयणरुइणा मित्तेणं बालचंदेण ॥ ११ ॥

१ डक्कारोत्कभयङ्करम् डाकिनीकलहम् ॥ २ चटुलज्वलदुल्कास्फारप्रसृतस्फुलिङ्गम् ॥ ३ अमलप्रभम् मह्यं समर्प्य ॥

हुं नायं धुवमेसो चोराहरिउ त्ति होहिही हारो । काणकएण गहिओ तेणेव घरेक्कोणम्मि ॥ १२ ॥
इहरा अम्ह समक्खं पि किं न गहिओ ? त्ति कलुसिओ बाढं । हिययंतो सो मित्तो दूरे धरिओ त्ति सविसेसं ॥ १३ ॥

धणपालो वि विसज्जियविप्पो खणंतरेणाऽऽगंतूण आसीणो पुव्वासणे । 'मा दूरीकतो कुवितो होहि' त्ति सायर-मुल्लविओ बालचंदो—भो वयस्स ! किं पि कहियव्वं परं अपत्थावो त्ति खणंतरेण साहिस्सामि त्ति । 'काणकओ चेव साहिस्सइ' त्ति चिंततेण भणियं बालचंदेण—एवं होउ त्ति । अह सकज्जकरणत्थं गए तम्मि धणपालो वि पारद्धो गिह-किच्चाइं काउं । नवरं 'वीसरितो' त्ति न सिट्ठो से हारवित्तंतो धणपालेण ।

इओ य पुव्वकाले राइणो अग्गमहिसीए अंतेउरपमयवणसरसीए तडे पम्मुकाभरणाए मज्जणं कुणंतीए तारावलीवि-ब्भमो एगावलीहारो सेयभुयगविब्भमेण चंचुप्पुडेणुप्पाडिओ सउणियाए । गया एसा नियतरुवरकु[1]लायं ति । रायग्गम-हिसी वि खणमेक्कं जलकीलं काऊण चेडीचडयरपरिगया पुक्खरणिं उत्तिन्ना जाव [2]पलोयइ आभरणसंभारं न ताव पेच्छइ एगावलिहारं । ततो अच्चंतदुक्खिया इओ तओ सव्वत्थ पलोइउं पवत्ता । कहिया वत्ता पमयवणनिउत्तपुरिसाणं । तेहिं पि सुनिउणं पलोइऊण उज्जाणभूमिं भणियं—देवि ! जइ परं गयणगामिणा न महीचारिणा एस हारो हरिओ, न हि देवीए पमयवणसरसीमुवगयाए कस्सइ रायसुयाइणो [3]पवेसो अत्थि, किं पुण सामन्नस्स ? त्ति ।

ततो सोगाइरेगाओ उज्झियपाण-भोयणा रायग्गमहिसी [4]सयणिज्जनिज्जाणनिहित्तसरीरा पमिलाणवयणा पमुक्कसहीयण-

१ °लालयं प्रतौ ॥ २ पलोइय आ° प्रतौ ॥ ३ पवेसेमो अ° प्रतौ ॥ ४ शयनीये निर्याणं–परावृत्तिरहितं निहितं शरीरं यया ॥

संभासणाइवावारा सुन्न[1] व निच्चला होऊणं ठिया । जाणिया चेडीमुहातो एसा राइणा वत्ता । भणाविया पहाणपुरिसवयणेण देवी—कीस एवं उव्वेय[2]मुव्वहसि ? तहा काहं जहा अकालविलंबमंबिया[3]पइणो वि सयासातो हारो लब्भइ त्ति । एवं च पारद्धा अणेगे तदुवलंभत्थं उवक्कमा । दवावितो[4] सव्वत्थ नयरीए पडहतो[5], जहा—जइ कोइ हारावहार[6]पउत्तिमेत्तं पि साहइ तस्स राया सोलं सुवन्नसहस्सं निव्वियप्पं पणामइ[7] त्ति ।

आयन्नितो एस आघोसणावइयरो बालचंदेण । चिंतियं च णेण—निच्छियं सो एस रायमहिलासंतितो[8] हारो चोरिऊण केणइ पयारेण तेण देसंतरियनरेण धणपालस्स पच्छन्नं समप्पितो संभाविज्जइ, कहमन्नहा तया अहं पि तेण दूरीकतो ? त्ति, ता साहेमि राइणो इमं वइयरं, गिण्हामि सोलं सहस्सं सुवन्नस्स त्ति । ततो कयवेसपरियत्तेण[9] पच्छन्नवेलाए गंतूण राइणो समीवम्मि कहिओ सव्वो वि धणपालगहियहारवित्तंतो । ततो दवावियं जहुत्तं सुवन्नमेयस्स । विसज्जिओ य गतो जहागयं ।

राया वि परिभावेइ—कहमेयं संभवइ ? जं भवणचंदसेट्ठिणो साहुसमायारस्स सुओ होऊण धणपालो बालजणोचियं कम्ममेवंविहं काहि ? त्ति, अहवा गंभीरो लोहमहोयही, किं न संभवइ ? तथा हि—

लोभाभिभूया न गणंति सीलं, कुलक्कमं नेव वियारयंति ।
धम्मं न लक्खंति नयं न बिंति, लज्जंति नो धम्म-गुरूयणाओ ॥ १ ॥

१ सुवत्तनि° प्रतौ । शून्या इव ॥ २ उद्वेगमुद्वहसि ॥ ३ अम्बिकापतिः—यमराजः ॥ ४ दापितः ॥ ५ पटहकः ॥ ६ हारोवहारपउत्तमे° प्रतौ ॥ ७ अर्पयति ॥ ८ राजमहिलासत्कः ॥ ९ कृतवेषपरावर्तेन ॥

एवं च तक्कहापसंसाए वच्चंतेसु निसि-दिवसेसु, एगया एगो देसंतरियथेरपुरिसो एगावलिहारं इंदुमंडलायमाणमुत्ताहलपहापब्भारं सुसंगोवियं काऊण, एगंतदेससुहासणासीणस्स धणपालस्स समीवमागतो, भणिउं पवत्तो य—भो सेट्ठिसुय ! जइ विजणं कुणसि ता किं पि पओयणं तुह साहिज्जइ त्ति । ततो बालचंदाईणमधिइपरिहरणत्थं तं ट्ठाणं विमोत्तूण धणपालो देसंतरिएण समं ठिओ एगंते । देसंतरियनरेण तओ दंसिओ से हारो । सविम्हयमवलोइओ सो धणपालेण । सायरं भणिओ देसंतरिओ—भद्द ! कत्तो एवंविहहारस्स लाभो ? त्ति । तेण भणियं—कहेमि,

अहं हि सीहलदीववत्थव्वो आइच्चो नाम बंभणो बंभणवाहप्पमुहदेसेसु कय-विक्कयकरणोवज्जियवित्तेण जीवामि । अन्नया य पयट्टो पवहणेण कडाहदीवाइसु दव्वज्जणनिमित्तं । नवरं पडिवेलं [पत्तं] विउल[1]नाणाविहपयत्थपडहच्छं जाणवत्तं, खयमुवगयं सव्वं गेहसारं । 'निस्सारो' त्ति पत्तो परं पुरजणमज्झे पराभवं, पडिओ महाचिंतासमुद्दे—किं करेमि ? किं सरामि ? किं वा मरामि त्ति । इय चिंतादुक्खभरक्कम्ममाणो गतो मुच्छं, विचेयणो य कट्ठं व पडिओ भूवट्ठे, पेच्छामि सुमिणे जणणिं ससिणेहं सदयं जंपमाणिं, जहा—वच्छ ! कीस इत्थं निग्गंथो त्ति संतावमुव्वहसि ? नियकुलदेवयं सायरं उज्झियभत्त-पाणो पाणच्चायविणिच्छियं काऊण आराहेसु, जेण सा भगवई तहा करेइ जहा न तुमं विसीयसि त्ति, न य एत्तो अन्नओ तुह थेवं पि परित्ताणं संपज्जिहि—त्ति वोत्तूण सा अद्दंसणीहूया ।

आदित्य-ब्राह्मण-सम्बन्धः

अहं पि परियणकयसरीरसंवाहणाइउवक्कमसमुवलद्धचेयणो सुमरंतो जणणीदिन्नोवएसं तद्दिणावसाणे एव कुलदेवयं पुप्फ-

१ विदल° प्रतौ । विपुलनानाविधपदार्थप्रतिपूर्णम् ॥

विलक्खवयणो य गतो सगिहं । वसुंधरावइणा वि देवीए उवणीओ हारो । 'सो चेव निच्छियमिमो' त्ति परितुट्ठाए ठविओ नियकंठदेसे ।

अह पच्छिमरयणीए सुहसेज्जाए सुत्तपबुद्धो निउणबुद्धीए परिभाविउं पवत्तो राया—अहो ! अम्ह आबालकालाओ पसायचिन्तगो भवणचंदसेट्ठी, तप्पुत्तो वि धणपालो नीइकुसलो धम्मन्नू चोरोवणीयं मणसा वि न इच्छइ—त्ति संभावेमि—सो वि देसंतरितो जइ पुण एयसरिसागारं बीयहारं दाऊण गतो होज्जा, ता सुट्ठु परिभावणीयमिमं, असमिक्खियजंपियं हि ति[1]क्खक्खग्गघायातो वि गरुयदुक्खकारणं—ति कयनिच्छओ उग्गयम्मि सूरे सरियदेवयाचरणो आसीणो अत्थाणमंडवे ।

अह समइक्कंते जाममेत्ते वासरे एगो आरक्खियपुरिसो पडिहारनिवेइओ पविसिऊण रायसहं कयपंचंगपणामो राइणो पायवीढे पोढामलयथूलमुत्ताहललंबियसोभापब्भारं हारं मुयइ । राया वि विम्हइयपफुल्ललोयणो करयले तं कलिय जंपिउं पवत्तो—अरे ! को एस वइयरो ? । तेण भणियं—देव ! सिंबलिरुक्खे[2] सउलियाकुलाए गिद्धो समारुहिय आमिसाइबुद्धीए इमं घेत्तूण उप्पयंतो अन्नेहिं चउद्दिसं पडिरुद्धो तदभिगिद्धेहिं[3] गिद्धेहिं, तेहि य सद्धिं चंचुप्पहारेहिं जुज्झंतस्स तस्स उज्जोवियदिसामंडलो पडिओ एस हारो धरणीयले, तत्तो उक्खिविय तुम्ह उवणीउ त्ति ।

ततो जाणियपरमत्थेण पत्थिवेण वाहराविओ धणपालो, दंसिया य दो वि हारा, भणिओ य—भद्द ! एएहिंतो

१ °क्खसक्ख° प्रतौ ॥ २ शाल्मलिवृक्षे शकुनिकाकुलाये गृध्रः समारुह्य ॥ ३ तदभिगृद्धैः गृध्रैः ॥

गिण्हसु अप्पणो हारं ति । धणपालेण भणियं—देव ! किमेयं ? ति । ततो राइणा सिट्ठो तल्लाभवित्तंतो । धणपालेण भणियं—देव ! तया तेण देसंतरिएण सिट्ठमिमं—दोन्नि वि हारा इमे मह देवयाए दिन्ना, एगो इहेव विक्कीओ, बीयं तुमं गिण्हसु त्ति । राइणा भणियं—भद्द ! कयं वित्थरेण, गिण्हसु हारं, खमाहि य मह अपरिभाविया-ऽजुत्तपुव्वुत्तवयणं ति । धणपालेण भणियं—देव ! कहं तुम्ह एयं संभवइ ? केवलं अम्ह चेव पुव्वभवज्जियदुक्कम्मविलसियमिमं ।

अह तंबोलदाणाइणा कयसक्कारे गयम्मि तम्मि अलियदोसारोवणक्कुविएण राइणा वाहरावितो बालचंदो, सामरिसं भणितो य—रे रे निंव्वील[1] ! नियकुलकील ! असच्चसंध ! दाविय[2]बंधुगुत्तिबंध ! सच्चरियसुन्न ! पायडियपेसुन्न ! सव्वहा अघडंतमेवंविहदोसं निद्दोसस्स वि महाणुभावस्स धणपालस्स अम्ह पुरओ वि संभावेसि, तं निच्छयमहुणा न भवसि त्ति । आणत्तो एसो वज्झो । ततो छिन्नकन्नगद्दहपट्ठीए आरोविओ धाउरसविलित्तगत्तो गलावलंबियसरावमालो कणवीरकुसुमरइयसेहरो बालचंदो तिय-चउक्क-चच्चरेसु 'सो एस मित्तपेसुन्नकारी महापावो' त्ति पए पए कित्तिज्जंतो पुरीए भामिउमारद्धो ।

दिट्ठो य धणपालेण नियगेहगवक्खोवगएण । 'अहह ! किमेयमसमंजसं ?' ति पुच्छिओ एगो रायपुरिसो । तेण वि सिट्ठो मूलातो आरब्भ तव्वइयरो । 'कहमेस एवं काहि ?' त्ति तमेव हारं घेत्तूण गतो धणपालो राउलं[3] । पायपडितो हारं समप्पिऊण विन्नविउं पयत्तो—देव ! पसीयह, मुयह वरागमेयं, पुव्वदुक्कियाइं[4] एत्थमवरज्झंति, किमेसो एवमजुत्तं कयाइ

१ निर्व्रीड ! ॥ २ दापितबन्धुगुप्तिबन्ध ! ॥ ३ राजकुलम् ॥ ४ पूर्वदुष्कृतानि ॥

पैशुन्य-त्यागोपदेशः

करेइ ? । राइणा भणियं—दुरायारो क्खु एसो एवंविहडंडस्सेव जोग्गो । ततो गाढयरधणपालोवरोहओ मोयावितो सो राइणा, हारो य भुज्जो समप्पिओ धणपालस्स, सुचिरं सलहिओ विसज्जिओ य ।

अह सव्वत्थ वि नयरे वित्थरियं मोइओ महापिसुणो । धणपालेणं हारप्पयाणतो बालचंदो त्ति ॥ १ ॥
धन्ना धरा धुवमिमा जीए दीसंति पुरिसरयणाइं । पिसुणे वि हु उंवगिइकारयाइं धणपालसरिसाइं ॥ २ ॥
इय सो महाणुभावो कित्तिं सुगइं च परममणुपत्तो । इयरो वि निंदणं हीलणं च कुगइं च अइभीमं ॥ ३ ॥
जो मुणइ किं पि तत्तं अहवा वंछइ सुनिच्छियं धम्मं । सो पेसुन्नं वज्जइ वज्जासणिपायमिव दूरं ॥ ४ ॥ अपि च—

आख्याति मुक्त्यतरिकामखिलक्रियाणां, चेतोविशुद्धिमिह धर्मविधेर्विधात्रीम् ।
सा चाऽऽदितोऽप्यपरमूर्धनि दोषचक्रमाधातुमुद्यतमतेः प्रलयं प्रपन्ना ॥ १ ॥
वैरीयतेऽखिलनृणां स्वकुलं यशश्च, व्याहन्ति बन्ध-वधमाशु लभेत भूपात् ।
पैशुन्यपण्यपरिकल्पितवृत्तिरित्थमस्वास्थ्यदौस्थ्यमुपगच्छति तुच्छबुद्धिः ॥ २ ॥ तथा—
तावत् सुहृत्स्वजन-बान्धव-पूज्यबुद्ध्या, पश्यन्ति गुप्तविषये च नियोजयन्ति ।
यावद् विदन्ति न नरं पिशुनं कथञ्चित्, जानन्ति तं तदनु सर्पमिव त्यजन्ति ॥ ३ ॥

१ उपकृतिकारकाणि ॥ २ नवरं प्रतौ ॥

बुज्झंति नो कुंद-मयंकगोरं, चिरज्जियं कित्तिधयं [1]तिजंतं ।
न लोयमग्गं पि हु पालयंति, सकज्जमेक्कं अणुचिंतयंति ॥ २ ॥

ता एवं संभवइ, केवलं कहं पुण सहसा धणपालो तज्जणगो वा एवं वत्तव्वो ? जहा—तुब्भेहिं एत्थमित्थं चोरहत्थाओ काणकएण हारो गहिओ त्ति, बाढं दक्खिन्नसुन्नमेवंविहवयणं, ता उवायकप्पणा इह जुत्त–त्ति संपहारिऊण आहूओ नयर-पहाणलोगो । अंजलिपग्गहपुरस्सरं च भणिओ राइणा, जहा—एगावलीहारो देवीए सयासातो केणइ कहिं पि अवहरिओ, तस्स य अन्नेसणत्थं अहं घरेसु नियपुरिसपेसणेण सुद्धिं काराविउमिच्छामि, अओ न थेवं पि तुब्भेहिं रूसियव्वं ति । पुरजणेण भणियं—देव ! किमजुत्तं ? एवं कारावेसु त्ति ।

ततो विसज्जियं नियपंचउलं, भवण[चंद]सेट्ठिमंदिरादूरघराइं च सोहिउं पवत्तं, कमेण आगयं भवणचंदसेट्ठिणो घरे । अह निउणं तव्विसुद्धिं कुणंतेण आभरणकरंडमज्झसंपिंडिओ डिंडीरपिंडो व्व दिट्ठो एगावलीहारो, उवणीओ राइणो । 'तत्तुल्लो' त्ति पच्चभिन्नाओ य रन्ना । एत्थंतरे विन्नत्तं धणपालेण—देव ! देसंतरियसयासाओ एस मए अमुगदिणे गहिओ त्ति । रन्ना भणियं—कहिं सो देसंतरितो ? । धणपालेण भणियं—सो संपइ सिंहलदीवं गतो । राइणा भणियं—जो [......] वरिसदेसीओ [2]भमररिंछोलिछायछवी अफुडवक्को य ? । धणपालेण जंपियं—देव ! [एव]मेयं । रन्ना वुत्तं—मए वि तस्स सयासातो चेव हारो गहिओ, निय[यं] सो य एसो त्ति । धणपालेण जंपियं—[3]देवो जाणइ त्ति ।

१ अतियान्तम् ॥ २ भ्रमरपङ्क्तिच्छायच्छविः ॥ ३ °वो आण° प्रतौ ॥

॥२२४॥

तथाहि—अत्थि नीसेसवसुंधरापुरपुरंधिरमणरमणीयरूवं, वेयविहिविहंन्नुधणड्ढजड्ढलट्ठभूवट्ठपइट्ठियभूइट्ठजूवं, बहुविहरक्खसंगयं न लंकालयाणुगयं, पायडियवहुवाडियाडोवं पि दीसंतपोढपमयापरमभोगोवभोगं भोगपुरं नाम नयरं। तहिं च निर्यपयाव-पुंन्न-माहप्पप्पमुहगुणगणविजियविक्कंतभूवइचक्को नियसोडीरिमावं[ग]न्नियसक्को समरपरिहत्थुच्छलंतवेरिमयगलमलणसरहो महाराया सिरिभरहो भारहद्धकइवयमंडलाहिवइमोलिलालियचलणं दुद्दंतदुट्ठदलणं रज्जमणुपालेइ।

पारद्धि-गेय-नट्टोवयार-वरजुवइ-जूववसणेहिं। न परोवयाररसियं ईसिं पि मणं दढं जस्स ॥ १ ॥

परिउविजए वि हु विहलमेव मन्नइ सजीवियं जो य। अविहियपरोवयारं भुज्जो भुज्जो दिणद्धे वि ॥ २ ॥

तस्स य रन्नो सव्वंतेउरप्पहाणा सुलोयणा णाम पणइणी, अप्पडिमरूवाइगुणो य महीचंदो नाम पुत्तो। बुद्धिपगरि-

१ °हतुधणड्ढज° प्रतौ। वेदविधिविधज्ञधनाढ्यइष्टप्रधानभूपृष्ठप्रतिष्ठितभूयिष्ठयूपम् ॥ २ बहुविधैः रक्षोभिः—राक्षसैः सङ्गतमपि—व्याप्तमपि न लङ्कालयैः—लङ्कावासिभी राक्षसैरनुगतम् इति; अत्र चेदिदं पुरं रक्षोभिः परिपूर्णं तर्हि कथं न लङ्कावासिभी राक्षसैः सम्बद्धं भवति? इति विरोधः। विरोधपरिहारपक्षे तु—इदं नगरं बहुविधैः रक्षैः—रक्षाकारिभिर्नरैः सङ्गतं—युक्तम् पुनश्च न लङ्कालयैः—श्लेषादिषु रलयोर्डलयोः सावर्ण्याद् रङ्कालयैः—दीनगृहैः अनुगतमिति ॥ ३ प्रकटितः वधूवाटिकानां—वधूटिकानाम् आटोपः येनैतादृशं पुरं दृश्यमानप्रौढप्रमदापरमभोगोपभोगमेव भवति इति किमाश्चर्यम्?; यद्वा प्राकृतभाषानुरोधात् सामासिकपदपरनिपाते 'प्रकटितवारितवध्वाटोपं' पूर्वं प्रकटितः सन् पश्चाद् वारितः वधूटिकानाम् आटोपो यत्र एतादृग् नगरं कथं दृश्यमानप्रौढप्रमदापरमभोगोपभोगं भवति? इति विरोधः। अन्यत्र—प्रकटितः बहुवाटिकानां—प्रभूतारामाणामाटोपो येन पुनश्च दृश्यमानेत्यादि योज्यम् ॥ ४ निजप्रतापपुण्यमाहात्म्यप्रमुखगुणगणविजितविक्रान्तभूपतिचक्रः निजशौण्डीर्यावगणितशक्रः समरनिपुणोच्छलद्वैरिमदकलमर्दनशरभः ॥ ५ °पुत्तमा° प्रतौ ॥ ६ °विइक्कं° प्रतौ ॥ ७ °वत्तिय° प्रतौ ॥ ८ मरायसिरि° प्रतौ ॥ ९ पापर्द्धिगेयनाट्योपचारवरयुवतीद्यूतव्यसनेषु। अत्र प्राकृतनियमवशात् सप्तम्यर्थे तृतीया ॥

सागरभूया य भूइलप्पमुहा मंतिणो। ते[1] य राइणा सप्पणयं पुव्वमेव एगंतोवगएण भणिया, जहा—भो मंतिणो! महीमहाभारसमुद्धरणधीरो हि एस सुओ महीचंदो अहं व तुब्भेहिं सव्वकज्जेसु आपुच्छणिज्जो पमाणीकायव्वो य, अहं पुण कज्जवसेण एत्थ वा अन्नत्थ वा पयडो वा पच्छन्नो वा चिट्ठामि वा वच्चामि वा, अतो रज्जकज्जचिंतासमुज्जएहिं होयव्वं ति। अह 'तह' त्ति पडिवन्नसासणेसु मंतिसु सुए य समारोवियरज्जभरो स भरहराया परोवयारकरणे च्चिय निच्चनिउत्तमाणसो, असक्कतविहपडियारं पइदिणं पंचत्तमुविंतं विविहवाहीहिं बाहिज्जंतं च जणवयं पलोइऊण, पडिपक्खं तमक्खंडिज्जमाणमंडलं मयंकबिंबं च निरिक्खिऊण, हिमवंतपमुहमहामहीहरमहाभारांकयसंविभायं भूमिं चाऽऽभोइऊण सदुक्खं परिभाविउं पवत्तो—

केणावि कुसलकम्मोदएण जाया वयं धरावइणो। गिज्जइ य चरियमम्हाण किं पि कयतिहुयणच्छरियं ॥ १ ॥

विप्फुरियं पुण थेवं पि नत्थि दुक्खत्तसत्तताणकए। तह वि हु परोवयारि त्ति ही! मुहा मागहा बिंति ॥ २ ॥

धी धी! जीवियमफलं धी धी! विफलो य भुयबलालेवो। धी धी! पगब्भमइविब्भमो य धी धी! य निवइत्तं ॥ ३ ॥

एवं च दूरसमुज्झियायबहुमाणो, सव्वंगियमालिंगितो व रणरणएणं, सव्वहा वज्जिउ व उज्जमेणं, तिणमेत्ताओ वि अप्पयमसारं मन्नंतो राया पासायसत्तमभूमिभवणसेज्जाए सयणत्थमारूढो।

एत्थंतरे अणंगकेऊ णाम गुडिगासिद्धो दूरगयणपहविलंघणकिलामियकलेवरो वीसामनिमित्तं 'विजणं' ति सुहसे-

१ तेण रा° प्रतौ ॥ २ अहमिव ॥ ३ प्रतिपक्षं तमखण्डयमानमण्डलं मृगाङ्कबिम्बम्। तमः—राहुः ॥ ४ —अकृतसंविभागाम् ॥ ५ भुजबलावेलपः ॥ ६ दूरसमुज्झितात्मबहुमानः, सर्वाङ्गिकमालिङ्गित इव निःश्वासेन, सर्वथा वर्जित इव उद्यमेन, तृणमात्रादपि ॥

ज्ञाए नियनिस्सहविमुक्कसव्वंगो निव्विसंको निसंन्नो खणं। सुहफरिसवसओ सेज्ञाए, रमणीयत्तणतो तप्पएसस्स, अइसिसिरत्तणओ य समीरस्स, नहनिवन्नस्स य तस्स समागया निब्भरं निद्दा। तव्वसओ य घोरमुक्कघुरुडुकविप्फारियवयणातो जच्चकंचणसच्छ-हच्छायाविसेसा विगलिया बाहिम्मि गुलिया। पेच्छइ य नराहिवो तं तहप्पसुत्तं तं च गुलियं मुहाउ गलियं ति। ततो ईसिजायकोवावेगो भूवई 'अरे! को एस दुरायारो एव्वंविहेगंतसेज्ञाए देवाण वि दुल्लभाए निद्दाभरनिब्भरं सुवइ?' त्ति खणं परिभाविय 'हुं गुलियासिद्धो कोइ निच्छियमिमो' त्ति नियचलणंगुट्ठगहियगुलियारयणो किंचि दूरे होऊण भणिउं पवत्तो—रे रे! को तुमं अम्ह सेज्ञाए सुवसि? त्ति। ततो संभंतो ज्झत्ति उज्झियनिद्दामुद्दो अविभावियमुहभट्ठगुलि-यावुत्तंतो आकासमुप्पइउं विमुक्कहुंकारो सो गुलियासिद्धो उड्ढं उच्छलिओ। गुलियाअभावे निवडिओ विलक्खीहूओ भणिउं पवत्तो—भो महाभाग! अहं हि अणंगकेऊ नाम गुलियासिद्धो सिरिपव्वयं पडुच्च वच्चंतो पहपरिस्समा[व]-णयणत्थमित्थमित्थेव खणमेगंतसेज्ञ त्ति वीसंतो निद्दमुवगतो य, अवगया य मुहाउ गुलिगा, तदभावे य भूगोयर व्व गयणलंघणं न सक्केमि काउं, ता कुणसु जं मे रोयइ त्ति। अह संकरुणतव्वयणोवसंतकोववियारेण रन्ना खित्ता तदभिमुहं गुडिया। सायरं गहिया य तेण, भणितो य राया—सव्वहा भो महाभाग! पडिवज्जसु तुममिमं ति। राइणा जंपियं—

> चंकमणसत्तिरहितो पणट्ठदिट्ठीबलो अपुरिसो वा। किमहं तुमए नाओ जमेव अणुकंपसि ममं पि? ॥ १ ॥
> पज्जत्तं तुह गुडियाय मज्झ नवरं कहेसु कहमेसा। तुमए लद्ध? त्ति अणंगकेउणा तयणु वुत्तमिमं ॥ २ ॥

१ निसंतो खणं प्रतौ ॥ २ सकरुणतद्वचनोपशान्तकोपविकारेण ॥ ३ °मुहा गु° प्रतौ ॥ ४ 'अपुरुषः' पुरुषार्थविरहितः ॥ ५ यदेवमित्यर्थः ॥

> इत्यैहिका-ऽऽमुष्मिकदोषदुष्टं, प्रत्यक्षतः शास्त्रगिरा च बुद्ध्वा।
> सर्वापदां दूरविहारकामः, पैशुन्यदोषं विजहीत शश्वत् ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे पैशुन्यगुण-दोषचिन्तायां धणपाल-बालचन्द्रकथानकं समाप्तम् ॥ ३१ ॥

> अप्पाणं पि परजणं उवगिण्हंतो कयत्थयं नेइ। नूणं परोवयारी ता एत्तो सीसइ स एव ॥ १ ॥
> उवयरणं उवयारो सो य दुहा दव्व-भावतो नेओ। दव्वे असणाईणं दाणेण परेसि उवयरणं ॥ २ ॥
> भावे य णाण-दंसण-चरित्तसंपाडणेण सत्ताणं। दुक्खत्ताणं परमोवयारकरणेण विन्नेयं ॥ ३ ॥
> तत्थ पढमं पि सामन्नबुद्धिणा तुच्छपयइणा गिहिणा। अणुवड्ढियकल्लाणेण नूणं नो तीरई काउं ॥ ४ ॥
> किंतु सुकुलप्पसूया थिर-गंभीरा भविस्सभद्दा य। परमुवयरिउं पारिंति उत्तमा परमसत्ता य ॥ ५ ॥
> बीयं तु तित्थनाहा आयरिया गणहरा महिड्ढीया। उज्झाया मुणिणो वि य काउमलं निम्मलालोआ ॥ ६ ॥
> अन्ने वि भूमिगोच्चियमवसेया सावयाइणो मुणिणो। एवंविहऽत्थकरणेऽहिगारिणो धम्मविहिकुसला ॥ ७ ॥
> भावोवयारकारीण निव्वुइ च्चिय फलं पसिद्धमिणं। देवोवयारिणो वि हु फलमतुलं भरहरन्नो व ॥ ८ ॥

१ कृतार्थताम् ॥ २ °ण तो ती° प्रतौ ॥ ३ °लोओ प्रतौ ॥ ४ भूमिकोचितमवसेयाः श्रावकादयः मुनयश्च। एवंविधार्थकरणे ॥ ५ देवोव° प्रतौ ॥

अणेगे गुलिगानिमित्तं तं ण्हाणजलं छिक्कं-पडिच्छिक्कं काऊण दाहभएण ओसरंता सरंता य साहगा। ततो पुच्छिया ते रन्ना—अरे ! केत्तिया तुब्भे अच्छह ? त्ति । तेहिं जंपियं—अट्ठोत्तरसयं ति । ततो 'इत्थं न कज्जसिद्धि' त्ति भणंतो राया रत्तासोयपाडलेण पाणिसंपुडेण तं मज्जणजलं [जलजलं]तं असंभंतचित्तो घेत्तुं समुवट्ठितो । अह कढियतंबयसरिच्छं मज्जणजलं अच्छिन्नधारं [गेण्हंतस्स] ईसिं पि अविचलियकरयलंगुलिग[स्स] तस्स नरवइस्स णिद्दद्धच्छवीसु अंगुलीसु महासत्तत्तणतुट्ठेण पणामियं देवेण जहुद्दिट्ठं गुलियारयणं ।

अह 'कहमहं इमेसु वरागेसु अपुन्नमणोरहेसु सयमिमं गिण्हामि ?' त्ति परिभाविऊण दिन्नं एगस्स तदत्थिणो । पुणो य पयट्टो अप्पणो निमित्तं । पुवट्ठिईए य भुज्जो दिन्ना बीया गुडिया देवेण । सा वि बीयस्स तयत्थिणो पणामिया भूवइणा। अह पुणरवि तमुण्हं ण्हाणजलं धरेंतस्स असेसतदत्थिजणमणोरहपूरणत्थं पत्थिवस्स दाहाइरेगवसओ समंस-सोणियासु तुट्टिऊण निवडंतीसु वि अंगुलीसु ईसिं पि अविकंपिरस्स सत्तेण महापुरिसत्तणेण य पयडीहूओ देवो, जोडियपाणिसंपुडं भणिउं पवत्तो य—भो नरवर ! छम्मासकयसेवस्स वि साहगस्स कस्सइ परं अहं गुलियं दिंतो, तुमए पुण खणद्धेण वि दोन्नि गुडियातो पणामियातो अन्नेसिं, ता अहो ! तुह उदारत्तणं, अहो ! परोवयारित्तणं, अहो ! महाधीरत्तणं, ता तुट्ठो म्हि, साहेसु जं कीरइ त्ति । राइणा भणियं—के वयं ? तुम्ह चलणरेणुणो वि न तुल्ला भवामो, केवलं 'वरागा इमे तुच्छासया सया वि दुत्थिया, ता थेवं पि एएसिमुवयरिउं जुत्तं' ति किं पि दिन्नं, संपयं पुण ममाणुवित्तीए पडिपुन्नवंछियत्थे काऊण

१ स्पृष्टप्रतिस्पृष्टम् ॥ २ °यलंकलिंगतस्स प्रतौ ॥

॥२२७॥

विसज्जेसु इमे त्ति । अट्ठोत्तरसयं पि पूरियमणोरहं काऊण विसज्जियं देवेण । राइणो वि समप्पिया गयणलंघणमाहप्पप्पहाणा गुडिया । गहिया सायरं राइणा । ततो 'किं पि परोवयारि' त्ति परमपमोयमुव्वहंतो रामसेहरसुरं पणमिऊण भत्तीए उप्पइतो नलिणीदलसामलं गयणयलं । निमेसद्धेण य मरहट्ठविसयवरिट्ठं रिट्ठपुरं नयरं संपत्तो ।

तहिं च रमणीययागुणरंजियहियतो जाव चउहट्टयं पडुच्च दिट्ठिं ठवेइ ताव दीसंतसुंदरायारं सनिकारं पुरिसं एगं डिंभवंद्रपरियरियं पुरतो ताडियवज्झडिंडिमुड्डमरारावायन्नणसभयतरलच्छजणपलोइज्जमाणं रायपुरिसेहिं वज्झभूमीए निज्जंतं पेच्छइ । 'अहह कहमेवंविहमणहरायारो महाणुभावो एस एवं हंतुमारद्धो ?' त्ति जायगरुयकरुणापूरो राया पलोयंताण वि रायपुरिसाणं तं करयलेणुक्खिविय वेगेण पट्ठिओ, पत्तो य नियनयरं, समुत्तिन्नो य सत्तभूमिनियपासायउवरिभूमिगाए, वीसंतो सुहसेज्जाए खणमेगं । मुणियागमणेण य परियरिओ चेडं-चाडुगरचडगरेण । पसरिया य पुरे रायागमणवत्ता । पयट्टो पुरमहूसवो । कयण्हाण-भोयणाइकिच्चो य भरहनरवई कयालंकारपरिग्गहो आसीणो अत्थाणमंडवे । समागओ य चिरागयरायदंसणकुऊहलेण मंति-सामंत-पुरप्पहाणपरियरितो महीचंदो जुवराया । पंचंगपणिवइयपिउपायपउमो य आसीणो समीवम्मि । नरवइणा वि सिणिद्ध-धवल-पसंत-सवियासलोयणा[व]लोयणेणाणुगिण्हिय सव्वं जहोचियं भणिउमारद्धा—अवि कुसलमसेसरायलोयस्स ? अवि पीणिज्जंति पयइणो ? अवि निप्पच्चूहं सिज्झंति रज्जकज्जाइं ? ति । जुवराएण जंपियं—देव ! तुम्ह पायप्पसाएण सव्वं एवमेयं ।

१ डिम्भवृन्दपरिवृतं पुरतः ताडितवध्यडिण्डिमभयङ्करारावाकर्णनसभयतरलाक्षजनप्रलोक्यमानम् ॥ २ चेटचाटुकरसमूहेन ॥ ३ 'प्रकृतयः' प्रजाः ॥

अह समइक्कंते खणमित्ते, विसज्जिएसु सामंताइसु, जाए विवित्तजणे विन्नत्तं मंतीहिं—देव ! पसायं काऊण साहेह, एच्चिरदिणाइं कयरी दिसा अलंकिया ? किं वा कज्जमज्झवसियं साहियं व ? त्ति । 'हा हा ! कहं अत्तगुणविकत्थणापावमायरियव्वं ?' ति जाव राया लज्जावससम्मीलंतनयणनलिणो किं[1]कायव्वयव्वामूढो इओ तओ पलोएइ ताव विन्नत्तं पडिहारेण—देव ! लेहहत्थो पुरिसो तुम्ह दंसणं समीहइ त्ति । राइणा जंपियं—सिग्घं पवेसेहि । 'तह' त्ति पवेसिओ समप्पियलेहो य पडितो पाएसु । वाइओ य लेहो जुवराएण । जहा—

स्वस्ति । श्रीभोगपुरपरमेश्वरं वैरित्रिपुरशङ्करं उदात्तचरितविस्मारितनल-नघुषादिपूर्वभूभुजं श्रीभरतराजाधिराजं कालिञ्जरमहानशेषान्तग्रामा (?) ग्रामाधिवासिनः प्रकृतिमहत्तराः सविनयमवनितलविलुलितमौलिमण्डलं प्रणम्य विज्ञपयन्ति । यथा—यद् वज्रपञ्जरानुकारिभवद्दोर्दण्डमण्डपाश्रितानप्यस्मानभिभवति पल्लीदुर्गबलगर्वितो भीमाभिधानो म्लेच्छराजः, तन्नूनं राजसधानीमभिलषयतीति (?) निश्चिनुमः । स च सम्प्रत्येव यथाभिलषितभाजनं स्यात् तथा विधेयमिति ॥

इय लेहत्थं रायाऽवधारिउं जायगरुयपरिकोवो । आबद्धभिउडिभीमो भीमं पइ भणिउमाढत्तो ॥ १ ॥
पेच्छह मिलेच्छमु[2]च्छेयमइगयं अविमुणिंतमप्पाणं । नूणमकाले च्चिय कालवयणकुहरं विसिउकामं ॥ २ ॥
मंतीहिं जंपियं देव ! मुयह को तम्मि कोवसंरंभो ? । कुविओ वि न पहरइ को[3]ल्हुयम्मि कइया वि पं[4]चमुहो ॥ ३ ॥
जइ कह वि [5]दुग्गबलमेत्तओ वि सो मुणइ अप्पयं सूरं । किं देव ! एत्तिएण वि दुज्जेओ सो जए जाओ ? ॥ ४ ॥

१ किंकर्त्तव्यताव्यामूढः ॥ २ 'उत्सेकं' गर्वं अतिगतम् अविजानन्तमात्मानम् ॥ ३ शृगाले ॥ ४ सिंह इत्यर्थः ॥ ५ दुर्गबलमात्रतः ॥

अत्थि मलयमहिहरसिरसेहरं हरवसहधवलं वलयागारमहिवीढपरूढभुयगभी[म]मलयदुमारामाभिरामं रामसेहर[1]देवस्स भयवओ भवणं । तत्थ य जो छम्मासं देवस्स मज्जणजलं जलंतजलणनिव्विसेसं हिट्ठओ निवडंतं थेवथेवेण करयलेण फरिसइ सो एवंविहं गुलियं लहइ । नवरं तं जलं तह फरिसियव्वं जह करयलदाहो न हवइ त्ति । ततो सव्वमिममवधारिऊण रन्ना विसज्जिओ अणंगकेऊ गओ जहावंछियं ।

राया वि तत्थ चेव सयणिज्जे[2] ताव ठिओ जाव जायं मज्झरत्तं । अह कयवेसपरियत्तो नियपरियणेण वि अमुणिज्जंतो खग्गमेत्तसहाओ नीहरितो रायभवणातो । अक्खंडियपयाणगेहिं तहा तुरियतुरियं गंतुं पवत्तो जहा पत्तो अकालविलंबमेव मलयाचलं ति ।

पेच्छइ अतु[3]च्छताविच्छगुच्छसच्छहसमुच्छलियरुइणो । कुंडलियकायवेढियचंदणतरुणो महाफणिणो ॥ १ ॥
अणुहवइ य वणकरिकरपहारजज्जरियचंदणवणातो । पाउब्भूयं पसरंतपरिमलेणाऽऽउलं अनिलं ॥ २ ॥
आयन्नइ किन्नरमिहुणमणहरुग्गीयपंचमुग्गारं । गिरिकुहरप[4]डिसुयारवनिच्चलियकुरंगमसमूहं ॥ ३ ॥
इय एत्थ तत्थ सव्वत्थ पत्थिवो गुरुकुऊहलाउलिओ । अवलोएंतो पत्तो गिरिसिहरे तम्मि सुरभवणे ॥ ४ ॥
ततो पुक्खरिणितडे पक्खालियसरीरो कयवयणविसुद्धी गहियकइवयकमलो पविट्ठो सुरभवणं । पूइओ देवो । दिट्ठा य

१ °रओतस्स प्रतौ ॥ २ °ज्जे जाव प्रतौ ॥ ३ अतुच्छतापिच्छ(तमालवृक्ष)गुच्छसदृशसमुच्छलितरुचयः कुण्डलितकायवेष्टितचन्दनतरवः ॥ ४ प्रतिश्रुदारवः—प्रतिध्वनिशब्दः ॥

पेक्खइ सु[1]तिक्खखग्गुच्छलंतपहपडलसामलच्छायं । सक्खा जमाणुजायं व अग्गतो मेइणीनाहं ॥ १ ॥
अहह ! कहं कत्तो वा दुवारवालाइणा वि अक्खलितो । परपुरिसदुप्पवेसं पत्तोऽयं मज्झे[2] भवणभुवं ? ॥ २ ॥
इय परिभाविंतो ज्झ[3]त्ति चत्तसेज्जो य सम्मुहं गंतुं । भूमियललुलियसीसं पडितो पाएसु सो भणइ ॥ ३ ॥
देव ! पसीयह पणएसु सरणपडिवन्नमाणसेसु दढं । दुविणएसु वि अम्हारिसेसु इच्चाइ जंपंतो ॥ ४ ॥
उक्खित्तो नरवइणा करम्मि घेत्तूण नूणमभयं ते । इय जंपिरेण नीतो य तक्खणं निययभवणम्मि ॥ ५ ॥
अह कयसिंगारेणं आसीणेणं सभाए भूवइणा । सो एस पल्लिनाहो त्ति दंसिओ मंतिमाईणं ॥ ६ ॥
तो[4] विम्हिएहिं तेहिं विणिच्छियं तीए विजयजत्ताए । नहगमण-सत्तुनिग्गहलद्धी देवस्स जाय त्ति ॥ ७ ॥
भणियं च तेहिं उंबरतरु व्व नरनाह ! तुज्झ वावारो । अकयकुसुमुग्गमो पायडइ महंतं फलुब्भेयं ॥ ८ ॥
राया वि चित्त[5]पसरंतगरुयलज्जामिलाणमुहकमलो । सट्ठाणे पल्लिवइं पवन्नसेवं विसज्जेइ ॥ ९ ॥
पल्लिवइवइयरेण य सेसाण वि भूवईण हिययम्मि । दुविणयकरणविमुहा जाया तं पइ परा भत्ती ॥ १० ॥

अह विसज्जियसयलसेवोवगयलोगो राया देवयापूयापुरस्सरं निवत्तियभोयणाइकिच्चो सुहसेज्जानिसन्नो तं वज्झपुरिसं मरहट्ठदेसातो पुव्वाणीयं पुच्छइ—भद्द ! अवरावरकज्जपरंपराविक्खित्तचित्तेण पुच्छिउकामेण वि न किं पि वोत्तुं पारिओ,

१ सुतीक्ष्णखड्गोच्छलत्प्रभापटलश्यामलच्छायम् । साक्षाद् 'यमानुजातं' यमलघुबान्धवम् ॥ २ °ज्झ भुव° प्रतौ ॥ ३ झटिति त्यक्तशय्यः ॥ ४ तो अम्हए° प्रतौ ॥ ५ चित्तप्रसरद्गुरुकलज्जाम्लानमुखकमलः ॥

ता साहेसु तुमं—केण कारणेण तुमं दीसमाणमणोहरागारो वि एगागारिओ व्व विणासनिमित्तं तहा उवणीतो सि ? त्ति । तेण भणियं—देव ! निसामेह,

पारासर-कथा-सम्बन्धः

अहं हि पारासरो नाम भारह-रामायणाइजाणगो कहगवित्तीए निव्वहामि, मंत-तंताइणा य लो[1]गोवयारे वट्टामि, देवयादिन्न[2]सिद्धिवसेण य जं किं पि आइक्खामि अक्खाणयं तं पि चरियमेव हवइ त्ति । एवं वच्चंतेसु वासरेसु एगया मए रायमहिलासुयस्स छम्मासजायस्स रोगविहुरस्स पारद्धो मंत-तंतोवयारो, न जाओ से पडियारो विवन्नो य । तम्मरणे य बाढं दुक्खिओ राया । सिट्ठं च से ममोवरि बद्धमच्छरेहिं, जहा—देव ! एसो तुम्ह सुतो अणेण पारासरेण खुद्ददेवयपूया-निमित्तं मंतेहिं विणिहउ त्ति, करेइ य एसो पुरिसवेहाईणि जणसमक्खं पि, जइ न पच्चतो ता वाहरिऊण निहुयं पुच्छह त्ति । अवियारसारबुद्धिणा य 'तह' त्ति पडिवन्नं रन्ना, वाह[3]राविओ अहं, पुच्छितो य—किं भद्द ! पुरिसवेहाइ जाणसि ? त्ति । अमुणियपरमत्थेण य मए वुत्तं—देव ! जाणामि त्ति । ततो राइणो आएसेण दंसितो मए पुरिसवेहो । 'जह पुरिसवेहं तह पुत्तविणासं पि एस कुणइ' त्ति कुविएण रन्ना वज्झो आणत्तो हं । तदुत्तरं च देव ! तुम्हं पि पच्चक्खं सव्वं किं सीसइ ? त्ति । तुण्हिक्को ट्ठिओ पारासरो ॥ छ ॥

रन्ना वुत्तं—होउ ताव, साहेसु किं पि नवं कहाणयं । तेण वुत्तं—निसामेहिं,

भरतनृप-पूर्वभवः

गंधारविसए गंधपुरे नयरे विरोयणो नाम कुलपुत्तओ, संपा नाम से भज्जा । अवरोप्परपणएण कालं वोलिंति,

१ लोगावयारे बज्झमि प्रतौ ॥ २ °न्नसेट्ठि° प्रतौ । देवतादत्तशिष्टिवशेन च ॥ ३ 'व्याहारितः' आकारितः ॥

रायसेवाए य वित्तिं कप्पिंति । अन्नया रायाएसेण सो भंडाररक्खित्तं कुणंतो रयणीए चोरेहिं हतो संतो मरिऊण पयाग-तित्थस्स समीवे नंदिग्गामे समुप्पन्नो बंभणपुत्तत्तणेणं, कयं दामोयरो त्ति नामं, कमेण य पत्तो अट्ठवारिसियत्तणं । सुमुहुत्ते य पारद्धं से मुंजीबंध-जन्नसुत्तप्पयाणपव्वं । निमंतितो सयणवग्गो गामपहाणलोगो य, समुचियसमए भुंजिउं पवत्तो य।

इओ य सा संपा तहाविणट्ठस्स [नियपिउणो] सोगभरनिब्भरंगी काऊण सरीरसक्कारं दड्ढावसेसाणि अट्ठियाणि घेत्तूण गंगाए गया, पवाहियाणि तदट्ठियाणि । कइवयदिणाणि तित्थस्स पज्जुवासणं काऊण पुक्खराइतित्थेसु कमंकमेण ण्हाण-पिंडप्पयाण-देवयापूयणाइ निव्वत्तिऊण पयागतित्थाओ समागया नंदिग्गामं । खीणसंबलत्तणेण अनिव्वहंती पविट्ठा भिक्खत्थं गाममज्झे, दिव्ववसेण य पत्ता तम्मि चेव संखडिघरे । दिट्ठो सो दामोयरबडुओ चं[1]चकितो चंदणच्छडाहिं बंभणदिक्खं पवन्नो ।

ततो पुव्वभवगरुयपडिबंधनिबंधणत्तणेण जातो तीए परमपरितोसो, आणंदियाइं लोयणाइं, ऊससियं हियएण, विस्सुमरितो अप्पा, चित्तालिहिय व्व तं चेव अणिमिसाए दिट्ठीए पलोयंती ठिया । सो वि बडुतो तं संभमभरियच्छिविच्छोहं सायरं पेच्छिय ईहा-ऽपोहाइपयट्टो चिरजाइं सरंतो मुच्छाविच्छिन्नचेयन्नो पडिओ महीवट्ठे । 'हा हा ! किमेयं' ति धाविओ लोगो, कओ सिसिरोवयारो, पगुणीहूओ मणागमेत्तं । पुच्छिओ य जणेण—किमेयं ? ति । सिट्ठो अणेण पुव्वभववुत्तंतो । संभासिया य सायरमेसा—पिए ! कत्तो तुममिहाऽऽगया सि ? त्ति । तीए वि चिरविरहदुक्खविणिंतबाहप्पवाहाउललोयणाए कह कह वि

१ चर्चितः ॥

इय [1]सुसिलिट्ठ-म[2]णोहरमंतिगिरुप्पन्नकोववीसामो । सुपसन्नवयणकमलो तो जुवराएण विन्नत्तो ॥ ५ ॥
मंतियणपत्थणा ताय ! निप्फला जुज्जए न पुव्वकया । तुम्हाणं ता साहह किं सिद्धं विजयजत्ताए ? ॥ ६ ॥
[3]तो ईसिहासवियसियमुहकुमुयफुरंतकंत[4]दंतदलो । नियवित्तकहणविरम्मुहो निवो तं भणइ एवं ॥ ७ ॥
वच्छ ! जइ पावरूवं भीमं पल्लीवइं उवणि[5]णिस्सं । तुब्भं कल्ले जाणिहह ता सयं विजयजत्तफलं ॥ ८ ॥
अह विम्हइया सेसा ते कहमेयं ? ति दूरतरवत्ती । पल्लिवई कल्ले च्चिय आणेयव्वो त्ति संभवइ ? ॥ ९ ॥

एवं विभाविरेसु कयप्पणामेसु य जहागयं पडिगएसु जुवरायपमुहेसु, राया कयतुरग-करिवराइ[6]चिंतो तेहिं तेहिं विणोएहिं गमिऊण रयणिं, पभायसमए समुच्छलंतेसु गुंजापुंजपिंजरेसु रविकरेसु, इओ तओ पयट्टेसु पक्खिनिवहेसु, पवाइएसु मंगलतूरेसु, सरियपइन्नाविसेसो गुडियं मुहे काऊण उप्पइओ नील[7]नीलं वोममंडलं; निमेसमित्तेण य पत्तो पल्लीवई-भवणं । दिट्ठो य तक्कालमंदीहूयनिद्दावेगो जिंभायमाणमुहो भीमो, भणिओ य—रे रे ! सरेसु सरणिज्जं, तमिमं दुक्कयकयलीफलं अदिट्ठकुसुमुब्भेयं समुट्ठियं अणिट्ठं ति । इमं च असुयपुव्वं आयन्निय कन्नकडुयवयणं संभंतो भीमो 'किमेयं ?' ति जाव विप्फारियनयणो पुरतो पलोयई ताव—

१ सुश्लिष्टमनोहरमन्त्रिगिरोत्पन्नकोपविश्रामः ॥ २ °णोरहमं° प्रतौ ॥ ३ ततः ईषद्धास्यविकसितमुखकुमुदस्फुरत्कान्तदन्तदलः । निजवृत्तकथनविपराङ्मुखः ॥ ४ °तहंतदं° प्रतौ ॥ ५ °णिमिस्सं प्रतौ ॥ ६ °चिंततो प्रतौ ॥ ७ नीलरत्ननीलं व्योममण्डलम् ॥

पवज्जिय अणसणं पवन्न त्ति, तुज्झ वि संपयं एयमेव जुत्तं ति । 'तह' त्ति पडिवज्जिय ठिओ अणसणेणं दिन्नो, उवसग्गि-उमारद्धो य सयणवग्गेणं । ततो 'सविग्घो एस पएसो' त्ति गतो भइरवपडणे, सरियदेवया-गुरुचरणो य सिलायलयॅलं व अप्पाणं तहिं निवाडिऊण मतो त्ति ॥ छ ॥

इमं च अवक्खित्तचित्तो भरहभूवई आमूलाओ आरब्भ सुणंतो मुच्छितो, समासासिओ य तक्कालोच्चियकिरियाए । उवलद्धचेयणो य विम्हियमणेण पुच्छिओ पारासरेण—देव ! किमेयं ? ति । राइणा भणियं—भद्द ! कहं तुमए मह असेसं पुव्वभववित्तं जाणियं ? । पारासरेण भणियं—देव ! पुव्वसिद्धदेवयाणुग्गहातो, 'नवं किं पि कहाणयं कहेसु' त्ति तुम्हाएसेण सिट्ठमिमं मए, न पुण इमं 'तुम्ह पुव्ववित्तं' ति जाणमाणेणं, देवयाए तुट्ठाए एस वरो मे दिन्नो—जेण पुच्छिओ जं कहं कहिस्ससि सा तप्पुव्वभवाणुभूयगब्भा कहा 'तह' त्ति ते गोयरीभविस्सइ त्ति । रन्ना जंपियं—

चिरभववित्तंतनिबंधबंधुरं मह कहं कहंतेण । पारासर ! पच्चुवयारिणा तए तह कह वि जायं ॥ १ ॥
जह पॅडिवच्चुवयारो न रज्जदाणे वि संवयइ सरिसो । तह वि मह हियपरितोसलेसहेउं इमं गिण्ह ॥ २ ॥
तो सवमलंकारं तं चिय गुडियं पणामिउं तस्स । संजायभवविरागो देवीए साहिउं सवं ॥ ३ ॥
पुत्तं ठविउं रज्जे तक्कालागयजुगंधरमुणिस्स । पासे पवइऊणं चिरकालं चरियसामण्णो ॥ ४ ॥
जह पुव्विं तह तत्थ वि साहूणुवयारकरणतल्लिच्छो । मरिऊण अच्चुएऽणंतरं च मुक्खे सुहं पत्तो ॥ ५ ॥

१ शिलातलतलमिव ॥ २ प्रतिप्रत्युपकारः ॥

इय इहलोयम्मि परोवयारिणो सवतोमुही कित्ती । सॅग्गा-ऽपवग्गसंसग्गजा य लच्छी परभवम्मि ॥ ६ ॥
उवयरणिज्जा उवयारया य जइ संभवंति नो केइ । ता तक्कयसंबंधो रॉसहसिंगं व कह घडउ ? ॥ ७ ॥
पढियं तवियं भुत्तं जट्ठं सच्छंदविलसियं च चिरं । सॅवं खइयं दिट्ठं परोवयरियं तु अक्खइयं ॥ ८ ॥ अपि च—

प्रजल्पतु जनः किमप्युपदिशन्तु सन्तो मतं, फलं भवतु वाऽमुतः किमपि वाऽस्तु मा सर्वथा ।
न पुण्यमपरं परोपकृतितोऽपि विश्वत्रये, विशङ्कमिदमुद्यताङ्गुलिकरं [परं] ब्रूमहे ॥ १ ॥
न चेदिदमकल्मषाः किमिति सिद्धसाध्यक्रियाः, कराम्बुरुहकोटरीकृतशिवश्रियः श्रीजिनाः ।
सदेव-मनुजा-ऽसुरामॅपि सभां शशंसुः स्वयं, विमुक्तिपथमादृता भवभिदे गिरां विस्तरैः ? ॥ २ ॥
किमर्थमथवाऽगमन्निशि जिनो द्विषड्योजनां, व्यतीत्य चरमप्रभुर्वसुमतीमपापां पुरीम् ।
तदाऽऽगतगुणर्द्धिमद्विमलकीर्तिमद्गौतमप्रमुख्यतनुमत्ततेरुपकृतौ न चेदादरः ? ॥ ३ ॥
इति परोपकृतिं प्रति सर्वथॉ, निजमतिं वितथां ननु मा कृथाः ।
यदि यशोऽभिलषस्यमलं सदा, स्पृहयसे च सुखं शिवसम्भवम् ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे परोपकारद्वारचिन्तायां भरतनृपकथानकं समाप्तम् ॥ ३२ ॥

१ स्वर्गाऽपवर्गसंसर्गजा च ॥ २ रासभश्रृङ्गमिव ॥ ३ सर्वं 'क्षयिकं' क्षयधर्मं दृष्टं परोपकृतं तु अक्षयिकम् ॥ ४ °**मभिसभां, सशं**° प्रतौ ॥
५ °**था, जिनमतिं** प्रतौ ॥

विनयस्य स्वरूपम्

सव्वगुणाणुगतो वि हु विणयं न विणा भवन्नवं तरिउं । होइ समत्थो ता तं पडुच्च वुच्चइ इतो किं पि ॥ १ ॥
जेण विणिज्जइ कम्मं सो विणतो दव्व-भावओ य दुहा । दव्वे दव्वनिमित्तं कीरइ राईसराईणं ॥ २ ॥
भावे य नाण-दंसण-चरित्तवंताण पुरिससीहाण । कम्मविणिज्जरणकए जो कीरइ सो मुणेयव्वो ॥ ३ ॥
विणयातो जसं लच्छि वंछियसिद्धिं च गोरवमपुव्वं । पूयं बहुमाणं पाउणंति पुरिसा न संदेहो ॥ ४ ॥
गयरूवो वि जडो वि य लायन्नविवज्जिओ वि नीओ वि । विणएण ठविज्जइ उवरि रूवं[1]-मइमंतमाईणं ॥ ५ ॥
जह वा तरुस्स मूलाइं मूल[....]खमंति उत्तरगुणाणं । तह धम्मस्स वि मूलं विणयं चिय बिंति समयविऊ ॥ ६ ॥
विणएण वसं देवा वि जन्ति सत्तू वि होइ मित्तसमो । विणयावज्जियहियया गुरुणो वि हु देंति सुयरयणं ॥ ७ ॥
विणयविहीणं सुयमवि चेयंति[2] गिण्हंति विडमवि विणीयं । दिट्ठंतो हेमपहो सुलसो वि य एत्थ अत्थम्मि ॥ ८ ॥

तहाहि—उड्डियायणविसए सुनेवच्छ[3]महिच्छलोयनिवहसमद्धासिया सारनिचयसंचयपहाणपणियपरिपुन्नविवणालंकिया दूरतरदेसंतरागयवणियपारद्धपइदिणभूरिकय-विकया विजयपुरी नामं नयरी । जीए तुलाकोडिमणोहरातो भवणपरंपरातो सुंदरीचरणपालितो य विरायंति, कायंबकयंब[4]सुंदरातो सरोयरपंतीओ[5] धणुद्धरधणुमंडलीओ य दीसंति, सारमेय[6]समिद्धातो

१ रूपमतिमदादीनाम् ॥ २ त्यजन्ति ॥ ३ सुनेपथ्यमहेच्छलोकनिवहसमध्यासिता सारनिचयसञ्चयप्रधानपण्यपरिपूर्णविपण्यलङ्कृता दूरतरदेशान्तरागतवणिक्प्रारब्धप्रतिदिनभूरिक्रयविक्रया ॥ ४ सरोवरपङ्क्तयः कादम्बकदम्बकेन—हंससमूहेन सुन्दराः, धनुर्धरधनुर्मण्डल्यः पुनः बाणसमूहेन मनोहराः ॥ ५ °तीउद्धरणुद्ध° प्रतौ ॥ ६ धनवतां—धनिनां भाण्डशालाः सारैः मेयैः—मेयपदार्थैः समृद्धाः, पापर्द्धिलुब्धभवनभूम्यस्तु सारमेयैः—श्वानैः समृद्धाः ॥

साहिया तित्थपलोयणाइवत्ता । ‘अहो! कहं मह निमित्तेण वराईए निरुवचरिओ पणतो[1]?’ त्ति जातो तदेगचित्तो सो लक्खिओ अम्मा-पिऊहिं । ‘बंभणकुलकलंकहेऊ सुद्दीसंगो’ त्ति निद्धाडिया सा[2] करुणं रुयंती तेहिं ।

इयरो वि तव्विरहदुक्खाभिभूओ खिज्जिऊण मतो कइवयदियहेहिं उववन्नो हरिणो सुरसरि[3]तीरम्मि । सा वि तद्देसमणुसरंती दिट्ठा तेण । पुव्वभवसिणेहेण य पुरतो पिट्ठओ य तं चेव पलोयंतो गतो गामसमीवे । तीए वि पलोइतो साणंदचक्खुक्खेवेण । नवरं तीए निवारंतीए वि हओ सो गामलोगेण । भुज्जो जातो वणे वाणरत्तेण । तत्थ वि सा नियगामं पडुच्च वचंती पलोइया तेण । चिरपणयवसेण तीए फलाईणि पणामिंतो ताव गतो जाव सन्निवेससमीवं । तहिं च भेसितो लोगेण वलिओ, अच्चंतसोगाभिहतो य गओ पंचत्तं ।

उववन्नो वाणारसीए पुरीए परिसरग्गामे माहणकुले पुत्तत्तणेण । कयं दिन्नो त्ति नामं, पढितो य वेयसत्थं, गतो वाणारसीए दक्खिणानिमित्तं । दिट्ठा सा तहिं जराजज्जरसरीरा मंदीभूयदिट्ठिवावारा सुरसरितीरे अणसणं पवन्ना पुव्वभवभज्जा, पुच्छिया य तेण पुव्वभवसिणेहेण—भद्दे ! का तुमं ? किं वा इह एवं निरसण व्व चिट्ठसि ? त्ति । सिट्ठो य तीए पुव्वभवकालातो नियवइयरो । तं च सुणंतो जायजाईसरणो मुच्छिओ दिन्नो, सुरसरितुसारसमीरसमासासियसरीरो पबुद्धो एसो भणिउं पवत्तो—भो भो सुयणु ! सो अहं मंदभग्गो विरोयणो बडुओ हरिणो मक्कडो य, ता आइससु किमियाणिं कायव्वं ? । तीए वि परूढपुव्वपणयाए जंपियं—पाणनाह ! मए ताव कयं चिय जमिह कायव्वं, ‘भवंतरे वि तुमं गइ’ त्ति

१ ‘प्रणयः’ स्नेहः ॥ २ सा सक° प्रतौ ॥ ३ गङ्गातीरे इत्यर्थः ॥

पलयसमए व [1]विलसंतवियडविज्जुच्छडुब्भडाडोवा । अंजणपुंजच्छाया जाया गयणे [2]घणुग्घाया ॥ १ ॥
दिसिमुहकुहरेसुं पसरितो [य] बंभंड[खंड]भूओ व । गज्जिरवो उच्छालियमहल्लजलरासिकल्लोलो ॥ २ ॥
दीसइ गयणयललुलंतबहलकल्लोललोलणाऽऽउलियं । [3]मच्छुच्छालियजलबिंदुसच्छहं तारयाचक्कं ॥ ३ ॥
चक्कं व [4]कुलालनिसिट्ठजट्ठिपेरिज्जमाणमइवेगा । गरुयावत्तावडियं बोहित्थं भमिउमारद्धं ॥ ४ ॥
[5]दिसिविदिसिदेसभागावलोयणे वाउलो विमूढो य । पम्मुक्कजीवियासो जंपइ निज्जामगो तत्तो ॥ ५ ॥
भो भो ! [6]सरेह सरियव्वमिण्हि परिमुयह जीवियव्वासं । चाउद्दिसं पयट्टो घणो य पवणो य दुव्विसहो ॥ ६ ॥
इय जाव जंपिऊणं नो विरमइ सो तया लहुं ताव । [7]दुग्गयमणोरहालि व खंडसो विहडिया नावा ॥ ७ ॥

अह जलहिमणुसरंतेसु सारभंडेसु, इओ तओ उब्बुड्ड-निब्बुड्डणं कुणंतेसु जणेसु सबाहुतरणबद्धचित्तावट्ठंभेसु, खंडाखंडिं विणट्ठे जाणवत्ते, केणइ अदिट्ठवसेण हेमप्पहेण पुत्त-कम्मयरसहिएणेव पावियं भग्गकूवखंभखंड[8] । तं च सुमित्तं व पडिवन्नं सव्वायरेण । लोलकल्लोलुप्पी[9]लुप्पेलिज्जमाणो य सत्तमदिणावसाणे पत्तो पारावारपारतडं । मुक्कक्खंभक्खंडो य पट्ठिओ य सपरियणो तीरतरुवणं पडुच्च वेगेणं । खीणबलत्तणेणं परिणयवयत्तणेण य खुत्तो पंकमज्झे हेमप्पभो । इयरे य सरीरबलेण

१ विलसद्विकटविद्युच्छटोद्भटाटोपाः ॥ २ घनोद्घाताः ॥ ३ मत्स्योच्छालितजलबिन्दुसमानम् ॥ ४ कुलालनिसृष्टयष्टिप्रेर्यमाणम् अतिवेगात् । गुरुकावर्त्तापतितम् ॥ ५ दिग्विदिग्देशभागावलोकने व्याकुलः ॥ ६ स्मरत स्मर्त्तव्यमिदानीं परिमुञ्चत जीवितव्याशाम् ॥ ७ दुर्गतमनोरथालिः इव ॥ ८ °डं ति च प्रतौ ॥ ९ °लुपेलि° प्रतौ ॥

जोव्वणसामत्थेण य तं विलंघिऊण गया पारभागं । ततो [1]वाहरियं महया सद्देण हेमप्पहेण—भो भो वच्छ तिनयण ! [2]हेच्छमागच्छ, उद्धरेसु मं [3]खुत्तमिमातो पंकदुग्गमातो त्ति । ततो भणियं तिनयणेण—अहं अप्पणा वि न सक्केमि पयाओ पयं पि गंतुं ता सणियसणियं अप्पाणं संठविऊणं आगच्छसु त्ति । 'अहो ! पुत्तपडिबंधो' त्ति परं निव्वेयमुवगतो हेमप्पहो । 'पुत्तो वि जत्थ एवंविहो तत्थ कम्मयरे का आस ?' त्ति न किं पि संलत्तो सुलसो अणेण । तह वि सो असरिसं सामिभत्तिमुव्वहंतो सेट्ठिसुयं भणिउं पवत्तो—भद्द ! वाहरिज्जंतो वि कीस न वच्चसि ? त्ति । सकोवभीमभालयलं च भणियमणेण—रे रे मुहरमुह ! जइ सुगमं ता तुममेव कीस न वच्चसि ? । एयं च समीवत्तणेण निसामिंतो ताण परोप्परुल्लावं परं निव्वेयं पवन्नो हेमप्पभो विभावेइ—

सुय-भाउ-भइणि-धूया-कलत्त-सुहि-सयणनेहजालेण । ही ! अपरमत्थिएणं बज्झइ मीणो व कह लोगो ? ॥ १ ॥
जो इहलोए वि हु विहुरनिवडियं [4]तरइ नेव उद्धरिउं । सो कह परलोयहिओ हविज्ज ? ही ही ! महामोहो ॥ २ ॥
तह वि अविगणियमरणाइतिक्खदुक्खागमेहिं मूढेहिं । अम्हारिसेहिं [5]खिप्पइ अप्पा एवंविहे वसणे ॥ ३ ॥
इय जाव सो विभावइ सुलसो अविगणिय अप्पणो दुक्खं । ताव नियसामिसंरक्खणट्ठया पंकमोगाढो ॥ ४ ॥
धीरो होज्जाहि तहा करेमि जह बाहि ठासि पंकाओ । इय जंपिरेण तेण य उक्खित्तो सो ससत्तीए ॥ ५ ॥
खीणबलेण वि तक्कालवीरिउल्लासतो स तेण बहिं । सणियं सणियं नीओ [6]सब्भावस्सऽत्थि किमसज्झं ? ॥ ६ ॥

१ व्याहृतम् ॥ २ शीघ्रम् ॥ ३ निमग्नम् ॥ ४ शक्नोति ॥ ५ क्षिप्यते ॥ ६ सद्भावस्यास्ति किमसाध्यम् ? ॥

तओ तडवण[1]पत्तस्स पक्खालिया चलणा, समप्पिया य कंदमूल-फलाइणो, संवाहियं अंगं, विरइतो रत्तासोयपल्लवेहिं सत्थरो, पसुत्तो तत्थ। तिणयणेण पुण वत्ता वि न से पुट्ठा, न समीवे वि उवगतो, न कतो को वि उवयारविसेसो। ततो चिंतियं हेमप्पहेण सेट्ठिणा—अहो! [2]विसा-ऽमयाणं व पाव-पुन्नाणं व गरुयमंतरं पुत्त-कम्मगराणं जमेवं पच्चक्खमेव दीसइ त्ति, होउ वा किं पि, न कल्लाणभायणमिमो वरागो मह सुओ।

एत्थंतरे ईसासल्लनिभिज्जमाणहियएण सरोसं संलत्तं तिणयणेण—रे रे कम्मयराहम सुलस! ममावि विणओवयारो किं पि किं पि जुत्तो तुह काउं, मुद्ध! किमहमन्नो कोइ?। सुलसेण भणियं—अत्थि एवं, केवलं सरीरासामत्थमेवावरज्झइ। ततो चिंतियं सेट्ठिणा—अहो! दुरायारत्तणं पुत्ताहमस्स, जं इमिणा वि कीरमाणं विणयोवयारं न सोढुं पारइ त्ति।

अह अत्थमितो दिणयरो, [3]पडिवक्खविगमवड्ढिउच्छाह व उच्छलिया तिमिरनियरा, [4]पइपलयगमे विव दंसियनिब्भराणुरागा विहगकुलकोलाहलच्छलेण [5]परुन्न व संज्झा, लद्धावयासा खलयण व भमिउं उवट्ठिया दुट्ठसत्ता। तयणंतरं च सेट्ठिणा भणियं—अरे! [6]बहुपच्चवाया रयणी, ता समुच्चतरतरुवरखंधसाहासु आरुहिऊण [7]वोलाविज्जउ इम त्ति। 'तह' त्ति पडिवज्जिय आरूढा रुक्खं सव्वे वि। [8]विच्छिन्नसाहावट्टे य ठविओ सुलसेण सेट्ठिणो सत्थरो। तहिं च वारिज्जंतो वि आसीणो तिणयणो, कुविओ सुलसो, पारद्धो तं पइ किं पि जंपिउं। '[9]असंमतो' त्ति पडिसिद्धो सो सेट्ठिणा। तुण्हिक्को ठिओ

१ °त्तासप° प्रतौ ॥ २ विसयाम° प्रतौ। विषाऽमृतयोरिव ॥ ३ प्रतिपक्षविगमवर्धितोत्साहा इव ॥ ४ पतिप्रलयगमे इव ॥ ५ प्ररुदिता इव ॥ ६ 'बहुप्रत्यपाया' बहुविघ्ना ॥ ७ व्यतिक्राम्यताम् ॥ ८ विस्तीर्णशाखापृष्ठे ॥ ९ 'असमयः' अनवसरः ॥

धणवंतभंडसालाओ पारद्धि-लुद्धभवणभूमीओ य भासंति। जा य कोरव्ववंसविजयद्धयाणुरूववीरविजयमहानरिंदभुयपरिहरक्खिया सुमिणे वि न [1]लक्खमुवगया पडिवक्खसकडक्खपेक्खियाणं, सयाणुकूलदेवयामाहप्पवसेण य अभूमी दुब्भिक्खदुक्खस्स। तीए य पुरीए वत्थव्वो [2]पुव्वपुरिसपज्जायागयजाणवत्तववसायपरो परोवयाराइगुणसंगओ हेमप्पभो नाम वणिओ, सुलक्खणाभिहाणा य गेहिणी, पुत्तो य ताण तिनयणो नाम। असेसगहियकज्जचिंतासु निच्चं अनलसो सुलसो य नाम कम्मयरो। सव्वाणि य [ताणि] नियनियकम्मसंपउत्ताणि दिणाइं गमिंति।

अवरवासरे य हेमप्पभो भणिओ भज्जाए, जहा—अज्जउत्त! पइदिणजहिच्छाभोगोवभोगकज्जसंवि[भ]ज्जमाणं न मुणसि हीयमाणं दविणं, न लक्खेसि य खीणप्पायं [3]अणप्पमाणमवि धन्नकोट्ठागारं, न वा विभावेसि वड्ढिपउत्तं पि तणं व विलुप्पमाणमिओ तओ दुट्ठलोएणं ति। इमं च सोच्चा चिंतियं हेमप्पहेण—अहो! महिलाभावे वि केरिसो इमीए परिणइपेहणप्पहाणो बुद्धिपयरिसो? तारुन्ने वि परिणयवयपडिरूवा गेहचिंता, ता सुट्ठु [4]ठाणे चोयणा, न जुत्तमित्तो आलस्सं—ति विभाविय गिहकज्जे भज्जं चिय निरूविऊण [5]अणुरूव[पणिय]पडहच्छजाणवत्तमारुहिऊण पुत्तेण कम्मयरेण समेतो गतो चोडविसयं। विणिवड्ढियं भंडं, अज्जिओ य [6]पउरदव्वसंभारो। पडिग्गहियपउरभंडो य पवहणाधिरूढो [7]अणुकूलानिलपणोलिज्जमाणसियवडाडोववड्ढियावेगवसओ अकालक्खेवेण [8]पत्तो महाजलहिमज्झं। एत्थंतरे—

१ लक्षमुपगता प्रतिपक्षसकटाक्षप्रेक्षितानाम् ॥ २ पूर्वपुरुषपर्यायागतयानपात्रव्यवसायपरः ॥ ३ अनल्पमानमपि ॥ ४ समयोचिता प्रेरणेत्यर्थः ॥ ५ अनुरूपपणितप्रतिपूर्णयानपात्रमारुह्य ॥ ६ पवर° प्रतौ ॥ ७ अनुकूलानिलप्रणुद्यमानसितपटाटोपवर्धितावेगवशतः ॥ ८ °त्तो जहा जल° प्रतौ ॥

तीए भणियं पिययम ! एवंविहगुणालतो एसो । तो पारितोसियं किं पि समुचियं दिज्जउ इमस्स ॥ ४ ॥
तो नियंयवंछिओचियमुल्लवियं तीए लक्खिउं सेट्ठी । पडिभणइ पिए ! गेहाहिवं इमं काउमिच्छामि ॥ ५ ॥
अह तीए नियंपुत्तप्पईवरूवं पयं पिइपवुत्तं । थुत्थुकारियमेयं अमंगलं तुज्झ वयणं ति ॥ ६ ॥
कह वा न लज्जसि तुमं अणुचियमेवंविहं पयंपंतो ? । भिच्चस्स कोऽहिगारो विज्जंते तिणयणे पुत्ते ? ॥ ७ ॥
जं न वि सुंम्मइ सत्थे न वि दीसइ कहिं वि लोयववहारे । तं पि हु समुल्लवंतो नेंज्जसि भूयाभिभूओ व्व ॥ ८ ॥
इय तीए कोवमंजिट्ठदिट्ठिपहपाडलीकओट्ठीए । वक्कं वंकं अइकक्कसं च सोउं भणइ सेट्ठी ॥ ९ ॥
आ पावे ! पँडिकूडेसि मज्झ वयणं पि मुणसि नेव सुयं । वेरिं व दुरायारं दुव्विणयं दुट्ठवयणं च ॥ १० ॥
घरमत्थसारमन्नं पि अज्जियं धुवमिमं मए चेव । देमिं य रोयइ जो तस्स को तुमं एत्थ वावारो ? ॥ ११ ॥
जं पि य तुमए नियजणगसंतियं किं पि आणियं अत्थि । तं घेत्तुं ठाहि बहिं देसु य नियंयस्स पुत्तस्स ॥ १२ ॥
तीए भणियं नो मयि जीवंतीए सुयातो इह अवरो । घरसामित्तं उव्वहइ निच्छियं एस परमत्थो ॥ १३ ॥

इमं च तन्निच्छयं बुज्झिऊण वाहरिया हेमप्पहेण सयणा, सिट्ठो ताण पुरतो सव्वो पुत्तपुव्वदुव्विणयवुत्तंतो, जीवियदाइणो कम्मयरस्स सव्वस्सदाणाभिलासो य त्ति । नियंनियपक्खकक्खीकारेण य केणइ किं पि जंपियं, न निच्छिन्नो विसं-

१ एवंविधगुणालयः ॥ २ निजकवाञ्छितोचितम् ॥ ३ निजपुत्रप्रतीपरूपं पदं प्रियप्रोक्तम् ॥ ४ श्रूयते ॥ ५ ज्ञायसे ॥ ६ कोपमाञ्जिष्ठदृष्टिप्रभापाटलीकृतोष्ठ्याः । वाक्यं वक्रम् ॥ ७ प्रतिकूलयसि इत्यर्थः ॥ ८ ददामि च रोचते यः तस्मै ॥ ९ निजनिजपक्षकक्षीकारेण ॥

वातो । ततो सिट्ठा पुरपहाणाण वत्ता । तेहिं वि उभयपक्खाणुवित्तिसमुल्लाववसतो न सक्कितो को वि अभिप्पाओ पइट्ठिउं । ततो निवेइया जहट्ठिया सेट्ठिणा पुहईवइस्स वत्ता । तेणावि धम्माहिगारिणो वाहराविऊण भणिया, जहा—अपक्खवडियं नायसत्थाविरुद्धं धम्माबाहगं मज्झत्थयाए नायं दट्ठूण विसंवायं छिंदह त्ति । ते य 'तह' त्ति अणुमन्निय मेइंणीवइवयणा एगंते होऊण सम्ममालोचिऊण य समागया रन्नो समीवे, विन्नविउं पवत्ता य—देव ! इह विसंवाए इमं निच्छियं—जइ दुव्विणीओ अणत्थकारी अत्थविणासगो अणुवज्जगो य तह वि सुओ घरभागी चेव, ता देव ! एसो वंणितो सुयघरद्धं मोत्तूण नियगमद्धं कम्मयरस्स अन्नस्स वा देउ त्ति । 'तह' त्ति अब्भुवगयं राइणा । तदणुवित्तीए य पडिस्सुयं हेम्मप्पहेण, विरिंत्तं घरसारं, दिन्नं नियगमद्धं सुलसस्स । 'अहो ! कयन्नुओ' त्ति सलहितो सयललोएण, बहुमन्निओ नरवइणा हेमप्पहो ।

नवरं धुत्तलोयसिक्खवियाए भज्जाए पारद्धो एसो, जहा—मह जीवणचिंताए निच्चं वट्टसु त्ति । न मुयइ सा पइस्स परुट्ठदुट्ठपिसाइय व्व पट्ठिं । भुज्जो गतो सेट्ठी राउलं, सिट्ठो तव्वुत्तंतो । राइणा जंपियं—भो महायस ! लंब्भं चिय एत्तियमिमीए वरागीए । हेमप्पहेण भणियं—देव ! एवमेयं जइ अहं घरवासाभिलासी भवामि, केवलं पुव्वं चिय संकप्पियवणवासाभिलासो कम्मयरस्स पच्चुवयारकएणं चिय गेहमुवागतो, संपयं तु सिद्धसमीहियत्थो पत्थुयपओयणत्थं उज्जमिस्सं । ततो राइणा खित्ता दिट्ठी अंगिरस-वसिट्ठाइसु पोराणियतवस्सीसु । इंगियागारकुसलेहिं य तेहिं भणियं—महाराय ! पुराणेसु इमं गिज्जइ—

१ नायं स° प्रतौ । न्यायशास्त्राविरुद्धम् ॥ २ न्यायम् ॥ ३ मेदिनीपतिवचनात् ॥ ४ वणिग् ॥ ५ विरिक्तम् ॥ ६ कृतज्ञः ॥ ७ लभ्यमेव एतावत् ॥

मृतः प्रवसितो दीक्षां जिघृक्षुः पतितोऽपि वा । चिरोढामुत्सृजन् भर्ता न तत्पोषादि कार्यते ॥ १ ॥

'एवमेयं' ति पडिवन्नं रन्ना । निवारिया य रन्ना गया नियसुयसमीवं । हेमप्पभो वि पवन्नो तावसदिक्खं । सुलसो वि उव[1]लद्धगेहसारद्धो अणुरूवकयकलत्तसंगहो क[2]य-विक्कयकरणेण ववहरिउं पवत्तो, अच्चंतविणयगुणेण य परं पसिद्धिमुवगतो।

अन्नदिवसे य सो क[3]य-पडिकयकज्जेण गामंतरं पट्ठिओ, अद्धपहे य आवासितो जलासयसमीवे, उवखडियं भोयणं, उवट्ठिओ भोयणकरणत्थं । एत्थंतरे तद्देसवणनिगुंजवासी गुणायरो नाम तवस्सी, उ[4]ग्गतवविसेसविसोसियचिरकम्मदुकम्मपंकुप्पीलो, पीलिज्जमाणो वि दुट्ठसत्तेहिं सत्तभावणातो मणागं पि अकंपियकाओ, काउस्सग्गाइदुक्करकिरियारतो, क[5]यगच्छचातो, चाउम्मासियपारणए भिक्खानिमित्तं पत्तो तं पएसं । 'अहो ! एवंविहविजणे वि कहमेरिसमहातवस्सिणो अतिहिभावं पवज्जंति ? अहो ! अणब्भा अमयवुट्ठी, अ[6]खन्नवातो निहाणुग्गमो, अबीयपक्खेवो कप्परुक्खपरोहो' त्ति पमोयमुवहंतेण पडिलाभिओ तेण स[7]निमित्तसिद्धनिरवज्जभोयणेणं । तहतव्विणयदाणप्पवित्तिपरितुट्ठाए देवयाए भणितो एसो— वच्छ ! वरं वरसु त्ति । तेण जंपियं—देवि ! तुह स[8]पणयलोयणातो वि किमब्भहियं किं पि जं वरिज्जइ ? । ततो देवयाए विस-भूय-साइणीपमुहदोससंघायघायणस[9]मत्थमाहप्पमोप्पियं से मुद्दारयणं, अद्दंसणं च उवगया । बाढं परितुट्ठो सुलसो

१ उपलब्धगृहसारार्धः ॥ २ क्रयविक्रयकरणेन व्यवहर्तुम् ॥ ३ क्रयप्रतिक्रयकार्येण ॥ ४ उग्रतपोविशेषविशोषितचिरकर्म-दुष्कर्मपङ्कसमूहः, पीड्यमानोऽपि दुष्टसत्त्वैः सत्त्वभावनातः ॥ ५ कृतगच्छत्यागः ॥ ६ अखन्यवादः ॥ ७ स्वनिमित्तसिद्धनिरवद्यभोजनेन ॥ ८ सप्रणयदर्शनादित्यर्थः ॥ ९ विषभूतशाकिनीप्रमुखदोषसङ्घातघातनसमर्थमाहात्म्यम् अर्पितं तस्मै ॥

सुलसो, कह कह वि समइकंता विभावरी, जायं सुहालोयं वसुमईवट्टं, पट्ठिया हेमप्पभाइणो एगं दिसं पडुच्च ।

मग्गे य कंद-फल-मूलमाइ जं किंचि मणहरच्छायं । पावइ सुलसो सु[1]स्साउ देइ तं सेट्ठिणो प[2]यओ ॥ १ ॥

सेट्ठी वि गाढतव्विणयरंजितो वहइ विम्हयं हियए । कम्मयरो वि य होउं अहो ! कहं वट्टए विणए ? ॥ २ ॥

नो वि[3]त्ती उवयारो वि नेव न गुणो विसेसितो कोइ । तह वि हु उवयरई ममं अहो ! महप्पा धुवं सुलसो ॥ ३ ॥

जइ कह वि दिव्वजोएण जामि गेहम्मि अक्खयसरीरो । ता सुलसमिमं काऊण गि[5]हवयं होमि समणो हं ॥ ४ ॥

इय सो परिचिंततो वइरिं व त[6]णुब्भवं अ[वि] गणिंतो । कालक्कमेण पत्तो गेहं अवि[7]णट्ठ-लट्ठंगो ॥ ५ ॥

जायं वद्धावणयं समागतो मंदिरं सयणवग्गो । पुच्छियचिरवुत्तंतो जहागयं पडिनियत्तो य ॥ ६ ॥

अह समुचियसमए हेमप्पहेण विजणप्पदेसोवगएण भणिया गेहिणी—पिए ! निसामेहि पुत्त-कम्मयराणमंतरं—पढमो बाढं वे[8]सानरो व्व दाहकारी, बीओ पीऊसवरिसो व्व निव्वुइजणगो; पढमो दुव्विणयभायणं, बी[9]तो य अणुवचरियसच्चरियभूमिभूओ।

अप्पा वि पइखणं अप्पणो वि काउं पियं न पारेइ । अणवच्छिन्नपियकरो कम्मयरो वि हु इमो मज्झ ॥ १ ॥

जइ एस विसमदेसट्ठियस्स मह चिंतगो हि नो हुंतो । तो निहणमहमुविंतो तक्का[10]ले च्चिय न संदेहो ॥ २ ॥

सुयणु ! पुणरेव तुह संगमस्स हेऊ इमो च्चिय वरागो । इहरा पंकनिमग्गो गं[11]तो व्व तत्थ वि विवज्जंतो ॥ ३ ॥

१ सुस्वादु ॥ २ प्रयतः ॥ ३ वृत्तिः उपकारः ॥ ४ °इ मिमं प्रतौ ॥ ५ गृहपतिम् ॥ ६ 'तनूद्भवं' पुत्रम् ॥ ७ अविनष्टश्रेष्ठाङ्गः ॥ ८ 'वैश्वानर इव' अग्निरिव ॥ ९ द्वितीयः ॥ १० °हँले च्चि° प्रतौ ॥ ११ गज इव ॥

अन्ने वि खंति-मद्दव-अज्जव-संतोस-विणय-करणजया । तव-चाग-दक्ख-दक्खिन्नमाइणो निम्मला हि गुणा ॥ ९ ॥
[1]अप्पाणयम्मि पणइत्तणेण तह कह वि निच्च ठवियव्वा । जह दुक्किराण वि दढं दोसाण न होइ अवगासो ॥ १० ॥

इमाणि य धम्मवयणाणि[2] सम्ममादाय, जिणं च देवबुद्धीए सुसाहुणो य गुरुत्तेण पडिवज्जिय, वंदियसाहुपायपंकतो कयकिच्चमप्पाणं मन्नंतो गओ सुलसो जहाभिप्पेयगामं । चिंतिया[इ]रित्तसाहियकज्जो य पडिनियत्तो तेणेव पहेणं, पुवट्ठाणे च्चिय कयमुप्पयाणं । सिद्धे य भोयणजाए गतो पुव्वदिट्ठमुणिवरिट्ठसमीवं । जहाविहि वंदिऊण निमंतिओ असणाईहिं । मुणिणा वि पवन्नमासखवणेण उववूहिओ एसो । जहा—

अप्पट्ठा कय-निट्ठियभोयणमाईहिं सुद्धसद्धागा । पडिलाभिंता गिहिणो मुणिजणमज्जिंति पुन्नचयं ॥ १ ॥
कयउन्न चंदणज्ज व निज्जरं पाउणंति[3] तत्तो य । पुन्नाणुबंधिपुन्नप्फलेण[4] वच्चंति सिद्धिं पि ॥ २ ॥ किंच—
जमिह मयमत्ततरुणीमयंगणे[......]वग्गुर व सिरी । सोहग्गं पि हु पडिभग्गउग्गकंदप्पगुरुदप्पं ॥ ३ ॥
लायन्नमवि य वि[5]म्हइयबुहयणं संपया वि जियधणया । आणिस्सरियमपुव्वं तं पि हु दाण[6]प्फलमसेसं ॥ ४ ॥
इय [7]वंछियनीसेसत्थसत्थवियरणपसिद्धमाहप्पे । कप्पतरुनिव्विसेसे दाणे धन्नो कुणइ [8]जत्तं ॥ ५ ॥

अह 'तह' त्ति भत्तिसारपवन्नहिओवएसो विहारेण तं निमंतिऊण सुलसो पयट्टो गंतुं । कमेण य नियनयरिपरिसरं

१ आत्मनि प्रणयित्वेन ॥ २ ˚णि वि स˚ प्रतौ ॥ ३ प्रगुणयन्ति ॥ ४ ˚न्नफले˚ प्रतौ ॥ ५ विस्मापितबुधजनम् ॥ ६ ˚णफल˚ प्रतौ ॥ ७ वाञ्छितनिःशेषार्थसार्थवितरणप्रसिद्धमाहात्म्ये ॥ ८ जुत्तं प्रतौ । यत्नम् ॥

पत्तो पेच्छइ विसमतूररवबहिरियदियंतरं, अणेगपुरपहाणजणाणुगम्ममाणं, पुरओ पयट्टसदुक्खपुहइपालं, पिट्ठओ भूरिसोगभरनिब्भररुयंत-विलवंतअंतेउरीजणं, जंपाणाधिरोवियम[ड]गमेगमागच्छमाणं ति । अह पुच्छिओ णेण एगो पुरिसो—भद्द ! किमेयं ? ति । तेण जंपियं—एसो हि रायपढमपुत्तो जुवरायपए निवेसि[1]तुंकामेण पिउणा अज्ज रयणीए वाहरिओ अप्पणो समीवं, भणिओ य—पुत्त ! जुवरायपयविं पवज्जसु, कुणसु रज्जचिंतं, थेवथेवेणाहं पि तुम्हारिसेसु संकामियपुहइपब्भारो ओहरियभरो व भारवाही विस्सामं भयामि त्ति । 'जं देवो आणवेइ' त्ति पडिवन्नवयणो विसज्जितो गओ सट्ठाणं । केणइ पमायदुविलसिएण पसुत्तो च्चिय विसविगारनिरुद्धकायवावारो पढमं च्चिय किंचि मंदमंदमुल्लविऊण, जामिणीपच्छिमजामे [2]उवयरिज्जंतो वि मंत-तंतवाइजणेण निच्चेट्ठीहूओ, उज्झिओ य पभायसमए 'अचिगिच्छो' त्ति अयं हुयवहे पक्खिविउं मसाणमुवणीओ त्ति ।

सुलसेण चिंतियं—अहो ! दूरमसुंदरमेयं जमेस महाणुभावो रायसुओ एवं विवज्जइ, ता गंतूण देवयादिन्नमुद्दारयणमाहप्पेण पगुणीकरेमि एयं, समासासेमि य एत्तियमेत्तं रायपमुहं पहाणजणं ति । गतो एसो रन्नो समीवं, जंपिउमारद्धो य, जहा—देव ! दंसेह मे रायसुयं जेणाहं पि किं पि पउंजेमि नियविन्नाणं । रन्ना जंपियं— अलमियाणिं विन्नाणेणं । मंतियणेण भणियं—देव ! किमजुत्तं ? दंसिज्जउ एयस्स, मा कइयाइ एत्तो वि कज्जनिप्फत्ती होज्जा, "महतोऽपि यन्न साध्यं, कश्चिल्लघुरेव तत् प्रसाधयति ।" इति प्रकट एव प्रवादः । राइणा वागरियं—एवं करेह । ततो दंसिओ एसो सुलसस्स । तेणावि

१ ˚सितोका˚ प्रतौ ॥ २ उपचर्यमाणोऽपि ॥

मुद्दारयणजलेण अहिसित्तो। *[1] सुत्तेसु य तं जलं पक्खित्तं।* खणंतरे अणप्पमाहप्पयाए देवयामुद्दारयणस्स, सावसेसयाए जीवियव्वस्स, सुत्तपबुद्धो व उट्ठिओ रायपुत्तो। परितुट्ठो राया समं पउर-पहाणजणेण, वे[2]हव्वमंडणं पि अइहवालंकारत्तणमुवगयं बहूजणस्स, उच्छलितो सा[3]हुवातो सुलसस्स, महाविभूईए पविट्ठो राया नयरिं, जायं महावद्धावणयं। पूइतो रन्ना महया आयरेण पवरालंकारसारचीणंसुयाइदाणेण सुलसो, पुच्छितो य—वच्छ! को तुमं? कत्थ वा वससि? त्ति। सुलसेण भणियं—देव! सो अहं जो तुम्ह पायपुरओ कम्मयरो वि पुत्तो व हेमप्पभसेट्ठिणा तावसदि[4]क्खं पवज्जंतेण गेहसारद्धस्स सामित्तेण ठवितो, इहेव वसामि त्ति।

तो नरवइणा सरिऊणं[5] विणयवुत्तंतमइयमेयस्स। संजायपक्खवाएण जंपियं भद्द! तेणेव ॥ १ ॥
ए[6]वंविहपरमाइसयरयणरयणायरो तुमं भवसि। नहि अविणीया सुमिणे वि भायणं कुसलसिद्धीण ॥ २ ॥
ता वच्छ! निव्विसंको स[7]क्काओ वि हु भयं अकुणमाणो। वट्टसु समीहियत्थेसु तुज्झ मह संतियं सव्वं ॥ ३ ॥
इय नरवइणा पेमाणुबंधबंधुरगिराहिं जणपुरतो। उववूहिओ समाणो सो नियगेहं उवगतो त्ति ॥ ४ ॥

तहिं च सव्वन्नुपायपूयापरो परमसावगवित्तीए पइदिणं जइजणं सुस्सूसंतो कालमइलंघेइ। अन्नया तेण महाणुभावेण

१ * * एतच्चिह्नमध्यवर्त्ती पाठोऽसम्बद्ध आभाति। प्रतौ वर्त्तत इत्यत्र उपक्षिप्तः॥ २ वैधव्यमण्डनमपि अविधवालङ्कारत्वमुपगतम्॥ ३ साधुवादः॥ ४ °क्खा प° प्रतौ॥ ५ °ण यविणवु° प्रतौ॥ ६ एवंविधपरमातिशयरत्नरत्नाकरः॥ ७ शक्रादपि॥

॥२३८॥

काऊण भोयणं गतो साहुसमीवं, पडिओ तच्चरणेसु, दिन्नासीसो आसीणो भूमियलम्मि। 'भ[1]व्वपयइ' त्ति पुच्छिओ साहुणा—भद्द! कत्तो आगमणं? ति। तेण जंपियं—भयवं! विजयपुरीहिंतो क[2]यविक्कयत्थं गामं पत्थिओ म्हि, अज्जं च 'तित्थभूयं तुम्ह पायपउमदंसणं जायं' ति पत्तजीवियफलो संवुत्तो, 'दुल्लहं भु[3]ज्जो तुम्ह दंसणं' ति पत्थुयत्थं पि उज्झिय तुम्ह वयणं सोउं समीवमुवागतो य। 'अ[4]त्थित्तगुणसंगतो' त्ति साहुणा वि पारद्धो धम्मो उवइसिउं, जहा—

आरियदेसो पुरिसत्तणं च सुंदरकुलं सुजाई य। आरोग्गमणहदेहत्तणं च चिरजीवियव्वं च ॥ १ ॥
गुणगुरुगुरुसंजोगो सद्धा सद्धम्म-कम्मविसया य। विरई य पा[5]ववावारगोयरा मोहमहणं च ॥ २ ॥
अइभीमभूरिभवभम[6]णभायणाणं न नूण मणुयाणं। गुरुकम्माणं संभवइ एरिसी धम्मसामग्गी ॥ ३ ॥
ता तुज्झ महायस! सयलकुसलकल्लाणभायणत्तेण। इय सामग्गीजोगे काउं धम्मुज्जमो जुत्तो ॥ ४ ॥
धम्मो य होइ सम्मं पावट्ठाणाण निच्चचागेण। जीववहा-ऽलिय-परत्थि-इत्थिसंगाण चेव ज[7]तो ॥ ५ ॥
पंच वि इमाणि दु[8]ग्गइपयाणपत्थाणविजयतूराणि। सुगइगमपउणपयवीनिरोहनिव्विवरपरिहाणि ॥ ६ ॥
सुहसाहिनिवहहुयवहसमाणि सुदुरंतदुरियदाईणि। वज्जेज्ज वज्जघातोवमाणि भवभीरुओ दूरं ॥ ७ ॥
एयाण वज्जणम्मि विवज्जितो चिय भ[9]वुब्भवो भुज्जो। निव्वुइसिरी वि करकमलकुहरमलिणि व उवणीया ॥ ८ ॥

१ भव्यप्रकृतिः॥ २ क्रयविक्रयार्थम्॥ ३ भूयः॥ ४ अर्थित्वगुणसङ्गतः॥ ५ पापव्यापारगोचरा॥ ६ °णभोयणेणं प्रतौ॥ ७ यतः॥ ८ दुर्गतिप्रयाणप्रस्थानविजयतूराणि। सुगतिगमप्रगुणपदवीनिरोधनिर्विवरपरिघाणि॥ ९ भवोद्भवः भूयः। निर्वृतिश्रीरपि करकमलकुहरम् अलिनी इव॥

जिनपतिरपि साक्षाद् यं च तीर्थं नमस्यन्, भजति जगदधीशाभ्यर्च्यपादाम्बुजोऽपि ।
स शिवसुखसमृद्धौ बद्धबुद्धेरवश्यं, कथमिव विनयो ह्यन्यस्य न स्याद् विधेयः ? ॥ २ ॥
इतः पूज्योपास्तिस्तदनु विशदज्ञानममुतो, निवृत्तिः पापेभ्यस्तदनु[1] च तपस्या मलहरी ।
क्रियाध्वंसोऽमुष्यास्तदनु भवभङ्गाच्छिवपदं, पदं कल्याणानां तदिह विनयः प्राच्यमुदितः ॥ ३ ॥
इत्युभयभवभविष्यद्विभूतिसम्भारभाजनजनस्य । विनयविधित्सा[2] सम्पद्यते परं न पुनरन्यस्य ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे विनयद्वारव्यावर्णनायां[3] सुलसकथानकं समाप्तम् ॥ ३३ ॥ छ ॥

॥ तत्समाप्तौ च धर्माधिकारिसामान्यगुणकथनाऽपि त्रयस्त्रिंशद्वारप्रमाणा समाप्तेति ॥ छ ॥

१ °नु व तपस्या म° प्रतौ ॥ २ °धिसात् सम्प° प्रतौ ॥ ३ °वर्त्तना° प्रतौ ॥

॥ जयत्यनेकान्तकण्ठीरवः ॥

कहारयणकोसो ।

बिइओ धम्माहिगारिविसेसगुणवण्णणाहिगारो ।

तत्थ

समणोवासगस्स दुवालस वयाणि ।

देवभद्दसूरि-विरइओ कहारयण-कोसो ॥ विसेस-गुणाहि-गारो । ॥२४०॥

प्रथमाणु-व्रते यज्ञदेव-कथानकम् ३४।

पंच अणुव्वयाणि ।

प्राणवध-विरतेः स्वरूपम्

पुव्वं चिय उद्दिट्ठा अणुव्वयाई इहं विसेसगुणा । पाणवहविरइ पढमो [1]ताणमतो तं पवक्खामि ॥ १ ॥
पाणा ऊसासाई ते जेसिं होंति पाणिणो ते य । तेसिं वहो विणासो तव्विरई पुण परिच्चागो ॥ २ ॥
सव्वे सुहाभिलासी सव्वे चिरजीवियत्थिणो जीवा । [2]अप्पोधम्मेण अओ रक्खा जुत्ता सया ताण ॥ ३ ॥
पंचग्गितावणाई कीरंतु सुदुक्करा तवविसेसा । जइ नत्थि जीवरक्खा ता सयला ते गया विहला ॥ ४ ॥
गिज्झइ [3]तिजए वि इमं जीवियदाणाउ नावरं दाणं । ता तम्मि [4]सइ पयत्तो जुत्तो चिरजीवियत्थीणं ॥ ५ ॥
रूवं निज्जियमयणं धणं पि निद्धुणियवेसमणमाणं । सोहग्गं पि अभग्गं आणिस्सरियं कयच्छरियं ॥ ६ ॥
भोगा य निरुव्वेगा अविहियसोगो य पणइजणजोगो । पाणिवहनिवित्तीए एमाइफलाइं साहिंति ॥ ७ ॥
अकलंकपाणिवहविरइपालणाओ इहं परभवे य । सुहिणो भवंति जीवा सुनिच्छियं जन्नदेवो व्व ॥ ८ ॥

तथाहि—अत्थि इत्थेव जंबुद्दीवे [दीवे] भारहे खेत्ते कलिंगविसयप्पहाणा पउरगामा-ऽऽगर-निगमा-ऽऽसम-निवेसमणहरा सुवेला नामं नयरी ।

१ तेषाम् अतः ॥ २ आत्मधर्मेण ॥ ३ त्रिजगति ॥ ४ सदा ॥

नयरीए बाहिं गएण एगत्थ तरुतले गुणदत्तो नाम साहू गरुयगेलन्नपडिओ दिट्ठो । ततो जायपरमपक्खवाएण अच्चंतविणयवित्तीए भेसहाइसंपाडणेण य उवयरिउमारद्धो । अह सो तवस्सी [1]वेयणीयकम्मक्खतोवसमभावाओ भेसहाइसामत्थेण य जातो पगुणसरीरो । अन्नम्मि य वासरे विणयवित्तिरंजियमणेण तेण भणितो एगंते सुलसो—भो महाणुभाव !

"[2]नक्खत्तं सुमिणं जोगं निमित्तं मंत-भेसहं । गिहिणो तं न आइक्खे भूयाहिगरणं पयं ॥ १ ॥"

ति जइ वि गिहत्थं पडुच्च सव्वं निसिद्धं तहावि 'परमोवयारि' त्ति किं पि भणिज्जइ—तुमं अज्जदिणातो छट्ठे मासे सूरोदयवेलाए सूलोवक्कामियाऊ पंचत्तं [3]वच्चिहसि ता परलोयकिच्चेसु उज्जतो हविज्जासि त्ति । 'तह' त्ति आयन्निय सायरं सुलसो तओ दिणातो वि सविसेसकयधम्माणुट्ठाणो उज्झिऊण गिहवासं संपत्तो समणदिक्खं । कयमासियसंलेहणो य कालं काऊण माहिंदे कप्पे देवत्तणेण उववन्नो त्ति ।

इय कम्मयरो वि अजाइओ वि विणयातो तणयअब्भहिओ । जातो एसो गुणपयरिसं च [4]वड्ढिंतमणुपत्तो ॥ १ ॥
चारित्तं नाणं दंसणं च विणयं विणा विसीयंति । इय सव्वगुणसहाओ एक्को च्चिय जाइ विणयगुणो ॥ २ ॥ अपि च—

विनयस्य माहात्म्यम्

निरुपधिरपराधध्वान्तविध्वंसभानुः, सकलकुशलसिद्धौ सिद्धविद्याप्रयोगः ।
परहृदयकुरङ्गाकर्षणे गौरिगानं, विनयविधिरपूर्वं सर्वसम्पन्निधानम् ॥ १ ॥

१ वेदनीयकर्मक्षयोपशमभावात् भेषजादिसामर्थ्येन ॥ २ गाथेयं दशवैकालिके अ० ८ गा० ५० ॥ ३ व्रजिष्यसि ॥ ४ वर्धमानमनुप्राप्तः ॥

एवं च अच्चंतसिणेहभायणं जातो जन्नदेवो रन्नो, इयरो पुण [वज्झ]वित्तीए चेव । इओ य तीए चेव पुरीए महीधरसेणावइणो धूया मयणसुंदरी नाम । सा य पत्तजोव्वणा वि 'अविज्जमाणाणुरूववर' त्ति कन्नारूवेण वट्टंती ओलोयणगया दिट्ठा रायभवणमिंतेण[1] सिवदेवेण, साणुरागमवलोइऊण पुच्छितो नियपुरिसो—अरे ! का एसा ? । तेण जंपियं—सेणावइणो धूया । सिवदेवेण भणियं—परिणीया ? कन्नगा वा ? । तेण वुत्तं—कन्नगा, परं वरावलोयणा संपइ काउमायरेण पारद्धा, संपयं चेव केणइ परिणिज्जिहि त्ति ।

ततो सिवदेवेण तदुवरिगयाणुरायावहरियहियएण[2] परिचत्तं भोयणं, मुक्को सिंगारो, एगंते य सयणं काऊण ठिओ । भोयणसमए य अमच्चेण भणियं—सिवदेवो किं न आगच्छइ ? त्ति । केणइ परियणमज्झातो निवेइयं, जहा—न नज्जइ किं पि निमित्तं, एगंते पसुत्तो अच्छइ त्ति । ततो गतो अमच्चो तस्स समीवे, महुरगिराए भणिउं पवत्तो य—वच्छ ! किमेवं सोयाउरो[3] व्व अवहरियहियओ व्व दीससि ? साहेसु कारणं । लज्जाए न किं पि साहेइ एसो । ततो तम्मित्तमुहेण पुच्छितो । सिट्ठो य अणेण वुत्तंतो । जाणितो अमच्चेण, वुत्तो य एसो—वच्छ ! जइ एत्तियमित्तो एस संतावो ता वीसत्थो होसु, अकालपरिहीणं संपाडेमि एयं, कुणसु ताव भोयणं, चयसु कायरत्तं ति । पडिवन्नं सिवदेवेण, कया पाणवित्ती ।

अमच्चेण वि भोयणावसाणे पेसिया सेणावइणो समीवे धूयाजायणट्ठं[4] पहाणपुरिसा[5] । वियाणियागमणकारणेण य भणिया ते[6]

१ °वणमितेण प्रतौ ।। २ तदुपरिगतानुरागापहृतहृदयेन ।। ३ शोकातुर इव ॥ ४ दुहितृयाचनार्थम् ॥ ५ °सा । ठियानियाग° प्रतौ ॥ ६ तेण से° प्रतौ ॥

सेणावइणा—इयं हि दुहिया मए पुव्वमेव पडिवन्ना संधिवालसुयस्स नंदिघोसनामस्स, अओ जइ सो उज्झिही ता मंतिसुयस्स चेव दायव्व त्ति । 'न नज्जइ किं पि होहि' त्ति आउलीहूओ सिवदेवो अणुसासितो पिउणा, जहा—वच्छ ! अत्थ-सामत्थाईहिं तहा उज्जमिस्सं जहा तुह एसा भज्जा संपज्जइ त्ति । संधिवालसुएण वि सुतो मंतिमग्गिज्जमाणमयणसुंदरीवइयरो[1] । तयणंतरं च—

पुव्वमुदासीणो वि हु तीए कए बाढमुज्जओ जाओ । अन्नन्नगाहगे[2] अहव होइ पणयं[3] पि उ महग्घं ॥ १ ॥
उवरुवरि पुरिससंपेसणेण सेणावई वि इय वुत्तो । जाणिज्जसु नियधूयं परिणीयं पिव मए नवरं ॥ २ ॥
लोयववहारघडणट्ठयाए परिणयणजोग्गलग्गम्मि । तह पगुणो होसु तुमं जह वीवाहो लहुं होइ ॥ ३ ॥

इमं च जणपरंपराए सुयं सिवदेवेण । तओ पसरंतामरिसपयरिसायंबिरच्छिविच्छोहेण[4] नियवयस्सपुरतो पयंपियमणेण—अहो ! पेच्छह दुरायारस्स संधिवालसुयस्स नंदिघोसस्स दुट्ठत्तणं, जं पुव्वं तमवगन्निय मई अत्थित्तोवगए[5] तं चिय सव्वायरं संपयं चेव उव्वोढुमुवट्ठिओ त्ति । वयस्सेहिं भणियं—कुणउ किं पि सो, को पुण तुह एत्थ अमरिसो ? अज्ज वि अणिट्ठिया[6] भयवओ परमिट्ठिणो सिट्ठी, अवरा तग्गुणाइरित्ता धूया कस्सइ लब्भिही, मुंचसु सव्वहा तव्विसयमणुसयं । अह अंतोविप्फुरंतकोवावेगेण भणियं सिवदेवेण—

१ मन्त्रिमार्ग्यमाणमदनसुन्दरीव्यतिकरः ।। २ अन्यान्यग्राहके ॥ ३ पण्यमित्यर्थः ॥ ४ प्रसरदमर्षप्रकर्षाताम्राक्षिविक्षेपेण ।। ५ मयि अर्थित्वोपगते ॥ ६ अनिष्ठिता भगवतः परमेष्ठिनः सृष्टिः ।।

जुत्तिजुयं पि हु पेलवमुल्लवियम[1]निव्वडंतकज्जस्स । हीरइ [2]पवायवाएण केवलं लहु पलालं व ॥ १ ॥
ता किमिह बहुविहाहिं विहलाहिं वयणविरयणाहिं अहो ! । जइ सो तं परिणेही जमातिही ता धुवं होही ॥ २ ॥
किमपुव्वमिमं ? केसरिकिसोरकवलीकयं पि सारंगं । अभिलसिउमुज्जओ जंबुओ कहं पाउणइ कुसलं ? ॥ ३ ॥
किं वा न कुणइ पीऊसममरपेयं उवट्ठिओ पाउं । [[3]................................ ॥ ४ ॥
................................।] कमवत्थम[4]णुप्पत्तो [5]गहकल्लोलो अमयलोलो ? ॥ ५ ॥
एमाइगरुयसंरंभनिब्भरुल्लाविरं अमच्चसुयं । दट्ठूण वयंसा सामवयण[6]मिइं भणिउमाढत्ता ॥ ६ ॥
भो भो ! न जुज्जइ इमं वोत्तुं अच्चंतमणुच्चियं वक्कं । [7]सविसमहिं पि गसंतो महुरं च्चिय लवइ वणमोरो ॥ ७ ॥
[8]सो च्चिय साहेउमलं [9]कज्जं सज्जो सुदुकरं पि नरो । जस्स वयणं न नयणं दंसइ थेवं पि हु वियारं ॥ ८ ॥
जं हियए तं तत्थेव बज्झवित्तीए महुरमुल्लवसु । दंसइ किंपागफलं पि [10]बाहिमइमणहरच्छायं ॥ ९ ॥
एवमणुसासितो वि हु न जाव विरमइ स कलुसभावाओ । ताऽमच्च-जन्नदेवाण साहिओ तस्स वुत्तंतो ॥ १० ॥
तं च आयन्निऊण अमच्चो अच्चंतमादन्नो एगंते जन्नदेवेण समं आलोचिउं पवत्तो—किमियाणिं जुत्तं ? अयं हि

१ अनिष्पद्यमानकार्यस्य ॥ २ प्रवातवातेन ॥ ३ अत्रान्तरे लेखकप्रमादवशात् पाठस्त्रुटित आभाति ॥ ४ °**णुपात्तो** प्रतौ ॥ ५ 'ग्रहकल्लोलः' राहुः 'अमृतलोलः' अमृतलुब्धः ॥ ६ °**मिउ भ**° प्रतौ ॥ ७ सविषम् 'अहिं' नागं 'ग्रसन्' गिलमानः मधुरमेव लपति वनमयूरः ॥ ८ **सो जिय** प्रतौ ॥ ९ **कज्जो संज्ज सु**° प्रतौ ॥ १० बहिः अतिमनोहरच्छायाम् ॥

तुं[1]गाभोगं सालं सीलं व अखंडियं धरंतीए । जीए [2]पराण पवेसो निरुंभिओ कुलवहूए व ॥ १ ॥

तीए पुरीए [3]नीसेसवसुंधराहिवकिरीडकोडिटिविडिक्कियकमकमलो कमलावलि व्व विजि[4]यालिरायवग्गो [5]सुमित्तो नाम राया । सव्वंतेउरीपवरा सुग्गीवस्स व तारा नाम से भज्जा । परमपसायट्ठाणं बंधुदेवो य से अमच्चो । भज्जा य से महिम व्व पच्चक्खा महिमा नाम । पुत्तो य जन्नदेवाभिहाणो ताणं विणयाइगुणेहिं अणुगतो । तमणुजाओ य सिवदेवो नाम, परं निट्ठुरो पयईए । सव्वे वि कालमक्कमाविंति । अहिगयसमुच्चियकलाकोसल्लो सिवदेवो । पत्ता जोव्वणं, परिणाविया गरुयकुल-धूयाउ, विभिन्ना[6]हिगारे निउत्ता य रायाणं ओलग्गंति । [7]जाण-विन्नाण-विणय-नय-समयाणुरूववत्तव्व-परिभुत्त-बोहाइकोसल्ले दोण्ह [8]वि तुल्ले वि गाढतरमावज्जियं भूवइणो हिययं जन्नदेवेण । जंपियं च नियगोट्ठिनिविट्ठेण रन्ना—भो भो ! पेच्छह—

एगाण सरीरसमुट्ठितो व्व अन्नाण बज्झधरितो व्व । तुल्लो वि गुणगणो कह जाणिज्जइ दंसणेणा वि ? ॥ १ ॥
गोट्ठिट्ठिएहिं वुत्तं कहमेवं देव ! ? जंपियं रन्ना । पच्चक्खमिमं पेच्छह अमच्चपुत्ताण दोण्हं पि ॥ २ ॥
साभाविय व्व गुणसंपया दढं भाइ जन्नदेवस्स । दु[9]ग्गयसिंगारसिरि व्व विसरिसी पुण कणिट्ठस्स ॥ ३ ॥
ए[10]गंजणगाइसामग्गिसंभवे वि हु विलक्खणायारा । अहवा हुंति च्चिय केइ कह वि बयरीए कंट व्व ॥ ४ ॥

१ तुङ्गः आभोगः-विस्तारो यस्य एतादृशं शालम्, तुङ्गः अभोगः—भोगलालसाऽभावो यत्र एतादृक् शीलम् ॥ २ 'परेषां' शत्रूणां परपुरुषाणां च ॥ ३ निःशेषवसुन्धराधिपकिरीटकोटिमण्डितक्रमकमलः ॥ ४ कमलावलिपक्षे विजितः अलिराजवर्गः—भ्रमरराजसमूहः यया, राजा तु विजितः अरिराजानां—शत्रुनृपाणां वर्गः येन सः ॥ ५ **सुनिमित्तो** प्रतौ ॥ ६ °**गारि नि**° प्रतौ ॥ ७ ज्ञानविज्ञान– ॥ ८ **तुल्ले वि** प्रतौ ॥ ९ दुर्गतश्रृङ्गारश्रीरिव ॥ १० एकजनकादिसामग्रीसम्भवे ॥

अतिचार-भङ्गयोः स्वरूपम्

तिन्नो भवोयही तेण दिन्नमुदयं समग्गकुगईण । पत्तं चिय धम्मफलं वहविणिवित्ती कया जेण ॥ ७ ॥
केवलमिह पडिवन्ने कसायओ चयइ पंच अइयारे । बंध वहं छविछेयं अइभारं भोज्जविच्छेयं ॥ ८ ॥
बंधो निगडाईहिं वहो य लगुडाइणा छवी अंगं । कन्नाइ तस्स छेदो अइभारो गुरुभरारोवो ॥ ९ ॥
भोज्जाणं वोच्छेओ भत्ताईणं तु दाणपडिसेहो । गो-मणु[1]याइम्मि कया एते दूसंति वहविरइं ॥ १० ॥

नणु पाणाइवाओ च्चिय पडिवन्नवएण पच्चक्खाओ, न बंधाइणो, ता कहं तक्करणे दोसो ? विरईए अखंडत्तणओ त्ति । सच्चं । पाणाइवायपच्चक्खाणे ते वि पच्चक्खाय व्व दट्ठव्वा, त[2]ब्भावे तेसिं पि भावाओ; न य बंधाइकरणे वि वयभंगो किंतु अइयारो चेव । कहं ? जओ दुविहं वयं—अंतरवित्तीए बज्झवित्तीए य । तत्थ मारेमि त्ति वियप्पभावेण जया कोवाइभावेण परस्स मच्चुमगणिंतो बंधाईसु पयट्टइ न य जीव[3]घातो होइ तया दयाविवज्जियत्तणेण वयनिरवेक्खयाए अंतरवित्तीए वयभंगो, जीववहाभावाओ य बज्झवित्तीए वयपालणं । एवं च देसस्स भंगातो देसस्स य पालणातो अइयारसद्दो पयट्टइ । एवं सेसवएसु वि अइयार-भंगभावणा अवगंतव्वा । कयं पसंगेण ॥ छ ॥

बन्धातिचारे मिहिरकथा

बंधे मिहिरो वरुणो वहम्मि लीलावई छविच्छेए । अइभारे दिट्ठंतो मह्न धरो भुज्जवुच्छेए ॥ १ ॥

जन्नदेवेण भणियं—भयवं ! के पुण एते वहविरइअइयारकारिणो ? । सूरिणा भणियं—निसामेहि ।

वंसविसए कुडिन्नाभिहाणगामे मिहिरो नाम सावगो जीववहनिवित्तिं घेत्तूण गुरुपुरतो, गिहकज्जाइं कइवयकम्मयर-

१ °याईसि क° प्रतौ ॥ २ 'तब्भावे' प्राणातिपातभावे 'तेषामपि' बन्धादीनामपि भावात् ॥ ३ °ववाघा° प्रतौ ॥

वावारणेण चिंतेइ । अन्नया तेण एगो कम्मयरो अच्चंतमालस्साभिभूओ असच्चो सढो अविणीओ निद्दालुओ य निरूवितो य रयणीए गेहरक्खणनिमित्तं । सो य खणमेक्कं जग्गिऊण निस्संचारासु जा[1]यासु रच्छासु इओ तओ पलोइऊण पसुत्तो । जाए मज्झरत्ते 'अवि[2]ज्जमाणपाहरियं' ति लक्खिऊण भवियव्वयानिओगेण पविट्ठा चोरा । पाडियं खत्तं । कम्मवसेण पडिबुद्धो मिहिरो 'किमेसो सिसिरमारुयफरिसो ?' त्ति जाव सणियसणियं पलोयइ भवणभित्तीओ ताव पेच्छइ भित्तिच्छिड्डं निहुय-पयचारं चोरनियरं च मंदिर[3]ल्लुडणपयट्टं ति । तओ मरणभयविहुरो मिहिरो भवणोवरिं आरुहिऊण ह[4]लबोलं काउमारद्धो । पलाणा तक्करा, मिलिओ लोगो, तह वि न विरमइ निद्दा पाहरियस्स । लोगेण भणियं—को एस निब्भरं सुयइ ? । मिहिरेण जंपियं—कम्मयरो पाहरिओ त्ति । 'धन्नो सि तुमं जस्सेरिसो जामरक्खगो' त्ति हसिओ य लोगेण । कुविएण य बद्धो सो मिहिरेण मोरबंधेणं । वयणुग्गीरियरुहिरो य थेवेण अमतो मो[5]क्खं पाविओ कह वि लोगेण । एस बंधविसए अइ-यारो । बंधे त्ति गयं १ ॥ छ ॥ वहे य—

वधातिचारे वरुणकथा

कुणालाविसए संवरगामे वरुणो नाम बंभणो दिवायरसाहुसमीवे पडिबुद्धो, पव्वज्जं पडिवज्जंतो 'कोवणो' त्ति पडिसिद्धो स[6]माणो पंचाणुव्वइयं सावयधम्मं परिपालिंतो चिट्ठइ । सो य एगया पिय[7]रकज्जे निमंतितो धाइलवणिएण । जाए य भोयणसमए अन्नेहिं बंभणेहिं समं गओ भोयणत्थं तग्गिहे, आसीणो समुचियट्ठाणे । 'विधम्मो' त्ति न दिंति से

१ °यापुर° प्रतौ ॥ २ °माणं पा° प्रतौ ॥ ३ मन्दिरलुण्टनप्रवृत्तम् ॥ ४ हलबोलोलं प्रतौ । कोलाहलमित्यर्थः ॥ ५ °क्खो पा° प्रतौ ॥ ६ समणो प्रतौ ॥ ७ पितृकार्ये ॥

बंभणा नियपंतीए उवविसिउं । 'केण दोसेणाहं पंतिबज्झो ?' त्ति जंपियं वरुणेण । तेहिं वुत्तं—सावगो त्ति । वरुणेण भणियं—तुब्भं सयासाओ[1] गुणिणो हि सावगा ।

जे जीवे न हणंति नेव अलियं भासंति अन्नेसि नो, दे[2]वं नेव य इत्थियं किं[3]मु वरं वंछंति चित्तेण वि ।
घोरारंभ-परिग्गहाउ विरइं निच्चं पवन्ना य जे, ते हीलापयविं वयंति जइ[4] भो ! के धम्मवंतो[5] तया ? ॥ १ ॥

किञ्च रे दुष्टाः ! "वायव्यायां दिशि गामालभेत" तथा "महोक्षो वा महाजो वा, श्रोत्रियाय विशस्यते ।" इत्यादिवेदविकल्पितवाक्यैर्गामपि घातयन्तो न श्वपचेभ्योऽतिरिच्यन्ते भवन्तः, तद् यदि मातङ्गभूतेभ्योऽहं बहिर्भूतः किमकल्याणं जातम् ? इति । एवं च फरु[6]सं पयंपिरस्स ते वि लग्गा किं पि पलविउं । अह कुविओ वरुणो, उट्ठिओ य लउडमादाय, निरवेक्खचित्तेण य पारद्धो एगो मुंहरो[7] विप्पो पहणिउं । कंठावसेसजीविओ य मोयाविओ लोएणं । एवंविहे य वहे अइयारो त्ति । [वहे त्ति गयं] २ ॥ छ ॥ छविच्छेए य—

वाणारसीए सागरो नाम कुलपुत्तओ । तस्स दुवे भज्जाओ—कमला लीलावई य । पढमा निद्धम्मा, बीया पुण सावयधम्मपवन्ना पाणिवहविरया वल्लभा य बाढं भत्तुणो । इयरा य ईसाभरवित्थरंतकलुसासया छिड्डाइं से पलोइउं पवत्ता । लीलावई वि पव्वदिणे सविसेसकयतवोकम्मा पारणयदिणे य साहूणं दाऊणं भुंजइ । वहइ य प[8]तोसमियरा । अन्नया य

१ °ओ मुणिणो हिं सा° प्रतौ ॥ २ दव्वं ते व प्रतौ ॥ ३ किमव° प्रतौ । किमु पराम् ॥ ४ जयइ भो ! प्रतौ ॥ ५ °तो भया प्रतौ ॥ ६ परुषं प्रजल्पितुः ॥ ७ मद्दुरो प्रतौ ॥ ८ प्रद्वेषम् इतरा ॥

उवेहिज्जमाणो अकज्जं पि काउं ववसेज्जा, न हि कामंधा मुद्धा जुत्ता-ऽजुत्तं वियारिउं तरंति, न गणंति गुरुयणं, न लज्जंति सयणाणं, न बुज्झंति नियमज्जायं, जं च अणुसासणजोग्गं तं पि वयंसेहिं सिट्ठमेयस्स, अवगन्नियतव्वयणो य अम्हेहिं भन्नमाणो बाढं निल्ल[1]ज्जिममज्झवसिय जं कल्लं कुणंतो तमज्जेव काही ता एत्तो वोत्तुं न जुज्जइ, किंतु निज्जइ भयवतो वइरसेणसूरिणो समीवे, सुणाविज्जइ तेहिं धम्मवयणं, जाणाविज्जइ य जीवघायकम्मदुव्विलसियं ति मह अ[2]भिप्पातो । जन्न-देवेण भणियं—ताय ! सम्ममालोचियं, एयं चिय जुत्त[मेत्थ] पत्थावे । तओ अमच्चो जन्नदेवेण [सिवदेवेण य] परिगओ गओ सूरिणो समीवं । सव्वायरपणमियपायपउमो य आसीणो सन्निहियधरावट्ठे । गुरुणा वि पारद्धा धम्मकहा । उचियसमए जंपियम मच्चेण—भयवं ! सव्वस्स वि धम्मकम्म[3]गुणनिव्वाहस्स किं मूलं ? ति । सूरिणा जंपिओ—निसामेह—

नीसेसधम्मकम्मस्स मूलमक्खंति जीववहविरइं । सुहुमेयराण जीवाण रक्खणेणं च सा सम्मं ॥ १ ॥
नवरमिमा साहूणं सुनिच्छिया घडइ गेहिणो उ इमा । संकप्पिऊण धम्माइहेउ बेइंदियाईणं ॥ २ ॥
थूलाणं जीवाणं निरावराहाण घायचागम्मि । संभवइ जेण ते गेहगरुयवावारपडिबद्धा ॥ ३ ॥
पुढवाईणं सुहुमाण रक्खणे नो[4] खमा खणद्धं पि । आरंभगोयराणं अवराहीणं पि एमेव ॥ ४ ॥
दुविहतिविहाइभेएण सव्वहा गिण्हिऊण वहविरइं । एत्तियमेत्तेणं चिय होइ गिही देसचारित्ती ॥ ५ ॥
तेणेव मुणिवयाओ अणु सुहुमं वयमिमं जहक्खत्थं । अणुवयमक्खंति अओ सेसाणि वि एव जाणिज्जा ॥ ६ ॥

१ निर्लज्जिमानमध्यवस्य ॥ २ अभिप्रायः ॥ ३ °म्ममुणिनिवाह° प्रतौ ॥ ४ नो क्खम क्ख° प्रतौ ॥

भोज्यव्यव-च्छेदे धरकथा

मह्रुवणिएणं । तओ सो कइवयसहाइसमेओ दस करभे धन्नाइभरिए काऊण पट्ठिओ खंधावारं । मग्गे य वच्चंतस्स चरणट्ठं[1] मुक्का विणासिया तिन्नि करभा केसरिणा । 'किमित्तो कायव्वं ?' ति आदन्नो मह्रू । भणिओ य सहाइजणेण—किमेवं भो! वाउलो चिट्ठसि ? मयकरभभारं अवरेसु खिविऊण किं न पयाणयं देसि ? त्ति, न हि एत्तियमित्तेण किं पि किलामिज्जंति ? । ततो लोभाभिभूयत्तणेण अविभावियवयाइयारो[2] तदुवदंसियठिईए समहियभारारोवणं काऊण करभेसु गओ समीहियट्ठाणं, विणिवट्टियं भंडं, सिद्धकज्जो य नियत्तो सं ठाणं । नवरं अइभारपच्चइयहिययतोडपीडापरिगया[3] कालक्कमेण पत्ता पंचत्तं करभा । एस इह भवे य अणत्थो त्ति । अइभारे त्ति गयं ४ ॥ छ ॥ भोज्जवोच्छेए पुण—

गंधारविसए पंडुयाभिहाणगामे अणुव्वयधरो धरो नाम वणिओ हट्टवाणिज्जेण निव्वहइ । खेमिलाभिहाणो य से कम्मयरो हट्टोवविट्ठस्स पाणियाइसमप्पणेण उवट्ठंभे वट्टइ, तहाविहगिहकज्जे य पेसिओ वच्चइ । अन्नया य जायं दुब्भिक्खं, खीणा लोयाणं धण-धन्नसंचया, महग्घीभूयं धन्नं, सीयंति अच्चंतं पच्चंतवासिणो जणा सॉग-पत्ताईहिं[4] य पाणवित्तिं कप्पंति । अन्नया एगो गामनिवासी पुरिसो दम्मतिगं गहाय आगतो धरसमीवं भणिउं पवत्तो—दम्मतिगस्स धन्नं देहि त्ति । ततो दम्मे घेत्तूण धरेण भणितो खेमिलतो—अरे! इमस्स दम्मतिगस्स लब्भं धन्नं देहि त्ति । तेण वि वक्खित्तचित्तत्तणेण[5] चउदम्मदेयं धन्नं दाऊण विसज्जिओ गामीणो । जाए य वियालसमए जाव धरो दिणाऽऽय-वयलेक्खयं करेइ कम्मयरेण समं ता न पुंजइ[6]

१ चारीचरणार्थमित्यर्थः ॥ २ अविभावितव्रतातिचारः ॥ ३ अतिभारप्रत्ययिकहृदयत्रोटपीडापरिगताः ॥ ४ **सगग**° प्रतौ ॥ ५ व्याक्षिप्तचित्तत्वेन ॥ ६ पूर्यते ॥

एगो दम्मो, कणा य थोवा दीसंति त्ति पुच्छिओ कम्मयरो—केत्तियं तए तस्स धन्नं दिन्नं ? ति । तेण जंपियं—चउण्हं दम्माणं ति । 'आ पाव ! सुट्ठु मुट्ठो हं' ति परुट्ठेण धरेण निसिद्धं से भोयणं । अइछुहालुयत्तणेण कहासेसीहूओ[1] खेमिलतो । भुज्जवुच्छेय-न्ति गयं ५ ॥ छ ॥

इय भो महायस ! इमे पंचऽइयारे वि जाणिउं सम्मं । वज्जेज्जा निरवज्जं वयगहणविहिं समीहंतो ॥ १ ॥
वयसावेक्खत्ते[2] च्चिय अइयारत्तं इमाण विन्नेयं । तन्निरवेक्खत्ते[3] पुण भंगो च्चिय निच्छियं नेओ ॥ २ ॥
अइयारभीरुएण य कम्मयराई तमेव धरियव्वं । जं आणाए वट्टइ निच्चं किच्चेसु सभयं च ॥ ३ ॥
सिसुमाइसिक्खणत्थं कहिंचि बंधाइ कीरमाणं च । तह कायव्वं जह सो पलीवणाइसु पलाएज्जा ॥ ४ ॥
कोहाईणमभावे एवं गोपुच्छमाइछेदे वि । रोगपडियारहेउं कीरंते नत्थि अइयारो ॥ ५ ॥
कंबाइणा[4] वहे वि हु मम्मट्ठाणातो अन्नहिं अदोसो । सिक्खाहेउं खणमित्तमेव भोयणअदाणे वि ॥ ६ ॥
एवमइयारकालुस्सविरहियं हियमसेससत्ताण । पढमं अणुव्वयमिमं चरिउं जुत्तं सुहेसीणं ॥ ७ ॥

एवं गुरुणा सिट्ठे वेरग्गावन्नमाणसेण जहुद्दिट्ठं पडिवन्नं इमं जावज्जीवं पि जन्नदेवेणं । चित्तब्भंतरवियरंतपुव्वुत्ताणुसएण पिउ-भाईहिं भणिज्जमाणेण वि न सिवदेवेणं । वंदिऊण य ते मुणिं गया जहागयं ।

अह पुव्वुद्दिट्ठा सा सेणावइसुया जं किं पि लग्गविसेसमाइऊण[5] परिणीया संधिवालसुएण, नीया य नियघरं । निसामिय-

व्रतस्य विशुद्धिः अतिचार-भङ्गौ यतना च

१ °**हाविसे**° प्रतौ । मृत इत्यर्थः ॥ २-३ °**वेक्खेत्ते** प्रतौ ॥ ४ कम्बिकादिना ॥ ५ लग्नविशेषम् आदाय ॥

मिमं च सिवदेवेण । तओ समुप्पन्नगरुयकोवसंरंभो सो संधिवालतणयविणासणकएण छिड्डाइं गूढचरनियरनिरूवणेण पलोइउं पवत्तो । 'संधिवालसुए अहए न सेज्जाए सोयव्वं, न वियाले भोत्तव्वं, न मज्जा-ऽलंकारपरिग्गहो य कायव्वो' त्ति निच्छयं पवन्नो य । वियाणियएवंविहनिच्छएण य पिउणा जेट्ठभाउणा य एगंते सिक्खविओ बहुं एसो न थेवं पि चलितो दुरज्झवसायातो । इममेव वेरग्गमुव्वहंतो अमच्चो पुव्वुत्तसूरिसमीवे पव्वज्जं घेत्तूण विहरिओ । जन्नदेवेण वि महंतं संतावमुव्वहंतेण सिट्ठो मूलाओ एस वइयरो राइणो । तेणावि 'साहुसमायारो' त्ति पइट्ठिओ पिउणो पए जन्नदेवो । इयरो महुरवयणेहिं 'मा एवं करेज्जासि' त्ति अणुसासिओ वि अणुवित्तीए 'जं देवो आणवेइ' त्ति भणिय अवक्कंतो ।

अन्नया य समागओ महुसमओ । पयट्टो पुरीए मयणतेरसीमहूसवो । कयालंकारपरिग्गहो तिय-चउक्क-चच्चरेसु चंच[1]रीगेयविहलो वियंभिओ नयरनारीजणो । इओ य उवलक्खियकज्जमज्झेहिं चेरेहिं[2] आगम्म सिट्ठं सिवदेवस्स, जहा—संधिवालसुतो भज्जासमेतो मयणं पूइउं वियालसमए थेवपुरिसपरियरिओ पुरिबहियारामे वच्चिहित्ति । इमं सोच्चा परितुट्ठो सिवदेवो सव्वसामग्गिं काऊण नाणाविहपहरणहत्थो धाविओ तयभिमुहं[3] । उविंतो य जाणिओ संधिवालसुएण । ततो उग्गीरियाउहो ठिओ से संवडम्मुहो । जायं जुद्धं । 'असन्नद्धो' त्ति विणासितो [संधि]वालसुतो । इयरो वि जायकइवयपहारो[4] वि पलायमाणो मग्गतो पधाविऊण संधिवालेण घाएहिं पाडिऊण आणिओ पुरिं । निवेइया रन्नो वत्ता । 'दुव्विणीतो' त्ति उवेहिओ रन्ना । ततो कसिणवसणेहिं[5] कड्ढाविऊण महया निक्कारेण नयरीमज्झेणं वावाइओ एसो त्ति । जन्नदेवो पुण तव्वइव-

१ चर्चरीगेयविह्वलः ॥ २ चच्चरे° प्रतौ ॥ ३ अभिमुखः ॥ ४ °वयपयपहा° प्रतौ ॥ ५ °सहेहिं प्रतौ । कृष्णवसनैः कर्षयित्वा महता न्यक्कारेण ॥

तीए छिड्डं किं पि अपेच्छंतीए तिकालचिइवंदणपरायणं तमवलोइऊण कहियं पइणो—तुह एसा वसियरणत्थमित्थं खुद्दमंतं परिजवइ त्ति । तक्कहणाणंतरं च दइवदुज्जोगयवसओ तक्कालं चिय गेलन्नीहूओ एसो, लद्धावगासाए सविसेसं तीए पन्नविओ, मुद्धयाए 'तह' त्ति पडिवन्नो य । पुच्छिया लीलावई पइणा—किमेयं तुमं तिसंज्झं सुमरसि ? त्ति । तीए वुत्तं—देवं सरामि । इयरेण वुत्तं—को पच्चओ ? । संकियसवत्तिविप्पयारणावइयराए[1] य वागरियमिमीए—जो तुमं भणसि ? त्ति । तेण भणियं—जइ तुमं धम्मत्थिणि[2] च्चिय इमं कुणसि तो भित्तिलिहियदेवयावयणेण मम कुविगप्पं अवणेहि त्ति । 'एवं करेमि' त्ति ट्ठिया काउस्सग्गेणं सासणदेवयाए । मज्झरत्ते य पत्ते संकंता सा चित्तभित्तिविलिहियदेवयं, वोत्तुमारद्धा य—रे रे दुरायार ! इमीए धम्मदुट्ठाए[3] वयणेण धम्मसीलं लीलावइं अहिक्खिवसि[4] ता एस न भवसि त्ति । भीओ कुलपुत्तओ पायवडिओ खामेइ—न भुज्जो इमं काहामि[5] त्ति । गया जहागयं देवया । लीलावई वि जायकोवा पट्ठिया पियहरं पसाइया[6] पइणा भणइ—इमं छिन्नकन्नं निव्वासिसि ता अहं ट्ठामि त्ति । 'तह' त्ति लुणियकन्ना नीसारिया तेण । एवमेसो अइयारो । छविच्छेए त्ति गयं ३ ॥ छ ॥ अइभारारोवणे—

मरुविसए महू नाम वणिओ पडिवन्नाणुव्वओ वाणिज्जनिमित्तं करभवाहणेण वट्टइ । उवट्ठिओ तम्मि कालेण[7] सीमालेण समं तद्देसराइणो विग्गहो । ठियं सदेससीमाए चाउरंगं बलं । अप्पवेसाओ य धन्नाईणं महग्घीभूयं सव्वं । जाणियं च इमं

१ शङ्कितसपत्नीविप्रतारणाव्यतिकरया ॥ २ °त्थिनि च्चि° प्रतौ ॥ ३ धर्मद्विष्टायाः ॥ ४ °वति ता प्रतौ ॥ ५ कहा° प्रतौ ॥ ६ पिसा° प्रतौ । प्रसादिता ॥ ७ °लेण सी° प्रतौ ॥

सत्यवचन-
स्वरूपम्

इति वधविरतेर्विशिष्टमिष्टं, फलमतुलं प्रविलोक्य शुद्धबुद्धिः ।
[1]क्षणमपि न पराङ्मुखो भवेदमुष्याः, स्वसुत-सुहृत्स्वजना-ऽऽत्मविप्लवेऽपि ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे प्रथमाणुव्रतचिन्तायां [2]यज्ञदेवकथानकं समाप्तम् ॥ ३४ ॥

वहविणिवित्ती वि कया निरवज्जा जं विणा न संभवइ । तमियाणिं[3] अलियवयणच्चायं लेसेण साहेमि ॥ १ ॥
अलियमसच्चं वुच्चइ तं पुण भूयत्थनिण्हवसरूवं । अहव अभूयारोवणरूवं दुविहं पि दुट्ठमिमं ॥ २ ॥
अलियं समुल्लवंतो बंधइ पावं सुदारुणं पुरिसो । [4]परमप्पाणं च महावयण्ण[5]वे खिवइ निब्भंतं ॥ ३ ॥
जीहा-कन्नच्छेयातो अप्पयं पाडई महाणत्थे । साहुं पि तक्करोऽयं ति जंपिरो पुण परं पि जणं ॥ ४ ॥ अन्नं च—
सव्वं पि पइन्नापुव्वमेव वन्नंति[6] धम्मणुट्ठाणं । सा पुण वयणसरूवा वयणं पुण होइ जइ अलियं ॥ ५ ॥
ता सव्वं[7]मप्पइट्ठं जम-नियम-तवाइ धम्मकायव्वं । इय सच्चे च्चिय वक्के पइट्ठियं बिंति धम्मविहिं ॥ ६ ॥
सच्चं [8]परमं सोयं थंभइ सच्चं जलं च जलणं च । सच्चगिरापडिहणिओ न डसइ भीमो वि हु भुयंगो ॥ ७ ॥
सच्चेण वसं देवा वि इंति सव्वे वि हुंति मित्ताइं । इय सव्वगुणाहाणं सच्चं वयणं च्चिय पहाणं ॥ ८ ॥

१ अस्मिंश्चरणे लेखकप्रमादादक्षराण्यधिकानि प्रविष्टानीति च्छन्दोभङ्गः ॥ २ जज्ञ° प्र० ॥ ३ °णि य अ° खं० ॥ ४ परम् आत्मानं च ॥ ५ °न्नवि किख° खं० । महापदर्णवे ॥ ६ °ति तंममणु° खं० प्र० ॥ ७ सर्वमप्रतिष्ठम् ॥ ८ परमः शौचः ॥

सच्चेण सिरिं किर्त्ति च निम्मलं सायरो समणुपत्तो । तव्विवरीओ पुण तस्स चेव भाया दुही जाओ ॥ ९ ॥

तथाहि—अत्थि जंबुद्दीवावयंसभारहद्धधरणीतिलयकप्पं कप्पवासीहिं वि सलह[1]णिज्जरम्मयगुणं कंचणपुरं नाम नयरं । जहिं च रं[2]भाभिरामाउ बाहिं आराममूमीओ अंतो विलासिणीओ, [3]सकरुणसरलपुन्नागोवसोहिया बहिया तरुसंडा अंतो नायरवग्गा य । तहिं च निज्जियदुज्जे[4]याणेगसमरो समरसिंहो नाम राया मुद्धाभिसित्तो पवरअंतेउर-जुवराय-मंति-सेट्ठि-सेणावइपमुहपहाण[जण]परियरिओ रायसिरिमणुहवइ । तहा तत्थेव पुरे वत्थव्वा बंभणकुलसंभूया सत्थमग्गेसु कुसला दुवे अज्झावगा सायरो अग्गिसिहो य सहोयरा भिन्नगिहेसु निवसंता वेयरहस्सपाढणियं कुणंति । ते य खीरकयंबस्स उवज्झायस्स पासे पढिया एगया जणपरंपराए वुत्तंतं निसामिंति, जहा—

खीरकयंबो परोक्खीहूओ । तस्सीसाणं पि मज्झाओ वसू रायपयविं पत्तो । बीओ य धम्मसिस्सो नारओ, सो य विभिन्नोवस्सयट्ठिओ वेयरहस्सं वक्खाणेइ । तइओ उवज्झायसुओ पव्वयओ, सो य पिउपयविं पवन्नो अज्झावगवित्तिं कुणइ । सो य "अजेहिं जट्ठव्वं" ति वेयव[5]क्के "अजेहिं–छागेहिं जागो कायव्वो" त्ति वक्खाणंतो चिरसिणेहेण दंसणत्थमुवागएण निसिद्धो नारएण—अणुचियमिमं, यतः—"न जायन्त इति अजाः–त्रिवार्षिका व्रीहयस्तैर्यष्टव्यम्" इति उपाध्यायेन व्याख्यातं किं न स्मरति देवानाम्प्रियः ? इति । नियवक्खाणबहुमाणेण य न पडिवन्नमिमं पव्वयगेण । 'जो हा[6]रिही

१ °हनिज्ज° खं० ॥ २ रम्भाभिः–कदलीभिः अभिरामाः–मनोहरा आरामभूम्यः, विलासिन्यः पुनः रम्भाप्सरोवदभिरामाः ॥ ३ करुण-सरल-पुन्नागाख्यवृक्षैः उपशोभिताः तरुषण्डाः, नागरवर्गाः पुनः सदयैः सरलैश्चोत्तमपुरुषैः उपशोभिताः ॥ ४ °याणेग° खं० ॥ ५ °वक्कि अ° खं० ॥ ६ हारयिष्यति ॥

देवभद्दसूरि-विरइओ कहारयण-कोसो ॥ विसेसगु-णाहिगारो ।

॥२४८॥

तस्स जीहाछेओ कायव्वो' त्ति कया होड्डा[1] । 'एत्थ य पमाणं सहपढिओ वसू चेव रायं'[2] ति कओ निच्छओ । उचियसमए य उ[व]ट्ठिया दो वि रायाणं । निवेइओ य दोहिं वि तप्पुरओ निययाभिप्पाओ । राया वि जहट्ठियं तयत्थमणुसरंतो[3] वि पुव्वमेव उज्झाइणी[4]गाहियपव्वयगपक्खो "अजेहिं—छागेहिं चेव जट्ठव्वं" ति अजहट्ठियमुल्लवंतो असच्चभासणकुविय-कुलदेवयादिन्नकरचवेडापहारो पवन्नो पंचत्तं, पव्वयगो वि जीहाछेयमणुपत्तो त्ति ।

इमं च वइयरं सोच्चा सभावउ च्चिय पावभीरुणा सच्छसहावेण[5] भणियं सायरेण—अहो ! बाढमजुत्तं वक्खायं[6] पव्वयगेण, अजुत्ततरं च तमेव बहुमन्नियं वसुभूवइणा,[7] अहो ! गरुयाण वि मइमोहो, अहो ! आचंदकालियमवजसपंसुपूरपवित्थरणं, अहो ! सद्धम्मनिरवेक्खत्तणं च । इमं च सोच्चा कुविओ अग्गिसिहो जेट्ठभायरं पडुच्च जंपिउं पवत्तो—भो भो ! किमेवं पूयणिज्जेसु समत्थविज्जावियक्खणेसु वि अणुचियं उल्लवसि ? को दोसो भयवओ पव्वयगस्स अक्खरोवरि वक्खाणिंतस्स "अजेहिं—छागेहिं !" ति, जं पुण "न जायंति जे ते अजाः[8]—वीहिणो" त्ति वक्खाणं तं कहं वीहिणो त्ति निच्छियं ? पत्थरा वि किं न अजा भन्नंति ? तेसिं पि जणणाभावातो[9] त्ति । सायरेण भणियं—जइ एवं ता कीस वसू विघायमावन्नो ? पव्वयगो वि जीहाछेदेण विणट्ठो ? त्ति । अग्गिसिहेण जंपियं—सुद्धसमायाराणं किं[10] न निवडंति पुव्वकयकम्मदोसेण अणत्थसत्था ? किं न सुयं पुराणेसु मंडव्वरिसिणो चरियं तुमए ?—

१ पणमित्यर्थः ॥ २ राय त्ति प्र० ॥ ३ तदर्थमनुस्मरन्नपि ॥ ४ उवज्झा° प्र० ॥ ५ स्वच्छस्वभावेन ॥ ६ व्याख्यातम् ॥ ७ वसुभू° खं० प्र० ॥ ८ °जाः-व्रीहि° खं० ॥ ९ जणन्नाभा° खं० ॥ १० किं पि न खं० ॥

स्थूलमृषा-विरतौ सागर-कथानकम् ३५ ।

॥२४८॥

इयरावलोयणे वि अविचलियवहविरइपरिणामो वइरनिज्जायणत्थमुच्छाहिज्जंतो[1] वि पावलोएण, 'न किं पि इमिणा सिज्झइ' त्ति हसिज्जंतो वि मित्तेहिं उवसंतो भणइ—

बंधु-सुय-भाउएहिं अलाहि सद्धम्मविमुहहियएहिं । परमत्थवेरिएहिं व दूरं अवसायजणगेहिं[2] ॥ १ ॥
कम्मि य कीरउ वइरं ? दीसइ सयणेयरो य को तत्थ ? । जयमवि[3] जत्थ कुडुंबं भमिराण[4] भवे अणंतम्मि ॥ २ ॥
एवं पयंपमाणो रन्ना नयरीजणेण वि स धीमं[5] । इहलोए च्चिय महिओ सुगइं च गतो परभवम्मि ॥ ३ ॥
सक्को[6] वि न सक्कइ गुणपवित्थरं सव्वमेव परिकहिउं । वहविणिवित्तीए ता जएज्ज सव्वायरेण इहं ॥ ४ ॥ अपि च—

न तद् यागैरिष्टैर्न च सकलतीर्थस्नपनतो, वितीर्णैर्वा स्वर्णैर्न च गिरिशिरःभृङ्गमितिभिः ।
सुरागारैस्तारैर्न च विरचितैस्[7]तुङ्गशिखरैर्भवेत् तादृक् पुण्यं वधविरतितो यादृशमहो ! ॥ १ ॥
यद् दीर्घजीवितभृतस्तरुणीकटाक्षविक्षेपलक्षवपुषः पुरुषा भवन्ति ।
सल्लोकलोचनमहोत्सवकारिरूपाः, प्राणिप्रहाणविरतिद्रुमसत्फलं तत् ॥ २ ॥
जिनान्न देवोऽस्त्यपरः पृथिव्यां, गुरोः परो नो परमोपकारी ।
न जीवितव्यव्यपरोपणाच्च, पापं परं नो[8] विरतेश्च पुण्यम् ॥ ३ ॥

१ वैरनिर्यापनार्थमुत्साह्यमानोऽपि ॥ २ अवसादः—खेदः ॥ ३ जगदपि ॥ ४ भ्रमणशीलानाम् ॥ ५ धीमान् ॥ ६ पसत्थो त्ति न खं० ॥ ७ विचरितै° खं० ॥ ८ नोपरते° खं० ॥

प्राणवध-विरतेः माहात्म्यम्

स्थूलमृषा-विरतौ सागर-कथानकम् ३५ ।

किमहं करेमि फेडेमि देमि घाएमि वा जियावेमि ? । चिरकयकम्मणुरूवो सव्वो च्चिय मज्झ वावारो ॥ १४ ॥
तो चिंतइ झाणगओ किं पुण पुव्वं मए कयमकिच्चं ? । सूलाविद्धं जूयं[1] अह पेच्छइ वेच्छवालभवे[2] ॥ १५ ॥
संहरियकोवपसरो तयणु महप्पा मुणी स मंडव्वो । सकयं सोढव्वं च्चिय भाविंतो[3] पसममल्लीणो ॥ १६ ॥
इय भद्द ! मुंच वामोहवूहमवरे[4] भवम्मि विहियाण । सुकयाण दुक्कयाण य नो छुट्टइ देवराओ वि ॥ १७ ॥

ता सव्वहा जहट्ठियं वक्खाणितस्स वेयवक्के[5] न दोसलेसो वि महाणुभावस्स पव्वयगस्स, न य तक्कयबहुमाणस्स वसुराइणो त्ति । इमं च सोच्चा सुहुममइविमरिसियकज्जमज्झेण[6] जंपियं सागरेण—रे मुद्ध ! अलमलं तुह विचारेण, जत्थ जीववहो अलाहि तेण वक्खाणेण, किंच जइ ते असच्चभासादोसवंतो न हवंति ता किं तक्काले च्चिय अणत्थं पत्ता ? जे वि चोरिकाए कारिणो तक्काले वावाइज्जंति[7] ताण वि पुव्वकालियं को वि न[8] कम्ममुक्कित्तइ किंतु तक्खणकयं चोरिक्कमेव संसइ त्ति । इमं च गुरुकम्मयाए न मणागम[वि] पडिवन्नं अग्गिसिहेणं । 'किं इमिणा सुक्कवाएणं[9] ?' ति पयंपमाणो बाढममरिसियमाणसो ज्झड त्ति अवक्कंतो सो तस्स समीवाओ ।

सागरो पुण समुप्पन्ननिम्मलपन्नाइरेगो पवड्ढन्तसद्धम्मकम्माभिरई लोयमुहातो निसामिऊण [वइरसेण][10]सूरीणमागमणं गतो तयंतियं, पडिओ पाएसु, विन्नविउं पवत्तो य—भयवं ! पुव्वं मए सुवेलाए पुरीए अमच्चस्स सपुत्तस्स तुब्भे धम्मं

१ यूकाम् ॥ २ वत्सपालभवे ॥ ३ भावयन् प्रशममालीनः ॥ ४ व्यामोहव्यूहम् ॥ ५ वेदवाक्य ॥ ६ सूक्ष्ममतिविमृष्टकार्यमध्येन ॥ ७ व्यापाद्यन्ते ॥ ८ न कम्म° प्र० ॥ ९ शुष्कवादेन ॥ १० दृश्यतां पत्रम् २४२ पृष्टम् २ ॥

॥२४९॥

उवदिसंता वंदिया पज्जुवासिया य, तहा पवन्नो य जीववहनियमो, संपयं च अलियवयणनिवत्तिं[1] काउमिच्छामि, अतो तस्सरूवं साहेहि त्ति । सूरिणा भणियं—निसामेसु,

स्थूलमृषा-विरतेः स्वरूपं तदतिचारा-स्तद्भङ्गा-तिचारयोः स्वरूपं च

थूलमुसावायस्स य विरई बीयं अणुवयं तस्स । विसओ कन्ना-गो-भू-नासाहर-कूडसक्खेज्जं ॥ १ ॥
कन्ना दुपयं गो चउप्पयं च अपयं वसू य भूमी[2] य । दो सगए[3] च्चिय भेया इह वज्जइ पंच अइयारे ॥ २ ॥
सहसा अब्भक्खाणं रहसा य सदारमंतभेयं[4] च । मोसोवएसमवरं वज्जइ तह कूडलेहं च ॥ ३ ॥
सहसा अविभाविता अब्भक्खाणं असंतदोसाणं । आरोवणं हि जारो चोरो व तुमं हि इच्चाइ ॥ ४ ॥
रह एगंतो भन्नइ मंतन्ते तत्थ पेच्छिउं कोइ । अब्भक्खाइ जहेते रायविरुद्धाइं जंपंति ॥ ५ ॥
नियभज्जाए एगंतभासियाइं कहेइ अन्नेसिं । एवंरूवो हि सदारमंतभेतो विणिद्दिट्ठो ॥ ६ ॥
मोसं अलियं भन्नइ तं अन्नं सिक्खवेइ कं पि नरं । इममेयं[5] च वएज्जसु एसो मोसोवएसु[6] त्ति ॥ ७ ॥
कूडेहिं असब्भूओ लेहो वन्नावलीलिहणरूवो । तस्स करणं विहाणं अइयारो पंचमो एस ॥ ८ ॥

नणु अब्भक्खाणं अविज्जमाणदोसाभिहाणत्तेण पच्चक्खायं चेव ता कहं न भंगो ? जमेवं अइयारो कित्तिज्जइ ? । सच्चं । जया परोवघायगं अणाभोगाइणा भासइ तया तहाविहसंकिलेसाभावेण वयसावेक्खयाए[7] न भंगो, परोवघायहेउत्तणतो य

१ °निविर्त्ति प्र० ॥ २ °मीए खं० प्र० ॥ ३ °गय च्चि° प्र० । द्वौ स्वगतौ ॥ ४ स्वदारमन्त्रभेदः ॥ ५ इदमेवं च वदेः ॥ ६ °एसो त्ति प्र० ॥ ७ व्रतसापेक्षतया ॥

भंगो इति भंगा-ऽभंगरूवो अइयारो एसो, इहरहा भंगो चेव १ । २ । सदारमंतभेदो पुण जइ वि सव्वो अइयारत्तं न पवज्जइ तह वि तं[1]दुत्तपयडणुप्पन्नलज्जाइवसा मरणाइसंभवेण दाराईणं परमत्थओ य सच्चसब्भावातो तस्स कहं पि भंगरूवत्तेण अइयारो चेव ३ । तहा मोसोवएसो जइ वि[2] 'मुसं न वएमि अन्नं च न वयावेमि' त्ति वयगहणे भंगो चेव, तह वि सहसाकारेण अणाभोगेण वा अइक्कमाईहिं वा मुसावाए पैरं[3] पयट्टिंतस्स अइयारो चेव । अहवा वयसंरक्खणबुद्धीए पैरं वुत्तंतकहणदारेण मुसोवएसं दिं[4]न्तस्स वयसावेक्खत्तणेण भंगा-ऽभंगभावणा दट्ठव्वा ४ । कूडलेहकरणं पि जइ वि 'काएण मुसावायं न करेमि न कारवेमि' त्ति पवन्नवयस्स भंगो चेव, तहावि पुव्वुत्तसहसाकाराइहेउभावातो अइयारत्तं दट्ठव्वं । अहवा 'मुसावातो त्ति मुसाभणणं मए पच्चक्खायं, एयं पुण लेहलिहणं' ति भावणाए मुद्धबुद्धिणो वयसावेक्खत्तणेण अइयारो त्ति ५ । अलं पसंगेण ॥ छ ॥

एवमिमे अइयारा न हुंति सिवगामिणो मणूसस्स । वयगहणे वि उविंतीयरस्स सुरहो इहं नायं ॥ १ ॥

सागरेण भणियं—भयवं ! को एस सुरहो ? । सूरिणा भणियं—आयन्नसु त्ति ।

सोरट्ठविसए मंगलपुरं नाम नयरं । निसढो नाम तहिं राया । सुरहो य रायकारणियपुरिसो गुविलरज्जकज्जाइं चिंतइ । थावच्चापुत्तसूरिसमीवे य पवन्नो तेण सावयधम्मो, अणुवयाइं च गहियाइं, पालेइ य निरइयाराइं ।

अन्नया य सिंहलदीवराइणो पहाणपुरिसा रायकज्जेण तहिं समागया । 'पुव्वरूढि' त्ति निमंतिया नियघरे सुरहेण, जेमाविया कइवयदिणाणि । साहियक[5]ज्जा ते गया जहागयं । तद्दिणे य तम्मंदिरे पडियं खत्तं, गयं गेहसारं, निवेइया राइणो

१ तदुक्तप्रकटनोत्पन्नलज्जादिवशात् ॥ २ °वि न 'मु° प्र० ॥ ३ परवु° खं० ॥ ४ दिन्नस्स खं० प्र० ॥ ५ °ज्जा वि गया खं० प्र० ॥

किर मंडव्वमहरिसी झाणेगग्गं परं समारूढो । विजणम्मि पएसे थिमियलोयणो रुद्धपवणगमो ॥ १ ॥
दिट्ठो चोरेणऽणुमग्गलग्गतलवरभडोहभीएण । तो तप्पुरओ मोसं मोत्तूणं ज्झत्ति सो नट्ठो ॥ २ ॥
तलवरनरा वि तप्पिट्ठओ य पत्ता मुणिस्स तं पुरओ । पेच्छंति मोसमह कलुसबुद्धिणो ते विचिंतंति ॥ ३ ॥
काऊण चोरियं मोसहत्थओ नासिउं अं[1]चाइंतो । मुणिडं[2]भेणं चोरो कहेस झाणं पवन्नो व ? ॥ ४ ॥
अह सो मोससमेतो बंधित्ता भूवइस्स उवणीतो । एवंविहरूवोऽयं चोरो मुसइ त्ति सिट्ठो य ॥ ५ ॥
तो कुविएणं रन्ना वज्झो अ[3]विमंसिऊण आणत्तो । किंकरनरेहिं आरोवितो य तिक्खग्गसूलाए ॥ ६ ॥
नो किं पि तेण नायं ता जा सा सूलिया उरो भेत्तुं । नीसरिया पीडा वि हु जाया अच्चंतदुविसहा ॥ ७ ॥
अह जायगरुयपीडो स महप्पा मुक्कझाणवक्खेवो । सूलाए भिज्जंतं नियदेहं पेहइ मसाणे ॥ ८ ॥
तो जायतिव्वकोवो चिंतइ घाएमि किं इमे पुरिसे ? । अहवा मूढा एए कम्मयरा नावरज्झंति ॥ ९ ॥
अवराहपयं भूमीवई परं जो न याणइ अणज्जो । साहुमसाहुं व फुडं ता तं घाएमि अवियारं ॥ १० ॥
अहवा तस्स वि दोसो न कां[4]मवामोहियस्स मूढस्स । अवरज्झइ पैह[5]वंतो स धम्मरातो इहं पावो ॥ ११ ॥
ता तं चिय नियतवहुयवहेण सलभं व निद्दहामि दढं । इय जाव ससंरंभो बंधइ लक्खं तमुद्दिस्स ॥ १२ ॥
ता चित्तगुत्तजुत्तो स धम्मरातो तयंतियं पत्तो । जंपइ मुणीसर ! मह किं संरंभं मुहा वहसि ? ॥ १३ ॥

१ अशक्नुवन् ॥ २ °णिभंडेणं खं० ॥ ३ अविमृश्य आज्ञप्तः ॥ ४ अत्यन्तव्यामूढस्येत्यर्थः ॥ ५ प्रभवन् स धर्मराजः ॥

ति । अह असद्दहंतीए य इमं तीए नियंसणावणयणेण[1] पच्चक्खीकाऊण विसज्जितो एसो । निप्पच्चासा[2] य पसुत्ता इमा सयणिज्जम्मि । सुरहो वि कज्जमज्झं बुज्झिय गतो निययावासं, सुहसेज्जाए निसन्नो चिंतिउं पवन्नो—

सुकुलुग्गया वि धम्मन्नुया वि ववसइ[3] इमा वि जइ एवं । ता पुहईए महिलाण सीलसलिलंजली दिन्नो ॥ १ ॥

को मुणइ भूरिभंगं[4] जिणवयणं पिव मणो मयच्छीण । पायडियबहुवियारं दुल्लक्खगमं च कुसलो वि ॥ २ ॥

वीसंभनिब्भरं नियमणं पि बाढं कहिं च विस्समउ ? । पाणप्पिए वि दीसइ जत्थ जणे एरिसमकिच्चं ॥ ३ ॥

एवं च सो समुप्पन्नविचिकिच्छो पसुत्तो खणमेक्कं । पभायसमए य पुरिसपेसणेण जाणावियनिययागमणो[5] पविट्ठो नियभवणे । रहस्समिमं च हिययंतो धरिउमपारयंतेण निवेइयं मित्तस्स । तेण वि तब्भज्जाए, जहा—तुह रयणिदुव्विलसियमसेसं सुरहेण एगागिणा पच्छन्नट्ठिएण पच्चक्खीकयं ति । इमं च सोच्चा बाढं विलिया 'कहं पइणो नियवन्नं[6] दंसिस्सामि ?' त्ति विसभक्खणेण विवन्ना एसा । एवं चाणत्थफलो जातो सुरहस्स तइओ अइयारो ३ ।

अह सुपइट्ठदूएण निययाहिगारववरोवणातो[7] वियाणियसुरहवइयरेण जायगरुयकोवेण समइसमुप्पाइयदूसणनिवेयणेण

१ निवसनापनयनेन ॥ २ निष्प्रत्याशा ॥ ३ धर्मज्ञाऽपि व्यवस्यति ॥ ४ जिनवचनं 'भूरिभङ्गं' प्रभूतभङ्गजालयुतम् , मृगाक्षीणां मनः पुनः क्षणे क्षणे भञ्जनशीलमिति भूरिभङ्गम् । पुनश्च जिनवचनं प्रकटिता बहवो विचारा यत्र, तथा दुर्लक्षाः–अगम्याः गमाः–सदृशपाठरूपा आलापका यत्र तादृशम् ; मृगाक्षीमनः पुनः प्रकटिता बहवो विकारा येन, दुर्लक्षः–अगम्यः गमः–गतिर्यस्य तादृशमिति ॥ ५ ज्ञापितनिजकागमनः ॥ ६ 'निजवर्णम्' आत्मरूपमित्यर्थः ॥ ७ निजकाधिकारव्यपरोपणात् ॥

चडाविओ[1] सुरहोवरि राया । जाणिओ य एस वइयरो सुरहेण । ततो उप्पन्नचित्तसंखोभेणं[2] वाहारिऊण[3] नियमित्तो भणितो, जहा—ममोवरि राया कुवितो वट्टइ, अतो एवमेयं[4] अलियं तुमए वोत्तूण उत्तारणिज्जो, अहं हि अलियवयणकयपच्चक्खाणो कहं सयं भासिस्सामि ?–त्ति सिक्खं दिंतस्स[5] तस्स जातो चउत्थो अइयारो ४ ।

उचियपत्थावे वाहराविओ सो राइणा । ततो सुपइट्ठदूयं पडुच्च कूडलेहे लिहिऊण 'अलियस्स भासणे दोसो, न लिहणे' त्ति विभावितो पंचमाइयारपवन्नो गओ राउलं ५ ।

पायवडिओ आसणासीणो संभासिओ नरनाहेण—तत्थ किं सिद्धं ? ति । सुरहेण भणियं—देव ! मए आदप्पितो सो सीमालभूवालो, पारद्धा य तेण संधिघडणा, परं देव ! जत्थ देवघरभेदो तत्थ का कज्जसिद्धी ? । रन्ना जंपियं—कहमेयं ? । सुरहेण भणियं —एगंते कहिस्सं । ततो ठिया एगंते । सुरहेण दंसिया कूडलेहा । वाइया नरिंदेण, अवगतो छेय-भेयप्पहाणो सुपइट्ठदूयलेहपेसणसंबंधो । ततो विम्हिएण रन्ना उट्ठियम्मि सुरहे वाहरावितो सुपइट्ठो । दंसिया लेहा । सुपइट्ठेण भणियं—देव ! जइ एवंविहरायविरुद्धकारी ता सोहेमि जलणप्पवेसाइणा वि अप्पाणं–ति ठितो सो निच्छएणं । कयं च दुट्ठदेवयापुरो दिव्वग्गहणं, विसुद्धो एसो । सव्वस्सावहरणेण[6] दंडिओ सुरहो, 'असच्चवाइ' त्ति लोए अजसं पत्तो, 'कारणितो' त्ति न मारावितो रन्ना । एवमेते साइयारवयपडिवत्तीए दोसा इहलोए वि त्ति ॥ छ ॥

एवमइयाररहियं असच्चविरइं निसेविउं धीरा । सयलजणसलहणिज्जा कल्लाणपरंपरमुविंति ॥ १ ॥

१ 'आरोपितः' कोपित इत्यर्थः ॥ २ °ण निय° प्र० ॥ ३ 'व्याहार्य' आहूय ॥ ४ एवमेवमित्यर्थः ॥ ५ दिंत° प्र० ॥ ६ सर्वस्वापहरणेन ॥

तो सागरेण भणियं भयवं ! मे अलियवयणविणिविर्त्तिं । जावज्जीवं थूलं दुविहं तिविहेण देह त्ति ॥ २ ॥
गुरुणा वि भव्वपयइं वियाणिउं गाढधम्मसद्धं च । दिन्ना असच्चजंपणविणिवित्ती तस्स जाजीवं ॥ ३ ॥
अह तद्देसगएणं अग्गिसिहेणं निसामिउं एयं । धम्मविहिविरुद्धेणं सासूयं जंपियं एवं ॥ ४ ॥
भयवं ! को एत्थ गुणो वयगहणे ? पुव्वकम्मवसगाणं । एइ बला सच्चेयरउल्लावो भावविरहे वि ॥ ५ ॥
ता तक्कम्मखंते[1] चिय तव्विरई जुज्जए इहं काउं । इहरा तब्भंगवसा तक्करणं निप्फलं चेव ॥ ६ ॥
गुरुणा भणियं मा वयसु एरिसं विरइवारगं कम्मं । एवं चिय जाइ खेयं[2] तस्स खए किं च विरईए ? ॥ ७ ॥
जह ओसहप्पतोगे[3] कमेण रोगो गुरू वि जाइ खयं । एवं विरईकरणे तव्वारगमवि[4] असुहकम्मं ॥ ८ ॥
तुज्झ मएणं भद्दय ! रोगखए ओसहप्पतोगो[5] वि । काउं जुज्जइ नवरं तस्स खए ओसहेणं किं ? ॥ ९ ॥
इय गुरुणा संलत्तो दाउं पच्चुत्तरं असक्कंतो । गाढुव्वूढामरिसो[6] जहागयं सो गतो ज्झत्ति ॥ १० ॥

सागरो वि पसरंतचित्तपरमपरितोसो सूरिं वंदिऊण भावसारं अहिणंदिऊण पडिगतो नियघरं । पुच्छितो य घरिणीए[7]—भद्द ! कहिमेत्तियवेलं ठितो ? त्ति । सागरेण वि सिट्ठो नियमवइयरो । अह जायकम्मलाघवाए तीए भणियं—अहं पि एवंविहनिविर्त्तिं करेमि त्ति । तेण भणियं—एवं करेसु त्ति । ततो नीया सा गुरुणो समीवे, गाहिया सम्मत्तगुणसणाहं

१ °खतो च्चि° खं० प्र० ॥ २ खमं खं० प्र० ॥ ३ औषधप्रयोगे ॥ ४ तद्वारकमपि ॥ ५ औषधप्रयोगोऽपि ॥ ६ गाढोद्व्यूढामर्षः ॥ ७ °घरणी° प्र० ॥

वत्ता, दिन्नो पडहगो—जो मोससुद्धिं कहइ तस्स अट्ठसयं सुवन्नस्स देमि त्ति । किं पि केणइ न सिट्ठं । अह तलवरेण सो पुट्ठो—को तुह घरे पुव्वमागतो आसि ? त्ति । सुरहेण भणियं—हुं सुमरियं, सिंहलाहिवपहाणपुरिसदुव्विलसियमिमं, ते हि मह घरे ठिया कइ वि दिणाणि, घरमज्झं बुज्झिय एवं ववसिय त्ति । इमं च सहसा जंपिरेण अइयरियं बीयव्वयं १ ।

अवरम्मि य समए राइणो सीमालराइणा समं जातो विग्गहो । सुरहेण वावारिया गूढचरा 'पुरमज्झे को किं जंपइ ?' त्ति । अप्पणा वि वेसपरावत्तं काऊण निग्गतो पुरतो बाहिं कइवयनरसहिओ चारोवलंभनिमित्तं । तव्वेलं च राइणो पहाणदूओ सुपइट्ठो नाम किं पि घरकिच्चं कइवयविसिट्ठपुरिसेहिं सममेगंते मंतिंतो दिट्ठो सुरहेणं । जंपियं च अणेणं—नूणं सीमालभूवइकतोवयारो किं पि रायविरुद्धं मंतइ, निच्छियं न हवइ सुद्धसमायारो त्ति । एवं च जातो से बीओ अइयारो २ ।

तं च तज्जंपियं कहिं पि आयन्नियं रन्ना । ततो जायतव्विचिगिच्छेण[1] राइणा सुरहो वाहरिऊण तस्स चेव सीमालभूवइस्स पासे पेसितो दूयकज्जेणं । नियवयणकोसल्लेण घडियसंधिकज्जो य वलितो नियपुराभिमुहं । अह नियपुरपच्चासन्नमणुपत्तो नियपरिवारं मोत्तूण घरपरिवारसरूवमुवलक्खिउं[2] पच्छन्नवेसेण एगागी चेव पसुत्तेसु लोएसु मज्झरत्तसमए गतो नियघरं । पविट्ठो अवद्दारेण वासभवणं जालगवक्खच्छिड्डेण[3] पलोइउं पवत्तो । तहिं चावसरे विवित्तं काऊण भज्जाए वाहरिऊण खुज्जचेडो वावारितो विसयसेवानिमित्तं । तेण भणियं—कहमेवं ? अहं हि हीणरूवो अच्चंतं विलीणकातो[4] य, तुमं पुण सुरसुंदरि व्व मणोहरावयवा, तत्थ वि अहं एवंविहाकिच्चकरणपसायातो तावसीसंभोगातो हरो व्व छिन्नलिंगो वट्टामि, ता मुयसु ममं

१ जाततद्विचिकित्सेन ॥ २ गृहपरिवारस्वरूपमुपलक्षयितुम् ॥ ३ जालगवाक्षच्छिद्रेण ॥ ४ विलीनकायश्च ॥

जुत्तं छागेहिं जागो कायव्वो ? वीहीहिं वा ? । अज्झावगेहिं भणियं—देव ! कन्नपरंपराए सुयमिमं नारय-पव्वयगाणं विसंवायपयं, तव्विणिच्छियाणुसारेण वीहिहोमो चेव काउमुचितो त्ति । इमं च सोच्चा राइणा पलोइयं अग्गिसिहाणणं । अह अतुच्छमिच्छत्तच्छन्नपन्नाविसेसेण वि[1]सप्पंताणप्पदप्पप्पहाणं पयंपियमग्गिसिहेण—देव ! कु[2]म्भमुब्भामियमइणो मिग व्व कज्जमज्झमबुज्झमाणा परपच्चयं चिय पमाणीकाऊण किच्चेसु पयट्टंति न उण सुद्धबुद्धिणो, ता सब्भूयमग्गमवहाय किमेस कप्पणाववहारो अंगीकीरइ ? । सेसेहिं भणियं—महाराय ! किं पि भणउ एसो, अम्हे पुण दि[3]ट्ठाणत्थं पंथं न समत्थेमो । ततो राइणा पुच्छिओ सागरो—किमियाणिमुचियं ? ति । तेण भणियं—महाराय ! एए उवज्झाया जं भणंति, किं सेसेहिं ? ति । अह तव्वयणेण बाढमुद्दीवियकोवहुयासणो अग्गिसिहो भणिउं पवत्तो—

भूनाह ! नत्थि इह को वि जाणगो कीस संसयं वहह ? । आपुच्छह कीस इमं पि भायरं मज्झ वामूढं ? ॥ १ ॥
जो वेयमग्गबज्झं सेयंबरदंसणं किर पवन्नो । बज्झपवित्तीए च्चिय बंभणसद्दं समुवहइ ॥ २ ॥
एए य पि[4]यरसद्धाई[5]वारिणो जाग-होमविहिविमुहा । अज्झावगनामधरा किं वा साहिंतु परमत्थं ? ॥ ३ ॥
ता जइ अजा न छागा हवंति तो हं गहाय दिव्वं पि । सच्चीकरेमि एयं किं नरवर ! वहसि संदेहं ? ॥ ४ ॥
पडिवन्नमिमं रन्ना फालो पगुणीकओ सिहिसरिच्छो। कयका[6]लोचियकिच्चो उवट्ठिओ तयणु अग्गिसिहो ॥ ५ ॥

१ विसर्पदनल्पदर्पप्रधानम् ॥ २ कुभ्रमोद्भ्रामितमतयः ॥ ३ दुन्नित्थं खं० ॥ ४ पितृश्राद्धादिनिवारका इत्यर्थः ॥ ५ °इकारि° खं० प्र० ॥ ६ °लोच्चिय° खं० ॥

जइ मह पक्खो वितहो ता देव हुयास ! करयलं दहसु । इति जंपिरेण तेणं गहितो फालो निदड्ढो य ॥ ६ ॥
खुद्दो खुद्दो त्ति प[1]यट्टतालरवनिब्भरं पुरजणेणं । आघोसियं निवेण वि असच्चवाइ त्ति सो पावो ॥ ७ ॥
नि[2]च्छूढो नयरातो इयरो पुण पूइतो पयत्तेणं । सुगइं च समणुपत्तो दुक्खमणंतं च अग्गिसिहो ॥ ८ ॥
इय एत्थेव भवम्मि वि असच्च-सच्चाण दोसमिय[3]रं च । पेच्छंता वि हु मूढा हियपक्खं नावकंखंति ॥ ९ ॥ किञ्च—
सच्चं पि हु तमसच्चं जीवाण वहो जहिं भवे वयणे । तमसच्चं पि हु सच्चं तेसिं पि हु रक्खणं जत्थ ॥ १० ॥
एत्तो च्चिय भासेज्जा बुद्धीए विभाविऊण तं वयणं । जं अप्पणो परस्स य न सव्वहा जणइ संतावं ॥ ११ ॥
इह-परभवे य दुक्खं अ[4]स्सच्चपयंपिराण पुरिसाण । ता कीस एत्थ अत्थे सुहत्थिणो नो विरज्जंति ? ॥ १२ ॥ किञ्च—

इह हि यदुपजिह्वाव्याजविक्षिप्तशक्तिर्यदपि दशनदौस्थ्यादस्तवाक्पाटवश्च ।
यदपि च मुखनिर्यत्पूतिगन्धश्च कश्चित्, तदनृतवचनानां स्फूर्जितं प्राहुरीशाः ॥ १ ॥
गगनगमन-दूरालोकनेच्छाविहारा-ऽञ्जनविधि-रसवादाद्यौषधीसिद्धयोऽपि ।
अनृतमभिदधानं मानवं वित्तहीनं, विटमिव पणनार्यो दूरतः सन्त्यजन्ति ॥ २ ॥
नरकपथसहायो वर्यकार्याञ्जरा[5]शिप्रलयतुहिनवर्षः प्रत्ययाद्रीन्द्रवज्रः ।
सुचिर[....]शतसस्यस्फीतदुर्वात्तपातः, कथय कथमलीकालाप एष श्रियेऽस्तु ? ॥ ३ ॥

१ प्रवृत्ततालरवनिर्भरम् ॥ २ निक्षिप्तः ॥ ३ 'इतरं' गुणम् ॥ ४ असत्यप्रजल्पनशीलानाम् ॥ ५ °राशीप्र° खं० प्र० ॥

इति निरवधिदोषासारसन्तापभीतापसृतसुगुणराजीराजहंसीसमूहः ।
वितथवचनयोगः कोऽपि सद्बुद्धिरोगस्तदपि हृदयहारी ही ! कथं बालिशानाम् ? ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे द्वितीयाणुव्रतचिन्तायां सागरकथानकं समाप्तम् ॥ ३५ ॥

अणलियवयणो[1] वि गिही परदव्वं चोरिउं समीहंतो । न हु जाइ सुहाभागी ता तव्विरइं अओ वोच्छं ॥ १ ॥
दव्वं धण-कणगाई सच्चित्ता-ऽचित्त-मीसयं जाण । परसंतियं[2] हि हेयं दूरेणं विसतरुवणं व ॥ २ ॥
तग्गहणवासणा वि हु विसिट्ठचेट्ठाविघायणं कुणइ । किं पुण सक्खा तग्गहणगोयरो कायवावारो ॥ ३ ॥
सोक्खलवमेत्तमुद्धा लुद्धा अविभाविउं महाणत्थं । पररित्थं[3] गिण्हंता लहंति गुरुदुक्खदंदोलिं[4] ॥ ४ ॥
रुक्खुल्लंबण सूलाधिरोवणं तिक्खखग्गघायं च । कन्न-ऽच्छि-नासनिन्नासमासु[5] पावंति परवसगा ॥ ५ ॥
कुंभीपागं कर-चरणलुंपणं बंधणं च गुत्तीसु । गामा-ऽऽगराइनिवासणं च चोरिक्कफलमाहु ॥ ६ ॥
इह जम्मे च्चिय जइ वि हु न कोइ पाउणइ चोरियाए फलं । परजम्मम्मि तहा वि य सविसेसं तप्फलमवस्सं ॥ ७ ॥
जे पुण तव्विरयमणा मणागमेत्तं पि लिंति नादत्तं । ते तव्विडंबणाए न भायणं फरुसरामो व ॥ ८ ॥

१ सत्यवचनः ॥ २ परसत्कम् ॥ ३ 'पररिक्थं' परद्रव्यम् ॥ ४ गुरुदुःखद्वन्द्वावलिम् ॥ ५ कर्णाक्षिनासिकानिर्नाशम् आशु ॥

जीववह-असच्चवयणाणं नियमं जावज्जीवं ति । एवं च दो वि ताइं जिणपूयापरायणाणि पडिवन्नाभिग्गहरक्खणपराणि कालं वोलेंति[1] । सविसेसं च पओसमावन्नो[2] अग्गिसिहो उल्लवइ जहिच्छं—एयाणि बंभणकुलविरुद्धकारीणि सुद्दाण वि पाएसु पडन्ति, वेयविहियं च मग्गं नाभिनंदंति त्ति ।

इतो य तन्नयरराइणा पारद्धो जागोवक्कमो, पउणीकया पसुपमुहा सामग्गी, 'जन्नकज्जकुसलो' त्ति निउत्तो जागकरणत्थं अग्गिसिहो, ठावितो अणिच्छंतो वि तस्स समीवे सागरो त्ति । अह रत्तचंदणचच्चिकियकाएसु गलावलंबियकुसुममालेसु होमकरणत्थं सज्जिएसु अजेसु तदणुकंपातरलियहियएण विन्नत्तो राया सागरेण—देव ! किं न सुयमिमं तुब्भेहिं जं 'अजसद्देण तिवारिसिगा वीहिणो भन्नंति न उण छागा' ? एत्थ य अत्थे नारय-पव्वयगाणं विसंवातो संवुत्तो, पव्वयगो य छागवहं पडिजाणंतो तमणुमन्नंतो य वसू वसुमईनाहो निहणं गतो त्ति, ता देव ! सम्ममालोचिउं अन्नेहिं वि वेयवियक्खणेहिं समं इमं काउमुचियं, सुनिच्छिया हि धम्मविहिणो वंछियफलसाहगा सुवेज्जविहियचिगिच्छ[3] व्व हवंति त्ति । राइणा भणियं—एवमेयं, सम्ममुवइट्ठं, अम्हेहिं वि पुव्वं सुयमिममासि, जहा—महाराओ वसू असच्चवयणातो आसणातो पाडितो[4] परलोयं गतो, तप्पयवीवत्तिणो अन्ने वि अट्ठ भूवइणो परुट्ठकुलदेवयानिहया मय त्ति, परं इमं न नायं जं छागवहाणुन्नामूलगमेयं ति । सागरेण भणियं—महाराय ! निस्संसयं एयपुव्वगमेयमवगच्छसु[5] त्ति ।

ततो जायचित्तचमक्कारेण राइणा आहूओ अग्गिसिहो अन्ने य अज्झावगा, सुहासणत्था य पुच्छिया सव्वे—किमहो !

१ व्यतिकाम्यन्ति ॥ २ प्रद्वेषमापन्नः ॥ ३ सुवैद्यविहितचिकित्सेव ॥ ४ पडि° प्र० ॥ ५ एतत्पूर्वकमेतदवगच्छ ॥

एवं च सो पिउणाऽणुसासितो वि पुव्वपयट्टं मग्गमचयंतो सल्लं व मंतिणो दुक्खकारणं जाओ। तह वि गंभीरयाए गरुयावच्चसिणेहवसओ य मंती न किं पि जंपित्था[1]।

अन्नया नरवइसंतियं वच्छत्थलाभरणमणेगमणिखंडमंडियं महामुल्लं महप्पभावं च घेत्तूण उवागतो रायपुरिसो। ततो तं आभरणं सक्खा करयले ठविऊण मंतिणो तेण भणियं—'इमं भंडागारे सुनिहियं कराविऊण सिग्घमागच्छसु' त्ति देवस्स आएसो। अह तप्पएसवत्तिणो किं पि नायसत्थत्थं[2] विमरिसंतस्स फरसुरामस्स तं समप्पिऊण 'वच्छ ! सिग्घमिमं ट्ठाणे करेज्जसु' त्ति भणिऊण य गतो राउलं मंती। परसुरामो वि तदेगचित्तयाए सव्विंदियपसरं पडिरुंभिऊण अत्थपयमबुज्झंतो जाव सम्मं विभाविउमारद्धो ताव 'निप्पच्चूहं' ति कलिय[3] कालियासुतो नाम दासो तं गहाय अवक्कंतो वेगेण। इयरो वि तदत्थमवबुज्झिय आभरणमपेच्छंतो सव्वत्थ पलोइउं पवत्तो। वियालसमए समागतो मंती, जाणिया तव्विप्पणासवत्ता, सोगं च कोवं च परमुवागतो सो परसुरामं साहिक्खेवं फरुसक्खरेहिं[4] भणिउमाढत्तो—रे रे दुरायार ! पुत्तच्छलेण अम्हकुलकवलीकरणाय कीणासो निच्छियं तुममवइन्नो सि, कहमन्नहा णेगहा वारितो वि वेरिभूयातो[5] नोवरमसि सत्थपढणातो ? इयाणिं च रे दुट्ठ ! कहं राया दट्ठव्वो ? को वा एत्तो नरिंदपारद्धाणं सरणमग्गियव्वो ? अहो ! अतक्कियमावडणं आवयाणं ति। एवं च सोगसंरंभनिब्भरं जंपंतो भणिओ पहाणजणेण—भो मंतिवर ! किमेवं गंभीरिममवहाय कायरीहवसि ? किं वा न नयसत्थपरमत्थं विभावेसि ? जहा—

१ अजल्पत् ॥ २ न्यायशास्त्रार्थं विमृशतः ॥ ३ कलयित्वा ॥ ४ परुषाक्षरैः ॥ ५ °यातो नाव° खं० प्र० ॥

अर्थनाशं मनस्तापं गृहे दुश्चरितानि च। वञ्चनं चापमानं च मतिमान् न प्रकाशयेत् ॥ १ ॥ तथा—

जइ नट्ठं वररयणं ता किं बोलेण लोयमज्झम्मि। हल्लोहलेण[1] केवलमवणिज्जइ अप्पणो गरिमा ॥ १ ॥

'एवमेयं' ति मोणमल्लीणो अमच्चो। फरुसरामो वि अप्पणो पमाएण बाढं संतप्पंतो 'अलं जणणी-जणगाइसंतावकारिणा इह निवासेणं' ति विणिच्छिऊण मज्झरत्तसमए निग्गओ गिहातो, पट्ठिओ उत्तरावहं। अविलंबियं च वच्चंतो पत्तो उत्तरावहतिलयभूयं इंदपत्थाभिहाणं पुरवरं। वुत्थो बहिया उज्जाणे। रयणीए य सुतो तद्देससमीववत्तिकंकेल्लिसाहिणो हेट्ठट्ठियस्स[2] धम्मजसनामधेयसाहुणो विजियवीणा-वेणुरवो सज्झायज्झुणी। तं च अवक्खित्तचित्तो परिभाविंतो परमवेरग्गोवगओ कह कहवि रयणिं अइवाहिऊण पभायसमए गतो मुणिसमीवे, वंदिऊण सव्वायरेण आसीणो तयंतिए। अच्चंतकिसियकायत्तणेण[3] संभावियदुक्करतवोविसेसं, वणदवज्झामियतरुसरिच्छसरीरच्छवित्तणेण य उप्पेक्खियायावणं[4] च तं भणिउमाढत्तो—भयवं ! को एयस्स महादुक्करस्स तवोविसेस[स्स] करणे हेऊ ? जेण तुब्भे एवंविहं कहावइक्कंतकट्ठाणुट्ठाणट्ठाणं घोरासमं पवन्न त्ति। साहुणा भणियं—जइ कोऊहलं ता कहेमि—

अहं हि तगरानगरीए पुरदत्तसेट्ठिणो सुओ संवड्ढिओ दोगच्च[5]समुच्चियदुक्कयनिवहेण सरीरेण य, तरुणभावमणुपत्तो य परिणाविओ य एगं कुलबालियं, निउत्तो दव्वोवज्जणाईसु। मह दुक्कम्मोवक्कमियाउगो गतो पिया पंचत्तं। तमणुगंतुं पयट्टं सव्वं धणाइ पलाइउं। तहा हि—

१ आकुलतया ॥ २ अधःस्थितस्य ॥ ३ अत्यन्तकृशितकायत्वेन ॥ ४ उत्प्रेक्षितातापनम् ॥ ५ दौर्गत्यसमुचितदुष्कृतनिवहेन ॥

दव्वोवज्जणकज्जे जे वणियसुया हि पेसिया पुव्वं । देसंतरेसु तत्थेव ते ठिया दव्वमादाय ॥ १ ॥
धण-धन्नसंचया पुण सु[1]ट्ठाणट्ठाविया वि तिव्वेण । खेमग्गिणा (?) निदड्ढा निमेसमित्तेण नीसेसा ॥ २ ॥
परतीरपेसियं पि हु रित्थं बोहित्थभंगओ भट्ठं । चोरदुवारेण गयं घरसारं गोउलाई वि ॥ ३ ॥
नो एत्तिएण वि ठियं भोयणसमए ममं निविट्ठस्स । खंडोखंडिं भायणभंडाइं गयाइं इंताइं ॥ ४ ॥
तो अच्चंतविसन्नो अकयाहारोऽहमुट्ठिओ तत्तो । हा हा ! कि[मेय]मेयं ? ति वाउलो नयरबाहिं गओ ॥ ५ ॥
तत्थ य साइसयमुणिं वंदिय विणएण पुच्छिउं लग्गो । भयवं ! निब्भग्गेणं मए कयं किमवरभवम्मि ? ॥ ६ ॥
जं एवंविहदोगच्चभायणं संपयं अहं जातो ? । णेगेहिं पगारेहिं पुव्वज्जियमवि धणं नट्ठं ॥ ७ ॥

तेण भणियं—वच्छ ! पुव्वजम्माणुट्ठियादत्तादाणदुव्विलसियमिमं सम्ममवधारेसु । तुमं हि कोसंबीए संबाभिहाणो वणियपुत्तो पवन्नपाणिवहा-ऽलियवेरमणो अदत्तादाणविणिवित्तिं काउमणो गुरुणा भणिओ—भो महाणुभाव ! सम्ममिमं सविसयं जाणिऊण पच्चक्खाहि जेण सुपच्चक्खायं हवइ । तुमए भणियं—भयवं ! जहा सुपच्चक्खायं होइ तहा आइक्खसु—त्ति वुत्ते गुरू वि कहिउं पवत्तो—

परदव्वस्सादिन्नस्स गहणविरई अणुव्वयं तइयं । थूलं सच्चित्ताई दव्वं विसतो य एईए ॥ १ ॥
दुविहतिविहेण तइए अणुव्वए इह गिही पवन्नम्मि । जाणि[2]ज्जा अइयारे पंच न सेवेज्ज य कयाइ ॥ २ ॥ तहाहि—

१ °ट्ठाणुट्ठा° खं० प्र० ॥ २ जाणेज्जा प्र० ॥

तथाहि—अत्थि पं[1]चालभालवट्ठविसिट्ठविसेसयाणुगारं तुंगागारपरंपरापडिरुद्धदिसावगासं कंपिल्लं नाम पुरवरं । वसीकयासेससामंतचक्को चक्केसरो नाम राया, सव्वरामागुणाभिरामा वसुंधरा से भज्जा । रज्जकज्जचिंतासज्जो अज्जुणाभिहाणो य मंती, देवई य तस्स गेहिणी, विणयाइगुणगणाणुगतो य फरुसरामो ताण पुत्तो । सव्वे वि गयाबाहं कालं वोलेंति । सो य फरुसरामो अणक्खित्तचित्तो विलासिणीसु, असम्मूढो जूएसु, अणभिलासो गेय-नट्टाईसु, केवलं सुकइविरइयकव्वपबंधवियारे वागरण-च्छंद-समयसत्थगूढपयत्थपरिन्नाणे य गाढाभिरइसंगतो नाभिनंदइ सिंगारं पि, न बहुमन्नइ सु[2]हि-सयणगोट्ठिं पि, न चिंतइ गेहकज्जं पि, जं किं पि भोयणमेत्तं काऊण दिवा-निसं बुहयणमज्झगतो चिट्ठइ त्ति । तं च तहा गिहकज्जपरम्मुहमवलोइऊण पिया भणिउं पवत्तो—

वच्छ ! न कव्वं भव्वं पि छुहवियारं न तारिउं तरइ । वागरणं पि न सरणं दुहसंतत्ताण सत्ताण ॥ १ ॥
छंदा-ऽलंकारा पुण कारा इव बंधणाय न धणाय । कयकंठसोसदोसा नीसेसं समयमग्गा वि ॥ २ ॥
ता पयडमेव दिट्ठत्थसाहगे नणु तिवग्गफलजणगे । सुप्पडिविहिओ होउं वट्टसु गिहकज्जकप्पदुमे ॥ ३ ॥
इय स[3]ब्भावुब्भडवयणजंपिरं पेहिउं पि सो पियरं । परिहासकरं ति विभाविऊण ईसिं पि नो खुभिओ ॥ ४ ॥
पुव्वुत्तसत्थसवणातो नेव गिहचिंतगो त्ति संवुत्तो । जो जत्थत्थी न स त[4]स्समुत्थमहवा मुणइ दोसं ॥ ५ ॥
आगारिंगियवसओ जे मज्झत्था मुणंति ते कज्जं । इयरे पुण पुणरुत्तं पि सासिया तं न बुज्झंति ॥ ६ ॥

१ पाञ्चालभालपृष्ठविशिष्टविशेषकानुकारम् ॥ २ सुहृत्स्वजनगोष्ठीमपि ॥ ३ सद्भावोद्भटवचनजल्पितारं प्रेक्ष्य ॥ ४ तत्समुत्थम् ॥

डारिहत्तणेण य चोरिक्कभावाओ भंगो चेव, तहावि 'मए वाणिज्जमेव कयं न चोरिक्कं' ति बुद्धीए वयसावेक्खत्तणेण लोए य 'चोरोऽयं' ति ववएसाभावाओ अइयारो एसो त्ति ३ । तहा कूडतुलाइववहारो तप्पडिरूवयाववहारो य परवंचणेण परधण-गहणातो भंगो चेव, केवलं 'खत्तक्खणणाइरूवं चेव चोरिक्कं, कूडतुलाइ तप्पडिरूवं च वाणिज्जमेवेयं' ति बुद्धीए वयरक्खणुज्ज-यत्तणेण अइयारो चेव त्ति ४ । ५ । अहवा तेनाहडगहणाइणो पंच वि फुडं चोरिक्करूवा चेव, केवलं अइक्कम-वइक्कमाईहिं वा पगारेहिं कीरमाणा अइयारत्तेण भन्नंति ।

इय पंच वि अइयारा परिहरियव्वा वयं पवन्नेण । फ[1]लिहुज्जलो वि हु पडो कलंकिओ सोहए न तहा ॥ १ ॥ छ ॥

इमं च सम्मं गुरुमुहाओ तुमए निसामिऊण भावसारं जावज्जीवं दुविहं तिविहेण पडिवन्ना अदत्तादाणनिवित्ती, अणुसा-सिओ य गुरुणा, गतो तुमं नियगेहं, जहोवइट्ठाणुट्ठाणपरो य कालमइलंघेसि । जायाओ य अट्ठ धूयाओ, विसन्नो चित्तेणं, कालक्कमेण जहारिहं परिणावियातो सव्वातो । नवरं तदुत्तरोत्तराणवरयकिच्चकरणेण चेव गयं गेहसारं । एवं च निद्धणीहूओ तुमं । ततो विसीयमाणगिहजणावलोयणेण मंदीहूया धम्मवासणा । 'कहं दव्वमज्जिय[2]व्व ?'—न्ति जातो सि तदेगचित्तो ।

अन्नया हट्टनिविट्ठस्स तुह तन्निवासिणो तक्करा अन्नत्थ खत्तक्खणणाइणा कंस-दूसाइ घेत्तूणं उ[व]ट्ठिया काणक्कएण दाउं । 'भूरिलाभसंभवो' त्ति गहियं तुमए । 'चोरिक्कमकुणंतस्स को एत्थ दोसो ?' त्ति जाओ पढमाइयारो १ ।

अह त[3]व्विक्कय[स]मुवलद्धभूरिलाभेण तुमए लोभाभिभूयत्तणेणाविभावियविरइमालिन्नेण भणिया ते तक्करा—अरे !

१ स्फटिकोज्ज्वलोऽपि हि पटः ॥ २ °यव्वं ? ति प्र० ॥ ३ तद्विक्रयसमुपलब्धभूरिलाभेन ॥

किमेवमच्छह ? न गच्छह चोरियं काउं ? जइ मे कुडुंबाइ सीयइ ता अहमुद्धारगाइणा भलिस्सामि, आगयं च तुम्ह मोसं अवस्सं विक्किणिस्सामि त्ति । एवं च जंपिरस्स उवट्ठिओ [1]बीतो अइयारो २ ।

इओ य तन्नयरीनिवासिणो राइणो जाओ सीमालरन्ना समं विक्खेवो । कयचाउरंगबलसंवाहा य दो वि ठिया पंच-जोयणंतरियाए महीए । धन्नाईणमपवेसा महग्घीभूयं सव्वं सीमालराइणो खंधावारे । अत्थि य इयररन्नो सिबिरे पउरधण-कणाइप्पवेसो । केवलं राइणो निसेहो—न केणइ अप्पणो कुसलकामिणा सीमालसेन्ने धन्नाइ नेयव्वं ति । इमं च सोऊण वि तुमं अविगणियउभयभवियावाओ पट्ठिओ धन्नाइसमेओ रयणीए । वच्चंतो य पावितो अंतरे निउत्तेहिं रायपुरिसेहिं, उवणीओ रन्नो, सव्वस्समादाय मुक्को सरीरमित्तेण । एवं च तइओ अइयारो अवाओ य संपन्नो एयस्स ३ ।

अह अवहरियसव्वस्सो लज्जाए सेन्नमज्झे अच्छिउमसक्कंतो संकंतो एगं कुग्गामं । तत्थ वि ववहारविसुद्धीए अनिव्वहंतो चेव चउत्थमइयारभारमणवेक्खिय कूडतुल-कूडमाणेहिं ववहरिउं पयट्टो सि ४ ।

तत्थ वि अविसिट्ठं पि धन्न-घयाइ विसिट्ठधन्नाइमीलणेण तप्पडिरूवं काऊण ववहरंतेण अंगीकओ पंचमो वि अइयारो ५ ।

एवं अज्जियमाणो वि अत्थोऽवस्सं वरिसावसाणे चोर-जला-ऽनल-नरिंदाइउवद्दवेण '[2]अन्नायावज्जिओ' त्ति वच्चइ खयं, तह वि तुमं केच्चिरं पि कालं वट्टिय पज्जंते तस्सऽइयारनियरस्स आलोयण-निंदणाइ अकाऊण मओ उववन्नो किव्विसियसुरेसु । तत्तो चुओ संपयं एस पु[3]व्वभवकयसाइयारादिन्नादाणविरइदोसेण अज्जियंतरायवसओ पणट्ठसव्वदव्वाइसंचओ वट्टसि त्ति ॥ छ ॥

१ बीओ अ° प्र० । द्वितीयः ॥ २ अन्यायावर्जितः ॥ ३ पूर्वभवकृतसातिचारादत्तादानविरतिदोषेण अर्जितान्तरायवशतः ॥

इमं च सोच्चाऽणुसरियपुव्वभवो हं तदुक्कयक्खवणत्थं पव्वज्जं पवन्नो, विविहतवोविसेसेहिं य अप्पाणं ज्झोसिंतो एवं विहरामि त्ति । तहा—

तइयव्वयसुद्धिकए अणणुन्नायं तरूण छायं पि । वज्जेमि नो तणाइ वि गिण्हामि परेण अविदिन्नं ॥ १ ॥

अणुजाणाविय खेत्ताहिवं च सुन्नं गिहं सुसाणं च । सेवेमि सव्वकालं चिरदुक्कडमणुसरंतो हं ॥ २ ॥ छ ॥

इय सोउं संविग्गो मंतिसुओ नमिय साहुणो चलणे । भत्तिभरनिब्भरंगो थोउं एवं समाढत्तो ॥ १ ॥

तुममिह परॅमिको[1] पूयणिज्जाण पुज्जो, सयलगुणनिहाणं वट्टसे तं च एक्को ।

तुह जसनिवहोऽयं हार-नीहारगोरो, दससु दिसिमुहेसुं वित्थरंतो न माइ ॥ २ ॥

अहमवि नणु धन्नो दुक्खसिंधुं च तिन्नो, तुह पयपउमाणं जो समीवम्मि पत्तो ।

हरि-मिहिर-विरिंचीणं पि अँप्पं[2] अणप्पं, सुकयसमुदएणं नूण मन्नामि दूरं ॥ ३ ॥

एवं सुचिरं थुँणिय[3] साहुचलणकमलुच्छंगारोवियसिरोमंडलो फरसुरामो पयंपइ—भयवं ! ममं पि अदिन्नादाणस्स देहि जावज्जीवियं निविर्त्ति, तुह वित्तंतसवणातो नियत्तं घरवासाओ वि मम मणं, किं पुण अदिन्नादाणाउ ? त्ति । मुणिणा भणियं—

कॅसरेहिं[4] व उक्खिप्पंति रहसभरतरलिएहिं गरुयभरा । अद्धपहे च्चिय मुचंति नवरि खिन्नेहिं केहिं पि ॥ १ ॥

---

१ °र एक्को प्र० ॥ २ आत्मानं 'अनल्पम्' अन्यूनम्, समानमिति यावत् ॥ ३ स्तुत्वा साधुचरणकमलोत्सङ्गारोपितशिरोमण्डलः ॥ ४ "कल्होडेहिं" इति प्र० टिप्पणी । अधमबलीवर्दैरित्यर्थः, उत्क्षिप्यन्ते ॥

वज्जइ इह तेनाहड तक्करजोगं विरुद्धरज्जं च । कूडतुल कूडमाणं तप्पडिरूवं च ववहारं ॥ १ ॥

तेनाहडं ति चोरेहिं आणियं चोरिऊण परदव्वं । काणकएण लिंतो लोभेणं अइयरइ विरइं ॥ २ ॥

वावारेई चोरे किं चिट्ठह ? नेव चोरियं कुणह ? । उद्धारदाणतो वा तक्करजोगो त्ति अइयारो ॥ ३ ॥

नियराइणो विरुद्धो जो राया तं वएज्ज लोभेण । नियपहुपडिसिद्धो वि हु अइयारे वट्टई तइए ॥ ४ ॥

ऊणमहियं व कूडं माणं व तुला व होज्ज तो तेहिं । दिंतो गिण्हंतो वा अइयारं सेवइ चउत्थं ॥ ५ ॥

तेण घय-वीहिँणा[2] वा सरिसागारं वसा-पलंजाइ । जम्मि ववहारम्मि तं तप्पडिरूवववहारं ॥ ६ ॥ अहवा—

तप्पडिरूवं नव-जुन्नधन्नपमुहाण मीलणेण फुडं । पवरं ति ववहरंतो पंचममइयारमणुसरइ ॥ ७ ॥

इय तेसु अइयारेसु एवं भावणा—तेनाहडं काणकएण पच्छन्नं गिण्हंतो चोरिकातो वयभंगे वट्टइ, 'वाणिज्जमेयं मए कीरइ न चोरिकं' ति वयसावेक्खत्तणेणं पुण नो भंगो, एवं च से भंगा-ऽभंगरूवो अइयारो त्ति १ । तक्करजोगो वि जइ वि दुँविहतिविहपडिवन्नचोरिकविरइणो[3] पयडो च्चिय भंगो, तहा वि 'कीस निव्वावारा अच्छह ? जँं[4] नत्थि तमहं देमि, आणीयं विक्किणेमि य' इच्चाइ चोरे वावारिंतो वि नियबुद्धीए तव्वावारणं परिहरइ त्ति वयसावेक्खत्तणेण अईयारो[5] त्ति २ । विरुद्ध-रज्जाइक्कमो वि जइ वि "सामी-जीवादत्तं, तित्थयरेणं तहेव य गुरूहिं ।" इच्चाइवँयणातो[6] अदिन्नादाणलक्खणजोगेण रायदं-

---

१ 'लान्' आददानः ॥ २ °हिणो वा खं० प्र० ॥ ३ द्विविधत्रिविधप्रतिपन्नचौर्यविरतेः ॥ ४ जन्नत्थि खं० ॥ ५ °इयरइ त्ति खं० ॥ ६ °वइणा° खं० ॥

अवरवासरे पंडरपडकयावगुंठणस्स परसुरामस्स सेट्ठिसमीवे उवविट्ठस्स सो कालियासुओ दासो तं अणग्घं राइणो आभरणं घेत्तुमागओ तं पएसं । 'पुरपहाणो' त्ति दंसियं सेट्ठिस्स । 'महामोल्लं नरिंदा चेव घेत्तुं पारिंति एयं' ति पसंसियं सेट्ठिणा । अह ससंभमं [1]विप्फारियच्छिणा पेच्छंतेणं फरुसरामेणं तं च दासो य पच्चभिजाणिऊण सवणमूले सिट्ठो [2]तव्वुत्तंतो सव्वो सेट्ठिस्स । संभासिओ य एसो—रे कालियासुय ! कत्तो आगतो सि ? त्ति । 'अहह ! कहं एसो अमच्चसुतो ?' त्ति मुणंतेण वि आगारसंवरं काऊण अपच्चभिजाणमाणेणं व जंपियमणेण—भद्द ! को तुमं ? [3]कत्तोच्चयं वा मए सह पच्चभिजाणं ? ति । परसुरामेण भणियं—रे मुद्ध ! [4]थोवदिणावगमे वि विस्सुमरियं ? किमम्ह पिउणो कंपिल्लपुरपरमेसरामच्चस्स दासो न हवसि तुमं ? । तेण भणियं—सरिसाकारदंसणेण विप्पलद्धो सि, अन्नो कोइ सो, अहं हि तं पुरं सुमिणे वि न पेच्छंतो त्ति कत्तोच्चयं दासत्तं ? । सेट्ठिणा भणियं—होउ ताव, तुमं भद्द ! साहेसु—कत्थ वत्थव्वो ? कस्स वा एस अलंकारो ? कहं वा लब्भइ ? त्ति । तेणावि [5]धिट्ठिमावट्ठंभेण भणियं—अहं हि रोहणाहिवइणो सेवगो गंगो नाम, सामिणो आएसेण तदलंकारं विक्किणिउमुवागतो, [6]* सुवन्नलक्खेण एस विक्किणियव्वो त्ति । सेट्ठिणा भणियं—रे रे मुद्धमुह ! मिच्छं पि भासिउं न बुज्झसि ।

तुच्छं पि रयणमेयस्स लहइ कणयस्स लक्खमेक्केक्कं । किं पुण तस्समुदातो * लहेज्ज ? को इय वियाणेज्जा ? ॥ १ ॥

१ विस्फारिताक्षेण ॥ २ तद्वृत्तान्तः ॥ ३ कुतस्त्यं वा मया सह प्रत्यभिज्ञानम् ॥ ४ स्तोकदिनापगमे ॥ ५ धाष्टर्यावष्टम्भेन ॥ ६ * * एतच्चिह्नमध्यवर्त्ती पाठः खं० प्रतौ पतितः ॥

रयणाणमागरो रोहणो त्ति एक्कं इमं भणियमुच्चियं । जं पुण [1]तम्मुल्लवणं तं नज्जइ सव्वहा मिच्छा ॥ २ ॥
अहवा कस्सइ चिरसुकयसालिणो वंचणापगारेण । [2]पत्तमिमं [3]मुल्लविउं कहमेसो जाणउ वरागो ? ॥ ३ ॥
सोऊण इमं रुट्ठो सो भणइ किमेवमणुचियं वयसि ? । सो हं जो परसंतियमाभरणं देमि हरिऊण ? ॥ ४ ॥
ता होउ [4]समप्पह मज्झ संतियं एयमन्नहिं जामि । तुम्हारिसजणजोगे जीयस्स वि होइ परिहाणी ॥ ५ ॥
सेट्ठी तमप्पमाणो पडिसिद्धो तयणु फरुसरामेण । सो चेव अम्ह दासो चोरो त्ति पयंपमाणेण ॥ ६ ॥

अह अणुवलद्धाभरणो [5]साहुलिमादाय 'अन्नाओ अन्नाओ' त्ति सो वाहरंतो गतो राउलं । पुच्छिओ रन्ना—किमेयं ? ति । सिट्ठो तेण आभरणावहारवुत्तंतो । ततो आणाविओ सेट्ठी फरुसरामो य, पुच्छिया य [6]तव्वइयरं । आमूलाओ च्चिय सिट्ठो परुसरामेण तव्वइयरो । खित्ता राइणा कालियासुयम्मि दिट्ठी । तेण भणियं—देव ! सव्वं असच्चमेयमुल्लवइ परधणगहणाभिलासेण एसो, एत्थऽत्थे दुट्ठदेवयाए वि पुरतो अप्पाणमहं विसोहेमि त्ति । ततो कोऊहल्लेण आणाविऊण पलोइओ सो अलंकारो राइणा । जाओ से तग्गहणाभिलासो । भणिओ य कालियासुओ—अरे ! जइ सच्चं [7]तुह संतिओ एसो निद्दोसो य [तुमं], ता इमं चंडियादेवयं एत्तो दुट्ठमच्छ-कच्छभ-मगरागरभूयाओ पुक्खरणीओ [8]अगाह-सच्छसलिलपडिहच्छातो कमल-कल्हार-सयवत्ताइं आहरिऊण [9]पूएसु त्ति । इमं च सोच्चा दुट्ठो वि धिट्ठिमाए सच्चसावणं काऊण कालावलोइय व्व राइणो

१ 'तन्मूल्ययनम्' तन्मूल्यकरणमित्यर्थः ॥ २ प्राप्तमिमं मूल्ययितुम् ॥ ३ मोल्ल° प्र० ॥ ४ समर्पयत मम सत्कम् ॥ ५ शाखामादाय 'अन्यायः अन्यायः' ॥ ६ तद्व्यतिकरम् ॥ ७ तव सत्कः ॥ ८ अगाधस्वच्छसलिलपूर्णात् ॥ ९ पूएसि त्ति खं० ॥

नगरजणस्स य पेच्छंतस्स पविट्ठो पोक्खरणीए । पवेससमणंतरमेव खंडाखंडिं काऊण खद्धो छुहाकिलंतेहिं मच्छाइदुट्ठसत्तेहिं । 'एगो पडिपंथी जमपुरपंथं पवन्नो' त्ति परितुट्ठेण रन्ना भणिओ परुसरामो—भद्द ! तुमं पि एवंविहविहाणेण अप्पणीकाऊण गिण्हसु एयं ति । 'जं देवो आणवेइ' त्ति भणिऊण ण्हातो सेयपरिहियवत्थो अक्खुद्धचित्तो पंचपरमेट्ठिमंतमणुसरंतो पुक्खरणीं पविसिउमाढत्तो ।

अह सोवाणतलाओ जा चरणं सो ठवेइ सलिलंतो । ता चलणहेट्ठओ ठवियपट्ठिमब्भुट्ठितो मगरो ॥ १ ॥

तो तदुवरि मुक्ककमो सलिलेणं थोवमवि अछिप्पंतो । भमिओ पोक्खरणिं कमल-कुवलयाई य घेत्तूण ॥ २ ॥

अहह ! महच्छरियमिमं ति जंपिरेणं च नयरलोएण । दंसिज्जंतो अंगुलिसएहिं तत्तो विणिक्खंतो ॥ ३ ॥

अह अक्खयदेहं मँगरपट्ठिमुज्झिय समागयं दट्ठुं । तं खोणिवई अप्पत्तवंछिओ चिंतए एवं ॥ ४ ॥

एत्तो हठेण गिण्हामि जइ इमं निच्छियं अलंकारं । ता रुंभिउं न तीरइ अवजसपंसू पसरमाणो ॥ ५ ॥

इय होउ ताव पेसेमि नियगिहे इममिमं च पुरलोयं । पच्छा किं पि उवायं काउं एयं गहिस्सामि ॥ ६ ॥

एत्थंतरे सेट्ठिणा विन्नत्तो राया—देव ! न होइ एस महाणुभावो परसुरामो सामन्नो, किंतु कंपिल्लभूवईअमच्चपुत्तो, अलंकारावहरणनिमित्तेणेव एत्तियं देसमणुपत्तो, ता पसायं काऊण समप्पेह अलंकारं, जहोचियं सम्माणिऊण विसज्जहँ सं ट्ठाण-न्ति । राइणा जंपियं—एवं कीरइ, केवलं भुज्जो विन्नवेज्जासि । 'जं देवो आणवेइ' त्ति गया सव्वे जहागयं । राइणा

१ आत्मीकृत्य ॥ २ अस्पृश्यमानः ॥ ३ मकरपृष्ठिमुज्झित्वा ॥ ४ रोद्धुम् ॥ ५ °ल्लनरवई° प्र० ॥ ६ °ह सट्ठाणे त्ति प्र० ॥ ७ स्वं स्थानम् ॥

तव्विहविरईगहणे वि नो गुणो थेवंतो वि संभवइ । अवि सकलंकायरणम्मि पच्चवाओ ममं व भवे ॥ २ ॥

फरुसरामेण भणियं—भयवं ! एवमेयं, केवलं तुम्ह दंसणाणुभावेण सिज्झिही अक्खंडियमिमं । ततो साहुणा दिन्ना अदिन्नादाणस्स विरई । ततो सो कयकिच्चमप्पाणं मन्नंतो वंदिऊण साहुं पविट्ठो नयरमज्झे । वणियपहाणेण जयदेवसेट्ठिणा समं च कओ परिचतो । जाओ य पइदिणदंसणेण 'सुगुणो' त्ति तम्मि पक्खवातो सेट्ठिस्स ।

अन्नम्मि य दियहे तेण समं सेट्ठी गओ पोक्खरणिं । कयमुहविसुद्धि-करचरणपक्खालणो य तप्पएसे च्चिय अंगुलीगलियमहामोल्लमुद्दारयणो पट्ठिओ सगिहं । तं च परसुरामो घेत्तूण लग्गो तदणुमग्गेण । अह जाव गेहं न पावइ सेट्ठी ताव मुद्दारयणवियलमंगुलिं पलोइऊण जायगरुयदेहदाहो इओ तओ पलोइंतो वलिओ तेहिं चेव पएहिं पच्छाहुत्तं । मुणियाभिप्पाएण य पुच्छिओ परुसरामेण सेट्ठी—किमेवं वाउल व्व पच्छाहुत्तं ओसक्कसि ? त्ति । सेट्ठिणा भणियं—वच्छ ! मुद्दारयणं कहिं पि पब्भट्ठं न नज्जइ । 'वीसत्थो होसु' त्ति भणिरेण य तमोप्पियं परसुरामेण । तक्कालविढत्तं व तं मन्नंतो परितुट्ठो सेट्ठी पुच्छइ—वच्छ ! कहिं लद्धमिमं ? ति । तेण भणियं—पोक्खरणीतडे त्ति । 'अहो ! अज्ज वि अणवगासो कलिकालस्स, अविच्छेओ सुपुरिसचरियस्स, जत्थ एवंविहा महाणुभावा रेणुं व अवगणियपरधणा सक्खा दीसंति' त्ति विभावितो सेट्ठी पविट्ठो नियभवणं । इयरो वि गओ सठाणम्मि ।

१ स्तोकोऽपि ॥ २ कृतकृत्यम् आत्मानम् ॥ ३ परिचयः ॥ ४ पक्षपातः ॥ ५ मुद्रारत्नविकलामङ्गुलिं प्रलोक्य ॥ ६ व्याकुल इव पश्चान्मुखं अवष्वष्कसे ॥ ७ तमप्पि° प्र० । तदर्पितम् ॥ ८ तत्कालार्जितमिव ॥

इति स्वतुल्यं द्रविणापहारे, दुःखं परेषामपि लक्षयित्वा ।
स्वप्नेऽपि नैवान्यधनापहारबुद्धिं विदध्याद् विबुधः कदाचित् ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे तृतीयाणुव्रतगुणचिन्तायां फरुसरामकथानकं समाप्तम् ॥ ३६ ॥

पाणिवहाइ[1]निवित्ती सोहं पाउणइ जं विणा नेव । मेहुणनिवित्तिविसयं तं तुरियमणुव्वयं वोच्छं ॥ १ ॥
मिहुणस्स कम्म मेहुणमहम्म[2]कम्माण मूलपारंभो । थंभो य दुग्गदुग्गइबहुभूमियगरुयगेहस्स ॥ २ ॥
मेहुणसन्नाभिरओ नवलक्ख वहेइ सुहुमजीवाणं । तत्ताय[3]कणयनलियापवेसनाएण पयडमिणं ॥ ३ ॥
जो एत्तो विरयमणो तं देवा वि हु नमंति भत्तीए । सिज्झंति मंत-विज्जा य तस्स दूरं दुसज्झा वि ॥ ४ ॥
पाणिवहप्पमुहाणं उस्सग्ग-ऽववायतो अणेगंतो । दिट्ठो न मेहुणे पुण रागाईणं हि सब्भावा ॥ ५ ॥
कुणउ तवं पढउ सुयं भुंजउ तरुपडियपंडुपत्ताइं । जइ महइ[4] मेहुणं तो सो न मुणी केवलं वसणी ॥ ६ ॥
जे केइ जयम्मि गया परं पसिद्धिं च परममब्भुदयं । पज्जन्तं[5] वा परमं तं मेहुणचागमाहप्पं ॥ ७ ॥
पासम्मि नेव सप्पइ सप्पो दूरं सरंति य पिसाया । डक्कारडामराओ वि डाइणीओ न बाहिंति[6] ॥ ८ ॥

१ °हाउ नि° खं० प्र० ॥ २ अधर्मकर्मणाम् ॥ ३ तप्तायःकनकनलिकाप्रवेशज्ञातेन ॥ ४ काङ्क्षति ॥ ५ °ज्जत्तं वा खं० प्र० ॥ ६ बाधयन्ति ॥

दुट्ठा वि हु अणुकूला हवंति पसमंति दुन्निमित्ताइं । मेहुणविरयमणाणं नरसीहाणं किमिह चोज्जं ? ॥ ९ ॥
पडिपुन्नबंभनिरया लहंति मणवंछियं किमच्छरियं ? । परदारवज्जिणो वि हु अज्जंति सुहं सुरप्पिउ व्व ॥ १० ॥

तहाहि—अत्थि मगहाविसयप्पहाणं रायगिहं नाम नयरं । जं च अणवरय[2]जयगुरुवीरजिणविहरणपसंतमारि-दुब्भिक्खाइदुक्खनिवहं, निस्सीमसम्मत्तगुणविम्हइयसुरवइसलहियमहारायसेणियसच्चरियकुसलथेरनरं, निदरिसणं व सेसनयराणं, ठाणं व अच्छरियाणं, उप्पत्तिपयं व धम्मस्स । तत्थ य वत्थव्वो तिवग्ग[3]संपाडणपहाणवावाराणुगओ महुसूयणो व्व निग्गहियन[4]रयावाओ सुदरिसणसमलंकिओ य जन्नप्पिओ नाम बंभणो अहेसि । जेण य पहासगणहरस्स पव्वज्जोवगयस्स समीवे 'बंधवो' त्ति संसारियपडिबंधमुव्वहंतेण भावसारं पडिवन्नो महावीरजिणो देवबुद्धीए, सुतवस्सिणो य गुरुत्तणेण, सव्वायरमणुव्वयाइधम्मपडिवालणपरो य अच्छई । तस्स य वासिट्ठसगोत्ता जन्नजसा नाम भज्जा । पुत्तो य पुव्वजम्मबाल-गिलाणाइपडियरणावज्जियसुकयसंभारो सुरप्पिओ ताणं । कलाकोसल्लेण देहोवचएण उदग्गसोहग्गगुणेण य वड्ढिमणुपत्तो, परिणाविओ य अणुरूवकुलप्पसूयं दुहियरं एसो ।

अवरवासरे य देववंदणत्थमागच्छंतो धम्मरुई नाम सुतवस्सी ओहिनाण[5]मुणियभूय-भविस्स-वट्टमाणो भगवया पहा-

१ °रइम° खं० ॥ २ अनवरतजगद्गुरुवीरजिनविहरणप्रशान्तमारिदुर्भिक्षादिदुःखनिवहं निस्सीमसम्यक्त्वगुणविस्मितसुरपतिश्लाघितमहाराजश्रेणिकसच्चरितकुशलस्थविरनरम् ॥ ३ त्रिवर्गसम्पादनप्रधानव्यापारानुगतः ॥ ४ मधुसूदनपक्षे निगृहीतनरकासुरापायः सुदर्शनाख्यचक्रालङ्कृतश्च, अन्यत्र निगृहीतनरकगत्यपायः सम्यग्दर्शनालङ्कृतश्च ॥ ५ अवधिज्ञानज्ञातभूतभविष्यद्वर्त्तमानः ॥

सगणहरेण वुत्तो—जया रायगिहं गच्छसि तया पढमपडिवन्नसम्मत्तगुणं जन्नप्पियं बंभणं अणुसासिज्जासि त्ति। इमं च 'तह' त्ति पडिसुणिय अणिययविहारवित्तीए आगतो सो तत्थ। पत्थावे य तेण पएसेण उवागतो समाणो पविट्ठो जन्नप्पिय-मंदिरे। दूराउ च्चिय अब्भुट्ठिओ तक्खणविमुक्कासणेण 'सागयं सागयं' ति पयंपंतेण हरिसुल्लसिररोमंचेण सपरियणेण जन्न-प्पिएण। निस्सिट्ठसमुचियविट्ठरे य उवविट्ठो एसो सकुडुंबेण वंदिओ अणेण। धम्मलाहिओ य साहुणा, भणितो य—

वंदाविज्जसि देविंदविंदवंदिज्जमाणपयपउमं। वीरं सुरगिरिधीरं मोहमहाजलहरसमीरं ॥ १ ॥
पुर-नगर-खेड-कब्बड-मडंब-संबाह-निगमनिलयाइं। अरहंतचेइयाणि वि निम्मलगुणसंघमवि संघं ॥ २ ॥
भयवं च जयपयासो सिरिप्पहासो गणाहिवो तुज्झ। दुहदाहामयवुट्ठिं दवावए एयमणुसट्ठिं ॥ ३ ॥
एसा हि अणहजाई-कुल-रूया-ऽऽरोग्गमाइसामग्गी। दुलहा पुणो वि ता धम्मकम्मविसए जएज्जाहि ॥ ४ ॥
विसहर-हरिणारि-सुकूरवेरवेयाल-डाइणीहिंतो। अच्चंतदारुणो निग्घिणो य एसो पमाओ वि ॥ ५ ॥
तह कह वि वट्टियव्वं जहाऽवगासं पि एस नो लहइ। एएण विणिहयाणं पइजम्मं दुक्खदंदोली ॥ ६ ॥
विसहरमाईणं पुण कीरइ मंताइणा वि निग्गहणं। एयस्स निग्गहो पुण काउं तीरइ न हरिणा वि ॥ ७ ॥
अविणिग्गहिया वि हु विसहराइणो इहभवि च्चिय हणंति। हणइ पुण णंतखुत्तो पइजम्मं ही! पमाओऽयं ॥ ८ ॥ तथा—

१ °यं वरुणं अ° खं० ॥ २ अनुशासिष्यसि ॥ ३ पयंपेण खं० प्र० ॥ ४ °दाहाम° प्रसं०। दुःखदावामृतवृष्टिं दापयति एतामनुशिष्टिम् ॥ ५ यतिष्यसे ॥ ६ निर्घृणः ॥ ७ दुःखद्वन्द्वावलिः ॥ ८ अनन्तकृत्वः ॥

वि जेण पएसेण परुसरामो वाहिं सरीरचिंतं काउं वच्चइ तम्मि पच्चइयनियपुरिसेहिं ट्ठाणे ट्ठाणे खिवाविया मुद्दियाइणो पयत्था। तरुअंतरियसरीरेहिं नरेहिं पलोयाविओ 'एसो गिण्हइ ? न व ?' त्ति। परुसरामो वि तं ठाणे ट्ठाणे विप्पइन्नं सुवन्नमुद्दिगाइ पेच्छंतो वि ईसिं पि अणभिभविज्जंतो लोभेण साहु व्व अइक्कमिय गतो समीहियप्पएसं, तहेव पडिनियत्तो य। सिट्ठो य * एस वइयरो पुरिसेहिं रायस्स। ततो परिचत्तासुंदरज्झवसाएण तेण सक्कारपुरस्सरं अलंकारं समप्पिऊण विसज्जिओ परुसरामो। अह सेट्ठिपमुहपहाणलोयनिवेइयवत्तो सुमुहुत्तम्मि विसिट्ठसत्थसमेओ गओ कंपिल्लपुरं, पविट्ठो नियघरं, परितुट्ठो पिया, समप्पिओ अलंकारो, सिट्ठो य * कालियासुयवुत्तंतो। मुणियवइयरेण पूइओ राइणा, पसंसिओ पुरजणेणं।

इय एस महप्पा इहभवे वि पूयं जसं च कित्तिं च। अत्थं च समणुपत्तो परधणविणिवित्तिसुकएणं ॥ १ ॥ अपि च—

दुर्बुद्धिधाम परचित्त-शरीरतापतीव्रानलः कलिलसम्भवमूलकर्म।
दौर्गत्यदुःखवनवर्द्धनवारिसेको, हेयः सतां परधनग्रहणाभिलाषः ॥ १ ॥
चौर-क्षितीश्वर-कृशानु-जलप्लवाद्यैरुद्याति नैव निधनं च धनं तदीयम्।
यैर्नान्यजन्मनि कथञ्चिदिवान्यवित्तमोषाभिलाषलवमात्रमपि व्यधायि ॥ २ ॥
एकाक्यपि द्रविणराशिविवर्जितोऽपि, यत्र क्वचिद् व्रजति नूनमदत्तवर्जी।
क्षीणान्तराय इति तत्र सुवर्णकोटीरावर्जयेदभिमतश्च भवेत् परेषाम् ॥ ३ ॥

१ °रकाउं चिंतइ तम्मि खं० ॥ २ विश्वस्तनिजपुरुषैः ॥ ३ * * एतच्चिह्नमध्यवर्त्ती पाठः खं० प्रतौ पतितः ॥ ४ परधनविनिवृत्तिसुकृतेन ॥

कुसलमज्जायं नाइकमइ तहावि—

कह तीरइ पडिखलिउं उइए तारुन्नपुन्निमाचंदे। सव्वत्तो पसरंतो वि[1]यारमयरायरो भीमो? ॥ १ ॥

वा[2]यंबु-सुक्कसेवालभोइणो साहुणो वि जेण जिया। मयणस्स तस्स एवंविहेसु मुद्धेसु का गणणा? ॥ २ ॥

गणहरपहासससीसस्स मज्झ होउं सुओ इमो कह वि। जइ चरइ[3] धम्मबज्झं ता गरुओ च्चिय कुलकलंको ॥ ३ ॥

पिउणो त्ति नूण गुरुणो त्ति साहुणो त्ति य कहिज्जए तुम्ह। एवंविहमिहरा ऍ[4]रिसत्थकहणं लहुत्तकरं ॥ ४ ॥

अह गरुयचित्तसंतावतरलियं तं पलोइउं साहू। ओहिबलकलियअविचलियभाविभावो भणइ एवं ॥ ५ ॥

मा काहिसि संतावं एसो पुन्नाणुबंधिपुन्नेहिं। पुव्वभवसंचि[5]एहिं न होहिही निंदियायारो ॥ ६ ॥

इमं च सोच्चा परितुट्ठो चरणकमलारोवियसीसो जन्नप्पिओ भणइ—भयवं! किं पुण अन्नभवे इमिणा कयं? ति। मुणिणा जंपियं—निसामेहि—

अयं हि तुह सुओ एत्तो तइयपुव्वभवे वाणारसीए नयरीए अरिमद्दणनरिंदस्स सुओ रू[6]य-लायन्नसाली जयमाली नाँ[7]ममहेसि। सो य एगया आरामे वसंततिलयाभिहाणे कीलानिमित्तं कइवयवयस्सपरिवुडो जाव अच्छइ ताव एगस्स पढमुम्मिल्लपल्लवललामस्स कंकिल्लिणो तले गयणंगणाउ अवयरंतं परमाइसयसमुदयमिव मुत्तिमंतं चारणसमणं पेच्छइ।

१ विकारमकराकरः ॥ २ वाताऽम्बुशुष्कसेवालभोजिनः ॥ ३ °इ मज्झ ब° खं० ॥ ४ ईदृशार्थकथनम् ॥ ५ °संचिए° खं० ॥ ६ रूवला° प्र० ॥ ७ नाम अभवत् ॥

'अहो! पुण को एस महप्पा नियमाहप्पेणं तिहुयणं पि परिभवंतो व्व एवं वट्टइ? होउ ताव सेसकज्जेहिं, इममेव संरा[1]मो, किमेस जंपइ? किं वा कुणइ?' त्ति विम्हयमुव्वहंता गया तस्स समीवे।

एत्थंतरे अणंगकेऊ नाम विज्जाहरो भडचडयरपरिक्खित्तो एगाए सुरसुंदरीविब्भमाए जुवईए समेओ अंबराओ ओयरिऊण परमविणएण पडिओ मुणिस्स चरणेसु, आसीणो य सन्निहियमहीवट्ठे। पुच्छिओ य सो साहुणा—भद्द! का एसा अम्ह अदिट्ठपुव्व व्व पडिहासइ?। अणंगकेउणा भणियं—भयवं! एसा हि ताराचंदविज्जाहरसुया नियपइणो मायंगधूयासत्तस्स असुंदरायारं सहिउमसक्कंती भज्जाभावेण मे[2]इ संकंता। मुणिणा भणियं—भो महायस! अजुत्तमेवंविहं कम्मं भवारिसाणं, पररामापरिग्गहो हि उप्पत्ती वेरपरंपराए, कलंकीकरणं नियनिम्मलकुलैं[3]क्कमस्स, आघोसणाडिंडिमो अवजसपसरस्स, जलंजलीदाणं नयमग्गस्स, एवंविहाजुत्तकारिणो हि दसाणणप्पमुहा निहणमणुपत्ता। एवमणुसासिंतस्सेव तस्स मुणिणो आँ[4]यड्ढियतिक्खमंडलग्गा, सन्नाहनूमियसरीरा, दूराउ च्चिय मंडलियगंडीवमुक्कनिसियसर-खुरुप्प-तीरी-वावल्ल-भल्लि-नारायनिवहा, 'हण हण' त्ति भणमाणा चक्खुपहमुवागया विज्जाहरा, सरोसमुल्लविउं पवत्ता य—रे रे दुरायार! परदारपरिभोगभग्गकुलमग्ग! सरसु इट्ठदेवयं, वज्जपंजरंतरमुवगओ वि न संपयं जीवसि त्ति। 'को रे! एस निम्मज्जायमुल्लवइ?' त्ति वलियकंधरेण दिट्ठा ते अणंगकेउणा, पच्चभिजाणिऊण भणिया य—रे रे मायंगीदइय! दइवेणेव विणिहयस्स तुह हणणमणुचियं, केवलं अच्चग्गलपयंपणसीलो त्ति निगि[5]ज्झसि संपयं—ति जंपमाणो तं च

१ 'सरामः' अनुगच्छामः ॥ २ मयि ॥ ३ °लकलंकस्स खं० ॥ ४ आकृष्टतीक्ष्णमण्डलाग्राः सन्नाहच्छन्नशरीराः ॥ ५ निगृह्यसे ॥

जुवइं मुणिणो च्चिय समीवे मोत्तूण कुवियकयन्तजीहाकरालं करवालमुग्गीरिऊण य धावितो सपरियणो तदभिमुहो। लग्गमुदग्गमाओहणं—

पम्मुक्कचक्कनिक्किवनिकित्तनरमुंडरुहिरसित्तधरं। कुंतग्गघायघुम्मिररोसुब्भडचलियपडिसुहडं ॥ १ ॥
तिक्खग्गखग्गताडियकंकडनिहसुच्छलंतजलणकणं। दट्ठोट्ठवंठनिस्सिट्ठसेल्लमेल्लंन्तभूरिभडं ॥ २ ॥
समकालमुक्कनारायराइरायंतदिसिपहाभोगं। खयसमयसमुग्गयभूरिकेउसंजणियसोहं व ॥ ३ ॥
काऊणमेवमच्चंतभीममुद्दामसमरवावारं। अन्नोन्नदिन्नघाया ते दो वि जमाणणं पत्ता ॥ ४ ॥

'अहह! कहं मह पुरीए वि एवंविहमसमंजसं भवइ?' त्ति जायकोवावेगो य खग्गमुग्गीरिऊण धावमाणो तयभिमुहं रायसुओ कह कह वि निसिद्धो परियणेण।

एत्थंतरे अणंगकेउं गयजीवियमवणीपीढे निवडियं दट्ठूण मुक्कपोक्कारुकंपियपहियवग्गं निब्भरं रुयमाणी सा जुवई चियं रयाविऊण अणंगकेउसरीरगं घेत्तूण निवारिज्जमाणी वि जयमालिणा पविट्ठा हुयवहं। विसन्नो रायसुओ, गतो मुणिसमीवं, भणिउं पवत्तो य—भयवं! को एस वइयरो?। अह ईसिपेमवसगग्गरगिरं संलत्तं तवस्सिणा—भो महायस!

१ प्रमुक्तचक्रनिष्कृपनिकृत्तनरमुण्डरुधिरसिक्तधरम्। कुन्ताग्रघातघूर्णयितृरोषोद्भटचलितप्रतिसुभटम् ॥ २ तीक्ष्णाग्रखड्गताडितकङ्कतनिघर्षोच्छलज्ज्वलनकणम्। दष्टौष्ठवण्ठनिःसृष्टशैलमुच्यमानभूरिभटम् ॥ ३ °ल्लंतभू° खं० ॥ ४ समकालमुक्तनाराचराजिराजमानदिक्पथाभोगम्। क्षयसमयसमुद्गतभूरिकेतुसञ्जनितशोभमिव ॥ ५ °समुग्गसमु° खं० प्र० ॥ ६ कृत्वा एवमत्यन्तभीमं उद्दामसमरव्यापारम् ॥ ७ °केऊस° खं० प्र० ॥ ८ °माणा वि प्र० ॥

सम्मत्ते अणुरागो सया विरागो य इंदियत्थेसु। सुतवस्सीसु य भत्ती विणिवित्ती पावकिच्चेसु ॥ ९ ॥
पइदिणसुगुणब्भासो कयंतविसए य सइ अविस्सासो। भवसंभवभावविभावणं च सुत्त-ऽत्थसवणं च ॥ १० ॥
एमाइ तह कहं पि हु कायव्वमणन्नमाणसेण तए। जह संसारभयाणं भुज्जो न हि भायणं होसि ॥ ११ ॥
इच्छामो अणुसट्ठिं ति जंपिरो हरिसवियसियच्छिपुडो। तं वंदिउं निसीयइ स महप्पा भूमिवट्ठम्मि ॥ १२ ॥

अह धम्मरुइतवस्सिणा भणितो एसो—महाणुभाव! धन्नो तुमं, जस्स भयवं अप्पहासो सिरिपहासो सयमेवमणुसासइ, न हि अकयसुकया गुरूवदेसभायणं हवंति मणुया। जन्नप्पिएण भणियं—भयवं! एवमेयं, सुकयसालिणो च्चिय एवंविहधम्मोवएसदाणमरिहंति, सम्मं च कयं तुब्भेहिं जं नियचरणकमलमुद्दाविन्नासेण पवित्तीकयमिमं मह गेहं, चक्खुक्खेवेण य अणुग्गिहीयमिमं मह कुडुम्बं, एत्तियमेत्तेण वि पावपंकपडहत्थाओ निच्छिन्नं व मन्नामि भवन्नवातो अप्पाणं ति। गुरुणा भणियं—भद्द! निव्वहंति निप्पच्चूहाइं गुरूवइट्ठाइं धम्मकिच्चाइं?। जन्नप्पिएण जंपियं—भयवं! तुम्ह प्पसाएण निव्वूढाइं एत्तियकालं, संपयं पुण संदेहदोलाधिरूढाइं व नज्जंति। भगवया भणियं—कहमेयं? ति। ततो जन्नप्पिएण मुणिणो पाएसु पाडिओ सुरप्पिओ, सिट्ठो य, जहा—भयवं! एस अम्ह पुत्तो असेसगुणसंगतो, विसेसओ उदग्गसोहग्गेण सुमित्तेणं व पडिवन्नो, तव्वसेण य पुरसुंदरीहिं इतो तओ सकडक्खविक्खेवं खोभिज्जमाणो जइ वि संपयं

१ 'अल्पहासः' हास्यविरहितः 'आत्मभासः' आत्मज्ञः इति वा ॥ २ °डुंबं खं० ॥ ३ पापपङ्कपूर्णाद् निस्तीर्णमिव मन्ये भवार्णवात् ॥ ४ निर्व्यूढानि ॥ ५ °यए का° खं० ॥ ६ °दयसो° खं० प्र० ॥ ७ सकटाक्षविक्षेपं क्षुभ्यमाणः ॥ ८ °णो वि जइ संप° खं० प्र० ॥

परवीवाहविहाणं निय[1]यावच्चेसु नेव पडिसिद्धं । [2]कन्नाहलहेउं पुण तक्करणं होइ अइयारो ॥ ७ ॥
चिरभज्जं गयजोव्वणमिति बुद्धीए परं पुणो जुवइं । वीवाहइ अप्पाणं इय परवीवाहकरणं वा ॥ ८ ॥
कयकामसेवणस्स वि तं दीवंतस्स ओसहाईहिं । इच्छानियत्तिविरहा अइयारो पंचमो नेओ ॥ ९ ॥
पढमाइयारदुगमिह सदारसंतोसिणो परं जाण । सेसतिगं [3]दुण्हं पि हु साहारणमेव अवसेयं ॥ १० ॥

एत्थ य एवं भावणा—सदारसंतोसिणो हि वेसं दाणेण थोयकालं अप्पणीकाऊण 'मम भज्ज च्चिय इम' त्ति सेवंतस्स वयसावेक्खत्तणेण न भंगो, थोयकालपरिग्गहाओ य परमत्थओ न नियभज्ज त्ति भंगो [त्ति] भंगा-भंगरूवो अइयारो त्ति १ । अपरिग्गहियागमणं पुण अणाभोगाइणा [4]अइक्कमाइणा वा अइयारो त्ति २ । परदारवज्जिणो पुण एयमइयारदुगं न संभवइ, थोयदिणपरिग्गहिया-ऽपरिग्गहियाणं [5]पणंगणत्तणेण कुलंगणाए वि अणाहत्तणेणेव परदारत्ताभावाउ त्ति ॥ अन्ने भणंति—

परदारवज्जिणो पंच हुंति तिन्नि उ सदारसंतुट्ठे । इत्थीए तिन्नि पंच व भंगवियप्पेहिं नायव्वं ॥ १ ॥

एत्थ वि एसा भावणा—[6]परेणेव थोवकालं जा परिग्गहिया वेसा तग्गमणमइयारो, परदारवज्जगस्स कहंचि तीए परदारत्ताउ त्ति १ । अणाहाए कुलंगणाए जं गमणं तं पि तस्सेव अइयारो, लोए परदारत्तेण तीए पसिद्धीओ । तस्स य कप्पणा इमा—भत्तुणो अभावाओ न एसा परदार त्ति २ । सेसा पुण दोण्हं पि, तहाहि—सदारसंतोसिणो सकलत्ते इय[7]रस्स

१ निजकापत्येषु ॥ २ कन्याफलहेतोः ॥ ३ दोण्हं प्र० ॥ ४ अवक्क° प्र० ॥ ५ पणाङ्गनात्वेन ॥ ६ परेण थो° खं० ॥ ७ 'इतरस्य' परदारवर्जिनः ॥

सकलत्ते वेसायणे य अणंगकीडा अइयारो, एवंकरणे हि [1]इच्छानियत्तिविरहाओ तव्विरईए असारत्तं ति १ । एवं परवीवाह-कामतिव्वाभिलासा हि दट्ठव्वा । नवरं 'परं अहं वीवाहेमि, न मेहुणं सेवावेमि' त्ति वयसावेक्खयाए अइयारो । न य परवी-वाहकरणं कन्नाफलाइबुद्धीए न संभवइ मुद्धबुद्धिणोऽहाभद्दगस्स वा मग्गावयरणत्थं दिन्नवयस्स त्ति २ । ३ । इत्थीए पुण सपुरिससंतोस-परपुरिसवज्जणाणं न भेओ अत्थि । अणंगकीडाइणो य सदारसंतोसिणो व सपुरिसविसए संभवंति । पढमो पुण जया नियपई चिय सवित्तिवारयदिणपवन्नं कामेइ तया अइयारो, बीओ पुण अइक्कमाईहिं चेव अइयारो त्ति । कयं पसंगेण ॥ छ ॥

एवमइयारपरिहारसुंदरं वयमिमं पवन्नस्स । गिहिणो वि न दुल्लंभा महल्लकल्लाणसंपत्ती ॥ २ ॥

इमं च सव्वं सम्ममेगग्गमाणसो अवधारिऊण गुरुपुरओ जयमाली रायसुओ पडिवन्नो परदारनिवित्ति[2]वयं, गओ य जहागयं । साहू वि उप्पइओ मरगयभायणसामलं गयणयलं । भुज्जो भुज्जो अणंगकेउविज्जाहरदुव्विलसियं विभावितस्स बाल-गिलाण-तवस्सीणं च ओसहाइसमप्पणेण वेयावच्चं कुणंतस्स वच्चंति से वासरा ।

जह जह स निव्वियारं पि नेय चक्खुं पि खिवइ सुमुणि व्व । पुरसुंदरीउ तह तह दढयरवड्ढंतरागाओ ॥ १ ॥
[3]मयणसरजज्जरंगीउ [4]इंति तं सेविउं निसासमए । बहलतमसामले लज्जिरीउ उच्छन्नवंसाओ ॥ २ ॥
कइवयदिणगहियपरिग्गहं पि अपरिग्गहं व अप्पाणं । मन्नंतीओ अन्नातो तं दढं उवयरिंति बहुं ॥ ३ ॥

१ इच्छानिवृत्तिविरहात् ॥ २ °त्तिव्वयं प्र० ॥ ३ मदनशरजर्जराङ्गयः ॥ ४ इन्ति प्र० ॥

काओ वि पवड्डियगरुयपेम्मरागाउ पायडिय[1] सिहिणं । खोभिंति सकामकरप्पहारमाईहिं तं बाढं ॥ ४ ॥
अवराओ अप्पाणं विवाहकज्जेण से पणामिंति[2] । तुममेव गई सरणं नाहो त्ति पयंपमाणीओ ॥ ५ ॥
नवपरिमलमालइमउल-मल्लियामाइदामदाणेण । तह सवियारगिराहिं मयणं दीविंति अवरातो ॥ ६ ॥
खोभिज्जंतो वि स ताहिं एवमनिलावलीहिं सिंधु व । लंघाविउं न तरिओ कयाइ नियनियममज्जायं ॥ ७ ॥

एवं च निरइयारं चउत्थमणुव्वयमणुपालिंतस्स तस्स एगया कइवयपहाणपुरिसपरिवुडस्स जाइगुण-दोसचिंताविसया जाया परोप्परं[3]मुल्लावा । तत्थ एगेण संलत्तं—बंभणा वन्नाणं पहाणा, वेयरहस्सपढणातो । अन्नेण जंपियं—अणुच्चियमिमं, बंभणाणं जम्माणंतरमेव भिक्खाभमणाइणा निव्वाहसंभवातो कहं पाहन्नं ? । अवरेण भणियं—वइस्सा चेव सोहणा, नीसेसलोगकज्ज-करणेण सया वि उवयारिभावाओ । अन्नेण वज्जरियं—किमेसिं कम्मयरप्पायाणं वरागाणं सॅलहणिज्जं[4] ? सव्वहा सुद्दाण सुंदेरं[5]-मुद्दा अउव्वा का वि, जेण बंभणाइणो वि तदुवजीवणातो निव्वहंति, सॅव्वाऽऽसमाणं[6] च उवट्ठंभकारिणो हवंति । अवरेण वागरियं—अलाहि सव्वेसिं पि एयाण संकहाए, वन्नाणं खत्तिओ च्चिय वन्नणिज्जो, जप्पभावेण सुहेण नियमंदिरगयाओ पयाओ धम्म-ऽत्थ-कामेसु वट्टंति त्ति । सलहियमिमं सव्वेहिं । जातो य जयमालिणो थेवमित्तो जाइमओ, न य सरिओ विसेसकिच्चकाले वि । पंचपरमेट्ठिमंतुच्चारणं च कुणंतो पंचत्तमुवगतो एसो उववन्नो सोहम्मे देवत्तणेणं । तत्तो य चुतो भो जन्नप्पिय ! संपयं एस सुरप्पिओ नाम तुह सुओ वट्टइ । जं च एसो माहणकुले संभूओ तं पुव्वकयजाइमयदोसेण । जं

१ प्रकटय्य स्तनम् ॥ २ अर्पयन्ति ॥ ३ °रसमु° खं० ॥ ४ श्लाघनीयम् ॥ ५ सुंदरेण मु° खं० । सौन्दर्यमुद्रा ॥ ६ सर्वाश्रमाणाम् ॥

महावेरं[1]विरोयणुद्दीरणारंणि[2]निव्विसेसपररामारमणसंभवो भवोहदुहकारी अणत्थसत्थो एसो एवं वियंभइ । जयमालिणा भणियं—रागिणो हि पुरिसा एवंविहाववयाणं गोयरगया चेव, तुब्भे पुण तव्वइयरदूरवत्तिणो वि कीस ससोग व्व लक्खिज्जह ? । मुणिणा भणियं—एवमेयं, केवलं 'मज्झ सहोयरो वि भविय एस अँसरियपंचनमोकारो[3] विवज्जइ' त्ति मणागमित्थं संतावो अवरज्झइ । 'अहो ! बलॅवं[4] नालसंबंधो, जमेवं संगचागिणो वि विहुरिज्जंति' त्ति चिंतंतो अच्चंतं परदारपरिहाराभिमुहमई जयमाली मुणिं नमिऊण भणइ—भयवं ! सदारसंतोसो च्चिय काउमुचिओ, परं 'विसमा कज्जगइ' त्ति ता देह परदार-निवित्तिं ममं ति । साहुणा भणियं—जुत्तमेयं, को दिट्ठदोसं कज्जं सॅयन्नो[5] काउमुच्छहेज्जा ? केवलं एयविरइसरूवं ताव बुज्झसु—
ओरालिय-वेउव्वियभेया दुविहं हि जाण परदारं । वेउँव्वियममरिच्छि[6] ओरालियमवि य दुविगप्पं ॥ १ ॥
तिरिय-नरइत्थिभेया तत्थ परित्थिं विवज्जमाणस्स । नियदारतोसिणो वि हु अइयारा हुंतिमे पंच ॥ २ ॥ तहाहि—
वज्जइ इत्तिरिय-ऽपरिग्गहियागमणं अणंगकीडं च । परवीवाहक्करणं कामे तिव्वाभिलासं च ॥ ३ ॥
अयणस्सीला इह इत्तिरी उ भाडीपयाणसंगहिया । वेसा तं थोयदिणे सेवंतो कुणइ अइयारं ॥ ४ ॥
अपरिग्गहिया वेसेव अवरपुरिसस्स पॅग्गहियभाडी[7] । कुलनारी वाऽणाहा ताणं गमणे वि अइयारो ॥ ५ ॥
आलिंगणाइचेट्ठं नह-दंतनिवायमवि य सवियारं । परदारविसयमाहू अणंगकीड त्ति अइयारं ॥ ६ ॥

१ वैराग्निः इति प्र० टिप्पणी । महावैरविरोचनोदीरणारणिनिर्विशेषपररामारमणसम्भवः ॥ २ °रणनि° खं० प्र० ॥ ३ अस्मृतपञ्चनमस्कारः ॥ ४ °लवन्नाल° खं० ॥ ५ 'सकर्णः' विद्वान् ॥ ६ वैक्रियं अमरस्त्रियम् ॥ ७ परिग्ग° खं० ॥

सुचिरं तमणुसासिऊण विहरिओ अन्नत्थ धम्मरुई मुणिवरो। सुरप्पिओ वि जहापडिवन्नधम्मगुणेसुं पइदियहपवड्ढमाणसुहभावो भावओ वि चारित्तमणुफासिंतो '[1]अज्जं हिज्जो वा घरवासमुज्झामि' त्ति संचिंतंतो दिणाइं गमेइ।

अन्नया य सो महप्पा कज्जवसेण आराममुवगतो समाणो जाव कयलीलयाहरे अच्छइ ताव तस्स चेव आरामस्स देवया वाणमंतरी तदीयभारियारूवं विउव्विय [2]रूय-लायन्नावहरियहियया पविट्ठा लयाहरं, मयणुम्मायमहिज्जमाणी य सवियारं जंपिउं पवत्ता—

हे धुत्त ! गिहं मोत्तुं परदारं कामिउं किमिह पत्तो ?। जइ सच्चममलसीलो ता किं एगंतवासेण ? ॥ १ ॥
सगिर च्चिय गुरुपुरतो सदारसंतोसमुल्लविय पुव्विं। इण्हिं अणु[3]चिंयचिट्ठो कह वयभंगं न पाविहसि ? ॥ २ ॥

एवं च पयंपिरिं तमवलोइऊण चिंतियं सुरप्पिएण—अहो ! एवंविहविलज्जवयणविन्नासेण निच्छियं न संभाविज्जइ मह इमा भज्जा, कहं तव्विहसुकुलजाया ईसिं पि [4]अदिट्ठविलियाए एवमुल्लवेज्जा ? कहं वा एगागिणी इह आगच्छेज्जा ? ता अन्ना काइ तीए सरिसागारा एसा नज्जइ। एत्थंतरे भणियं तीए—भो अज्जपुत्त ! किमेवं चिंताउरो वट्टसि ? न देसि पडिवयणं ? न वा साइणिजणो व्व सम्मुहं बंधसि लक्खुलक्खं ति। अह निन्निमेसचक्खुपेक्खणाइलिंगेहिं '[5]अमाणुसीयं' ति विणिच्छिय सहासं भणियं सुरप्पिएण—भो महाणुभावे ! अमाणुसीए वि तुज्झ विलीणकलेवरेहिं माणुसेहिं सद्धिं को

१ अद्य ह्यो वा ॥ २ रूवला° प्र० ॥ ३ °यचेट्ठो प्र० ॥ ४ अदृष्टव्रीडतया ॥ ५ अमानुषी इयम् ॥

एवंविहसवियारवयणवावारस्सावसरो जमेवमप्पा [स]मायासिज्जइ ?। देवयाए जंपियं—अणन्नं पि अन्नं नियभज्जं कुणंतो किं छुट्टसि तुमं ?–ति पारद्धो तीए उवसग्गिउं।

अह सव्वहा निव्वियारचित्तेण तेण निच्छूढा सा लयाहरातो जायकोवसंरंभा 'रे रे दुरायार ! तहा काहं जहा अकाले च्चिय कालातिही हवसि' त्ति संलवंती अइंसणमुवगया, साहिउं पवत्ता य वियालसमए नियभत्तुणो, जहा—अहमित्थमित्थं च सुद्धसील-समायारा वि इमिणा बंभणसुएण अणिच्छंती [1]निब्भच्छिया असमंजसवयणेहिं ति। इमं च सोच्चा गरुयकोवावेगवड्ढंतामरिसो तब्भत्ता वाणमंतरो निसामज्झसमए सुहसिज्जोवगयस्स भारियाए कीरमाणसरीरसंवाहणस्स सुरप्पियस्स समीवं गओ।

एत्थंतरे सुरप्पिएण पुच्छिया नियभज्जा—भद्दे ! तुमं मह आरामट्ठियस्स कीस आगय ? त्ति। तीए भणियं—अज्जपुत्त ! किमेवमणुचियं समुल्लविज्जइ ? किमहं कयाइ पुव्वं पि जिण-मुणिभवणातो अन्नहिं भमंती दिट्ठा तुमए जेणेवमघडंतं भन्नइ ?। ततो आगारसंवरं काऊण [2]मोणमल्लीणो सुरप्पितो। ततो विम्हयमुव्वहंती सा निब्बंधं काऊण ताव ट्ठिया जाव सव्वो साहिओ मूलाओ तव्वइयरो। तं च सोच्चा वाणमंतरो पसंतकोवो 'अहो ! [3]कुडंगीकुडिलहिययाणं इत्थियाणं [4]दुट्ठचेट्ठं' त्ति विभाविंतो जोडियकरसंपुडो भणिउं पवत्तो—भो सुरप्पिय ! जहत्थाभिहाण ! न केवलं नियकुलं, वसुमई वि पवित्तिया तुमए निक्कलंकसीलपालणेण, ता तुट्ठो हं तुह सच्चरिएण, वरं वरेसु त्ति। अह सुरप्पिएण विम्हइयमाणसेण भणियं—भो महाणुभाव ! को तुमं ? किं वा ते परितोसकारणं ? ति। तओ वाणमंतरेण सिट्ठो चिरवइयरो। मुणियकज्जमज्झेणं च वर-

१ निर्भर्त्सिता ॥ २ मौनमालीनः ॥ ३ वंशजालिकुटिलहृदयानाम् ॥ ४ °चेट्ठं' ति प्रतौ ॥

स्थूलमैथुनविरतौ सुरप्रियकथानकम् ३७ । पारदार्यदोषावेदनद्वारा तत्परिहारोपदेशः

॥२६८॥

वरणं पडुच्च भणियं सुरप्पिएण—देव-गुरुपसाएण नत्थि पत्थणिज्जं किं पि, ता किं वरेमि ? । वाणमंतरेण वुत्तं—तहा वि ममाणुग्गहकए किं पि साहेसु । ततो तप्परिओसकए 'केच्चिरं मह आउयं ?' ति पुट्ठो सो अणेण । ततो 'मासावसाणं' ति साहिऊण वसुहारं च खिविऊण गतो जहागयं वाणमंतरो । सुरप्पिओ वि तक्कालाणुरूवसविसेससंथारगदिक्खाइगहणेण उत्तिमट्ठं साहिऊण मओ संतो अच्चुयसुरसिरिं पत्तो ।

इय नियदिट्ठंतं निसुणिऊण तं किं पि किरियमावन्नो । जेण सुराण वि[1] पुज्जो जातो इहइं पि स महप्पा ॥ १ ॥
जे पुण एवंविहपावठाणपडिबद्धमाणसा बाढं । ताणमणिवारियाओ निवडंति महावयाउ सया ॥ २ ॥ अपि च—

प्रेङ्खत्फणामणिमयूखशिखाभिरामां, रामां निषेवितुमभीच्छति सोऽहिभर्तुः ।
यद्वा युगान्तसमयोचितहव्यवाहज्वालावलीर्वपुषि वाञ्छति सन्निधातुम् ॥ १ ॥
श्रीकण्ठकण्ठकलुषां विषवल्लरीं स, निद्रातुमाश्रयति वा विरचय्य शय्याम् ।
यश्चेतसाऽप्यभिलषत्यपबुद्धिरन्यभार्यामनार्यचरितः परिभोक्तुं[2]मुत्कः ॥ २ ॥ किञ्च—
यल्लिङ्गमात्रवपुरर्धमृगाङ्कमौलि[3]र्यद्देवराडपि सहस्रभगाङ्कितोऽभूत् ।
तत् पारदार्यमनिवार्यविपन्निपातं, बुद्ध्वा निमित्तमजडः कथमादधीत ? ॥ ३ ॥

१ वि भुज्जो प्रतौ ॥ २ °कुयुक्तः प्रतौ ॥ ३ °लि यं देवराडपि सहस्रदगा° प्रतौ ॥

पुण्यस्य पापस्य च द्वैविध्यम्

च उदग्गसोहग्गसंगतो तं च गिलाणाइवेयावच्चकरणेण । जं पि य अकिच्चकरणविमुहबुद्धी [1]तं पि समयसंसियविहिणा [2]सुचरियपुन्नाणुबंधिपुन्नमाहप्पेणं ति ॥ छ ॥

जन्नप्पिएण भणियं—भयवं ! किमन्नहारूवं पि पुन्नं संभवइ जमेवं वुच्चइ ? । मुणिणा भणियं—भो देवाणुप्पिय ! पुन्नं हि दुहा वुच्चइ—एगं पुन्नं पुन्नाणुबंधि जायइ, जं रायलच्छिविच्छड्डभोगोवभोगसुहं संपाडिंतं पि तह परिणमइ जह भुज्जो वि पुन्नकिरियासरूवमणुबंधइ, जहा भरहचक्कवइणो; अवरं पुन्नं पावाणुबंधि, पुव्वमब्भुदयहेउत्तणेण संभविय पच्छा अ[3]तुच्छदुक्खाणुबंधिपावपंकमणुसज्जइ, जहा बंभदत्तचक्किणो सुकयसंपाडियरज्जसुहस्स पज्जंते सत्तमनरयवत्तिणो त्ति; पावं पि दुहा—एगं पावाणुबंधि, जहा कालसूयरीयस्स, जीवणे मरणे य अविच्छिन्नपावाणुसज्जणाओ; अन्नं पावं पि पुन्नाणुबंधि, जहा चिलाइपुत्तस्स इत्थीवहाइपावकरणे वि तदुत्तरं संभ[4]वंतोदग्गवेरग्गमग्गोवगयस्स पुन्नपब्भारसंजणणं ति ।

एत्थंतरे सुरप्पिओ आयन्नियपुव्वाणुभूयभावो जा[5]ईसरणवससविसेसपच्चक्खीकयसुकय-दुक्कियाणुरूवफलविवागो पव्वज्जं घित्तुमुवट्ठिओ । ततो भणिओ पिउणा—वच्छ ! कइवयवरिसाइं सावयवयपरिवालणेण वि पडिवालेहि ताव, पच्छा दो वि कणिट्ठसुयसमारोवियकुडुंबभारा भगवतो पहासगणहरस्स समीवे पव्वइस्सामो । 'एवं होउ' त्ति सुरप्पिएण 'सदारसंतोसिणा होयव्वं' ति अ[6]ब्भुगच्छिय गहियाइं साहुणो समीवे बारस वि वयाइं । 'सम्ममेयपालणे अब्भुज्जओ होज्जासि' त्ति

१ तं च सम° प्र० ॥ २ सुचरितपुण्यानुबन्धिपुण्यमाहात्म्येन ॥ ३ अपुव्वदु° खं० ॥ ४ सम्भवदुदग्रवैराग्यमार्गोपगतस्य ॥ ५ जातिस्मरणवशसविशेषप्रत्यक्षीकृतसुकृतदुष्कृतानुरूपफलविपाकः ॥ ६ अभ्युद्गम्य ॥

जे पुण इच्छाविनिविवित्तिविरहिया बहुपरिग्गहारंभा । ते भूरिकिलेसा-ऽऽयासभायणं हुंति धरणो व ॥ ९ ॥

तहाहि—अत्थि गरिट्ठमरहट्ठवरिट्ठं अरिट्ठपुरं नाम नयरं । तं च पयंडभुयदंडावगुंडियरायलच्छिसमद्धासियवच्छ-त्थलो तिलोयणो [नाम] पुह[इ]वई पालेइ ।

जो निच्चमुमानिलतो धम्मकरो तह विणायगाइनओ । महिहरसिरदिन्नपओ सच्चं उवहइ नियनामं ॥ १ ॥

तस्स य रन्नो ऑसन्नसयणो पयईए च्चिय विसुद्धबुद्धिपगरिसागरभूतो भूओवरोहरहियहियतो खेमायच्चो नाम पहाण-पुरिसो परिवसइ, वसुंधराभिहाणा य से भज्जा, धरणो य ताण पुत्तो । तं च उच्छंगगयं एगया खेमाइच्चो जाव घरं-गणोवगतो कीलावंतो अच्छइ ताव भीमसेणं मुणिं अवरेण साहुणा समेयं गोयरचरियाए परियडंतं पेच्छइ । 'अहह ! किं मइविब्भमो ? सरि[सा]गारविप्पलंभो वा ? सच्चं वा ? जमेस पंडुसुओ असेसवीरवरिट्ठो इत्थमाउद्धकट्ठाणुट्ठाणो व दीसइ' त्ति चिंततो सुयं मोत्तूण धाविओ तदणुमग्गेणं, सायरं पडितो भीमसेणपाएसु, भणिउं पवत्तो य—भयवं ! किमहं सम्मूढमई ? उयाहु स एव पंडुसुतो भीमसेणो तुमं ? ति । भीमसेणेण भणियं—भद्द ! न सम्मूढमई तुमं, अम्हे पंच

१ भूरिक्लेशायासभाजनम् ॥ २ °समिद्धा° प्रतौ ॥ ३ यथा त्रिलोचनः–महादेवः नित्यम् उमायाः–पार्वत्याः निलयः–आश्रयः, 'धर्मकरः' धर्मस्य कारकः, विनायकादिभिः नतः, महीधरशिरसि–पर्वतशिरसि दत्तपदश्च; तथा अयमपि त्रिलोचनो राजा नित्यम् उमायाः–कीर्त्याः आश्रयः, धर्म्यः करो यस्य, विशिष्टै-र्नृपतिभिः नतः, महीधरशिरसि–शत्रुभूपालशिरसि दत्तपदश्चेति यथार्थाभिख्योऽयं त्रिलोचनो राजा ॥ ४ °न्नपुरओ प्रतौ ॥ ५ 'आसन्नस्वजनः' निकटसम्बन्धी ॥ ६ °रन्नो क° प्रतौ ॥

वि भाउया पवन्नसामन्ना इहइं आगया वट्टामो । विम्हइयहियएण य वेज्जरियं खेमाइच्चेण—भयवं ! को एस वइयरो ? केहिं पंडुमहुरापुरीविसयाहिवच्चं ? कहिं वा एसो मणसा वि दुकरो संजमवावारो ? । साहुणा भणियं—मग्गट्ठियाणं एग-वयणं वा दुवयणं वा कप्पए वोत्तुं, ता कुसुमावयंसाभिहाणोववणनिवासिणो पत्थावे अम्ह गुरुणो पुच्छेज्जासि त्ति ।

अह वियप्पकप्पणावाउलो सगिहमुवगतो खेमाइच्चो । मुणिणो वि समत्थियपत्थुयपओयणा पडिगया जहागयं । खेमाइच्चो वि पुव्वुत्तचिंताइरेगेण खणं पि रई अपावमाणो वियालसमए गओ कुसुमावतंसमुज्जाणं । दिट्ठा बहवे साहुणो, वंदिया जहारिहं, आसीणो पुव्वपरिचियस्स जुहिट्ठिलमुणिस्स समीवे । विलुत्तसिणिद्धसुद्धरूयपब्भारं तं च अज्जुणाइणो वि दट्ठूण सोगसंगलन्तंसुजालाविलच्छो सो भणितो तक्खणुप्प[न्न]पच्चभिन्नाणेण जुहिट्ठिलेण—भो खेमाइच्च ! किमेवं संतप्पसि ? एवंविहपज्जवसाणा सव्व च्चिय भवट्ठिई । खेमाइच्चेण भणियं—तहा वि किमेवंविहदुरणुचरचरणारंभस्स विसेस-निमित्तं ? । जुहिट्ठिलेण भणियं—सवणवज्जासणिनिव्विसेसमिमं तहा वि लेसतो साहिप्पंतं सम्ममवधारेसु—

मइरापाणपरव्वसजायवसुयजणियदेहसंतावो । दीवायणो नियाणं काउं बारवइदहणट्ठा ॥ १ ॥
मरिउं अग्गिकुमारो देवो होऊण संरियचिरवेरो । कणयमयभवण-गोउर-पायारं बारवइनयरिं ॥ २ ॥

१ कथितम् ॥ २ कहं पं° प्रतौ ॥ ३ विषयाधिपत्यम् ॥ ४ कहं वा प्रतौ ॥ ५ विकल्पकल्पनाव्याकुलः स्वगृहम् ॥ ६ समर्थितप्रस्तुतप्रयो-जनौ ॥ ७ युधिष्ठिरमुनेः ॥ ८ विलुप्तस्निग्धशुद्धरूपप्राग्भारम् ॥ ९ शोकसङ्गलदश्रुजालाविलाक्षः ॥ १० श्रवणवज्राशनिनिर्विशेषमिदम् ॥ ११ कथ्यमानम् ॥ १२ स्मृतचिरवैरः ॥

जायवकुलकोडीपरिवुडं पि [1]पक्खिविय तिव्वहव्ववहं । कासी स भासरासिं मोत्तुं हरि-हलहरे दोन्नि ॥ ३ ॥
अम्हे पडुच्च ते पुण इंता कोसंबवणमणुप्पत्ता । तत्थ य हरी विवन्नो जराकुमारेण सरपहओ ॥ ४ ॥
बलभद्दो पुण [2]तव्विरहहुयवहुम्महियमाणसो बाढं । पव्वज्जं पडिवज्जिय मोग्गिल्लमहागिरिम्मि ठिओ ॥ ५ ॥
अम्हे वि सुणिय एवं जराकुमारातो जायवेरग्गा । तं चिय रज्जे ठविउं पडिवन्ना संजमुज्जोगं ॥ ६ ॥
संपइ य नेमिनाहं जायवकुल[कुमु]इणीनिसाबंधुं । वंदिउममरिंदनयं सोरट्ठं पट्ठिया गंतुं ॥ ७ ॥
इय [3]भावणाविइक्कंतकज्जनिज्जावणानिउणमइणो । विहिणो किं वन्निज्जउ दंसियखणभूरिभंगस्स ? ॥ ८ ॥
जीए पहू चक्कहरो परिहा जलही सुवन्नपागारो । सा वि पुरी जाइ खयं ही ! संसारो दढमसारो ॥ ९ ॥

ता भो देवाणुप्पिय ! संसारियकिच्चपवंचभग्गा पंच वि अम्हे एवं धम्ममग्गमेगंतसुहावहमा[4]यन्निय पवन्ना, तुमं पि भद्द ! एवंविहखणविणस्सरसरूवयं सव्वभावाणमवगम्म, दुक्खाणुबंधित्तणं च दुव्विलसियाणं[5] विचिंतिय, महारंभ-महापरिग्गहसंभवं च आयास-सोगसंदब्भमाभोगिय, अप्पणो हियत्थमब्भुच्छहेज्जासि त्ति ।

अह 'भूरिहरि-करि-रह-जोहाइसामग्गिमग्गिदाहाइसु हरिणो वि परमत्थेण अकिंचिकरिं, केवलं कोसियारकीडगस्सेव विसेसबंधणनिबंधणं' ति विभाविऊण खेमाइच्चो जायसंसारियकिच्चविरागो राग-दोसविरहियं देवं सव्वन्नुं तप्पणीयं पवयणं परिमि-

१ प्रक्षिप्य तीव्रहव्यवाहम् । अकार्षीत् स भस्मराशिम् ॥ २ तद्विरहहुतवहोन्मथितमानसः ॥ ३ भावनाव्यतिक्रान्तकार्यनिर्यापनानिपुणमतेः ॥ ४ आकर्ण्य ॥ ५ °णं च चिं° प्रतौ ॥

इति स्वतः सद्गुरुवाक्यतो वा, न योऽन्यनारीविरतिं विधत्ते ।
स पापतापोपहतो विरौति, विशुष्यमाणे सरसीव मत्सः ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे चतुर्थाणुव्रतचिन्तायां सुरप्रियकथानकं समाप्तम् ॥ ३७ ॥

पायं अणत्थसत्थो परिग्गहानिग्गहम्मि संभवइ । ता तप्परिमाणकए जइज्ज इति संपयं भणिमो ॥ १ ॥
[1]परिगिज्झइ सीकिज्जइ परिग्गहो सो दुहा मुणेयव्वो । दव्वे धण-धन्नाई भावे रागाइ णेगविहो ॥ २ ॥
दव्वप्परिग्गहेणं इह पगयं तस्स जं परीमाणं । काउं सक्कं [2]ईयरस्स एयविणिवित्तितो चेव ॥ ३ ॥
बज्झपरिग्गहपरिमिइ विणा वि कुव्वंति एयविणिवित्तिं । [4]भरहाइणो व केई नवरं ते एत्थ अइथोवा ॥ ४ ॥
बाहुल्लेणं पुण बज्झवत्थुपरिमाणकरणदारेण । [3]भावपरिग्गहमेरं काउं नियमेण सक्कंति ॥ ५ ॥
दुक्खाणं आययणं धम्मज्झाणस्स पढमपडिवक्खो । होज्ज कहं सुहकारी परिग्गहो दुग्गहो व फुडं ? ॥ ६ ॥
मूढा परिग्गहकए हणंति जीवे वयंति य असच्चं । गिण्हंति य परदव्वं परमहिलं [5]सीकुणंती य ॥ ७ ॥
इय सव्वपावठाणा[ण] कारणं वारणं सुहमईए । [6]संकोडिंति य सइना तं इच्छानिग्गहं काउं ॥ ८ ॥

१ परिगृह्यते स्वीक्रियते ॥ २ 'इतरस्य' भावपरिग्रहस्य एतद्विनिवृत्तितः ॥ ३ भावपरिग्रहमर्यादाम् ॥ ४ °हवेरं प्रतौ ॥ ५ स्वीकुर्वन्ति ॥ ६ सङ्कोचयन्ति च सकर्णाः 'तं' परिग्रहम् इच्छानिग्रहं कृत्वा ॥

॥२७१॥

निबिडं सहाईकाऊण इत्थमुल्लवसि ? [1]पुरिसयारावज्जियलच्छिविच्छड्डुरिल्लं हि सलहिंति सप्पुरिसा जीवियं ।

[2]संकोडियंगुवंगा जणणीगब्भे वि चिरयरं [3]वुत्था । जणणस्स सारमेयं जं कीरइ रिद्धिवित्थारो ॥ १ ॥

दीव व गया विलयं नेहं[4] वट्टिं च जे दहेऊण । को ताण तिणीकयजीवियाण नामं पि इह मुणइ ? ॥ २ ॥

धण-भवण-सयण-परियण-सेज्जाऽऽसण-कोस-कोट्ठवित्थारो । ता तह कीरउ तद्दंसणेण जह सलहए लोगे ॥ ३ ॥

एवं [5]ओदइयभावनिब्भरसंरंभवयणुल्लाविरं तमुवएसदाणाणुचियं विचिंतिऊण मोणमल्लीणो खेमाइच्चो । इयरो वि [6]जीवणोवतोगिदव्वसंभवे वि पइदिणपवड्ढमाणधण-धन्नाइपरिग्गहपरिणामो [7]रायाणमायरेणमोलग्गिउं पवत्तो ।

एगम्मि य अवसरे जामावसेसे वासरे राया विन्नत्तो पुरजणेण—देव ! अमुगप्पएसे केसरिकिसोरो मग्गम[8]वहं काऊण पंचजोयणियं भूभागमवलंबिऊण कयंतो व [9]सत्तसंघायघायणं कुणंतो अच्छइ, न य सो देवस्स आदेसं विणा विणासिउं सक्केण वि सक्किज्जइ त्ति । ततो राइणा असेसम्मि सेवगवग्गे दिट्ठी पेसिया । अहोमुहा होऊण ठिया सव्वे वि । विसन्नो राया, लक्खितो धरणेण । अह भालयलारोवियकरसंपुडेण विन्नत्तो अणेण—देव ! अणुगिण्हसु मं आएसदाणेणं । 'को एसो ?' त्ति [10]संभंमपरि[यत्ति]यच्छिणा पुच्छिओ रन्ना । 'खेमाइच्चपुत्तो' त्ति कहिओ परियणेण । राइणा जंपियं—जइ एवं ता अम्ह कुलस-

१ पुरुषकारावर्जितलक्ष्मीसमूहवत् ॥ २ सङ्कोचिताङ्गोपाङ्गाः ॥ ३ अवसाम ॥ ४ एकत्र तैलं वर्त्तिं च, अन्यत्र प्रेम वृत्तिं च ॥ ५ औदयिकभावनिर्भरसंरम्भवचनोल्लपनशीलम् ॥ ६ जीवनोपयोगिद्रव्यसम्भवेऽपि ॥ ७ राजानम् आदरेण 'अवलगितुं' सेवितुम् ॥ ८ 'अवहं' जनगमनाऽऽगमनरहितम् ॥ ९ सत्त्वसङ्घातघातनम् ॥ १० सम्भ्रमपरावर्त्तिताक्षेण ॥

मुब्भवो चेव एसो । ततो [1]सहत्थतंबोलबीडगदाणपुरस्सरं दिन्नो से आएसो । गतो य सो कइवयसहाइपरिवुडो पुव्वोववन्नियं वणं, दिट्ठो दूरट्ठिओ केसरी, धणुव्वेयकुसलत्तणेण य आहतो अच्छिपएसे नाराएण । मम्मप्पएसघायजायनयणावहारो य हरी कोवाइरेगेण सुन्नलक्खं सज्जियकमो इंतो अणवरयनिसियसरधोरणीविद्धवयणकंदरो दूराओ च्चिय पेसितो कीणासाणणं । जातो य 'जय जय' त्ति सद्दो । [2]पोरुसुक्करिसं च उव्वहंतो पडिनियत्तो एसो ।

वियाणियसीहवहवइयरेण य राइणा परितुट्ठेण य कतो तप्पिउणो सम्माणो, दिन्नाइं कइवयगामाइं, वद्धारिओ जीवलोओ । खेमाइच्चे[ण] वि पुव्वपडिवन्नपरिग्गहपमाणाइरित्तं पडिसेहिऊण उचियं किं पि गहियं जीवणं । नरवइविसज्जिओ य गतो सगिहं । सिट्ठो य धरणस्स एस वइयरो । रुट्ठो य एस—कीस तुमए दिज्जमाणं सव्वं पि न पडिग्गहियं ? ति । पिउणा भणियं—वच्छ ! परिग्गहवुड्ढीए पच्चक्खाणभंगो हवइ त्ति । धरणेण वुत्तं—तुह कूडधम्मसद्धाए निद्धणीकतो हं, जमेवं जमनिविसेसपंचाणणविणासावज्जियातो नरवइणो तुच्छमित्तं जीवणमुवादाय आगतो सि त्ति । खेमाइच्चेण जंपियं—वच्छ ! भणसु किं पि, जाव अहं जीवामि ताव इत्थं वट्टिस्सामि । अह हिययब्भंतरपवड्ढमाणकोवो कइवयदिणाणंतरमेव किं पि घेत्तूण ट्ठिओ एसो विभिन्नगेहे, ओलग्गेइ य पइदियहं भूवइं, 'वीरो' त्ति लहइ सविसेसं पसायं ।

अन्नया य चोडविसयमहिवालजोग्गमहामुल्लपाहुडपडिपुन्नपवहणनायगो काऊण विसज्जितो एसो राइणा चोडविसयं । 'तह' त्ति [3]पडिवज्जियं पयट्टो य संतो अव[4]च्चसिणेहं महंतमुव्वहंतेण भणितो पिउणा—वच्छ ! बाढमजुत्तमेवं संसयतुलारोविय-

१ स्वहस्ततम्बोलबीटकदानपुरस्सरम् ॥ २ पौरुषोत्कर्षं चोद्वहन् ॥ ३ प्रतिपद्य ॥ ४ °सिनेहं प्रतौ ॥

जीवियवस्स धणज्जणस्स हेउं चिट्ठिउं, न हि एवं पि कीरमाणे अणियत्तलोभस्स जीवस्स इच्छाविणिवित्ती संभवइ।

अवि [1]सुरसरिपमुहमहानईण पसरंतवारिपूरेहिं। पूरिज्जइ कहमवि [2]गंहिर-गरुयकुच्छी समुद्दो वि ॥ १ ॥
अवि अणवरयमहिंधणखेवेणं ति[3]प्पई हुयवहो वि। कह वि भरिज्जइ गयणंतरं पि केणइ उवाएण ॥ २ ॥
नो पुण काउं तीरइ इच्छाविणियत्तणं हयजियस्स। [4]कुलगिरिगरुयऽज्जुण-रुप्पकोडिकोडीण लाभे वि ॥ ३ ॥

किं बहुणा?—

तिहुयणमवि जइ दिज्जइ कस्सइ एगस्स[5] तह वि से [6]तेत्ती। जणियं नो पारिज्जइ अहो! दुरंता इमा इच्छा ॥ ४ ॥
एयपडिवक्खभूओ संतोसो च्चिय इहं विहेयव्वो। विहिए य तम्मि त[7]म्मंति नेव थेवं पि सप्पुरिसा ॥ ५ ॥
ता वच्छ! एयविसए उवायपरिकप्पणा खमा काउं। इह-परभवे य दुक्खाण जेण नो भायणं भवसि ॥ ६ ॥

'अहो! कहं तहापडिकूलकारी थेरो नि[8]म्मेरमुल्लवंतो मणागं पि न विरमइ?' त्ति अमरिसमुव्वहंतो तमवगन्निय आरूढो जाणवत्तं। आरोविओ सियवडो, वज्जियं मंगलतूरं। अणुकूलानिलवड्ढियवेगं च तं गंतुं पवत्तं जलहिम्मि। 'अहो! पलावमेत्तं अभिनिविट्ठेसु उवएसदाणं' ति विलक्खो सगिहमुवगतो खेमाइच्चो।

इयरो वि गच्छंतो पत्तो चोडविसयं, दिट्ठो चोडनरिंदो, समप्पियं पाहुडं। तव्विहियसम्माणो य मणिच्छियमुवज्जि-

१ सुरसरित्-गङ्गा नदी ॥ २ गभीरगुरुककुक्षिः ॥ ३ **तप्प°** प्रतौ । तृप्यति ॥ ४ कुलगिरिगुरुकार्जुनरौप्यकोटिकोटीनाम् ॥ ५ **°स्स कह** प्रतौ ॥ ६ तृप्तिः जनयितुं नो पार्यते ॥ ७ ताम्यन्ति ॥ ८ निर्मर्यादम् उल्लपन् ॥

यपरिग्गहारंभपरिमाणं च पडिवज्जिय गतो नियभवणं। जुहिट्ठिलादिमुणिणो वि पत्थुयत्थसाहणत्थं पत्थिया नेमिजिणंतियं। सो वि तप्पुत्तो धरणो अवगयकइवयकलाविसेसो दारपरिग्गहाणंतरं पयट्टो दव्वज्जणोवाएसु रायसेवाइसु णेगहा दुक्करेसु। भणितो य पिउणा—रे पुत्त! थे[1]वंतरायासेण वि निव्वाहसंभवे किमणवरयमं[2]च्चग्गलं किलिस्ससि? किं न पेच्छसि अपरिमियपरिग्गहस्स निप्फलत्तणं?। तहाहि—

कण[3]यस्सऽडकोडिसमज्जणे वि भोगो ति[4]पसइमेत्तस्स। बहुवत्थसंभवे वि हु अं[5]गवतोंगे दुवत्थस्स ॥ १ ॥
वि[6]त्थिन्न-चित्तमणहर-हरिणंकुज्जल-विसालभवणे वि। देहप्पमाणपल्लंकमेत्तमुवओगि गरुओ वि ॥ २ ॥
दाणोवभोगजोग्गो अत्थो च्चिय परिमिओ वि य विसिट्ठो। उक्खण[7]णं-रक्खणायासकारओ सेसओऽणत्थो ॥ ३ ॥
जइ दुट्ठरिट्ठ-चाणूर-कंसमुसुमू[8]रणो वि महुमहणो। [9]रन्ने हम्मइ एगो ता सेवगसंगहो वि [10]मुहा ॥ ४ ॥
इय कइवयवासरमेत्तजीविए वच्छ! खिज्जसे कीस। थेवायासेण वि भाविरीए ननु जीविगाए कए? ॥ ५ ॥

एवं च निरुत्तजुत्तिजुत्तं पि पन्नविओ पिउणा सो भणिउं पवत्तो—ताय! जइ वि [11]एयमेयं, तहा वि 'अवस्समरियव्वं' ति न तीरइ [12]सुसाणे [13]संठिउं, न यावि वेरिहत्थेण मरियव्वे वि अप्पा अप्पणा वि वेरिणो पणामिउं पारियइ, ता कीस सद्धाजडत्तं

१ **थेवंत°** प्रतौ ॥ २ अत्यर्गलम् ॥ ३ **°यमूड°** प्रतौ ॥ ४ त्रिप्रसृतिमात्रस्य ॥ ५ 'अङ्गवतः' देहधारिणः अङ्गे ॥ ६ **°च्छित्तचि°** प्रतौ। विस्तीर्णचित्रमनोहरहरिणाङ्कोज्ज्वलविशालभवनेऽपि । देहप्रमाणपल्यङ्कमात्रमुपयोगि ॥ ७ **°णपक्ख°** प्रतौ ॥ ८ **°रणे वि** प्रतौ । मुसुमूरणो—भञ्जकः ॥ ९ **रन्नो ह°** प्रतौ ॥ १० **मुहो** प्रतौ ॥ ११ एतदेवम् ॥ १२ श्मशाने ॥ १३ **संठविउं** प्रतौ ॥

रसिंदो, हुयवहधम्मिज्जमाणेसु य धाउपाहणेसु खेत्तो एसो, जायं जच्चकंचणं । पहिट्ठा दो वि, न ठिया तेत्तिएण[1] । अदब्भ[2]लोभाभिभूया य भुज्जो पयट्टा सुवन्नं पाडिउं ।

अह गरुय[3]कोववसवित्थरंतभालयलभिउडिभीममुहो । ते भणइ खेत्तवालो पच्चक्खो तक्खणं होउं ॥ १ ॥
रे रे कीडप्पाया ! जइ करुणाए मए पढमवेलं । सोढं सुवन्नपाडणमेत्तियमेत्तेण वि य भुज्जो ॥ २ ॥
लग्गा एत्थ वि तुब्भे रक्खिज्जइ तुम्ह कारणे किमिमं ? । नियपुन्नपरिणइं पि हु न विभावह वट्टह जमेवं ॥ ३ ॥
इय पढमपाडियं पि हु हाडय[4]मुद्दालिऊण तह खेत्ता । जह अन्नन्नविउत्ता ते पडिया दूरयरखेत्ते ॥ ४ ॥

तहाविहं च अप्पाणं पेहिऊण[5] धरणो परं विसायमुवगतो चिंतेइ—अहो ! कत्तो निप्पुन्नयाणं कज्जसिद्धी ? पुरिसयारो वि न केवलो किलेसाओ परं फलं दाउमलं, किमित्तो कीरउ ? कत्थ वा गम्मउ ?—त्ति गाढसोगाउलियस्स तस्स पुव्वसंगइओ[6] एगो सुरो पुरो ठाउं जंपिउं पवत्तो—

किं भो भाउय ! न सरसि मिहिलाए पुरीए पुव्वजम्मम्मि । तुममहयं पि हु जाया पुत्ता एगस्स वणियस्स ? ॥ १ ॥
अन्नोन्नगाढपणया अन्नोन्नमभिन्नकज्जपरमत्था । अन्नोन्नसोक्ख-दुक्खाणुवत्तिणो वुड्ढिमणुपत्ता ॥ २ ॥
दव्वोवज्जणहेउं किसि-वाणिज्जाइविविहकम्मेसु । लग्गा तदेगचित्ता दव्वं पि हु अज्जियं किं पि ॥ ३ ॥

---

१ तेत्तेण प्रतौ । तावता ॥ २ अदभ्रः–अत्यन्तः ॥ ३ गुरुककोपवशविस्तरद्भालतलभ्रुकुटिभीममुखः ॥ ४ 'हाटकं' सुवर्णम् ॥ ५ प्रेक्ष्य ॥ ६ 'पूर्वसङ्गतिकः' पूर्वजन्मपरिचितः ॥

नवरं तेत्तियमित्तेण थेवमित्तं पि तेत्तिं[1]मलभंता । परतीरगमण-नरवइसेवणमब्भुट्ठिया काउं ॥ ४ ॥
तत्थ वि असिद्धकज्जा वे[इ]राग[2]रखणण-खन्नवाएसु । बाढं पयट्टमाणा चिरज्जियत्थस्स वि य चुक्का[3] ॥ ५ ॥
अच्चंतचित्तपीडाविहुरसरीरा य विहुणि[4]उच्छाहा । किं करिमो ? पोक्करिमो य कस्स ? एयं विभाविंता ॥ ६ ॥
कत्थइ रइमलभंता वेरग्गावडियमाणसा सगिहं । चइउं हिमयड[6]पडणट्ठयाए (?) अह पट्ठिया सिग्घं ॥ ७ ॥
दिट्ठो य दिट्ठदट्ठव[7]वित्थरो नायसव्वनायव्वो । संभूयनामधेयो मुणिवसहो अद्धमग्गम्मि ॥ ८ ॥
नाणि त्ति सो य वंदिय पुट्ठो अम्हेहिं अप्पणो वत्तं[8] । भयवं ! किमत्थ कीरउ विवरीयत्तम्मि हयविहिणो ? ॥ ९ ॥
तो मुणिणा संलत्तं देवाणुपिया ! परिच्चयह लोभं । एसो हि नूणमेवंविहाणऽणत्थाण पढमपयं ॥ १० ॥
एयद्दोसेणं चियं कत्थ पयट्टति न दुक्करे वि जणो ? । अज्झवसइ[10] किमकज्जं पि नेव ? वच्चइ न वा कत्थ ? ॥ ११ ॥
तो अम्हेहिं पुट्ठो भयवं ! को तस्स निग्गहे हेऊ ? । तेणं भणियं इच्छाविनिग्गहेणं हि संतोसो ॥ १२ ॥
संभवइ जेत्तियं जेत्तिएण निव्वहइ नियकुडुंबं पि । तेत्तियमेत्ताउ परं नियमेज्जा निग्गहिय इच्छं ॥ १३ ॥
पुणरवि समए पुट्ठो किंविसया ? कह व सा विहेयव्वा ? । संभवइ गिहत्थाणं किह वा गिहकज्जनिरयाणं ? ॥ १४ ॥
अह जीववहा-ऽलिय-परधणित्थिपरिहारमक्खिउं मुणिणा[11] । सव्वपरिग्गहविसयं परिमाणं सीसए एवं ॥ १५ ॥

---

१ तृप्तिम् ॥ २ वज्राकरखननखन्यवादयोः ॥ ३ भ्रष्टौ ॥ ४ विधुनितोत्साहौ । किं कुर्वः पूत्कुर्वश्च कस्य ? एवम् ॥ ५ त्यक्त्वा ॥ ६ °मपडपड° प्रतौ । हिमतटपतनार्थाय (?) ॥ ७ °दव्वट्ठवि° प्रतौ ॥ ८ वार्ताम् ॥ ९ °य तत्थ पयट्टंति प्रतौ ॥ १० अज्जव° प्रतौ ॥ ११ °णिणो प्रतौ ॥

धण-धन्न-खेत्त-वत्थू रुप्प-सुवन्नं चउप्पयं दुपयं । [1]कुवियं च इत्थ विनियत्तिविसयमिय नवविहं जाण ॥ १६ ॥
तत्थ धणं चउभेयं गणिमं पूगीफलाइ धरिमं च । मंजिट्ठाई मेयं घयाइ वत्थाइ परिछेज्जं ॥ १७ ॥
धन्नं मुगाइ खेत्तं च सेउ-केऊभयेहिं तिविगप्पं । सेयं भूजलसज्झं केउं आगासजलसज्झं ॥ १८ ॥
[2]उभयजलसज्झसस्सं सेऊकेउं च तइयमक्खंति । वत्थुं च गिहाइ तिहा [3]खाऊसियमुभयजायं च ॥ १९ ॥
खायं भूमीहरयं तव्वइरित्तं च ऊसियं बीयं । तदुभयनिप्पन्नं पुण खाऊसियमाहु तइयघरं ॥ २० ॥
रुप्प-सुवन्नाइं पायडाइं तुरगाइ चउपयं बिंति । दुपयं दासाईयं कुवियं बहुहा घरट्ठाइ ॥ २१ ॥
थूलं परिग्गहमिणं मुणिउं नेगप्पयारमुव[उ]त्ता । उवओगि वत्थु मोत्तुं सेसस्स करिंति विणिवत्तिं ॥ २२ ॥
ता भो देवाणुपिया ! तुब्भे वि हु विहुणिऊण मिच्छत्तं । जइ इच्छह कल्लाणं ता इच्छामाणमायरह ॥ २३ ॥
कीस किलिस्सह बहुहा मिच्छत्ता-ऽविरइवेरिविहुरमणा । विज्जंते वि जिणुत्ते सव्वत्तो वि य परित्ताणे ? ॥ २४ ॥
एवं तेणं मुणिणा निदंसिए किच्चवत्थुपरमत्थे । तुमए मए य गहियं सम्मं इच्छापमाणमिणं ॥ २५ ॥
दाऊण य अणुसट्ठिं मुणिणा भणियं अहो ! इह पवन्ने । अइयारा पंच दढं मुणिऊणं उज्झणिज्ज त्ति ॥ २६ ॥ जहा—
खेत्ताइ-सुवन्नाई-धणाइ-दुपयाइ-कुप्पमाणकमे । जोयण-पयाण-बंधण-कारण-भावेहिं नो कुणइ ॥ २७ ॥
खेत्तम्मि आइस[4]द्दा भूमिघरं [तह] धणे य धन्नं तु । रुप्पं च सुवन्नम्मि दुपयम्मि चउप्पयं चेव ॥ २८ ॥

१ कुप्यं चात्र विनिवृत्तिविषयम् इति ॥ २ उभयजलं–भूजलं आकाशजलं च ॥ ३ खातम् उच्छ्रितम् उभयजातम् ॥ ४ °सद्दो सुरिघरं प्रतौ ॥

ऊण धणं पडिग्गहियपडिपाहुणो पवहणमारुहिय वलिओ नियनयरहुत्तं । जलहिमज्झमणुपत्तो य [1]संवडम्मुहावडंततक्करपवहणेहिं समं आढत्तो जुज्झिउं । अह पयट्टासु परोप्परं पत्थरवुट्ठीसु, खिप्पंते[2]सु दिप्पंतअग्गितेल्लेसु, मुचंतीसु [3]कयंतकडक्खतिक्खासु सर-ज्झसर-नाराय-भल्लीसु, खंडिज्जंतेसु सियवडेसु, ति[4]क्खक्खुरुप्पकप्परिज्जंतेसु विजयचिंधेसु, वि[5]सत्थीहूएसु निज्जामएसु, कहं पि दिव्वजोएण उ[6]च्छलंतातुच्छकच्छभनिट्ठुरपडिप[7]हट्ठाणं पाविय कयकडयडारावा सयखंडत्तणं पवन्ना धरणस्स नावा । निमग्गो अत्थसारो ।

आसाइयफलहगखंडो य महाकट्ठकप्पणाए ओति[8]न्नो महन्नवं धरणो । कंठग्गलग्गजीविओ य कह कह त्ति [9]समुद्दतडगिरिकडयपरियडणेणोवलद्धकंदमूलाइविहियपाणवित्ती नित्थामो तरुतले वीसमिउं पवत्तो । पेच्छइ य एगं धाउवाइयं मेससिंगग्गेण विविहातो ओसहीओ खणेऊण गिण्हंतं इओ तओ परियडंतं च । ततो 'सकारणमेसो एवं भमइ' त्ति वितक्किय गतो धरणो तदंतियं । जातो य परोप्परमुल्लावो सहसंवासेण [10]पणयप्पभावो य ।

अन्नदिणे धाउवाइएण य भणितो धरणो—जइ सहाई भवसि ता पाडेमि सुवन्नं, देमि जलंजलिं दोगच्चस्स । 'जं तुमं आणवेसि तं करेमि' त्ति पडिवन्नं धरणेण । अह उवाहारिया धाउपाहणा, पउणीकतो [11]महल्लखल्ले ओसहीरसकल्लवितो

१ सम्मुखापतत्तस्करप्रवहणैः । तस्करा अत्र समुद्रमध्ये लुण्टनप्रवणा ज्ञेयाः । 'चांचीया' इति भाषायाम् ॥ २ °सु खिप्पं° प्रतौ ॥ ३ कृतान्तकटाक्षतीक्ष्णासु ॥ ४ तीक्ष्णक्षुरप्रकल्प्यमानेषु ॥ ५ विशस्त्रीभूतेषु ॥ ६ उच्छलदतुच्छनिष्ठुरकच्छपसम्मुखस्थानं प्राप्य कृतकडकडारावा ॥ ७ °पइट्ठा° प्रतौ ॥ ८ अवतीर्णः ॥ ९ समुद्रतटगिरिकटकपर्यटनेन ॥ १० प्रणयात्मभावश्च ॥ ११ महाखले औषधीरसतीमितः 'रसेन्द्रः' पारदः, हुतवहधम्यमानेषु च धातुपाषाणेषु क्षिप्तः ॥

सवं तह त्ति पडिवज्जिऊण गुरुणोऽणुसट्ठिमादाय । तो उज्झियकुविगप्पा विरईधम्मुज्जया जाया ॥ १ ॥
सुविसुद्धविरइपालणवसेण लच्छी वि अज्जिया काइ । नवरं वच्चंतेसुं दिणेसु लोभाभिभूएण ॥ २ ॥
भो धरण ! पुणो वि तए पारद्धा णेगहा महारंभा । सरिया य न अइयारा धणाइवुड्ढिं कुणंतेण ॥ ३ ॥
अइयारविरहियं पालिऊण धम्मं अहं तु मरिऊण । सोहम्मे उववन्नो देवो दिव्विड्ढि-रूवधरो ॥ ४ ॥
तुममवि विराहिऊणं सावययवयवित्थरं मरणसमए । अट्टज्झाणोवगओ तिरियत्तेणं समुप्पन्नो ॥ ५ ॥
तत्तो य एस धरणो त्ति खत्तिओ अंतरायदोसेण । विरइविराहणजणिएण पइखणं खिज्जमाणो वि ॥ ६ ॥
अज्जसि न दवजायं ता विरइविराहणं कडुविवागं । सरिउं एत्तो भद्दय ! जं जुत्तं तं समायरसु ॥ ७ ॥
पुवसिणेहेणाहं तुह दूरं तिक्खदुक्खतत्तस्स । कहिउमिममागओ म्हि इहरा किमिहाऽऽगमेणं मे ? ॥ ८ ॥
इय वुत्ते वित्तंते जाइं सरिऊण तक्खणं धरणो । पुव्वुत्तकमेण पुणो गिण्हइ विरइं भउव्विग्गो ॥ ९ ॥
सवं सिद्धं सवं च पावियं होउ इण्हि तण्हाए । इय तम्मि पमोयगए देवो अद्दंसणं पत्तो ॥ १० ॥

एवं च सरियजहुद्दिट्ठविसिट्ठजिणधम्माणुरागरत्तो धरणो ततो पएसातो सणियसणियं गच्छंतो पत्तो अरिट्ठपुरं । सुमरियं चिरसुकएण, सम्माणितो राइणा, पुवड्ढिईए दिट्ठो पिउणा, अभिनंदितो सयणवग्गेण, उववूहिओ साहम्मियलोगेण, तिवग्गसंपाडणपगिट्ठट्ठिईए कालमइवाहेइ ।

१ प्राप्तम् ॥ २ स्मृतयथोद्दिष्टविशिष्टजिनधर्मानुरागरक्तः ॥ ३ त्रिवर्गसम्पादनप्रकृष्टस्थित्या ॥

सो य एगया दिट्ठविसिट्ठधम्माणुट्ठाणनिट्ठेण पुच्छिओ य पिउणा—वच्छ ! कहिं एसा सविसेसधम्मसंपत्ती जाय ? त्ति । ततो सिट्ठो अणेण देवदंसणपमुहो सवो पुववुत्तंतो । परितुट्ठो पिया, भणिउं पवत्तो य—वच्छ ! परतीरोवगएण तमुवज्जियं तुमए जं न केण वि उवज्जिउं तीरइ, न य वच्छ ! एत्तो वि अन्नं सुंदरं असेसदुक्खोवसमणसमत्थं च, ता एत्थ बाढमुज्जओ निच्चं हवेज्जासि । 'एवं काहामि' त्ति पडिवन्नं धरणेण । अह सविसेसजायपुत्तपक्खवातो खेमाइच्चो समप्पिऊण सवसंपय-मेयस्स पवन्नो पवज्जं, सिद्धो य पुंडरीयपव्वए ।

धरणो वि "जहा लाभो तहा लोभो" त्ति पवड्ढंतइच्छाइरेगो विस्सुमरिऊण पुवभवविरइभंगसंभवमणत्थसत्थं मोक्कल-विमुक्कखित्तो वि किंचि विरइसावेक्खयाए पिउणो अप्पणो य खित्ताण अंतरवाडीविहाडणेण एगखेत्तयं कुणंतो पवन्नो पढम-मइयारं १ । सुवन्नसयाइरित्तकयपच्चक्खाणो वि पिउपणयमुवहंतेण रन्ना विइन्नसुवन्नसयसंकलगं घेत्तूण 'मयाइ आहरिस्सामि' त्ति भइणीए समप्पंतो गओ बीयाइयारगोयरं २ । उभयघरसंपिंडणेण य धन्नाइ अइरित्तं बुज्झिऊण परगिहेसु धन्नाई धराविन्तो 'सघरोवगयं चिय ममेयं' ति बुद्धीए आवन्नो तइयमइयारं ३ । चउप्पयाइवुड्ढीए वयभंगं भाविरं संकमाणो य नियमावहिसमए च्चिय गब्भसंभवत्थं गवाईणं संडाई चावारिंतो अल्लीणो चउत्थमइयारं ४ । पडिवन्नसंखासमइरेगसंकाए य वट्टग-तट्टाइयं वट्टाविऊण जहुत्तसंखं थूल-विसालयाइभावं करावितो समस्सितो पंचममइयारं ५ । तहाविहसंकिलिट्ठपरिणामो य तब्भवि च्चिय भुज्जो खीणगेहसवस्सो य विविहरोगा-ऽऽयंककिलामियकातो मरिऊण कुजोणिं गतो चाउरंताणंतसंसारारन्नसेवगो य जातो त्ति ।

१ प्रवर्धमानेच्छातिरेकः विस्मृत्य ॥ २ °मुक्को खि° प्रतौ ॥ ३ विघटनेन–विनाशनेन ॥ ४ मृतपतिकायै भगिन्यै इत्यर्थः ॥ ५ स्वगृहोपगतम् ॥

नियमियपरिग्गहाणं तप्पिउणो इव गुणो धुवो दिट्ठो । त[1]व्वइरित्ताणं पुण इय धरणस्स व महाणत्थो ॥ १ ॥
सीसंतु केत्तिया वा अणत्थसत्था अ[2]छिन्नवंछस्स । पइसमयमुत्तरोत्तरवड्ढंताणिट्ठचेट्ठस्स ? ॥ २ ॥ अपि च—

यन्नास्ति नैव भविता न च पूर्वमासीज्जीवस्तदप्यभिलषन्नखिलत्रिलोक्यम् ।
इच्छानिवृत्तिविरहेण न कैश्चिदेव, देवा-ऽसुरैरपि निरोद्धुमयं [हि] शक्यः ॥ १ ॥
इच्छानिवृत्तिरपि सर्वपरिग्रहस्य, सम्यक् प्रमाणकरणेन सुनिश्चिता स्यात् ।
तत्सीमसम्भविसुदृष्टसुखश्च पश्चात्, सर्वं त्यजेदपि परिग्रहमात्मनैव ॥ २ ॥
स्वास्थ्यं न तत् प्रवरभोजन-वस्त्र-माल्य-रत्नाद्यलङ्करणतोऽपि भवेदवश्यम् ।
यत् सर्ववस्तुविषयप्रथमानवाञ्छाविच्छेदतः कृतधियः परिकीर्तयन्ति ॥ ३ ॥
इति किमिह बहूक्तैस्तन्न भूमीश्वराणां, न च भवनपतीनां नैव वैमानिकानाम् ।
सुखमनुपममाहुः यद् वितृष्णस्य पुंस-स्तदपगतविकल्पैरत्र यत्नो विधेयः ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे प[3]ञ्चमाणुव्रतविचारणायां धरणक[4]थोक्त्याऽणुव्रतपञ्चकं समाप्तम् ॥ ३८ ॥

---

१ 'तद्व्यतिरिक्तानां' अनियमितपरिग्रहाणामित्यर्थः ॥ २ अच्छिन्नतृष्णस्येत्यर्थः ॥ ३ **पञ्चाणु**° प्रतौ ॥ ४ °**कथानकं समाप्तम्** प्रतौ ॥

कुप्पं तु अणेगविहं अइयारा एसि जोयणाईहिं । अइयारभावणा पुण पयडत्था भन्नए एत्थं ॥ २९ ॥

एकेकखेत्त-घराइरित्तकयपच्चक्खाणस्स तयहिगामिलासे वयभंगभएण दोण्हं खेत्ताणं घराणं वा अवंतरवाडीए कुड्डस्स वा अवणयणेण एगत्थ जोडिंतस्स वयसावेक्खत्तणतो कहिंचि विरइबाहासंभवातो अइयारो त्ति १ । तहा सुवन्नस्स वा गहियवयाइरित्तस्स कत्तो वि लं[1]भे अन्नस्स प्पयाणेण अइयारो । तस्स हि[2]ए एस संकप्पो—चाउम्मासियावहिपरेण इमाहिंतो[3] घि[4]च्छामि, संपयं पुण वयभंगो होइ—त्ति वयसावेक्खयाए अइयारो त्ति २ । तहा धण-धन्नाणं पमाणाइक्कमो बंधणेणं होइ । जहा किर धण-धन्नपरिमाणवयप[व]न्नस्स अइरित्तं धणं धन्नं वा कोइ देइ, तं च वयभंगभयाओ 'चउमासातो परेण घरगयधणाइविक्कए कए घेच्छामि' त्ति भावणाए बंधणेणं—नियन्त्रणेन सत्यङ्कारादिना परघरे ठ्ठावितस्स अइयारो त्ति ३ । तहा दुपयाणं दासीपमुहाणं चउप्पयाणं गवाईणं जं परिमाणं तस्स 'कारणेण' गब्भाहाणविहावणरूवेण अइयारो होइ । जहा किर केणइ संवच्छराइअवहिणा दुपय-चउप्पयाणं परिमाणं गहियं, तेसिं च संवच्छरंतो च्चिय पसूइसंभवे 'अहिगदुपयाइउप्पत्तीए वयभंगो' त्ति भएण केच्चिरे वि काले वोलीणे तस्स गब्भगहणं कारिंतस्स गब्भगयदुपयाइभावेण य कहं पि वयभंगातो अइयारो त्ति ४ । तहा कुप्पे वट्टाइरूवस्स जं माणं तस्स अइक्कमो 'भावेण' तप्पज्जायंतररूवेण होइ । जहा किर केणइ दस करोडयाणि पमाणं कयं, तेसिं च दुगु[5]णत्ते जाए वयभंगभया दो दो आवट्टिऊण एक्केकं गुरुतरं कारिंतस्स तस्स पज्जायंतरकरणेण संखापूरणाओ य अइयारो त्ति ५ । अलं पसंगेण ॥ छ ॥ पत्थुयं भन्नइ—

---

१ **लाभो** प्रतौ ॥ २ हृदये ॥ ३ °**तो मिच्छा**° प्रतौ ॥ ४ ग्रहीष्यामि ॥ ५ °**गुणत्तणत्ते** प्रतौ ॥

वायमंडलि व [1]भमंतविविहपत्तविराइया बहुकरेणुसंगमा य मायंदी नाम नयरी । तहिं च महामुणि व उ[2]व्वूढखमापब्भारो, [3]अब्भपिसातो व पडिपुन्नमंडलरायमाणखंडणपयंडो, आखंडलो व अणवरयवि[4]बुहविहियसेवो सिवपालो नाम नराहिवो । भाणुमई नाम महादेवी । देवपालाभिहाणो[5] ताण पुत्तो । मित्ता य तस्स तन्निवासिणो जिणधम्मपडिबद्धबुद्धिणो[6] विण्हु-सेट्ठिणो सुया सिवभूइ-खंदनामाणो [7]मुणियहेउवादेया दक्खिन्नाइगुणसङ्गया समीवचारिणो चिट्ठन्ति । अच्चंतपणएण तव्विरहे ईसिं पि रायसुतो न अच्छइ । चित्त-पत्तच्छेज्ज-कव्व-कहा-पहेलिया-पण्होत्तर-बिंदुच्चुयाइएसु य बद्धलक्खो न भोयणकरणं पि अभिनंदइ, न य मणहरगीय-नट्टाइयं पि बहुमन्नइ, न य अलंकाराइपरिग्गहं पि अभिकंखइ । एवं च तहाजहिच्छाचारेण इओ तओ णेगकीलासंपन्नं सद्धम्मकम्मविमुहमइं च तमवगच्छिय एगया समुचियसमए भणियं सिवभूइणा—रायसुय ! किं पि वि[8]न्नविउमिच्छामि भवंतं, परं न रूसियव्वं तुमए ।

मुहमहुरजंपिरा पडिघरं पि मित्ता हि हुंति न[9]वरिमिमे । अप्पाणं पि परं पि हु पाडिंति भवा[10]वडे वियडे ॥ १ ॥

१ वातमण्डलिः भ्रमद्भिः विविधैः पत्रैः—वृक्षपत्रैर्विराजिता, नगरी पुनः पात्रैः—सत्पुरुषैः । पुनर्वातमण्डलिः बहुकस्य—प्रभूतस्य रेणोः सङ्गमः—समागमो यत्र एवंविधा, नगरी तु बहूनां करेणूनां—हस्तिनीनां सङ्गमो यत्र ॥ २ उद्व्यूढक्षमाप्राग्भारः । महामुनिपक्षे क्षमा—क्षान्तिः, राजपक्षे पुनः क्षमा—पृथ्वी ॥ ३ 'अभ्रपिशाचः' राहुः, असौ हि प्रतिपूर्णमण्डलस्य राज्ञः—चन्द्रस्य मानखण्डने—कलाखण्डने प्रचण्डः, राजा पुनः प्रतिपूर्णदेशस्य राज्ञः मानखण्डने—गर्वापहारे प्रचण्डः ॥ ४ इन्द्रपक्षे विबुधाः—देवाः, नृपपक्षे तु पण्डिताः ॥ ५ °**णो नाम ता**° प्रतौ ॥ ६ °**णो विण्हुसे**° प्रतौ ॥ ७ ज्ञातहेयोपादेयौ ॥ ८ विज्ञप्तुम् ॥ ९ नवरम् इमे ॥ १० °**वाडवे वि**° प्रतौ ॥

अजसं पि तह कहं पि हु तिहुयणसंचारिणं समज्जंति । जह जुगंपरियत्ते वि हु विहुणिज्जइ तं न केणावि ॥ २ ॥
तम्मि य सं[1]इ माणुसजम्म-जीविएहिं पि नेव को वि गुणो । धम्म-ऽत्थ-कित्तिसारं तं सलहंतीह सप्पुरिसा ॥ ३ ॥
जो पावातो नियत्तइ [2]मित्तं पि तमेव बिंति गुणवंतं । सयमवि पावो पावप्पवट्टणं क इव मित्तगुणो ? ॥ ४ ॥
जाणामि अहं भूवइघरेसु न[3]ऽग्घत्ति फुडयपब्भारो[4] । [5]मुहरेइ तह वि किमहो ! करेमि चिरकालिओ [6]पणतो ॥ ५ ॥

एवं च तमुल्लवमाणं रायसुतो पडिभणइ—भद्द ! किमेवमासंकसि ? जंपेहि जं हियए वट्टइ । सिवभूइणा भणियं—कुमार ! असेससत्थपरमत्थवेइणो तुज्झ वि किं पि भणणजोग्गं ? केवलं धम्मोवदेसगगुरूवदेसविमुहो सच्छंदं वे[7]सानेवच्छसच्छहेसु किच्चेसु वट्टंतो पारमत्थियकिरियाविरहितो एवमेव दिणाइं गमिंतो ममं अहिगं चित्तसंतावमुप्पाएसि त्ति । रायसुएण भणियं—भो वयस्स ! अत्थि एवं, किंतु जं इमे गुरुणो तवस्सिभावं पवन्ना केइ जडामउडवंतो, अवरे सिरोरुहावनयणेण सि[8]हलीमेत्त-धारिणो, अन्ने य मुंड-तुंडलुंचणपयट्टा, अवरे य ति[9]कालजलपक्खालणेण अब्भुवगयसरीरकिलेसा विविहप्पयारेहिं अप्पाणं [10]अंतुच्छकिच्छेसु छुब्भंति, तं सव्वं कामिणीपरिच्चायकुवियकाममहारायवियंभियमवगच्छामि, किंच पच्चक्खदिट्ठं विसयसुहमवहाय अदिट्ठसग्गा-ऽपवग्गाइसुहकए क एव सं[11]यन्नो पयंडपासंडमंडलीपरोप्परविरुद्धपरूवणादुक्खदंदोलिमवलंबेज्जा ? ता भो वयस्सवर ! सव्वहा एगवयणेण चेव निसिद्धो सि तुमं, मा भुज्जो धम्मसद्दुच्चारणं पि करेज्जासि त्ति ।

मित्रम्

१ सति ॥ २ **मित्तम्मि त**° प्रतौ ॥ ३ नार्घति स्फुटताप्राग्भारः ॥ ४ °**ऽघवब्भा**° प्रतौ ॥ ५ मुखरयति ॥ ६ प्रणयः ॥ ७ वेश्यानेपथ्य-समानेषु ॥ ८ शिखामात्र- ॥ ९ **तिलकाजल**° प्रतौ ॥ १० महाकष्टेष्वित्यर्थः ॥ ११ सकर्णः प्रचण्डपाषण्डमण्डलीपरस्परविरुद्धप्ररूपणादुःखद्वन्द्वावलिम् ॥

धम्मो धणुदंडो च्चिय दंसणमवि जुवइसंतियं अम्ह । रइपइणो च्चिय दिक्खा सिद्धंतो रइविलासमई ॥ १ ॥
सामग्गीए इमीए जा का वि हु निव्वुईह संभवइ । तीए च्चिय ने कज्जं किमन्नकिरियाकलावेण ? ॥ २ ॥

एवं च पडिकूलवत्तितव्वयणविरयणमायन्निऊण विलक्ख-रुक्खवयणेण चिंतियं सिवभूइणा—अहो ! सो एसो उदि-सरजरविरुद्धस्स ओसहप्पओगो, अतुच्छच्छुहाकिलामियकलेवरस्स भोयणनिरोहो सव्वहा अणत्थिणो तत्तोवएसो, ता अलमित्तो रायपुत्ताणुसासणेणं ति । पयट्टो सो सगिहकिच्चेसु । रायसुतो वि तं विणा खणं पि रइमपावितो पुरिसपेसणाइणा वाहराविऊण सप्पणयं भणिउं पवत्तो—भो वयस्सवर ! किमेक्कपए च्चिय निद्दक्खि[ण्ण]त्तणं पवन्नो सि ? जं पुरा लोयणसंकोयणमेत्तकाला[ण]वलोयणे वि विरहवेयणं सोढुमचइंतो समं मए भोयणा-ऽऽसणाईसु वट्टिय संपयं दुल्लहदंसणी-हूतो सि त्ति । 'अहो ! निक्कवडसिणेहाणुबंधो' त्ति पुणरागयपणएण भणियं सिवभूइणा—कुमार ! मा अन्नहा संभावेसु, किं पि घरपओयणपरंपरापरायत्तत्तणमेत्थावरज्झइ, न उण सिणेहक्खतो त्ति । कुमारेण वुत्तं—जइ एवं ता न तुह दोसो ।

दियहाइं पंच सत्त व कज्जवसा खलयणस्स दढपणतो । होऊण तहा विहडइ जह न घडइ जुगसए वि गए ॥ १ ॥
गरुयाणं पुण ससहरसिंधू-नवमेहसिहिकुलाणं व । सो वड्ढइ पइदियहं महादुमो अमयसित्तो व्व ॥ २ ॥
कह वा न अप्पणो वि हु लज्जिज्जइ चिरपरूढमवि पणयं । उज्झंतेहिं सयं चिय पडिवज्जिय लोयमज्झम्मि ? ॥ ३ ॥

१ प्रतिकूलवर्त्तितद्वचनविरचनामाकर्ण्य विलक्षरूक्षवदनेन ॥ २ उदित्वरज्वरविरुद्धस्य ॥ ३ यद् 'अनर्थिनः' अनिच्छोः तत्त्वोपदेशः ॥ ४ °सासेणं प्रतौ ॥ ५ अशक्नुवन् ॥ ६ वर्त्तित्वा ॥ ७ दृढप्रणयः ॥

तिण्णि गुणव्वयाणि ।

पंचाणुव्वयपडिवत्तिसुद्धसद्धम्मबुद्धिजुत्तो वि । होज्ज गुणव्वयधारि त्ति संपयं एयमक्खामि ॥ १ ॥
गुणकारीणि वयाइं गुणव्वयाइं ति जाण तिन्नेव । ताण दिसापरिमाणं पढमं तस्स य सरूवमिमं ॥ २ ॥
अच्चंततिव्वहुयवहतत्तायसगोलगो व्व वियरंतो । अहवा वि भीमतयविसमहाभुयंगाहिराजो व्व ॥ ३ ॥
विद्दवइ किं न जीवोऽणिसिद्धमण-[वयण-]कायवावारो । तं च निगिण्हेज्ज इमं दिसिगमपरिमाणकरणेण ॥ ४ ॥
अहिदट्ठस्स सरीरे कंडगबंधम्मि कमइ जह न विसं । तह दिसिपरिमाणम्मि विरमइ जीवस्स गमणमई ॥ ५ ॥
जह जह पसरनिरोहो बाढं वणवारणस्स व जियस्स । तह तह अभयपयाणं तद्देसोवगयजीवाणं ॥ ६ ॥
मणवंछियत्थसिद्धी कम्मायत्ता न दूरगमसज्झा । ता दूरदेसपरिभमणविब्भमो पाणिघायफलो ॥ ७ ॥
दिसिपरिमाणग्गहणे दिट्ठं सिवभूइणो व्व फलमतुलं । तव्विवरीयं तब्भाउणो व्व खंदस्स तदगहणे ॥ ८ ॥

तहाहि—अत्थि समत्थदीवोदहिमज्झवत्तिजंबुदीवदाहिणदिसालंकारकप्पे भारहद्धवसुंधरापीढविढत्तसुंदेरपमुहगुणप-ब्भारभूरिसुपुरिसाहिट्ठिए कलिंगविसए चमररायहाणि व्व चामीयर-रयणभवणकिरणपडिहयसन्तमसा अदिट्ठसूरसंतावा य,

१ अत्यन्ततीव्रहुतवहतप्तायसगोलक इव विचरन् । अथवाऽपि भीमत्वग्विषमहाभुजङ्गाधिराज इव ॥ २ °वो अणि° प्रतौ ॥ ३ 'काण्डकबन्धे' यन्त्रबन्धे ॥ ४ भरतार्धवसुन्धरापीठार्जितसौन्दर्यप्रमुखगुणप्राग्भारभूरिसुपुरुषाधिष्ठिते ॥ ५ अदृष्टसूर्यसन्तापेत्यर्थः ॥ ६ °सूरिसं° प्रतौ ॥

के मणहरं पि पुरिसं लहुइंति ? विणासई य को जीवं ? । उल्लसियपहाजालो को वा नंदेइ घूयकुलं ? ॥ १ ॥

रायपुत्तेण विचिंतिऊण वागरियं—दोसागरो[1] । अह विइक्कंता महई रयणी, वज्जियं सेज्जातूरं[2] । विसज्जिया सव्वे सेवगा गया संठाणं । कुमारो वि पसुत्तो सुहसेज्जाए ।

बीयदिणे य सिवभूई 'पण्होत्तराइसु अकुसलो' त्ति किं पि सिक्खणत्थं गतो गुरुणो अइसयनाणिणो सिद्ध[3]देवसूरिणो समीवे । कयसपणय[पाय]पउमपणामो य सिद्धंतदेसणावसाणे रयणिवइयरं निवेइऊण पुच्छिउं पवत्तो—भयवं ! साहेह किं पि पण्होत्तरं ति । तओ दिव्वनाणोवलद्धजहट्ठियभावेण तेण तग्गुणजणणपच्चलाइं सिट्ठाइं दुन्नि पण्होत्तराइं । सम्मं पढियाइं ताइं सिवभूइणा । रयणीसमए य गतो रायसुयसमीवे । पुणो पयट्टा पण्होत्तरसंकहा । रायसुएण जंपियं—भो सिवभूइ ! सव्वो वि कोइ पढइ किं पि ? तुमं पुण न कयाइ, ता किमियमवन्ना ? अपडिहासो वा ? । सिवभूइणा भणियं—कुमार ! मा एवमासंकेसु, विजियसुरगुरुमइणो तुह किं अम्हारिसो सहावजडो पढेउ ? । अह पसायचिन्तगेण चंदचूडनामधेएण भणियं—कुमार ! सुयसु ताव इमं, मह पण्होत्तरं निसामेसु—

वीतस्मरः पृच्छति ? कुत्र चापलं स्वभावजं ? कः सुरते श्रि[4]तः स्त्रिया ? ।
सदोन्मुदो विन्ध्यवसुन्धरासु क्रीडन्ति काः कोमलकन्दलासु ? ॥ १ ॥

१ दोषाः, गरः-विषम्, दोषाकरः-चन्द्रः इति उत्तरत्रयम् ॥ २ शयनकालसूचकं तूरमित्यर्थः ॥ ३ °द्धमेव° प्रतौ ॥ ४ श्रियः श्रियः प्रतौ ॥

कुमारेणोक्तम्—कथं व्यस्त-समस्तजातिः ? भवतु, ज्ञातम्, अनेकपावलयः[1] । अत्रान्तरे अन्यान् पठतो निषेध्य नियुक्तोऽमुना शिवभूतिः प्राह—

भवति चतुर्वर्गस्य प्रसाधने क इह पटुतरः परमः[2] ? । पृच्छत्यङ्गावयवः ? को देवः प्रोक्तनो जगतः ? ॥ १ ॥

विमृश्याभिहितं राजसुतेन—वर्धमानजातिरेषा, नाभेय[3] इति सम्भावयामि । भूयः पठितं तेनैव—

किंसंखा पंडुसुया ? नमणे सद्दो य को ? कहं बंभो । संबोहिज्जइ ? को भूसुओ य ? को पवयणपहाणो ? ॥ १ ॥

महईवेलं विभाविऊण वुत्तं रायसुएण—पंचनमोकारो[4] त्ति ।

अह अणन्नपत्ताइसयरंजियमणेण सिवभूइणा भणियं—कुमार ! अपोरिसेए वि मइप्पगरिसे किमिह तुह पच्छिमपण्होत्तरजुयले ईसि कालविलंबो जाओ ? त्ति । कुमारेण भणियं—भो वयस्स ! कज्जमबुज्झमाणेण अक्खराणुगुणेण मए विमरिसियमिमं, अतो परमत्थं तुमं मह साहेसु, को एस नाभेयो ? को वा पंचनमोक्कारो ? त्ति । ततो सिवभूइणा पारद्धे आइजिणस्स उसभस्स गुणकित्तणे, पंचनमोक्कारस्स य "नमो अरिहंताण"मिचाइरूवस्स सवित्थरस्सरूवकहणे ईहाऽपो-

१ अने ! कपौ, अलयः, अनेकपावलय इति उत्तरचतुष्टयम् । इः-कामः, न इः अनिः तत्सम्बुद्धौ हे अने ! । 'कपौ' वानरे । न लयः अलयः-चापल्यभावः । अनेकपानां-हस्तिनाम् आवलयः-श्रेणयः इति ॥ २ पुराणः । ३ ना नाभे ! नाभेय इति उत्तरत्रयम् । 'ना' पुरुषः । 'नाभे !' मध्यावयव ! । नाभेरपत्यं नाभेयः-ऋषभजिनः ॥ ४ अत्र पंच नमो क ! आरो पंचनमोकारो इत्युत्तरपञ्चकम् । 'पंच' संख्या । नमो अव्ययम् । 'हे क !' हे ब्रह्मन् ! । 'आरो' मङ्गलग्रहः । 'पञ्चनमोकारो' महामन्त्रः ॥

देवपाल-राजकुमार-पूर्वभव-कथानकम्

ह-मग्गणाइ कुणंतस्स रायसुयस्स जायं पुं[1]व्वभवसरणं, अणुसरियपुव्वपढियसुत्त-ऽत्थो य संबुद्धो। तक्कालविलसंतसव्वविरइवासणो, कयपंचमुट्ठियलोयकम्मो, देवयासमप्पियसाहुलिंगो, 'अहह ! किमेयं ?' ति सभय-चमक्कारं सयलपरिसाए पलोइज्जंतो, गिह-मुज्झिय पुरीबहिया महापुंडरियाभिहाणे आरामे गंतूण ठितो काउस्सग्गेणं। हे[2]ल्लोहलितो पुरजणो, विम्हितो राया, अच्छिन्नमुक्कनयणंसुधारं परुन्नमंतेउरं। गया य रायाइणो तदंतियं, वंदिऊण खणं पज्जुवासिऊण य अ[3]दिट्ठमोग्गराभिघाय-घुम्मिय व्व किं पि वोत्तुमपारयंता गया जहागयं।

उचियसमए 'एगंतो' त्ति कलिय पायवडिएण पुच्छितो सो मुणिकुमारो सिवभूइणा—भयवं ! को एस अच्छरिय-भूओ तुह वइयरो ? किं कारणं वा इत्थं पव्वज्जागहणं ? ति। मुणिणा भणियं—भद्द ! जं तए जगगुरुणो जुगादिजिणस्स पंचपरमेट्ठिमहामंतस्स य सरूवनिरूवणं कयं तेण मए जाई सरिया, पुव्वाणुचिन्नसामन्नाणुरागेण य भुज्जो पव्वज्जं प[4]वण्णो म्हि। सिवभूइणा भणियं—भयवं ! को पुण तुमं पुव्वभवे आसि ? त्ति। मुणिणा वागरियं—आयन्नसु—

अहमित्तो तइयपुव्वभवे कोल्लइरपुरे सिंधुदत्तसेट्ठिणो सुयत्तेण उववन्नो। जम्माणंतरं च तिमासियस्स ममं उग्गया वयणे वे[5]इल्लमउलपढमुग्गम व्व सिणिद्धा दसणावली। भीतो पिया। वाहरितो अट्ठंगमहानिमित्तपाढगो जोगीसरो नाम [नेमित्तिओ], विसिट्ठोवयारसारपडिवत्तिपुव्वगं च पुच्छितो—किमेव अगाले डिंभदंतुग्गमो ? त्ति। नेमित्तिएण भणियं—

१ पूर्वभवस्मरणम्, अनुस्मृतपूर्वपठितसूत्रार्थश्च ॥ २ क्षुब्धः ॥ ३ अदृष्टमुद्गराभिघातघूर्णिता इव ॥ ४ °वण्हो म्हि प्रतौ ॥ ५ विचकिल-मुकुलप्रथमोद्गम इव ॥

॥२८०॥

प्रश्नोत्तर-गोष्ठी

इमं च सोच्चा हिययंतो समु[1]म्मिलंतलज्जाभरो सिवभूई विभावेइ—जइ वि दुल्ललियत्तणेण तारुन्नमएण वा धम्मोवएसं मम न पडिवन्नो तह वि परूढपेम्माणुबंधो त्ति न मोत्तुं जुज्जइ एसो, मा कयाइ इमं च पडिवज्जेज्जा।

एत्थंतरे जाया भोयणवेला, दवावियाइं कुमारेण आसणाइं। कयतक्कालोच्चियकिच्चा य भुत्ता सममेव सव्वे वि। ठिया य दिणावसाणं जाव ताहिं ताहिं संकहाहिं। अह रयणीपढमजामसमए पारद्धा रायसुएण पण्होत्तरपाढगोट्ठी। तत्थ य पढियं पढममेव कुमारामच्चेण। जहा—

पापं पृच्छति ? विरतौ को धातुः ? कीदृशः कृतकपं[2]क्षी ? ।
उत्कण्ठयन्ति के वा विलसन्तो विरहिणीहृदयम् ? ॥ १ ॥ तै[3] त त त तु तः ॥

कुमारेण विमृश्योक्तम्—[4]मलयमरुतः। अथ भणितं बालवयस्येन शिवेन। यथा—

विकचयति किमिह शशभृत् ? किं वा शेषोऽपि कलयति शिरोभिः ?
किं वा विशोभमवधार्य नायिका नाऽऽदधाति करे ? ॥ १ ॥

राजपुत्रेण विभाव्योक्तम्—कथमे[का]लापकम् ? हुं ज्ञातम्, कुं[5]वलयम्। एत्थंतरे पयंपियं मंगलपाढयसूणुणा सयाणंदेण—

१ °म्मिल्लंत° प्रतौ ॥ २ °पक्खी प्रतौ ॥ ३ अस्याः प्रहेलिकाया उत्तरे एतदन्तर्गतस्वरोपलक्षणम्—अ-अ-अ-अ-उ-अः। तथैव चोत्तीर्णम्—म्+अ ल्+अ य्+अ म्+अ र्+उ त्+अः=मलयमरुतः ॥ ४ 'मल !' पाप !, यम् उपरमे, 'अरुतः' अशब्दः, मलयमरुतः ॥ ५ अत्र 'कुवलयम्' इत्यनेन कमलम्, पृथ्वीवलयम्, कुः—पृथ्वीरेव वलयं कुवलयं—कुत्सितं वलयम् इति उत्तरत्रिकम् ॥

दिग्विरतौ शिवभूति-स्कन्दयोः कथानकम् ३९।

पि विइक्कंतबालभावो [1]परघरभिक्खाभमणोवलद्धपिंडभोयणेण अप्पाणमहं पोसंतो पत्तो तरुणत्तणं। [2]जम्मणाणंतरविवन्नजणगवइयरायन्नणेण पररिद्धिवित्थरपलोयणेण य जायगरुयवेरग्गावेगो 'अलं घरवासविडंबणाडंबरेणं' ति निच्छिय चउद्दसपुव्विणो सुहम्मसूरिणो समीवे पवन्नो मुणिधम्मं, खंति-मद्दवाइगुणाणुगयमाणसो य गामाइसु गुरुणा समं विहरिउं पवत्तो य। अहिज्जियाणि एक्कारस वि अंगाइं पुव्वगयं च किंचि। जिणधम्माणुरागरंजियहियओ य पज्जंते मासियमणसणं पवज्जिय मओ सोहम्मे देवसुहमणुभुंजिऊण संपइ एसो हं उप्पन्नो रायसुतो। तुमाहिंतो नाभेयजिण-पंच[3]नमोक्कारपयपरूवणायन्नणसमुप्पन्नपुव्वाणुचिन्नसामन्नसरणो संबुद्धो, दिक्खं च तक्खणमेव पवन्नो त्ति ॥ छ ॥

इमं च सोच्चा चिंतियं सिवभूइणा—अहो! विचित्ता कम्मपरिणई, अहो! अविभावणिज्जो तहा[4]भवत्तविवागो, जमच्चंतधम्मविरुद्धवित्तिणो वि थेवं पि निमित्त[5]मेत्तमासाइऊण एवं बुज्झंति। कुमारमुणिसीहो वि बीयदिणे विहरितो अन्नत्थ।

अह कइयवि वरिसाइं छ[6]ट्ठ-ऽट्ठमाइनिट्ठुरतवविसेसविसोसियासुहसंचयत्तणेण समुप्पन्नदिव्वोहिनाणो पुणो वि आगतो तमेव नयरिं। वंदणत्थं च पत्थिवपुरस्सरो समागतो सव्वो पुरीजणो सिवभूइ-खंदनामाणो मित्ता य। वंदिऊण सायरं उवविट्ठा समुच्चियट्ठाणेसु। कया कुमारमुणिणा धम्मदेसणा।

तदवसाणे य सणियसणियमेगो पुरिसो भग्गचरणो 'किं मए पुरा कयं?' ति पुच्छिउं पत्तो तं पएसं, सव्वायरेण पणयकुमार-

१ परगृहभिक्षाभ्रमणोपलब्धपिण्डभोजनेन ॥ २ जन्मानन्तरविपन्नजनकव्यतिकराकर्णनेन ॥ ३—पञ्चनमस्कारपदप्ररूपणाकर्णनसमुत्पन्नपूर्वानुचीर्णश्रामण्यस्मरणः ॥ ४ °भवन्नवि° प्रतौ। ५ निमित्तमात्रमासाद्य ॥ ६ षष्ठाष्टमादिनिष्ठुरतपोविशेषविशोषिताशुभसञ्चयत्वेन ॥

दुर्बलचरणस्य पूर्वभवकथानकम्

मुणिकमकमलो य भणिउं पवत्तो—भयवं! किं मए दुक्कयं कयं जेण केच्चिराणि वि दिणाणि चारुचंकमणो वि होऊण संपयं एक्कपए च्चिय एवंविहचलणबलवियलो संवुत्तो?। भगवया वुत्तं—अत्थि पुव्वजम्मजणियदुक्कम्मदुव्विलसियमेत्थ, तं च निसामेसु—

भद्द! तुमं हि पुव्वभवे [1]कालिंदीजलकालकालिंजरगिरिगरुयमज्झमंडलनिवासी वइसदेवो नाम गोरक्खगो [2]अहेसि। अन्नया गोवग्गं चारिंतेण तुमए गिरिनिगुंजे निलीणो वज्जरिसभसंघयणो महाबलो नाम तवस्सी काउस्सग्गगतो दिट्ठो। 'किमेसा बिभीसिय?' त्ति तरुयंतरिओ खणंतरमवलोइऊण अवक्कंतो तुमं। नवरं दिणे दिणे तहट्ठियं दट्ठूण विगयबिभीसियासंको समीवे उवगम्म 'मुणि' त्ति जायविणिच्छओ पडिओ से पाएसु। मुणिणा वि 'जोग्गो' त्ति विभाविय धम्मलाभिओ तुमं। पमोयभरमुव्वहंतेण य पइदिणदंसणलद्धपसरेण तत्तो जाणियधम्मनिच्छएण एगया पुच्छिओ तुमए साहू—भयवं! किं कारणमेवं पइदिणं पि संकुइयकाएहिं ईसिं पि चंकमणमकुणमाणेहिं उद्धट्ठाणट्ठिएहिं [3]चेट्ठिज्जइ? त्ति।

अह तेण तुमं भणितो अहो महाभाग! भागधेएहिं। गरुएहिं एस लब्भइ जिणिंदकहिओ समणधम्मो ॥ १ ॥

एयस्स य मूलमिमं जं कीरइ सव्वहा वि जियरक्खा। सा पुण जहिच्छसंकमण-सयण-परियत्तणाईसु ॥ २ ॥

संभवइ नो जहे[4]त्था तेणुवउत्ता ससत्तिसब्भावे। [5]खाणु व्व निच्चला ठंति साहुणो काउसग्गेणं ॥ ३ ॥

अंजणचुन्नयपुन्नो समुग्गतो इव सया वि [6]पडिहच्छो। सुहुमेहिं बायरेहि य जीवेहिं जीवलोगोऽयं ॥ ४ ॥

१ कालिन्दी—यमुना २ ॥ अभवः, आसीः इत्यर्थः ॥ ३ स्थीयते ॥ ४ °हन्नो, ते° प्रतौ ॥ ५ स्थाणुरिव ॥ ६ प्रतिपूर्णः ॥

ताणं च रक्खणत्थं इत्थं तित्थंकरेहिं निद्दिट्ठो । कांउस्सग्गोवातो विसेसतो वेरिसयालम्मि ॥ ५ ॥
तेणेव भद्द ! इहइं न उज्जतो कीरई विहारो वि । वीसुत्तरदिवससयं जावुस्सग्गेण इयरो उ ॥ ६ ॥
असिवे ओमोयरिए रायदुट्ठे भए य गेलन्ने । नाणाइतिगस्सऽट्ठा विस्सुंभेणमेसणे विहरे ॥ ७ ॥
फलहाइलाभविरहा पन्नास दिणाइं विहरितो वि मुणी । पुरतो सत्तरिदियहे वसिज्ज अवि रुक्खमूले वि ॥ ८ ॥
अवि सुट्ठितो सुनाणी जिइंदितो जियपरीसहाणीतो । वासासु विहरमाणो दुविहं पि विराहणं लहइ ॥ ९ ॥

ता भो महाणुभाव ! 'जीवाउलो एस कालो' त्ति एवमहमिहाऽऽवसामि त्ति । अह मेरुगिरिसंसग्गेण तिणग्गस्स व सुवन्नपरिणामो मुणिजोग्गेण वियंभितो तुह विमलो विवेओ । समुप्पन्ना य एवंविहा सेमुही—अहो ! महापावकारिणोऽम्हे जे एवमणंतजीवाउले भूमीयले जहिच्छं विचरामो, न थेवं पि संकमुवहामो, ता कहं नित्थरिस्सामो एवंविहपावपारावाराओ? एसो च्चिय परं तवस्सी सुकयनिही नित्थरियभवसमुद्दो य जो नाम एवं कुम्मो व संलीणसव्वंगोवंगो झाणकोट्ठोवगतो व चिट्ठइ । एवं च तुमं अप्पाणं झूरिऊण सपणयं मुणिं भणिउं पवत्तो—भयवं ! को उवाओ ? को वा पडियारो ? अणवरयापरिमियमेइणीभमणसीला कहमम्हारिसा होहिन्ति ? । साहुणा भणियं—भद्द ! अत्थि उवातो दिसापरिमाणकरणेण, परिमियभूभमणेणाणेगंसत्तसंताणताणभावाउ त्ति । तुमए भणियं—भयवं ! कहं पुण तप्परिमाणं घिप्पइ ? किंसरूवं च तयं ? ति

१ कायोत्सर्गोपायः ॥ २ वर्षाकाले ॥ ३ °दुग्गे भ° प्रतौ ॥ ४ °भणपेस° प्रतौ । 'विष्वग्भवने' मरणे 'एषणे' एषणार्थम् ॥ ५ फलकादि– ॥ ६ अव रु° प्रतौ ॥ ७ जितेन्द्रियः जितपरीषहानीकः ॥ ८ 'शेमुषी' बुद्धिः ॥ ९ शङ्कामुद्वहामः ॥ १० अनेकसत्त्वसन्तानत्राणभावात् ॥

मूलातो च्चिय निसुणेसु दसणुग्गमसुहा-ऽसुहसूयगं सव्वं । जहा—
जेसि अयाले दन्ता वयणे दीसंति कह वि डिंभाण । ताण गुण-दोसमासत्तमासियं किं पि साहेमि ॥ १ ॥
दंतेहिं समं जातो कुलनासं कुणइ निच्छियं बालो । दंतेहिं बीयमासे पियरं मारेइ अप्पं वा ॥ २ ॥
वयणम्मि जस्स दंता तइए मासम्मि कह वि दीसंति । पियरस्स कुणइ नासं अदुवा य पियामहं हणइ ॥ ३ ॥
जस्स चउत्थे मासे दसणा दीसंति वयणकुहरम्मि । सो हणइ भाउणो पुव्वजम्मणा नूणमचिरेण ॥ ४ ॥
अह पंचमम्मि मासे दसणा दीसंति जस्स वयणम्मि । वरकरि-तुरंग-करभे सो आणइ नत्थि संदेहो ॥ ५ ॥
जाए य छट्ठमासे दसणा जस्सुग्गमंति वयणम्मि । सो कुणइ दव्वनासं उव्वेयं कलह-संतावं ॥ ६ ॥
सत्तमगम्मि य मासे दसणा जस्साऽऽणणे वियंभंति । धण-धन्न-दासि-दासं पसुमित्तं सो विणासेइ ॥ ७ ॥
इय एस पुव्वमुणिवरनिदंसितो कोइ सत्थपरमत्थो । सुम्मइ एत्तो ता तयणुरूवमायरह निब्भंतं ॥ ८ ॥

इमं च सोच्चा अच्चंतजायचित्तसंतावो नेमित्तियं विसज्जिऊण मह पिया सयणजणं वाहराविऊण 'किमित्थ वइयरे कीरइ ?' त्ति आलोचिउं पवत्तो । अह सयणवग्गेण विनिच्छिऊण अहं ठविओ विभिन्नमंदिरे, तह वि मह दुकम्मदोसेण रयणीए पसुत्तो तक्करेहिं हतो पिया पवन्नो पंचत्तं । ततो परिचत्ता मे वत्ता वि घरजणेण । कहं पि महाकट्ठकप्पणाए य किं

१ वि दिंताण प्रतौ ॥ २ आत्मानम् ॥ ३ 'पूर्वजन्मनः' पूर्वं जातान्, अग्रजान् इत्यर्थः ॥ ४ श्रूयते ॥ ५ निर्भ्रान्तम् ॥ ६ महाकष्टकल्पनया ॥

च न करेइ । किर केणइ पुवाए अवराए वा जोयणसयपरिमाणं परिमाणं कयं आसि, गमणकाले य तं पम्हुट्ठं 'किं सयं ? पन्नासा व ?' त्ति तस्स य पन्नासमइक्कमंतस्स भंगो त्ति ५ ।

एयाण वज्जणाओ दिसिव्वयं पालियं हवइ सम्मं । तप्पालणाए दिन्नं अभयं तद्देसजीवाण ॥ १ ॥ छ ॥

एवं मुणिणा वुत्ते तुमए सम्मत्तपुव्वयं विहिणा । संभवियदिसिपमाणं पडिवन्नं दुविहतिविहेण ॥ २ ॥

वासारत्तपज्जंते य विहरिओ मुणी अन्नत्थ । तुमं पि जिणधम्माणुरत्तचित्तो पुव्वपडिवन्नाभिग्गहपरिपालणपरो जीविगानिमित्तं मित्तगवाइरक्खणबद्धलक्खो चिट्ठसि त्ति ।

अन्नया य 'बहुपच्चूहव्वूहविरुद्धो कल्लाणकम्मसमारंभो' त्ति गिरिकडगे गवाइणो चारिंतस्स तुह उवरिल्लवत्थं कह वि चावलपयइत्तणेण घेत्तूण उड्ढं पलाणो सोहामिगो[1], तुमं पि तम्मग्गेण धाविओ वेगेण, गतो य उड्ढदिसिंमेरं[2] जाव, सरिओ[3] अभिग्गहो, नवरं 'सयं न वच्चिस्सामि' त्ति अन्नं गोवालसुयं पेसयंतो तदानयणत्थं पत्तो पढमाइयारगोयरं १ । अन्नम्मि दिणे तद्देसि च्चिय वसंतो धाउवाइएहिं उवलोभिऊण पवेसितो लक्खरसवेहिनिमित्तं विवरम्मि[4], 'किं करेमि परायत्तो हं ?' ति आलंबणं पवज्जिय अवहिविसयातो[5] परेण वच्चंतो गओ बीयाइयारविसयं २ । अन्नम्मि य पत्थावे गोवग्गमादाय 'तिणाइ निट्ठियं' ति दूरयरदिसीए गतो, तव्वेलं च उल्लालियलंगूलो गिलंतो व तद्देसवत्तिसत्तसंताणं गुंजायमाणो समुट्ठिओ केसरी, नट्ठं गोउलं, तुमं पि गोपुच्छाणुलग्गो जाणंतो वि तिरियदिसिविइक्कमं 'नाहं सयंवसो वच्चामि' त्ति कयावट्ठंभो

१ वानरः ॥ २ °सि मेरुं जाव, सरिसओ प्रतौ ॥ ३ स्मृतः ॥ ४ °वरेमि प्रतौ ॥ ५ अविहि° प्रतौ ॥

पवन्नो तइयमइयारं ३ । अवसरंतरे य गामं गच्छंतो पुन्नं पि अवहिं लंघिय अवरदिसासंतियजोयणपंचयपक्खेवेण[1] जिगमिसियदिसिवुड्ढिं[2] काऊण पट्ठिओ चउत्थाइयारमणुपत्तो ४ । भुज्जो य कयाइ अन्नयरिं दिसिं पयट्टो 'किमिह वीसं तीसं[3] वा जोयणाइं मेर ?' त्ति संकियं[4] तमणुसरंतो संकंतो पंचममइयारं ५ ।

एवं च दिसिविरइं कलंकिऊण अणालोइयदुच्चरितो खीणातो[5] मरिऊण कुदेवत्तेणमुववन्नो । तत्तो वि चविऊण सुकुलसमुप्पन्नो वि पुव्वकयदुक्कयदोसेण भो महाणुभाव ! चंकमणबलवियलो जाओ सि । ता एयं कारणं ति ॥ छ ॥

इमं च सोच्चा सो पुरिसो परमवेरग्गोवगओ भुज्जो पडिवज्जिय तव्विरइं गओ सं ठाणं । सिवभूइ-खंदया वि एयवइयरसवणाउ चेव पवन्नजहावट्ठियदिसिपरिमाणव्वया गया नियघरं । कुमारमुणिसीहो वि विहरितो अन्नत्थ ।

एगया य विसिट्ठववहारविरहियत्तणेण पहीयमाणम्मि दव्वसंचए सिवभूइ-खंदया दो वि भायरो ठिया विभिन्नघरेसु, अनिव्वहमाणा य दव्वज्जणनिमित्तं पगया दविडदेससीमासंधिम्मि, तत्थ य पडिपुन्नं दिसिपरिमाणं । पुरतो पट्ठिए वि सत्थे 'वयाइक्कमो' त्ति ठिओ सिवभूई । लोभाभिभूओ य वयमसरिऊण गतो खंदओ, अकालकुवियकयंतभडभीमभिल्लसेणाल्लुडियसव्वसारो य सरीरावसेसो वलिओ य सदेसाभिमुहं । सिवभूई वि नियनियमनिच्चलचित्तो[6] जाव तत्थेव आवासितो अच्छइ ताव धणड्ढदेसंतरायवणियसत्थाभिघायपावियमहग्घमोल्लपणियपडिपुन्नवसहनिवहमादाय[7] पत्ता भिल्ला तं पएसं । जातो

१ °सासुंनिय° प्रतौ ॥ २ जिगमिषितदिग्वृद्धिम् ॥ ३ °य तीम° प्रतौ ॥ ४ च देसवि° प्रतौ ॥ ५ क्षीणायुः ॥ ६ निजनियमनिश्चलचित्तः ॥
७ धनाढ्यदेशान्तरागतवणिक्सार्थाभिघातप्राप्तमहार्घमूल्यपणितप्रतिपूर्णवृषभनिवहमादाय ॥

॥२८३॥

दिग्विरतेः उपदेशः

सिवभूइणो तेहिं सह ववहारो । उवलद्धा रयणाइणो पयत्था । कयदालिद्दजलंजलिप्पयाणो य गतो सगिहं । मुणि[य]वइ-यरेण य सलहिओ लोगेणं । इय परभवेसु [वि सो] कल्लाणभागी जातो । इयरो अकित्ति लोगदुगविघायं च पत्तो ति ।

एवं भट्ठपइन्ना दुक्खं दुग्गं च दुग्गइमुविंति । इह-परभवे य इयरे महल्लकल्लाणमचिरेण ॥ १ ॥ अपि च—

अन्यान्यधान्य-जलपान-विरुद्धवातसम्पातजातविविधाऽऽमयमथ्यमानः
मानातिरिक्तन....क्तं(?) दिनमार्गखेद-शीता-ऽऽतप-क्रमकृतार्तिरपुण्यजन्तुः ॥ १ ॥
दूरात् सुदूरतरदेशमपि प्रपन्नः, काणं कपर्दकमपि प्रलभेत नैव ।
पुण्यान्वितश्च निवसन्नपि वेश्मनि स्वेऽजस्रं धनाधिप इव श्रियमश्नुवीत ॥ २ ॥
श्रयति दूरदिगन्तरमादृतः, किल भवेयमहं धनवानिति ।
अथ च तत्र पुरस्थमिवाशुभं, सकलमस्य निरस्यति वाञ्छितम् ॥ ३ ॥
इति बहुविधक्लेशा-ऽऽयासप्रपञ्चपटीयसीं, मितसमुदितक्षेत्रादिच्छां परेण निवर्तयन्
अभयमपरक्षेत्रस्थानामशेषशरीरिणां, वि[त]रति रतिं लक्ष्मीं शोभामुपर्ययते ततः ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे प्रथमगुणव्रतचिन्तायां शिवभूति-स्कन्दयोराख्यानकं समाप्तम् ॥ ३९ ॥

दिग्विरतेः स्वरूपं तद-तिचाराश्च

साहेसु । तत्तो साहू साहिउमाढत्तो । जहा—

उड्ढा-ऽहो-तिरियदिसिं चाउम्मासाइकालमाणेण । गमणपरिमाणकरणं पढमं हि गुणव्वयं बिंति ॥ १ ॥
उड्ढं गिरिसिहराइसु अहो वि विवराइएसु तिरियं च । पुव्वाईसु दिसासुं विसओ पंचेह अइयारा ॥ २ ॥
उड्ढाइतिदिसिपरिमाणलंघणे तिन्नि हुंति अइयारा । नियमियदिसिवुड्ढीए सइभंसम्मि[1] य दुवे चेव ॥ ३ ॥
एए य अणाभोगा अइकमाईहिं वा समवसेया[2] । इहरा पयट्टमाणस्स गेहिणो भंग एव परं ॥ ४ ॥

एत्थ भावणा—उड्ढंदिसिपमाणं जं पडिवन्नं तस्सोवरिं पव्वयसिहरे तरुवरे वा पक्खी पवंगमो[3] वा वत्थं आभरणं वा नेज्जा[4] तदत्थं तत्थ तस्स न कप्पइ गंतुं, आणयण-पेसणोभ[या]णि य काउं न कप्पंति । जया [त]तो तं सयं पडइ अन्नेण वाऽऽणीयं होइ तया घेत्तुं कप्पइ त्ति १ । एवं अहोदिसिपमाणाइक्कमस्स वि विवराईसु विभासा २ । तहा तिरियदिसि-पमाणाइक्कमो तिविहेण वि न कायव्वो ३ । खेत्तवुड्ढी य एवं संभवइ—किर पुव्वदिसीए भंडं घेत्तुं गओ जाव तप्परिमाणं, तओ परओ य तं अग्घं लहइ त्ति जाइं पच्छिमादिसिजोयणाणि ताणि केच्चिराणि वि पुव्वदिसिपरिमाणे पक्खिवइ त्ति, एसा वि वज्जणिज्जा । जइ अणाभोगेण परिमाणमइक्कंतो होज्ज ता तत्तो वि नियत्तइ, तदणाभोगयाउ[5] वणियत्ताओ य लाभो घेत्तुं न जुज्जइ त्ति ४ । तहा कहं पि वक्खेवाइणा 'सईए' सुमरणस्स जोयणसयाइरूवदिसिपरिमाणविसयस्स 'अंतद्धा[णं]' विणासो[6] तं

१ सइसंभम्मि प्रतौ । स्मृतिभ्रंशे ॥ २ ज्ञातव्या इत्यर्थः ॥ ३ 'प्लवङ्गमः' वानरः ॥ ४ नयेत् ॥ ५ °दणाणाग° प्रतौ । तदनाभोगजाद् वाणिज्याच्च ॥ ६ विणोसो प्रतौ ॥

ओहरमणोहरो महिलावग्गो, बुद्धो व परमकरुणासारो साहुजणो। तहिं च वत्थव्वो पयईए च्चिय निर्[1]म्मलमेहो मेहो नाम सेट्ठी, देवई से भज्जा, सुप्पभो य नाम पुत्तो। सव्वन्नुपायपूयणपमुहधम्मकिच्चनिच्चनिच्चलमाणसाण य ताण दिणाणि वोलिंति।

अन्नया य देवई सेज्[2]झयमंदिरे धूयं अणेगप्पयारेहिं जणणीए उवलालिज्जमाणमवलोइऊण चिंतिउं पवत्ता—धन्ना एसा महाणुभावा जा एवं दुहियरं कीलावेइ, अहं तु मंदभग्गा एत्तियं पि न मणवंछियत्थसिद्धिमणुपत्ता, एवं च किं करेमि? कमाराहेमि?—इच्चाइचिंतापब्[3]भारभारोणामियं च वयणं वामकरयलेणुव्वहंती सा दिट्ठा सेट्ठिणा, पुच्छिया य—भद्दे! किमेवं सोगाउ[4]र व्व दीससि? किंकारणमिममवत्थं गय? त्ति। तीए भणियं—पाणनाह! नियकडुयकम्ममेव [कारणं], न कारणंतरं ति। सेट्ठिणा भणियं—तहा वि होयव्वं केणइ निमित्तेणं, ता सव्वहा साहेसु त[5]यं-ति निब्बंधे सि[6]ट्ठमिमीए। 'अहो! सच्चमिणं—धूयासु पडिबंधो महिलायणस्स' त्ति चिंतियंतेण सेट्ठिणा भणिया—भद्दे! मुंचसु संतावं, अत्थि कुसुमसंडे उज्जाणे विजियदुद्दंतचक्का चक्केसरी देवया जिणधम्मपवन्नपाणिमणो[7]वंच्छियकामधेणू, तं च आराहिऊण तहा का[8]हं जहा तुह मणवंछियत्थसिद्धी जायइ। पडिसुयमिमीए।

मेहो वि तद्दिणातो आरब्भ पयट्टो देवयाराहणाए। तदणुभावेण य आवन्नसत्ता जाया देवई। कालक्कमेण पसूया धूया, कयं वद्धावणयं, पइट्ठियमुचियसमए नामं। पारद्धा भयवईए उज्जाणजत्ता। [सं[9]]सयण-परियणो य गतो तहिं

१ 'निर्मलमेधाः' विशुद्धबुद्धिः ॥ २ प्रातिवेशिमकमन्दिरे दुहितरम् ॥ ३ °ब्भारोभारणामियं खं० प्र० । इत्यादिचिन्ताप्राग्भारभारावनामितमिव ॥ ४ °उरो व्व खं० प्र० ॥ ५ 'तकत्' तदित्यर्थः ॥ ६ सेट्ठ° खं० ॥ ७ °णोवण्छिछ° खं० ॥ ८ करिष्यामि ॥ ९ सस्वजनपरिजनः ॥

॥२८५॥

सेट्ठी। कयपूया-सक्कारो य देवयाए दीणा-ऽणाहाण दाणपुव्वगं भोत्तूण कुसुमावचयं कुणंतो तमालतरुयरतलट्ठियं वेसमणेण पज्जुवासिज्जमाणं समणं पासइ। 'अहो! सुराण वि पुज्जो भयवं' ति विम्हयमुव्वहंतो पडिओ सो सकुडुंबो चेव तच्चलणेसु। जक्खाहिवो वि गओ जहागयं।

अह कुट्ठाइवाहिविणट्ठं मुणितणुं पलोयंतो मेहो भणिउं पवत्तो—

तुम्ह पयपंसुणा वि हु विहुणिज्जंतीह रोगसंघाया। दंसणमेत्तेणं चिय अवणिज्जइ भूय-पेयभयं ॥ १ ॥

ता भयवं! कहमेवंविहाण रोगाण भायणीभूया। तु[1]ब्भे वि? हु[2]यासो वि हु सच्चं सीएण पग्गहिओ ॥ २ ॥

मुणिणा भणियं भद्दय! निद्दयकयपुव्वदुकयदोसोऽयं। न मुयइ पट्ठिं परमेट्ठिणो वि फुडमणुभवेण विणा ॥ ३ ॥

किं पुण तुमए पुव्वं कयं? ति पुट्ठो मुणी तयं आह। एगग्गमणो सावय! सी[3]संतमिमं निसामेसु ॥ ४ ॥

अहं हि मगहाविसए रायगिहे नयरे कुलचंदसेट्ठिणो सुतो महसूयणो नाम आसि। तहिं च मह दव्वोवज्जणाइणा दिणगमणियं कुणंतस्स एगो अलक्खिज्जमाणवयविसेसो पुरिसो भिक्खानिमित्तं घरमुवागतो। तद्दिवसं च कोइ ऊसवविसेसो त्ति अम्ह घरयणेण वि[4]रूढयाण भायणं भरिऊण से पणामियं। तं च पडिसेहिऊण पट्ठिओ एसो, पुट्ठो य मए—भद्द! कयरं वयं पडिवन्नो तुमं? कीस वा इमं ण गिण्हसि? त्ति। तेण भणियं—महई कहा, न एवं थेववेलाए साहिउं पारियइ।

१ तुम्हे वि प्र० ॥ २ अग्निरित्यर्थः ॥ ३ 'शिष्यमाणं' कथ्यमानम् ॥ ४ 'विरूढानाम्' अङ्कुरितानाम् । जलार्द्रिता मुद्गादयः अङ्कुरिताः सन्तः विरूढा उच्यन्ते ॥

तओ विसज्जिओ सो । कज्जसमत्तीए य गतो हं तस्स समीवे । पुव्वुद्दिट्ठ च पारद्धं तेण कहिउं—अहं हि मंद-भग्गो जिणसासणे पवज्जं पवज्जिय सुत्त-ऽत्थेहिं च अप्पाणं परिकम्मिय परीसहपराजितो संतो उप्पव्वइओ पडि-वन्नदुवालससावयवयविसेसो 'सिद्धपुत्तो' त्ति सामइयभासाए वुच्चामि, ता गिहत्थो चेव अहं, जं च विरूढयभिक्खा निसिद्धा तत्थ य भोगोवभोगवए सचित्ताहाराइ परिहरंतेण मए अणंतकायं पच्चक्खायं ति कहं तं गिण्हामि ? । मए भणियं—किंस-रूवं भोगोवभोगवयं ? ति । सिद्धपुत्तेण भणियं—भद्द ! समुद्दं पिव दुव्विगाहं जिणसासणं, न थेवकालेण तीरइ निवेदिउं जाणिउं वा, तो आमूलातो अणूसुगो होउं सुणाहि । 'तह' त्ति पडिस्सुयं मए । अह मम जोग्गयमुवगम्म तेण महाणुभावेण ताव सिट्ठं सम्मत्तातो आरब्भ जा दिसापमाणं, भोगोवभोगसरूवं च भणिउमाढत्तं । जहा—

भोगोवभोगविसए वयं दुहा भोयणे य कम्मे य । भोयणओ दो भेया भोगे य तहा य परिभोगे ॥ १ ॥
आहाराई भोगे घर-सेज्जाई य हुंति उवभोगे । भोगम्मि तत्थ वज्जइ जाजीवं मंस-मज्जाई ॥ २ ॥
मज्ज-महु-मंस-मक्खणमन्नायफलं वडुंबर-पिलुंखुं । पिप्पल-काउंबरिफलमणंतकाए य कंदाई ॥ ३ ॥
सव्वा य कंदजाई सूरणकंदो य वज्जकंदो य । अल्लहलिद्दा य तहा अल्लं तह अल्लकच्चूरो ॥ ४ ॥
सत्तावरी विराली गलोइ तह थोहरी कुमारी य । ल्हसणं वंसकरिल्ला गज्जर तह लोणओ लोढा ॥ ५ ॥
गिरिकण्णि किसलपत्ता कसेरुया थेग अल्लमोत्था य । तह लूणरुक्खछल्ली खल्लूडो अमयवल्ली य ॥ ६ ॥

१ त्यक्तचारित्र इत्यर्थः ॥ २ °क्खा न सि° खं० प्र० ॥ ३ अज्ञातफलम् ॥ ४ °करेल्ला प्र० ॥

दिसिपरिमाणे वि कए भोगुवभोगाण विरइविरहम्मि । न तहा धम्मपसिद्धि त्ति तस्सरूवं परूवेमि ॥ १ ॥
सइ भुज्जइ त्ति भोगो सो पुण आहार-पुप्फमाईओ । उवभोगो उ पुणो पुण उवभुज्जइ सो य विलयाई ॥ २ ॥
भोगोवभोगभावे वि णंतसो सव्ववत्थुसु जियस्स । इच्छाविच्छेयविवज्जियस्स तित्ती न संपन्ना ॥ ३ ॥
किं परिहियं ? न भुत्तं ? न माणियं ? जिंघियं न ? पुट्ठं नो ? । तह वि अपुव्वं पिव सव्वमेव अभिलसइ ही ! जीवो ॥ ४ ॥
संपत्तीए वि हु उत्तरोत्तरासाहि खिज्जमाणस्स । इच्छानिवित्तिविरहे थेवं पि हु कह हवइ सोक्खं ? ॥ ५ ॥
इच्छानिवित्तिवियला भुंजंता भोयणाइ पुणरुत्तं । अइघोरऽसहीरजरोयराइदुक्खेहिं घिप्पंति ॥ ६ ॥
लद्धं पि तिवग्गकरं मणुयत्तं पवररयणमिव दुलहं । भोगोवभोगलुद्धा मुद्धा ही ही ! मुहा निंति ॥ ७ ॥
अनियत्त-नियत्ताणं अप्परिमाणोवभोगभोगातो । दीसंती दोस-गुणा जह सकुडुंबस्स मेहस्स ॥ ८ ॥

तहाहि—अत्थि इहेव भारहे वासे संति-कुंथु-अराभिहाणधम्मवरचक्कवट्टिनिवासोवहसियसेसपुरसुंदेरं कुरुदेसावयं-सविब्भमं हत्थिणाउरं नाम नयरं । जहिं च सुकविकैव्वबंध व्व पसन्न-महुरत्ताइगुणोववेया लोया, सुवेलसेलसिहरोद्देसु व्व सुपं-

१ 'सकृत्' एकवारम् ॥ २ वनितादि ॥ ३ इव ॥ ४ सम्प्राप्तावपि उत्तरोत्तराशाभिः खिद्यमानस्य ॥ ५ अतिघोरासह्यज्वरोदरादिदुःखैः जलोदरादिदुःखैः वा गृह्यन्ते ॥ ६ °रायदु° खं० ॥ ७ यथा सुकविकाव्यप्रबन्धाः प्रसाद-माधुर्यादिगुणयुक्ता भवन्ति तथा अत्रत्या लोका अपि प्रसन्नता-मधुरभाषित्वादिगुणोपेताः ॥ ८ °द्देसो व्व प्र० ॥ ९ शिखरोद्देशपक्षे सुपयोधराः—शोभना जलवर्षिणो मेघाः, महिलावर्गपक्षे सुपयोधरौ—शोभनौ स्तनौ ॥

तुच्छमसारं मुग्गफलिपमुहमणाभोग-ऽइक्कमाईहिं । भुंजंतो अवितित्तो[1] उवेइ पंचमगमइयारं ॥ २० ॥
तुल्ले वि सच्चित्ते आइदुगे कंदफलविवक्खाए । धन्नविसयत्तणेण य इयरतिगे भेयमाहंसु ॥ २१ ॥
एवमणाभोगाइहिं निसिभोयण मज्जमाइएसुं पि । अइयारे भावेज्जा आउट्टीए[2] पुणो भंगो ॥ २२ ॥
इंगालाईणं पि हु कम्माणमणेगजीववहणातो । दूरमकरणं जुत्तं जाणियजिणवयणसारस्स ॥ २३ ॥
तैत्थिगाले[3] काउं विकिणई १ जीवई वणं छेत्तुं २ । सागडियभावओ तह अणेगजीवोवघाएणं ३ ॥ २४ ॥
भाडीकम्मं पुण भाडएण भंडं परस्स घेत्तूण । नेइ गवाईहिं परेसि अहव गोणाइ अप्पेइ ४ ॥ २५ ॥
फोडीकम्मं उड्डत्तणं तु भूफोडणं हलेणं वा । वज्जइ असंखजीवोवघायहेउ त्ति काऊण ५ ॥ २६ ॥
दाऊण पुलिंदाणं दंतनिमित्तं अणागयं मोल्लं[4] । जं कुणइ जीवणं तं पि हत्थिहणणातो अइदुट्ठं १ ॥ २७ ॥
लक्खावाणिज्जं पि हु अणेगकिमिसंकुलं ति पडिसिद्धं २ । रसवाणिज्जं पि सुराइविकतो[5] सो वि बहुदोसो ३ ॥ २८ ॥
केसवणिज्जं दासाइविकतो सो वि परवसित्तेण । दुट्ठो जियघायातो ४ विसवाणिज्जं पि एमेव ५ ॥ २९ ॥
जंतप्पीलणकम्मं उच्छु-तिलाईण पीलणं जाण १ । निल्लंछणकम्मं पुण तुरगाईवद्धियगकरणं[6] २ ॥ ३० ॥
तरुणतिणुप्पत्तिकए खेत्ताइपलीवणं हि दवदाणं ३ । सर-दह-तलायसोसं वज्जइ बहुजीवघातो ४ त्ति ॥ ३१ ॥
दासीओ पोसित्ता तब्भाडीए य जीवणं जमिह । अच्चंतनिंदणिज्जं असईपोसं तमाहंसु ५ ॥ ३२ ॥

१ अवितृप्तः ॥ २ 'आकुट्या' हठात् ॥ ३ तित्थं मूले खं० ॥ ४ मोक्खं खं० ॥ ५ सुरादिविक्रयः ॥ ६ वर्धितककरणं—षण्ढीकरणम् ॥

उवलक्खणमेताइं[1] सेसाण वि एरिसाण कम्माण । न उण परिगणणनियमो त्ति पुव्वगुरुणो इमं बिंति ॥ ३३ ॥

इय भद्दय ! जं तुमए पुट्ठो हं 'कीस तुमं विरूढयाइं न गिण्हसि ? त्ति किंसरूवं[2] भोगोवभोगवयं ?' ति तमिमं सप्पसंगं दुगं पि निवेइयं ।

इमं च सम्मं परिभाविऊण जमेत्तो निव्वाहिउं तरसि नियमविसेसं तमंगीकरेसु । मा कइवयदिणजीवियव्वनिमित्तेण अप्पाणं जहिच्छाचारिणं रोगिणं[3] व अपत्थभोइणमनिरुंभिऊण[4] असंखदुक्खदंदोलीए निवाडेसु त्ति ।

ततो मए जायसंसारपरमवेरग्गेण सम्मद्दंसणपडिवत्तिपुरस्सरं सरहसं[5] गहियाइं भोगोवभोगपरिमाणकरणपज्जवसा[6]णाणि वयाणि । तव्वयणायन्नणविणिच्छियसमयसत्थपरमत्थो य धम्माविरुद्धवित्तीए वट्टिउं पवत्तो । सिद्धपुत्तो वि गतो जहाभिमयं ।

एगया य कज्जवसेण गामंतरं गच्छंतो अहं पत्तो पारसउलदेसवासितक्करेहिं[7] । अवहरियसारसव्वस्सो य बंदिग्गाहेण[8] घेत्तूण नीओ हं तेहिं नियभूमिं । 'हा हा ! कहं मंदभग्गो निसग्गनिरवग्गहचिलायविलीणवावारगोयरमुवगतो सद्धम्ममणुपालिस्सामि ?' त्ति सोगं कुणंतो ईसिजायकारुन्नेहिं संलत्तो हं चिलाएहिं—कीस रे ! एवं खिज्जसि ? न को वि तुह मणसा वि विप्पियं काही, निरुव्विग्गो सगिहगतो व चिट्ठसु त्ति । मए भणियं—जइ एवं ता मह महापसायं काऊण अभक्खभक्खा-

१ °मेवाइं खं० प्र० ॥ २ °वं ति भो° खं० प्र० ॥ ३ °णं वा अ° खं० प्र० ॥ ४ अपथ्यभोजिनम् अनिरुध्य असंख्यदुःखद्वन्द्वावल्यां निपातय ॥ ५ सरभसम् ॥ ६ °माणपज्ज° खं० ॥ ७ वारस° प्र० ॥ ८ °रेहिं य अव° खं० प्र० ॥

वणविसए न तुब्भेहिं किं पि वत्तव्वं । चिलाएहिं भणियं—रे मूढ ! किमभक्खं ? । मए भणियं—महु-मज्ज-मंसाइयं ति । एवं च तदुत्थधम्मदुत्थयाविमुक्को वि अणवरयमकज्जसज्जाणज्जजणसंसग्गवससमुप्पज्जंतासुहासयविसेसो हं बाढमपोढधम्मसङ्को पइदिणपवड्डंतालस्सो पमाइउमाढत्तो । अंतोफुरंतसव्वन्नुवयणरहस्सो य कयाइ गेहवावारावसाणे विभावेमि एयं—

वरमुब्भडपवणपणुन्नपबलजालाउलम्मि जलणम्मि । अप्पा पक्खित्तो तिक्खखग्गधाराए धरिओ वा ॥ १ ॥
वरमुद्धुरदुद्धरवेरिवारवीराण गोयरं गमिओ । फारफणामणिभासुरभुयंगभोगेसु सइओ वा ॥ २ ॥
न पुण पुणरुत्तभवभीमभमणदुहहेउणो पमायस्स । वसमुवणीतोऽणत्थंगिसत्थसत्थाहभूयस्स ॥ ३ ॥
एवं पि विभावितो पइक्खणं णज्जखेत्तदोसेण । साहम्मियविरहेण य गुरुयणसंकाविगमओ य ॥ ४ ॥
इंदियलंपडयाए पवडणसीलत्तणेण विरईए । पडिसिद्धेसु वि भावेसु वट्टिउं संपयट्टो हं ॥ ५ ॥

एगया य अणाभोगाइभावातो पच्चक्खायतहाविहसच्चित्तविसेसेण वि सच्चित्तकंदाइयं भुंजंतेण १ सच्चित्तपडिबद्धं च खज्जूराइयं 'अट्ठियचागेण को दोसो ?' त्ति आसायंतेण २ अपक्कं पिवि सालिपमुहमोसहीवग्गं तहा दुपक्कं पिवि 'सुपक्कं' ति पिहुगाइ आहारंतेण ३–४ तुच्छं च अतित्तिकारगणंतेण [वि] मुग्गफलीपमुक्खं भक्खंतेण ५ इंगालाइविरुद्धकम्माणि य कुणंतेण भूरिभंगपंककियं कयं मए बीयगुणव्वयं । 'खलियचारित्तो य पायं अप्पाणं कुप्पहपवन्नं न निउणो वि

१ °कयकज्जा° खं० । °कयसज्जा° प्र० । अकार्यसज्जानार्यजनसंसर्गवशसमुत्पद्यमानाशुभाशयविशेषः ॥ २ वरमुद्भटपवनप्रणुन्नप्रबलज्वालाकुले ज्वलने ॥ ३ °रधीरा° खं० ॥ ४ अनर्थाग्निसार्थसार्थवाहभूतस्य ॥ ५ 'पिवि' अपि इत्यर्थः ॥

मूला तह भूमिरसा विरुहाइं टक्कवत्थुलो पढमो । सूयरवल्लो य तहा पल्लंको कोमलंबिलिया ॥ ७ ॥
आलुय तह पिंडालुय एमाइअणंतमेयभिन्नाइं । वज्जेज्जऽणंतकायाइं राईभत्तं च जत्तेण ॥ ८ ॥
असणाईसु य चउसु वि जेत्तियमुवतोगि होइ देहस्स । तेत्तियमेत्तं मोत्तुं अवसेसं परिहरेज्ज बुहो ॥ ९ ॥
जह असणे कणमाणगमिच्चाई पाणगे य जलघडगो । एत्तियदक्खाई खाइमे य पूगाइ साइमओ ॥ १० ॥
उवभोगे पुण आभरण-वत्थ-विलयाइयं परिमिणेज्जा । एयं भोयणविसयं लेसुद्देसेण वुत्तमिमं ॥ ११ ॥
कम्मयओ पुण इत्थं गुत्तीवालाइयं चए कम्मं । बहुदोसमप्पलाभं बहुलाभं वा महादोसं ॥ १२ ॥
होइ दुहा वि हु एयं गुणव्वयं तेणिमं भवे बीयं । अइयारा पुण एत्थं सच्चित्ताई इमे पंच ॥ १३ ॥
सच्चित्तं १ पडिबद्धं २ अपउल ३ दुप्पउल ४ तुच्छभक्खणयं ५ । वज्जइ कम्मयओ वि हु इत्थं इंगालकम्माई ॥ १४ ॥
इंगाले-वण-साडी-भाडी-फोडीसु वज्जए कम्मं । वाणिज्जं चेव [य] दन्त-लक्ख-रस-केस-विसविसयं ॥ १५ ॥
एवं खु जंतपीलणकम्मं निल्लंछणं च दवदाणं । सर-दह-तलायसोसं असईपोसं च वज्जेज्जा ॥ १६ ॥
होउमसच्चित्तभोईऽणाभोगा-ऽइक्कमाइणा भुंजे । जो सच्चित्तं कंदाइ तस्स पढमो अईयारो ॥ १७ ॥
अट्ठियमवणेऊणं खज्जूराई फलं असंतस्स । वयसावेक्खत्तणओ अइयारो तस्स वि य बीओ ॥ १८ ॥
धन्नमपक्कं दुप्पक्कमहवऽणाभोग-ऽइक्कमाइवसा । भुंजंतो पाउणई तइयं तुरियं च अइयारं ॥ १९ ॥

१ यावद् उपयोगि ॥ २ 'अस्थिकं' कठिनबीजमपनीय । 'ठळिओ' इति भाषायाम् ॥ ३ 'अश्नुवतः' भुञ्जानस्य ॥

भो भो ! किमेव मंदायराणि तुब्भे सयं पि हु पवन्ने । सवन्नुणा पणीएऽभिग्गहवग्गे समग्गे वि ? ॥ १ ॥
मन्ने न पारभविए सुहम्मि तुम्हाण विज्जए वंछा । कहमन्नह विमुहा[1] हुज्ज सेमुही[2] धम्मकिच्चेसु ? ॥ २ ॥
किं मूढाइं तुब्भे न मुणह धम्मत्थमेव हि पहाणं । इहभविय-पारभवियब्भुदयसिरीणं पि हु निहाणं ? ॥ ३ ॥ तहाहि—
जं न परक्कमसज्झं जं दूरे जत्थ नत्थि मणपसरो । मइवावारो वि जहिं न कमइ मइमंतकविणो[3] वि ॥ ४ ॥
जं च न लद्धुं तीरइ न साहिउं तिहुयणेण वि य कज्जं । धम्माओ तं पि पाणी पाउणइ करेइ य न चोज्जं[4] ॥ ५ ॥
ता कीस थेवकालियसकलिलगिहकिच्चनिच्चपडिबद्धा । चिंतामणिं व एयं अवहीरिय[5] विहरह जहिच्छं ? ॥ ६ ॥
इय पन्नवियाणि वि पणयसार-सुइसुह-सुजुत्तिवयणेहिं[6] । जा जंपंति न ताइं ता मेहो मोणमल्लीणो ॥ ७ ॥

अह आगारिंगियाइकुसलत्तणेण ऊसरखित्तनिहित्तं बीयं व तव्विसयमणुसासणमफलं निच्छिऊण चित्तब्भंतरुप्पज्जमाण-[7]सोगे सविसेसं धम्मकज्जसमुज्जए जायम्मि मेहे देवई सुप्पभो य खरयरपमायरिउचक्कऽक्कमणनिमुक्कमेराणि[8] जहिच्छं विमग्गेण लग्गाणि ।

अन्नया य तित्थजत्तावएसेण ताण दुन्नयमसहमाणो मेहसेट्ठी किं पि संबलगमादाय नीहरिओ घरातो । तित्थदंसणं च सुगुणमुणिजणपज्जुवासणं च समयाणुरूवदविणज्जणं च काउमाढत्तो ।

१ °ह्वा होज्ज प्र० ॥ २ 'शेमुषी' बुद्धिः ॥ ३ मतिमत्कवेः ॥ ४ आश्चर्यम् ॥ ५ अवधीर्य ॥ ६ प्रणयसारश्रुतिसुखसुयुक्तिवचनैः ॥ ७ °मुप्पज्ज° खं० प्र० ॥ ८ खरतरप्रमादरिपुचक्राक्रमणनिर्मुक्तमर्यादौ ॥

इतो य कन्नधारविरहिय[1] व नावा, नायगविवज्जिय व कुलंगणा, सेणावइविउत्त व वाहिणी[2] विणसिउमाढत्ता पुव्वमुक्कघर-सिरी । अच्चंतपमत्तं[3] लक्खिऊण सुप्पभं तक्करेहिं निसिसमए गिहदासोवदंसियच्छेयमज्झेहिं[4] पाडियं खत्तं, अवहरियं गेह-सारं, अमरिसिओ बाढं सुप्पभो गतो रायसमीवे, निवेइओ गेहमोसवुत्तंतो । ततो सकोवविप्फारियलोयणेण भणितो रन्ना तलवरो—अरे ! किमेवं सुगुत्तं पि वित्तं तक्करेहिं हीरइ ? । तलवरेण भणियं—देव ! तक्करसंभवो वि नत्थि, आलप्पालमेयं । रन्ना भणियं—ता किं एयपिउणा मुट्ठमिमं ? । तलवरेण वुत्तं—देव ! एवमेयं । रन्ना वुत्तं—कहमेवं ? । तेण वुत्तं—देव ! एयस्स जणगो परुट्ठो देसंतरं गतो, तद्दारेण य एस अत्थनासो संभाविज्जइ । 'सच्चं तुम्ह वयणं, कहमन्नहा सयं विमुक्कं व गिण्हंति चोरा दविणजायं ?' ति समत्थियमिमं सेसेण वि सभालोगेण । उवसंतो राया ।

[ततो] कोवसंरंभनिब्भरं च उल्लवंतो सुप्पभो भणितो तलवरेण—अरे ! कीस मुहा भाससि ? जइ नाभिरुइओ य न य सम्मं रक्खामि पुरं ता देवं पसाइऊण पडिवज्जसु सयं आरक्खियत्तणं ति । सुप्पभेण भणियं—जइ अहं पि कोइ ता एवं काहामि त्ति । पयट्टो य महरिहपाहुडपयाणपुरस्सरं रायाणमोलग्गिउं । एगया य तुट्ठो राया, भणितो य—कज्जं साहेसु त्ति । जोडियपाणिसंपुडेण य मग्गियं पुरारक्खियपयं सुप्पभेण । पणामियं च सप्पणयं से भूवइणा । एवं च लद्धाहिगारो अणवेक्खियखरकम्माइविरुद्धववहारो पुरारक्खिगत्तं काउमाढत्तो ।

अह अवंससंभवो व राया, आजम्मदालिद्दोवद्दुतो व पावियमहाधणवित्थरो, जहिच्छं भमंतो पुरीपएसेसु 'किमेस काही

१ कर्णधारविरहिता इव ॥ २ सेना ॥ ३ अत्यन्तप्रमाद्यन्तम् ॥ ४ गृहदासोपदर्शितच्छेकमध्यैः ॥

वणियसुतो ?’ त्ति विभाविंतेहिं तक्करेहिं निहतो रयणीए पसुत्तो पत्तो पंचत्तं । तज्जणणी वि सुयसोगसंभारजज्जरियसरीरा सविसेसमुज्झियधम्मवावारा ‘एवंविहावयावडणं पि अरक्खंतेण किं धम्मेण किच्चं ?’ ति जंपिरी रयणीए भोयणं कुणंती उवरिसंचरंतविसहरगरललवसंवलियं पि कवलमाहारिंती सव्वसरीरसंचरियविसवियारा जमरायरायहाणिमुवगया ।

अह सयणेहिं जाणावितो देसंतरोवगयस्स मेहस्स एसो असेसो वि वइयरो । इमं च सोच्चा अच्चंतं विसन्नो एसो, परिभाविउं पयत्तो य—

वयभंगसंभवाइं पावाइं इहं पि पेच्छह फलंति । अकयकुसुमुग्गमाणि वि उंबररुक्ख व्व चोज्जमिणं ॥ १ ॥
अहवा कालविलंबं अइबहुपब्भारभारियाइं व । न खमंति पडंति परं तालफलाइं व पक्काइं ॥ २ ॥
दुन्नय[1]पसत्तसत्ताण सुलहमेवंविहावयाचक्कं । ता पावकुडुंबकए तम्मसि किं पाव जीव ! तुमं ? ॥ ३ ॥

एवं विवेयंकुसेण सच्छंदपयट्टं दोघट्टं[2] व माणसं सम्मग्गे जुंजिऊण गतो साहुसमीवे । तव्वंदणं काऊणं आसीणो य तयंतियं । विच्छाय[3]वयणसिरिसरूवपेहणवियाणियवेमणस्सेण य पुच्छिओ एसो गुरुणा—भद्द ! किमेवं संपयं सचित्तसंतावो व्व दीससि ? त्ति । तत्तो[4] सिट्ठो सव्वो सकुडुंबवित्तंतो । ततो गरुयवेरग्गोवगतो पवन्नो उभयलोगसुहावहं साहुधम्मं । जणपुट्ठेण य सिट्ठो तव्वइयरो गुरुणा । अह विम्हिओ परिसालोगो, भणिउमाढत्तो य—भयवं ! सयमेव पडिवज्जिय नियमविसेसमाजम्मजिणधम्मनिम्मलसामग्गिसंभवे वि किमेवमेतेसिं पमायपवित्ति ? त्ति । गुरुणा भणियं—

१ दुर्नयप्रसक्तसत्त्वानां सुलभमेवंविधापच्चक्रम् ॥ २ हस्तिनम् ॥ ३ विच्छायवदनश्रीस्वरूपप्रेक्षणविज्ञातवैमनस्येन ॥ ४ ततो प्र० ॥

नियत्तिउं पारइ’ त्ति पारद्धो हं पमाएण । अइगरुयरसगिद्धिदोसेण य तज्जम्मे च्चिय उप्पन्नातुच्छकच्छुवियारो आउक्खए मरिऊण विराहियविरइत्तणेण उववन्नो किब्बिसियवंतरेसु । तत्तो य चुतो अवंतीजणवए वइदेसाए पुरीए पुरिसदत्तसेट्ठिसुयत्तेणाहमुववन्नो । पुव्वजम्मनिकाइयरसगिद्धिपच्चइयासुहकम्मदोसेण य विसिट्ठकुल-जाइसंभवे वि संभूओ पसूइदोसो, तव्वसेण य विणट्ठं सरीरं, ‘कुट्ठि’ त्ति परिभूओ हं गिहजणेण । जायचित्तपरितावो य एगदिसं पडुच्च नीहरितो घरातो, तहावि[ह][1]सुकयवसेण य मिलिओ धम्मसाहणसहाईण साहूणं । पवन्ना य तयंतिए भावसारं पव्वज्जा, परमसंवेगसाराहिगयसुत्तत्थो य इत्थं विहरामि । ता भद्द ! केवलिमुहाओ आयन्निऊण इममप्पणो पुव्ववित्तं तुह निवेइयं । इमं च सोच्चा कुणसु जहसत्तीए विरइगोयरं उज्जमं ति ॥ छ ॥

अह ‘तह’ त्ति पडिवज्जिय पडितो सकुडुंबो मेहसेट्ठी मुणिणो चलणेसु । पडिपुन्नं अणाबाहाए पडिवन्नं भोगोवभोगवयं ति । सुएण वि सुप्पहेण अब्भुवगया खरकम्मनिवित्ती । तज्जणणीए य देवईए अंगीकया भोगोवभोगविसया केच्चिरा वि अभिग्गहविसेसा । भवोयहिनिच्छिन्नपायं पिव अप्पाणं परिभाविंताणि गयाणि सव्वाणि वि नियघरं । साहू वि विहरितो अन्नत्थ । वोलंते य काले किलिट्ठत्तणओ चित्तवित्तीए, भुज्जो अणागमणातो सुसाहूणं, अणायन्नणातो समयसत्थाणं, निच्चसंवासातो[2] य कुतित्थियाणं पारद्धविरइविसए मंदादरा जाया देवई सुप्पभो य । भणियाणि य पइदियहपवड्ढंताभिग्गहपरिणामेण मेहेण—

१ तथाविधसुकृतवशेन ॥ २ °साओ य प्र० ॥

जाया वि हु विरइरई अणत्थदंडेण खंडणमुवेइ । ता तप्परिहरणत्थं परमत्थं किं पि जंपेमि ॥ १ ॥
अत्थो सगेह-सयणाइकज्जसंपाडणं तयत्थं च । दंडो जीववहाईदारेणं अप्पगुणहाणी ॥ २ ॥
एसो हि अत्थदंडो एयातो परो अणत्थदंडो त्ति । [1]असइअइदुट्ठनिप्फलवयण-मणो-कायवावारो ॥ ३ ॥
एसो हि पावपंथो दारमुदारं च नरयनयरीए । [2]सव्ववइकुमुयवणसंडचंडखयसमयमायंडो ॥ ४ ॥
[3]आवयनिवहकरंडो सुहबोहगइंदरोहसुवरंडो । हेओ अणत्थदंडो जमदंडो इव [4]सुहेसीहिं ॥ ५ ॥ किञ्च—
अत्थेण तं न बंधइ जमणत्थेणं तु बंधई जीवो । अत्थे कालाईया नियामगा नो अणट्ठाए ॥ ६ ॥
कुव्वंता जंपंता चिट्ठंता चिय अणत्थयं पुरिसा । निंदं हीलं च लहंति जंति लहुयत्तणं च जणे ॥ ७ ॥
इहलोए चिय एयं परलोए पुण [5]अणत्थरिंछोली । जायइ अणत्थदंडाउ चित्तगुत्तस्स व अवस्सं ॥ ८ ॥
तव्विरया पुण मणुया मणागमवि नो तदुत्थदुत्थेण । [6]छिप्पंति लहंति य कुप्पमेव सुगइं स एव जहा ॥ ९ ॥

तथाहि—अत्थि सयलकलाकलावकुसलकोसलविसयवासिजणजणियाणंदं, [7]सुमइजिणजम्मणावसरसायरमिलंतसुरसुंदरीनट्टोवयारविराइयरायमग्गं, [8]सग्गं पि [9]निसग्गचंगिमाए निज्जिणंतं कोसलपुरं नाम नयरं । तहिं च तिहुयणविक्खायकित्तिपब्भारो इक्खागुकुलनहयलनिम्मलमयंको जयसेहरो राया, मणोरमा से गेहिणी । पुत्ता य ताण नीसेसकलाकला-

१ असकृत्– ॥ २ सर्वव्रतकुमुदवनषण्डचण्डक्षयसमयमार्त्तण्डः ॥ ३ आपन्निवहकरण्डः शुभबोधगजेन्द्ररोधसुवरण्डः ॥ ४ सुखैषिभिः ॥ ५ अनर्थश्रेणिः ॥ ६ स्पृश्यन्ते ॥ ७ सुमतिजिनजन्मावसरसादरमिलत्सुरसुन्दरीनाट्योपचारविराजितराजमार्गम् ॥ ८ **सग्गम्मि नि°** खं० प्र० ॥ ९ स्वाभाविकसौन्दर्येणेत्यर्थः ॥

वकुसला सलाहणिज्जचरिया पुरिसदत्तो पुरिससीहो य । सव्वदरिसणाभिप्पायपरूवणपवणो वसू नाम पुरोहिओ । सुओ य से पयईए चिय कलहकोऊहलिओ, अलियसमुप्पाइयपरोप्परप्पणयविच्छेओ, [छेओ] परपरिहासपयारेसु, अच्चंतमणिट्ठो पुरलोयस्स चित्तगुत्तो नाम । सो य रायसुएहिं समं जहिच्छं कीलइ । एवं च वच्चंति वासरा ।

अन्नया य अत्थाणीनिसन्नो चेव नरिंदो [1]उदरब्भंतरकुवियसमीरसमुच्छालियसूलायंकवुक्कामियजीवियव्वो दीवो व्व ज्झड त्ति विज्झातो त्ति । अह अत्थगिरिसिराओ व्व सिंहासणाओ पल्हत्थं [2]अरविंदिणीदइयबिंबं व वसुमईपइं पलोइऊण 'हा ! किमेयं ?' ति वाहरंतो तुरियतुरियं समीवमुवगम्म बाढमुव्विग्गो सेवगवग्गो विणिच्छियरायमरणो अच्चंतसोगावेगवसविणिस्सरंतबाहप्पवाहाउलनयणो रोविउं पवत्तो । 'हा ! किमेयं ?' ति अबुज्झियकज्जमज्झा सज्झसवसविवसीभूयपयपक्खेवा अंतेउरीजणेण सममेवं[3] समागया रायपुत्ता, दिट्ठ[4]विचिट्ठभूवइवरिट्ठसरीरा निद्दयमक्कंदिउमारद्धा य—

अहह ! कह तिहुयणं पि हु नरवर ! विरहम्मि तुज्झ सुन्नं व । नज्जइ घुम्मइ य मणो कुलालचक्काधिरूढं व ॥ १ ॥
सप्पुरिसत्तकहा तुह अणेगहा जा पुरा सुणिज्जन्ती । सा इण्हि निराधारा कह होही ? कत्थ वा ठाही ? ॥ २ ॥
एमाइ तह कहं पि हु सोगं ते काउमुज्जया जाया । जह [5]हाहारवपुन्नं नज्जइ गयणं पि रुयमाणं ॥ ३ ॥
अह कह कह वि ते सोगसंरंभनिब्भरे निरुंभिऊण रायलोएण कयम्मि [6]रायसरीरसक्काराइकायव्वम्मि अणिच्छंतो वि

१ उदराभ्यन्तरकुपितसमीरसमुच्छालितशूलातङ्कव्युत्क्रामितजीवितव्यः ॥ २ 'अरविन्दिनीदयितबिम्बमिव' चन्द्रबिम्बमिव 'वसुमतीपतिं' राजानम् ॥ ३ °**वमुवागया** प्र० ॥ ४ दृष्टविचेष्टभूपतिवरिष्ठशरीरौ ॥ ॥ ५ हाहारवस्पृष्टम् ॥ ६ राजशरीरसंस्कारादिकर्त्तव्ये ॥

पुरिसदत्तो निवेसिओ रायपए, पयट्टाविओ रज्जकज्जचिंताए। तह वि 'सद्धम्मकिच्चविरहितो ताओ मउ' त्ति पुणरुत्तमुल्लवंतो अंसुपूरपूरिज्जमाणनयणपुडो पडिवे[1]लं सतिक्खदुक्खं रुवंतो समं भाउणा भोयणं पि बलाभियोगेण कराविज्जंतो स महप्पा संलत्तो पुरोहिएण—देव! [2]नीसेसपुहइवावारावलोयणनिउत्ताणं तुम्हाणं बाढमणुचियमेयं सोगकरणं। रन्ना जंपियं—भो पुरोहिय! किमहं न याणामि एयं? केवलं 'अम्हारिसेसु सुएसु विज्जमाणेसु, साहीणासु य सव्वसंपत्तीसु देवो अकयतकालोचियदाणाइधम्मो दिवं गतो' त्ति नट्ठनिट्ठुरहिययसल्लं व विद्दवइ इमं ममं ति। पुरोहिएण भणियं—देव! को एत्थावराहो? **राहावेहो व्व दुल्लक्खो एस हयासकीणासववहारो,** ता संपयं पि दिज्जंतु देवस्स पुन्ननिमित्तं सव्वदरिसणसमणाणं दाणाइं, एवं पि उवयरियं हवउ त्ति। 'सम्ममाइट्ठं' ति परितुट्ठेहिं **पुरिसदत्त-पुरिससीहेहिं** सव्वायरेण तद्दि[3]णाओ आरब्भ आरद्धाइं महया वित्थरेण पिउणो पुन्नोवचयनिमित्तं लोह-सुवन्न-कप्पास-गो-भूमि-भोयणाईणि सव्वलिंगीणं दाणाइं। पडिपुन्नवंछिएसु य [4]संठाणं गएसु **पुरिससीहेण** पुच्छिओ पुरोहिओ—किमेत्तियमेत्ता चेव लिंगिणो? त्ति। पुरोहिएण जंपियं—रायसुय! संति अवरे वि सेयंबरधारिणो अरहन्तमग्गमोइन्ना लिंगिणो त्ति। ततो ते वि पहाणपुरिसपेसणेण वाहराविया रन्ना। आगतो **सीमंधरो** नाम तवस्सी, अब्भुट्ठिओ रन्ना, दिन्नमुचियमासणं, पणामाइपडिवत्तिपुरस्सरं च पणामियाइं पुव्वुत्ताइं लोहाईणि।

१ °वेलसंति खं० प्र० ॥ २ निःशेषपृथ्वीव्यापारावलोकननियुक्तानाम् ॥ ३ तद्दिप्पणा° खं० ॥ ४ सट्ठाणं प्र०। स्वस्थानम् ॥

दु[1]द्दंतिंदियदूसहविसविसहरहरियचेयणा जीवा। किमकिच्चं पि न काउं ववसंति? न[2] भोत्तुमीहन्ति? ॥ १ ॥
जिणधम्मपहपवन्ना धन्ना सव्वत्थ निव्वुइमुविंति। तव्वइ[3]रित्ता रित्ता संता इहइं पि सीयंति ॥ २ ॥
खणमेत्तसोक्खभोगोवभोगभावे वि ही! दढं मूढा। मीण व्व बडिसलुद्धा पेच्छंति न भा[4]विरमवायं ॥३॥ अपि च—

यद्वन्न तृप्यति महोदधिरम्बुपूरैर्नैवेन्धनैरनिधनैरपि पावकोऽपि।
जीवोऽपि तृप्यति न तद्वदनन्तकालभोगोपभोग-भवनैरपि भूरिभेदैः ॥ १ ॥
अप्राप्ततृप्तिरभिवाञ्छति यच्च वस्तु, तल्लाभतोऽपि परिवर्धत एव वाञ्छा।
तत्तद्विशेषविषया तदमुत्र पथ्यमिच्छानिवर्तनमृतेऽस्ति न नूनमन्यत् ॥ २ ॥
तेनैव निर्वृतिपुरीपरमेश्वराणां, निष्कर्मणां सुखलवोऽप्यतिशीयते न।
सांसारिकैरमर-दैत्य-नृसौख्यवर्गैः, संवर्गितैरपि मुहुस्तदनन्तवारम् ॥ ३ ॥
इति विमृश्य विपत्पदवीपथादमितभोग्यपदार्थसमूहतः।
निजमनो विनिवर्त्य विचक्षणः, प्रविदधीत रतिं विरतौ सदा ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे भोगोपभोगव्रतचिन्तायां सकुटुम्बमेहश्रेष्ठिकथानकं समाप्तम् ॥ ४० ॥

भोगोपभो-
गविरतेरुप-
देशः तदु-
पायश्च

१ दुद्दिंतियदुस° खं० प्र० ॥ २ न वोत्तु° खं० ॥ ३ 'तद्व्यतिरिक्ताः' जिनधर्मभ्रष्टा रिक्ताः सन्त इहापि 'सीदन्ति' दुःखीभवन्ति ॥ ४ भवितारमपायम् ॥

हत्थतलमेत्तयं पि हु भूमियलं कसइ जो सुसाहू वि । पाउणइ पेसुत्तं तयणु णेगसोवागजम्माइं ॥ १३ ॥
झाण-ऽज्झयणाईणं हाणी हीलापयं च संगातो । तीए दाणं गहणं च तेण साहूण पडिसिद्धं ॥ १४ ॥
तंबोल-तूल-पल्लंक-पणइणी-चित्तचेलगहणं पि । दूरनिसिद्धं रागाइदोससंभूइभावातो ॥ १५ ॥
जं पुण पत्तं वत्थं कंबल रयहरणमन्न पाणं च । संथारयाइ तं कप्पई य धम्मोवतोगि त्ति ॥ १६ ॥ तहाहि—
कट्ठा-ऽलाबुसमुत्थं कारणतो मिउंमयं पि पत्तमिह । घेत्तुं जेत्तुं जइणो गिहिभायणभोयणनिसेहा ॥ १७ ॥ तहाहि—
कंसेसुं कंसपाएसु कुंडमोएसु वा पुणो । भुंजंतो असण-पाणाइं आयारा परिभस्सइ ॥ १८ ॥
सीओदकसमारंभे मत्तधोयणछड्डणे । जाइं छन्नंति भूयाइं दिट्ठो तत्थ असंजमो ॥ १९ ॥
पच्छाकम्मं पुरेकम्मं सिया तत्थ न कप्पई । एयमट्ठं न भुंजंति निग्गंथा गेहिभायणे ॥ २० ॥
सीयाइणा परद्धो सिहिजालण-तणपरिग्गहाईहिं । जीवे वहे जई जं जुत्तो वत्थग्गहो तेण ॥ २१ ॥
सच्चित्तसलिल-महिगा-रयं-संपाइमपमोक्खजीवाण । रक्खट्ठा उवइट्ठं कंबलगहणं सुसाहूणं ॥ २२ ॥
कंबलमहुरत्तगुणेण नो दगाई जिया विवज्जंति । अइखार-मलिणयाए य अंगसंगम्मि जंति खयं ॥ २३ ॥

१ कर्षति ॥ २ पशुत्वं तदनु अनेकश्वपाकजन्मानि ॥ ३ धर्मोपयोगीति ॥ ४ मृण्मयम् ॥ ५ इत आरभ्य श्लोकत्रिकं दशवैकालिकसूत्रे अ० ६ श्लो० ५०–५२ ॥ ६ कुण्डमोदः हस्तिपादाकारः मृण्मयभाजनभेदः ॥ ७ **गिहि°** प्र० ॥ ८ पीडितः ॥ ९ जीवान् हन्ति ॥ **१० °रइसं°** खं० ।—मट्टिकारजःसम्पातिमप्रमुखजीवानाम् ॥

रयहरणं पि हु एगंगियाइगुणसंगयं सया गिज्झं । लिंगट्ठा रक्खट्ठा य दिस्स-अदिस्साण जीवाण ॥ २४ ॥
पाणा ऽसणदाणं पि हु पयदिणमुवओगि कप्पणिज्जं जं । बायालीसदोससुद्धं घिप्पइ छहिं कारणेहिं परं ॥ २५ ॥
वेयण वेयावच्चे इरियट्ठाए य संजमट्ठाए । तह पाणवत्तियाए छट्ठं पुण धम्मचिंताए ॥ २६ ॥
संथारगाइ सेसं पि संजमस्सेव वुड्ढिजणगं ति । जुज्जइ जइणो घेत्तुं उज्झियसंगस्स वि य दूरं ॥ २७ ॥
एवं दाणविहाणे सवित्थरे साहियम्मि भूमिवई । सविणयमाह महायस ! जं उवजुज्जइ तयं गिण्ह ॥ २८ ॥
साहूवओगि तो किं पि मुणिवरो तस्स भावबुड्ढिकए । घेत्तुं नरवइपणओ दिन्नासीसो गओ सपयं ॥ २९ ॥

अह निल्लोभयाइतग्गुणगणरंजियमणेण पुरिससीहेण भणितो राया—देव ! एवंविहसुहुमपयत्थसत्थदंसी चेव निच्छियं पूयापयरिसारिहो अरिहंतो चेव देवो, तदुत्तकिरियाकलावाणुरूवपारद्धविसुद्धसद्धम्मकिच्चा एवंविहा चेव मुणिणो गुरुणो घेत्तुमुचिया, न हि अप्पणो समाणदोस-समायारा भूरिपरिग्गहा-ऽऽरंभनिब्भरपसत्तमाणसा तहाविहजडाजूड-सिहंड-डंड-मुंडमुंडण-ण्हाणपमुहबज्झोवयारसारदिक्खामेत्तबद्धलक्खा सयं पि अगाहभवोहवुब्भमाणा भवन्नवावडियमम्हारिसं जणमुद्धरिउं खमा, ततो नियमेण एस समणसीहो अम्हाण पुन्नपगरिसपेरितो व इहागतो, अतो पइदिणं पज्जुवासणा समुचिय त्ति । राइणा भणियं—सुट्ठु उवइट्ठं, अन्यैरपि भणितमेतत्—

१ **पइदि°** प्र० ॥ २ द्वाचत्वारिंशद्दोषशुद्धम् ॥ ३ एवंविधसूक्ष्मपदार्थसार्थदर्शी ॥ ४ पूजाप्रकर्षार्हः ॥ ५ तथाविधजटाजूटशिखण्डदण्डमुण्डमुण्डनस्नानप्रमुखबाह्योपचारसारदीक्षामात्रबद्धलक्षाः स्वयमपि अगाधभवौघोह्यमानाः भवार्णवापतितमस्मादृशम् ॥ ६ **खमंतोतानि°** खं० प्र० ॥

उत्तमैः सह साङ्गत्यं पण्डितैः सह सङ्कथा । अलुब्धैः सह मित्रत्वं कुर्वाणो नावसीदति ॥ १ ॥

ता एत्तो पइदिणं पि कायव्वमेयं । पयट्टा दो वि तं मुणिं पज्जुवासिउं । अहिगयजिणुद्दिट्ठसत्थपरमत्था य जाया दो वि । नवरं अयंडजमँदंडखंडियजणगजीवियव्वाणुमाणेण विणिच्छियासेससत्तसंताणावस्सविणाँसो 'अलाहिं संसारियकिच्चचिंतणेणं' ति विणिच्छिऊण पुरिससीहो सपणयं मायरं भायरं च भणिउं पवत्तो—

अम्मो ! रम्ममिमं घरं पियजणो लच्छी य सोक्खावहा, चिँत्तक्खेवविहायगं च तरुणीदिट्ठिच्छडाडंबरं ।
सेन्नं भूरिगइंद-जोह-तुरयं नो कस्स सम्मोहगं ?, किंतुँद्दामकयंतकेसरिभियं सव्वोवरिं वट्टई ॥ १ ॥
जाणे हं मँह विप्पओगवसतो तुम्हाण दुक्खं बहुं, होही संगविवज्जणेण महई बाहा वहूणं पि हु ।
चित्तं केवलमुल्लसंतसहसामच्चुप्पयाराउलं, गुत्तीखित्तमिवेह चिट्ठदि महाकट्टेण गेहे मम ॥ २ ॥
ता संसारसमुद्दपारगमणे दुक्खग्गिविज्झावणे, सन्नाणाइगुणोवलंभजणणे किच्चा सहेज्जं मम ।
पुत्ते अज्जह वज्जहावरमई माइंदजालोवमं, सव्वं बुज्झह मा य मुज्झह महारायं ! तंमाभोगिउं ॥ ३ ॥

इमं च सोच्चा अच्चंतसभय-चमक्कारं जंपियं जणणीए—वच्छ ! किमेवं अवुत्तपुव्वं वुच्चइ ? कहं वाऽपुव्वपत्थियपयत्थसहा-

१ °मडंड° प्रतौ ॥ २ विनिश्चिताशेषसत्त्वसन्तानावश्यविनाशः ॥ ३ °णासा 'अ°' खं० प्र० ॥ ४ चित्ताक्षेपविधायकं ॥ ५ सैन्यम् ॥ ६ किन्तूद्दामकृतान्तकेशरिभयः ॥ ७ मम विप्रयोगवशतः ॥ ८ उल्लसत्सहसामृत्युप्रचाराकुलम् ॥ ९ कृत्वा ॥ १० त्वम् 'आभोग्य' ज्ञात्वा ॥

तो खेत्त काल पुरिसं पॅरिसं मइपयरिसं च अप्पगयं । परिभाविऊण मुणिणा सायरमिति भणिउमाढत्तं ॥ १ ॥
नरवर ! सएसु सूरो विऊ सहस्सेसु होइ य वयस्सी । लक्खेसु कोइ एक्को दाया पुण तेसु भयणिज्जो ॥ २ ॥
ता दाणमई वि हु सुकयकम्मणो कस्सई परं होइ । किं पुण सक्खा णेगप्पयारवत्थूणमिय दाणं ? ॥ ३ ॥
तत्थ वि विवॅन्नपिउपुन्नपगरिसावज्जणत्थमित्थमिमा । पडिवत्ती दुकरमिमं दंसणसारम्मि पेम्मम्मि ॥ ४ ॥
पाएणं एत्थ जणो जीवंताणं पयासए पणयं । सग्गोवगयाणं पुण न पियाण वि पुच्छए वत्तं ॥ ५ ॥
ता नरवर ! दाणरुई अन्नत्थ कहिं पि दीसइ न एवं । नवरं कप्पंति न अम्ह कह वि लोहाइयपयत्था ॥ ६ ॥
लोहं हि नरिंद ! कुसी-कुहाड-घण-दंतिगाइकज्जेसु । उवजुज्जइ जीववहो य तत्थ तो तं न घेत्तव्वं ॥ ७ ॥
कणगं पि लोहं-सम्मोह-मेहुणाईण कारयं परमं । संजमविभेयहेउं गिण्हंतु कहं विगयसंगा ? ॥ ८ ॥
कप्पासो वि सचित्तो पलिमंथो चिय सतत्तचिंताए । लज्जच्छायणमित्तोवहीण साहूण किं कुणउ ? ॥ ९ ॥
गावीओ वि हु दिन्नातो राय ! सीयंति चारिविरहेण । तव्विहियपयत्ता पुण मुणिणो धम्माउ भस्संति ॥ १० ॥
जं सयमदुक्खियं न य परेसि दुक्खाण कारणं होइ । केवलमुवॅग्गहकरं तद्दाणं सोगइनिहाणं ॥ ११ ॥
हॅल-कुलियाईहिं मही मॅहिज्जमाणा सगब्भमहिल व्व । दुहमणुहवइ मरन्ति य णंता तन्निस्सिया जीवा ॥ १२ ॥

१ पर्षदं मतिप्रकर्षं च आत्मगतम् ॥ २ विपन्नपितृपुण्यप्रकर्षावर्जनार्थम् ॥ ३ लोभ— ॥ ४ °णमेत्तो° प्र० ॥ ५ तद्विहितप्रयत्नाः ॥ ६ उपग्रहकरम् ॥ ७ हलिकु° खं० प्र० ॥ ८ मथ्यमाना ॥

तित्थयर-चक्कि-हलहरपमुहेहिं पुरा महाणुभावेहिं । [1]सरितो किमेस न पहो जं इय दुहनिब्भरं रुयसि ? ॥ ३ ॥
एमाइ तह कहं पि हु सा [2]सुहहेऊहिं तेण बुज्झविया । जह तक्कज्जे सज्जो सविसेससहाइणी जाया ॥ ४ ॥

अह सोहणे मुहुत्ते पुरिससीहो सीहत्ताए भयवओ **सीमंधर[स्स]** सयासे रायसुयसयसमेतो निक्खमिऊण सीहत्ताए चेव विहरितो गामाणुगामं ।

कालक्कमेण य [3]मुणियसमयसत्थपरमत्थो तवोविसेसोवलद्धोहिनाणाइलद्धिविभागो गुरुणा अब्भणुन्नातो 'जइ पुण [4]माइ-भाउगाईणं कोइ बुज्झइ' त्ति [5]कइवयवयवुड्ढवियड्ढसाहुसमेतो समागतो कोसलपुरं, वुत्थो सुमुणिजोग्गे पएसे। निसामियतदागमणो य समं जणणीए अंतेउरीहि य आगतो राया, परमभत्तिनिब्भरं कयपायवडणो य आसीणो उचियासणे। कया य रायकुमारमुणिणा तक्कालोचिया धम्मकहा । 'गुणसुट्ठिओ' त्ति पडिबुद्धो पउरो पुरजणो, जहजोग्गपडिवन्नधम्मगुणो य जहागयं गतो ।

नवरं एगो दोगच्चविहुरो जायभवविरागो पवन्नो पवज्जं । दिट्ठो य तव्वेलमुवागएण पुव्वुत्तपुरोहियसुएण केलिप्पिएण **चित्तगुत्तेण** । पायवडिएण य सहासं भणितो कुमारमुणी—भयवं ! सम्मं कयमणेण अहिणवपव्वइयगेण, दिन्नो जलंजली छुहाए, पक्खित्तं कंकणं रयणायरे, अगोयरीहूओ रायाइदेयस्स ।

अन्नो वि [6]खेत्त-गिहभूरिकज्ज-निवसेवणा-वणिज्जाओ । निव्विन्नो किं न [य] एवमेत्थमुज्जमइ धम्मम्मि ? ॥ १ ॥

१ श्रितः ॥ २ शुभहेतुभिः ॥ ३ ज्ञातसमयसार्थपरमार्थः ॥ ४ **माउभा**° प्र० ॥ ५ कतिपयवयोवृद्धविदग्धसाधुसमेतः ॥ ६ क्षेत्रगृहभूरिकार्यनृपसेवनावाणिज्यात् ॥

अच्चंतहीलणा भायणं पि जणपूयणिज्जयं पत्तो । पेच्छह [1]पयंडपासंडऽणप्पमाहप्पमप्पडिमं ॥ २ ॥

एवं च कयपरिहासं कुमारमुणी [2]ओहिबलाकलियतदीयपुव्वभववित्तो ईसिहासवसविहडिउड्डउडो **चित्तगुत्तं** भणइ—भद्द ! सुचिराणुभूयऽणत्थदंडविडंबणाडंबरो वि न तप्परिहारत्थमज्ज वि उज्जमसि । ससंभमेण य भणियं **चित्तगुत्तेण**—भयवं ! को एत्थ अणत्थदंडो ? किं वा तदुत्थविडंबणाणुभवणं ? पसायं काऊण साहेसु त्ति । कुमारमुणिणा संलत्तं—आयन्नसु त्ति—

एत्थं अणत्थदंडं चउहा जाणाहि तत्थऽवज्झाणे १ । पमयायरिए २ हिंसप्पयाण ३ पावोव[3]एसेहिं ४ ॥ १ ॥
तत्थाऽवज्झाणं निप्पओयणं चिंतणं असुहरूयं । सो जिणइ हारई वा [4]जइ ता लट्ठं ति इच्चाई ॥ २ ॥
बीओ वि विसय-निद्दा-विकहा-मज्जाइगोयरो नेओ । अहव [5]जहुच्चियघय-तेल्लभायणच्छायणालस्सं ॥ ३ ॥
तइओ य [6]हिंसदाणं हिंसाणि य जीवघायहेऊणि । खग्गपमुहाणि तेसिं दाणं तु [7]परेसिमप्पिणणं ॥ ४ ॥
तुरिओ पावुवएसो असुहं पावं हि तस्स हेऊणि । किसिमाइयाणि ताणं उवएसो जुंजणं बहुहा ॥ ५ ॥
एवमिमो चउभेओ [8]दुब्भेओ वज्जकवयमिव दूरं । एयनिवित्तिं गुरुणो तइयं तु गुणव्वयं बिंति ॥ ६ ॥
कंदप्पं १ कुक्कुइयं २ मोहरियं ३ संजुयाहिगरणं च ४ । उवभोग-परीभोगाइरेगयं ५ चेत्थ अइयारा ॥ ७ ॥

१ प्रचण्डपाषण्डानल्पमाहात्म्यम् ॥ २ अवधिज्ञानबलाकलिततदीयपूर्वभववृत्तः ईषद्धासवशविघटितोष्ठपुटः ॥ ३ °**एसे** ४ **य** प्र० ॥ ४ जयति ॥ ५ °**हुज्झिय**° खं० प्र० । यथोचितघृततैलभाजनाच्छादनालस्यम् ॥ ६ हिंस्रदानम् ॥ ७ °**रेनिसिप्पणयं** खं० । °**रिसिनिप्पण**° प्र० ॥ ८ दुर्भेदः ॥

परिहासो मयणुद्दीवगेहिं वयणेहिं जो स कंदप्पो १ । कोकुइयं घयणाण व विगियागिइहासजणणाइ २ ॥ ८ ॥
एए पमायचेट्ठाविरईए दो वि हुंति अइयारा । न पमायविरहिए जं संपज्जइ एरिसी किरिया ॥ ९ ॥
संबद्धा-ऽसंबद्धाण भासणं भूरिसो हि मोहरियं ३ । पावोवएसविरईविसए एसो वि अइयारो ॥ १० ॥
अहिकिच्चइ नरगाइसु अप्पा जेणेह तं हि अहिगरणं । संजुत्तं पुण तं चिय अक्खेवेणेव कज्जखमं ॥ ११ ॥ तहाहि—
जंतिय-जोत्तिय-नद्धियसगडाई गेहबाहि ठावितो । हिंसप्पयाणविरईअइयारं न कहमायरइ ? ४ ॥ १२ ॥
उवभोग-परीभोगा पुव्वुत्तऽत्था हि ताणमइरेगो । पंचमगो अइयारो अवसेओ सो पुणो एवं ॥ १३ ॥
बहुतेल्ला-ऽऽमलगाई घेत्तूण नईए जाइ ण्हाणत्थं । अन्ने वि तदणुसंगेण ण्हंति तेणेवं जीववहो ॥ १४ ॥
तंबोल-पुप्फ-सयणा-ऽऽसणाइ सेसं पि अहिगमवसेयं । एवंविहदोसं चिय ता तव्वज्जणकए विहिणा ॥ १५ ॥
गेहि चिय ण्हायव्वं सुगलिय-परिमियजलेण एगंते । पुप्फाइ वि घेत्तव्वं अलियाइविवज्जियं उचियं ५ ॥ १६ ॥
एवमिमे अइयाराऽणाभोगाईहिं होंति नियमेण । आउट्टिकरणतो पुण भंगा एए चिय हवंति ॥१७॥छ॥

ता भद्द चित्तगुत्त ! निरुत्तमित्थमणत्थदंडसरूवं किं पि उवइट्ठं । अणत्थदंडसमुत्थविडंबणाणुभवणं पुण तुह जहा जायं तहा साहेमि—

१ भाण्डानामिव विकृताकृतिहासजननादि । घयणा–भाण्डाः, भाँड–भवैया–बहुरूपिया ' इति भाषायाम् ॥ २ °हिओ जं खं० प्र० ॥ ३ अधिक्रियते ॥ ४ यन्त्रितयौक्त्रिकनद्धशकटादि ॥ ५ हिंस्रप्रदानविरत्यतिचारम् ॥ ६ पूर्वोक्तार्थौ ॥ ७ °णेगजी° खं० प्र० ॥ ८ भ्रमरादिरहितमित्यर्थः ॥

इणो भवामो ? त्ति । पुरिससीहेण भणियं—अम्मो ! पव्वज्जं पवज्जिउकामस्स मह विग्घविणिग्घायणेणं ति । अह भूरिसोगा-वेगविगलंतंसुजालाविललोयणाए भणियमणाए—पुत्त ! अपत्तकालकालकवलियमहारायदुक्खे तहट्ठिए वि तुह विओगसोगो गंडोवरि दुट्ठपिडिगुट्ठाणतुल्लो अंतोविसंतमहंतसल्लं व बाढं विद्दवइ मणो । पुरिसदत्तेण भणियं—वच्छ ! सच्चमुल्लवइ जणणी, रज्जसिरिमुवभुंजिऊण पव्वज्जं करेज्जासि । पुरिससीहेण भणियं—एवमेयं, केवलं समीववत्ती समवत्ती, सपच्चूहनिउ-रुंबा कालविलंबा, उच्छाहसाहिदावग्गी गिहकिच्चसामग्गी, दुल्लंभागमो गुरुसंगमो, ता कीस वंछियत्थविलंब-णेण ममागाहभवोहवुज्झमाणस्स उत्तरणपयत्तपरस्स विक्खेवं कुणह ? त्ति । अह मुणियतन्निच्छएण भणियं पुरिसदत्तेण—अम्मो ! सुक्ककाणणनिड्डहणपयट्टो हुयवहो [विव] समीहियत्थकरणुज्जतो सप्पुरिसो वि न विणिवत्तिउं तियसवइणा वि तीरइ, ता कीस कुसलपक्खपडिक्खेवुप्पायणेण महाणुभावस्स एयस्स असंतो[स]मुप्पाएसि ? धन्नो क्खु एसो जस्स एवं सुकया-वज्जणुज्जमो, तुमं पि अम्मो ! एवंविहसुयज[ण]णेण नीसेससीमंतिणीतिलयभूया वट्टसि, एयसुकयसमावज्जणाणुजाणणपुन्न-भागभागिणी य भविस्ससि । जओ—

कत्ता कारवगो वि य तस्सऽणुमंता य सुद्धभावेण । धम्मं पडुच्च तिन्नि वि तुल्लफला चेव वुच्चंति ॥ १ ॥
जइ कुणइ अजुत्तं किं पि अम्म ! ता तन्निवारणं जुत्तं । सम्मग्गं लग्गे वि हु निवारणं पुण महामोहो ॥ २ ॥

१ भूरिशोकावेगविगलदश्रुजालाविललोचनया ॥ २ दुष्टपिटिकोत्थानतुल्यः । पिटिका–गण्डिका ॥ ३ °डिगिट्ठा° खं० प्र० ॥ ४ अन्तर्विशन्महाशल्य-मिव ॥ ५ ' समवर्त्ती ' मृत्युः ॥

सव्वस्सो कंदप्प-मुहरयाईहिं रायसुयचित्तक्खेवणमुप्पाइंतो कालं वोलेसि।

अन्नया य सो रायपुत्तो तुमए अन्नेहि य सविसेसमुच्छाहिओ—कीस वुड्ढं नरिंदं हंतूण रायलच्छिं न गिण्हसि ? त्ति। ततो कइवयपहाणपुरिसभेयणेण पिउणो हणणत्थं उवट्ठिओ संतो सो वियाणितो मंतीहिं। ततो तद्दारेण मुणियवित्तंतेण रन्ना सुयं कट्ठहरे निस्सङ्कं निगडिऊण 'अणत्थोवएसदाइ' त्ति पढमं तुमं विणासिओ, पच्छा अवरे त्ति। तुह कुडुंबं पि दुक्खमारेण विणिहयं ति। एवमप्पणो परेसिं पि अप्पियसंपायणं काऊण तत्तो मओ समाणो पढमनरयपुढवीए नेरइओ तुमं संवुत्तो, तत्तो उवट्टो तिरिएसु, तत्तो वि भंयणकुले पुरिसत्तणं, तत्थ वि कंदप्पाइभावणाभावियचित्तो किं पि सुकयं आवज्जिऊण मतो वंतरेसु होऊण, [ततो] चुतो पुरोहियसुतो जातो त्ति। पुव्वभवब्भत्थाणत्थदंडत्तणेण य संपयं पि कंदप्पाईसमुप्पाय-णेणमप्पाणं दुहनिहाणभायणं कुणसि त्ति ॥ छ ॥

एवं मुणिणा वुत्तो स पुव्वसंभरियभूरिदुक्खभरो। वेरग्गावडियमई चिंतिउमेवं समाढत्तो ॥ १ ॥
हा हा ! अणज्जकज्जे सज्जो सज्जो समुज्जमइ जीवो। वुग्गाहिओ परेणं थेवं पि हु चयइ धम्ममइं ॥ २ ॥
जइ दुग्गइगमणसहाइणीए जणणीए पावसंसग्गे। खित्तो हयास ! तत्थेव कीस ता बाढमणुरत्तो ? ॥ ३ ॥
धम्मत्थे सुचिरं पि हु पन्नविओ ठाविओ वि सुगुरूहिं। पारयरसो व्व तंबम्मि पाव ! न चिरं थिरो जाओ ॥ ४ ॥

१ 'काष्ठगृहे' हडिमध्ये ॥ २ अप्रियसम्पादनम् ॥ ३ भाण्डकुले ॥ ४ सद्यः सद्यः सज्जो वा समुद्यच्छति ॥ ५ पारदरस इव ॥

एमाइपुव्वदुव्विहियहुयवहुप्पन्नतिव्वतणुतावो। चिरचिन्नमेव धम्मं तह कह वि पुणो वि पडिवन्नो ॥ ५ ॥
स महप्पा जह न तिहुयणे वि संखोभिउं पयट्टम्मि। सेलु व्व चलइ पारद्धसुद्धसद्धम्मकिच्चाओ ॥ ६ ॥
को मुणइ जीवविरियं असरिसपसरंतभूरिविप्फुरियं। एवंविहा वि पावा लग्गंति जहिं सुमग्गम्मि ॥ ७ ॥
एत्तो च्चिय एगंतेण कं पि न थुणंति नेय निंदंति। अणवट्ठियभावातो दुल्लक्खो जीवपरिणामो ॥ ८ ॥

कयं पसंगेण। सो महाणुभावो भावतो पडिवन्नसव्वसावज्जवज्जणो जणोवरोहरहिए एगंतदेसे ट्ठाऊण अप्पाणं चिय दुक्कम्मकारिणं मुज्जो मुज्जो निंदंतो जाव अच्छइ, ताव पुव्वकालियाणत्थदंडोवहयनायरएहिं अणवरयछिड्डावलोयणपरायणेहिं 'दिट्ठिया रहसट्ठितो चिट्ठइ' त्ति पहिट्ठेहिं 'मा पुणो किं पि अणत्थदंडमुप्पाइहि' त्ति निस्सङ्कं जट्ठि-मुट्ठि-लेट्ठूहिं निहओ निययाभिप्पाएण 'मतो' त्ति परिचत्तो।

निरुवक्कमत्तणेण आउयकम्मणो मणागं सिसिरमारुओवलद्धचेयणो विचिंतिउं पवत्तो—रे जीव ! मा ईसिं पि कस्सइ पतोसमुव्वहेज्जासि, ते पुव्वकयदुक्कयदुव्विलसियमेवासेसमिमं। जइ कालंतरावस्साणुभवणिज्जमिममियाणिं चिय उवट्ठियं ता किमकल्लाणं तुह ?। किं न सरसि तिजयसरसि समुल्लसंतकित्तिकुमुइणीवणो सुकयपवड्ढमाणो सिरिवद्धमाणो जयगुरू गरुया-

१ एवमादिपूर्वदुर्विहितहुतवहोत्पन्नतीव्रतनुतापः ॥ २ °णुभावो खं० प्र० ॥ ३ असदृशप्रसरद्भूरिविस्फुरितम् ॥ ४ किं पि प्र० ॥ ५ 'दिष्ट्या' इति आनन्दद्योतकमव्ययम्, 'रहःस्थितः' एकान्ते स्थितः ॥ ६ प्रहृष्टैः ॥ ७ निरुपक्रमत्वेन आयुष्कर्मणः मनाक् ॥ ८ प्रद्वेषम् ॥ ९ पूर्वकृतदुष्कृतदुर्विलसितमेवाशेषमिदम्। यदि कालान्तरावश्यानुभवनीयमिदमिदानीम् ॥ १० स्मरसि त्रिजगत्सरसि समुल्लसत्कीर्तिकुमुदिनीवनः ॥ ११ °वणे सु° खं० प्र० ॥

अनर्थदण्ड-दोषोप-दर्शनद्वारा तत्परिहारो-पदेशः

सुहकम्मनिज्जरणत्थमणत्थबहुलमिलेच्छभूमिमंइगतो । सणंकुमाररायरिसी वि पुव्वभवनिकाइयपयंडकंडूपमुहमहावाहिविहुरो वि 'पच्छा वि मंए च्चिय सोढव्वमेयं' ति कयनिच्छओ निच्छँउमतत्तिगिच्छोवट्ठियसुरवेज्जभणिज्जमाणो वि मोणमल्लीणो त्ति ।

एवमाइ सुहभावणं भावंतो निट्ठुरघायघुम्मिरसरीरो वि सणियं सणियं गतो सगिहं । सामरिसमापुच्छितो वि सर्यणेहिं तदणत्थभीतो मोणं चिय पवन्नो । 'अहो ! धन्नो कयपुन्नो य एसो, जेमेहिं खुद्देहिं उवद्दुओ वि पसँमपयरिसप्पहाणमेवं वट्टइ' त्ति जाया से निम्मला कित्ती धम्मसिद्धी य । कालक्कमेण सुगइगामी संवुत्तो त्ति ।

एवं अणत्थविरओ स महप्पा परमम्मुन्नइं पत्तो । अनियत्तो य अणत्थं ता दूरं एस चइयव्वो ॥ १ ॥
अवि लब्भइ जलहिजलस्स माणमवणीए कोसँसंखा वि । न उण जर्मदंडदारुणअणत्थदंडोत्थदोसाण ॥२॥ अपि च—

कीनाशपाशमपि हारधिया जिघृक्षेद्, हालाहलं त्वमृतमित्यथवा पिपासेत् ।
व्यालावलीमपि स बालमृणालनालशय्यां विभाव्य शयितुं नियतं श्रयेच्च ॥ १ ॥
योऽनर्थदण्डमतिचण्डमशेषदोषदौस्थित्यभाण्डमपि सौख्यकरं व्यवस्येत् ।
वाञ्छेत् ततोऽपि परमां जगति प्रतिष्ठां, निष्ठां च पूर्वकृतदुष्कृतसंहतीनाम् ॥ २ ॥ किञ्च—

१ °मिमइमइग° खं० प्र० ॥ २ मइ च्चि° प्र० ॥ ३ निश्छद्मतच्चिकित्सोपस्थितसुरवैद्यभण्यमानोऽपि ॥ ४ °यणे वि त° खं० प्र० ॥ ५ यद् एभिः ॥ ६ प्रशमप्रकर्षप्रधानम् ॥ ७ कोशसङ्ख्याऽपि ॥ ८ °मडंड° प्र० ॥

पुरोहितपुत्र-चित्रगुप्तस्य पूर्वभवः

तुमं हि एत्तो पंचमे भवे भद्दिलपुरनयरे सेणो नाम जिणरक्खियसेट्ठिणो जिणधम्मकम्मनिच्चलनिलीणचित्तस्स पुत्तो अहेसि । अणवरयसुतवस्सिसंसग्गवससमुच्छलंतातुच्छवेरग्गो य अणुव्वय-गुणव्वयपहाणं गिहिधम्मं पवज्जिऊण सव्वविरइं पि घेत्तुमभिलसंतो एत्तो च्चिय दारपरिग्गहमणिच्छंतो भणिओ जणणीए—पुत्त ! किमेवमम्हाण तुममेगो वि सुओ होऊण सुमुणि व्व संसारसमुत्थवावारविरंयचिंतो दीससि ? । तुमए भणियं—अम्मो ! 'किमणेण असारगिहत्थवावारविरेयणेण दुग्गदुग्गइदोसनिबंधणेणं ?' ति विभाविंतोऽहमियाणिं सव्वसंगचागेण उज्जमिउमिच्छामि ।

अह कोवँभरुब्भवंतारुणनयणाए भणियमणाए—पुत्त ! पडिहयममंगलं, तुह सत्तुणो चेव संगचागं काहिंति, तुमं पुण आचंद-सूरियं भोगोवभोगसुहमणुहवँसु त्ति, मा वच्छ ! लुंचियसिराणं अप्पसरिसं जयं पि काउमुवट्ठियाणं इमाण समणाण समीवे वच्चेज्जासि त्ति । पक्खित्तो दुल्ललियगोट्ठीए । 'न कारणुच्छेयमंतरेण कज्जविच्छेओ' त्ति केणावि उवाएण मुणिणो वि विहराविया अन्नत्थ । तुमं पि पइदियहं पावसंसग्गिवसगतो आयरिसो व्व पडिबिंबियतद्दुव्विलसियविसेसो पमाय-कालुस्समइंलिज्जंतो थोवकालेण वि अन्नो व्व संवुत्तो सि । सविसेसं च अणत्थदंडपंडिच्चं पडिवज्जिय अनिबद्धमँत्थव्वयं काउमलभंतो 'जरढढोरढड्डरसरो वि पिया कीस अज्ज वि न मरइ ?' त्ति असुहज्झवसाणेण १ मज्जाइपमायसंगेण २ खग्गाईहिंसगसमप्पणेण ३ पावोवएसपत्थावणेण य ४ वट्टंतो एगया य रायविरुद्धकारिणा रायसुएण समं मेत्तिं पवन्नो । तब्बलेण आयड्ढियजणगगेह-

१ °रहिय° खं० ॥ २ °विरेय° प्र० ॥ ३ कोपभरोद्भवदरुणनयनया ॥ ४ °वसि त्ति प्र० ॥ ५ मलिन्यमानः ॥ ६ °महव्वयं प्र० । अनिबद्धमहाव्ययम् ॥

चत्तारि सिक्खावयाणि ।

इति गुणवयजुत्तो वि हु सीयइ सिक्खावएहिं परिहीणो । ता इण्हि तस्सरूवं लेसुद्देसेण कित्तेमि ॥ १ ॥
सिक्खा इह अब्भासो तेण पहाणाइं जाणि उ वयाइं । सिक्खावयाइं ताइं ताण य सामाइयं पढमं ॥ २ ॥
रागाईविरहातो समस्स आतो[1] य णाणमाईणं । लाभो इहं समातो[2] सो कज्जं जस्स किच्चस्स ॥ ३ ॥
तं सामाइयमुच्चइ सद्दत्थो एस तस्सरूवं च । सावज्जजोगवज्जणमणवज्जासेवणं[3] सम्मं ॥ ४ ॥
इहइं निउत्तचित्तो गिही वि समणो व्व नूण पडिहाइ । अच्चंतमुत्तरोत्तरविसुद्धनाणाइलाभातो ॥ ५ ॥
पावस्स हेउभूयं चित्तं चिय तं च रुब्भइ भमंतं । सव्वत्थ समीरं पिव तेणेह महं[4] कुसललाभो ॥ ६ ॥
ता पुव्वजम्मजणियं पावं विप्फुरइ वित्थरइ अरई । सद्धम्मकम्मविसया विसएसु य गिज्झई[6] ताव ॥ ७ ॥
तरलायइ ताव तुरंगचंचलो दूरमिंदियग्गामो । सामाइयं पवज्जइ जावऽज्ज वि नेव निवियप्पं ॥ ८ ॥
सामाइयं पवन्नो गिही वि तियसाणमवि[7] हवइ पुज्जो । परमं च पसायपयं मेहरहो एत्थुदाहरणं ॥ ९ ॥

तहाहि—अत्थि कलिंगदेसलच्छि[8]विच्छड्डाखंडभंडारागारभूयं, भूय-भविस्सपरिन्नाणनिउणनाणाविहनाणिजणोववेयं, वेयं[9]-

१ आयः ॥ २ समायः ॥ ३ अनवद्यासेवनम् ॥ ४ महान् ॥ ५ °इ अत्थ° खं० ॥ ६ गृध्यति ॥ ७ °वि वहइ खं० प्र० ॥ ८ –लक्ष्मीविच्छर्द– ॥ ९ वेदविधिविचारविशारद-शारदरजनिकरसौम्याकार-गुरुकर्द्धिसमुद्धुरप्रचुरनरम् ॥

विहिवियारविसारय-सारयरयणियरसोमागार-गरुयरिद्धिसमुद्धुरपउरनरं नरउरं नाम नयरं । जं च सुविभत्ततिय-चउक्क-च्चरा-ऽऽवसह-साहिसोहणत्तणेण पढमपडिच्छंदं व कुबेरपुरीए । जत्थ य तुंग-सेयपासायसिरोवरिवत्तिणीणं चंदग्गहणावलोयणको-ऊहलिणीणं सीमंतिणीणं पसंतकंतमुह[1]सुंदेरविसंकितो समीवोवगयं पि न मयंकं गसिउमभिलसइ गहकल्लोलो[2] । रक्खइ य तं च जिणपायपउमपूयापयरिसावज्जियसुकयवारिधाराधोयकलिलो कलिलोवसमसारधम्मवावाराणुरत्तमाणसो माण[3]-सोयाइदोसव-ज्जिओ जयरहो नाम राया । सयलसीमंतिणीगुणोववेया विजया नाम [से] भज्जा । विणय-नय-सच्च-चागा[4]इगुणगणालंकितो मेहरहो पुत्तो । सुमंतो नाम [अ]मच्चो । उभयलोगाविरुद्धवत्थुसंपाडणपरा सव्वे कालं वोलेंति ।

एगया य राया कयमज्जणोवयारो परिहिय[5]भुयंगनिम्मोयनिम्मलदुकूलजुवलो परिमियपहाणचेड-चाडुकरपरिवुडो समग्ग[6]-पूयावग्ग[वग्ग]हत्थपुरिसाणुगम्ममाणो नियभवणेगदेसनिवेसियहिमगिरिसिंगसिंगारहारि जिणहरं गतो । परमपयत्तनिव्वत्तिय-जिणपूया-वंदणो य जयगुरुनिवेसियानिमेसनयणो आसीणो समुचियासणे । पयट्टं च अनलियजिणगुणगणपहाणं पेच्छणयं । एत्थंतरे विन्नत्तो राया पडिहारेण—देव ! तुम्हगिहचेइयवंदणत्थं समत्थतित्थपेहणपूयपावो भावदेवो नाम सेट्ठी दुवार-पडिरुद्धो चिट्ठइ त्ति । राइणा भणियं—तुरियं पवेसेसु । 'तह' त्ति पवेसिओ एसो । कयजहाविहिजिणपूयाइकिच्चो य विण-यावणयकाओ भालयलट्ठ[7]वियकरसंपुडो भूवइं भणिउं पवत्तो—महाराय !

१ –मुखसौन्दर्य– ॥ २ राहुः ॥ ३ मानशोकादि– ॥ ४ त्यागः–दानम् ॥ ५ परिहितभुजङ्गनिर्मोकनिर्मलदुकूलयुगलः । निर्मोकः–सर्पकञ्चुकः ॥ ६ समग्रपूजावर्गव्यग्रहस्तपुरुषानुगम्यमानः ॥ ७ °लवट्ठिय° खं० ॥

सावत्थि-हत्थिणाउर-चंपा-कंपिल्ल-ऽउज्झनयरीसुं । कोसंबी-वाणारसि-महिलापमुहासु य पुरीसु ॥ १ ॥
सम्मेयसेल-सत्तुंजयाइतित्थेसु अन्नहिं पि तुमं । वंदाविज्जसु देवे उसभाई वीरपज्जंते ॥ २ ॥
तो [1]भूमिवट्ठठविउत्तमंगमंगे अमंतहरिसभरो । राया वंदइ देवे [2]समुद्धरोमंचकंचुइतो ॥ ३ ॥
अह देववंदणाओ वि[3]रइं रायाणमुल्लवइ स पुणो । कुव्वंति धम्मलाभं मुणिणो तो वंदइ स ते वि ॥ ४ ॥
सावगवग्गो वि करेइ वंदणं इति पुणो वि संलत्ते । पडिवंदइ ते वि नमंतमत्थओ पत्थिवो[4] सम्मं ॥ ५ ॥
उचियासणमासीणं अह तं ससिणेहमुव्वी[5]राहिवई । जंपइ तुह निव्वूढा निविग्घा तित्थजत्त ? त्ति ॥ ६ ॥
दिवसाणि केच्चिराणि य विमुक्कगेहस्स [6]इह पयट्टस्स ? । सो भणइ देव ! बारस जायाइं इण्हि वरिसाइं ॥ ७ ॥
[7]वागरइ तं च राया धन्नो कयलक्खणो तुमं चेव । जो चत्तगेहमोहो करेसि महिमं जिणंदाणं ॥ ८ ॥
अम्हे पुण एक्कं पि हु कहं पि तित्थं पलोइउमसक्का । सोढव्वा ही ! सुचिरं भवभमणविडंबणा भीमा ॥ ९ ॥
इय भूरिसोगभरगग्गरक्खरं भूवइं भणइ सेट्ठी । तुब्भेहिं देव ! दिट्ठं दट्ठव्वमिह[8]ट्ठिएहिं पि ॥ १० ॥
जेसुं जिणेसु भत्ती तग्गयचित्तत्तणं च अच्चंतं । न हु अच्छीहिं दीसंति जिणवरा मोक्खसंपत्ता ॥ ११ ॥
अह सो रन्ना वुत्तो इमेसि तित्थाण किं पुण महत्थं । तित्थं ? ति तेण वुत्तं नरवर ! किमिमं तए न सुयं ? ॥ १२ ॥

१ भूमीपृष्ठस्थापितोत्तमाङ्गं अङ्गे अमाद्धर्षभरः ॥ २ समूर्द्धरोमाञ्चकञ्चुकितः ॥ ३ विरतम् ॥ ४ °वो य सम्मं प्र० ॥ ५ 'उर्वराधिपतिः' राजा ॥ ६ 'इह' तीर्थयात्रायां प्रवृत्तस्य ॥ ७ व्याकरोति ॥ ८ °प किं पि खं० प्र० ॥

इतो लघुत्वं गिरि[1]वंद् गरीयः, पदं विपत्तेरमुतश्च सद्यः ।
अधर्मकर्माण्यपि नूनमस्माद्, विधि[2]त्सति प्राणिगणः समग्रः ॥ ३ ॥
इति सततमनर्थदण्डदोषाद्, विषमपथादिव सन्निवर्त्य चेतः ।
तुरगमिव चलन् विशिष्टमार्गे, विदधदुपैति समीहितप्रदेशम् ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशेऽनर्थदण्डविरतिचिन्तायां चित्रगुप्तकथोक्त्या गुणव्रतत्रयं समाप्तम् ॥ ४१ ॥

१ °रिवं ग° खं० प्र० ॥ २ विधातुमिच्छति ॥

सक्कारिंतो समणसंघं, सम्माणंतो साहम्मियसमुदयं, उद्धराविंतो जिन्न-विसन्नजिणभवणाइं, निवारिंतो मग्गाणुलग्गं भय-मीणाइविणासेणुज्जयं घायगलोगं, अणुकंपिंतो छुहाकिलंतं पहियनिवहं, थुव्वंतो मागहेहिं, गिज्जंतो गायणगणेहिं सणियसणियं वच्चंतो पत्तो सम्मेयसेलपरिसरं। अह सेलचेइयदेवच्चगोवदंसिज्जमाणमग्गो महीवई मंदमंदमहीमुक्कचलणो—

कहिं पि उद्धट्ठियमेव निव्वुयं, कहिं पि वीरासणसंठियं तयं। कहिं पि सुत्तं गयमन्नमाणसो, परं करेंतं तह धम्मदेसणं॥ १ ॥
विन्नाणिएहिं कुसलेहिं सम्मं, उक्किन्नदेहं गिरिणो सिलासु। तवस्सिलोगं कयपायपूओ, वंदेइ सो भूठविउत्तमंगो ॥ २ ॥
सिद्धिं गयाणं गणनायगाणं, ठाणेसु देवेहिं विणिम्मियातो। लद्धून तुट्ठो मणिथूभियाओ, पूएइ सव्वायरदिन्नदिट्ठी॥ ३ ॥
सिद्धा इहं भूवइणो अणेगे, गयाउ मुत्तिं इह साहुणीओ। विज्जाहरिंदा इह निव्वुय त्ति, पलोइरो सेलसिरम्मि पत्तो॥ ४ ॥

एत्थंतरे निसामिओ रन्ना कोइलकुलकलरवाओ वि अब्भहियसुइसुहकारी वेणु-वीणाणुगयसुरगेयरवो, अग्घाइओ घुसिणघण-घणसारसारचुन्नपरिमलो, दिट्ठं च उप्पयंत-निवयंतं पारियायमंजरीपुंजपहाणअग्घंजलिपयाणपरं विंदारयविंदं, आइन्निओ थुइ-थोत्त-चच्चरीगेयहलबोलो। अह कोऊहलाउलियमाणसेण भूवइणा पुच्छिओ देवच्चगो—अरे! किमेयं?। देवच्चगेण भणियं—देव! निसामेहि—

कयमासोवासतवा पाओवगया जिणेसरा वीसं। अजियाइणो सिवम्मि जेसु ठिया उवगया पुव्विं ॥ १ ॥

१ मइमी° खं० ॥ २ °समुज्ज° खं० ॥ ३ तह खं० ॥ ४ करिंतं प्र० ॥ ५ उक्खित्तदेहं खं०। उत्कीर्णदेहम् ॥ ६ लद्धान खं०। लट्ठान प्र०। लब्ध्वा ॥ ७ 'वृन्दारकवृन्दः' देवसमूहः, आकर्णितः ॥

ताइं सिलायलाइं फालिहमणिमणहराइं एयाइं। पूएसु नमसु संथुणसु णेगहा पज्जुवासेसु ॥ २ ॥
एवं निसामिऊणं राया रोमंचकंचुइयकातो। कयअट्ठमोववासो अट्ठपयाराए पूयाए ॥ ३ ॥
पूएइ ताइं सव्वायरेण थूभे य तित्थनाहाण। संथुणइ तयणु थुइ-थोत्त-दंडएहिं विचित्तेहिं ॥ ४ ॥

एवं च कयसव्वायरतप्पूयावावारो नरवई अट्ठमावसाणे पारिऊण वि तत्थेव वसिउकामो भणितो देवच्चएणं—महाराय! महंतं तित्थमिमं सव्वओ वि समद्धासियं सिवगएहिं महापुरिसेहिं, अतो एत्तोवरि नेव अच्छिउं जुज्जइ त्ति। ततो सयलसेलसिलाविइन्नपुप्फपयरो, वसुंधरायलट्ठवियसीसो, सविणयं तित्थदेवयाकयखामणो, 'भवे भवे तुह दंसणं होउ' त्ति पुणरुत्तं वाहरंतो, उत्तिन्नो राया सरीरेण, न उण मणसा। जाजीवं धणवियरणेण य निव्वुइं काऊण य देवच्चयपरियरं पट्ठिओ सनयरहुत्तं।

अंतरे य इंतो पडिरुद्धो चिलायवइणा महाबलनामेणं। अह विसमगिरिकडयनिस्सं घेत्तूण कयखंधावारनिवेसो भूवई ठिओ जुज्झसज्जो। तन्निच्छयं पेच्छिऊण मग्गनिरोहं काऊण पच्चोसक्कियं परबलं। इमो य वइयरो जणवयवयणाओ आयन्निओ मेहरहरायसुएण। ततो महंतममरिसमुव्वहंतो असेससेन्नाणुगतो अविलंबियपयाणएहिं गतो पिउणोऽभिमुहं। अह उभयपासपडिरुद्धं विबलं पलाणं चिलायबलं, मिलिओ रायसुतो पिउणो, अभिनंदिओ तेण, पट्ठिया दो वि समगं चिय गंतुं।

इतो य जयवालाभिहाणेण सदेससीमंवत्तिणा रन्ना 'असामियं' ति काऊण कइवयसमीवगाम-नगराइयं लूडियं निसा-

१ –स्फटिक– ॥ २ रोमाञ्चकञ्चुकितकायः ॥ ३ सकलशैलशिलाविकीर्णपुष्पप्रकरः ॥ ४ 'प्रत्यवष्वष्कितम्' पश्चान्निवृत्तम् ॥ ५ निर्बलमित्यर्थः ॥ ६ °सीमाव° खं० ॥ ७ लुण्टितम् ॥

मिऊण बाढं परुट्ठो मेहरहो पियरं पुरे पवेसिऊण महया विक्खेवेण गतो तद्देसे, पारद्धो उवद्दविउं। जयवालो वि राया अपरिभावियनियसामत्थो कोवाउरत्तणेण तिणं व नियजीवियमवगणिंतो रायसुएण समं लग्गो जुज्झिउं। खणंतरेण विजितो मेहरहेण बंधिऊण पक्खित्तो पिउणो पायपंकयपुरतो। तव्वेलं च राया 'तित्थागतो' त्ति जायं महया पबंधेण वद्धावणयं, मुक्को चारगाइरुद्धो लोगो। तओ रन्ना जयपालो वि मोयाविओ, पवन्नसेवो सक्कारिऊण विसज्जिओ य।

अह कयचेइयमहूसवविसेसो जहोचियविहियसंघपूयापयरिसो राया रायसुयसमेओ तक्कालागयजुगप्पहाणविजयसूरिवंदणत्थं महया वित्थरेण गतो कुमुयसंडाभिहाणमुज्जाणं। जहाविहिं वंदिऊण सूरिणो निसन्नो धरावट्ठे। गुरुणा वि तक्कालोचियाँ समारद्धा धम्मकहा। कहं चिय?—

धम्मस्स परममंगं दंसणमक्खंति भिक्खुणो राय!। तस्स य पभावणंतो आयारो अट्ठहा वुत्तो ॥ १ ॥
सा पुण पभावणा भवणवत्तिणा सुट्ठु तीरइ न काउं। अणवरयगेहवावारविरयणावावडमणेणं ॥ २ ॥
ता तच्चागेणं जम्म-दिक्ख-नेवाण-नाणभूमीसु। धन्नो पभावणत्थं वंदइ तित्थयरबिंबाइं ॥ ३ ॥ किंच—
उत्तममग्गपयासो पभावणा सासणस्स परमा य। सुहभावअवोच्छित्ती गुणा इमे तित्थजत्ताए ॥ ४ ॥
तं तहपयट्टमाणं पडिगामजिणच्चणाकरणनिरयं। दट्ठूण को न लग्गइ तम्मग्गे जायसुहभावो? ॥ ५ ॥ तथा—

१ कोपातुरत्वेन ॥ २ कहच्चे° खं० प्र० ॥ ३ °च्चियसमा° खं० प्र० ॥ ४ "निस्संकिय निक्कंखिय निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी य। उववूह थिरीकरणे वच्छल्ल पभावणे अट्ठ॥" इतिरूपः निःशङ्कितादिकः प्रभावनान्तोऽष्टप्रकारः आचारः ॥ ५ —व्यापृतमनसा ॥ ६ तत्त्यागेन ॥ ७ —अव्यवच्छित्तिः ॥

अट्ठावयम्मि उसभो सिद्धिगओ वासुपुज्ज चंपाए। पावाए वद्धमाणो अरिट्ठनेमी उ उज्जिंते ॥ १३ ॥
अवसेसा य जिणवरा जाइ-जरा-मरणबंधणविमुक्का। सम्मेयसेलसिहरे वीसं परिनिव्वुया वंदे ॥ १४ ॥
इय वयणाओ हरिसाइरेगओ वि य इमं अहं मन्ने। न वि अत्थि न वि य होही सम्मेयसमं महातित्थं ॥ १५ ॥

अह 'किं पि तं सुदिणं होही जम्मि तमहं वंदिस्सामि' त्ति कयनिच्छओ, 'साहम्मिउ' त्ति सविसेसदरिसियगउरवाइरेगो तं सावगं सपरियणं काराविऊण भोयणं पूइऊण वत्थाइदाणेण सबहुमाणं विसज्जेइ। सयं पि कयभोयणाइकिच्चो रज्जकज्जाइं चिंतिउं पवत्तो।

एगया य वसुंधराचिंताए मेहरहं मंतिवग्गं च निजुंजिऊण महरिहपाहुडपयाणपुव्वयं दूयवयणेण सम्मेयसेलसमीववत्तिणो भूवाले भणावेइ——जइ तुब्भे किं पि रज्जावहाराइकुविगप्पं न कुणह ता वयं सम्मेयसेलाचलावलोयणजलेण अप्पाणं पक्खालियपावमलं करेमो त्ति। पडिपाहुडपेसणपुव्वयं च 'तह' त्ति पडिवन्नं सव्वं तेहिं। ततो रन्ना पडहपडिहणणपुरस्सरं घोसावियमिमं सव्वत्थ नयरे——जो कोइ सम्मेयसेलमवलोइउमभिलसइ सो सिग्घं भोयणाइसंखो[भ]मकुणंतो पउणीहवउ त्ति। इमं च सोच्चा कयतक्कालोचियकिच्चा पगुणीहूया सावगवग्गा।

राया वि सुमुहुत्ते कयमज्जणोवयारो नियंसियसियवत्थो पुरोहियकयमंगलोवयारो पणयदेव-गुरुचरणो पउरकरि-तुरय-कोस-कोट्ठागारपरिगतो नीहरिओ पुरातो। तित्थदंसणसमुट्ठियविसिट्ठधम्मिट्ठलोयाणुगतो य पडिसन्निवेसं पूइंतो चेइयाइं,

१ पटहवादनपूर्वमित्यर्थः ॥

पुरुषद्विक-
पूर्वजन्म-
कथानकम्

पुव्वकाले कलिंगविसए तुब्भे दो वि रायसुया समुप्पज्जित्था। एस पढमो पयईए च्चिय करुणापरो। बीओ य तुमं पयईए च्चिय अणवरयथी-बाल-वुड्ढ-गाम-पुर-सत्थलूडण-डहणनिद्दयचित्तो भारुंड-सिहंडि-कवोय-कविंजल-जलजीव-वराहपमुहपाणिनिवहवहनिरतो तम्मंसभोई य कालं वोलेसि। इयरो य पयईए च्चिय दयासीलत्तणेण भवंतं निम्मेरं[1] जीवघायाईसु वट्टंतं वारेइ—कीस एसो जीववहो निरत्थओ कीरइ? किं वा समंसं परमंसेण पोसिज्जइ? किं सासयं जीयं? धुवा सरीरसिरी? अक्खयं रूवाइय?—त्ति। तुमं पडिभणसि—अप्पणो तत्तिं[2] करेहि त्ति। एवं च निकाइऊणाणेगं पावपब्भारं मओ तुमं उववन्नो नरयतिरिएसु, सहियाइं महादारुणाइं दुक्खजालाइं। बीओ पुण अणुकंपाइ[3]गुणावज्जियसम्मत्तो मरिऊण सोहम्मे सुरो जातो। तत्तो य चुओ कुसलजम्मा-ऽविकलारोग्ग-उदग्गरूवाइसुहसंपयमणुभवंतो कइवयभवेसु उत्तरोत्तरं सुरालएसु उववज्जिय संपयं पि सुंदेर-रूवा[4]-ऽऽरोग्गाइगुणसंगओ तुह जेट्ठभाउत्तेण उववन्नो। तुमं पुण कुच्छियमिलेच्छ-मच्छ-कच्छभ-अच्छभल्ल-भल्लुंकपमुहाणिट्ठजोणीसु णेगहा दहण-भेयण-च्छेयण-कप्पणपमुहमहादुक्खोवक्कामियजीवियव्वो, अकामनिज्जरावसनिज्जिन्नपायपुव्वकयपावपब्भारो, केणावि कलुसकुसलोदएण सुकुले उववज्जिउं पि पुव्वदुक्कयावसेसवसेण एवंविहमहावाहिविहुरत्तणमणुपत्तो सि। ता भद्द! इमं कारणं ति ॥ छ ॥

इमं सोच्चा नीसेसं मेहरहरायसुओ सीमालदेसदहणाइकयाणेगसत्तसंघायघायणुप्पन्नवेरग्गो सूरिं भणिउं पवत्तो—भयवं! एवं सइ कहं अम्हारिसाणं निरंतरं पाणवहाइनिरयाणं पावमोक्खो होहि? त्ति। सूरिणा जंपियं—रायसुय!

१ निर्मर्यादम् ॥ २ 'तत्तिं' चिन्ताम् ॥ ३ °पाए गु° खं० प्र० ॥ ४ °वाइरो° खं० प्र० । सौन्दर्यरूपाऽऽरोग्यादि ॥

तेणेव सव्वसावज्जकज्जपरिवज्जणेण पव्वज्जा। कीरइ मुणीहिं नीसेससत्तसंताणताणाय ॥ १ ॥
जइ गिहवासो वि हवेज्ज सव्वसावज्जवज्जणपहाणो। कट्ठाणुट्ठाणमिमं ता को णु करेज्ज बालो वि? ॥ २ ॥
रायसुएणं भणियं भयवं! तं काउमक्खमाण कहं। अम्हारिसाण सुद्धी अणवरयं पावनिरयाणं? ॥ ३ ॥
कह वा पुव्वनरिंदा गिहट्ठिया वि हु पणट्ठपावमला। चंडावडिंसयाई[1] सव्वे सुव्वंति सुगइगया[2] ॥ ४ ॥
गुरुणा भणियं नरवर! सामाइयमाइधम्मकिच्चेसु। तह कह वि वट्टियं तेहिं जह परं सिवपयं पत्ता ॥ ५ ॥
रायसुएणं भणियं जइ एवं ता ममं पि उवइसह। सामाइयमेगं ताव सेसमवरम्मि पुण समए ॥ ६ ॥

सामायिक-
व्रतस्य स्व-
रूपं तदति-
चाराश्च

अह असुहनिवित्ति-सुहप्पवित्तिसारं परं गुणट्ठाणं। सिक्खावयाण पढमं सामाइयमाह तस्स गुरू ॥ ७ ॥
नाणाईणं लाभो एत्तो परमं च कम्मनिम्महणं। संभवइ जारिसं तारिसं हि नो सेसकिच्चाओ ॥ ८ ॥
चेइय-पोसहसाला-साहु[3]गिहाइसु अपच्चवाएसु। आरभइ तमुवउत्तो विमुक्कमउडाइसिंगारो ॥ ९ ॥
निज्जीवम्मि पएसे "करेमि भंते!" त्ति मूलओ सुत्तं। उच्चारिंतो सव्वं चिट्ठइ य विवक्खियं[4] कालं ॥ १० ॥
एत्थ य ठिओ निसामइ सत्थत्थं वायई पढइ वा वि। परियत्तइ वा सुत्तं कहेइ अन्नस्स वा धम्मं ॥ ११ ॥
जिणण्हवण-पूयणाई धम्मसरूवं पि कुणइ न मुणि व्व। भावत्थए पवत्तस्स किं व दव्वत्थएणं से? ॥ १२ ॥

१ चण्डावतंसकादयः चन्द्रावतंसकादय इति वा ॥ २ °गयग° प्र० ॥ ३ साधवः-शाहुकार इति भाषायाम् तेषां गृहाणि ॥ ४ विवक्षितम् ॥

सव्व च्चिय धम्मठिई अहिगारिवसेण सोहणा हवइ । कयसामइओ न गिही वि तेण दव्वत्थयं सेरइ ॥ १३ ॥

जइ सो य इड्ढिपत्तो ता सव्वविभूइं-वाहणाईहिं । जिणभवणे गंतूणं कयजिणपूओ कुणइ एवं ॥ १४ ॥

तह तक्करणे सासणपभावणा आयरो[5] सुसाहूसु । सुपुरिसपरिग्गहाओ अणत्थविगमाइया य गुणा ॥ १५ ॥

नवरं इमं पयंपइ सुत्ते 'जा साहु पज्जुवासामि' । जइपुरंतो सामइयं [6]लिंतो अन्नत्थ 'जा नियमं' ॥ १६ ॥

[7]एत्थ य पंचइयारा मणदुप्पणिहाणमाइणो तिन्नि । विस्सुमरणमणवट्ठियकरणं च सरूवमेसिमिमं ॥ १७ ॥

सामाइयं तु काउं घरचिंतं जो उ चिंतए सड्ढो । अट्टवसट्टोवगओ निरत्थयं तस्स सामइयं ॥ १८ ॥

कडसामइओ पुव्विं बुद्धीए पेहिऊण भासेज्जा । सइ निरवज्जं वयणं अन्नह सामाइयं न भवे ॥ १९ ॥

अनिरिक्खिया-ऽपमज्जियथंडिल्ल-ट्ठाणमाइ सेवंतो । हिंसाभावे वि न सो कडसामइओ पमायाओ ॥ २० ॥

न सरइ पमायजुत्तो जो सामइयं कयाइ कायव्वं । कयमकयं वा तस्स हु कयं पि विहलं तयं नेयं ॥ २१ ॥

काऊण तक्खणं चिय पारेइ करेइ वा जहिच्छाए । अणवट्ठियसामइयं अणायराओ न तं सुद्धं ॥ २२ ॥

नणु विहलत्ते सामाइयस्स इत्थं कहं व अइयारो ?। मालिन्नमेत्तरूवो भंगो चिय किं न होइ फुडो ? ॥ २३ ॥

सच्चमणाभोगाईभावाओ चेव इत्थमइयारा । जुगवं [10]मणमाईणं दुप्पणिहाणेऽहवा भंगो ॥ २४ ॥

१ °गारविसिट्ठा सोह° खं० ॥ २ स्मरति ॥ ३ °इभावणा° खं० ॥ ४ °रो य साहू° प्र० । यतेरग्रत इत्यर्थः ॥ ५ °रओ सा° प्र० ॥ ६ 'लान्' आददानः ॥ ७ इत्थ प्र० ॥ ८ 'प्रेक्ष्य' विचार्य ॥ ९ सदा ॥ १० मणवाईणं प्र० ॥

धन्नो कयपुन्नो वि य एसो जस्सेरिसा जिणे भत्ती । इय बहुमाणा पाउणइ बोहिबीयाइ अवरो वि ॥ ६ ॥

दट्ठूण य सविसेसं चक्कं थूभं चिईपएसं च । चिरकालियं जिणाणं जायइ धम्मम्मि एगमणो ॥ ७ ॥

साइसयसाहुदंसणवसेण चिरकुग्गहाइणो दोसा । पसमंति दव्व-खेत्ताणुभावतो वा सुगुरुया वि ॥ ८ ॥

ता नरवर ! किं पि कयं तं तुमए जं न सुव्वइ कहिं पि । न हु थेवं पि चेइज्जइ गिहीहिं गिहवासवासंगो ॥ ९ ॥

जं जं वेलं अणुहवइ तित्थदंसणसमुब्भवं हरिसं । सुहभाववुड्ढिजणियं तं तं अज्जिणइ पुन्नं च ॥ १० ॥

इत्थं च तित्थजत्ताकरणेंज्जियपुन्नपगरिसवसेण । लब्भइ तित्थयरत्तं पि सेसवत्थूसु का गणणा ? ॥ ११ ॥

एवं भणिए गुरुणा परितोसं परममुवगतो राया । हिययंतो अप्पाणं भुज्जो भुज्जोऽणुमोएइ ॥ १२ ॥

एत्थंतरे तप्पएसमुवागया दुवे पुरिसा—एगो देवकुमाराणुरूवो बीओ अच्चंतकुदंसणो, पढमो निरामयदेहो बीओ जर-सास-कासाइसोलसरोगविहुरो, पढमो पुन्ननिचतो व पच्चक्खो बीओ य असेसपावरासिनिम्मविओ व, पढमो सरयससहरो व लोयलोयणाणंदजणओ बीओ ईसिदंसणे वि दुक्खुप्पायणपवणो त्ति । एवंविहसरूवा य ते दो वि पडिया सूरिणो पाएसु । विन्नत्तो य सोगगग्गिरगिरेण रोगिणा गुरू—भयवं ! एसो अहं च दुवे वि भायरो, एगजणणीए जाया अम्हे, नवरमवरोप्परमेवंविहविसरिसत्तणे किं कारणं ? ति । भगवया भणियं—सुकय-दुकयकम्मवियारो एत्थ कारणं । 'किं पुण अम्हेहिं कयं ?' ति पुट्ठो सूरी भणइ—निसामेह—

१ °वसे य चि° खं० प्र० ॥ २ त्यज्यते ॥ ३ गृहवासव्यासङ्गः ॥ ४ °णच्चिय° खं० प्र० ॥ ५ पुण्यनिचय इव ॥ ६ शोकगद्गदगिरा ॥

सामायिक-व्रतस्य माहात्म्यम

विसेसं निराउहो पडिवज्जिय एगंते ज्झाणेण चिट्ठइ त्ति । ततो कवडकयसुसावगनेवच्छा गुविलगोवियकिवाणिणो पविट्ठा उज्जाणं । 'सुसावग' त्ति न खलिया दुवाररक्खिगेहिं । अह साहुकयपायवडणा वेगेण धाविया ते मेहरहाभिमुहं । एत्थंतरे सामाइयनिच्चलत्तणतुट्ठाए उववणदेवयाए तेसिं विब्भमुप्पायणत्थं निम्मवियाइं मेहरहस्स अणेगाइं पडिरूवगाइं ।

अह जत्थ जत्थ चक्खुं खिवंति ते दुट्ठबुद्धिणो पावा । पेक्खंति कुमारं तत्थ तत्थ साइसयरूवधरं ॥ १ ॥
एवं पि अणेगविसिट्ठरूवमवलोइऊण ते भीया । कस्स पहारं कुणिमो ? त्ति गरुयसंखोभरुब्भंता ॥ २ ॥
दुत्थावत्थं तं किं पि ते गया जेण थंभिय व दढं । [1]अन्नोन्नपलोयणमेत्तमुणियजीवंतवावारा ॥ ३ ॥
कुमरो वि दढं एगग्गमाणसो पारिऊण सामइयं । ते तयवत्थे दट्ठूण विम्हिओ पुच्छए सूरिं ॥ ४ ॥
भयवं ! कयरा एए ? तो सूरी कहइ ताण वुत्तंतं । [2]नाणोवतोगजाणियपरमत्थो अह नरिंदसुओ ॥ ५ ॥
तेसिमभयप्पयाणं दाउं सविसेसवड्ढिउच्छाहो । सामाइयम्मि सम्मं एगग्गमणो सया जातो ॥ ६ ॥
कालक्कमेण पवरं स रायलच्छिं पि पाविउं धीरो । पारद्धगुणट्ठाणम्मि पयरिसं परममणुपत्तो ॥ ७ ॥
इय देवाणं पुज्जा असेसकल्लाणभायणं च नरा । जायंति किमिह चोज्जं सम्मं सामाइउज्जुत्ता ? ॥ ८ ॥ अपि च—

विश्वत्रयीवपुषि चित्तविषं विसर्पि, निर्वीर्यमल्पविषयं च निवर्त्य कुर्यात् ।
कः सिद्धगारुडपदाप्रतिघप्रभावसामायिकप्रवरमन्त्रविधानवन्ध्यः ? ॥ १ ॥

१ अन्योऽन्यप्रलोकनमात्रज्ञातजीवद्व्यापाराः ॥ २ ज्ञानोपयोगज्ञातपरमार्थः ॥

पूर्वार्जिताशुभशिलोच्चयशृङ्गवज्रं, सम्यक्क्रियाकमलिनीवनभानुबिम्बम् ।
सामायिकाख्यगुणमेकमवाप्य धीराः, नैके शिवालयजुषो नियतं बभूवुः ॥ २ ॥
सम्यक्सुखासुख-सुहृद्रिपु-रत्नलेष्टुतुल्यत्वबुद्धिरधिकं हृदि सन्निधत्ते ।
सम्पद्यते निरभिलाषतया प्रवृत्तिरौचित्यकृत्यपरमाऽप्यमुतः सदैव ॥ ३ ॥
इति शिवसुखलक्ष्मीमूलसम्प्राप्तिहेतुं, निहतनिखिलचेतोदौस्थ्यदोषप्रपञ्चाम् ।
प्रचुरसुकृतयोगात् कोऽपि सामायिकाख्यव्रतकरणविशुद्धां बुद्धिमाप्नोति सत्त्वः ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे शिक्षाव्रतविचारणायां सामायिकप्रक्रमे मेघरथकथानकं समाप्तम् ॥ ४२ ॥

देशावका-शिकस्य स्वरूपम्

पढमं सिक्खावयमक्खिं[1]ऊण बीयं इयाणि सा[2]हेमि । देसावगासियं नाम किं पि समयाणुवित्तीए ॥ १ ॥
पुव्वपडिवन्नदीहरदिसिपरिमाणस्स पइदिणं चेव । संखित्ततरं दिसिपरिमाणकरणमे[3]यरूवमिह ॥ २ ॥
जं पुव्वगहियदिसिवयदेसे भागे इमस्स अवगासो । ठाणं ति तेण देसावगासियं भन्नए एयं ॥ ३ ॥
जीवो पमायचारी पमायपरिवज्जणे य इह धम्मो । [4]संखित्तो वि य भुज्जो संखिप्पइ तप्पयारो ता ॥ ४ ॥
सच्छंदपयाराइं जहा विणासं लहंति डिंभाइं । [5]अनिजंतियवावारा जीवा वि तहा विणस्संति ॥ ५ ॥

१ आख्याय ॥ २ कथयामि ॥ ३ °मेयं सरू° खं० प्र० ॥ ४ सङ्क्षिप्तोऽपि च भूयः सङ्क्षिप्यते तत्प्रचारः तावत् ॥ ५ अनियन्त्रितव्यापाराः ॥

जह वा दुस्संठवितो जलणकणो वि हु पुरा-ऽऽसमे डहइ। अनिरुद्धो तह जीवो किमकज्जं नाऽऽयरइ संज्ञो[1] ? ॥ ६ ॥
तेणेहे[2]-पारभवियावयारगुरुगरलरुंभणट्ठाए । रक्खाकंडगकप्पं[3] दिट्ठं सिक्खावयं एयं ॥ ७ ॥
अणुवित्तीए वि इमं ओसहमिव निच्छियं कुणंतस्स । किं नेव कुणइ सोक्खं वणिणो पवणंजयस्सेव ? ॥ ८ ॥

तथाहि—अत्थि वियडवैइराड[4]विसयविस्सुयं सुयाणेगकव्व-कह-भारहपमुहसत्थपउरजणजणियाणंदं नंदिपुरं नाम नयरं। जत्थ य चेउरंगोवलद्धविजओ[5] विजयधम्मो राया छेयजूइयरनियरो य, वेसमणायारा[6] धणिणो धम्मिया य, नालीयलिंगिया[7] सरुच्छंगा उवंतभूमिगा य, तिलोत्तमाभिरामो रामायणो छेत्तधन्नसंचतो य। एवंविहगुणे य तत्थ पुरे वत्थव्वो अपरिसंखधन्न-धणड्ढो सावयधम्मनिच्चलनिवेसियहियओ जीवा-ऽजीवाइपयत्थवित्थरवियारकुसलो धणंजओ नाम सेट्ठी, निरुवचरियधम्मकज्जसज्जा सज्जणी नाम से गेहिणी, पुत्तो य पवणंजओ। तस्स य घरदासीजाओ तुल्लसरीरसंठाण-वन्न-रूवाइगुणो सेहरओ नाम मित्तो, सो य सहाई भिच्चो य, किं बहुणा ? विसिट्ठमंतो व सव्वकज्जकरो। सव्वे वि उचियकज्ज-करणेण दिणगमणियं कुणंति।

१ सद्यः ॥ २ तेन इह पारभविकापकारगुरुगरलरोधनार्थम् ॥ ३ 'रक्षाकाण्डककल्पं' रक्षायन्त्रतुल्यम् ॥ ४ °वराड° खं० ॥ ५ राजपक्षे चतुरङ्गसैन्येन लब्धविजयः सामादिचतुरङ्गिकनीत्या प्राप्तविजय इति वा, द्यूतकारसमूहपक्षे तु शारिलब्धविजयः ॥ ६ धनिकपक्षे 'वैश्रमणाकाराः' वैश्रमणरूपधारिणः, धार्मिकाः पुनः 'वैश्रमणाचाराः' वैश्रमणवद् दानिनः ॥ ७ 'सरउत्सङ्गाः' सरोमध्यभागाः नालीकैः—कमलैः लिङ्गिताः—युक्ताः, 'उपान्तभूमीगाः' चाण्डालप्रभृतयोऽन्त्यजाः न अलीकेन—असत्येन लिङ्गिताः—युक्ताः ॥

नणु मणदुप्पणिहाणं दुप्परिहारं चलत्तणेणं से। सामाइयकरणाओ तदकरणं चिय अंतो[1] जुत्तं ॥ २५ ॥
अणुचियमेयं मिच्छुकडस्स भणणे विसुद्धभावातो। सव्वविरईए सामाइए वि एवं परूवणओ ॥२६॥ किंच—
सुद्धमसुद्धाओ वि हु अब्भासवसेण होइऽणुट्ठाणं। ता तप्पवित्तिवारणमसम्मयं सेमयवेईणं[2] ॥ २७ ॥
कयमेत्थ पसंगेणं नरिंदसुय ! जइ भयं समुव्वहसि। पुव्वकयदुक्कयगयं सामइयं ता समायरसु ॥ २८ ॥
जइ वि हु जहन्नओ चिय मुहुत्तमित्तो[3] इहं हवइ कालो। सुद्धाणुट्ठाणवसा तह वि हु कम्मक्खतो[4] विउलो ॥ २९ ॥
ता पावतिमिरपूरो दुव्वारो हरइ निम्मलालोयं। सामाइयमायंडो जा न पयंडो समुग्गमइ ॥ ३० ॥

एवं गुरुणा सवित्थरं साहिए मेहरहरायसुतो अंतोवियंभंतपरमपरितोसो सामाइयवयं सुत्तऽत्थेहिं पडिवज्जइ, जहावसरं च समणुट्ठेइ त्ति। ताणं च दोण्हं पुरिसाणं जो रूवाइगुणजुओ सो लहुकम्मत्तणेण पवज्जं पवन्नो। इयरो पुणं[5] सुणिऊण वि पुव्ववित्तंतं किलिट्ठकम्मयाए 'को मुणइ किं पि परमत्थं ?' ति भणमाणो गओ जहागयं।

इतो य सो जयपाल[6]पुहइवई पुव्वाणुसयमुव्वहंतो अणवरयं नियपहाणपुरिसे भणइ—अरे ! अत्थि कोइ तुम्ह मज्झे पोरिसाइगुणजुओ[7] सामिभत्तो वा जो मह वेरिणं मेहरहं वावाएइ ? त्ति। पइदिणवयणोवरोहेण य पडिवन्नमिमं सुमंगलाईहिं अट्ठहिं सुहडेहिं, गया य तं पुरं। जाणिओ[8] य चरमुहातो तेहिं, जहा—मेहरहो साहुसयासे किं पि नियम-

१ अओ प्र० ॥ २ आगमज्ञानामित्यर्थः ॥ ३ °त्तमेत्तो प्र० ॥ ४ कर्मक्षयः ॥ ५ °ण मुणि° खं० ॥ ६ जइपा° खं० ॥ ७ °जुत्तो सा° प्र० ॥ ८ °णिऊण चर° प्र० ॥

सं[1]वडम्मुहावडंतदप्पुब्भडदिन्नसेट्ठिसुयसागरदिन्नसंदणकूवरपरिघट्टिओ परिखलिओ रहो । 'अरे ! को एस रहमग्गं निरुंभिऊण ट्ठिओ ? न य नियरहं परियत्तिय वच्चइ ?' त्ति ससंरंभं पयंपियं पवणंजएणं । इमं च जोव्वण-धणाइमयमत्तचित्तो निसामिऊण सागरो भणिउं पवत्तो—अरे ! कीस अहं नियरहं परियत्तिस्सामि ? तुमं किं न परियत्तेसि ? किमप्पाणं केणइ चा[2]गाइणा गुणेण सविसेसुक्करिसमवगच्छसि जमेवमुल्लवसि ? त्ति । एवं च दोण्हं पि परोप्परं कोवसंरंभनिब्भरमुल्लवंताण ताण मिलिओ लोगो । बुज्झियकज्जमज्झो य किं पि नयमग्गमुल्लविऊण ट्ठिओ तुण्हिक्को ।

दो वि हु पगिट्ठदप्पा दो वि हु गुरुविभववड्डियामरिसा । दो वि हु कलासु कुसला दो वि हु जोव्वणगुणग्घविया ॥१॥
दो वि हु नरवइपुज्जा दो वि हु बहुमित्त-सयण-संबंधा । दो वि हु पुरप्पहाणा दो वि हु सव्वत्थ पयडजसा ॥ २ ॥
को भणउ किं व ते अणुचियं पि काउं उवट्ठिए बाढं ? । दक्खिन्नपए पायं न[3]यवाया विहलयमुवेंति ॥ ३ ॥
अह दोहि रहेहिं तहट्ठिएहिं रुद्धम्मि रायमग्गम्मि । मुणियसरूवा पियरो ताण तहिं झत्ति संपत्ता ॥ ४ ॥
भणिया य तेहिं एवं निरत्थयं कीस पणयपरिहाणिं । रे रे ! करेह तुब्भे पग्गहिउं कुग्गहं बाढं ? ॥ ५ ॥
एगट्ठाणावठिईपराण अवरोप्परं च सयणाण । उवगारीण य कहमवि न विरोहो जुज्जए काउं ॥ ६ ॥
किं धणहाणी ? किं वा व[4]या-ऽऽगमो ? किं व नियकुलकलंको ? । परियत्तिऊण न रहं जं गम्मइ नियगेहेसु ॥ ७ ॥

१ सम्मुखापतद्दर्पोद्भटदत्तश्रेष्ठिसुतसागरदत्तस्यन्दनकूवरपरिघट्टितः । कूवरः—रथावयवविशेषः, युगन्धर इत्यर्थः ॥ २ 'त्यागादिना' दानादिना ॥ ३ 'नयवाचः नयवादा वा' नीतिवाचः नीतिवादा वा विफलताम् ॥ ४ 'व्ययाऽऽगमः' हानिलाभौ ॥

एवंविहोऽभिमाणो खत्तियपुत्ताण चेव निव्वहइ । दीहरवि[1]भावरीए थेवं पि न वणियजाईए ॥ ८ ॥
एमाइ णेगहा सासिया वि जा ते न दिंति पडिवयणं । दुव्विणय त्ति समुज्झिय ता तप्पिउणो गया सगिहं ॥ ९ ॥

अह मुं[2]णियतव्वइयरेण राइणा पेसिया कारणियपुरिसा तव्विसंवायनिन्नयकरणत्थं । मुणियगाढकुग्गहा य एगंते ट्ठाऊणं करणिज्जविसेसं विनिच्छिऊण सेट्ठिसुयाण दोण्ह वि पुरतो पयंपिउं पवत्ता—रे वच्छा ! पिउ[3]-पियामहपमुहपुरिसावज्जियरिद्धिवित्थरुत्थंभिरहियत्तणेण किमेवं बालजणोचियमसग्गहं परिगहिऊण असमंजसं वट्टह ? जमवमन्नह गुरुवयणाइं, परिभवह मज्झत्थलोयं, अवहीरह नीइमग्गं, ता किमियाणि बहुवायावित्थरेण ? अम्ह वयणेण नियनियरहपरियत्तणेण सकज्जाइं चिंतह, अहवा एत्तो चेव बाहुसहायमेत्ता देसंतरेसु गंतूण अत्थोवज्जणं कुणह, ततो जो तुम्ह मज्झ[4]याराओ अ[5]वारियसत्तप्पयाणपुरस्सरं अत्थियसत्थं पूरियमणोरहं काही सो परं अप्पडिखलियरहो वच्चिही, इयरो पुण रहं परियत्तिऊण मग्गंतरे ट्ठाविही, परं व[6]रिसावसाणे अवस्सं पडिनियत्तियव्वं ति । अह 'तह' त्ति ते दो वि पडिवज्जिऊण तव्वयणं तत्तो च्चिय ट्ठाणातो विभिन्नविभिन्नदेसंतरं पडुच्च पट्ठिया वेगेणमेगागिणो त्ति ।

'जेसि न संपज्जइ भोयणं पि तेसिं पि जोव्वणुम्माया । मायंति न हियए किं पुणेसि आगब्भमिब्भाण ? ॥ १ ॥'

इति जंपिरो य गओ जहागयं कारणियवग्गो । 'वग्गो चेव पमाणं' ति अवलंबिय अंतो ससोगो वि गोवियबज्झवियारो

१ °भावरी° खं० प्र० । दीर्घविभावनशीलायाः ॥ २ ज्ञाततद्व्यतिकरेण ॥ ३ पितृपितामहप्रमुखपुरुषावर्जितऋद्धिविस्तरोत्तम्भितहृत्त्वेन ॥ ४ मध्यादित्यर्थः ॥ ५ अवयारिय° खं० । अवारितसत्रप्रतानपुरस्सरम् ॥ ६ 'वर्षावसाने' संवत्सरान्ते ॥

मोणमल्लीणो तज्जणगाइलोगो त्ति । [1]पवणंजतो वि तद्दारेण गिहपरिच्चायं पि 'अपुव्वदव्वोवज्जणुज्जमहेउं' ति परमपमोयपक्खे पक्खिववंतो अविलंबियगईए गंतुमारद्धो दक्खिणावहं ।

इओ य कंचीपुरवत्थव्वो अट्ठदसकणयकोडिनाहो लच्छीहरो नाम सत्थवाहो पसिद्धो अणेगलोगचक्खुभूओ तम्मि समए दूरदेसागयं बंभाभिहाणं नेमित्तियं एगन्तदेसट्ठिओ सव्वायरेण जहोचियदाणाइणा अभिनंदिऊण पुच्छइ—भो महाभाग ! सुनिच्छिऊण साहेसु, मे केत्तियमियाणिमाउयं ? इमीए य मह धूयाए मणोरमानामाए को पाणिग्गाहो भविस्सइ ? पुत्तसंतइविरहियस्स य ममावसाणे एसा घरलच्छी कं अणुसरिस्सइ ? त्ति । सम्मं परिभाविऊणं च तेण भणियं—सत्थवाह ! तुज्झ आउयं ताव छम्मासावसेसं, सीसवेयणा य सत्तहिं दिणेहिं अणागया भविस्सइ, एसा य धूया समं घरलच्छीए वइदेसियं सुकयरासिमवस्सं पुरिसं अणुसरिस्सइ त्ति । सत्थवाहेण भणियं—कहं सो वइदेसियपुरिसो जाणियव्वो ? त्ति । नेमित्तिएण भणियं—निसामेहि—अत्थि एत्तो पंचजोयणंतरियं पुंडरीयं नाम तित्थं, पुंडरीयक्खो य तत्थ देवो, तत्थ जत्ताकरणत्थमुवागयस्स तुह देवउलाओ उत्तरंतस्स चलणपक्खलणेण य निवडमाणस्स अइदक्खत्तणेण अब्भुद्धारं जो काही दीसंतसुंदरागारो पणवीसवरिसदेसीओ पवणंजयनामधे[2]यो पुरिसो सो धूयापाणिग्गाहो त्ति लक्खियव्वो । एवं च सुपरिफुडं निसामिऊण विसज्जियनेमित्तिगो सत्थाहो चिंतिउं पवत्तो—न जुत्तमेत्थावत्थाणं, थेवा[3]उयत्तणेण तणयविरहियं घरसारं रन्ना [4]हीरिही, ता एत्तो सव्वं धणवित्थरं घेत्तूण वच्चामि नेमित्तियनिद्दिट्ठम्मि तित्थे, तज्जत्तासमओ वि समीवव[5]त्ती वट्टइ, धूयावरो

१ पवनञ्जयः ॥ २ °धेओ पु° प्र० ॥ ३ स्तोकायुष्कत्वेन ॥ ४ हरिष्यते ॥ ५ °वत्थी न वट्ट° खं० । °वत्ती न वट्ट° प्र० ॥

एगया य विजयधम्मरन्नो अत्थाणीमंडवासीणस्स विन्नत्तं नाणगब्भाभिहाणनेमित्तिएण—देव ! जायाइं केच्चिराणि वि दुन्निमित्ताणि, संभाविज्जइ य तव्वसेण जर-सास-कासाइरोगेहिं लोगाण पीड त्ति । राइणा भणियं—केत्तियदिवसाणि पुण एवंविहाणिट्ठघडण ? त्ति । नेमित्तिएण भणियं—देव ! आगमिस्समयणतेरसिं जाव त्ति । 'किं पुण कायव्वमियाणिं ? विसमो देव्वपरिणामो, दूरवत्तिणी मयणतेरसी, होयव्वमणेगखयंतिएणं' ति बाढं विसन्नो भूवई । पवड्ढमाणरणं[1]रणयवियारो य विसज्जियासेसअत्थाणलोगो जणोवयारनिमित्तमुवायमवलोइउं पवत्तो । विमूढमइत्तणेण य सयमुवायमपेच्छमाणेण रन्ना वाहराविओ जयसुंदरो मंती, सिट्ठो से प[2]त्थुयत्थो । तेण वि परिणामियमइकुसलयाए निच्छिऊण जंपियं—देव ! एयपक्खस्स चेव तेरसीए 'सा एसा मयणतेरसि' त्ति उग्घोसाविऊण नयरे अकाले च्चिय ऊसवो पयट्टाविज्जउ, जेण दुन्निमित्तसीमसंपाडणेण जणाण कल्लाणं हवइ त्ति । 'जु[3]त्तिजुत्तमुत्तमेयं' ति उववूहिओ एसो राइणा ।

कहाविओ य अकाले च्चिय मयणतेरसीमहूसवो नयरलोयस्स । पारद्धा मयरद्धयमंदिरे जत्ता, पयट्टा नयरसोभा, उ[4]ब्भविया विजयद्धया, वियंभियाइं चच्चरीगणतालाउलाइं पुरविलासिणीकुलाइं, अयालंदोलयकेलीकोऊहलवड्ढिउच्छाहा उवट्ठिया पुरजुवाणा, नियनियविभवाणुरूवकरि-तुरग-जाण-जंपाणपमुहवाहणारूढा कयालंकारपरिग्गहा नीहरिया पुरपहाणपुरिसा।

एत्थंतरे सेट्ठिसुओ वि पवणंजओ अकालपयट्टियमयणमहूसवालोयणत्थमुत्तम्ममाणमणो पिउणा विसज्जितो संतो रहवरमारुहिऊण निसियकरवाल[कर]किंकरनियरपरियरिओ पट्ठिओ उज्जाणजत्ताए । जाव य नयरगोउरादूरदेसमणुपत्तो ताव

१ रणरणकः–खेदः ॥ २ प्रस्तुतार्थः ॥ ३ युक्तियुक्तम् उक्तम् एतत् ॥ ४ ऊर्ध्वीकृताः ॥

दीसंतकंतसव्वंगचंगलायन्ननयणं-मुहसोहो । संपइ मह धूयाए गेहसिरीए य होउ पई ॥ ११ ॥

एवं च निच्छिऊण वाहराविओ जोइसिओ, निरूवावियं पाणिग्गहणजोग्गं लग्गं, अकालपरिहीणं पत्तं तयं । ततो समागए समए महाविभूइसमुदएण मैहुमहेण व लच्छी परिणीया मणोरमा पवणंजएण । 'कयकिच्चो' त्ति परं परितोसमुवागतो सत्थवाहो ।

अह समइक्कंतेसु केच्चिरेसु वि दिणेसु कीणासदूओ व उवट्ठिओ सैत्थाहस्स तिव्वो सिरोवेयणावियारो । जाया सव्वंगिया अरई । ततो विणिच्छियासन्नागयमरणो सत्थाहो सव्वं धण-कणगाइपरिग्गहं समप्पिऊण पवणंजयस्स सप्पणयं पयंपिउं पवत्तो—

वच्छ ! तुह मुणियसमयाणुरूवकिच्चस्स किच्चपरिकहणं । सिसिरीकरणं पिव ससहरस्स दूरं जइ वि विहलं ॥ १ ॥

तह वि गरुयाणुराएण किं पि जंपेमि अवहिओ सुणसु । धूया लच्छी य इमा समप्पिओ परियणो य तुहं ॥ २ ॥

तह कह वि हु वट्टेज्जसु इमेसु जह संभरंति नो मज्झ । वइदेसियस्स पासे किमन्नमिइ हसइ न जणो वि ॥ ३ ॥

अम्हे वि वच्छ ! संपइ तिन्नि व चउरो व वासराइं परं । इत्थ थिरा जमदूई उवट्ठिया सीसवियणा जं ॥ ४ ॥

पवणंजएण भणियं ताय ! किमेवं तैमाउलो होसि ? । तह काँहमोसहाईहिं जह लहुं होसि नीरोगो ॥ ५ ॥

सत्थाहिवेण भणियं धम्मो च्चिय वच्छ ! ओसहमियाणिं । सक्को वि न सक्कइ दाउमाउयं तुट्टजीयस्स ॥ ६ ॥

१ °गव्वंगभंगला° खं० । °गभंगला° प्र० ॥ २ °णसुहबोहो प्र० ॥ ३ कृष्णेनेत्यर्थः ॥ ४ सत्ताह° खं० ॥ ५ एत्थ थिरा जमहूई प्र० ॥ ६ त्वम् आकुलः ॥ ७ करिष्यामि औषधादिभिः ॥ ८ त्रुटितजीवितस्य ॥

इय नियकुलक्कमागयपज्जंतविहाणमायरिय सम्मं । पुव्वनिदंसियसमए जाए सो मरणमणुपत्तो ॥ ७ ॥

अह वज्जवडणाइरेगदुक्खदूमिज्जमाणमाणसेण पवणंजएण से कयं पारलोइयकायव्वं, कह कह वि निवारिया य रुयंती पिईसोगनिब्भरा मणोरमा, नियनियकिच्चेसु निउत्तो सेवगवग्गो, विगमियाइं तत्थेव कइयवि दिवसाइं, गहियाणि य नियदेसपाउग्गाणि महरिहपणियाणि । आइक्खिऊण मणोरमाए पुरँओ पुव्ववइयरं दवावियं पयाणयं । अन्नन्ननयरेसु य विणिवट्टंतो पुव्वभंडं गिण्हंतो य अपुव्वं गओ सो नियनयरसमीवं । 'आय-व्वयविसुद्धाओ अज्जियाओ दोन्नि सुवन्नकोडीओ' त्ति संतोसमुव्वहंतो जाणावियनियागमणवुत्तंतो पविट्ठो महया रिद्धिसमुदएण नयरम्मि । परितुट्ठो सयणवग्गो । दवावियं महया पबंधेण अट्ठ दिणाइं जाव अणिवारियं दीणा-ऽणाहमहादाणं । सलहिओ रायपुरस्सरेण पुरजणेणं ।

सो वि बीओ सिंट्ठिसुओ गओ उत्तरावहं । पारद्धा दव्वज्जणोवाया ।

अत्थाभावे अत्था निउणेण वि अज्जिउं न तीरंति । कुसलो वि कुलालो किं व कुणउ मिउँपिंडविरहेण ? ॥ १ ॥

तह वि हु महाविमद्देण अज्जिया पंच दीणारसहस्सा । 'समीववत्तिणी मयणतेरसि' त्ति तद्देसवत्तिणो सहाइणो घेत्तूण पडिनियत्तो नियनयराभिमुहं । नयरसमीवागयस्स य रयणीए सुहपसुत्तस्स सव्वस्सं सव्वमादाय पलाणा सहाइणो । पच्छिमपहरविउद्धो य परमं निग्गंथरूवयमवलोइऊण 'हा ! मुट्ठो सहाइजणेणं' ति विसन्नो चित्तेणं 'पच्छोहुत्तं नियत्तामि ? सघरं

१ वज्रपतनातिरेकदुःखदूयमानमानसेन ॥ २ आख्याय ॥ ३ °रतो पु° प्र० ॥ ४ °वट्टियं पु° खं० ॥ ५ गतो सो प्र० ॥ ६ सेट्ठि° प्र० ॥ ७ मृत्पिण्डविरहेण ॥ ८ महापरिश्रमेण ॥ ९. पश्चान्मुखम् ॥

वा वच्चामि ?' त्ति संसयावन्नो वि 'जइ पुण पवणंजओ वि एवंविहवसणंग्घत्थो भविस्सइ' त्ति धरियचित्तावट्ठंभो पविट्ठो रयणीए नियघरं । दिट्ठो जणगाइजणो । पच्छन्ननिसिपवेस-मुहच्छायाइणा मुणियतम्मज्झेण वि पिउणा पुच्छिओ परिभमणवत्तं ।

खलियक्खराए पसरंतमन्नुभरनिब्भराए वाणीए । तह तेणुत्ता वत्ता जहा पिउँ सोगिओ भणइ ॥ १ ॥
वच्छ ! अविभावियाणं कज्जाणं नूण कीरमाणाणं । एस च्चिय होइ गई संतप्पेज्जासि मा एत्तो ॥ २ ॥
तेणेव बुद्धिंमंता मंतं पिव चित्तवित्तिमवि दूरं । गोविंति न बिंति न जंति विकिंयं माणमलणे वि ॥ ३ ॥
अइरहसवसारंभियविहडियकज्जस्स माणिणो गरुयं । हिययंतो सल्लं पिव न समइ दुक्खं खुडुक्कंतं ॥ ४ ॥
वच्छ ! वरं मरणं चिय पढमं च्चिय अहव जम्मणाभावो । भावे वा इत्थित्तं मा माणविहंडणा एवं ॥ ५ ॥
तेणं पयंपियं ताय ! किं पुण एत्तो वि जुज्जए काउं ? । जइ दूरमणुचियमिमं ता पुण वच्चामि अन्नत्थ ॥ ६ ॥
पिउणा वुत्तं हो ! होउ इण्हि निहुयत्तमायरसु मुंच । कुवियप्पजालमफलं बुज्झसु नियकम्मपरिणामं ॥ ७ ॥

एवं वुत्तेण य तेण दिव्वमत्थए खिविऊणावमाणपयं, महामुणिणं व सव्वंसहत्तं पडिवज्जिय, सो रहो रयणिबलेणेव गोउर-पच्चासन्नपएसपुव्वमुक्को परियत्तिऊण नीओ नियघरे । बीयदिणे वित्थरियंतक्करावहरियधणाइवत्तानिसामणेणं सो हसिओ

१ °णत्थो खं० । एवंविधव्यसनग्रस्तः ॥ २ °णवुत्तं प्र० ॥ ३ पिओ सो° खं० ॥ ४ °द्धिमन्ता मन्तं पिव प्र० ॥ ५ विक्रियां मान-मर्दनेऽपि ॥ ६ न शाम्यति दुःखं खटत्कुर्वत् ॥ ७ हा हो° खं० । भो ! भवतु इदानीं निभृतत्वमाचर ॥ ८ देव° प्र० ॥ ९ °णिणो व्व प्र० ॥ १० परावृत्त्य ॥ ११ °रिया तक्करावहरियधणाइवत्ता । तन्निसाम° प्र० ॥

वि तत्थेव संभविहि त्ति । सव्वसंवाहं काऊण तित्थजत्तावएसेण गतो सो तत्थ । पत्थावे य पयट्टा जत्ता । सो वि पवणंजओ तं कालं हेच्छमागच्छंतो—

न मुणइ मग्गामग्गं बुज्झइ य न भाविरं महालाभं । जइ वि न पच्चभिजाणइ तद्देसनिवासिलोगं च ॥ १ ॥
तह वि चिरज्जियसुहकम्मभिच्चदंसिज्जमाणमग्गो व । सुस्सउणहरिसियमणो कमेण तं तित्थमणुपत्तो ॥ २ ॥
जइ वि न चक्खुं पि हु खिवइ अन्नदेवेसु मोत्तु जिणमेक्कं । कोऊहलेण तह वि हु तब्भवणं पेहए जाव ॥ ३ ॥
ताव महप्पा बहुलोयवयणपेहणवसेण वक्खित्तो । सो सत्थाहो अविभाविऊण भुवि मुक्कमकमलो ॥ ४ ॥
पक्खुलिऊण पडंतो धरिओ पवणंजएण सकरेण । अइदक्खयाए करुणाभरनिब्भरभरियहियएण ॥ ५ ॥
हुं एसो सो त्ति विभाविरेण हरिसुल्लसंतवयणेण । सत्थाहिवेण नीतो निययावासम्मि सो तत्तो ॥ ६ ॥
गोरवसारं भुंजाविऊण पुट्ठो य वच्छ ! कत्तो तं ? । किं वा तुज्झं नामं ? आगमणं किंनिमित्तं च ? ॥ ७ ॥
तेणं पयंपियं कोउगेण देसावलोयणणिमित्तं । आओ म्हि कलिंगाओ नामं पवणंजओ य ममं ॥ ८ ॥
तो नेमित्तियनिद्दिट्ठवयणसंवाइणी गिरं सोच्चा । निरुवमरूयसिरिं पि हु पलोइउं जायपरितोसो ॥ ९ ॥
सो एस कप्पपरुक्खो स एस पउमो महानिही सक्खा । सो एस गेहचिंतागरुयभरुद्धरणधोरेओ ॥ १० ॥

१ शीघ्रम् ॥ २ भवितारम् ॥ ३ तद्भवनं प्रेक्षते ॥ ४ पक्खि° खं० प्र० । व्याक्षिप्तः ॥ ५ पृथ्व्याम् ॥ ६ प्रस्खल्य ॥ ७ स्वकरेण ॥
८ विभावयित्रा ॥ ९ गौरवसारम् ॥ १० आयातोऽस्मि ॥

तेणेव पइदिणं पि हु पच्चक्खाणं पवज्जमाणेण । भोगोवभोगपमुहं उच्चारिज्जइ गुरुसमक्खं ॥ ३ ॥
नवरं इह पडिवन्ने दुविहं तिविहेण परमसद्धाए । तव्विरइसुद्धिहेउं अइयारे वज्जई पंच ॥ ४ ॥ तहाहि—
वज्जइ इह आणयणप्पओग-पेसप्पओगयं चेव । सद्दाणुरूववायं तह बहिया पोग्गलक्खेवं ॥ ५ ॥
नियमियखेत्ताउ बहिं वत्थाईवत्थुणो हि आणवणे । तद्देसजाइणो[1] पेसपेसणेणावि अइयारो ॥ ६ ॥
अहव विवक्खिय[2]खेत्तस्स बाहि पुरिसस्स जाणवणहेउं[3] । सद्दं हि कासियाई पयडंतस्स वि य नियरूवं ॥ ७ ॥
लेट्ठुगमाईपोग्गलमहवा तस्सम्मुहं खिवंतस्स । वयसावेक्खत्तणओ अइयारो वयपवन्नस्स ॥ ८ ॥
तस्स हि अयं वियप्पो नाहं नियमियदिसाबहिं[4] जामि । न य वाहरामि एयं च कह महं संभवउ दोसो ? ॥ ९ ॥
पढमं अइयारदुगं विमूढबुद्धित्तणेण अवसेयं । सहसा-ऽणाभोगाईभावाओ वा वि विन्नेयं ॥ १० ॥
उत्तरमइयारतिगं तु नियडि[5]वाविद्धबुद्धिदोसेणं । बोधव्वमन्नहा पुण भंगो च्चिय गहियनियमस्स ॥ ११ ॥
दिसिवयसंखेवम्मि य आणयणाई उ होंति अइयारा । बंधाईया पुण[6] वहनिवित्तिपमुहाण संखेवे ॥ १२ ॥
देसावगासियम्मि इत्थं परमत्थमाहु मुणिवसभा । ता वच्छ ! घराउ बहिं परिभमणं अज्ज वज्जाहि ॥ १३ ॥
जइ वि हु मुणिणो इहइं न संति तह वि हु जिणिंदपुरओ तं । गिण्हसु पच्चक्खाणं न गिहाउ बहिं भमिस्सं[7] ति ॥ १४ ॥

१ °इणा पे° खं० । तद्देशयायिनः ॥ २ °यखित्त° प्र० ॥ ३ ज्ञापनार्थमित्यर्थः ॥ ४ °सावहं जा° खं० ॥ ५ निकृतिव्याविद्धबुद्धिदोषेण । निकृतिः—माया ॥ ६ पुण पुव्विया य संखेवकरणम्मि प्र० ॥ ७ भ्रमिष्यामि इति ॥

जोव्वणविब्भमवसओ जइ वि हु तव्वासणा न से सम्मं । तह वि हु तह त्ति विहियं तेणं पिउणोऽणुवित्तीए ॥ १५ ॥

एवं चिय पवणंजओ भवणबहियाविहारपरिहारपरायणो पिउणो चेव सज्झायं कुणंतस्स समीवट्ठिओ संलीणो जाव चिट्ठइ ताव उवागओ पुव्वपवंचियसरूवो गिहदासीसुओ, भणिउं पवत्तो य—भो पवणंजय ! अज्ज य इंदजालियविज्जावियक्खणो सहस्सक्खो नाम उवज्झाओ उवागओ, तेण य नीसेसपुरपहाणजणपत्थिएण इंदजालं दंसिउमारद्धं, तदवलोयणत्थं च तुज्झ वाहरगो पुरिसो दुवारे चिट्ठइ त्ति । अह पवणंजएण पडिवन्नदेसावगासिएण अदिन्नपच्चुत्तरो भणिओ सेट्ठिणीए—वच्छ सेहरग ! तुममेव पवणंजयनेवच्छं काऊण कइवयपुरिससहिओ वच्चसु त्ति, तुल्लसरूवत्तणेण न कोइ मम पुत्तस्स अणागमणं संकिहि त्ति । 'तह' त्ति पडिवज्जिय सविसेसमणहरसिंगारियसरीरो पुरिसपेयालपरिक्खित्तो पवणंजओ व सक्खा विरायमाणो गओ इंदयालियसमीवं, आसीणो य महायणमज्झे । संज्झासमओ य तक्कालं वट्टइ त्ति वित्थरिया रयणीरयणायरवेल व्व तिमिरावली, चडुलकल्लोलरव व्व वित्थरिया सउणीकुलकोलाहलनिनाया, परमपयरिसमणुपत्तो य पेच्छणयमहूसवो ।

एत्थंतरे पुव्वाणुसयमुव्वहंतेण य गरुय[1]कोवसंरंभनिन्नट्ठदिट्ठिविसिट्ठवावारेण 'सो एस पवणंजओ' त्ति मन्नमाणेण सागरेण निक्किवं[2]किवाणीघाएण विणिवाइओ सेहरओ गओ तव्वेलं च्चिय पंचत्तं । 'हा हा हओ पवणंजओ' त्ति कओ कोलाहलो । संखुद्धो ईयरो[3] न सक्किओ पलाइउं । एत्तो तलवरपुरिसेहिं उवणीओ राइणो । 'पभाए सुनिच्छिऊण जहोचियं कायव्वं' ति रन्नो वयणेण निरुद्धो चारगागारम्मि । धाहाविय[4]ं च एयं केणइ सेट्ठिणो धणंजयस्स आवस्सयाइधम्मकज्जट्ठियस्स ।

१ गुरुककोपसंरम्भनिर्नष्टदृष्टिविशिष्टव्यापारेण ॥ २ निष्कृपकृपाणीघातेन ॥ ३ 'इतरः' सागर इत्यर्थः ॥ ४ पूत्कृतम् ।

'मह समीवट्ठिओ वि कहं [कय]भवणबाहिरविहारपरिहारो सुओ हओ ?' त्ति विम्हिओ सेट्ठी । 'हुं नायं, सो वरागो सेहरओ संभाविज्जइ, सारिस्सविप्पलद्धो य मुद्धो एसो एवमुल्लवइ' त्ति । एवं च जाव सो परिभावेइ ताव आगओ एगो पुरिसो । सिट्ठं च तेण जहट्ठियं सव्वमवि जहावित्तं । मुणियवइरकारणो विसन्नो सेट्ठी—ही ! कहं कसायपिसायपारद्धा अकज्जमज्झवसंति जंतुणो ? होउ किं पि, जो मओ सो मओ चेव, संपइ कहमेसो दिन्नसिंट्ठिसुओ अवस्समुवट्ठियमच्चू मोइयव्वो ? त्ति । पवणंजएण भणियं—ताय ! सव्वस्सदाणेण वि मोयावइस्सामि[2], उज्झसु संतावं ति ।

अह जायम्मि पभाए, कयम्मि सेहरयपारलोइयकायव्वम्मि, तरुल्लंबणत्थं चालिए सागरे, [3]महरिहपाहुडहत्थो पवणंजओ गओ रन्नो समीवं । दावियपाहुडो य पायवडिओ विन्नविउं [4]पवत्तो—देव ! मह जीवियसव्वस्सगहणेण वि एसो मोत्तव्वो, भाइतुल्लो खु एस, किन्न पभवइ [5]एयतिमित्तस्स । तग्गाढोवरोहेण मुक्को रन्ना, तरुल्लंबणभूमीओ नियत्ताविऊण पेसिओ नियघरं सागरो । तओ सलहिज्जंतो पुरजणेण, अग्घविज्जंतो तम्माइ-पिइपमुहलोगेण गओ पवणंजओ नियघरं । 'किं रे ! विहियं ?' ति संभासिओ पिउणा । तेण साहिओ वुत्तंतो । तुट्ठो पिया, भणिउं पवत्तो य—

निहए [6]अवयारिम्मि सव्वा वि हु सकहा गया निहणं । उवयारमारिए पुण सुचिरं साऽवट्ठिया चेव ।। १ ।।
ता वच्छ ! सुंदरमिमं तुमए कयमप्पणो कुलस्सुचियं । एवं चिय धम्मस्स वि परमं लिंगं वयंति विऊ ।। २ ।।
पवणंजएण भणियं तुह पायपसायविलसियं एयं । इहरा सेहरओ विव अज्जेवाहं निहणमिन्तो ।। ३ ।।

१ °सेट्ठि° प्र० ।। २ मोचयिष्यामि ।। ३ महारि° प्र० ।। ४ पयत्तो प्र० ।। ५ एतावन्मात्रस्य ।। ६ °यारम्मि खं० प्र० ।।

दुज्जणेहिं, 'ही ! अजुत्तं जायं जमेवंविहकिलेसभायणं भूओ इमो' त्ति सोइओ साहूहिं, 'वच्छ ! मा भुज्जो एवं काहिसि' त्ति सिक्खविओ कुलवुड्ढेहिं, 'गरुयाण चडण-पडणं' ति थिरीकओ गुरूहिं । इयरो वि सव्वत्थ वित्थरियकित्तिपब्भारो पत्ते मयणतेरसीमहूसवे अखलियपसरं रहमारुहिऊणं भमिओ जहिच्छाए । [एवं] वच्चंति वासरा ।

नवरं जह जह पवणंजयस्स चाग-भोगाइगुणगणं सागरो गिज्जमाणं निसामेइ तह तह चित्तब्भंतरुब्भवंततिव्वामरिसो चिंतेइ—किं तं दिणं होही जत्थ सहत्थेण मए एस हंतव्वो ? । इमिण च्चिय अज्झवसाणेण परिचत्ता अणेण वत्था-ऽलंकार-परिग्गह-नेवच्छवंछा, उज्झिओ वयस्सेहिं समं पणयालावो । अणवरयं 'कहिं गओ कहिं ठिओ कहिं आसीणो पवणंजउ ?' त्ति परिभाविंतो अच्छइ त्ति ।

अन्नम्मि य समए जायं चाउम्मासियदिणं । तहिं च धणंजयसेट्ठिणा कया विसेसओ देवपूया, पडिवन्नो तवोविसेसो, पच्चक्खाओ सावज्जगेहवावारो । पवणंजओ वि भणिओ—वच्छ ! विसेसधम्मकिच्चदिवसं अज्ज, ता देववंदणाइणा सविसेसदेसावगासियपहाणपच्चक्खाणकरणेण य उज्जमिउं जुज्जइ । पवणंजएण भणियं—ताय ! किंसरूवमिमं देसावगासियं भन्नइ ? । सेट्ठिणा भणियं—निसामेहि—

देसावगासियवयं चिर-दीहदिसापमाणसंखेवो । उवलक्खणं च एयं [1]पाणवहाईवयाणं पि ।। १ ।।
पुव्वं एगविहाईभंगेहिं वयाइं जाइं गहियाइं । संखिवइ दुविहतिविहाइभेयओ [2]ताइं पुण एत्थं ।। २ ।।

१ पाणिव° प्र० ।। २ ताणि प्र० ।।

पौषधस्य स्वरूपम्

कम्ममहावाहिविणासणोसहं पोसहं विणा विरई। हवइ न संपुन्ना तेण तव्वयं[1] इण्हि कित्तेमि ॥ १ ॥
आहाराईचोगा[2] पोसेइ समग्गकुसलजोगं जं। तं पोसहं जहत्थं जंपंति परं गुणट्ठाणं ॥ २ ॥
समणत्तणभवणारोहणम्मि[3] पढमं इमं च सोवाणं। अइचंडमणहुयासणपसमणघणपाउसारंभो ॥ ३ ॥
आलाणत्थंभो[4] तह जहिच्छसंचरणकायवणकरिणो। दुद्दन्तिंदियकेसरिसरहससरमाणगुरुसरहो ॥ ४ ॥
वरडो[5] य कुगई[6]कूवयनिवडियसत्ताण नूणमुद्धरणे। वरणे य सिववहूए नवगहबलमणहरं लग्गं ॥ ५ ॥
दुवाराविरइमहाभुयंगमुप्पीलगिलणगरुडोऽयं[7]। पोसहवयव्विसेसो सेसो इव गुणधराधरणे ॥ ६ ॥
पंचाणुव्वइयं को वि कह वि गिण्हइ वयं न उण एयं। पडिपुन्नं काउमलं मलक्खयस्संतरेण[8] दढं ॥ ७ ॥
एयम्मि निच्चलमणो जीवो दुहनिवहभायणं न भवे। इह-परभवे य इत्थं दिट्ठंतो बंभदेवो त्ति ॥ ८ ॥[9]

तथाहि—अत्थि समत्थकासीविसयविसेसयभूया, तिहुयणसुप्पयासपासजम्ममहूसवपावियमाहप्पाइसया, सयाए[10] परमसहीए व समद्धासिया सिद्धसरियाए[11], कणयरहमहारायभुयपरिहरक्खिया वाणारसी नामं नयरी।

१ तद्व्रतम् ॥ २ °चागो पो°: खं० प्र०। आहारादित्यागात् ॥ ३ श्रमणत्वभवनारोहणे प्रथममिदं च सोपानम्। अतिचण्डमनोहुताशनप्रशमनघनप्रावृडारम्भः ॥ ४ आलानस्तम्भस्तथा यथेच्छसञ्चरणकायवनकरिणः। दुर्दान्तेन्द्रियकेशरिसरभससरद्गुरुशरभः ॥ ५ वरहो य खं० प्र०। वरत्रा च, वरेडुं दोरडुं इति भाषायाम् ॥ ६ °गयकू° खं० ॥ ७ दुर्वाराविरतिमहाभुजङ्गमसमूहगिलनगरुडोऽयम् ॥ ८ 'मलक्षयस्य अन्तरेण' पौषधव्रतावारकस्य कर्मणः क्षयं विनेत्यर्थः ॥ ९ विशेषकं–तिलकम् ॥ १० °याइ प° प्र० ॥ ११ 'सिद्धसरिता' गङ्गानद्या 'समध्यासिता' शोभिता ॥

जिणपायपवित्ताए जीए गो-विप्पघायपावस्स। मन्ने सुद्धिनिमित्तं दूराओ वि हु जणो एइ ॥ १ ॥

तीए नयरीए वत्थव्वो लोगट्ठिईकुसलो दया-दक्खिन्नाइगुणाणुगओ बंभदेवो नामं वणिओ, सुजसा से भज्जा। तिवग्गाणुकूलवित्तीए वट्टंतो य सो एगया नयरीए परिसरं गओ पेच्छइ एगं कमलदलच्छं सुतवस्सिं समीवोवगयकइवयनराण धम्ममाइक्खमाणं। जहा—

जावऽज्ज वि न पवज्जइ सेलेसिं एस निच्छियं जीवो। ता उज्झइ नाऽऽहारं परिहरइ न ताव किरियं पि ॥ १ ॥
तम्मूलमणेगाइं कम्माइमणेगहा समारभइ[1]। तप्पच्चयं[2] च बंधइ अट्ठ वि कम्माण पयडीओ ॥ २ ॥
हस्सट्ठिईउ दीहट्ठिईउ मंदाणुभावजुत्ताओ[3]। तिव्वणुभावाउ करेइ[4] जणइ परमं पएसग्गं ॥ ३ ॥
इय निबिडकम्मपयडीपेडयपडुघडियकम्मगसरीरो। ओदारियाइदेहंतराइं अणुसरइ अविरामं ॥ ४ ॥
ताण पुण पीणणत्थं जीववहाईणि पावठाणाणि। अविगणिय[5]भाविरभओ पइक्खणं चिय समारभइ ॥ ५ ॥
पइदियहण्हाण-मण्डण-विलेवणा-ऽऽहरणबद्धपडिबंधो। मत्तो वि जए नऽन्नो धन्नो रूवि त्ति चिंतेइ ॥ ६ ॥
अभिलसइ य अणवरयं मयंकबिंबाणणाउ तरुणीओ। अइदुकरेसु वि दढं वावारेसुं पयट्टइ य ॥ ७ ॥
आहारमूलमेवं सरीरसक्कारपमुहकायव्वं। सव्वं विभाविऊणं धन्ना एत्तो विरज्जंति ॥ ८ ॥
अइपवरपाण-भोयणसंपत्तीए वि पुन्नकम्माणो। धिइ[6]धणियबद्धकच्छा आहारं नाभिनंदंति ॥ ९ ॥

१ °मायरइ प्र० ॥ २ 'तत्प्रत्ययं' तद्धेतुकम् ॥ ३ °त्तातो प्र० ॥ ४ करे जणेइ प्र० ॥ ५ अविगणितभवितृभयः ॥ ६ धृतिदृढबद्धकच्छाः ॥

पौषधव्रते ब्रह्मदेव-कथानकम् ४४।

तव्विरया देहं पि हु कम्मयरं पिव सहाइकज्जेण । पालिंति धम्मकम्मं न विणा एयं ति मन्नंता ॥ १० ॥
विसयव्वासंगभवाभिणंदिगिहकज्जचिंतणं दूरे । लोगपहाइक्कंतो अहो ! सिवत्थीण वावारो ॥ ११ ॥
एवं गंभीरपयत्थगोयराए गिराए सासिंतं । साहुं विम्हियहियओ स बंभदेवो इमं भणइ ॥ १२ ॥
भयवं ! असक्कणुट्ठाणमेयमाइट्ठमिह गिहत्थाणं । आहाराईपभवा जेसिं सव्व च्चिय पवित्ती ॥ १३ ॥

साहुणा भणियं—महायस ! कीस एवमुल्लवसि ? संति ते के वि गुणुत्तरा गिहिणो जेसिं संभवइ धम्मदिणेसु एवंविहा विणिवित्ती । बंभदेवेण भणियं—कहमेवं ? । साहुणा वुत्तं—निसामेसु, अत्थि गिहत्थधम्मं पडुच्च तइयं पोसहं ति सिक्खावयं, तं च चउहा—

पौषधव्रतस्य स्वरूपं तदतिचाराश्च

आहारचागविसयं १ सरीरसक्कारचागरूवं च २ । तह बंभचेरगोयर ३ मवरं वावारविरइगयं ४ ॥ १ ॥
देसे सव्वे य दुहा एक्केक्कमिमं गुरू परूवेंति । नवरं चरमेऽवस्सं सामइयं किच्चमाहंसु ॥ २ ॥
पढमम्मि पोसहे देसओ उ परिहरइ किं पि आहारं । एगयरं सव्वे पुण सव्वं पि हु उज्झइ तयं तु ॥ ३ ॥
ण्हाणुव्वट्टणमाईणमेगमुज्झइ य देसओ बीए । सव्वे पुण सव्वं पि हु परिहरइ सरीरसक्कारं ॥ ४ ॥
तइए वि देसओ निसि दिवा व परिहरइ मेहुणपवित्तिं । सव्वम्मि सव्वओ पुण तं वज्जइ जा अहोरत्तं ॥ ५ ॥
तुरिए वि देसओ एगमेव वज्जेइ किं पि वावारं । किसिकम्माईणं सव्वओ वि सव्वं परिच्चयइ ॥ ६ ॥

---

१ °रहा दे खं० ॥ २ °व्वतो वि प्र० ॥

देशावकाशिकस्य माहात्म्यम्

पिउणा वुत्तं पुत्तय ! एस पसाओ जिणिंदधम्मस्स । उवरोहकओ वि इमो जमेरिसिं सुहसिरिं जणइ ॥ ४ ॥
न य वच्छ ! एस अप्पा अणप्पकुवियप्पपवणखिप्पंतो । तीरइ पडिखलिउमलं अजंतिओ वयवरत्ताए ॥ ५ ॥ अपि च—

आलानबन्धविकलश्चटुलः करीव, दुष्टश्च मर्कट इव च्युतकण्ठरज्जुः ।
उच्छृङ्खलः खल इवाऽऽप्तवचोऽवकाशो, वाजीव वा विगलितोभयपादबन्धः ॥ १ ॥
किं नो निरस्यति ? न हन्ति ? न वा दुनोति ?, भुङ्क्ते ? भनक्ति न च किं ? न च कुत्र याति ? ।
देशावकाशविषयव्रतवन्ध्यचित्तो, दुष्कर्म किं न यदि वा विदधाति सत्त्वः ? ॥ २ ॥ युग्मम्
कुर्युः करिप्रभृतयः प्रचुरप्रचाराः, सन्तोऽप्यमुत्र भव एव कमप्यनर्थम् ।
निर्यन्त्रणः पुनरनन्तभवप्रबन्धसंवर्द्धिकामशुभपद्धतिमाचिनोति ॥ ३ ॥
इति दृष्टगुणेऽप्यस्मिन् प्रमादबुद्धिर्न युज्यते सुधियः । न हि दृष्टवीर्यमौषधमुज्झन् रोगी भवत्यरुजः ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे शिक्षाव्रतविचारणायां देशावकाशिकविषये पवनञ्जयकथानकं समाप्तम् ॥ ४३ ॥

---

१ अयन्त्रितः व्रतवरत्रया ॥ २ च किञ्च ? न कु° खं० ॥ ३ °चुराः प्र° प्र० ॥ ४ °प्रपञ्चसं° प्र० ॥ ५ °ष्टधैर्य° खं० ॥

पोसहेण'—न्ति जंपंतो तुरियपयपक्खेवं सगिहं पडुच्च वच्चंतो धरिओ बंभदेवेण, भणिओ य—भो महायस ! को एस धम्मत्थिणो वि तुज्झ वयणविन्नासो ? किं वा अजुत्तत्तणं पोसहविहाणस्स ? त्ति। 'किं तुह भूरिवियारेणं ?' ति पच्चुत्तरं दिंतो बला चेव गओ सो सगिहं। 'अहो किमेयं पेऊसवरिससारं पि धम्मकम्मोवएसं अवगन्निऊण पलाणो एसो ?' त्ति बंभदेवेण पुच्छिओ मुणी। तेणावि सुयनाणोवओगबलवियाणियकज्जमज्झेण भणियं—निसामेसु कारणं—

अयं खेमंकरो एत्तो तइयभवे कोसंबीए पुरीए वत्थव्वो आसि। एगया य तन्नयरनिवासिणो जिणदेवसावयस्स कणिट्ठभाउसंकामियकुडुंबचिन्तस्स परिहरियसव्वसावज्जजोगस्स गिहसमीवनिवेसियपोसहसालासमारद्धविसुद्धतवस्स अणिच्चाइभावणाचिंतणसविसेसविसुज्झमाणस्स तक्कालकयपोसहस्स कहं पि कम्मलाघवयाए आणंदसावयस्सेव समुप्पन्नं ओहिनाणं। तम्माहप्पेण करयलकलियं मोत्ताहलं व रयणप्पहपुढवीपज्जवसाणं लोगखंडमवलोयंतस्स पच्चूसे च्चिय पायवडणं काउमुवागओ कणिट्ठभाया। कयपायवडणो य करुणाए भणिओ अणेणं—वच्छ ! एत्तो दिणाओ दसमदिवसे समुग्गमंते दिवसयरबिम्बे तुमं पाणच्चायं करिस्ससि, ता भद्द ! तह कह वि उज्जओ हवेज्जासि जह न विप्फलत्तणमुवेइ मणुयजम्मो, न निस्सारत्तणमुवगच्छइ चिरकालपालिओ जीवदयाइधम्मो, न दूरमोसरइ भुज्जो बोहिलाभो त्ति। 'अहो ! महाइसयनाणि' त्ति निव्वियप्पो 'तह' त्ति पडिवज्जिऊण स महप्पा तव्वयणं पुत्तं गिहकुडुंबचिन्ताए ठवेइ, चेइयपूयाइधम्मकिच्चं च निव्वत्तेइ। अह आलोयणखामणाइपज्जंताराहणविहिपवन्नो दावियासेसनयरनिवासिजणच्छरिओ चउव्विहाहारपरिहारं काऊण दुरूढो तणसंथारए।

१ 'त्वरितपदप्रक्षेपं' शीघ्रगत्या ॥ २ °रितो बं° प्र० ॥ ३ °च्छितो मु° प्र० ॥ ४ °गतो क° प्र० ॥ ५ °णातो द° प्र० ॥

तहाविहं तव्वइयरं च दट्ठूण लोगो को वि किं पि जंपिउं पवत्तो। जणमज्झगएण इमिणा खेमदेवेण तमऽसद्दहंतेण भणियं—

जइ वि हु सुट्ठु विगिट्ठं सुदुक्करं तवविसेसमायरइ। तह वि गिही न परेसिं जीविय-मरणे मुणिउमीसो ॥ १ ॥
मुणिणो च्चिय एवंविहविसुद्धनाणोवलम्भसामत्थं। दीसइ सुव्वइ य अओ कीस इमो ववसिओ एयं ? ॥ २ ॥
जइ से पोसहियगिहिस्स वयणमेयं हि अवितहं होही। ता पोसहपडिबद्धं अहं पि अब्भुज्जमं काहं ॥ ३ ॥

एवं कयसंकप्पम्मि तम्मि सहसा समुच्छलिओ गयणयले कंसाल-ताल-तिलिम-दुंदुही-भेरीभंकारभासुरो सुरतूरनिनाओ। 'किमेयं ?' ति सभय-चमक्कारं उट्ठिओ लोगो 'किं किमेयं ?' ति परोप्परं जंपिउं पवत्तो य। एत्थंतरे तद्देसागएण साहियमेगेण पुरिसेण, जहा—एसो सो महप्पा जिणदेवनिवेइयमरणसमओ कणिट्ठभाया कयाणसणो सयमेव पंचनमोक्कारमुच्चरंतो समीवोवगयसुतवस्सिजणजणिज्जमाणभावपयरिसो कालगओ, तम्मरणविहाणाणंदिओ य सुरसंघाओ एत्थं महिमं कुणइ त्ति। 'अहो ! दिव्वनाणाभोगहेउभूयं पोसहं' ति जायनिच्छओ खेमदेवो सुगुरुसमीवे सम्ममवधारिऊण तव्विहाणं आसाढचउम्मासए पडिवन्नपडिपुन्नपोसहो पोसहसालाए सुहभावणापरायणो ठाउं पवत्तो। नवरं परिणममाणम्मि वासरम्मि सुकुमारयाए सरीरस्स, दुस्सहत्तणेण छुहाइपरीसहाणं, उदयओ य विरइआवारगकम्माणं समुप्पन्ना से छुहा, घम्माइरेगओ य पयट्टा पस्सेयजलाविलसरीरत्तणेण विचिंगिच्छा, तक्कालोवगयगेहिणीसवियारवयणायन्नणवसेण य पाउब्भूया मयणवासणा, 'कीस गेहं नावेक्खसि ?' त्ति गेहिणीवावारणेण य जाया गिहचिंता।

१ °दितो य प्र० ॥ २ °घातो प° प्र० ॥ ३ घर्मातिरेकतः ॥ ४ °चिकित्सा त° खं० ॥ ५ °नावेक्ख° प्र० ॥

एवं च पारद्धधम्मविरुद्धकिरियाविखुद्धचित्तेण तेण न सरियं थंडिलाईण पडिलेहणाइ किच्चं । केवलं 'कइया उग्गमिही मिहिरो ? कया य इत्थमित्थं च भोयणाइ काहं ?' ति चिंततो, लोयलज्जाए य बज्झवित्तीए पच्चक्खाणमखंडितो, निसावसाणसमए समुप्पन्नातुच्छच्छुहावियणोवक्कामियजीविओ मरिऊण वंतरेसु उववन्नो । तत्तो चुओ य एस खेमदेवो त्ति वणियपुत्तो संवुत्तो । पुव्वभवपोसहपच्चइयमच्चुभावाओ य तन्नामुक्कित्तणुप्पन्नजाईसरणो भो बंभदेव ! तुमए सायरं धरिज्जमाणो वि पलाणो त्ति ।

नियपावकम्मदुव्विलसियाणमविभाविऊणमवराहं । रूसंति धम्मकिच्चाण ही ! महामोहविप्फुरियं ॥ १ ॥
जं जम्मि देस-काले सुहं व असुहं व पाणिणा बद्धं । तं तम्मि चेव उदयं उदेइ को कस्स इह दोसो ? ॥ २ ॥
विग्घसयसंभवे वि हु मूढा पावेसु उज्जया बाढं । थेवे वि विग्घलेसे परम्मुहा धम्मकिच्चेसु ॥ ३ ॥
धम्मत्थपयट्टाणं विग्घो विग्घायमेइ निब्भंतं । किंतु निकाइयकम्मुब्भवोऽयमेयं न बुज्झंति ॥ ४ ॥छ॥

बंभदेवेण भणियं—भयवं ! को एयस्स दोसो ? अकल्लाणभायणत्तणमेवावरज्झइ, ता काऊण पसायं देह मे पव्वदिणे पडुच्च पडिपुन्नपोसहवयं ति । तओ मुणिणा विभाविय जोग्गयं आरोवियं से पोसहवयं । निच्छिन्नभवन्नवं व अप्पाणं मन्नंतो परमपरिओसपरिगओ गुरुणो अणुसासणं सिरसा पडिच्छिऊण गओ नियगेहं । पइदिणपवड्ढंतविसुज्झमाणसुहज्झवसाओ कालं वोलेइ ।

१ भानुः ॥ २ चुतो य प्र० ॥ ॥ ३ °ण अव° प्र० ॥ ४ °ग्घाइमे° खं० ॥ ५ निकाचितकर्मोद्भवः ॥ ६ °यगिहं प्र० ॥

जो देसओ य वावारचागमायरइ सो न नियमेणं । सामाइयं पवज्जइ इयरे य करेइ तं नियमा ॥ ७ ॥
पडिपुन्नपोसहं साहुवसहि-चेइयघरेसु गिण्हेइ । पोसहसालाए वा वि मुक्कमणि-कंचणाभरणो ॥ ८ ॥
वाएइ पोत्थयं सो पढेइ वा झायई सुहज्झाणं । जह साहुगुणासत्तो करेमि किं मंदभग्गो हं ? ॥ ९ ॥
एवं पवन्नपडिपुन्नपोसहो पव्ववासरेसु गिही । तन्निम्मलत्तहेउं अइयारे वज्जई पंच ॥ १० ॥ तहाहि—
अप्पडि-दुप्पडिलेहिय-अपमज्जिय-दुप्पमज्जियं च पिहो । सेज्जा संथारं वा पासवणुच्चारभूमिं वा ॥ ११ ॥
सेवंतस्सऽइयारा एए चउरो वि पोसहे चरिमे । एगो आहाराइसु सम्मं अणुपालणाविरहे ॥ १२ ॥
सेज्जा वसही भन्नइ संथारो पीढ-फलगमाईओ । पयडत्थाओ जाणसु पासवणुच्चारभूमीओ ॥ १३ ॥
तेसु न चक्खुक्खेवो जो तमऽपडिलेहियं बुहा बिन्ति । सम्मं न चक्खुखेवो जो दुप्पडिलेहियं तं तु ॥ १४ ॥
वत्थंचलाइणा पुण सेज्जाईणं पमज्जणाविरहो । सम्ममपमज्जियं पुण तं चिय दुपमज्जियं जाण ॥ १५ ॥
सम्मं जहागमं अणणुपालणं एवमाहु समयविऊ । किर पढमपोसहम्मिं अत्थिरचित्तत्तणेण गिही ॥ १६ ॥
अभिलसइ किं पि आहारजाइयं अहव पारणादिवसे । तं सविसेसं कारेइ ही ! छुहाए किलन्तो त्ति ॥ १७ ॥
बीए य पोसहम्मी सिंचइ उवट्टई अहव देहं । तइयम्मि पोसहे पुण पत्थइ कामे व भोगे वा ॥ १८ ॥
तुरियम्मि पोसहम्मिं वावारइ किं पि गेहवावारे । एवमणाभोगाईभावाओ हुंति अइयारा ॥ १९ ॥
एवं मुणिणा सप्पवंचे पणीए पोसहविहाणे खेमंकरो नाम सावओ ईहा-ऽपोहाइवससमासाइयजाईसरणो 'होउ, पज्जत्तं

ता मा इहाणुरागं मणागमवि नूणमुवहेज्जासि । इंते जंते य बुहाण होज्ज को एत्थ वामोहो ? ॥ २ ॥
एयविवरीयरूवेसु चेव नाणाइएसु जत्तेण । कुण पडिबंधं जइ मोक्खसोक्खयं सम्ममभिलससि ॥ ३ ॥
किं वा लाहिंति इमे मज्झ वरागा धणम्मि कयरागा । देहत्थे तदवत्थे परमत्थियधम्मरित्थम्मि ? ॥ ४ ॥

एवं च से विसुज्झमाणभावस्स अविचलसरूवयमवलोइऊण चिंतियं चोरेहिं—अहो ! पेच्छह एयस्स महाणुभावस्स धम्मनिच्चलत्तणं जमेवंविहसवस्सावहारे वि कीरंते अपुव्व च्चिय धम्मचिंता, अनन्नसरिस च्चिय सुहभावणा, अप्पडिमो विवेगो, अनन्नसरिसो लोभविजओ, अप्पडितुल्लो कुसलकम्माणुबंधो; अवरे अम्हारिसा महापावकारिणो वीसत्थघाइणो परधणाईसु चेव अवहरणत्थमणवरयबद्धबुद्धिणो इत्थं वट्टंति अणत्थेसु, न गणेंति परलोयं, न विभाविंति इहलोए च्चिय अवायं, न पेहंति कुलकमं ति । एवं परिभाविंताण य ताण जायं जाईसरणं । सरियचिरभवचरियचरण-सुयनाणा य पंचमुट्ठियं लोयं काऊण देवयासमप्पियपत्तेयबुद्धाणुरूवोवगरणा संजमुज्जोगमल्लीणा ।

एत्थंतरे य समुग्गयं तरणिमंडलं, पच्चक्खीभूयं दिसावलयं । अह अतक्कियमुणिवेसधारिणो ते पलोइऊण झत्ति उज्झियासणो विम्हयमपुव्वमुवहंतो बंभदेवो ताण पाएसु पडिऊण जोडियपाणिसंपुडो सायरं भणिउं पवत्तो—भयवं ! विसरिसमिमं, कहं पढमं परधणगहणपवित्तिपारंभो ? कहमियाणिं सुमुणिजणाणुरूवपडिवत्ति ? त्ति । तओ सिट्ठो तेहिं जहट्ठिओ जाई-

१ °इ सोक्खमक्खयं प्र० ॥ २ 'लास्यन्ति' ग्रहीष्यन्ति ॥ ३ पारमार्थिकधर्मधने इत्यर्थः ॥ ४ देवतासमर्पितप्रत्येकबुद्धानुरूपोपकरणाः संयमोद्योगम् आलीनाः ॥ ५ °क्खीहूयं प्र० ॥

सरणवुत्तंतो । विम्हइयमाणसेण पुच्छिया ते बंभदेवेण—भयवं ! किं पुण कारणं हीणकुलेसु तुम्ह उप्पत्ती ? धम्मसामग्गीविरहो य ? । तेहिं भणियं—सावय ! निसामेसु—

वयं हि चउरो वि तुरुमिणीए नयरीए केसवनामधेयस्स बंभणस्स सुया पुव्वकाले समुप्पन्ना । परोप्परगरुयसिणेहाणुबंधबंधुरबुद्धिणो खणं पि विओगमसहमाणा गिहे निवसामो त्ति । वच्चंते य काले परोक्खीभूएसु अम्मा-पिऊसु विओगसोगदुक्खदूमियदेहा कहं पि रइमलभन्ता पट्ठिया तित्थजत्ताए । मग्गे य वच्चंतेहिं छुहा-तण्हाइरेगकिलामियसरीरो दिट्ठो कंठगयजीवो निच्चिट्ठो भूवट्ठे पडिओ सुभद्दो नाम साहू । जायकरुणेहिं संवाहिओ जहोचियं असणाइणा उवयरिओ य सो अम्हेहिं । पगुणीहूयसरीरेण तेण निवेदिओ असेसदुक्खरुक्खनिम्मूलणखमो अम्हाणं सव्वन्नुधम्मो । तदायन्नणे य पडिबुद्धा वयं, पडिवन्नं तयंतिए सामन्नं, निक्कलंकं च तं पालिउं पवत्ता । चिरकालं पज्जुवासियं गुरुकुलं, अहिगया केच्चिरा वि दुवालसंगी, अणुट्ठिया दुरणुचरा तवोविसेसा । नवरं जाईमयवसओ उवज्जियं नीयगोयकम्मं । अकयतप्पडियारा य कालं काऊण चउरो वि अम्हे उववन्ना सोहम्मे । तत्तो चुया य पुव्वदुकम्मवसेण जिणधम्मविहीणा हीणकुलेसु एत्थमुववन्ना । तुह असरिसगुणगणावलोयणुप्पन्नवेरग्गा [अ]णुसरियपुव्वजम्मा भुज्जो संजमरज्जमुवगया । 'ता भद्द ! धन्नो तुमं, कइवयभवभमणावसेसीकओ तुमए एत्तो संसारो' त्ति सुचिरमभिनंदिऊण बंभदेवं विहरिया जहाभिमयं साहुणो त्ति ॥ छ ॥

इय पडिपुन्नं पोसहविहाणमाराहिउं दढं धीरा । कल्लाणकारिणो हुंति अप्पणो सइ परेसिं च ॥ १ ॥

१ निच्चेट्ठो प्र० ॥ २ °च्चियमसणा° खं० प्र० ॥ ३ °रितो य प्र० ॥ ४ पउणी° प्र० ॥ ५ °वेइओ प्र० ॥ ६ सदा ॥

पौषधव्रतस्य
माहात्म्यम्

सुतवस्सिणो च्चिय परं चरंति बाढं निरुंभिउं चित्तं । गिहिणो वि एवमुवओगसालिणो गरुयमच्छरियं ॥ २ ॥ अपि च—

एकैकपौषधविधानमपि प्रधानं, सद्धर्मसाधनविधौ किमु तत्समूहः ? ।
यश्चेह निश्चलनिबद्धमतिर्न सत्त्वो, निष्ठामुपेष्यति कथं स भवाम्बुराशेः ? ॥ १ ॥
गुप्तित्रयं त्रिजगदेकगुरुर्जगाद, यत् कर्मदारुदहने ज्वलनोपमानम् ।
तच्चेह सम्भवति निर्मलबोधयोधसाचिव्यतो व्यपगतान्तरवैरिदौस्थ्ये ॥ २ ॥
एकोऽपि पौषधविधिर्विरजीकरोति, सामायिकव्रतविवृद्धबलो विशेषात् ।
सिंहो विजेतुमुपयाति न केवलोऽपि ?, सम्यक् पुनः किमु तनुत्रसुगुप्तगात्रः ? ॥ ३ ॥
इति नियतमशेषाहारवाञ्छाविरामव्यपगततनुभूषाकामकेलिप्रपञ्चः ।
परिहृतगृहकार्यारम्भदोषो विधत्ते, परमिह भुवि कश्चित् पौषधं पुण्यसत्त्वः ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे तृतीयशिक्षाव्रतविचारणायां ब्रह्मदेवकथानकं समाप्तम् ॥ ४४ ॥

अन्नया य तन्नयरराइणो रयणीए सुहपसुत्तस्स अवसाणोवगयत्तणेण आउयकम्मणो मणागमेत्ते वि उवक्कमे जायं मरणं । तहाविहरज्जभरसमुद्धरणधीरपुरिसविरहेण य जहिच्छाचारो विचरिओ चरडपक्खो, निरवेक्खा य लुंटिउं पवत्ता तक्कराइणो, जो जत्तो सो तत्तो पलाणो पहाणपुरलोगो संकंतो य रज्जंतरेसु । 'अहो ! कहं महाविग्घो धम्मविहिस्स समुट्ठिओ ?' त्ति ससोगो बंभदेवो वि नियकुडुंबमादाय सावसेसधणो गओ मगहाविसए, ठिओ गोब्बरग्गामे । 'न साहम्मिय-जिणभवण-साहुसामग्गि' त्ति विसन्नो चित्तेणं । नायरनेवच्छाइपलोयणाणुमिणियभूरिधणसंभारेहि य हेरिउमारद्धो अणवरयं तक्करेहिं । बाढमुवउत्तत्तणेण य ओगासमलभमाणेहिं य तेहिं छेय-भेयाइजाणणत्थं पारद्धा बंभदेवेण सद्धिं मेत्ती । पइदिणागमणाइणा य मुणिओ पव्वदिणपोसहविहाणवइयरो ।

एगम्मि य पत्थावे पडिपुन्नपोसहं पवन्नस्स बंभदेवस्स एगंतसो वि धम्मज्झाणोवगयस्स रयणीए जहुत्तविहिणा संथारयनिवन्नस्स समागया निद्दा । परियणो[3] वि पसुत्तो जहाठाणेसु । एत्थंतरे 'अवसरो' त्ति कलिऊण पविट्ठा ते तक्करा, पयट्टा जहिच्छाचारेण घरमोसमाहरिउं । तक्खणं च भवियव्वयावसेण पबुद्धो बंभदेवो इरियावहियं पडिक्कमिऊण मुहणंतयपडिलेहणपुरस्सरं संदिसावियसामाइओ मुणमाणो वि तक्करनियरहीरमाणदविणं भवणं मणागं पि अखुभियचित्तो सुप्पडिलेहिय-सुपमज्जियविसिट्ठकट्ठासणयनिविट्ठो अप्पाणमणुसासिउं पवत्तो—

रे जीव ! गेह-धण-सयणसंगमो अत्थिरो य बज्झो य । सुलहो य दुग्गईहेउगो य बहुहाऽणुपत्तो य ॥ १ ॥

१ °णितो प° प्र० ॥ २ संस्तारकसुप्तस्येत्यर्थः ॥ ३ °णो पि प° प्र० ॥ ४ प्रवृत्ताः ॥ ५ जानानोऽपि तस्करनिकरह्रियमाणद्रविणम् ॥

तथाहि—अत्थि वियडवइराडविस[1]ओवलद्धविसुद्धपसिद्धी, सिद्धभूमि व वेवगयडिंब-डमरा, धण-धन्नसमिद्धजणवया खेमपुरी नाम नयरी । तीए य समुस्सियसत्तंगसंगतो गयवरो व ताराचंदो नाम अहिवई ।

एक्केक्कं पि हु न गुणं सक्कइ से वन्निउं सुरगुरू वि । सव्वाण ताण पुण वन्नणम्मि[2] तो कस्स वावारो ? ॥ १ ॥

सो नत्थि जस्स न पिओ स महप्पा निम्मलेहिं सगुणेहिं । चक्खुं पि हु अखिवंतो केवलमपिओ परवहूण ॥ २ ॥

तस्स य रन्नो [3]पउमनाहस्सेव पउमा पउमावई नाम भज्जा । ताणं च नरदेव-देवचंदाभिहाणा दोन्नि पुत्ता । जेट्ठो पगिट्ठो सव्वकलासु, पत्तट्ठो य भोगोवभोग-[4]वयाईसु । इयरो पुण अच्चंतदीसंतसुंदरावयवो वि मणवंछियसव्वसंपत्तिसंभवे वि परिमिय-[5]पच्छभोयणेणावि अभिभविज्जइ [6]अरोयगेण, बहुप्पयारं मग्गितो वि न वराडगमेत्तं पि दातुमभिलसइ पिउणो वि, पुट्ठसरीरो वि न तोडिउं [7]तरइ तंतुमेत्तं पि, सामत्थाणुरूवपोरिसारंभे वि न संजुज्जइ कज्जसिद्धीए । एवंविहं च तमवलोयंतो खिज्जइ नराहिवो, विचिंतेइ य—

खत्तियकुलम्मि विमले भुवणपसिद्धे दढं समिद्धे य । उप्पन्नो वि वराओ एसो न वि विलसिउं लहइ ॥ १ ॥

[8]परिपिक्ककणिस-कूडय-मेढीपंतीए गाढबद्धस्स । वसहस्स व एयस्स वि विहिणा विहिओ वयणबंधो ॥ २ ॥

१ 'व्यपगतडिम्बडमरा' दूरीभूतभयराष्ट्रविप्लवा ॥ २ °म्मि को क° खं० प्र० ॥ ३ कृष्णस्येवेत्यर्थः, 'पद्मा' लक्ष्मीः ॥ ४ व्ययादिषु ॥ ५ पथ्यभोजनेन ॥ ६ अरोचकाख्येन व्याधिना ॥ ७ शक्नोति ॥ ८ परिपक्ककणिशकूटकमेथिपंक्तौ गाढबद्धस्य । 'कणिस' त्ति कणिशाः, लोकभाषायां 'कणसलां' 'डूंडां' इति वा उच्यन्ते । कूटकः—हलावयवविशेषः । धान्यमर्दनार्थकखलान्तर्गतं काष्ठं मेढिरित्युच्यते, यत्र बद्धेन वृषभेण धान्यमर्दनं कार्यते ॥

मन्ने न पुव्वदुक्कयकिंपागफलं विणा हवइ भीमो । एवंविहो विवागो अच्चंतं विरसपरिणामो ॥ ३ ॥

अम्हारिसेहिं नज्जइ किं पेक्खिज्जइ य[1] चम्मचक्खूहिं ? । जइ कोइ एइ नाणी ता तं पुच्छामि अत्थमिमं ॥ ४ ॥

एवं च तच्चिंताउरस्स नरनाहस्स वच्चंतेसु वासरेसु, जहिच्छाचारेण विलसंते अणिवारणे वणवारणे व रायसुयनरदेवे, पइदियहपवड्ढमाणवित्तव्वएण [2]रित्तीहुंते दव्वकोसे, सिरि[3]हरियसिरिदत्तेणाऽऽगंतूण विणयावणयसीसविणिवेसियपाणिसंपुडेण विन्नत्तं, जहा—देव ! अच्चंतपरिमियकरगहणज्जियधणपडिपुन्नाण कोस-कोट्ठागाराणं अपरिमियव्वएण नाममित्तावसेसयं निसामिय देवो पमाणं। सविम्हयं च भणियं राइणा—भो सिरिदत्त ! कहं अपरिमियव्वओ जाओ ? त्ति। सिरिदत्तेण भणियं—देव ! तुम्हं वयणेण जहिच्छं विलसंतस्स दिंतस्स य रायसुयनरदेवस्स अणवरयं धण-धन्न-वत्थ-हिरन्नाईणं समप्पणेणं ति । इमं च आयन्निऊण गरुयकोवसंरंभनिब्भरं भणियं भूवइणा—

जइ तस्स विलासत्थं [4]रित्थं दाउं मए अणुन्नायं । ता किं मूलाउ च्चिय तं तेण विणासिउं जुत्तं ? ॥ १ ॥

[5]चोरिक्क-जूयजायाण चेव सच्छंदविलसणं उचियं । नायज्जियाण न पुणो अत्थाणऽत्थाणविणिओगो ॥ २ ॥

एवंविहं च एयस्सरूवमवलोइऊण सलहेमि । भोगोपभोगपमुहत्थविमुहमणहं सुयं बीयं ॥ ३ ॥

निद्दोसयं चिय गुणं तेणं चिय चिन्तितूणमगुणस्स । गुणिणो वि गरुयदोसेहि कलुसिया इंति लहुयत्तं ॥ ४ ॥

१ य धम्म° खं० प्र० ॥ २ रिक्तीभवति ॥ ३ श्रीगृहिकः—भाण्डागारिकः ॥ ४ 'रिक्थं' धनम् ॥ ५ चौर्यद्यूतजातानाम् एव स्वच्छन्दविलसनम् उचितम् । न्यायार्जितानां न पुनः अर्थानाम् अस्थानविनियोगः ॥

नाणाविहाइं रयणाइं धरइ अमयं च जइ वि हु समुद्दो । गिज्जइ य खारनीरत्तणेण लवणोयही तह वि ॥ ५ ॥

इमं च राइणो वयणं कह कह वि निसामियं नरदेवेणं । ततो चित्तब्भंतरसमुप्पन्नगरुयामरिसो 'किं दिन्नं ? किं भुत्तं ? तह वि ताओ कोवमुव्वहइ' त्ति बाढं संतप्पंतो य मज्झरत्ते एगागि च्चिय निग्गओ नयराओ पयट्टो देसंतरं । मिलिओ य मग्गे एगो अव्वत्तलिंगधारी । जातो तेण समं उल्लावो पइदिणदंसणेण पणओ य । एगया य एगंते 'सव्वविसिट्ठलक्खणं-किउ' त्ति रायसुयस्स तेण संसिओ वीससुवन्नकोडिमित्तो[1] जहावट्ठियपच्चयाणुगतो निहाणवइयरो, तयविसंवाइणी[2] दंसिया अक्खरपंती । वाइया सयमेव कुमारेण, उवलद्धो य तल्लिहियगामनाम-पएसकप्पो । पुच्छितो य अव्वत्तलिंगी—भद्द ! कत्तो एस निहाणकप्पलाभो ? त्ति । तेण भणियं—निसामेसु—

निधानं नि-धिकल्पश्च

पुव्वकाले **सिंधुसेणो** नाम पुहईवई अहेसि । **संकरधम्मो** से अमच्चो सव्वरज्जकज्जचिंतगो हिययनिव्विसेसो य । तेण य रन्ना नंदेणेव अणेगकरनिवाडणाइपगारेहिं अहिरन्नीकया पुहई, वड्ढिओ कोसो, वीससुवन्नकोडिनिहाणं च **संकरधम्म**-ममच्चं पच्चासन्नीकाऊण निहयं धरणीए । एत्थंतरे सो राया तहाविहायंकवुक्कामियाउओ पंचत्तं गओ । पुत्तसंतइविरहेण य पलयमुवागयं रज्जं । तद्दुक्खेण य **संकरधम्मामच्चेण** अम्हगुरु-पडिगुरुणो[3] समीवे पडिवन्ना तावसदिक्खा । पत्थावे य दंसिओ निहाणकप्पो[4] । पडिगुरुणा भणियं—वच्छ ! कंदमूलाइपरिभोईण तावसाण किं दव्वेण ? केवलं दुल्लक्खाइं विहिविल-

१ °डिमित्तो प्र० ॥ २ तइयवि° खं० प्र० । तदविसंवादिनी ॥ ३ अस्मद्गुरुप्रतिगुरोः समीपे ॥ ४ 'निधानकल्पः' भूम्यादिनिहितनिधानादिविषयक-स्थानादिसूचकं पत्रकम् । निधानकल्पः निधिकल्पश्चेत्येकार्थौ शब्दौ ॥

अतिथि-संविभागस्य स्वरूपम्

पडिपुन्नपोसहवयं विहियं पि न जं विणा हवइ अणहं[1] । तं अतिहिसंविभागो त्ति तुरियसिक्खावयं वोच्छं ॥ १ ॥
दूरेण गिहत्थुचिया[2] चत्ता पव्वूसवाइणो जेण । सो अतिही साहु च्चिय निच्चं धम्मत्थपडिबद्धो ॥ २ ॥
तस्स नियकज्जकयपाण-भोयणाईण[3] वियरणं जं तु । पोसहतवपारणए वुत्तोऽतिहिसंविभागो सो ॥ ३ ॥
पुव्वुद्दिट्ठोवट्ठंभदाणसरिसत्थमवि[4] पुढो एयं । पोसहतवाउ उत्तरमवस्सकिच्चं ति वत्तव्वं ॥ ४ ॥
एवं कुणमाणेणं गिहिणा साहूण संजमुज्जोगो । नीओ[5] परमुल्लासं सविसेसं तवविसेसो वि ॥ ५ ॥
संपाडिओ[6] य अप्पा परमप्पयसोक्खभायणत्तेण । नीओ परं पसिद्धिं लोए सव्वन्नुधम्मो य ॥ ६ ॥ किंच—
लाभेण[7] जोजयंतो जइणो लाभन्तराइयं हणइ । कुणमाणो य समाहिं सव्वसमाहिं लहइ नियमा ॥ ७ ॥
दाणंतरायविवरुल्लसन्ततक्खणविसुद्धपरिणामो[8] । भत्तिभरनिब्भरंगोऽतिहीण धन्नो धुवं देइ ॥ ८ ॥
भोयणकालोवट्ठियअतिहिपयाणेण **सालिभद्दाई** । भद्दाइं संपत्ता सुव्वंति य समयसत्थेसु ॥ ९ ॥
उवभोत्तुं भोत्तुं वा दाउं लद्धुं व भुवि य विप्फुरिउं । न तरंति जहिच्छं अतिहिसंविभागं विणा पुरिसा ॥ १० ॥
अत्थम्मि[9] एत्थ दिट्ठो दिट्ठंतो नूण निट्ठियट्ठेहिं[10] । अन्नय-वइयरेगेहिं **नरदेवो देवचंदो** य ॥ ११ ॥

१ 'अनघं' निर्दोषम् ॥ २ गृहस्थोचिताः त्यक्ताः पर्वोत्सवादयः ॥ ३ स्वार्थकृतपानभोजनादीनां दानमित्यर्थः ॥ ४ पूर्वोद्दिष्टोपष्टम्भदानसदृशार्थमपि ॥ ५ नीतो प° प्र० ॥ ६ सम्पादितश्च आत्मा परमपदं—मोक्षः तत्सौख्यभाजनत्वेन ॥ ७ लाभेन योजयन् यतीन् लाभान्तरायं हन्ति ॥ ८ दानान्तराय-विवरोल्लसत्तत्क्षणविशुद्धपरिणामः ॥ ९ 'अर्थे अत्र' एतद्विषये ॥ १० 'निष्ठितार्थैः' तीर्थकरगणधरादिभिः अन्वयव्यतिरेकाभ्याम् ॥

भुज्जो वाहरिओ वि जाव न देइ सो पडिवयणं ताव कुमारो गओ तयंतियं । पेच्छइ य तं निमीलियच्छं गयजीयं भूवट्ठे निवडियं ति । 'हा हा किमेयं ?' ति ।

जस्स कए कयमेयं सो वि महप्पा परं भवं पत्तो । न वियारगोयरं जाइ ही ! कहं विलसियं विहिणो ? ॥ १ ॥
कीरउ कत्थाऽऽसंसा ? बज्झउ य कहिं अवट्ठिओ नेहो ? । अमुणियसंचरणो भमइ जत्थ अणिसं चिय कयंतो ॥ २ ॥
अन्नं च्चिय चिंतिज्जइ हवइ य अन्नं अचिंतियं चेव । केवलनाणीण परं पच्चक्खो देव्वपरिणामो ॥ ३ ॥
इय [1]अवितक्कियनिक्किवदुक्कयकयकुडिलकडुयकज्जम्मि । सव्वत्थ वि भवभावे का भावविभावणा हवउ ? ॥ ४ ॥

एवं परिदेवंतो अप्पण च्चिय सोगावेगं निरुंभिऊण चिंतिउं पवत्तो—एसो हि अत्थो लिंगिणो गुरुत्थाणीयस्स संतिओ, तयभावे सयं भोत्तुमणुचिओ, [2]ता गुरुणो पिउणो च्चिय पणामिउं जुत्तो, निट्ठं नीया य मए तस्स महाणुभावस्स अपरिमिय-व्वयाइणा कोस-कोट्ठागार त्ति ।

एवं च निच्छिऊण तद्देससमीववत्तिमंडलाहिवइणो अवंतिसेणस्स नियमाउलगस्स गतो समीवे कुमारो । सायरमब्भुट्ठितो तेण, उचियसमए विम्हियमाणसेण पुच्छिओ य—वच्छ ! को एस वइयरो जमेवमेगागी दीससि ? । ततो कुमारेण कहितो संखेवेण नियवुत्तंतो । अवंतिसेणेण भणियं—वच्छ ! गिण्हसु मह संतियं रज्जं, वुड्ढोऽहमियाणिं [3]पवज्जामि वणवासं

१ अवितर्कितनिष्कृपदुष्कृतकृतकुटिलकटुककार्ये ॥ २ तद् गुरवे पित्रे एव अर्पयितुं युक्तः, निष्ठां नीताश्च ॥ ३ 'प्रपद्ये' अङ्गीकरोमि ॥

ति । कुमारेण जंपियं—तुह रज्जं ममायत्तं चेव, केवलं संपयं [1]पियमिमं ताव संपाडेसु, एत्तो अदूरे किं पि निहाणमुवलद्धं मए, तं च तहा कुणसु जहा राइणो अक्खयं चेव सक्खा करयलगोयरीहवइ त्ति । अह 'तह' त्ति पडिवज्जिय कुमारोवइट्ठ-विहिणा वीसं पि कणयकोडीओ [2]पवेसियाओ तेण नरवइस्स ।

रायसुओ वि केणइ अमुणिज्जंतो नीहरितो माउलगमंदिराओ एगागि च्चिय गतो गंधिलावइविसए । तहिं च निसामियं जणमुहाओ सच्चावयाराभिहाणं जुगाइजिणमंदिरं । तं च कोऊहलाउलियहियओ रायसुतो दट्ठुं पट्ठिओ वेगेणं, पत्तो य तयासन्ने ।

अह जच्चविमलकलहोयकलससोहंततुंगसिंगग्गं । गरुयसरयब्भकूडं सीसट्ठियविज्जुपुंज व ॥ १ ॥
उदयगिरिं पिव उदयंतसूरबिंबं महीवइस्स सुतो । दट्ठूण जिणहरं [3]हरिणलंछणच्छायमइतुट्ठो ॥ २ ॥
दूराओ च्चिय [4]भूवट्ठठवियसिरमंडलो पणमिऊणं । भत्तिभरनिब्भरंगो जिणमित्थं थोउमाढत्तो ॥ ३ ॥
[5]जय जिण ! जुगपढमनिउत्तधम्म-कम्मव्ववत्थवित्थार ! । अइविमलकेवलालोयलोयणालोइयतिलोय ! ॥ ४ ॥
जइ नाह ! तुमं न धराए अवयरंतो भवागडाववडियं । उद्धरिउं तिजयं ता किमुविंतं दुत्थयं नेव ? ॥ ५ ॥
[6]अहिनंदणो वि तं नाहिनंदणो निम्ममो वि कणयरुई । करवत्तं पि धरंतो कट्ठं विहरसि तह वि नेव ॥ ६ ॥

१ प्रियमिदं तावत् सम्पादय ॥ २ प्रप्रेषिताः तेन नरपतये ॥ ३ चन्द्रोज्ज्वलमित्यर्थः ॥ ४ भूपृष्ठस्थापितशिरोमण्डलः ॥ ५ जय जिन ! युगप्रथम-नियुक्तधर्म-कर्मव्यवस्थाविस्तार ! । अतिविमलकेवलालोकलोचनालोकितत्रिलोक ! ॥ ६ हे भगवन् ! त्वम् 'अभिनन्दनोऽपि' आनन्ददाताऽपि सन् 'न

छत्तत्तयाइरिद्धिं अनन्नसरिसिं पलोइउं तुज्झ । देवाहिदेवबुद्धी उप्पज्जउ कह णु अण्णत्थ ? ॥ ७ ॥
अच्छंतु वयणसोहग्ग-रूव-णाणाइणो गुणा दूरे । पडिमा वि तुज्झ ससिणो व जणइ परमं जणाणंदं ॥ ८ ॥
ता भीमो [1]भाइ भवो ताव य तावेइ [2]आवयाचक्कं । जाव तुह नाममंतो हियर्यतो पसरइ न नाह ! ॥ ९ ॥
जइ मग्गियं पि लब्भइ ता पइजम्मं पि तुज्झ पयपउमे । वीसमउ रमउ निच्चं भमरो व मणो जिणिंदे ! ममं ॥ १० ॥
इय पुणरु[3]त्तं थोत्तं परियत्तइ जा जुगाइजिणपुरतो । ता भाणुबिंबमंबरतलाउ अत्थ[4]यरिमणुपत्तं ॥ ११ ॥

तह वि स महप्पा परमपरितोसवससमुच्छलंतरोमंचकंचुइयकाओ उत्तरोत्तरपवड्ढंतसुहपरिणामो तदेगचित्तत्तणेण मुहुत्तमेत्तं व विभा[6]वरिं अइवाहिऊण, समुग्गयम्मि मायंडमंडले सयलकल्लाणावलीविलाससंग[7]यं व पत्तपरमब्भुदयं व सिद्धसमीहियत्थपत्थणं व अप्पाणं मन्नंतो भुज्जो पंचंगपणिवायपुरस्सरं सायरं जुगादिजिणं पणमिऊण नीहरितो जिणभवणाओ ।

एत्थंतरे पणमिओ सुनेवच्छेहिं रायपुरिसेहिं, विन्नत्तो य—भो महायस ! वयं हि तुज्झ आणयणत्थं गंधिलावइवसुं-

अभिनन्दनः' नानन्दायीति विरोधः, तत्परिहारस्तु त्वं 'नाभिनन्दनः' नाभिराजसूनुः । पुनर्भवान् निर्ममोऽपि सन् 'कनकरुचिः' सुवर्णाभिलाषी इति विरोधः, परिहारस्तु 'कनकरुचिः' कनकाभकायकान्तिर्भवान् । तथा यद्यपि करपत्रमपि धारयंस्त्वमसि तथापि नैव त्वं काष्ठं 'विहरसि' दारयसि इत्याश्चर्यम्; तत्परिहारपक्षे तु–करे पात्रं धारयन् त्वमसि, अपरिग्रह इत्यर्थः, तथापि नैव 'कष्टं' दुःखं यथा स्यात् तथा 'विहरसि' विहारं कुरुषे इति वास्तवोऽर्थः ॥

१ भाति ॥ २ आपत्समूह इत्यर्थः ॥ ३ °द ! खमं खं० प्र० ॥ ४ °रुत्तं वोत्तुं, प° खं० । 'पुनरुक्तं' वारंवारं स्तोत्रम् ॥ ५ अस्तगिरिम् अनुप्राप्तम् ॥ ६ रात्रिम् ॥ ७ °गयं पवत्त° खं० ॥

सियाइं, अविभावणिज्जा कज्जगई, इमिणा वि पओयणं हवइ त्ति सुरक्खियं निहाणकप्पमिमं करेसु त्ति । 'तह' त्ति पडिसुयमणेणं । वच्चंते य काले तम्मि पुव्वगुरूसु य कहासेसीभूएसु पुरिसपरंपराए मह हत्थमुवगतो एस निहिकप्पो त्ति । जाव संपइ धम्मट्ठाणेसु त[1]व्विणितोगपओयणं ति पारद्धं मए बलिपक्खेवपुरस्सरं तमुक्खणिउं । उवट्ठिओ विग्घो । 'हा किमेयं ?' ति बाढं विसन्नो हं । भणिओ य एगेण नेमित्तिएण, जहा—सव्वलक्खणोवगयपहाणपुरिससा[2]हिज्जसावेक्खो हि एयलाभो, न तुमए केवलेण लद्धुं पारीयइ त्ति । अह केणइ सुकयकम्मवसेणं संपइ तुमं दिट्ठो । न य तुमाहिंतो वि पुन्नपुरिसो विसिट्ठलक्खणंकिओ य अन्नो संभाविज्जइ । ता भो महायस ! कुणसु [3]जमित्तो तुज्झ रोयइ त्ति ॥ छ ॥

एवं निसामिऊण परकज्जरसियत्तणेण पडिवन्नमिमं रायसुएण । गया निहाणप्पएसे । बलिविहाणपक्खेवपुव्वयं सुहमुहुत्ते य समारद्धा[4] उक्खणिउं । एत्थंतरे गरुयकोवभरारुणनयणकिरणच्छडाडोवदाविया कालसंज्झो स[5]ज्झसभरपकंपिरतद्देसवत्तिसत्तसचमक्कारपलोइज्जमाणो माणाइरित्तनिद्दारियवयणत्तणेण कयंतो व्व जीवलोयं कवलिउमुवट्ठिओ 'रे रे पासंडियाहम ! कीस एस रायसुओ तए आणीओ ?' त्ति जंपंतो संपत्तो खेत्तवालो । नरिंदसुयपुन्नपयावपडिहओ निबिडकरचवेडापहारावहरियजीवियमव्वत्तलिंगिणं काऊण अवक्कंतो वेगेणं । रायसुओ वि जाव क[6]इवयखणित्तयघाएहिं न विदारइ वसुंधरावीढं ताव भूरिपुन्नसंभारागरिसियं व पयडीहूयं निहिपडलं । 'अवितहवाई महाणुभावो' त्ति ससंभमं वाहरिओ तेण अव्वत्तलिंगी । भुज्जो

१ तद्विनियोगप्रयोजनमिति ॥ २ °साहेज्ज° प्र० । –साहाय्यसापेक्षः ॥ ३ जमेत्तो प्र० ॥ ४ °द्धा ओखणि° खं० ॥ ५ साध्वसभरप्रकम्पिततद्देशवर्तिसत्त्वसचमत्कारप्रलोक्यमानः ॥ ६ कतिपयखनित्रकघातैः । खनित्रं–कुद्दालकः ॥

कुमारेण—महाराय ! देवयाए च्चिय विणिच्छिए कज्जे किमहं जंपिउं पारेमि ? त्ति । ततो तक्खणविणिच्छियसुहग्गहाभोगे परिणयणजोग्गे लग्गे पारद्धो विवाहमहूसवो ।

अह ताहिं चउहिं वि रायधूयाहिं समेया कमलावई महारिद्धिसमुदएणं परिणीया कुमारेण । घरनाहो व सो तत्थेव अच्छिउं पवत्तो । गएसु य थोयदिणेसु समागया पिउणो पहाणपुरिसा, विन्नविउमारद्धा य—कुमार !

तुह देसंतरगमणं मुणिऊणं मेइणीवई दूरं । [1]विरहमहादुहदीहरनितं[2]ताविच्छिन्नऊसासो ॥ १ ॥

नो कुणइ भोयणं पि हु बहुमन्नइ न य सरीरसक्कारं । अभिलसइ रज्जचिंतं पि नेव नट्टं पि नो नियइ ॥ २ ॥युग्मम्॥

जद्दिवसाओ य तए सुवन्नकोडीउ पेसिया वीसं । तत्तो पुण सविसेसं [3]समुव्वहित्था महासोगं ॥ ३ ॥

तो तुज्झाऽऽणयणत्थं इत्थं वेगेण पेसिया अम्हे । एत्तो कुमार ! दिज्जउ पयाणमविलंबियं चेव ॥ ४ ॥

इमं चाऽऽयन्निऊण पंच वि ससुरभूवइणो संबोहिऊण, तद्दिन्नभूरिहरि-करि-रह-जोहजूहसणाहो, पंचहिं पणइणीहिं परिवुडो, अकालक्खेवेण गतो कुमारो पिउणो समीवं । 'कहं सरीरमेत्तो पवसिऊण एत्तियसामग्गिसंगतो पच्चागओ ?' त्ति परितुट्ठो राया । अभिणंदिओ य सपणयालावेण । एत्थंतरे पढियं मागहेण—

एके क्षीरमहाम्बुधौ तदपरे [4]वैकुण्ठवक्षस्थले, खड्गेऽन्ये कमले परे निवसति श्रीरेवमाहुर्जनाः ।
मन्ये तद् वितथं तवाऽऽत्मजमिमं सर्वाङ्गमालिङ्ग्य सा, तस्थौ चेदिदमन्यथा कथमियं प्राज्यर्द्धिरेवंविधा ? ॥ १ ॥

१ विरहमहादुःखदीर्घनिर्यदविच्छिन्नोच्छ्वासः ॥ २ °ताअविछिन्न° खं० प्र० ॥ ३ समुदवहत ॥ ४ वैकुण्ठः-कृष्णः ॥

इमं च अवितहं कुमारगुणवन्नणमायन्निऊण दिन्नं से रन्ना सव्वंगियमाभरणं । एवं च गरुयसिणेहाणुबंधबंधुरेसु गएसु [1]केचिरेसु वि दिणेसु गामाणुगामं विहरमाणा तिनाणोवगया समागया जयदेवसूरिणो, ठिया पुरीए बाहिरुज्जाणे । जाणियतदागमणो राया दोण्हं पि नियसुयाण विसरिसभावपुच्छणत्थं सव्वसामग्गीए गतो तयंतियं । [2]सायरकयपायपणामो य आसीणो उचियपएसे । सूरिणा वि पारद्धा धम्मकहा । पडिबुद्धा बहवो जणा । उवलद्धावसरेण य सविणयं पुच्छियं साइदत्तसेट्ठिणा—भयवं ! एस एक्को च्चिय मह सुओ संतीए वि अनन्नसरिसीए संपयाए—

जइ [3]परिहइ वरवत्थं, ता मोडिज्जइ समग्गमंगं से । अह भुंजइ वरभोयणमाहम्मइ ता मुहमिमस्स ॥ १ ॥

बंधइ कुसुमाइं सिरे जइ ता सिरवेयणा हवइ बाढं । विहिए विलेवणे पुण जायइ सव्वंगिओ दाहो ॥ २ ॥

इय इंदियत्थमणहं काउं धम्मत्थमवि न सो लहइ । मज्झ सुतो भयवं ! कहसु एस [4]किंपच्चओ दोसो ? ॥ ३ ॥

अह [5]ओहिनाणनयणावलोइयसभावत्तिसव्वसत्तचिंतावावारो नरवइम्मि नरदेव-देवचंदेसु सिट्ठिसुए य दिट्ठिं खिवंतो सूरी भणिउं पवत्तो—भो भो देवाणुप्पिया ! [6]जप्पचओ एस दोसो तं निसामेह—

वच्छाविसए तिन्नि मित्ता [7]अवरोप्परपणयवंतो अहेसि । तेहि य एगया गयपुररायपुत्तो महाबलो नाम गहियपव्वज्जो गीयत्थो दिट्ठो । 'अहो ! महप्पा एस [8]दुच्चयचाइ' त्ति परमपमोयमुव्वहंतेहिं वंदितो तेहिं । मुणिणा वि [9]भवं त्ति कया

१ किंचि° प्र० ॥ २ °यरं क° खं० ॥ ३ परिदधाति ॥ ४ 'किंप्रत्ययः' किंनिमित्तः ॥ ५ अवधिज्ञाननयनावलोकितसभावर्त्तिसर्वसत्त्वचिन्ताव्यापारः ॥ ६ यत्प्रत्ययः ॥ ७ परस्परप्रणयवन्तः ॥ ८ दुस्त्यजत्यागी ॥ ९ भत्तवकया खं० । भवत्तकया प्र० । भव्या इति कृता ॥

धम्मदेसणा। जायभववेरग्गेहिं य तेहिं पडिवन्नो जिणधम्मो। पइदिणदंसणसविसेसवड्ढंतधम्मबुद्धीण य ताण पंचाणुव्वयाइं तिन्नि गुणवयाइं तिन्नि य सिक्खावयाइं पुव्वुत्तविहिणा वक्खाणिऊण मुणिणा चउत्थसिक्खावयसरूवं भणिउमाढत्तं। जहा—

अन्नाईणं सुद्धाण कप्पणिज्जाण देस-कालजुयं। दाणं जं किर जइणो तुरियं सिक्खावयं[1] तमिह ॥ १ ॥
जइ वि हु पइदियहं चिय गिही न भुंजइ जईणमविदिन्ने[2]। पोसहपारणगदिणे तह वि विसेसो त्ति नियमोऽयं ॥ २ ॥
एत्थ य सामायारी भोयणकालम्मि जाइ जइमूले[3]। वंदिय निमंतइ गिही भिक्खागहणं करेह त्ति ॥ ३ ॥
मुणिणो वि अंतराइयभएण उग्गाहिऊण लहु जंति। तस्स गिहे सो वि य ताणमासणाई पणामेइ[4] ॥ ४ ॥
आसीणाणं उद्धट्ठियाण वा भत्तिपुव्वयं देइ। सयमेव गिही अन्नेण वा वि असणाइ जहविभवं ॥ ५ ॥
पच्छाकम्मविवज्जणहेउं गिण्हंति सावसेसं तं। मुणिणो तो वंदित्ता अणुगच्छित्ता य पारए इसो ॥ ६ ॥
अह तस्समए मुणिणो न हुंति तो सायरं दिसालोयं। कुणमाणो चिंतइ मज्झ जीवियं ही! दढं विहलं ॥ ७ ॥
किं भोयणाइविभवेण ? जो न साहूण जाइ उवओगं। इय सुद्धबुद्धिजोगा दिन्नफलं होअदिन्ने वि ॥ ८ ॥
नवरं चिरकयदुक्कयदोसेणं कह वि आवडन्ता वि। जत्तेण वज्जणिज्जा अइयारा पंच एत्थ वए ॥ ९ ॥ तहाहि—
सच्चित्तनिक्खिवणयं १ वज्जइ सच्चित्तपिहणयं २ चेव। कालाइक्कम ३ परववएसं ४ मच्छरियं चेव ५ ॥ १० ॥
सच्चित्तम्मि पुढवाइयम्मि देयस्स ठावणं पढमो। बीओ सच्चित्तेणं फलाइणा देयपिहणम्मि ॥ ११ ॥

१ वयं तुमिहा प्र० ॥ २ यतिभ्योऽविदत्ते ॥ ३ यतिपार्श्वे इत्यर्थः ॥ ४ अर्पयति ॥

धराहिवेण **सिंधुसेणेण** पेसिय त्ति पसायं काऊण आरुहह रहवरमिमं ति। अह तयणुवित्तीए 'किं कारणं ?' ति विम्हयमुव्वहंतो वि आरूढो रहं कुमारो, गतो रायभवणं। दूराउ च्चिय अब्भुट्ठिओ राइणा, संभंमभरियच्छिविच्छोहपुव्वयं[1] पलोइऊण सव्वंगं कुमारं चिंतियं च—अहो! फलियं देवयापसाएण, न दीसंति जेण एवंविहाइं पाएणं पुरिसरयणाइं, ता होउ अणुसरिसपइलाभेण कयत्था मह धूय त्ति। सुहासणासीणो य ससिणेहं संभासिओ, जहा—वच्छ **नरदेव**! बाढमणुग्गहियं[2] तुमए मह भवणं आगमणेणं, ता सागयं देवाणुप्पियस्स, वत्तव्वं च किं पि अत्थि तमायन्नउ कुमारो। **नरदेवेण** भणियं—साहेसु त्ति। राइणा जंपियं—वच्छ! अत्थि **कमलावई** नाम मह धूया सव्वकलाकुसला पुरिसविद्देसिणी य, सुरूवेसु वि रायसुएसु चक्खुं पि अक्खिवंती कालमइवाहेइ, तीसे य वरनिमित्तं महासंतावमुव्वहंतेण मए भूमिसयण-बंभचेराइविहाणेणमाराहिया कुलदेवया, तीए य अज्जेव रयणीए पच्छिमजामसमए समाइट्ठं, जहा—'**सक्कावयारचेइए** जिणं थुणंतो **नरदेवो** नाम रायसुतो महप्पा इमीए पाणिं इयाणिं चेव गाहियव्वो' त्ति, इमं च तयाइट्ठं निसामिऊण विउद्धेण[3] मए तक्खणमुज्झियवियप्पेण तुज्झ आणयणनिमित्तं पुरिसा पेसिया, ता पूरेसु तीए मणोरहे अम्हं च; किंच रायसुय! मह धूयाए समं **वइदेहसुया जयसुंदरी बंगाहिवतणया लीलावई कलिंगरायंगरुहा वसंतसेणा कुरुरायदुहिया** य **अणंगलेहा** निच्छयपवन्ना—'सहि! जो तुह पाणनाहो[4] सो अम्हाणं पि, इहरहा हुयासो वणवासो वा सरणं' ति, ता परिचत्तविगप्पो पडिवज्जसु इमीण वि आहिवत्तणं, पत्थणाभंगो हि बाढमणुचिओ सप्पुरिसाणं ति। विम्हियमणेण य भणियं

१ सम्भ्रमभृताक्षिविक्षेपपूर्वकं प्रलोक्य सर्वाङ्गम् ॥ २ °हिउं तु° खं० प्र० ॥ ३ 'विबुद्धेन' जागृतेन ॥ ४ **पाणिना**° खं० ॥

पक्खित्ता वसुहारा । तब्भवे च्चिय पडिपुन्नमणोरहो नियत्तो एसो, धम्म-ऽत्थ-कामभागी जातो य ।

कणिट्ठमित्तेण वि तहिं चेव पोसहपारणगे किलिस्समाणज्झवसायाओ भिक्खुभिक्खाकालाओ पढममेव काराविऊण रसवइं वाहरिया तवस्सिणो । गिलाणाइनिमित्तेण य आगया तत्थ । ततो अदाउकामेण पुढवाईसु निवेसिओ ओयणो, घयाइभाय[1]णेसु य पिहाणबुद्धीए ठवियं सच्चित्तफलाइ, पक्कन्नपमुहं सेसं 'परसंतियमेयं'[2] ति जंपमाणेण अकारयं किं पि उवणीयं साहूण । कवडेण य 'किमहं मंदभग्गो देमि तुम्हाणं ?' ति भणमाणेण वंदिया साहुणो गया जहागयं । भुत्तो एसो जहिच्छाए ।

सिट्ठो य एस वइयरो मज्झिममित्तस्स । 'अहो ! बुद्धिपयरिसो, सम्मं च कयं, जमेवं नियधणं रक्खिय'न्ति सायरमणुमोइओ तेण । कालेण ते तिन्नि वि मया देवत्तेण उववन्ना । तत्थ जो जिट्ठो[3] मित्तो सो महाराय ! एसो नरदेवो तुह पुत्तो नियनिम्मलकम्माणुरूवलाभाइगुणाभागी जातो । मज्झिमो य अणुचियत्थाणुमोयणेण[4] विवरीयरूवो देवचंदो त्ति संवुत्तो । कणिट्ठो य एसो सेट्ठिपुत्तो 'दुट्ठाभिसंधि' त्ति न केवलं भोगाइयं काउं न लहइ, विरुद्धवंतरेहिं बाढं संताविज्जइ य । ता भो महाणुभावा रायप्पमुहा ! नियकम्ममेक्कं मोत्तूण मा अन्नं सुह-दु[हु]प्पायगं संकेज्जह त्ति ॥ छ ॥

एवं सोच्चा सवे जहोचियं धम्मपरा जाया । सूरिणो वि विहरिया अन्नत्थ । अक्खेवेण मोक्खभागी संवुत्तो नरदेवो त्ति ।

एवमिमं सुविसुद्धं अतिहिपयाणवयं अणुचरंतो । इह-परभवे य कल्लाणभायणं हवइ अवियप्पं ॥ १ ॥ अपि च—

१ °भाइणे° खं० ॥ २ 'परसत्कम्' परसम्बन्धि एतत् ॥ ३ जेट्ठो प्र० ॥ ४ °त्थाणमो° खं० प्र० । अनुचितार्थानुमोदनेन ॥

अतिथि-संविभाग-व्रतस्य माहात्म्यम्

यत् सार्वभौमपदवीं क्षितिपालमौलिमालामरीचिनिचयाञ्चितपादपीठाम् ।
आप्नोति कोऽपि सुर-दैत्यमहाश्रियं च, चिन्ताऽव्यतीतविलसद्विपुलानुभावाम् ॥ १ ॥
सौभाग्य-भाग्यकलिताममलाङ्गलक्ष्मीं, दानोपभोगपरमामिह सम्पदं वा ।
तद् भावशुद्धिविहितातिथिसंविभागसम्भूतपुण्यबलजृम्भितमाहुरीशाः ॥ २ ॥ किञ्च—
स्वार्थोपस्कृतमन्न-पानमभितो भोक्तुं पुरः कल्पितं,
दित्सातश्च निरीक्षितो यतिरथ प्राप्तः स चाऽऽकस्मिकः ।
हर्षोत्कर्षवशात् ततोऽपि च किमप्यस्मै ददत् सादरं,
धन्यः कोऽपि शुभावलीमुपचिनोत्येवं विशुद्धाशयः ॥ ३ ॥
इत्यतिथिसंविभागव्रतनिश्चलनिहितमानसः सत्त्वः । सत्वरमतिथिर्बहुतिथि[1]सम्पत्तीनां भवति नियमात् ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे अतिथिसंविभागव्रतविषये नरदेव[देवचन्द्रादि]कथानको[2]क्त्या प्रोक्तानि चत्वारि शिक्षाव्रतानि ॥ ४५ ॥

[॥ तदुक्तौ चोक्तानि द्वादशापि व्रतानीति ॥]

१ °तिथिस° खं० प्र० ॥ २ °नकमुक्तम् । तदुक्तौ च प्रोक्तानि शिक्षाव्रतानीति खं० प्र० ॥

बारसावत्तवंदणयं।

पुव्वुत्तो धम्मविही नज्जइ सव्वो गुरूवएसाओ। ता गुरुपडिवत्तिकए वंदणविहिमिण्हि साहेमि ॥ १ ॥
वंदिज्जई अणेणं ति वंदणं तं च बारसावत्तं[1]। अवणामपमुहपणुवीसठाणपडिबद्धमाहंसु ॥ २ ॥
अवणामा दो अहाजायं आवत्ता बारसेव य। सीसा चत्तारि गुत्तीओ तिन्नि दो य पवेसणा ॥ ३ ॥
एगनिक्खमणं चेव पणुवीसं वियाहिया[3]। एयविसुद्धमेयं हि पूयाकम्मं परं मयं ॥ ४ ॥
एत्थ य संभविणोऽणाढियाइणो[4] वज्जए बुहो दोसे। थेवं पि अणुट्ठाणं अदूसणं भूसणं परमं ॥ ५ ॥
अवणामाइसु जत्तं जहा जहा आयरेण य करेइ। तह तह पाउणइ पुराकयाण पावाण निज्जरणं ॥ ६ ॥ तहा—
विणओवयार माणस्स भंजणा पूयणा गुरुयणस्स। तित्थयराण य आणा सुयधम्माराहणाऽकिरिया ॥ ७ ॥
इत्थं निउत्तविहिणा धन्नो गुरुवंदणं सइ कुणंतो। सिवचंदो इव भद्दं पावइ नत्थेत्थ संदेहो ॥ ८ ॥
एयविवरीयचारी कह वि संपत्तनिम्मलकुलो वि। कुलकालुस्सं हेच्छं उवगच्छइ चंददेवो व ॥ ९ ॥
एयाण य वुत्तंतं जहट्ठियत्थं सुथोयवित्थारं। दोण्हं पि हु सीसंतं एगग्गमणा निसामेह ॥ १० ॥
तहाहि—अत्थि अतुच्छवच्छाविसयसुपसिद्धा, धण-धन्नसमिद्ध-सद्धम्मकम्मनिम्माणनिउणजणाणुगया, गयाहर[6]मुत्ति व

१ द्वादशावर्त्तम् ॥ २ °त्तीए, ति° खं० प्र० ॥ ३ व्याख्याता ॥ ४ अनादृतादीन् ॥ ५ शीघ्रम् ॥ ६ गदाधरः—कृष्णः ॥

पुव्वं वा पच्छा वा भोयणकरणेण जं अइक्कमणं। मुणिभिक्खावेलाए सो कालाइक्कमो तइओ ॥ १२ ॥
अप्पणयं पि हु देयं परस्स एयं ति जंपमाणेण। परववएसो त्ति अदित्सुयस्स[1] तुरितो अईयारो ॥ १३ ॥
रंकेण तेण दिन्नं किमहं हीणो ततो वि नो दाहं ?। इय दिंतो मच्छरियमइयारं पंचमं भयइ ॥ १४ ॥
एए दाणिच्छाविरहियस्स दाणंतरायदोसेणं। अइयारा इंति बला न उणो तव्विरहियमणस्स ॥ १५ ॥
अइयारभावणा पुण अइक्कमाईहिं नूणमवसेया। णाभोगभावतो वा वयस्स भंगोऽन्नहा पयडो ॥ १६ ॥

एवं मुणिणा कहिए वयविहाणे अइरहसवसेण जेट्ठेण कणिट्ठेण य मित्तेण पडिवन्नाइं बारस वि वयाइं। मज्झिमगो वि मित्तो पडिवन्नो सम्मद्दंसणं। साहू वि ते अणुसासिऊण विहरितो अन्नत्थ। ते पुण तिन्नि वि मित्ता जिणधम्मपालणपरा गमंति कालं।

एगया य जेट्ठमित्तो अत्थोवज्जणनिमित्तं सोरट्ठदेसं गतो, आवासिओ य रेवयसेलमूले। पत्तं च तद्दिणं चाउम्मास-पव्वं। तहिं च पडिवन्नमणेण पडिपुन्नं पोसहवयं। तं च सम्मं परिपालिऊण पारणगदिणे सुचिरमतिहिसंविभागनिमित्तमव-लोइयदिसावलओ 'हा हा! कहं अकयसाहुसंविभागो भुंजिस्सामि ?' त्ति पसरंतचित्तसंतावो आसीणो भोयणकरणत्थं। एत्थंतरे चाउमासियपारणगं काउकामो तदासन्नगिरिनिगुंजाओ दमिडरायरिसी उवागओ तं पएसं। 'साहू एइ' त्ति सिट्ठं परियणेणं। 'सेयं[3] अणब्भा अमयवुट्ठि' त्ति पहिट्ठेण य पडिलाभिओ सपरिवेसियभोयणाइणा[4]। 'अहो! महादाणं' ति सुरेहिं

१ 'अदित्सोः तुर्यः' दातुमनिच्छोः चतुर्थः ॥ २ °णुणासि° खं० ॥ ३ सा इयं अनभ्रा अमृतवृष्टिः ॥ ४ स्वपरिवेषितभोजनादिना ॥

भयवं ! दूरमणज्जो निल्लज्जो पावकम्मसज्जो य । [1]सज्जोयसालिणं पि हु जो तं [2]पिच्छामऽवन्नाए ॥ १ ॥
[3]उवसग्गवग्गमुग्गं विणिम्मवे[4]र्मि य भवारिसाजोग्गं । [5]सेलं व सुप्पइट्ठं अमुणिय तुह चित्तवट्ठंभं ॥ २ ॥
पाविट्ठस्स वि मज्झं केणइ सुसिलिट्ठकम्मजोगेण । जायं तुह पहु ! [6]दंसणमवहत्थियकप्पतरुसोहं ॥ ३ ॥
ता भो महरिसि ! मरिसेसु मज्झ दुव्विणयम[7]णयसीलस्स । भुज्जो भयवं ! काहं कयाइ नेवंविहमजुत्तं ॥ ४ ॥
इय पुणरुत्तं सिररइयपाणिपउमो [8]पसाइयं साहुं । सीसो व समीवगओ गयाणणो सेवए सम्मं ॥ ५ ॥

वच्चंतेसु य दिणेसु ते [9]उवरोहियसुया सिवभद्द-सिरियाभिहाणा देसंतरागयव[10]सुमित्ताभिहाणोवज्झायदिन्नमहामंतोवयारकरणत्थं पूओवगरणहत्था 'विजणं' ति मन्नमाणा तमेव अंब-जंबू-कयंब-जंबीरपमुहतरुवरविराइयं हेरंबमंदिरमल्लीणा। मंतसाहणपयट्टेहिं य तेहिं दिट्ठो तग्गिहेगदेसे एगपायकयकाउस्सग्गो निप्फंदनिम्मियनयणपुडो [11]अवाउडो [12]कक्खडतवसंकोडियनसाजालजडिलो सो तवस्सी । ततो सहासं भणियमणेहिं—भो भो मुणिवर ! को एस विडंबणाडंबरपवंचो जमेवं जमनिविसेसरूवयमवलंबिऊण वट्टिज्जइ ? बाढमजुत्तं च इत्थं धम्मत्थमप्पणो पीडणं । जओ—

धम्माओ धणलाभो तत्तो कामो ततो य संसारो । धम्मस्स अज्जणं ता मूलाउ च्चिय दढमजुत्तं ॥ १ ॥

१ सद्योगशालिनमपि हि यः त्वां पश्याम्यमवज्ञया ॥ २ पेच्छा° प्र० ॥ ३ उपसर्गवर्गमुग्रं विनिर्मिमे च भवादृशायोग्यम् । शैलमिव सुप्रतिष्ठं अज्ञात्वा तव चित्तावष्टम्भम् ॥ ४ °वेवि य खं० प्र० ॥ ५ लेसं व सुयाइट्ठं खं० ॥ ६ दर्शनम् अपहस्तितकल्पतरुशोभम् ॥ ७ 'अनयशीलस्य' दुर्विनीतस्य ॥ ८ प्रसाद्य ॥ ९ पुरोहितसुतौ ॥ १० °सुमन्ताभि° प्र० ॥ ११ अप्रावृतः कर्कशतपःसङ्कुचितनसाजालजटिलः ॥ १२ कक्कड° खं० ॥

एवं च अवन्नापुरस्सरं ते पयंपंते विभाविऊण गरुयकोवावेगारुणनयणो 'अहो ! महापावा पहुं पि पराभवंति' त्ति जायामरिसो [1]सिग्घं [2]विग्घवई तन्निग्घायणत्थं जमदंडचंडसुं[3]डादंडमुप्पाडिऊण जाव भयथरहरंतसरीरे ते न [4]मुसुमूरेइ ताव करुणाभरमंथरगिरं पारियकाउस्सग्गेण 'भो भो गणाहिव ! अलं जीववहेणं' ति वाहरंतेण साहुणा पडिसिद्धो एसो त्ति । ततो अच्चन्तभयनिब्भरावूरियहिययत्तणेण तणं व कंपिरकाया जत्तो [5]ताणत्थमप्पणो खिवंति चक्खुं तत्थ तत्थ [6]उग्गीरियफरुसहत्थं हत्थिमुहमेव पलोयंति । ततो सवायरेण 'भयवं ! तुममेव सरणं' ति जंपिरा लग्गा साहुचलणेसु । 'मा भायह' त्ति कप्पतरुकिसलयाणुगारं करमुदीरंतेण अणुसासिया साहुणा । भूरिकोवसंरंभनिब्भरो अंबरयले परसुमुल्लासिंतो सारंभमुल्लाविउमारद्धो हेरंबो—भगवं ! अणुजाणाहि [7]णाहियवाईण विणिवायणमिमाणं, अक्खिवणं हि परमसिंगारो खलयणस्स । साहुणा भणियं—भो महाभाग ! खमसु वारमिक्कमिममवराहमेयाण । 'जं तुब्भे आणवेह' त्ति उवसन्तो हेरंबो ।

मुणियमुणिमाहप्पा य पायवडणपुरस्सरं खमाविऊण गया ते नियघरं । साहियघरकज्जा य भुज्जो आगया साहुसमीवे । 'उचिय' त्ति मुणिणा सिट्ठो [8]एसिं जिणधम्मो । पइदिवसपज्जुवासणवसेण य परिणतो बाढं, जाया सम्मदंसणिणो, पयट्टा जिणपूयणाइकिच्चेसु । मुणी वि विहरितो अन्नत्थ । कालक्कमेण य कइवयसाहुसमेओ देसंतरेसु विहरिऊण भुज्जो समागतो तत्थेव । जाणियागमणा य समागया पुरिजणा उवरोहियसुया य । भत्तिसारं मुणिचलणजुयलं नमिऊण य आसीणा उचि-

१ °ग्घं सिग्घ° प्र० ॥ २ 'विघ्नपतिः' गणेशः ॥ ३ °डाडंड° प्र० ॥ ४ मुसुंवरेइ प्र० । चूरयति इत्यर्थः ॥ ५ त्राणार्थम् ॥ ६ ऊर्द्धीकृतपरुषशुण्डादण्डम् इत्यर्थः ॥ ७ नास्तिकवादिनोः 'विनिपातनं' मारणम् अनयोः ॥ ८ एसो जि° प्रतौ ॥

देवभद्दसूरि-विरइओ कहारयण-कोसो ॥ विसेसगु-णाहिगारो। ॥३२८॥

द्वादशावर्त्तवन्दनके शिवचन्द्र-चन्द्रदेव-कथानकम् ४६ । ॥३२८॥

यट्ठाणे । जहोचियं संभासिया साहुणा ।

एत्थंतरे 'जातो अणुओगसमओ'[1] त्ति उवट्ठिया वायणादिनिमित्तं अवरे साहुणो । तेहिं य कयमंडलिविसुद्धिपमुहकिच्चेहिं दिन्नं दुवालसावत्तसुंदरं वंदणयं, संदिसावितो अणुओगो, पंजलिउडा य जहोचियमासीणा सट्ठाणेसु । जहाकालमवलंबियवाणीए पयट्टिओ गुरुणाऽणुओगो । तयंते विदिन्नवंदणगा कयाणुतोगनिक्खेवावणियकाउस्सग्गा[2] उट्ठिया । तत्तो अदूरे ट्ठाऊण अहिगयसुत्तं परियत्तिउं[3] प[व]त्ता ।

एत्थंतरे पत्थावमुवलब्भ पुच्छियं सिवभद्देण—भयवं ! निर्यभालवट्ट[4]-गुरुचरणग्गपुणरुत्तघडिय-विहडियकरयलावत्तविसंतबंधुरो को एस वावारो ? कत्थ वा कीरइ ? को वा एयकरणे गुणो ? त्ति । गुरुणा भणियं—निसामेहि—

एसो हि दुवालसावत्तवंदणगविही सिस्सस्स गुरुं पडुच्च पूयाकरणत्थं वुच्चइ । जं च वुत्तं 'कत्थ कीरइ ?' त्ति तत्थ य—

पडिकमणे सज्झाए काउस्सग्गाऽवराहखामणए । आलोयण संवरणे [य] उत्तमट्ठे य वंदणयं ॥ १ ॥

मुणिणो पडुच्च जइ वि हु वंदणगविही इमो समक्खाओ । तह वि गिहिणो वि जुत्तो पच्चक्खाणाइकिरियासु ॥ २ ॥

मुणिणो[5] गिहिणो य जओ गुरुविणयविहिम्मि तुल्लयं बिंति । जिणपन्नत्तो धम्मो सव्वो वि य विणयमूलो जं ॥ ३ ॥

---

१ 'अनुयोगः' सूत्रार्थव्याख्यानं पाठनं वाचनं वा ॥ २ कृतानुयोगनिक्षेपणीयकायोत्सर्गाः ॥ ३ परावर्त्तितुम् ॥ ४ °यलाभवट्ट° प्रतौ ॥ ५ मुनेः गृहिणश्च ॥

वणमालालंकिया[1], पवरकरिकवोलपालि[2] व अणवरयपयट्टदाणवरिसा[3], दूरुग्गयपयावताराचंदनरिंदसुयपरिहरक्खिया कोसंबी नामं नयरी । तत्थ य दुवे पुरोहियसुया लोयविस्सुया सिवभद्दो सिरिओ य परिवसंति । ते कोऊहलिणो खन्नवाय-धाउवायाईसु परमरसिया[4] देवयावयाराइमंतविहाणेसु जं जं परिविन्नाणवंतं पुरिसविसेसमवलोयंति तं तं उवयरंति, पुच्छंति य—

जो जविसए रसितो सो तं पुच्छइ करेइ य अवस्सं । तंविमुहं[5] पुण न नरं पयट्टिउं तरइ तरणी वि ॥ १ ॥

देवमविभाविऊणं[6] मन्ने कज्जुज्जमो जमो व सयं[7] । जणइ निहणं जणाणं ही ! आसा कं न विनडेइ ? ॥ २ ॥

तीए य पुरीए पुरत्थिमदिसिविभागे[8] सयासन्निहियपाडिहेरं हेरंबभवणमत्थि[9] । तम्मि य मगहामहारायसुतो साहू सुदंसणो नाम पडिवन्नसविसेसतवोकम्मो, अप्पणो परिकम्मणनिमित्तं[10] गुरुणाऽणुन्नाओ सुसाण-सुन्नहराईसु[11] निवसंतो, अनिययवित्तीए य विहरंतो ट्ठिओ काउस्सग्गेणं । 'केरिसचित्तावट्ठंभो ?' त्ति परिक्खानिमित्तं तक्कालुप्पाइयतट्टवियसुंडादंडडामरोवघाएहिं[12] थेवं पि अखुद्धचित्तं पलोइऊण समुच्छलियातुच्छपमोयपब्भारो हेरंबो तं मुणिं वंदिऊण विन्नविउं पयत्तो—

---

१ कृष्णपक्षे वनमाला—आजानुलम्बी हारः, नगरीपक्षे वनमाला—उद्यानानां श्रेणिः ॥ २ कपोलपालिः—गण्डस्थलम् ॥ ३ करिगण्डस्थलपक्षे दानवर्षा—मदवारिनिर्झरणम्, नगरीपक्षे पुनः दानवर्षा—श्रमणमाहनादीनुपलक्ष्य दानप्रवृत्तिरूपा ॥ ४ रसिकः ॥ ५ तद्विमुखं पुनर्न नरं प्रवर्त्तयितुम् ॥ ६ दैवमविभाव्य ॥ ७ सदा ॥ ८ पूर्वदिग्विभागे सदासन्निहितप्रातिहार्यम् ॥ ९ 'हेरम्बभवनं' गणपतिमन्दिरम् ॥ १० परिकर्मणा—अभ्यासः ॥ ११ श्मशानशून्यगृहादिषु ॥ १२ तत्कालोत्पादितविस्तारितशुण्डादण्डभीषणोपघातैः ॥

सत्तमनिरयप्पुढवीपाउग्गो अज्जिओ वि पावभरो । दुक्करकिइकम्मविहीए सो य हणितो तहा तुमए ॥ १४ ॥
जह तइयनरयसीमं संपत्तो संपयं महाराया ! । इय दुज्जयजयजातो परिस्समो बाहई[1] तुहंगं ॥ १५ ॥
एयं निसामिऊणं पयंपियं मेहुमहेण[2] जइ एवं । ता भुज्जो जयबंधव ! करेमि साहूण वंदणयं ॥ १६ ॥
भणइ जिणो कज्जावेक्खयाए अणहत्तणं[3] तु भावस्स । ता दव्वओ च्चिय परं वंदणगमकिंचिकरमेव ॥ १७ ॥
ता सिवभद्दप्पमुहा ! वंदणयविहाणमेरिसपभावं । निम्मलगुणागराणं गुरूण निच्चं समायरह ॥ १८ ॥छ॥

एवं भणिए साहुणा जहट्ठियत्थायन्नणसमुप्पन्नपन्नाइरेगा वंदणयसुत्तपढणाईसु पयट्टा सिवभद्दाइणो । अहिगयसुत्तऽत्था य पारद्धाऽणुट्ठिउं । नवरं किं पि जाइमयमत्तो सिरिओ भाउणो अणुवित्तीए तमायरइ । एवं वच्चंति वासरा ।

अणुमोएइ य अणवरयं धम्मपडिवत्तिकारणत्तेण हेरंब[4]सिक्खावयं, अभिनंदेइ य पुणो सुदंसणमुणिणो दंसणं, सरइ य अभिक्खणं तद्दिन्नधम्मोवएसनिवहं सिवभद्दो इयरो य । नवरं न सम्ममवयरइ हिययम्मि वंदणयविही एयस्स ।

कालक्कमेण दो वि मरिऊण उववन्ना सोहम्मदेवलोए देवत्तेणं । तत्तो चविऊण वेयड्ढ[5]महागिरिवरावयंससच्छहे अतुच्छकणयपायारपेरंतपरिचुंबियंबरे अणेगविज्जाहराणवरयकीरंतच्छेरयनियरे गयणवल्लहनयरे कणयकेउणो विज्जाहररायस्स गिहिणीए देवइ[ना]माए कुच्छिंसि उववन्ना पुत्तत्तणेणं ति । जाया उचियसमए । पइट्ठियाइं जेट्ठस्स सिवचंदो इयरस्स

१ °इ रहं° प्रतौ ॥ २ 'मधुमथेन' कृष्णेन ॥ ३ °त्तणं न भा° प्रतौ । 'अनघत्वं' निर्दोषत्वं प्राधान्यमिति यावत् तु भावस्य ॥ ४ हेरम्बशिक्षापदम् ॥ ५ वैताढ्यमहागिरिवरावतंससमाने अतुच्छकनकप्राकारपर्यन्तपरिचुम्बिताम्बरे अनेकविद्याधरानवरतक्रियमाणाश्चर्यनिकरे ॥

चंददेवो त्ति [नामाइं] । अहिगयकलाकोसल्ला य पत्ता जोव्वणं, सिक्खविया य पिउणा नहगमणाइविज्जानिवहं ।

पयट्टा य मायंगीविज्जासाहणनिमित्तं मई चंददेवस्स । तत्थ य किर 'केच्चिराणि वि दिणाणि मायंगधूया परिणिऊण तग्गिहगएण विज्जासाहणं करेयव्वं' ति कप्पो । अह निवारिज्जमाणेण वि पिउणा, पडिखलिज्जमाणेण वि भाउणा, पुव्वभव[1]जाइमयावगन्नियगुरुविणयकम्मावज्जियनीयगोयकम्माणुभावतो चंददेवेण कुणालाविसए मायंगधूया दाण-सम्माणाईहिं आवज्जिऊण तज्जणगं परिणीया । वुत्थो[2] य विज्जासाहणपरायणो तीए समं घरवासेण । तहाविहकम्मदोसओ य जाओ अवरोप्परं परमपेमपयरिसो । 'किं इमिणा निरत्थएणं किलेसा-ऽऽयासकारिणा विज्जासाहणेणं ?' ति पडिभग्गो एसो तदाराहणविहाणाओ । विस्सुमरियमयंकनिम्मलविज्जाहरकुलाणु[3]रूवकायव्वविसेसो य इयरमायंगो व्व वट्टिउं पवत्तो हीणचेट्ठासु । कालंतरेण य जायाणि से डिंभाणि । निबिडं निबद्धो तन्नेहतंतुजालेहिं । पिइ-भाउएहिं वि 'अच्चंतविलीणसमाचारो' त्ति चत्ता दूरेण तस्संकहा ।

परिणीया य विज्जाहररायसुया वसंतसिरी नाम सिवचंदेण । तीए य समेतो सम्मेयसेलाईसु जहिच्छं कीलंतो दिणाइं गमेइ । अन्नया य—

जच्चवरतुरय-सिंधुर-बंधुररहनिव्वह[4]-सुहडपरियरितो । नहयलमावूरिंतो विमाणमालाहिं सव्वत्तो ॥ १ ॥
विविहाउहकरखेयरपरिकिन्नो धरियसेयवरछत्तो । पासट्ठियाहिं विज्जाहरीहिं उद्धूयसियचमरो ॥ २ ॥
अग्गट्ठियचारणकीरमाणगुणसंथवो पयत्तेण । कलयंठकंठगायणगिज्जंतुद्दामवरचरितो ॥ ३ ॥

१ पूर्वभवजातिमदावगणितगुरुविनयकर्मावर्जितनीचैर्गोत्रकर्मानुभावतः ॥ २ उषितः ॥ ३ °णुकलायव्व° प्रतौ ॥ ४ °वडस्रु° प्रतौ ॥

विज्ञाहररायसुतो स महप्पा जंबुदीवजगईए। पउमवरवेदिगाए कीलित्ता सगिहमणुचलितो ॥ ४ ॥
कह वि कुणालाविसयस्स मज्झभागेण वच्चमाणो य। तं कोउगेण ओयरिय भाउगं भासए एवं ॥ ५ ॥
किं भो महायस ! तए इहेव अच्चंतनिंदियम्मि कुले। किमिएण[1] व मयगकलेवरम्मि बद्धा रई दूरं ? ॥ ६ ॥
किं एत्थ पत्थणिज्जं ? किं न निरिक्खेसि रक्खसघरे व्व। ठाणट्ठाणाणद्धं पिसियं चम्मं च तिरियाणं ? ॥ ७ ॥
किं वा न विस्सगंधप्पबंध[....]इज्जमाणनासउडं। दूरेणं वच्चंतं लोयं एत्तो पलोएसि ? ॥ ८ ॥
एगत्थ हड्डखंडावगिन्नमन्नत्थ घोरसाणगणं। अवरे[2]त्थ गिद्ध-वायसमन्नत्तो कोल[3]तुमुलरवं ॥ ९ ॥
जइ ता मसाणतुल्लं पि गिहकुडीरं अहोऽभिनंदेसि। विचिगिच्छं केण समुव्वहसि ता ? नेव जाणामो ॥ १० ॥

एवं जेट्ठभाउणा सो संलत्तो समाणो चि[4]लायविलीणं नियकलेवरविरूवयमवलोइय, देवकुमाराणुरूवं च तस्सरीरसिरिमवधारिय, अ[5]यंडनिवडियविज्जुदंडज्झामिउ व्व विच्छायवयणो लज्जावसनिमिलंतनयणो सदुक्खं भणिउं पवत्तो—भो भाउग ! को न याणइ एयनरयागारविडंबणाभीमं महादुगुंच्छापयं मायंगत्तणं ? केवलं केणावि पुव्वदुकम्मदोसेण परिचत्तपवरविज्जाहररायलच्छिविच्छड्डो विमुक्कतुम्हारिसबंधुपडिबंधपबंधो एरिसे विजाइवावारपारावारे पाडिओ म्हि, एत्तो वि सव्वहा विलिओ म्हि नियदुव्विलसिएण असरिसावजसपंसुफंसणेण य, ता सव्वहा विभावेसु—किं मए पुव्वजम्मे दुक्कयं कयं ?

१ क्रमिणा इव ॥ २ °रड्डगि° प्रतौ। अपरत्र ॥ ३ कोलाः-शूकराः ॥ ४ 'चिलातविलीनं' किरातविरूपम् ॥ ५ अकाण्डनिपतितविद्युद्दण्डध्यामित इव। ध्यामितः-दग्धः ॥

एयकरणे गुणो पुण सव्वगुरूहिं निवेदिओ सक्खा। "वि[1]णतोवयार माणस्स भंजणा"पमुहवय[2]णेहिं ॥ ४ ॥
दव्वे भावे य दुहा वंदणगमिमं हि नवरमवसेयं। कोहाईहिं दव्वे भावे पुण निज्जराहेउं ॥ ५ ॥ अन्नं च—
निहणइ नीयागोयं नियत्तई दु[3]ग्गईउ अप्पाणं। वंद[4]णय[म्मि] पयत्तो वसुदेवसुतो इहं नायं ॥ ६ ॥
किर बारवइपुरीए जायवकुलनहयलामलमयंको। वसुदेवसुतो कण्हो त्ति भारहद्धाहिवो पुव्विं ॥ ७ ॥
रेवयसुसेलसंठियनेमिजिणिंदस्स भूरिपरिवारो। वंदणवडियाए गतो कयतन्नमणो य भत्तीए ॥ ८ ॥
त[5]क्कालुच्छलियविसिट्ठजीवविरिउल्लसंतसुहभावो। वंदइ दुवालसावत्तवंदणेणं मुणी सव्वे ॥ ९ ॥
अ[6]ह गाढपरिस्समनिस्सरंतपस्सेयसलिलसित्तंगो। गाढकिलामियकायऽट्ठिसंधिबंधो भणइ नेमिं ॥ १० ॥
नाह ! जरासंधवसुंधराहिवाईण घोरसमरेसु। प[7]डिभडभिडणुब्भडवियडकरि[8]घडाडोवभीमेसु ॥ ११ ॥
अणवरयमुक्कसर-झसरविसररुद्धंतरावगासेसु। नि[9]प्पिट्ठदुट्ठदट्ठोट्ठवंठअवठद्धभूमीसु ॥ १२ ॥
एवं न परिस्संतो किं कारणमेत्थ ? तो भणइ नेमी। दुज्जेयं विजियं नूणमिण्हि तुमए महाभाग ! ॥ १३ ॥ तहाहि—

१ विनयोपचारः ॥ २ "विणओवयार १ माणस्स भंजणा २ पूयणा गुरुजणस्स ३। तित्थयराण य आणा ४ सुयधम्माराहणा ५ ऽकिरिया ६ ॥" **आवश्यकनिर्युक्तिः** गाथा १२१५ ॥ ३ दुर्गतेः ॥ ४ वन्दनके प्रवृत्तः ॥ ५ तत्कालोच्छलितविशिष्टजीववीर्योल्लसच्छुभभावः। वन्दते द्वादशावर्त्तवन्दनेन मुनीन् सर्वान् ॥ ६ अथ गाढपरिश्रमनिःसरत्प्रस्वेदसलिलसिक्ताङ्गः। गाढक्लान्तकायास्थिसन्धिबन्धः भणति नेमिम् ॥ ७ प्रतिभटाश्लेषोद्भटविकटकरिघटाटोपभीमेषु ॥ ८ °रिकडा° प्रतौ ॥ ९ निष्पिष्टदुष्टदष्टोष्ठवण्ठावष्टब्धभूमीषु ॥

वन्दनकविधानोपदेशः

लज्जापए अलज्जा अलज्जणिज्जे य लज्जिरा बाढं । ही ! दुवियड्ढपुरिसा अप्पहियं पि हु न पेहंति ।। ३ ।। किं बहुना ?—

संसाराब्धिगभीरकुक्षिकुहरे दुष्कर्मजम्बालिनि,
व्यामग्नः कथमुद्धृतोऽयममुना कारुण्यपुण्यात्मना ? ।
किं कृत्वाऽस्य कृतार्थतां तदधुना यास्यामि ? दत्त्वाऽनृणः,
सम्पत्स्ये च किमङ्ग ? कैश्च वचसां स्तोमैः स्तुवे तद्गुणान् ? ।। १ ।।

इत्थं भक्तिभरादिवाऽऽनतवपुः व्याक्षेपमुक्ताशयः, पाणिभ्यां मुखवस्त्रिकां दधदलं सूत्रं समुच्चारयन् ।
धन्यः कोऽपि गुरुक्रमाम्बुजतटी[1]लुंठ्यल्ललाटः पुरो, दत्ते वन्दनकं प्रकल्पितकरावर्तक्रियाबन्धुरम् ।। २ ।।

[2]करोति मूर्खोऽपि गुरोः सपर्या, वि[3]त्तव्ययापादितपूजनेन ।
भावप्रधानेन तु वन्दनेन, विज्ञः परं कोऽपि विधातुमिच्छेत् ।। ३ ।।

इति किं भूरिभि[4]रुक्तैरुच्चैर्गोत्रस्पृहा यदि समस्ति । मोहव्यपोह[5]वाञ्छा, भवेत् तदेहाऽऽदृता भवत ।। ४ ।।

।। इति श्रीकथारत्नकोशे द्वादशावर्त्तवन्दनकफलवर्णनायां शिवचन्द्र-चन्द्रदेव-कथानकं समाप्तम् ।। ४६ ।।

१ °टीभुज्जल्ल° प्रतौ ।। २ किरोति मुक्खो पि प्रतौ ।। ३ वित्यव्य° प्रतौ ।। ४ °रिभक्तै° प्रतौ ।। ५ °वाञ्छां, च चेत् त° प्रतौ ।।

।।३२१।।

पडिक्कमणं ।

प्रतिक्रमणस्य स्वरूपम्

वंदणगविहीकुसलो पडिकमणस्स वि य जोग्गयमुवेइ । ता पडिकमणसरूवं एत्तो लेसेण दंसेमि ।। १ ।।
[1]पडिपहहुत्तं कमणं नियत्तणं पावकम्मजोगाओ । सु[2]द्धज्झवसायवसा तं पडिकमणं ति कित्तिंति ।। २ ।।
ते पुण मिच्छत्त-कसाय-अविरईमाइणो मुणेयव्वा । इह पावकम्मजोगा पडिकमणं जव्विसयमाहु ।। ३ ।।
रागेण व दोसेण व मोहेण व [3]पेल्लिओ कह वि जीवो । [4]सम्मग्गं परिहरिउं सच्छंदं कयपरिब्भमणो ।। ४ ।।
पुणरवि विवेयरज्जूए [.........] करिसिउं च पुणरुत्तं । दुक्कडगरिहाए दढं भुज्जो आणिज्जइ सठाणे ।। ५ ।।
जह निउणेणं आरोहगेण आरोहिऊण गिरिटंके । ओ[5]यारिज्जइ हत्थी सणियं सणियं सठाणम्मि ।। ६ ।।
तह दढपमत्तयाए विक्खित्तो सव्वओ इमो जीवो । सन्नाणेण ठविज्जइ भुज्जो वि हु सं[ज]मुज्जोगे[6] ।। ७ ।।
अपडिकमणे दोसा मिच्छत्ताईहिं हम्ममाणस्स । ते संभवंति जेसिं प[7]ज्जंतो जाइ नो वोत्तुं ।। ८ ।।
तव्विवरीयत्ते पुण नाणाइपसाहगा गुणा दिट्ठा । उभयत्थ वि दिट्ठंतो निद्दिट्ठो **सोमदेवो** त्ति ।। ९ ।।

तथाहि—अत्थि **कोसलदेससविसेसोवलद्धपसिद्धिसमिद्धिविसेसं** वावी-कूव-देवउला-ऽऽसमसमलंकियं नियनियकम्माणु-

१ पडिपडिहुत्तं कमिणं प्रतौ । प्रतिपथाभिमुखं क्रमणं निवर्त्तनं पापकर्मयोगात् । शुद्धाध्यवसायवशात् तत् प्रतिक्रमणमिति कीर्त्तयन्ति ।। २ °द्धस्सव° प्रतौ ।। ३ प्रेरितः ।। ४ सन्मार्गं परिहृत्य ।। ५ अवतार्यते ।। ६ °ज्जोगो प्रतौ ।। ७ °ज्जंते जा° प्रतौ ।।

सेवणपवन्नचउवन्नविभागं कुंडउरं नाम नयरं । जत्थ सया सिंहंडिउड्डंडसयवत्तवणो सिरिसेणो नरिंदो परिसरपएसो य, अंणहकीलालालसो बुहजणो बालवहूवग्गो य । तत्थ य पुरे सया वि वत्थव्वो सोमदेवो नाम वणिओ, सुजसा नाम गेहिणी । जहावट्ठियजिणधम्मपरिपालणपरायणाण य ताण परोप्परपणयसाराइं वच्चन्ति वासराइं ।

एगया य सो रयणीए सुत्तविउद्धो विचिंतिउं पवत्तो—

अट्ठविहकम्मपोग्गलगाढावेढियपँएसनिवहस्स । सच्छंदयाए कत्थइ पयट्टिउं अलँभमाणस्स ॥ १ ॥
कइया वि पयंडसमुल्लसंतवँम्महमहावियारस्स । कइया वि भूरिधण-भवण-सयणचिन्ताउलमणस्स ॥ २ ॥
कइया वि तिव्वँकोवग्गिवग्गिरुद्दामदाहनिवहस्स । जीवस्स निरंतरमित्थमसुहवावारनिँरयस्स ॥ ३ ॥
संसारसायरे निव्वडिरस्स कहमिव भवे परित्ताणं ? । संभाविज्जइ कह वा कम्मट्ठयगंठिनिट्ठवणं ? ॥ ४ ॥
इय एवंविहचिंतासंतइसंतप्पमाणगत्तस्स । तस्स वणियस्स सूरो समुग्गओ उदयसेलम्मि ॥ ५ ॥

तहाविहो य सो भणिओ गिहिणीए—अज्जपुत्त ! किमेवं विसन्नचित्तो व कत्थइ अबद्धचक्खुलक्खो अंतो च्चिय ज्झायसि ?

१ श्रीषेणराजपक्षे शिखण्डिनां—बाणानाम् उद्दण्डाः—प्रचण्डाः शतपत्राकारधारिणो व्रणा यस्य, रणदक्ष इत्यर्थः । पुरपरिसरप्रदेशाः पुनः शिखण्डिभिः—मयूरैः उद्दण्डानि—सुशोभीनि शतपत्राणां—कमलविशेषाणां वनानि यत्र एवंविधाः ॥ २ बुधजनः अनघासु—विशुद्धासु क्रीडासु लालसः—सोत्कण्ठः । बालवधूवर्गश्च अनखासु—नखच्छेदादिवर्जितासु क्रीडासु—रतिक्रीडादिषु लालसः ॥ ३ प्रदेशाः—आत्मप्रदेशाः ॥ ४ °लसमा° प्रतौ ॥ ५ मन्मथः—कामदेवः ॥ ६ तीव्रकोपाग्निवल्गितृउद्दामदाहनिवहस्य ॥ ७ °निवहस्स प्रतौ ॥ ८ निपतितुः ॥

को य तद्दोसनिग्घायणसमत्थो संपयं अणुट्ठाणविसेसो ? अहो ! एगजणणीतुल्लगब्भसंभवे वि तव कल्लाणाणुकूला मई, मम एवं तव्विवरीय त्ति ।

अह परमविम्हयमुव्वहंतेण रायसुयसिवचंदेण सुमरिया भगवई रोहिणी देवया, पूयापयरिसपुरस्सरं पुच्छिया य—भयवई ! किं कारणं तुल्ले वि ज़णणी-जणगसंबंधे एयस्स अम्ह भाउणो एवंविहा हीणकुलनिवासलालसा बुद्धी जाय ? त्ति । ततो भयवईए ओहिन्नाणोवओगमुणियजहट्ठियवइयराए सिट्ठो से पुव्वभवनिबद्धो जाइमयावलेवमओ सुगुरुविणयकम्मविमुहोऽणुट्ठाणविसेसो । तं च सोच्चा जायं दोण्हं पि जाईसरणं ति । अह जहट्ठिओवलद्धवत्थुपरमत्थेण सिवचंदेण परमसंवेगमुव्वहंतेण भणितो चंददेवो—भाउग ! किमित्तो वि तुज्झ साहिज्जइ ? साहियं चिय जहट्ठियं सव्वं भयवईए, कुणसु जमियाणिं करणिज्जं ति । गतो सिवचंदो जहागयं, सविसेसगुरुवंदणाइकिच्चेसु निच्चुज्जतो जातो, कल्लाणपरंपराभायणं च संवुत्तो ।

इयरो य अच्चंतचित्तसंतावताविज्जमाणसव्वंगो 'हा हा ! महापावो हं सुगुरुपयपउमफरिस[सु]कयदूरीकतो किमियाणिं करेमि ? कत्थ वा वच्चामि ?' त्ति संसयसयवाउलहियओ दुँक्कुडुंबम्मुववद्धो, ईसिं पि अप्पाणं पंकखुत्तो व करिवरो उद्धरिउमपारिंतो, गुत्तिखित्तो व दोगच्चचक्कंतो अकयअप्पहितो पहिउ व मच्चुमुहमोगाढो त्ति ।

तँहसलहिए वि सइ सुहकरे वि केसिं पि सुगुरुविसए वि । वंदणगविहीए मई लज्जाइवसा न संभवइ ॥ १ ॥
गणहरविरइयसुत्तं हरि-चक्कहरेहिऽणुट्ठियं चँ तयं । वंदणगं दिंता तह वि बालिसा गुरुसु लज्जेंति ॥ २ ॥

१ दुष्कुटुम्बे उपबद्धः ॥ २ तुह प्रतौ । तथाश्लाघितेऽपि सदा सुखकरेऽपि ॥ ३ च लयं प्रतौ ॥

तत्थ एगो गामिल्लगो हणणत्थं उवट्ठिए दट्ठूण उत्तरोत्तरं पलायमाणो मारिओ तेहिं । इयरो पुण 'भो भो ! कीस मारेह ? पसीयह, साहह जमिह कीरइ' त्ति भणमाणो उ[द्ध]ट्ठिओ चेव पडिवालिंतो वुत्तो रायपुरिसेहिं—जइ रे ! जेहिं पएहिं इह पविट्ठो तेहिं चेव नियत्तसि ता न हम्मसि त्ति । मरणमहाभयविहुरो य जहुत्तविहीए पडिनिक्खंतो एसो ।

एत्थ य एस उवणओ—जो सुत्तावेढिओ पएसो सो 'पमायपडिसेवाठाणं रक्खियव्व'–न्ति । आणा रायट्ठाणीयतित्थय-रस्स । जे य दुवे गावेल्लया ते अवराहकारिणो । तत्थ जो उत्तरोत्तरं आणालंघणेण पयट्टो सो राग-दोसट्ठाणीएहिं रक्खगेहिं हणिज्जइ दीहसंसारदंडेण । जो तप्पएहिं पडिनियत्तो संवे[ग-वे]रग्गाइभावणाए सो न तव्विघायमावन्नो ॥ छ ॥

ता भो **सोमदेव** सावय !

कस्स व न होज्ज खलियं ? पमायचक्केण को न अक्कंतो ? । को व न दुद्दंतिंदियमंदीकयधम्मवावारो ? ॥ १ ॥

किंतु विणियत्तइ सयं ज्झड त्ति जो निंदियत्थकिच्चाओ । "हा ! दुट्ठु चेट्ठियं चिंतियं च" इच्चाइवयणेहिं ॥ २ ॥

झूरंतो अप्पाणं पच्छायावेण डज्झमाणो य । अंतोनिहित्तहुयवहकणओ झुसिरो वणतरु व्व ॥ ३ ॥

सो[2] सुज्झइ न य लिप्पइ भवसरसीए चिरं वसंतो वि । उप्पन्नो वि य तहियं पंकयमिव पावपंकेण ॥ ४ ॥

एत्तो च्चिय झाणगओ दुव्वयणायन्नणेण कयकोवो । विस्सु[3]मरियसामन्नो पसन्नचंदो नरिंदरिसी ॥ ५ ॥

रुद्दज्झाणो स[4]गलियसत्तमनिरयाणुकूलकम्मो वि । तं लहु पडिकमंतो संपत्तो केवलालोयं ॥ ६ ॥

१ प्रामेयकौ ॥ २ **सो जुज्झ**° प्रतौ । स शुध्यति न च लिप्यते ॥ ३ विस्मृतश्रामण्यः ॥ ४ सकलितसप्तमनरकानुकुलकर्माऽपि ॥

अवरे वि जमुणनिवरिसि-चिलाइपुत्ताइणो महाभागा । दुच्चरिय[1]पडिकमणं कुणमाणा वंछियं पत्ता ॥ ७ ॥

इय भो महायस ! सया पडिकमणे उज्जओ हवेज्जासि । अक्खेवेणं कम्मक्खयं तुमं जइ समीहेसि ॥ ८ ॥ तहा—

आवस्सएण एएण सावओ जइ वि बहुरओ होइ । दुक्खाणमंतकिरियं काही अचिरेण कालेण ॥ ९ ॥

जहा विसं कोट्ठगयं मंत-मूलविसारया । विज्जा हणंति मंतेहिं तो तं हवइ निव्विसं ॥ १० ॥

एवं अट्ठविहं कम्मं राग-दोससमज्जियं । आलोयंतो य निंदंतो खिप्पं हणइ सुसावओ ॥ ११ ॥

इमं च सव्वमवक्खिव[त्तचि]त्तो[2]ऽवधारिऊण, ससुत्तं सअत्थं पडिकमणविहाणं च जाणिऊण, परमपरितोसमुव्वहंतो भववारि-रासिसमुत्तिन्नं [व] अप्पाणं विभाविंतो पडिगओ **सोमदेवो** सगिहं । निवेइयमिमं गेहिणीए । सा वि समुल्लसंतविसुज्झमाण-ज्झव[साया] सायरं पवन्ना तं मग्गं । उभयसंज्झपडिकमणनिरयाण य ताण वच्चंति वासरा ।

अह केणइ पुव्वभवजणियासुहकम्मोदयवसेण [3]झीणो से लच्छिविच्छड्डो, पहीणा जणपूयणिज्जया, विगलियं मा[4]णिस्स-रियं, धम्मवासणा वि सणियसणियमोसक्किउमारद्धा । भणिओ य सो गिहिणीए—अज्जउत्त ! जइ कह वि देव्वदुज्जोगेण बज्झो अणिच्चो सव्वाणत्थहेऊ दुक्खसंरक्खणिज्जो धम्मविग्घोहकारी, एत्तो च्चिय सप्पुरिसेहिं परिहरिओ अत्थो तुच्छीहूओ, ता कीस एयविवरीए, एत्तो च्चिय सव्वसमीहियफलदाणदुल्ललिए धम्मत्थे वि तुमं मंदायरो हवसि ? तुच्छधणो वि धम्म-धणेण धणवं चेव पुरिसो इह-परभवे य अवस्समसेसकल्लाणभागी य त्ति । तओ कुविओ **सोमदेवो** पयंपिउं पवत्तो—आ

१ दुश्चरितप्रतिक्रमणम् ॥ २ °**त्तो व धा**° प्रतौ ॥ ३ क्षीणः ॥ ४ मानैश्वर्यम् ॥ ५ °**काही ए**° प्रतौ ॥ ६ °**लियध**° प्रतौ ॥

पावे ! ममावि पुरओ पंडिच्चं[1]मुव्वहसि ? हिओवएसदाणाय मुहरत्तणं[2] दंसेसि य ? त्ति । तओ 'धम्मोवएसबाहिरीहूओ' त्ति उवेहिओ सो गिहिणीए, पयट्टो य सच्छंदयाए पावट्ठाणेसु । तह वि 'पारद्धं' ति सप्पुरिसाभिमाणेण न चयइ दव्वओ पडिक्कमणपडिवत्तिं । वच्चंति वासराइं ।

नवरं पडिक्कमणाइकिच्चपडिकूलकम्मकारिणं दट्ठूणं तं हसिउमारद्धा लोगा, भणिउं पवत्ता य—भो ! किमेवं विसरिसं तुह चेट्ठियं ? ति । सो भणइ—न समण व्व सव्वसावज्जजोगविरया वयं, जं अणुट्ठेमो तप्फलभागिणो भवामो त्ति । कुसलसावएहिं जंपियं—भद्द ! न जुज्जइ तुह एवमुल्लविउं, नियभूमिगाविसरिसवित्तीए हि जायइ धम्म[3]खिंसा, तत्तो य संकिलेसो, तओ य परमं अबोहिबीयं, तत्तो य दीहसंसारदंडो, किंच—सव्वा वि धम्मकिरिया रोगितिगिच्छापडितुल्ला विवज्जएण कीरमाणी अणत्थफला, विसेसओ मुद्धबुद्धीणमालंबणजणगत्तणेणं ति । एवं फुडक्खरं सो वुत्तो वि 'न कामवित्ती वयणिज्जं पेहइ' त्ति मोणमवलंबिऊण पारद्धकिच्चेसु वट्टिउं पवत्तो ।

अन्नया य तेण पुव्वपुरिसविलिहियवहिगाइ पलोयंतेण दिट्ठं सुगोवियं भुंज[4]खंडं । तं च वाइयं फलत्तेणं । अवगयं च तल्लिहियाणुसारेण सगिहपिट्ठओ चिरकालठवियं पंचसुवन्नलक्खपमाणं निहाणं । परितुट्ठो एसो । सुहमुहुत्ते य बलिपक्खेवपुरस्सरं पयट्टो खणिउं । 'वंतराहिट्ठियं' ति पाउब्भूया उप्पाया । भीओ एसो नियत्तो निहाणप्पएसखणणाओ । उच्छलियपबलच[5]उत्थकसायनडिज्जंतो य अवहीरिऊण दंसणविरुद्धयादोसं, अंगीकाऊण कुलविलक्खणायारं, अगणिऊण साहम्मियलो-

१ पाण्डित्यमुद्वहसि ॥ २ मुखरत्वं दर्शयसि ॥ ३ धर्मनिन्दा इत्यर्थः ॥ ४ भूर्जपत्रखण्डः ॥ ५ चतुर्थकषायो लोभः ॥

त्ति । सोमदेवेण वि 'सद्धम्मचारिणि' त्ति सिट्ठो सव्वो वि निययाभिप्पाओ । सम्मं परिभाविऊण भणियमणाए—अज्जउत्त ! गुरूवएसविरहेण निउणेण वि न मुणिज्जइ एवंविह[व]त्थुवियारपरमत्थो, ता वच्चाहि भगवओ सिवभद्दसूरिणो समीवे, सविणयकयप्पणामो य पुच्छसु जहट्ठियत्थमिमं ति । 'तह' त्ति पडिसुणिय[1] गओ सोमदेवो सूरिसयासे, जहाविहिं [वंदिय] सिट्ठो य निययाभिप्पाओ । सूरिणा भणियं—भो देवाणुप्पिय ! एवंविहसुहुमपयत्थपरिन्नाणाभिमुही न संभवइ भवाभिनंदिणो[2] सव्वहा सेमुही[3], ता सीसंतमिममवहिओ होऊण आयन्नसु—राग-दोसाईहिं परज्झमाणस्स[4] हि जीवस्स अवस्सं पावट्ठाणेसु पयट्टइ मई, सा य जह पयट्टा तहेव नियत्ताविंतस्स पडिक्कमणं किंत्तिति, तं पुण अद्धाणदिट्ठन्तेण एवमवसेयं—

किरि केणइ नरवइणा अपुव्वपासायनिवेसनिमित्तं भूमिलक्खणवियक्खणे नरे पेसिऊण पलोयावियं सल्लक्खणोववेयं खोणिमंडलं । तं च सुनिच्छिऊण तच्चउद्दिसिविभागनिक्खित्तसुत्तविन्नासा तल्लक्खणविहिन्नुणो रायाणं भणिउं पवत्ता—देव ! (अध्व-दृष्टान्तः)
अणुट्ठिओ अम्हेहिं तुम्ह आएसो परं तद्देसनिहित्तसुत्तं अच्चंतमप्पमत्तेहिं तहा कायव्वं जहा न केणइ लंघिज्जइ, 'जेण य केणइ लंघिज्जइ तं सो हंतव्वो, तेहिं चेव पएहिं पुणरवि नियत्तंतो रक्खणिज्जो' त्ति ए[त्थ] कप्पो । इमं च आयन्निऊण राइणा तप्प[5]उत्तविहाणवेइणो निरूविया तत्थ पुरिसा, उक्खयतिक्खखग्गग्गा य ट्ठिया चाउद्दिसं । मुक्को य दूरेण सो पएसो नयरनिवासिजणेण । नवरं कत्तो वि गामेल्लुया दुवे पुरिसा अमुणियतहाविहवइयरा कहिं पि वक्खित्तचित्ताणं रायपुरिसाणं ज्झड त्ति जहुत्तसुत्तमइलंघिय पविट्ठा तयब्भंतरे । ते य पलोइऊण 'हण हण' त्ति भणमाणा उग्गीरियनिसियासिणो धाविया रायपुरिसा ।

१ 'प्रतिश्रुत्य' अङ्गीकृत्य ॥ २ संसारबहुमानिन इत्यर्थः ॥ ३ 'शेमुषी' बुद्धिः ॥ ४ °रस्समा° प्रतौ । पराधीनस्येत्यर्थः ॥ ५ तत्प्रयुक्तविधानवेदिनः ॥

तं च सोच्चा करुणापूरपूरिज्जमाणहियएण वज्जरियं तावसेण—पुत्त ! गिण्हसु जलणं, केवलं तुह विणिवायणत्थमेसो सव्वो पावजोगिणो उवक्कमो, जओ सव्वओ पज्जालिय थोहरं तं[4] खिविऊण तस्संजोगजाय[जाय]रूवेण ते सरीरेण सकज्जं साहिस्सइ, अन्ने वि एवं विणस्समाणा दिट्ठा अणेगे अम्हेहिं, ता कीस अकयकुसलकम्मो निरत्थयं निहणं वच्चसि ? त्ति, वच्चसु एत्तो वि नियगिहं, इहरहा तव्वयणवागुराविसमपडिओ य मयसिलिंबो[5] व्व विवज्जिहसि, किं न वच्छ ! पेच्छसि ममावि एवंविहदुट्ठजण-जोगाओ भग्गमिममुत्तमंगं दाहिणबाहू य ? । सोमदेवेण भणियं—भयवं ! कहं पुण एयं जायं ? ति साहेसु । तावसेण भणियं—जहा वच्छ ! तुमं तहा अहं पि एगेण धाउवाइणा पावेण विप्पयारिऊणं[6] आणीओ एत्तो अदूरे, रसकूवियावसेण जज्जरियसीसो भग्गबाहुदंडो निरसणो तइयदिवसे [7]गाढोभयकरधरियरसपाणगायगोहापुच्छपेरंतो नीहरिओ कूवियाकुहराओ, छुहाकिलंतकाओ य तप्पएसोवागयकंदमूलत्थितावसेहिं करुणाए सणियं सणियं आणीओ इहाऽऽसमे, बंधु व्व परिवालिओ कुलवइणा, पगुणीहूयसरीरो य अणुसासिओ हं । जहा—

मणवंछियत्थसाहणपच्चलमेक्कं वयंति इह धम्मं । तेण परिग्गहियाणं गिहीण सव्वं पि संपडइ ॥ १ ॥तहाहि—
एत्तो च्चिय हय-गय-जोहजूह-रहनिवहमणहरं रज्जं । एत्तो च्चिय पणयपबंधबंधुरो सुंदरीवग्गो ॥ २ ॥
एत्तो च्चिय धवलुत्तुंगचंगबहुभूमभवणवित्थारो । एत्तो च्चिय दीणा-ऽणाहदाणजोग्गो धणाभोगो ॥ ३ ॥

१ कथितम् ॥ २ मारणार्थमित्यर्थः ॥ ३ °लिए थोवं तं खि° प्रतौ ॥ ४ त्वाम् ॥ ५ 'मृगशिलिम्बः' हरिणशिशुः ॥ ६ विप्रतार्य ॥ ७ गाढोभयकरधृतरसपानकायातगोधापुच्छपर्यन्तः ॥

एत्तो च्चिय कायकिलेसविरहिओ वि हु समीहियं कुणइ । एत्तो च्चिय सरयमयंकनिम्मलं पाउणइ कित्तिं ॥ ४ ॥
एत्तो च्चिय देवत्तं भुज्जो सुगईगमं पि एत्तो वि । सोहग्गं रूवा-ऽऽरोग्गयं पि एत्तो च्चिय लहेइ ॥ ५ ॥
इय सव्वकज्जसाहणपढमपयं धम्ममेव मुणिऊण । तस्साऽऽवज्जणहेउं वच्छ ! पयत्तं सया कुणसु ॥ ६ ॥
जे वि य इस्सर-नरवइ-सत्थाहप्पभिइणो महाभागा । दीसंति जए धण-धन्न-पणइणी-पुत्तसुहजुत्ता ॥ ७ ॥
ते वि न हु धाउवायप्पमुहोवाएहिं तारिसा हुंति । किंतु सुविढत्तधम्मप्पभावओ होउ ता सेसं ॥ ८ ॥

एवं च कुलवइणा भणिओ हं तावसदिक्खं पवज्जिऊण इहेव गुरुपायपज्जुवासणं कुणंतो चिट्ठामि, ता भद्द ! मम दिट्ठाणिट्ठघडणाणुमाणेण मुणियतहाविहावयावडणो लहुं पलायसु त्ति ॥

तओ भयसंभंतो 'तह' त्ति पडिसुणिय पणमियतावसचलणो गओ सोमदेवो नियपुरं । दिणावसाणे य पडिक्कमणपयट्टस्स तहाविहसुहज्झवसायवसओ समुप्पन्नपुव्वदुच्चरियनिंदाविसेसस्स तस्स जाया तत्तालोयाभिमुहा सेमुही, पलीणा दुव्वासणा, पणट्ठो दुट्ठचेट्ठियपक्खवाओ, ववगओ दव्वाभिलासो त्ति । एवं च दव्वावस्सयकिरिया वि भावपडिक्कमणकारणमुवगया एयस्स । 'अहो ! मिच्छद्दिट्ठिणो वि कुलवइस्स तस्स जारिसो धम्मत्थपरियाणणपरिणामो, सम्मद्दिट्ठिणो वि अम्हारिसस्स न तारिसो' त्ति परं निव्वेयमुव्वहंतो सुगुरुसयासे सम्मं पवज्जिऊण पच्छित्तं स महप्पा तप्पभिइ परिचत्तनिंदियासेसकिच्चो अच्चंतं धम्मुज्जओ जाओ । तओ पसरिया से कित्ती । जाया विसिट्ठधम्मिट्ठजणेसु परिसंखा ।

एवं वच्चंतेसु वासरेसु तस्साऽऽवस्सयविहिं विसुद्धं पेहमाणो निहाणवंतरो सुत्तविबुद्धस्स आगंतूण भणिउं पवत्तो—भो

सोमदेव ! तुह निम्मलाणुट्ठाणनिट्ठारंजिओ म्हि संपयं, ता अणुगिण्हसु पुव्वजिघिच्छियं निहाणं ति, अन्नं पि जं भो ! रोयइ तं वरं वरेसु त्ति । **सोमदेवेण** जंपियं—भो महाभाग ! एत्तो पवन्नधम्मगुणाण निव्विग्घपज्जंतकिच्चमेव पत्थणिज्जं, ता अलं निहाणाइसंकहाए त्ति । 'अहो ! निल्लोभया, अहो ! परलोगप्पसाहणधम्मगुणेगचित्तय' त्ति परमपक्खवायमुव्वहंतो वंतरसुरो तग्गिहेगकोणे निसिरिऊण निहाणकणयं गओ जहागयं । **सोमदेवो** वि—

अत्थं जसं च परमं धम्मं च पवड्ढमाणसुहभावं । संवेगं निव्वेयं च उत्तमं नाणमणहं च ॥ १ ॥

तं गुणपयरिसमसरिसमणुपत्तो थोयवासरेहिं पि । जेणं गुणवंताणं सो च्चिय निदंसणीहूओ ॥ २ ॥ किं बहुणा ?—

न यत् कनककोटिभिः प्रतिदिनं वितीर्णाभिरप्यनल्पजपकल्पनाव्यतिकरैरनेकैरपि ।
तपोभिरथवा कृतैरसकृदङ्गदाहक्षमैरशेषनयवर्त्मवत्समयशास्त्रपाठैरपि ॥ १ ॥
क्षयं व्रजति पातकं चिरभवप्रबन्धार्जितं, पुरस्कृतमनन्तशोऽप्यविरति-प्रमादादिभिः ।
प्रतिक्रमणकर्मणा तदपि याति सद्यः क्षयं, क्षपाकरकराहतं तम इवोद्धतं सर्वतः ॥ २ ॥
कारुण्यतो जिनवरैः कथितोऽप्युपायः, संसारपारगमनार्थमयं महीयान् ।
पापीयसां कथमनध्यवसाय-हीला-ऽऽलस्यादिभिर्निविशते हृदि नो तथापि ? ॥ ३ ॥

इति पापपङ्कपटलप्रक्षालनविमलसलिलकल्पेऽस्मिन् । कः कुर्वीताऽऽवश्यकविधौ सुधीर्नूनमालस्यम् ? ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे प्रतिक्रमणगुणचिन्तायां सोमदेवकथानकं समाप्तम् ॥ ४७ ॥

थलज्जं, [1]निहाणलाभोवायजाणणत्थं ओलग्गिउमारद्धो य पतितित्थिए, उवयरिउं पयट्टो [2]जक्ख-रक्खसाइवंतरि त्ति ।

एवं च निस्सारीकयासेसगुणो, जोगि व्व परिचत्तावरकायव्वो, तदत्थदिन्नेक्कचित्तो ज्झायंतो एगया संभासिओ देसंतरागएण **कविलाभिहाणजोगिएण**—भो सेट्ठिसुय ! किमेवमा[3]दैन्नो व्व पइदिणं दीससि ? त्ति । 'जइ पुण एत्तो वि परित्ताणं होइ' त्ति संभावितेण य **सोमदेवेण** साहिओ निहाणलाभवुत्तंतो । जोगिणा भणियं—भद्द ! अत्थि मह किं पि पओयणं, तस्साहणे जइ तुमं मह सहाई होसि ता अहं तुह [4]ऍयमट्ठमकालविलंबं करयलगोयरीकरेमि त्ति । लोभाभिभूएण य पडिवन्नमिमं **सोमदेवेण** ।

पत्थावे य पुच्छिओ **कविलो**—किं पुण पयोयणं ? ति । तेण भणियं—अत्थि **सोरट्ठाविसए कयंबगिरी** नाम सेलो, तहिं च [5]रुंहिरच्छीरथोहरपओगेण सुवन्नसिद्धी जायइ त्ति तत्थ गंतव्वं, तप्पडिनियत्तो य तुह कज्जं सज्जो साहिस्सामि त्ति । गहियसंबला य गया दो वि **कयंबगिरिं** । दिट्ठो जहुद्दिट्ठो थोहरो । संपाडियं तव्विहाणं । हुयवहाणयणत्थं च पेसिओ **सोमदेवो** । तं च कहिं पि अपेच्छमाणो गओ तावसासमं । अग्गिं गिण्हंतो य पुच्छिओ एगेण थेरतावसेण—वच्छ ! किमिमिणा कायव्वं ? ति । तेण भणियं—अत्थि किं पि कज्जं । तावसेण जंपियं—पुत्त ! एसो हि धम्महुयासणो मंसपागाइसावज्जकज्जे न दाउं जुज्जइ, ता नियधम्मगुरुसव्वहसाविओ तुमं जहत्थं संसिऊण गिण्हसु इमं ति । तओ एगंते जहट्ठिओ कहिओ से **सोमदेवेण** सव्वो वुत्तंतो ।

१ **निनिहाण°** प्रतौ ॥ २ **°क्खसेक्खाइवंतेरि** प्रतौ ॥ ३ दुःखित इवेत्यर्थः ॥ ४ एतम् अर्थम् अकालविलम्बम् ॥ ५ रुधिरक्षीरस्नुहिप्रयोगेण ॥

तेउरप्पहाणा वासवदत्ता अग्गमहिसी । ससि व्व जणमण-नयणाणंदो ससी नाम ताण पुत्तो । पुव्वभवावज्जियसुकयाणुरूवं च [1]सुहमणुहवंताण ताण वच्चइ कालो ।

अन्नया य सो रायपुत्तो [2]केइवयासवारपरियरिओ जच्चतुरयारूढो वणवराहेण विद्दविज्जमाणं निसामिऊण नियाराममनिवासिरुरु-कुरंगपमुहतिरियगणं महया संरंभेण गओ तप्पारद्धीबुद्धीए । सो य वणवराहो घोरघोणानिलुल्लालियसम्मुहोवितितिरियवग्गो [3]उग्गदाढाकडप्पकप्परियतुरगचरणभागो इओ तओ हयमहियं महीवालसुयपरियणं कुणंतो धाविओ [अडवी]हुत्तं । रायसुओ वि [4]आयन्नंतायड्ढियकोडंडडंडुड्डीणचंडकंडपरंपराहिं पि अछिप्पमाणम्मि तम्मि बाढमुत्तम्ममाणमाणसो अणवरयकसाघायतोरवियतुरंगो लग्गो तम्मग्गेण । वणवराहो वि—

कहिं पि गिरिविब्भमो कहिं वि तुच्[5]छैहीणंगओ, कहिं पि पवणुब्भडुच्छलियवग्गुवेगो दढं ।
कहिं पि हु [6]पहुत्तओ सणियमुक्कएक्कक्कमो, कहिं पि महिमंडलुल्लिहणरेणुभीमाणणो ॥ १ ॥
किमेस वणवारणो कयसरीरसंकोयणो ?, किमंग ! [7]जमसेरिभो सियमुहग्गसिंगुब्भडो ? ।
स एस अहवा ह[री] पुण किमुट्ठिओ मेइणिं, समुद्धरिउमेरिसिं तणुसिरिं समालंबिउं ? ॥ २ ॥
इय संसइयमणो वि हु तमेगमत्ति णेगहा पलोइंतो । रायसुओ दीहपहं पि लंघियं फुडमयाणंतो ॥ ३ ॥

१ सुहसुहम° प्रतौ ॥ २ कतिपयाश्ववारपरिकरितः ॥ ३ उग्गाडदा° प्रतौ । उग्रदंष्ट्रासमूहविदारिततुरगचरणभागः ॥ ४ आकर्णान्ताकृष्टकोदण्डदण्डोड्डीनचण्डकाण्डपरम्पराभिरपि अस्पृश्यमाने ॥ ५ °च्छदीणं° प्रतौ ॥ ६ प्रभुत्वात् ॥ ७ 'यमसैरिभः' यममहिषः ॥

जा गहिरवणनिगुंजं पविसइ ता नियइ मुणिवरं एगं । काउस्सग्गोवगयं न पुणो तं वणवराहं ति ॥ ४ ॥

'किमिमं इंदजालं ? बिभीसिया व ?' त्ति विम्हइयमाणसो 'अहो ! अमाणुसे इह पएसे कोइ एस साहू धम्मज्झाणपवन्नो व्व वट्टइ, ता होउ कोइ एस वराहो, एयं ताव महामुणिं वंदामि' त्ति विभाविंतो तुरगाओ ओयरिऊण पराए भत्तीए पडिओ मुणिणो चलणेसु । उचियसमयसमुस्सारियकाउस्सग्गेण य साहुणा दिन्नासीसो सीसो व्व विणयपणओ आसीणो रायसुओ तयंतिए । सिट्ठो य 'विणीओ' त्ति साहुणा से सव्वन्नुधम्मो । सद्दहण-नाणसारं सरहस्सं पडिवन्नो य तेण ।

अह पत्थावे जाए 'एवंविहदुक्करकारयाणमेवंविहमहामुणीण न किं पि अविन्नायमत्थि' त्ति विभाविंतेण रायसुएण पुच्छिओ साहू—भयवं ! किं कारणं तहाविहविचित्तरूवो सो वराहो अप्पाणं दंसिऊण एत्थ पएसे उवगयस्स मज्झ सहसा अदंसणमुवगओ ? त्ति । साहुणा भणियं—वच्छ ! भवंतरवेरिओ खुद्दवंतरसुरो एसो वणवराहरूवेण तुमं छलिउमिच्छंतो ताव आगओ जाव एत्तियभूभागं, अखुभियचित्तं च भवंतं वियाणिऊण अदंसणीहूओ त्ति ।

अह [1]मुणिदंसणपाउब्भवंतपरितोसो तव्विप्पलंभणं पि गुणावहमवधारिंतो रायसुओ भणिउं पवत्तो—भयवं ! को एस [2]अहोमुहोलंबियभुयपरिहपहाणो अच्चंतनिच्चलीकयउड्ढजाणुसंठाणो किच्चवि[से]सो [जं] तुब्भे सम्मं पवज्जिऊण इत्थं ट्ठिया ? किं वा इमस्स कालमाणं ? किं व फलं ? ति । मुणिणा भणियं—वच्छ ! निसामेसु, एसो हि एवंविहसरीरसंठाणविसेसो काउस्सग्गो नाम तवोविसेसो ।

कायोत्सर्गस्य स्वरूपम्

१ मुनिदर्शनप्रादुर्भवत्परितोषः तद्विप्रलम्भनमपि ॥ २ अधोमुखावलम्बितभुजपरिघप्रधानोऽत्यन्तनिश्चलीकृतोर्ध्वजोनुसंस्थानः ॥

अट्ठविहकम्मसत्तुस्स भूरिसंसारसाहिबीयस्स । निम्महणत्थं इत्थं कीरइ सुप्पणिहियतणूहिं ॥ १ ॥
विजणपएसे य इमो कीरंतो लहइ तिगरणविसुद्धिं । उवलद्धसुद्धिओ पुण कम्माण विणिज्जरं कुणइ ॥ २ ॥
नवरं सो दुविगप्पो चेट्ठाए अभिभवे य नायव्वो । चेट्ठाए णेगविहो कालपमाणं च से बहुहा ॥ ३ ॥ तहाहि—
देसिय राइय पक्खिय चाउम्मासे तहेव वरिसे य। एएसु हुंति नियया उस्सग्गा [अ]नियया सेसा ॥ ४ ॥
सांय सयं गोसऽद्धं तिन्नेव सया हवंति पक्खम्मि । पंच सया चउमासे अट्ठसहस्सं च वारिसिए ॥ ५ ॥
अणिययउस्सग्गेसु य केसु वि अट्ठेव हुंति ऊसासा । पणुवीसा वि य केसु वि सत्तावीसं च केसुं पि ॥ ६ ॥
पट्ठवणाइसु अट्ठ उ पणुवीसं चेइयाइगमणादौ । उस्सासा सत्तावीस हुंति उद्देसमाईसु ॥ ७ ॥
दुंकम्मं अभिभविउं कुद्धेण सुराइणा व अभिभविओ । जं कुणइ काउसग्गं सो अभिभवकाउसग्गो त्ति ॥ ८ ॥
कालपमाणं च इहं उक्कोसं वरिसमवहिमाहंसु । अंतोमुहुत्तमेत्तं जहन्नओ पुण तयं नियमा ॥ ९ ॥
घोडग-लयाइणो इह दोसा उस्सग्गगोयरा दूरं । संभविणो वज्जेज्जा आगारा वि य विभाविज्जा ॥ १० ॥
नवरं अभिभवउस्सग्गवत्तिणो अगणि-सप्पमाईहिं । खोभे वि अकयकज्जस्स जुज्जए नेव परिचलिउं ॥ ११ ॥
ऊससिय-कासियाईआगारुच्चारणं तु दोसुं पि । तुल्लं चिय विन्नेयं काउस्सग्गेसु नियमेणं ॥ १२ ॥ किं बहुणा ?—

१ सायं शतं [उच्छ्वासाः], प्रातः 'अर्धं' पञ्चाशत्, त्रीणि शतानि पाक्षिके । पञ्च शतानि चातुर्मासिके, अष्टाधिकसहस्रं च वार्षिके ॥ २ दुष्कर्म अभिभवितुं क्रुद्धेन सुरादिना वा अभिभूतः ॥

काउस्सग्गो ।

कायोत्सर्गस्य स्वरूपम्

जह कम्मभंगजणणं पडुच्च वुच्चइ पडिकमणमुग्गं । काउस्सग्गो वि तहेव तो तयं संपयं वोच्छं ॥ १ ॥
काओ देहो अस्संजमुज्जओ तस्स चेव उस्सग्गो । अच्चंतं चाओ जो हि भावओ काउसग्गो सो ॥ २ ॥
जइ वि हु मणमाईण वि असुहाणं अत्थि तत्थ वावारो । कायप्पधाणयाए तह वि हु कायस्स अभिहाणं ॥ ३ ॥
तस्स पुण ठाण-मोण-ज्झाणेहिं निरोहकरणमणहं जं । जो उस्सग्गो स दुहा दव्वुसिओ भावउसिओ य ॥ ४ ॥
उद्धट्ठियकाओ जो ओलंबियसरलउभयभुयपरिहो । झाएइ अट्ट-रुद्दे दव्वुसिओ काउसग्गेसो ॥ ५ ॥
धम्मं सुक्कं च दुवे ठिओ निसन्नो निवन्नगो वा जो । झायइ काउस्सग्गो तस्स उ भावुस्सिओ नेओ ॥ ६ ॥
उभउस्सिओ विसिट्ठो भावपहाणत्तणेणमियरो वि । दव्वुसिओ पुण विहलो कुक[र]णकज्जस्स वि य दूरं ॥ ७ ॥
परचक्कपीडियाणं जह गिरिदुग्गं पुरं ससालं वा । पडियारकरं तह कम्मपीडियाणं पि उस्सग्गो ॥ ८ ॥
एत्थ य निच्चलकाया मेरु व्व अखुब्भमाण[मण]पसरा । इह-परभवे य सुहिया हवंति ससिरायपुत्तो व्व ॥ ९ ॥

तथाहि—अत्थि अवहत्थियहत्थिणाउराइपुरपरभागं भागधेयसारसुंदेररूवा-ऽऽरोग्गयाइगुणपहाणजणनिवहपरिकिन्नं किन्नराणुरूवगायणगीयज्झंकारमणहरहरिणच्छीनट्टोवयाररम्मसुरभवणं वंगविसयपसिद्धं सिद्धपुरं नाम नयरं । तत्थ य अपरिमियगय-तुरय-रह-जोहसामग्गीसणाहो सेसनरनाहब्भहियपुन्न-प्पयावपरिवड्ढियकित्तिपब्भारो सूरप्पभो नाम राया । सव्वं-

लेसुद्देसेण मए तुम्ह दंसणत्थमिमं लिहाविऊण उवणीयं, विसेसओ पुण पयावइणा वि न तीरइ बिलिहिउमिमं ति । एवं च सोच्चा वावारंतरविरयमाणसो नियनामधेयस्स वि अलज्जंतो दूरुज्झियचिरपुहइपालपालियमज्जाओ तक्कालसमुच्छलियपबल-कामानलो जंपिउं पवत्तो—

[1]वुच्चंतु नाम सुर[2]वरयसुंदरीओ मणोहरंगीओ । केवलमिमीए पुरओ ताओ तणलवसरिच्छाओ ।। १ ।।
मन्ने इमीए मुह-नयणनिज्जियाणं मियंक-हरिणाण । समदुक्खाण व समगं समागमो निम्मिओ विहिणा ।। २ ।।
एईए कंठसोहाजिएण संखेण कन्नविरहे वि । लद्धं सिंधुम्मि गएण पंचयन्नो त्ति अभिहाणं ।। ३ ।।
अच्चब्भुयभूयं अवयवाण एईए किं पि सुंदेरं । जाण पुरो उवमाणाण माणलच्छी गया दूरं ।। ४ ।।
किं वा एत्तो बहुजंपिएण ? रे विजयदूय ! तुममेत्तो । तं कुवलयदीहच्छि [5]इच्छं गंतूण आणेहि ।। ५ ।।
उदिओदयं च [4]भूयं मह वयणेणं इमं भणिज्जासि । सव्वेसिं रयणाणं अहमेव पई किमिह तुज्झं ? ।। ६ ।।
एयं समप्पिऊणं आजीवं दूरमुक्कभयसंको । सक्कं पि अवगणिंतो भुंजसु रज्जं चिरं कालं ।। ७ ।।

इमं च से आणत्तियं विणएण पडिसुणिऊण गओ उदिओदयरायसमीवं विजयदूओ । निवेइयं राइणो आगमणपओयणं । 'अहो ! कामंधाणं मुद्धाणं बुद्धिविवज्जासो' त्ति विभाविंतेण य भणियं राइणा—भो दूय ! पराभिओगेणाणुचियमुल्लवंतस्स को एत्थ तुज्झ अवराहो ? केवलं सो तुज्झ पहू इह वत्तव्वो जो एवंविहं बाढमणुचियमुल्लवंतो न भीओ अवजसस्स, न

१ उच्यन्तां नाम सुरवरसुन्दर्यः मनोहराङ्ग्यः ।। २ °रयवयरसुंद° प्रतौ ।। ३ शीघ्रम् ।। ४ भूपम् ।। ५ आज्ञप्तिकाम् ।

संकिओ नियकुलकलंकस्स, न लज्जिओ चिरपयट्टनयमग्गस्स, होउ वा कोइ सो, किं तव्विकत्थणाए ? अवसर तुमं एत्तो मह चक्खुपहाओ, केच्चिराण मयणपिसायपरव्वसाणं पच्चुत्तराइं दायव्वाइं ?–ति मोणमल्लीणो राया ।

दूओ वि कंठे घेत्तूण रायपुरिसेहिं निच्छूढो अवद्दारेणं । जायतिव्वकोवसंरंभो य गंतूण सो सविसेसं सव्वं साहेइ धम्मरुइरन्नो । सो य तक्खणादेव अंतोपसरंतरोसारुणनयणो 'रे रे ! देह सन्नाहभेरीं, वाहरह सव्वसीमालसामंतचक्कं, सज्जेह संदणगणं, बाहिं पयट्टेह [2]तुरयथट्टाइं, आयड्ढह दिव्वाउहाइं, [3]गुडाडोयडंबरिल्लं मयजलोल्लगंडत्थलिं पगुणीकरेह हत्थिमंडलिं' ति [4]वाहरंतो तव्वेलकयमज्जणा-ऽलंकारपरिग्गहो ऊसियसियायवत्तो जयकुंज[रमा]रुहिऊण ट्ठिओ पत्थाणम्मि । सव्वसंवाहसंभवे य महया संरंभेण गओ पुरिमतालपुरं । पुरावरोहं च काऊण आवासिओ तहिं ।

उदिओदओ य चिंतइ अहो ! विमूढाण [5]उयह दुब्बुद्धिं । अच्चंतनिंदिए वि हु कज्जे जं उज्जमो एवं ।। १ ।।
[6]ससिणिद्धपुरंधिजणं पि छड्डिउं केइ साहुणो जाया । अन्ने तव्विवरीयं कुणंति एसो व ही ! मोहो ।। २ ।।
कुप्पहपवन्नचित्ता न चिंतियं पाउणंति कइया वि । एवं पि मुणइ न इमो धम्मरुई नामओ मन्ने ।। ३ ।।
जइ वि हु तेण कयमिमं अणुचियमच्चंतधम्मवज्झेण । तक्कयसरिसं तह वि हु कह वि न मह कप्पए काउं ।। ४ ।।
अइभूरिसत्तसंघायघायणावज्जियाण कज्जाण । फलमवि तप्पडिरूवं भावि धुवं ता [7]कयं तेहिं ।। ५ ।।

१ °ह दंसण° प्रतौ ।। २ तुरगसमूहान् ।। ३ गुडाटोपाडम्बरवन्तम् । गुडा–हस्तिकवचम् ।। ४ 'व्याहरन्' वदन् ।। ५ पश्यत ।। ६ सिसिणि° प्रतौ । सस्निग्धपुरन्ध्रिजनम् । सस्निग्धाः–सस्नेहाः ।। ७ 'कृतं' पर्याप्तम् ।।

खणनस्सरभवसंभवसुहलवहेउं पि पावपडिबंधो । परलोयभीरुयाणं सुमिणे वि न जुज्जए काउं ॥ ६ ॥
सो अत्थो तं जीयं ते विसया सो य विसयसंजोगो । सा कित्ती सोहग्गं पि तं च सा रज्जलच्छी वि ॥ ७ ॥
जत्थ न धम्मत्थविरुद्धवत्थुकरणं मणागमवि हवइ । तव्विवरीयत्ते पुण तल्लाभो वि हु अलाभसमो ॥ ८ ॥
इति निच्छिऊण परिणामियाए सम्मं मईए स महप्पा । [1]तड्डमराभिभवत्थं काउस्सग्गं पवज्जित्था ॥ ९ ॥

अह [2]कणयसेलनिच्चलसरीरो जाव काउस्सग्गोवगओ ठिओ किं पि कालं ताव [त]न्निम्मलधम्मकम्मपकंपियहियओ ज्झड त्ति संपत्तो जक्खाहिवो वेसमणो, जोडियपाणिसंपुडं अभिवंदिय जंपिउं पवत्तो [य]—भो महाराय ! पारेसु काउसग्गं, देसु ममाऽऽएसं 'किं कीरउ ?' त्ति । अह सरियजिणनमोक्कारो महीवई पारियकाउस्सग्गो भणइ—हंहो जक्खराय ! पेच्छसु अकज्जाचरणे वि बद्धपडिबंधस्स इमस्स पाविपत्थिवस्स दुव्विलसियं, अम्ह धम्मगिहिणिं घेत्तुमणो तदलाभे सपुर-जणवयं रज्जं हंतुमित्थमुवट्ठिओ त्ति । वेसमणेण भणियं—जइ कुरंगमो [3]मयरायं अभिजुंजिउं पयट्टो किमेत्तिएण वि तव्विजओ जाओ ? ता एण्हिं देहि आएसं, जइ भणसि ता पेसेमि सकरि-हरि-वाहणं पि एयं कीणासाणणं, अवणेमि दुव्वयणाभिलासं, अहवा गयणनिवडंतविसालसिलावुट्ठिनि[4]ट्ठिर्यकायं खिवामि रसायले । अह [5]कारुन्नापुन्नहियएण भणियं नराहिवेण—भो जक्खाहिव !

एकस्स कए नियजीवियस्स बहुयाउ जीवकोडीओ । दुक्खे ठवंति जे केइ ताण किं सासयं जीयं ? ॥ १ ॥

१ तद्दुसरा° प्रतौ । तड्डमराभिभवार्थम् । डमरः—राष्ट्रविप्लवः ॥ २ कनकशैलः—मेरुः ॥ ३ 'मृगराजम्' सिंहम् अभियोक्तुम् ॥ ४ °ट्ठिप्पका° प्रतौ ॥ ५ कारुण्यापूर्णहृदयेन ॥

वासी-चंदणकप्पो जो मरणे जीविए य समदरिसी । देहे य अपडिबद्धो काउस्सग्गो भवइ तस्स ॥ १३ ॥
तिविहाणुवसग्गाणं दिव्वाणं माणुसाण तिरियाणं । सम्ममहियासणाए काउस्सग्गो हवइ सुद्धो ॥ १४ ॥
एयस्स फलं उदिओदयस्स भूमीवइस्स पच्चक्खं । इहइं चिय निदिट्ठं सीसंतं तं च निसुणेसु ॥ १५ ॥

इह हि किर जंबुद्दीवे दीवे दाहिणभरहद्धे पुरिमतालपुरे सव्वन्नुनिवन्नियधम्मकम्माणुट्ठाणनिसेवणबद्धलक्खो उदिओदओ नामं राया । रूव-सील-सुंदेराइगुणसंगया य सिरिकंता नाम से भज्जा । सो य राया बज्झट्ठिईए रज्जकज्जाइं अणुचिंतेइ, अब्भंतरवित्तीए पुण [1]अपुणब्भवसुहजिगीसाए संजमं चिय अभिलसंतो छव्विहावस्सयाणुपालणपरो चिट्ठइ ।

एगया सहस च्चिय अंतेउरमज्झट्ठियाए सिरिकंताए रायमहिलाए दासचेडीहिं समं जायमाणेसु विविहुल्लावेसु एगा परिव्वाइगा आगंतूण मुहरयाए नियदरिसणाभिप्पायपरूवणं काउं पवत्ता । जिणवयणनि[2]उणाए सिरिकंताए तहा कया जहा न प[4]च्चुत्तरं दाउं पारइ । तओ चेडीहिं [3]मुहमक्कडियाडोवेण विडंबिज्जमाणी निच्छूढा सा अंतेउराओ ।

अच्चंतपसरंतकोवावेगा य पच्चवयारं किं पि काउमसक्कंती साइसयं सिरिकंतारूवं चित्त[5]वट्टियाए आलिहाविऊण वाणारसीनायगं चंडपज्जोयपत्थिवं पिव इत्थीलोलुयं धम्मरुइनामाणं महाबलं महानरिंदमुवट्ठिया । दंसियचित्तपट्टियारूवा य अणिमिसच्छीहिं तं चिय पेच्छमाणं मेइणीवइं भणिउं पवत्ता—महाराय ! उदिओदयरायदइयाए सिरिकंताए रूवमेयं,

१ अणुब्भ° प्रतौ । अपुनर्भवसुखजिगीषया । अपुनर्भवः—मोक्षः ॥ २ °उणयाए प्रतौ ॥ ३ मुखमर्कटिका—ईर्ष्यादिभिः मुखवक्रीकरणम् ॥ ४ पच्चुव° प्रतौ । प्रत्यपकारम् ॥ ५ चित्रपट्टिकायाम् ॥

सवत्तो पयट्टमसमंजसं ।

तहाविहं च दट्ठूण ठिया एगंते रज्जचिंतगा मंति-सामंताइणो । जाओ परोप्परं मंतविणिच्छओ, जहा—सुहपसुत्तो सेज्जागओ च्चिय रयणीए उक्खिविऊण अडवीए उज्झिज्जइ राया, पच्छा एयस्स सुओ ससिकुमारो रज्जे निवेसिज्जइ, कीस रज्जं खयमुविंतमुवेहिज्जइ ? । 'तह' त्ति पडिवन्नं सव्वेहिं । निवत्तियं च जहुद्दिट्ठं अकालक्खेवेण ।

नवरं 'धम्मकिच्चनिच्चपच्चूहो' त्ति रज्जाभिसेयमपडिवज्जंतो रायसुओ भणिओ जणणीए—वच्छ ! किमेवं पडिकूलेसि पिइनिव्विसेसाणमेयाण सामंताईयाण वयणं ? न हि तुमए विज्जमाणे अन्नस्स[1] दाउं जुत्तमिमं, न य[2] सकुलक्कमपवत्तणाओ अन्नं पुत्तेहिं पओयणं जणस्स, न य काम-कोहाइविणिग्गहपहाणयाए जहुत्तनीइमग्गाणुसरणेण य पयट्टाणं 'रज्जं पावकारणं' ति वोत्तुमुं[3]चियं, ता वच्छ ! मोत्तूण विचिकिच्छं पवज्जसु सव्वहा रज्जं ति । अह जणणीए उवरोहेण पडिवन्नमिमं रायसुएण । तओ निवेसिओ सो रायपए पहाणपुरिसेहिं ति । मग्गाविरुद्धवित्तीए पालेइ रज्जं ।

सो य सूरप्पभो राया अडवीए परिचत्तो संतो रयणीए विरामसमयम्मि सिसिरसमीरुकंपियकाओ कडुयं रडंतेसु घूयपमुहपक्खिसु, विमुक्कपोक्कारं विरसमारसंतीसु सिवासु, इओ तओ सच्छंदं संचरंतेसु दुट्ठसत्तेसु, ईसिजायनिद्दाविगमो परिणयप्पायमज्जमज्जाओ य जाव लोयणजुयलमुम्मीलेइ ताव पेच्छइ तं तहाविहं रन्नं ति। 'हा ! किमेयं ?' ति जंपंतो य उट्ठिओ ज्झड त्ति सयणिज्जाओ, विभाविउं पवत्तो [य]—मन्ने मंतिजणदुविलसियमिमं, अहो ! पावाण नियपहुम्मि वि एवंविहभत्ति-

१ °स्स काउं प्रतौ ॥ २ य सुकुलुक्क° प्रतौ । स्वकुलक्रमप्रवर्त्तनात् ॥ ३ °मुच्चियं प्रतौ ॥

पयरिसो, अहो ! अंगरक्खाणं पि निरवेक्खत्तणं, अहो ! निच्चसम्माणदाणवसीकयाणं सेवगाण वि पडिकूलकारित्तणं, अहवा को एयाण दोसो ? असेसदोससमवायावायभूयं वं[1]म्महमऽहणंतस्स मम चेव दोसो इमो, कामवामोहिओ तह कहं पि पयट्टो हं जह न धम्मो न रायलच्छी न साहुकारो न पुव्वपुरिसमग्गाणुवत्तणं ति, एवं ठिए न को वि किं पि अप्पाणमेव मोत्तूण थेवं पि अवरज्झइ, ता सिक्खवेमि सं[2]पयमप्पयमुम्मग्गगामिणं–ति विभाविऊण कं[3]य[मर]णसंकप्पो इओ तओ परिभमंतो गओ तावसासमं।

'दीसंतकंतसरीरो' त्ति अब्भुट्ठिओ तावसेहिं । अणिच्छंतो वि महाकट्ठेण काराविओ भोयणं । तदुत्तरं च पुट्ठो वेरग्गकारणं । 'गुरुणो' त्ति सिट्ठं लेसेण। तेहिं भणियं—महाराय ! जइ सच्चं चिय अं[4]प्पपरिच्चायं पडुच्च वासणा ता पुव्वपुहइपालाणुचिन्नतावसदिक्खापडिवत्ती चेव जुत्ता । पडिवन्नं रन्ना । उचियसमए पवन्नं तावसवयं । पइक्खणं रज्जावहारपराभवसंभवं वेरग्गमुव्वहंतो उज्झियभत्त-पाणो कइवयदिवसावसाणे जीवियमुज्झिऊण उववन्नो वंतरेसु । तहिं च जायमित्तेण सरिया जाई । दिट्ठो य नियपयाणुवित्ती महासमिद्धिसमुद्धुरं रायलच्छिमुवभुंजंतो नियसुओ ससिनराहिवो ।

अह जायपबलकोवानलो य सो चिंतिउं समाढत्तो । पेच्छह मह विरहे हयसुयस्स[5] भोगाइरेगत्तं ॥ १ ॥
मन्ने इमिण च्चिय पावकम्मुणा रज्जमभिलसंतेण । अडवीनिवाडणं मह करावियं चत्तकरुणेण ॥ २ ॥
जइ वि हु सपहुविहीणे रज्जे रायंतरा पइट्ठंति । रज्जाभिलासिणो तह वि मंतिणो हुंति न वरागा ॥ ३ ॥
ता नत्थि ताण दोसो [दोसो] एयस्स चेव कुसुयस्स । इममेव अओ पावं सज्जोऽणज्जं निगिण्हामि ॥ ४ ॥

१ मन्मथम् अघ्नतः ॥ २ साम्प्रतम् आत्मानम् उन्मार्गगामिनम् ॥ ३ कयण सं° प्रतौ ॥ ४ आत्मपरित्यागं प्रतीत्य ॥ ५ °स्स सोगा° प्रतौ ॥

एवं विभाविऊणं अंतोपसरंतदुव्वहामरिसो । सो वाणमंतरो ससिनिवस्स पासे लहुं पत्तो ॥ ५ ॥

ससिनरिंदो वि तक्खणं अवसेसियरज्जकज्जो संपाडियपरमगुरुपूयाविसेसो विजणप्पएसोवगओ ठिओ काउस्सग्गेणं । अह निप्पकंपकयकाउस्सग्गमाहप्पपडिहयबलो गिरिकडयनिकडतडविहडियविसाणो करडि व्व ज्झड त्ति पडिनियत्तो वाणमंतरो । तक्खोममेत्तं पि हंतुमचइंतो य विलक्खो गओ जहागयं । भुज्जो वि असोढपोढामरिसो तं विहंतुं पत्तो तं पएसं । नवरं स महप्पा कम्मधम्मजोएण पुणरवि तव्वेलं पवन्नो काउस्सग्गं । एवं तइयवेलाए वि तं तहा पेच्छिऊण चिंतियं वाणमंतरेण— एसो हि महाणुभावो निबिडरज्जरज्जुबंधणे वि एवं धम्मकज्जसज्जमाणसो जं जं वेलमहमुवेमि तं तं [वेलं] इत्थमोलंबियभुयपरिहो झाणेण चिट्ठइ, ता कहमेवं ?–ति पउत्तविभंगेण मुणिओ अणेण तयहिप्पाओ ।

तओ अलियकुवियप्पुप्पाइयासंतदोससमुप्पज्जंतातुच्छपच्छायावो वाणमंतरो अप्पाणं सुचिरं झूरिऊण पारियकाउस्सग्गं ससिरायाणं भणिउं पवत्तो—वच्छ ! सो हं सूरप्पभो तुह पिया कयतावसवओ मरिऊण वाणमंतरो उववन्नो, संभावियालियदोसो य तुमं पडुच्च दोच्चं पि तच्चं पि अणत्थं काउमुवट्ठिओ वि काउस्सग्गनिग्गहियसामत्थो विभंगबलाकलियकज्जपरमत्थो संपयं नियत्तचित्तो चिंतापहा[इ]क्कंतकंतगुणं भवंतं खामेमि त्ति । ससिराया वि बुज्झियकज्जमज्झो 'हा ताय ! किमेवं कुदेवत्तमणुपत्तो सि ?' त्ति सोइउं पवत्तो ।

जो जित्तियत्थजोग्गो सो तेत्तियमेव पाउणइ अत्थं। को वच्छ ! कस्स दोसो ? किं कुणउ य पुरिसयारो वि ? ॥ १ ॥
अहवा किमिह पणट्ठं तुह सारिच्छो महं सुओ जस्स ? । धम्म-नय-विणय-दय-खंतिपमुहगुणनिवहरयणनिही ॥ २ ॥

जे वि सुभूमप्पमुहा तिसत्तखुत्तो करिंसु वेरिवहं । तेसिं पि दुग्गदुग्गइपडणाउ परं न किं पि फलं ॥ २ ॥
ता जइ अम्हं निरवज्जयाए धम्मत्थसाहणं हवइ । परचक्कं पि अपावियपीडं नियडीड(?)मणुसरइ ॥ ३ ॥
तह कुणसु भो महायस ! पज्जत्तं सेसभासियव्वेहिं । लहिहिंति सयं पि सकम्मसरिसमवसा फलं पावा ॥ ४ ॥

अह 'तह' त्ति सविणयपणयं पडिवज्जिऊण तव्वयणं जं जत्तो उवागयं तं तहिं चिय ज्झड त्ति दिवसत्तीए विमोत्तूण परचक्कं गओ जहागयं जक्खाहिवो । राया वि निव्वाहियनिव्विग्घधम्मकिच्चो कालेण य कयकिच्चत्तणं पत्तो ॥

ता भो रायसुय ! एवंविहगुणो एस काउस्सग्गो । अओ एत्थ सुबुद्धिणा धणियं पयट्टिउं जुत्तं ति ॥ छ ॥

इमं च सोच्चा तव्विसयसं[जा]यगाढपडिबंधो जिणधम्मनिच्चलनिलीणमाणसो सयलकुसलभायणं अप्पाणं मन्नंतो मुणिं पणिवइऊण गओ जहागयं रायसुओ । तद्दिणाओ वि आरब्भ अब्भासससारमावस्सयाइकिच्चेसु सम्मं वट्टंतो कालं वोलेइ ।

सो य तज्जणगो राया उम्मग्गलग्गत्तणेण इंदियवग्गस्स, उवट्ठाणसंभवाओ दढमणिट्ठस्स आसत्तो कुमुइणीनामाए वारविलासिणीए । तस्संगेण पयट्टो मज्जु-मेरयाईसु, मुक्का रज्जचिंता, उज्झिओ नयमग्गो, परिचत्तो विसिट्ठमंतिसंसग्गो । केवलमणवरयतव्विसयविसयवक्खित्तचित्तो पइरिक्कगओ सायंदिणमभिरमइ । मुणियतव्विहववइयरा य सीमालमहीवइणो पारद्धा चाउद्दिसं देसं लूडियं । अंतेउरगयस्स य रन्नो 'अणवसरो' त्ति न लहंति दुत्थवत्तानिवेयगा पुरिसा पविसिउं । एवं च

१ 'त्रिसप्तकृत्वः' एकविंशतिवारान् ॥ २ धरिउं पय° प्रतौ ॥ ३ °यर्मयगा° प्रतौ ॥ ४ मेरकः–मद्यविशेषः ॥ ५ लुण्टितुम् ॥ ६ दौःस्थ्यवार्त्तानिवेदकाः पुरुषाः ॥

पच्चक्खाणं ।

सव्वो धम्मो नाणे पच्चक्खाणे य वन्निओ सम्मं । नाणप्पहाणमहुणा ता पच्चक्खाणमक्खेमि ॥ १ ॥
पावाणं जोगाणं तिविहं तिविहाइभेयओ चागो । भन्नइ पच्चक्खाणं संवरणं तस्स एगट्ठं ॥ २ ॥
तं मूलुत्तरगुणगोयरत्तणेणं दुहा समक्खायं । मूलगुणा पाणिवहाइ[2]चागरूवा उ निद्दिट्ठा ॥ ३ ॥
उत्तरगुणा उ आहारचायपमुहा इमेसु पगयमिमं । पच्चक्खाणं तं पुण दसहा सुत्ते जओ भणियं ॥ ४ ॥
अणागय १ मइक्कंतं २ कोडीसहियं ३ नियं[3]ट्टियं ४ चेव । सागार५ मणागारं ६ परिमाणकडं ७ निरवसेसं ८ ॥५॥
संकेय ९ चेव अद्धाए १० पच्चखाणं तु दसविहं [एयं] । [4]एयाणऽत्थविभागं सीसंतं सुणह लेसेण ॥ ६ ॥
पज्जोसवणाइतवं गिलाण-संघाइकज्जसब्भावे । पज्जोसवणाईणं पुव्वं पच्छा व जो कुणइ ॥ ७ ॥
तक्काले [5]अचयंतो पच्चक्खाणं हि तस्स कित्तिंति । पढमं अणागयं नाम बीयगं पुण अइक्कंतं ॥ ८ ॥
पट्ठवणओ य दिवसो पच्चक्खाणस्स निट्ठवणओ य । जम्मि समिंति दोन्नि वि तं जाणसु कोडिसहियं तु ॥ ९ ॥
अमुगो अमुगम्मि दिणे तवोविसेसो अवस्स कायव्वो । जाजीवं संवरणं एयं तु नियट्टियं नाम ॥ १० ॥
नवरं चउदसपुव्वी जिणकप्पी पढमसंघयणिणो वा । थेरा वि कुणंति इमं सेसाणं नेह अहिगारो ॥ ११ ॥

१–२ त्यागः–विरतिः ॥ ३ नियन्त्रितम् ॥ ४ एतेषामर्थविभागं शिष्यमाणम् ॥ ५ अशक्नुवन् ॥

महयरयाई जम्मि आगारा तं तु होइ सागारं । इयरं तु अणागारं पच्चक्खाणं पयंपंति ॥ १२ ॥
दत्तीहिं व कवलेहिं व घरेहिं भिक्खाई अहव दव्वेहिं । जो भत्तपरिच्चायं करेइ परिमाणकडमेयं ॥ १३ ॥
सव्वं असणं सव्वं च पाणियं सव्वखज्ज-पेज्जविहिं । वोसिरइ सव्वभावेण भणियमेयं निरवसेसं ॥ १४ ॥
अं[1]गुट्ठ-मुट्ठि-गंट्ठी-घर-से-उस्सास-थिवुग-जोइक्खे । पच्चक्खाणं संकेयमेयमुक्कित्तियं बहुहा ॥ १५ ॥
अद्धापच्चक्खाणं मुहुत्त-पहराइकालनिप्फन्नं । सामन्नेणं तु इमं दसहा नवकारमाइ जहा ॥ १६ ॥
नवकार १ पोरिसीए २पुरिमड्ढे ३ गासणे ४ गठाणे५ य । आयंबिल ६ऽभत्तट्ठे ७ चरिमे ८ य अभिग्गहे ९ विगई १०॥१७॥
आगारा य इमेसुं जाहासंखेण दोन्नि छ चेव । सत्तऽट्ठ सत्त अट्ठ य पंच य चत्तारि चरमे य ॥ १८ ॥
चत्तारि पंच वाऽभिग्गहे य नव अट्ठ वा वि निव्विगए । अप्पाउरणे पंच उ हवंति सेसेसु चत्तारि ॥ १९ ॥
न[2]वणीओगाहिमए अद्दवदहि-पिसिय-घय-गुले चेव । नव गारा [ए]तेसिं सेसदव्वाणं च अट्ठेव ॥ २० ॥
[3]सयपालणियं च इमं कयसंवरणो वि देइ अन्नेसिं । किंतु न तिविहं तिविहेण वज्जए जीवघायं व ॥ २१ ॥
इह छव्विहा य सुद्धी नेया सद्दहण जाणणा विणए । अणुभासणाऽणुपालण भावविसोही य जत्तेण ॥ २२ ॥
जं जत्थ जया काले पच्चक्खाणं जिणेहिं निद्दिट्ठं । तं तत्थ सद्दहंतस्स होइ सद्दहणसुद्धं ति ॥ २३ ॥
मूलुत्तरगुणगोय[रप]रं तु जं जत्थ जुज्जए कप्पे । तं तत्थ जाणमाणस्स निच्छियं जाणणासुद्धं ॥ २४ ॥

१ अङ्गुष्ठ-मुष्टि-ग्रन्थि-गृह-स्वेद-उच्छ्वास-स्तिबुक-ज्योत्याख्यम् ॥ २ °वनीओ° प्रतौ ॥ ३ स्वयंपालनीयम् ॥

प्रत्याख्याने भानुदत्त-कथानकम् ४९।

किइकम्मविहिपउंजणपुव्वं सम्मं तिगुत्तिगुत्तस्स । पच्चक्खाणं जं किर विणयविसुद्धं तयं जाण ॥ २५ ॥
अणुभासइ गुरुवयणं अक्खर-पय-वंजणेहिं परिसुद्धं । पंजलिउडो अभिमुहो तं जाणसु भासणासुद्धं ॥ २६ ॥
कंतारे दुब्भिक्खे आयंके वा महइ समुप्पन्ने । जं पालियं न भग्गं तं जाणसु पालणासुद्धं ॥ २७ ॥
रागेण व दोसेण व परिणामेण व न दूसियं जं तु । तं खलु पच्चक्खाणं भावविसुद्धं मुणेयव्वं ॥ २८ ॥
इय छव्विसुद्धिसारं पच्चक्खाणं पवज्जमाणस्स । अचिरेण कम्मनिज्जरणमुत्तमं जायइ जियस्स ॥ २९ ॥
जो पुण इह आलस्सं कुणइ अवस्सं स अप्पणो सत्तू । इह अन्नत्थ व जम्मे लहइ दुहं भाणुदत्तो व ॥ ३० ॥

[तथाहि—]अत्थि कासीजणवए वयणिज्जविरहियजणनिवहपरिगओ गो-महिसि-पसु-सस्ससंपत्तिसमिद्धो धन्नप्पूरो नाम गामो । तत्थ सव्वकालवत्थव्वो भाणुदत्तो नाम वणिओ । देवई भज्जा । सो य सकुलकमागयट्ठिईए कुडुंबं निव्वाहेइ, धम्म-कज्जेसु न तहा अभिरमइ ।

एगया य तस्स परमसव्वन्नुधम्मविहिविहन्नुणा तग्गामनिवासिण च्चिय सिवसेणसेट्ठिणा समं पणयभावो जाओ । परोप्परपरमपरितोसेण य वच्चंतेसु वासरेसु सेट्ठिणा भणिओ भाणुदत्तो—भद्द! धम्मकज्जेसु तुमं बाढमणुज्जओ दीससि, न जुत्तमेयं कुसलबुद्धिणो, धम्मत्थपरम्मुहो हि पुरिसो पसु व्व असाहगो[3] ससमीहियत्थाण, अंधो व्व न पलो-यणापच्चलो जुत्ता-ऽजुत्तकज्जाणं, केवलमणवरयसमुप्पज्जमाणमाणसकुवियप्पविक्खिप्पमाणो तं किं पि

१ °हया स° प्रतौ । महति ॥ २ °सुद्धिं मु° प्रतौ ॥ ३ °गो असमी° प्रतौ ॥

कायोत्सर्गस्य माहात्म्यम्

इय अणुसासिय ससिभूवइं सुरो नियपयं समणुपत्तो । राया वि तयणु सविसेसकाउसग्गाइधम्मपरो ॥ ३ ॥
इह-परभवे य परमं अब्भुदयं जसमतुच्छमणुपत्तो । इय काउसग्गकिच्चं कामियसिद्धीण परमपयं ॥ ४ ॥
एत्तो च्चिय साहूण वि अभिक्खणं काउसग्गमुवइट्ठं । अब्भंतरतवरूवत्तणेण कम्माण निज्जरणं ॥ ५ ॥ अपि च—

यद्वद् वलद् व्रजदपि क्रकचं सिताग्रं, काष्ठं सुनिष्ठुरमपि प्रसभं भिनत्ति ।
तद्वत् त्रिगुप्तिपरमश्चिरकर्म कायोत्सर्गो निसर्गनिरवग्रहशक्तिरेषः ॥ १ ॥
यथा यथाऽस्मिंश्च विनिश्चलानामङ्गान्युपाङ्गानि च यान्ति भङ्गम् ।
तथा तथैतत्प्रतिबद्धश्रद्धा, भञ्जन्ति कर्माष्टविधं हि सन्तः ॥ २ ॥ किञ्च—

कायोत्सर्गो यदि हि निखिलक्लिष्टदुष्टाष्टभेदस्फूर्जत्कर्मप्रचयदलनप्रत्यलो नाभविष्यत् ।
तत् किं साक्षाद् भुवनगुरवः केवलालोकलाभात्, पूर्वं सर्वेऽप्यवहितधियो नूनमेनं व्यधास्यन् ? ॥ ३ ॥
इत्युज्झितानिष्टविचेष्टितेऽस्मिन्, स्पृष्टे च दृष्टेऽपि च तत्त्वविद्भिः ।
न मोक्षमार्गप्रतिकूलबुद्धिं[1], विहाय शेषः कुरुते प्रमादं ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे कायोत्सर्गविधानचिन्तायां शशिराजकथानकं समाप्तम् ॥ ४८ ॥

१ मोक्षमार्गात् प्रतिकूला बुद्धिर्यस्य स तम् विहाय 'शेषः' इतरः प्रमादं न कुरुते इत्यर्थः ॥

त्तेण पगुणीकओ सो सेट्ठिणा पुव्वं[1] व पयट्टो भासिउं । 'एत्तो धम्मुज्जमं भद्द ! करेज्जासि' त्ति भणिय गओ सेट्ठी जहागयं । इयरो वि तद्दिणाओ आरब्भ 'परमोवयारि' त्ति परमं सिणेहमुव्वहंतो देवं व गुरुं व सेट्ठिं आराहिउं पवत्तो । कयनियघरकज्जो य सेट्ठिणा समं वच्चइ जिणमंदिरेसु, पज्जुवासई मुणिजणं, दवावेई दीणाईणं दाणं, उवचरइ साहम्मियवग्गं, नवरं थेवं पि न गिण्हइ पच्चक्खाणं ।

अवरवासरे य भणिओ सेट्ठिणा—भो महायस ! थेवं पि पच्चक्खाणं घेत्तुमुचियं, महाफलं हि गिज्जइ इमं समयसत्थे, किं न सुयं तए ईसिं[2]विराहियपच्चक्खाणस्स वि दामन्नगस्स सुहपज्जवसाणं फलं ति । भाणुदेवेण भणियं—न सुयं पुव्वं, ता साहेसु त्ति । सेट्ठिणा जंपियं—निसामेसु—

रायपुरे नगरे एगस्स कुलपुत्तगस्स जिणधम्मवियड्ढेण जिणदाससावएण समं मेत्ती जाया । उचियसमए य 'धम्मसीलो' त्ति दिन्नं से जिणदासेण जावज्जीवियं मंसपच्चक्खाणं । पडिवन्नं च भावसारमणेण ।

अन्नया जायं दुब्भिक्खं, पलीणा धन्नसंचया, मंसभक्खणाईसु पयट्टो लोगो । सीयंते कुडुंबे सो वि कुलपुत्तगो सयणेहिं निब्भच्छिऊण पेसिओ मच्छग्गहणत्थं । गओ य तयणुवित्तीए, पक्खित्तं जालं महद्दहे । कुडुंबभयं संसारभयं च उव्वहंतेण य [तेण] तिन्नि वारा ओगँहिया[3] मुक्का य मीणा । नवरं कह वि विराहिओ एगस्स मीणस्स एगो देहावयवो। 'वरं पाणच्चाओ, न नियमभंगो' त्ति कयनिच्छओ छुहाभिहओ मओ एसो, उववन्नो य रायगिहे नयरे मणियारसेट्ठिणो पुत्तत्तणेणं । पइट्ठियं च दामन्नगो त्ति से नामं । अट्ठ[1]वारिसियस्स य तस्स केणावि दुकम्मविलसिएणं खयमुवगयं तं कुलं ।

दामन्नगो वि 'निस्सयणो' त्ति भिक्खाभमणाइणा पाणवित्तिं कुणमाणो तत्थेव नगरे सागरपुत्ताभिहाणस्स इब्भस्स एगया दुवारे भिक्खाभमणेणं कणचूणणेण[2] य वट्टंतो साहुसंघाडएण गोयरचरियापविट्ठेण दिट्ठो। अइसयणाणिणा य तदेगेण बीयस्स मुणिणो 'पइरिकं'[3] ति सिट्ठं, जहा—एस रंको इमस्स घरस्स धण-कणगसमिद्धस्स सामी भविस्सइ त्ति । इमं च भवियव्वयावसेण कुडगंतरिएण निसामियं सागरपुत्तसेट्ठिणा ।

'एवंविहमहामुणीणमसच्चजंपणे न किं पि फलं संभावेमि, ता मारावेमि एयं रंकं' ति कयनिच्छएण सागरपुत्तेण अत्थं दाऊण चंडालपुरिसाणं पच्छन्नं विणासकए समप्पिओ एसो । नीओ य रयणीए मज्झसमए सँज्झसवसवेवंतसरीरो[4] तेहिं सो सुसाणप्पएसे । 'अरे ! सुदिट्ठं कुणसु जीवलोयं, एस संपइ विणस्ससि' त्ति जंपिरेहि य आयड्ढियं निसियधाराकरालं करवालं। भीओ पकंपंतकाओ मुहपक्खित्तदसंगुलीवलओ सो जंपिउं पवत्तो—भाउया ! कीस निद्दोसं पि ममं विणासह ?—

किं किं पि मए भग्गं ? तुम्हाभिमुहं व जंपियमजुत्तं ? । हरियं हराविय वा अन्नस्स व कस्सई किं पि ? ॥ १ ॥

पंडिघरपरिभमणुवलद्धविरस-तुच्छन्नविहियवित्तिस्स[5] । दिव्वेणं चिय निहयस्स सयलकुलकवलणेण दढं ॥ २ ॥

कीस मह जीविउं देह नेव ? सद्धिं मए किमिव वेरं ? । को वा वि अत्थलाभो होही मह मारणे तुम्ह ? ॥ ३ ॥

१ पूर्वमिव ॥ २ ईषद्विराधितप्रत्याख्यानस्य ॥ ३ 'अवगृहीताः' संगृहीताः ॥

१ अष्टवार्षिकस्य ॥ २ कणगवेषणेनेत्यर्थः ॥ ३ एकान्तम् ॥ ४ साध्वसवशवेपमानशरीरस्तैः स श्मशानप्रदेशे ॥ ५ प्रतिगृहपरिभ्रमणोपलब्धविरसतुच्छान्नविहितवृत्तेः ॥

न गिहं न धणं सयणो वि नेव न य को वि जीवणोवाओ। तह वि हु विही न रूसइ ही! एत्तो किं करेमि अहं ? ॥ ४ ॥
इच्चाइकरुणवयणेहिं [1]जंपिरं कंपिरं च विमणं च। तं पेच्छिऊण चिंता दया य तेसिं इमा जाया ॥ ५ ॥
ईसिं पि नावराहो संभाविज्जइ इमस्स रोरस्स। दुन्नयसासणजोग्गो कह खग्गो ता इहं वहउ ? ॥ ६ ॥
जइ सो कहमवि वणिओ एयं माराविउं [2]मेहइ विघिणो। ता किं जुज्जइ काउं अणुचियमेवंविहं अम्ह ? ॥ ७ ॥
ता तेहिं जंपियमिमं सायरपुत्तेण सायरं अम्हे। इंतु तुमं निउत्ता न याणिमो कज्जपरमत्थं ॥ ८ ॥
तह वि हु वच्चसु तुरियं तत्थ तुमं जत्थ दीससि न भुज्जो। तुमए हयम्मि होही [तं] [3]जंतेणावि पज्जत्तं ॥ ९ ॥

एवं पि वणियचित्ताणुवत्तणकए तव्वामकणिट्ठंगुलिं छेत्तूण घेत्तूण गया घायगा। सिट्ठा य तेहिं छिन्नंगुलीदंसणपुव्वयं तव्विणासवत्ता सेट्ठिणो। तुट्ठो एसो।

दामन्नगो वि [4]तक्कालोवलद्धजम्माणं पिव अप्पाणं मन्नंतो पलाणो तत्तो वेगेण। खीणसरीरत्तेण य कह कह वि भवियव्वयावसेण वच्चंतो पत्तो तस्सेव सागरपुत्तवणियस्स गोउलं। [5]तव्विणिउत्तगोउलाहिवेण य गोसंखियाभिहाणेण कह वि सो दिट्ठो भिक्खट्ठं पविट्ठो। पुट्ठो य सुरूवो त्ति—वच्छ! कस्स तुमं ? ति। दामन्नगेण वुत्तं—उच्छन्नकुलो न [6]कस्सइ संतिओ हं ति। तओ तेण अपुत्तेण 'पुत्तो' त्ति काउं [7]पणामिओ सो नियभज्जाए। पइदियहन्हाण-भोयण-वत्थ-सयणा-ऽऽसणाइसुहसंव-

१ जल्पितारं कम्पितारम् ॥ २ काङ्क्षते 'विघृणः' निर्दयः ॥ ३ गच्छताऽपीत्यर्थः ॥ ४ तत्कालोपलब्धजन्मानमिव ॥ ५ तद्विनियुक्तगोकुलाधिपेन ॥ ६ कस्यापि सत्कः ॥ ७ अर्पितः ॥

राग-दोसाभिभूओ भूयपरिग्गहिओ व कुणइ भासइ भुंजइ परिगिण्हइ जेण संतप्पमाणो इह परभवे य दुहभागी जायइ, न य किं पि इह दुक्करं वन्निज्जइ जिणसासणे। जओ—

अभयप्पयाणपरमा पडिवत्ती गुरुसु निच्चला भत्ती। दाण तवे जहसत्तीए [1]निच्चसो चेव अणुरत्ती ॥ १ ॥
दुट्ठजणवज्जणं कुनयलज्जणं सुगुणसज्जणं च सया। किच्चमिणं मणुयाणं किं भन्नउ दुक्करं एत्थ ? ॥ २ ॥
[2]अन्नमए धम्मकए उज्झिज्जइ जीयमग्गिदाहेण। अहवा गभीरभेरवकुहरे नियदेहखेवेण ॥ ३ ॥
परचक्कमुक्कसर-सेल्ल-भल्लिधाराहिं वा नियसरीरं। [3]कप्पाविज्जइ तिलसो धारातित्थं ति काऊण ॥ ४ ॥
[4]सुरसरिसरीरचागेण अहव फुडमणसणप्पवत्तीए। ही! तह वि तत्थ लोगो अणुरज्जइ न उण जिणधम्मे ॥ ५ ॥

इमं च सोच्चा [5]लज्जामिलायंतवयणकमलो 'सुट्ठु सट्ठाणेसु सासिओ म्हि' त्ति [6]पुणरुत्तमुच्चरंतो भावं विणा वि धम्ममग्गं पवन्नो। एवं एगया य सो साइणीदोससमुप्पन्नगाढसरीरपीडो निच्चेट्ठो निस्सट्ठं निवडिओ धरणिवट्ठे। 'हा! हा! किमेयं ?' ति गिहजणेण वाहरिओ सिवसेणसेट्ठी। दिट्ठो सो णेण अच्चंतकिलंतकाओ [7]ऊसासमेत्ताणुमीयमाणजीयधम्मो त्ति। तओ तव्वियारावलोयणविणिच्छइयसाइणीदोसेण जोइणीमुद्दाविन्नासपुरस्सराणुसरियपंचपरमेट्ठिमहामंतेण कइवयअक्खयखेवमि-

१ 'नित्यशः' निरन्तरम् ॥ २ अन्यमते धर्मकृते उज्झ्यते जीवितम् ॥ ३ 'कल्प्यते' छेद्यते ॥ ४ सुरसरिति—गङ्गानद्यां शरीरत्यागेन अथवा स्फुटम् अनशनप्रवृत्त्या ॥ ५ लज्जाम्लायमानवदनकमलः ॥ ६ वारंवारमित्यर्थः ॥ ७ उच्छ्वासमात्रानुमीयमानजीवितधर्म इति। ततः तद्विकारावलोकनविनिश्चितशाकिनीदोषेण योगिनीमुद्राविन्यासपुरस्सरानुस्मृतपञ्चपरमेष्ठिमहामन्त्रेण कतिपयाक्षतक्षेपमात्रेण ॥

लेहत्थो, पुच्छिओ जोइसिओ। तेण वि नवग्गहबलोवेयं सिट्ठं तवेलं चिय हत्थग्गहजोग्गं लग्गं। तओ अकयवियप्पेण तेण दिन्ना दामन्नगस्स नियभइणी विसा। वित्तो विवाहो, जायं वद्धावणयं।

सागरपुत्तो वि अणुवलद्धलेहपडिवयणो संकियमणो पडिनियत्तो पेच्छइ उंब्भियवंदणमालं[1] पयट्टनट्टोवयारं उच्छलियतारतूरनिनायं नियघरं। 'किमेयं?' ति संकिओ पविट्ठो अब्भंतरे। अब्भुट्ठिओ पुत्तेण। 'वच्छ! किमेयं?' ति पुट्ठे सिट्ठो णेण सव्वो वुत्तंतो। तं च सोच्चा सुमरियसाहुवयणो वि सेट्ठी अच्चंतकिलिट्ठयाए तदणिट्ठं संपहारंतो पुरओ घायगे निरूविऊण दामन्नगं भणिउं पवत्तो—वच्छ! अम्ह कुले एस ववहारो 'एगागिणा नवपरिणीएण गंतूण माइघरे देवयाण पूया कायव्वा' ता जाहि तुमं ति। अह 'तह' त्ति पडिवज्जिय परिहियकोसुंभवत्थो कुसुमाइपडलियं घेत्तूण तहिं गच्छंतो दिट्ठो सो विवणो[2]-वगएण सेट्ठिसुएण, पुच्छिओ य—कहिं पट्ठिओ सि? त्ति। सिट्ठो णेण वुत्तंतो। 'अच्छसु इहेव तुमं, अहं तप्पूयं काहं' ति पुप्फपडलयहत्थो गओ सेट्ठिसुओ माइहरं। पविसंतो य पुव्वपउत्तेहिं मारिओ घायगेहिं। वित्थरिया पुरे तव्विणासवत्ता, तह वि 'जामाइओ' त्ति तुट्ठो सेट्ठी। पच्छा तद्दंसणेण निच्छियसुयविणासो तं कं पि हिययसंघट्टमावन्नो जेण तक्खणविभिन्नहियओ पत्तो पंचत्तं। मुणियजहट्ठियसागरपुत्तवुत्तंतो य तुन्हिक्को ट्ठिओ दामन्नगो, जाओ घरसामी, पुव्वसेट्ठिट्ठिईए वट्टिउं पवत्तो। एगया य तस्स पुरओ गीया गायणेहिं इमा गाहा। जहा—

अणुपुंखमावडंता वि अणत्था तस्स बहुफला हुंति। सुह-दुक्खकच्छपुडओ जस्स कयंतो वहइ[3] पक्खं ॥ १ ॥

१ ऊर्ध्वीकृतवन्दनमालं प्रवृत्तनाट्योपचारम् ॥ २ विपण्युपगतेन ॥ ३ °वहंता प्रतौ ॥

सागरपुत्तपउत्तविचित्ताणत्थपत्थारिमणुसरंतेण य तेण तिन्नि वाराओ भणाविऊण इमं गाहं दाविया तिन्नि दव्वलक्खा गायणाणं। सुयं च राइणा, जहा—कोइ अदेसगो इब्भघरसामी जाओ, सो य इत्थमित्थं च लच्छिं वियरइ त्ति। तओ वाहराविऊण रन्ना पुट्ठो दामन्नगो—भद्द! को तुमं? कत्तो वा आगओ? किं वा धणलक्खतिगं दिन्नं? ति। सिट्ठं च तेण जहट्ठियं मूलाओ नियवित्तं। परितुट्ठो राया 'अज्जप्पभिइं मए तुह एसा संपया दिन्न' त्ति सक्कारिऊण विसज्जिओ सुहाभागी जाओ। कालंतरे य साहुदंसणं, पुव्वभवावगमो, अंगुलीछेयनिमित्तनाणं, बोहिलाभो, सुगइसंपत्ती य त्ति ॥ छ ॥

ता भो भाणुदत्त! थोवं पि पच्चक्खाणं एवं सफलं जाणिऊण कुणसु जं ते रोयइ त्ति। 'परहियत्थमित्थमुज्जुवंताणं तुम्हं का ममारुई नाम? एत्तो प्पभिई सव्वहा काहं पच्चक्खाणं' ति पडिवन्नं भाणुदत्तेण। 'तह' त्ति पइदिणं पयट्टो पच्चक्खिउं। गहियं च जावज्जीवं निसिभोयणाईण पच्चक्खाणं। तुट्ठो सिवसेणो, भणिउमाढत्तो य—

उवयारो जो वि मए तुज्झ कओ कोइ अइदुहट्टस्स[1]। सो वि तइ[2] धम्मनिरए जाओ मह निज्जराहेऊ ॥ १ ॥
तेणेव पावनिरयाण अक्खिया[3] सव्वह च्चिय उवेक्खा। हुयवहपिंडा इव कुसलकारिणो कस्सइ न ते[4] जं ॥ २ ॥
एत्तो च्चिय सुगुणेणं बहुमाणो पूयणा य कायव्वा। गुणपयरिसपडिवत्तीए थिरयरा जेण ते हुंति ॥ ३ ॥
इहरा किलेससज्झेसु[5] तेसु काही न उज्जमं कोइ। अगुणायरेण य तओ ठाही नामं पि न गुणाण ॥ ४ ॥
एवं तोरविओ[6] सो लज्जाए किं पि किं पि अवरोहा[7]। भावविरहे वि बाढं तदेगचित्तो व्व संजाओ ॥ ५ ॥

१ अतिदुःखार्त्तस्य ॥ २ त्वयि ॥ ३ आख्याता ॥ ४ पापनिरता इत्यर्थः ॥ ५ क्लेशसाध्येषु ॥ ६ उत्तेजितः ॥ ७ उपरोधात् ॥

अन्नया य तहाविहं किं पि उवक्कमकारणं पाविऊण परलोयमुवगओ महप्पा सिवसेणो। भाणुदत्तो वि कयतप्पारलोइयकायव्वो कालेण अप्पसोगो सिढिलियपच्चक्खाणाइधम्मकज्जो य जहिच्छाए पावकिच्चेसु वट्टिउमारद्धो। पुव्वपयट्टपच्चक्खाणाइकिच्चे विमुहचित्तं च तं पेहिऊण जणो उवहसंतो भणइ—

धम्मुज्जओ वि जंइसेवगो[1] वि कहमेस संपइ विलज्जो। निम्मज्जायं चिट्ठइ ? किं अवरं कवडसीलाण ? ॥ १ ॥
अइतत्तं पि जह जलं पुणो वि सिंसिरस्सभावमणुसरइ[2]। धम्मे ठविओ[3] तह पाँवपयइओ[4] पावमणुसरइ ॥ २ ॥
कँयभट्ठगुणाओ[5] वरं अच्चंतं गुणविवज्जिओ पुरिसो। न वि जँडिय-खुडियरयणालंकारो[6] सोहमुव्वहइ ॥ ३ ॥
उच्चे आरुहिउं जो निवडइ सो अंगभंगमँज्जिणइ[7]। पडणाइभयं संभवउ कह णु भूमीयलठियस्स ? ॥ ४ ॥

एवं पि हसिज्जंतो अगणियपत्थावा-ऽपत्थावो अणुवलक्खियभक्खा-ऽभक्खो अमुणियगम्मा-ऽगम्मो समाणसीलयाए पावमित्तसंगाणुरूवपवित्तिविसेसो[8] आजीवियपच्चक्खाणाइ भंजिऊण पयट्टो भुंजिउं निसाए।

एगया य तस्स भुंजमाणस्स कहं पि भवियव्वयावसेण विज्झाए पईवे निसाए उंवरिट्ठियअदिट्ठघरकोइलिगपमुक्कपुरीससम्मिस्साहारदोसेण[9] जायं जलोयरं। पीडिओ अच्चंतं विमणदुम्मणो य पलवंतो भणिओ भज्जाए—अज्जउत्त ! गहियभग्गाणं अभिग्गहाणं कुसुमुग्गमो एसो, फलमज्ज वि अन्नं किं पि अपुव्वं भविस्सइ, ता अज्ज वि पडिवज्जिज्जउ पुव्वपवन्नो धम्मुज्जमो,

१ यतिसेवकः ॥ २ शिशिरस्वभावम् ॥ ३ °ओ वि त° प्रतौ ॥ ४ पापप्रकृतिकः ॥ ५ कृतभ्रष्टगुणात् ॥ ६ जटितखण्डितरत्नालङ्कारः ॥ ७ अर्जयति ॥ ८ °त्तसंताणु° प्रतौ ॥ ९ उपरिस्थितादृष्टगृहकोकिलाप्रमुक्तपुरीषसम्मिश्राहारदोषेण ॥

ड्डियसरीरो य सविसेससमुल्लसियलायन्न-वन्न-जोव्वणगुणो विराइउं पवत्तो।

एगया य सो सागरपुत्तो समागओ तं नियगोउलं, वुत्थो गोसंखियघरे, कया गोउलचिंता। दिट्ठो य कह वि दामन्नगो, पच्चभिन्नाओ य सविसेसं छिन्नंगुलीदंसणेण। 'हा हा ! कहं अंगुलीमेत्तं छेत्तूण मुक्को मंहगिहकयंतो[1] एसो पावेहिं ?' ति परं चित्तसंतावं पवन्नो वि आगारसंवरं काऊण भणिउमाढत्तो—भो गोसंखिय ! को एस चेडगो ? त्ति। तेण जंपियं—मह सुओ। सेट्ठिणा भणियं—सच्चं साहेसु। तओ सिट्ठो णेण जहट्ठिओ पुव्ववुत्तंतो।

'हुं अवितहं व नज्जइ साहुवयणं, तह वि न मोत्तव्वा बुंद्धि-पुरिसा[2] य' त्ति विभावितेण सेट्ठिणा 'अपक्खालियचलणस्स इमस्स विसं दायव्वं' तिगँब्भत्थलेहहत्थो[3] अणिच्छंतस्स वि गोसंखियस्स पेसिओ दामन्नगो अप्पणो पुत्तसमीवे। अमुणिय[क]ज्जमज्झो य गओ एसो रायगिहे। पँहपरिस्समकिलामियकाओ[4] य पसुत्तो वँणवासिणिदेवयाघरे[5]। उवागया निद्दा, कह वि गलिओ लेहो, दिट्ठो य तद्देवयापूयणत्थमुवागयाए तस्सेव सेट्ठिणो धूयाए विसाभिहाणाए। 'कहं मह पिउनामंकिओ ?' त्ति वाइओ उब्भिंदिऊण कोउगेणं। विभाविओ लेहगब्भत्थो, जहा—अपक्खालियचलणस्स इमस्स दारगस्स विसं दायव्वं ति। 'दिव्वागिइणो इमस्स न इमं संभाविज्जइ, किंतु एवं' ति तओ नहग्गेण नयणंजणं घेत्तूण 'विसा दायव्व' त्ति समारियाणि अक्खराणि। तहेव मुद्दिऊण लेहं मोत्तूण य गया सगिहं।

दामन्नगो वि निद्दाविरामे जणमापुच्छंतो गओ सागरपुत्तसेट्ठिणो घरं। खेत्तो लेहो, वाइओ तप्पुत्तेणं, अवधारिओ

१ मद्गृहकृतान्तः ॥ २ बुद्धिपौरुषौ ॥ ३ इतिगर्भार्थलेखहस्तः ॥ ४ पथपरिश्रमक्लान्तकायः ॥ ५ वारवासि° प्रतौ ॥

तदेवमैकान्तिकवाञ्छितार्थसार्थप्रदानादिनिदानमेतत् ।
नानुष्ठितं यैः परमेष्ठिवाक्यात्, ते दुर्गतिं श्रेणिकवत् प्रयान्ति ॥ ३ ॥
इति स्तम्भ-क्रोधप्रभृतिकलुषाश्लेषरहितं, हितं तथ्यं पथ्यं ध्रुवमविरतिव्याधिविधुरे ।
जने प्रत्याख्यानं परममवगम्योत्तमधियः, किमित्यत्राऽऽलस्यं विदधति सुखैकान्ततृषिताः ? ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे प्रत्याख्यानव्यतिरेकचिन्तायां भानुदत्तकथानकं समाप्तम् ॥ ४९ ॥

पव्वज्जा ।

प्रव्रज्यायाः स्वरूपं समर्थासमर्थप्रव्रज्ये च

पुव्वुत्तगुणाणुट्ठाणविहियपरिकम्मणो य मणुयस्स । पव्वज्जापडिवत्ती जुत्त त्ति तमिण्हि[1] वोच्छामि ॥ १ ॥
पव्वयणं पव्वज्जा असेससावज्जवज्जिया दिक्खा । सा पुण समत्थ-असमत्थगाहगावेक्खया दुविहा ॥ २ ॥
तत्थ समत्थो जो देसविरइपरिपालणेण तुलिऊणं । अप्पाणं पडिवज्जइ दीहरकालं हि पव्वज्जं ॥ ३ ॥
असमत्थो पुण सुचरियसावयवयवित्थरो वि इत्तिरियं[2] । रोगाइविहुरदेहो नाऊणमुवागयं मच्चुं ॥ ४ ॥

१ तामिदानीम् ॥ २ अल्पकालिकीमित्यर्थः ॥

संथारगदिक्खं चिय पडिवज्जइ होउ एत्तिएणावि । सव्वविरईए संफासण त्ति सद्धाए परमाए ॥ ५ ॥
इय थोयकालिया वि हु न थेवपुन्नेहिं लब्भए एसा । किं पुण दीहरपज्जायपालणेणं सुपरिसुद्धा ? ॥ ६ ॥
संसारसिंधुनावा नेव्वाण[पह]प्पयाणगंती य । दुग्गइदारुणदीहरदुहदुमदवहव्ववाहजला[1] ॥ ७ ॥
इंदियमयवग्गग्गहणवग्गुरा[2] मोहसेलदंभोली । सुकयपवेसपओली[3] पव्वज्जा जयइ निरवज्जा ॥ ८ ॥
एकदिवसं पि एसा असेससावज्जवज्जणपहाणा । जेहिं कया ते वि सिवं विमाणवासं अह पवन्ना ॥ ९ ॥
न य एयाए विरहे ववहारमयाणुवित्तिओ मोक्खो । चरिए वि चिरं दुक्करतवम्मि पढिए वि भूरिसुए ॥ १० ॥
दुविहा वि इयमुवट्ठियकल्लाणाणं नराण संभवइ । दिट्ठंतो इह दोन्नि उ सिरिचंदमहानरिंदसुया ॥ ११ ॥

तहाहि—अत्थि अवसेसियासेसदेससोहाविसेसो पउरपुर-गाम-गोउलाउलो अवंती नाम जणवओ । तहिं च नियचंगिमावगन्नियसेसनयरीसमिद्धिवित्थरा सिप्पिसंपदुप्पीडपडहच्छसच्छसलिलाउलसिप्पाभिहाणतरंगिणीविराइया[4] उज्जेणी नाम नयरी । तीए य आयरो विवेयस्स, निलओ[5] निम्मलगुणकलावस्स, आधारो धम्मस्स, निवासो नीईणं, पणमंतसामंतमोलिमंडलीमसिणियपायपीढो[6], सव्वन्नुधम्मनिच्चलनिवेसियमाणसो सिरिचंदो नाम नरिंदो । निरुवचरियपणयभायणं[7] भुवणमई से पणइणी । तीसे य दुवे पुत्ता—सिरिप्पभो पभाचंदो य । जहासमयं काराविया दो वि कलागहणं[8] उत्तमरायकुलकन्न-

१ दुर्गतिदारुणदीर्घदुःखद्रुमदवहव्यवाहजला ॥ २ इन्द्रियमृगवर्गग्रहणवागुरा ॥ ३ सुकृतप्रवेशप्रतोली ॥ ४ सिप्रासम्पत्समूहव्याप्तस्वच्छसलिलाकुलसिप्राभिधानतरङ्गिणीविराजिता ॥ ५ निउलनि° प्रतौ ॥ ६ प्रणमत्सामन्तमौलिमण्डलीमसृणितपादपीठः ॥ ७ निरुपचरितप्रणयभाजनम् ॥ ८ °हणमुत्त° प्रतौ ॥

सनत्कुमार-
नाटक-
प्रबन्धः

णापाणिग्गहणं च । पुव्वकयसुकयाणुसरिससुहेण सव्वे गमिंति कालं ।

एगम्मि य अवसरे सभामंडवासीणस्स नरवइणो जहोचियं च निसन्नेसु सिरि[प्पभ-]प्पभाचंदकुमारपमुहरायलोएसु आगंतूण भूमियलचुंबिणा मत्थएण पणमिऊण विन्नत्तं पडिहारेण—देव ! कइवयकुसलसेलूसपरिवुडो भरहरहस्सविहन्नू रंगमल्लो नाम सुत्तहारो संखेवनिबद्धसणंकुमारनाडयनिबंधो तुम्ह पायारविंदं दट्ठुमिच्छइ त्ति । 'सिग्घं पवेसेसु' त्ति अब्भणुन्नाओ रन्ना । 'तह' त्ति संपाडिओ णेण रायाएसो । पविट्ठो सुत्तहारो । अथ त्रिपताकं करं कृत्वा उवाच—

षट्खण्डामवनिं निधीन् नव चतुःषष्टिं सहस्राणि च, स्त्रीणां क्षोणिभुजां तदर्धमपरं द्विः सप्त रत्नानि च ।
यस्त्यक्त्वा तृणवद् भवार्तिविधुरो जैनं व्रतं शिश्रिये, राजर्षिः स सनत्कुमार इह ते भूपाल ! भूयात् श्रिये ॥ १ ॥

अह नाडयावलोयणकोऊहलियरायसुयावरोहेण नरवइणा तदभिणयणहेउं सविलासा पेसिया दिट्ठी सुत्तहारम्मि । तओ नियकुसलयाए जाणिऊण तदभिप्पायं 'भो भो सभावत्तिणो सिरिचंदनरिंदपुरस्सरा ! निसामह महाणुभावस्स सणंकुमारस्स वित्तंतं' ति जंपंतो सुत्तहारो संखेवओ चिय पयट्टो तंमभिनविउं । जहा—

हत्थिणउरपुरपहुणो सणंकुमारस्स रायसीहस्स । छक्खंडभरहवइणो रज्जसुहं भुंजमाणस्स ॥ १ ॥
अप्पडिमरूवलच्छीविच्छड्डपलोयणेण परितुट्ठो । सोहम्माए सभाए सक्को देवाण साहेइ ॥ २ ॥
भो भो सुरा ! पलोयह सणंकुमारस्स चक्कवट्टिस्स । पुव्वज्जियसुहनिम्माणकम्मनिम्मायमुत्तिस्स ॥ ३ ॥

१ नाट्यशास्त्ररहस्यनिपुणः ॥ २ °ब्भभावाणुन्ना° प्रतौ ॥ ३ तद् अभिनेतुम् ॥ ४ पूर्वार्जितशुभनिर्माणनामकर्मनिर्मितमूर्तेः ॥

उज्झिज्जंतु कुसीलसंगा, सेविज्जंतु भुज्जो सुतवस्सिणो त्ति । तेण भणियं—आ पाविट्ठे ! दुट्ठमुहे ! केण सिट्ठं तुह एयं ? किं न पेच्छसि अणवरयपावपसत्ता वि मच्छियाइणो आरोग्गविग्गहे जहिच्छं वियरंते ? जं मम पुरो भुज्जो भुज्जो धम्मं पोकरसि त्ति । एवं च तेण तज्जिया लज्जिया सा मोणमल्लीणा । तहा वि वित्थरिओ सव्वत्थ वि अवन्नवाओ, जहा—पवन्नधम्मगुणभंगसंभवो सव्वो एस दोसो त्ति । एवं सो अविमंसियनियदोसो अजायपच्छायावो दुक्खनिवहं अजस्सं च उवज्जिऊण मओ चाउरंतसंसारकंतारपहदीहपहिओ जाओ त्ति ।

प्रत्याख्या-
नस्य दोषादि
तन्माहा-
त्म्यं च

इय उभयभवियकल्लाणपेहियाणं जणाण निब्भंतं । उप्पज्जइ निरवज्जा पच्चक्खाणे मई सम्मं ॥ १ ॥
किं च उवेक्खा अविही अप्परिणामो य वीरियाभावो । पच्चक्खाणे दोसा सोग्गइगामीण नो हुंति ॥ २ ॥
एवं फासिय पालिय सोहियमह तीरियं च किट्टियं । आराहियं च एयं सुविसुद्धं बिंति समयन्नू ॥ ३ ॥
सीयालभंगसयभावणा य गुणकारिणी दढं एत्थ । भेयप्पभेयविन्नाणविरहओ न हि हिए रमइ ॥ ४ ॥ अपि च—

प्रत्याख्यानादाश्रवद्वाररोधस्तस्मात् तृष्णा मूलतश्च व्यपैति ।
तद्ध्वंसाच्चोत्पद्यते सत्प्रशान्तिस्तस्याः प्रत्याख्यानचेष्टाविशुद्धिः ॥ १ ॥
तस्याः शुद्ध्या चारुचारित्रभावस्तस्मात् सद्यः कर्मणां स्याद् विवेकः ।
तत्पार्थक्यात् कर्मघातस्ततोऽपि, ज्ञानावाप्तिर्मोक्षलक्ष्मीस्ततोऽपि ॥ २ ॥

१ मात्स्यिकादयः 'आरोग्यविग्रहाः' नीरोगदेहाः ॥ २ अविमृष्टनिजदोषः ॥ ३ -पथदीर्घपथिकः ॥ ४ -प्रेक्षितानाम् ॥ ५ हृदि ॥

इय अक्खोप्परपेहण-परिभावणवड्डमाणपरितोसो। ते दट्ठुं चक्कहरो भणइ अहो! [1]ठाह खणमेक्कं ॥ ८ ॥
जाव अहं कयण्हाणो गिण्हामि विसिट्ठवत्थ-ऽलंकारं। तो [9]पेच्छेज्जह पुणरवि तह त्ति पडिवज्जिउं तियसा ॥ ९ ॥
वि[2]गमिय मुहुत्तमेक्कं जाव पलोयंति तं महीनाहं। ता [3]मउलियमुहसोहा विच्छाया ज्झत्ति ते जाया ॥ १० ॥
'अहह! किमेतत्?' इति सर्वे सभ्याः साकूतं परस्परमुदीक्षामासुः।
पुव्वमणलंकियम्मि वि मइ दिट्ठे सुट्ठु हरिसिया तुब्भे। इन्हिं न्हाए वि अलंकिए वि दीसह [4]ससोग व्व ॥ १ ॥
किं कारणं? ति पुट्ठा य चक्किणा ते भणंति महिनाह!। संपइ तुज्झ सरीरे संकंता वाहिणो सत्त ॥ २ ॥
[5]तव्वसपणस्समाणंगरूव-लायन्न-वन्न-कंतिगुणो। वट्टसि तुमं ति अम्हे पडिवन्ना सोगसंभारं ॥ ३ ॥
रन्ना भणियं कह नज्जए इमं ज्झत्ति रोगसंभूई?। ता [6]सिट्ठजहट्ठियसव्वपुव्वसुररायवुत्तंता ॥ ४ ॥
पायडियनियसरूवा गिव्वाणा पडिगया जहाभिमयं। वेरग्गोवगयमई चक्कहरो अह विचिंतेइ ॥ ५ ॥
भवण-धण-जुवइ-चउरंग[संग]हो जस्स कीरइ निमित्तं। जइ तं पि सरीरं पउरवाहिविहुरं असारं च ॥ ६ ॥
ता किं इमिणा [7]निक्कज्जएण अज्ज वि य पोसिएणं मे?। गिण्हामि फलं एत्तो [8]विणस्सिराओ सरीराओ ॥ ७ ॥
एवं विभाविऊणं एस महप्पा समग्गमवि संगं। उज्झइ गिण्हइ य लहुं पवज्जं [9]उयह निरवज्जं ॥ ८ ॥

१ ठाण ख° प्रतौ ॥ २ व्यतिक्रम्येत्यर्थः ॥ ३ 'मुकुलितमुखशोभौ' क्षीणमुखकान्ती ॥ ४ सशोकौ ॥ ५ तद्वशप्रणश्यमानाङ्गरूपलावण्यवर्णकान्तिगुणः ॥ ६ शिष्टयथास्थितसर्वपूर्वसुरराजवृत्तान्तौ ॥ ७ °कज्जुए° प्रतौ ॥ ८ विनश्वरात् ॥ ९ पश्यत ॥

परिमलमिलंतभमरालिमणहरो एस केसपब्भारो। निवडइ सिराओ [1]सियंकुसुमरेहिरो करयलविलुत्तो ॥ ९ ॥
उयह मणिमउड-हार-[ऽद्धहार]-कडयाइभूसणसमूहो। इमिणा महीए चत्तो निम्मल्लं पिव अवन्नाए ॥ १० ॥
ओ! पेच्छह विलवइ कह [2]विमुक्कपोक्कारनिब्भरनिनायं। नायगरहियं दुहियं रुयंतमंतेउरं पुरओ? ॥ ११ ॥
हा सामि! सामि! किमजुत्तमेरिसं असरिसं समारद्धं। तुमए कज्जं? ति [3]पयंपिरो य रोयइ दढं लोओ ॥ १२ ॥ छ ॥
इह तह कहं पि निक्खमणवइयरो तेण तस्स [4]संचविओ। जह सिरिचंदनरिंदो तवेलं जायवेरग्गो ॥ १ ॥
तं किं पि सुहज्झाणं पडिवन्नो जेण तक्खणं चेव। [5]संजायजाइसरणो सुमरियचिरपढियसुत्तत्थो ॥ २ ॥
सयमेव [6]पंचमुट्ठियमणुट्ठिउं लोयकम्ममह समणो। होऊण चत्तसंगो नीहरिओ रायभवणाओ ॥ ३ ॥
एत्थंतरे पायवडियं सायरं 'देव! किमेयमारद्धं तुब्भेहिं? नडविलसियमेयं, कहिं सणंकुमारे? कत्थ वा तन्निक्ख[7]मणं?' ति पयंपिरं पि रायलोयमवगन्निऊण विहरिओ जहाभिमयं [8]रायरिसी।
अह अच्चंतपिउविओगसोगगग्गिरगिरं सिरिप्पभरायसुयं अणिच्छंतं रायपए पभाचंदं पि जुवरायपए निवेसिऊण रायलोएण भणियं—
मा कुणह जणगसोगं असोयणिज्जो खु सो महाभागो। खलमहिल व्व विमुक्का जेण समग्गा वि रायसिरी ॥ १ ॥

१ सितकुसुमराजमानः करतलविलुप्तः ॥ २ विमुक्तपूत्कारनिर्भरनिनादम् ॥ ३ प्रजल्पिता ॥ ४ दर्शितः ॥ ५ सञ्जातजातिस्मरणः स्मृतचिरपठितसूत्रार्थः ॥ ६ पञ्चमुष्टिकमनुष्ठाय लोचकर्म ॥ ७ °मणं पि प° प्रतौ ॥ ८ राजर्षिः । अथ अत्यन्तपितृवियोगशोकगद्गदस्वरम् ॥

को नाम कुणइ दुकरमेवंविहधम्मकम्मपारंभं ? । पायं वेरग्गमई मइमंताण वि खणं एकं ॥ २ ॥
ते णंत च्चिय जे कालधम्मयं उवगया अकयधम्मा । उज्जमियमेवमिह जेहिं ते परं के वि जइ विरला ॥ ३ ॥
को न निसामइ समयं ? को नेक्खइ खणविणस्सरं सव्वं ? । को वा न विभावइ भाविरं च मरणं सरीरीणं ? ॥ ४ ॥
को वा सुगुरुवइट्ठं धम्मुवएसं धरेइ नो हियए ? । कस्स व न वल्लहं मोक्खसोक्खमक्खंडमक्खइयं ? ॥ ५ ॥
किंतु चलचित्तयाए तदणुट्ठाणक्खणम्मि खीणंगा । भग्गुच्छाहा हच्छं पच्चोसक्कंति गरुया वि ॥ ६ ॥
देवेणं पुण तं किं पि साहसं ववसियं वसिवरेण । जं असमसाहसाण वि सहसा चित्तं चमक्केइ ॥ ७ ॥
एसो वि देव ! परमोवयारभावेण नाडयविहाया । धम्मगुरू विव तुम्हं सविसेसं पूइउं जुत्तो ॥ ८ ॥

एवं च निसामिऊण मणागमुवसंतसोगावेगो 'तह' त्ति सम्मं पडिवज्जिय सिरिप्पभनरिंदो तं रंगमल्लं महामोल्लदो-गुल्ल-मंडणाईहिं पूएइ, रज्जकज्जाणि य चिंतेइ त्ति । एवं वच्चंति वासरा ।

एगया य सो सिरिप्पभपुहईवई पभाचंदेण समं समणसीहसीहाभिहाणमुणिपुंगवसमीवे सम्ममुवगम्म पाणिवहवि-णिवित्तिपमुहबारसविहसावयवयधम्मं पवज्जेइ, तदेगचित्तो परिपालेइ य । तप्पालणपरस्स य वच्चंतेसु दिणेसु तद्धम्मपवित्ति-वित्तंतसवणसंभावियाविजिगीसुसरूवेण अरिदमणमेइणीवइणा पारद्धो उवद्दविउं अवंतीविसयसीमागामनिवहो । सुओ य

१ जगति ॥ २ शृणोति आगममित्यर्थः ॥ ३ मोक्षसौख्यम् अखण्डम् अक्षयिकम् ॥ ४ भग्नोत्साहाः शीघ्रं प्रत्यवष्वष्कन्ते ॥ ५ नाटकविधाता ॥ ६ महामूल्यदुकूलमण्डनादिभिः ॥ ७ तद्धर्मप्रवृत्तिवृत्तान्तश्रवणसम्भाविताविजिगीषुस्वरूपेण ॥

सा का वि य रूवसिरी जा देवाणं पि नेव संभवइ । अविवन्नं लायन्नं उग्गा सोहग्गलच्छी वि ॥ ४ ॥
अहह ! कहं धाउभवं पि देहमेवं हरी पसंसेइ ? । अइभूरिवियणवित्थरमवहत्थिय देव-दणुवइणो ॥ ५ ॥
ता तं गंतूण सयं पेहेमो इति विभाविउं दोन्नि । कयवुड्ढविप्परूवा देवा तं नयरमोइन्ना ॥ ६ ॥

अत्रान्तरे विस्मिता राजपुत्रादयः 'किमतो भविष्यति ?' इति सावधानाः शुश्रुवुः—

दूरयराओ देसाओ राइणो रूवपेहणट्ठाए । आय म्ह भो पडीहार ! कहसु सिरिचक्कवट्टिस्स ॥ १ ॥
एवं भणिउं चिट्ठंति जाव ता ज्झत्ति लद्धपडिवयणो । सविणयजोडियपाणी ते पडिहारो पवेसेइ ॥ २ ॥
राया वि तक्खणं किर न्हाणट्ठमुवट्ठिओ समग्गाइं । आभरणाइं विमोत्तुं केवलकयकडियडकडिल्लो ॥ ३ ॥
दरिसायं देमि सुदूरदेसपहसमकिलंतकायाण । महरूवमेत्तपेहणनिमित्तमिहइं उवगयाण ॥ ४ ॥
एयाण तवस्सीणं ति चिंतिउं चत्तपत्थुयपयत्थो । अभिमुहमभिवट्टंतो पलोइओ थेरविप्पेहिं ॥ ५ ॥
अह हरिसवियसियच्छा अहोऽइमेरं इमस्स सुंदेरं । अन्ना य रूवलच्छी किं पि अपुव्वं च लायन्नं ॥ ६ ॥
सच्चं महाणुभावेण वज्जिणा जंपियं च तं तइया । अज्ज वि तदुत्तसविसेसदेहसोह व भाइ इमो ॥ ७ ॥

१ अविवर्णम् ॥ २ अपहस्तयित्वा देवदनुजपतीन् ॥ ३ °वुड्डवि° प्रतौ ॥ ४ केवलकृतकटितटकटिवस्त्रः ॥ ५ दर्शनं ददामि सुदूरदेशपथश्रम-क्लान्तकायेभ्यः ॥ ६ मम रूपमात्रप्रेक्षणनिमित्तम् इहोपगतेभ्यः ॥ ७ त्यक्तप्रस्तुतपदार्थः ॥ ८ हर्षविकसिताक्षौ अहो ! अतिमर्यादमस्य सौन्दर्यम् ॥ ९ °व्वं चेव ला° प्रतौ ॥ १० इन्द्रेण ॥

स्सामि' त्ति कयनिच्छओ जुवरायं पभाचंदं रज्जकज्जे निजुंजिऊण नीहरिओ नयराओ, पत्तो नियदेससीमासंधिं । परोप्परं समीवगुवागयाइं दोन्नि वि बलाइं । पयट्टो समरवावारो । कहं चिय ?—

[1]अइगरुयकोवभडभिउडिभीम, सोडीरिमपावियविजयसीम ।
भूनाहिं भूवइ जुज्झि लग्ग, अणवरयमुक्कसरझसरवग्ग ॥
[2]अस्सवारवीर समवग्गिएहिं, खग्गाउह उट्ठिय खग्गिएहिं ।
करिघडहं भिडिय पडिकरडिपंति, कयदसणघाय मसि-मेहकंति ॥
[3]असिदंड[4]लुणिय निवडंत छत्त, नं जयसिरि उज्झिय अग्घपत्त ।
पवणुद्धुय धय उद्धुप्पयंत, नं केउ सहहिं नहि उग्गमंत ॥
[5]सुहडंगि लग्ग नाराय तिक्ख, कीणासमुक्क नं नियकडक्ख ।
महि रुंडमुंडमंडिय असेस, नज्जइ खयसमयह निव्विसेस ॥

---

१ अतिगुरुककोपभटभ्रुकुटिभीमः, शौण्डीरिमप्राप्तविजयसीमः । भूनाथैः न भूपतिः युद्धे लग्नः, अनवरतमुक्तशरझसरवर्गः ॥ २ अश्ववारवीराः 'समवर्गिकैः' अश्ववारैः, खड्गायुधा उत्थिताः खड्गिकैः । करिघटाभिः सङ्गता प्रतिकरटिपङ्क्तिः, कृतदशनघाता मषीमेघकान्तिः ॥ ३ असिदण्डलूनानि निपतन्ति च्छत्राणि, इव जयश्रिया उज्झितानि अर्घपात्राणि । पवनोद्धुता ध्वजा उर्द्धमुत्पतन्तः, केतवः इव राजन्ते नभसि उद्गच्छन्तः ॥ ४ °लुनिय प्रतौ ॥ ५ सुभटाङ्गे लग्ना नाराचास्तीक्ष्णाः, कीनाशेन मुक्ता इव निजकटाक्षाः । मही रुण्डमुण्डमण्डिता अशेषा, ज्ञायते क्षयसमयेन निर्विशेषा ॥

[1]पम्मुक्कहक्कहुंकारभीस, अद्धिंदुलुणिय सुहडाहं सीस ।
उद्धुच्छलंत रेहंति केव ?, हरिखंडिय रावणमुंड जेव ॥
[2]रणतूररवाऊरिय दियंत, दुक्खेण नाइ नज्जइ रसंत ।
रुहिरारुण रेहहिं भुवि वियंड, सतडिच्छड नं नवमेहखंड ॥
[3]सरपहरकिलामिय तुरयथट्ट, निब्भग्गमणोरह जिह पयट्ट ।
पडिसत्तुसेन्नु अइनिरु विसन्नु, भयभीयइं गिरिकुहरइं पवन्नु ॥
[4]कइवयनरजुत्तउ, जगि विगुत्तउ, तयणु पलाणउ अरिदवणु ।
अंगीकयखत्तह, धम्मासत्तह, खंडण सक्कइ बलु कवणु ? ॥ १ ॥

एवं च [5]विहेलियनामत्थे पउत्थे तम्मि पत्थिवे उवलद्धविजओ सिरिप्पभो राया अन्नेसिं पि नरिंदाणं दिन्नचित्त-चमक्कारो समागओ नियनयरं । जायं वद्धावणयं । परितुट्ठो पभाचंदो । तिवग्गसंपाडणपरं च रज्जसिरिमणुभुंजंताण ताण

---

१ प्रमुक्तहक्काहुङ्कारभीषणानि, अर्धेन्दुलूनानि सुभटानां शीर्षाणि । ऊर्द्ध्वोच्छलन्ति राजन्ते कथमिव ?, 'हरिखण्डितानि' वासुदेवखण्डितानि रावणमुण्डानि यथा ॥ २ रणतूररवापूरिताः दिगन्ताः, दुःखेन इव ज्ञायन्ते रसन्तः । रुधिरारुणाः राजन्ते भुवि........सतडिच्छटा इव नवमेघखण्डाः ॥ ३ शरप्रहाराक्रान्तः तुरगसमूहः, निर्भाग्यमनोरथा इव प्रवृत्तः । प्रतिशत्रुसैन्यं अत्यन्तं विषण्णं, भयभीतं गिरिकुहराणि प्रपन्नम् ॥ ४ कतिपयनरयुक्तः जगति विगुप्तः तदनु पलायितोऽरिदमनः । अङ्गीकृतक्षात्रस्य धर्मासक्तस्य खण्डने शक्नोति बलं कतरत् ? ॥ ५ निष्फलनामार्थे इत्यर्थः ॥

वच्चंति वासरा। अन्नया य अणिययविहारेण विहरंता तं पुरं पत्ता पभासनामधेया सूरिणो, वुत्था[1] य असोगसंडम्मि उज्जाणे। जाणियतदागमणो य समागओ सपरियणो सिरिप्पभपुहइवई। जहाविहिवंदियगुरुचरणो य निसन्नो महीवट्ठे। सूरिणा वि पारद्धा धम्मकहा। जहा—

नरवर! जि[2]प्पंति कहं पि प[3]उरपक्खुक्खडा वि पडिवक्खा। व[4]वसिज्जंति य काउं ववसाया दढमसज्झा वि ॥ १ ॥
साहिज्जंति य कज्जाइं दिन्न[5]चोज्जाइं सयललोयस्स। गम्मंति अगम्माणि वि फुरंतगुरुवीरियवसेण ॥ २ ॥
केवलमेको अप्पा अ[6]णप्पकुवियप्पपवणखिप्पंतो। आरोविउं पि तीरइ संजमसिहरम्मि न क[7]हं पि ॥ ३ ॥
किं पुण तहिं चिय चिरं थिरीकरेउं तदुत्तरुत्तरओ। गुणपयरिसम्मि सम्मं ठविउं वा निज्जुणिय विग्घं ॥ ४ ॥
काणि वि कहिं पि संजमठाणाइं फासियाइं जीवेण। किंतु अणुबंधविरहा ताइं वि जायाइं विहलाइं ॥ ५ ॥
एसा वि देसविरई सेविज्जइ सव्वविरइकज्जेण। पायमिमीए परिकम्मिया णमि[8]यरा थिरा होइ ॥ ६ ॥
ता नरवर! चिरकालं अकलंकियकयगिहत्थधम्मस्स। तुह जुत्तो संपइ सव्वसंगचागो परं काउं ॥ ७ ॥
जह बज्झवेरिविजयत्थमुज्जओ तं[9] पुरा दढं जाओ। तह अंतररिउविजयं पि इण्हि सम्मं समायरसु ॥ ८ ॥
परमत्थिओ जओ एस चेव एयत्थमेव य जयंति। जइणो महाणुभावा दूरुज्झियसव्वसावज्जा ॥ ९ ॥

१ उषिताश्च ॥ २ जीयन्ते ॥ ३ प्रचुरपक्षोत्कटाः ॥ ४ व्यवसीयन्ते ॥ ५ दत्ताश्चर्याणि ॥ ६ अनल्पकुविकल्पपवनक्षिप्यमाणः ॥ ७ कहिं पि प्रतौ ॥ ८ 'इतरा' सर्वविरतिरित्यर्थः ॥ ९ त्वम् ॥

एस वइयरो चारनरनियराओ रायसिरिप्पभेण। भणाविओ य सो पहाणपुरिसपेसणेण, जहा—किमेवं पुव्वपुरिसपरंपरापरागयं पि पणयपब्भारमसारीकाऊण कइवयसीमासमीवगामकुडी[1]लूडणेण विप्पियमायरसि? किं न सुयमिमं तुमए महाभाग! पुव्वपुरिसवयणं?—

ते धन्ना सप्पुरिसा जाण सिणेहो अभिन्नमुहरागो। पइदियहं वड्ढंतो रिणं व पुत्तेसु संकमइ ॥ १ ॥

ता एत्तो वि विनियत्तसु इमाओ, खमिओ य एसोऽवराहो तुह संपइ मए, नहि थेवावरा[3]हे वि पुव्वट्ठिइभंगभीरुणो विरोहमारभंति संतो त्ति। इमं च सोच्चा पहसंतेण भणावियं अरिदमणेण। जहा—

तुह पत्थिव! धम्मत्थं सवित्थरा रिद्धि कुसलकिच्चस्स। पुहइपरिपत्थणाए अलमित्तोऽणत्थबहुलाए ॥ १ ॥
अह अभिलससि इमं पि हु ता दूरं मुंच धम्मवावारं। संभवइ कह णु एगत्थ ख[2]ल्लि-सीमंतसंघडणं? ॥ २ ॥
अह लोयरंजणामेत्तमेयमारंभियं सुकयकिच्चं। ता निच्चिंतो चिट्ठसु एत्तो न हणामि तुह देसं ॥ ३ ॥
पुव्वपणयाविरोहो हि भूवईणं प[4]रं जिगीसीण। दूसणमेव महंतं अहवा वि य दढमसामत्थं ॥ ४ ॥

इमं च तम्मुहाओ आयन्निऊण 'अहो! दुस्सिक्खियाणमुल्लावो' त्ति जंपिरो सिरिप्पभभूवई त[5]क्कालताडावियसन्नाहढक्कारवायन्न[6]णपुरचरणुक्कंठियवंठाहिट्ठियविसिट्ठकरि-तुरगाइसामग्गीसणाहो 'नाहमित्तो तं दुरायारमसाहिऊण च्छत्तं पि धरावइ-

१–ग्रामकुटीलुण्टनेन ॥ २ खल्वाटसीमन्तसङ्घटनम्। सीमन्तः–केशपाशः ॥ ३ °यावराहो प्रतौ ॥ ४ शत्रुमित्यर्थः ॥ ५ तत्कालताडितसन्नाहढक्कारवाकर्णनपुरश्चरणोत्कण्ठितवण्ठाधिष्ठितविशिष्टकरितुरगादिसामग्रीसनाथः ॥ ६ °णतुरद्धरणु° प्रतौ ॥

सम्माणिऊण संघं पसत्थदियहम्मि विहियसिंगारो। आरुहिउं नीहरिओ सहस्सनरवाहिणिं सिबियं ॥ २२ ॥
पत्तो य सूरिपासे तो उज्झियसव्ववत्थ-ऽलंकारो। पडिवन्नो पव्वज्जं विहिणा सिद्धंतवुत्तेणं ॥ २३ ॥
तो देइ अमयवुट्ठिं व सव्वसत्ताण जणियपरितुट्ठिं। अणुसट्ठिं तस्स गुरू महुरगिराए इमं पयओ ॥ २४ ॥

इह हि भवसमुद्दे णंतसो संसरंता, कहमवि य लभंते जंतुणो माणुसत्तं।
तमवि कहवि लद्धुं [1]सुद्धसद्धम्मकम्मक्खमतणुबलमाउं दीहकाला लहंते ॥ २५ ॥
तमवि हु लहिऊणा[2]तुच्छमिच्छत्तलुत्ताखिलमइनयणत्ता णंतसत्ता दुहत्ता।
तह कह वि जयंते पावकिच्चेसु निच्चं, जह पुणरवि णंतं णंतका[3]ए वसंति ॥ २६ ॥
इय [4]बहुतमवेलुब्बुड्ड-निब्बुड्डणेहिं, भवजलहिनिमग्गा जाणवत्तं व दिक्खं।
[5]भुवणपहुपणीयं सव्वहाऽलद्धपुव्वं, कहमवि य लहंते पुव्वपुन्नेहिं केई ॥ २७ ॥

पडिपुन्नमिमं तु[6]मए य पावियं कह वि दिव्वजोएण। ता बाढमप्पमाओ कायव्वो सव्वहा एत्तो ॥ २८ ॥ तहाहि—
जयमेव आसियव्वं संचरियव्वं सचक्खुवावारं। उवओगपुव्वमिउ-महुर-मणहरं भासियव्वं च ॥ २९ ॥
जयणाए [7]सइयव्वं भोत्तव्वं चत्तराग-दोसं च। [8]पडिलेहियप्पमज्जियभूमीए ठाइयव्वं च ॥ ३० ॥

१ शुद्धसद्धर्मकर्मक्षमतनुबलम् ॥ २ अतुच्छमिथ्यात्वलुप्ताखिलमतिनयनत्वात् ॥ ३ 'अनन्तकाये' निगोदमध्ये इत्यर्थः ॥ ४ बहुतमवेलोद्ब्रूडनिर्ब्रूडनैः ॥ ५ तीर्थकरप्रणीतमित्यर्थः ॥ ६ त्वया ॥ ७ शयितव्यम् ॥ ८ प्रतिलिखितप्रमार्जितभूमौ स्थातव्यम् ॥

अममत्तमिंदियजओ अकसाइत्तं च पिंडसुद्धी य। ज[1]यसमयं आवस्सयविहीसु स[2]इ वट्टियव्वं च ॥ ३१ ॥
विणओ य सया किच्चो बाल-गिलाणाइयाण जहसत्तिं। अकलंकसीलपालणमणुट्ठियव्वं च जाजीवं ॥ ३२ ॥
एयविवरीयचारी हिंसाकारी अहिंसगो वि भवे। न पमायाओ वि परं हिंसाए पयं जिणा बिंति ॥ ३३ ॥
धन्नो तुमं महायस! सीलभर[......]समुद्धरणधीर!। माणुस्सजम्म-जीवियफलं च तुमए परं पत्तं ॥ ३४ ॥
एयस्स पभावेणं पालिज्जंतस्स सइ पयत्तेण। जीवेहिं अणंतेहिं दुक्खाण जलंजली दिन्नो ॥ ३५ ॥
चिंतामणी अउव्वो एयमपुव्वो य कप्परुक्खो त्ति। एयं परमो मंतो एयं [3]परमामयं चेव ॥ ३६ ॥
एयस्स कए धीरा रज्जं रट्ठं पुरं पुरंधीओ। पडिबंधबंधुरं बंधुलोयमवहाय निक्खंता ॥ ३७ ॥

तिलो[4]यसुयसासणा अतुलरूवनिब्भासणा, अतुल्लबल-विक्कमा पयडियपहाणक्कमा।
जिणिंदउसभाइणो विजियघोररागाइणो, च[5]इंसु भवसंभवं सुहमवेक्खिउं संजमं ॥ ३८ ॥
छखंडभरहाहिवा नवमहानिहीसुंदरं, प[6]हूयरयणुब्भडं हरि-करिंद-जोहाउलं।
त[7]णं व पडसंगयं लहु समुज्झिउं चक्किणो, नरिंदसिरिमुत्तमं भरहमाइणो निग्गया ॥ ३९ ॥

१ जगत्समत्वम् ॥ २ सदा ॥ ३ परमामृतम् ॥ ४ त्रिलोकविख्यातशासनाः इत्यर्थः ॥ ५ तत्यजुः ॥ ६ प्रभूतरत्नोद्भटम् ॥ ७ तृणमिव ॥

परेहिं अनिरिक्खिया [1]सुहसिरीगुणालंकिया, अणन्नबलसालिणो हलहराइणो राइणो ।
भुयंगमविभीसणं घरनिवासमासंकिउं, पवन्नदढसंजमा वणविहारवासं गया ॥ ४० ॥
ईसर-सेणावइ-सत्थवाह-सामंत-मंतिपमुहाणं । सामन्नपवन्नाणं सेसाणं मुणउ को संखं ? ॥ ४१ ॥
न य एत्तो वि हु अन्नं वन्नंती मोक्खसाहणोवायं । तेण तव-चरणाइसु कीरइ जत्तो दढं इहरा ॥ ४२ ॥
दुपरिच्चयं नियघरं मुचंतु कहं व बंधुपडिबंधा ? । कह वा पइदिणपरघरभिक्खाभमणं च [2]कीरेज्जा ? ॥ ४३ ॥
सिरलोओ वा अच्चंतदुस्सहो गुरुपरीसहस्सहणं । अण्हाण-भूमिसयणाइ कह व कट्ठं अणुट्ठेज्जा ? ॥ ४४ ॥
एवं भवसुहविमुहा जयंति एगे तवे महासत्ता । अन्ने उ पावकम्मा पडुच्च ते एवमाहंसु ॥ ४५ ॥
किं [3]घिप्पइ पडिवज्जा ? न जहुत्ता जेण तीरए काउं । पज्जायाणं दोण्ह [वि] वितहकरणे परिच्चाओ ॥ ४६ ॥
न तहा य पिंडसुद्धी न खमा संघयणमद्दढं न धिई । [4]सामिस्संगं च तवो गिहिधम्मो ता परं [5]जुत्तो ॥ ४७ ॥
एवं हि दुव्वियड्ढा पयंपिरा तह कहं पि कुव्वंति । जह सासणवुच्छित्ती जायइ न इमं च भाविंति ॥ ४८ ॥
कालोच्चियकिरियरया जहसत्ति अमच्छरा अमाइल्ला । जयमाणा मुणिणो च्चिय समयत्थपरूवगा सम्मं ॥ ४९ ॥
उस्सग्ग-ऽववायविऊ आवस्सयविहिसु बद्धपडिबंधा । [6]तक्कालावेक्खाए सुसाहुणो च्चिय पवुच्चंति ॥५०॥ किंच—
खय उवसम मिस्सं पि य जिणकाले वि तिविहं भवे चरणं । मिस्साउ च्चिय पावइ खयं उवसमं पि नऽन्नत्तो ॥ ५१ ॥

१ शुभश्रीगुणालङ्कृताः ॥ २ क्रियेत ॥ ३ गृह्यते परिव्रज्या ॥ ४ 'सामिष्वङ्ग' आसक्तिसहितम् ॥ ५ जुत्तं प्रतौ ॥ ६ °क्खायाए प्रतौ ॥

तुह पिउणा वि हु तह कह वि संजमे सम्ममेव उज्जमिउं । जह [1]तज्जसोहभरियं अज्ज वि हसई व दिसिवलयं ॥ १० ॥
एवंविहसामग्गी कत्तो पुणरेव संभवइ परमा ? । ता सव्वसंगचागत्थमुज्जमं कुणसु नरनाह ! ॥ ११ ॥
[2]बालयधूलीघरकीलणं व परमत्थविरहियं अहियं । संसारियं पि किच्चं कुसलाणं अक्खिवइ हिययं ॥ १२ ॥
एवं वुत्तम्मि गुरूहिं राइणा हरिसवियसियच्छेण । भणियं भयवं ! एवं अन्नं को जंपिउं मुणइ ? ॥ १३ ॥
कस्स व करुणासारो परोवयारो वि हवउ अवरस्स ? । सग्गा-ऽपवग्गमज्झे सत्थाहो को तुमाहिं परो ? ॥ १४ ॥
ता जाव रज्जकज्जे ठवेमि [3]भाउं इमं पभाचंदं । ताव तुह पायमूले पव्वज्जमहं पवज्जामि ॥ १५ ॥
गुरुणा भणियं भद्दय ! संपज्जउ वंछियं तुहं [4]हच्छं । निग्घाइज्जउ विग्घं धम्मत्थपवन्नचित्तस्स ॥ १६ ॥
तो राया नियभवणे गंतूणं रायलोयपच्चक्खं । ठावेइ पभाचंदं रायपए देइ सिक्खं च ॥ १७ ॥
धम्मस्स य रज्जस्स य कज्जाइं जहा न वच्छ ! सीयंति । तह [5]वट्टेज्जसु अरिचक्कमक्कमेज्जासि य सया वि ॥ १८ ॥
[6]वज्जेज्जासु कुसंगं निस्संगे साहुणो [7]भएज्जासु । अणुवत्तिज्जसु सकुलक्कमं च मुंचेज्जसु पमायं ॥ १९ ॥
रायसिरी विसया वि य जइ वि हु सम्मोहकारया बाढं । तह वि य तेहिं [8]अव्वहियमाणसो होज्जसु तुमं ति ॥ २० ॥
एवं तं अणुसासिय जिणभवणेसु य विसेसपूयाई । काराविऊण दीणाइयाण दाणं च दाऊण ॥ २१ ॥

१ तद्यशओघभृतम् ॥ २ बालकधूलीगृहक्रीडनमिव परमार्थविरहितम् अहितम् ॥ ३ भ्रातरम् ॥ ४ त्वरितम् निहन्यताम् ॥ ५ वर्त्तेथाः ॥ ६ वर्जयेः ॥ ७ भजेः अनुवर्त्तेथाः ॥ ८ अव्यथितमानसः ॥

हियं पवज्जामि–त्ति जाव परिभावेइ ताव समुच्छलिओ कणिट्ठसुयमंदिरे अमंदरुयमाणीणमंतेउरीणं हाहारवो । 'हा हा ! किमेयं ?' ति विम्हिओ राया ।

एत्थंतरे पविट्ठा वेगागमणवसविगलियउत्तरीया दीहं नीससंती अच्छिन्नणिंतबाहप्पवाहपंवाणियाणणा[1] 'देव ! परित्तायह परित्तायह अणज्जेण हीरमाणं कयंतेण रायसुयं पउमनाभं' ति पयंपमाणी संतिमई नाम कुमारधावी । 'अरे रे ! को एस कयंतो मइ जीवंते वि मह सुयं हरइ ?' त्ति करवालमायड्ढिऊण[2] कोवभरविरइयभालभिउडिभीमाणणो धाविओ वेगेण राया । पायवडिएहिं विन्नत्तो अंगरक्खेहिं—देव ! कयं संरंभेण, अंगीकरेह धीरिमं, न विसओ एस पोरिसस्स । एवं च मणागमुवसंतकोवावेगो गओ सुयसमीवं । सो वि तवेलं चिय च्छिन्नाउयकम्मो पवन्नो पंचत्तं । 'हा वच्छ ! कहिं गओ सि ? देहि पडिवयणं' ति रुयंतो मुच्छानिमीलियच्छो पडिओ महीए महीवई । कह कह वि अणुसासिओ परियणेणं । कयं च उड्ढदेहियं[3] कुमारस्स । गएसु य केच्चिरेसु वि दिणेसु सरीरगेलन्नेण य सुयविओगदुक्खेण य संतप्पमाणो कहं[4] पि जिणवयणविमरिसुप्पन्नविसुद्धभावो[5] भूवई अप्पाणमणुसासिउं पवत्तो—

रे जीव ! कीस विलवसि ? खिज्जसि ? रुयसी य ? वेवसि य बाढं ? । पियजणविओग-रोगाइतिक्खदुक्खोहखोहे वि ॥ १ ॥ आत्मानुशासनम्

किं न विचिंतेसि ? जयम्मि[6] तं कुलं नत्थि जत्थ नो वुत्थो । पिइ-माइ-पुत्त-बंधवपडिबंधो वा न संपन्नो ॥ २ ॥

१ अच्छिन्ननिर्यद्बाष्पप्रवाहप्रम्लानितानना ॥ २ आकृष्य कोपभरविरचितभालभृकुटिभीमाननः ॥ ३ 'और्ध्वदेहिकम्' मृतकार्यम् ॥ ४ कहिं पि प्रतौ ॥ ५ जिनवचनविमर्शोत्पन्नविशुद्धभावः ॥ ६ जगति ॥

न य तव्विओगवसओ परिदेवण-रुयण-ताडणाइ बहुं । कुणमाणो वि हु बहुसो तुममणुपत्तो सुहलवं पि ॥ ३ ॥

न य गरुयरोगजोगे वि पीडियंगस्स विलवणाईहिं । जाया सुहासिया किंतु दढयरं पावपरिवुड्ढी ॥ ४ ॥

पुव्वकयदुक्कयाणं दुचिन्नाणं इहं उइन्नाणं । सयमणुभवणं[1] मोत्तुं नो मोक्खो मुणसि न इमं पि ? ॥ ५ ॥

पियजणविओगदुक्खं तितिक्खियं किं न सगरपमुहेहिं ? । बारवइनयरिदाहे किं वा नो हलहर-हरीहिं ॥ ६ ॥

किं व न सरीरवियणा वीरजिणाईहिं धीरपुरिसेहिं । संगमयपमुहविहिया सहिया सपरक्कमेहिं पि ? ॥ ७ ॥

ते[2]हिंतो वि हु किं गुरुपरक्कमो ? तव्विणासकुसलो वा ? । जं सहसि न तं सम्मं अवहंतो चित्तसंतावं ॥ ८ ॥

माइंदजालसरिसं[3] अहवा गंधव्वनगरपडितुल्लं । किं पाव ! न बुज्झसि तं[4] सयण-सरीराइ सव्वमिमं ? ॥ ९ ॥

होऊण सासयं जइ असासयं होइ होउ ता सोगो । सो विहलो पढमं चिय सव्वत्थ विणस्सरसरूवे ॥ १० ॥

एवं च परमविसुज्झमाणसुहभावो 'अलमित्तो जीवियव्वेणं' ति निच्छिऊण, रज्जे नियपुत्तं निवेसिऊण य गओ कुमारनंदिमुणिंदसमीवे । परमभत्तिब्भरपुरस्सरकयसिरोनमणो जंपिउं पवत्तो—भयवं ! नियसामत्थाणुरूवपालियदुवालसवयस्स[5] समणोवासयस्स पवज्जं काउमसमत्थस्स समीवोवट्ठियमरणस्स किं काउं जुज्जइ ? त्ति ।

गुरुणा भणियं—महाराय ! संलेहणा । सा पुण दुविहा—दव्वओ भावओ य । तत्थ दव्वओ धण-भवण-सयण-परियण- संलेखनायाः स्वरूपमतिचाराश्च

१ °णं वोत्तुं प्रतौ ॥ २ तेभ्यः ॥ ३ मायेन्द्रजालसदृशम् ॥ ४ त्वम् ॥ ५ निजसामर्थ्यानुरूपपालितद्वादशव्रतस्य ॥

पमुहबज्झपरियरचागेण, भावओ पुण कोहाईणमच्चंतपरिहारेण परिकम्मियसरीरस्स [1]भत्तपरिन्नापडिवत्ती संभवइ। तीए य पवन्नाए कह वि संकिलिट्ठकम्मोदयवसेण कस्सई पंच अइयारा भवंति। तं जहा—इहलोगासंसा १ परलोगासंसा २ जीवियासंसा ३ मरणासंसा ४ कामभोगासंस ५ त्ति। तत्थ—

मणुयस्स हि मणुयजणो इहलोगो तेसु अप्पणो जम्मं। आसंसइ मम एसो हवेज्ज पुत्तो व भत्ता वा ॥ १ ॥
तस्सेव य परलोगो [2]तियसाई तेसु सुंदरं किं पि। दट्ठूणं आसंसइ अहं पि एवंविहो होज्जा ॥ २ ॥
दट्ठूणमिड्ढि-पूयं जणेण [3]कीरंतियं अणसणम्मि। जइ ताव [4]जिएमि चिरं ति पत्थणा जीवियासंसा ॥ ३ ॥
मरणासंसा पुण सास-कास-कोढाइविहुरदेहस्स। तद्दुक्खविरामकए लहु मरणं मग्गमाणस्स ॥ ४ ॥
सद्दो रूवं कामा भोगा पुण होंति गंध-रस-फासा। तव्विसया आसंसा पंचममइयारमाहंसु ॥ ५ ॥
एवमइयारपरिहारसारसंलेहणापवन्नस्स। आराहणापडागा करगोयरमेइ गिहिणो वि ॥ ६ ॥
धन्ना गिहत्थधम्मं सुनिम्मलं पालिऊण पज्जंते। संलेहणाविहाणं सोक्खनिहाणं पवज्जंति ॥ ७ ॥

एवं गुरुकहियतकालोचियनीसेसकिच्चो आबालकालियमालोइऊण मूलुत्तरगुणावराहनिवहं, पुणरवि सविसेसमुच्चरावेऊण दुवालस वि वयाइं, खामिऊण सव्वसत्तसंघायं पभाचंदो पवन्नो गुरुणो समीवे अणसणं, सोउमाढत्तो य आराहणापमुहसत्थाइं ति। अइक्कंते य सत्तरत्ते भवियव्वयावसेण पहीणचारित्तावरणीयकम्मो स महप्पा गुरुं विन्नविउं पवत्तो—भयवं! पुव्वं मए

१ भक्तपरिज्ञा—अनशनप्रकारविशेषः ॥ २ देवादिः इत्यर्थः ॥ ३ क्रियमाणाम् ॥ ४ जीवामि ॥

ता संपयमवि मिस्सं चरणं सरणं ति निच्छयपवन्ना। कीस न हुंति [हु] समणा? पावाणमहो! महामोहो ॥ ५२ ॥
किं बहुणा?—
[1]इत्तिरिसामाइय-छेयसंजया तह दुवे नियंठा य। बउस-पडिसेवगा वा अणुसज्जंते य जा तित्थं ॥ ५३ ॥
इय भो देवाणुप्पिय! तव्विहकुवियप्पिएहिं अक्खुद्धो। तह धम्मधुरं दुद्धरमुद्धरसु जहा सिवं लहसि ॥ ५४ ॥

एवं गुरुणोऽणुसासणं एगग्गमाणसो स महप्पा सिरिप्पभरायरिसी सविणयमादाय संजमकज्जेसु उज्जमंतो [2]वाहिओ इव वेज्जं खणं पि गुरुकुलममुंचंतो विहरइ गामा-ऽऽगराईसु। [3]परियत्तई य सुत्तं, अवधारेइ तयत्थं, वट्टइ बाल-गिलाणाइकज्जेसु, कुणइ य [4]वेयावच्चं, [5]अवच्चं व रक्खइ पाणिगणं, सुस्सूसइ मुणिजणं, जणइ जईण समाहिं, [6]अणुयत्तइ अट्ठ पवयणमायाउ त्ति। पभाचंदो वि राया रज्जसिरिमणुभुंजंतो कालं वोलेइ।

अन्नया य जाया तस्स दोन्नि पुत्ता—हरिसेणो पउमनाभो य। पाढिया परिणाविया जहोचियं रज्जकज्जेसु निउत्ता य। अन्नया य राइणो समुप्पन्नो [7]अरोयगवाही। तव्वसेण य मणहरेसु वि [8]भक्ख-भोयणपगारेसु न जायइ वंछा, तओ किसीहूयं सरीरं। आहूया य वेज्जा, कया य काइ तेहिं तिगिच्छा, न य जाओ को वि विसेसो। तओ परिभावियमणेणं—किमित्तो वि दव्वोसहेहिं? भावोसहमेव संपयमुचियं, किमेत्तो वि कायव्वमवरं? ता जेट्ठसुयं रज्जे इयरं च जुवरायपए निवेसिऊण परलोय-

१ इत्वरं—मर्यादितकालम् ॥ २ व्याधितः इव वैद्यम् ॥ ३ परावर्त्तयति ॥ ४ °वच्चमव° प्रतौ ॥ ५ अपत्यमिव ॥ ६ अनुवर्त्तते ॥ ७ आरो° प्रतौ। अरोचकव्याधिः ॥ ८ °क्खाभो° प्रतौ ॥

जा धम्मज्झाणपरो चिट्ठइ ता चारकहियवुत्तंतो । अरिदमणो आगंतुं वंदइ तं परमभत्तीए ॥ ११ ॥
भणइ य भयवं ! तुमए भुत्ता चत्ता य जह नरिंदसिरी । अन्नेण तह न केणइ ता तुज्झ नमामि कमकमलं ॥ १२ ॥
अम्हारिसा उ पावा रज्जलवेणं पि गव्विया दूरं । अविभावियभाविभया न धम्मकज्जे पसज्जंति[1] ॥ १३ ॥
एवमुववूहिओ[2] वि हु रन्ना थेवं पि अकयउक्करिसो । तं किं पि झाणपगरिसमारूढो सो महासत्तो ॥ १४ ॥
जेण लवसत्तमेसुं सव्वट्ठविमाणवासितियसेसु । मरिऊणं उववन्नो देवेहिं कया य से महिमा ॥ १५ ॥
नियनियठाणाउ चुया कालेणं भायरो य ते दो वि । अवरविदेहे देहं मोत्तुं मोक्खं लहिस्संति ॥ १६ ॥
इय निरइयारपव्वज्जपालणं सिवफलं मुणेऊण । सोहग्गोवरि मंजरितुल्लं को नाऽऽयरेज्ज बुहो ? ॥ १७ ॥ छ ॥
किंच—
धन्नाण[3] निवेइज्जइ धन्ना वच्चंति पारमेईए । गंतुं इमीए पारं पारं पाविंति दुक्खाणं ॥ १८ ॥
पन्नासत्थनिबद्धो[4] एस समप्पइ कहारयणकोसो । जत्तो[5] समुट्ठिओ पुण एसो तं इण्हि निसुणेह ॥ १९ ॥ छ ॥

॥ अथ प्रशस्तिः ॥

चंदकुले गुणगणवद्धमाणसिरिवद्धमाणसूरिस्स । सीसा जिणेसरो बुद्धिसागरो सूरिणो जाया ॥ १ ॥

१ प्रसजन्ति ॥ २ उपबृंहितः ॥ ३ धन्येभ्यः निवेद्यते धन्या व्रजन्ति पारम् 'एतस्याः' प्रव्रज्यायाः ॥ ४ 'पञ्चाशदर्थनिबद्धः' पञ्चाशदर्थाधिकारगर्भितः एष समाप्यते कथारत्नकोशः ॥ ५ जुत्तो प्रतौ ॥

तह कह वि संजमभरो उव्वूढो जेहिं धीरधवलेहिं[1] । अज्जवसिउं पि तीरइ जह अज्ज वि नेव केहिं पि ॥ २ ॥
ताण जिणचंदसूरी सीसो सिरिअभयदेवसूरी वि । रवि-ससहर व पयडा अहेसि[2] सियगुणमऊहेहिं ॥ ३ ॥
तेसिं अत्थि विणेओ समत्थसत्थत्थपारपत्तमई[3] । सूरी पसन्नचंदो न नामओ अत्थओ वि परं ॥ ४ ॥
तस्सेवगेहिं सिरिसुमइवायगाणं विणेयलेसेहिं । सिरिदेवभद्दसूरीहिं एस रइओ कहाकोसो ॥ ५ ॥
संघधुरंधरसिरिसिद्धवीरसेट्ठीण वयणओ जेहिं । चरियं चरिमजिणिंदस्स विरइयं वीरनाहस्स ॥ ६ ॥
परिकम्मिऊण[4] विहियं जेहिं सइ[5] भव्वलोगपाउग्गं । संवेगरंगसालाभिहाणमाराहणारयणं ॥ ७ ॥
कंचणकलसविहूसियमुणिसुव्वयभवण[6]मंडियम्मि पुरे । भरुयच्छे तेहिं ठिएहिं एस नीओ परिसमत्तिं ॥ ८ ॥
वसु[7] ८ बाण ५ रुद्द ११ संखे वच्चंते विक्कमाओ कालम्मि । लिहिओ पढमम्मि य पोत्थयम्मि गणिअमलचंदेण ॥ ९ ॥

अलं बहुभणिएण ॥

यदिह जगदे किञ्चिन्मोहान्मया समयाद्[8] बहिर्यदपि सुकविक्षुण्णान्मार्गाद् वचोऽभिदधेऽन्यथा ।
तदुदितकृपैः सद्भिस्त्यक्त्वा तथैष विशोध्यतां, भवति कथिकाकोशः पन्था यथा शिवसद्मनः ॥ १ ॥

१ धीरत्वेन धवलतुल्यैः, धीरवृषभैरित्यर्थः ॥ २ अभूताम् ॥ ३ समस्तशास्त्रार्थपारप्राप्तमतिः ॥ ४ संस्कृत्य संशोध्य वा इत्यर्थः ॥ ५ सदा ॥ ६ °यभुव° प्रतौ ॥ ७ "अङ्कानां वामतो गतिः" इति न्यायात् ११५८ वर्षे इत्यर्थः ॥ ८ जिनागमात् ॥

यत् कृत्वेदं त्रिकरणजयात् पुण्यमस्माभिराप्तं, तेनैवैतच्छ्रवण-पठना-ऽऽख्यान-चिन्तैकचित्ताः ।
सन्तः सन्तु प्रतिसभमितश्चाऽऽप्तमोहव्यपोहा, भूयो भूयो जिनपतिमते बोधिसिद्धिं लभन्ताम् ॥ २ ॥
जीयासुः शशि[1]-नील-काञ्चन-जपा-मेघोपमाङ्गत्विषः, श्रीमन्नाभि[2]तनूद्भवप्रभृतयः सर्वेऽपि तीर्थेश्वराः ।
गीरम्बा च सुदर्शना च विदिता देव्योऽपि काल्यादयो, भूयासुर्जिनशासनस्य सततं प्रोत्[3]सर्पणाहेतवे ॥ ३ ॥
इति बहुविधवाक्यानेकमाणिक्यपूर्णाऽऽगमजलनिधिलब्धैरर्थलेशैर्निबद्धः ।
तदपि निहतभूरि[4]प्राणिदौर्गत्यदुःखो, जयतु सततमेव श्रीकथारत्नकोशः ॥ ४ ॥

॥ इति प्रव्रज्यार्थचिन्तायां श्रीप्रभप्रभाचन्द्रचरितमुक्तम् ॥ ५० ॥

तदुक्तौ च सम्यक्त्वादिपञ्चाशदर्थाधिकारसम्बद्धः कथारत्नकोशोऽपि समाप्तः ॥ छ ॥

॥ मंगलं महाश्रीः ॥ शुभं भवतु ॥

शिवमस्तु सर्वजगतः परहितनिरता [भवन्तु] भूतगणाः । दोषाः प्रयान्तु नाशं सर्वत्र सुखी भवतु लोकः ॥ १ ॥ छ ॥

१ श्वेत-नील-पीत-रक्त-श्यामाङ्गवर्णा इत्यर्थः ॥ २ ऋषभादय इत्यर्थः ॥ ३ प्रभावनाकृते इत्यर्थः ॥ ४ °भूतिप्रा° प्रतौ ॥

निप्पुन्नएण[1] न पवन्नं सामन्नं, इयाणिं पि जइ तं पडिवज्जिज्जइ ता किं जुत्तमजुत्तं ? ति । गुरुणा भणियं—भद्द ! किमेवमुल्लवसि ? किं न सुयमिमं तुमए ?—

एगदिवसं पि जीवो पवज्जमुवागओ अणन्नमणो[2] । जइ वि न पावइ मोक्खं अवस्स वेमाणिओ होइ ॥ १ ॥
ता इण्हिं पि हु नरवर ! संथारगदिक्खनावमवछिड्डुं[3] । घेत्तूण भीमभववारिरासिमुत्तरसु लीलाए ॥ २ ॥
अह गरुयहरिसवसनिस्सरंतरोमंचकंचुइयकाओ । संथारगपवज्जं पडिवज्जइ भूवई सम्मं ॥ ३ ॥
साहूहिं भणिज्जंतं पीऊसं पिव असेसदोसहरं । पंचपरमेट्ठिमंतं अवधारइ तयणु संविग्गो ॥ ४ ॥
एवं पक्खियसंलेहणाए संथारयं पवन्नो सो । मरिऊण वेजयंते जाओ देवो महिड्डीओ ॥ ५ ॥
अह कइ वि पुरा-ऽऽगर-गाम-नगर-निगमेसु अणिययविहारं । गुरुणा सह विहरंतो अरिदमणनरिंददेसम्मि ॥६॥
तम्मरणं सोऊणं रायरिसिसिरिप्पभो विचिंतेइ । जुज्जइ ममावि संपइ काउं एवंविहं कज्जं ॥ ७ ॥
अब्भुज्जयं[4] विहारं पवज्जियं एचिरं मए[5] कालं । अब्भुज्जयमरणं चिय एत्तो जत्तेण सरणिज्जं[6] ॥ ८ ॥
तो गुरुणाऽणुन्नाओ अणुसरिऊणं सिलायलं विउलं । उभओ च्चिय संलिहियं[7] अप्पाणं सुज्झमाणमणो ॥ ९ ॥
निरवेक्खो पच्चक्खिय चउविहाहारममरगिरिधीरो । सममेव चित्तवित्तिं इट्ठेऽणिट्ठे वि य ठवेंतो ॥ १० ॥

१ निष्पुण्यकेन न प्रपन्नं श्रामण्यम् ॥ २ अनन्न° प्रतौ ॥ ३ संस्तारकदीक्षानावम् अपच्छिद्राम् ॥ ४ अभ्युद्यतम् ॥ ५ ममं का° प्रतौ ॥
६ अनुसरणीयम् ॥ ७ संलिख्य ॥

प्रत्यक्षमथ परोक्षं द्विधैव [तत्] तत्र चादिमं द्वेधा । नैश्चयिकमथ व्यवहारकारि पूर्वं पुनस्त्रेधा ॥ ५ ॥
अवधि-मनःपर्यय-केवलानि षोढा द्वितीयमन्यत् तु । प्रत्यक्षादिनिमित्तं परोक्षमेतच्च पञ्चविधम् ॥ ६ ॥
स्मरणं प्रत्यभिज्ञानं तर्को लैङ्गिकमागमः । विषयः फलमाभासाः स्याद्वादो नय-दुर्नयौ ॥ ७ ॥
वादन्यायस्ततः सर्वविच्चे [च] भुक्तिसम्भवः । पुं-स्त्रियोश्च समा मुक्तिरिति शास्त्रार्थसङ्ग्रहः ॥ ८ ॥
प्रमाणं ज्ञानं प्रामाण्यस्यान्यथानुपपत्तितः । नाज्ञानं सन्निकर्षादि न साधकतमं यतः ॥ ९ ॥
अर्थस्य प्रमितौ न साधकतमः स्यात् सन्निकर्षो यतः, स्वस्यासौ प्रमितौ न साधकतमः कुम्भादिवत् कर्हिचित् ।
अर्थश्चाप्रमितः कथं मतिधनैस्त्यज्येत गृह्येत वा ?, सम्यग्ज्ञानमतः प्रमाणमपरं नो सन्निकर्षादिकम् ॥ १० ॥
प्रदीप-नयनादिभिर्न च भवत्यनैकान्तिको, न साधकतमा यतस्त इह मुख्यवृत्त्या मितौ ।
परम्परितकारणे करणता यदि त्विष्यते, तदा करणलक्षणे बत ! जलाञ्जलिर्दीयताम् ॥ ११ ॥
ये सन्निकर्षमवदन् निपुणाः प्रमाणमध्यक्षता किमु न तैर्नभसः प्रपन्ना ? ।
यद् भौतिकेन नयनेन वि[हा]यसस्तैः, शास(श)क्यते स्खलयितुं नहि सन्निकर्षः ॥ १२ ॥
भूषा(रूपा)भावान्नभसि न यदि स्यादणौ तत्र [...]स्यानुद्भूतत्वे नयनजमले स्यात् समुद्भूतरूपे ।
तस्मात् स्वार्थग्रहणनियता ज्ञानरूपैव शक्तिर्ज्ञातुः कर्मापचयजनिता मुख्यवृत्त्या प्रमाणम् ॥ १३ ॥
प्रमाणाभावतो सत्त्वे संयोग-समवाययोः । सन्निकर्षाभिदाख्यानं वान्ध्येयगुणवर्णनम् ॥ १४ ॥

दण्डीति मतिस्त्वन्मतसंयोगविमुक्तवस्तुभेदकृता । संयुक्ताकारत्वाद् युक्ता प्रासादबुद्धिरिव ॥ १५ ॥

संयोगनिराकरणम् ।

यद् यस्मान्नो भिन्नं समवायस्तत्र तस्य नैव यथा । स्वात्मनि पटनवतन्तु[.........]विशेषेभ्यः पटो भिन्नः ॥ १६ ॥
यद् वृश्य (दृश्यं) सद् यस्माद् व्यतिरेकेणोपलभ्यते न ततः । तदभिन्नं स च तेभ्यस्तथाऽन्यथोच्छिद्यते भेदः ॥१७॥
ज्ञानस्य स्वप्रकाशत्वं केवलव्यतिरेकिणा । अर्थप्रकाशकत्वेन सिद्धसङ्केतकः सुधीः ॥ १८ ॥
यच्चोच्यते ज्ञानमिहापरेण, ज्ञानेन वेद्यं खलु मेयभावात् ।
घटादिवत् तत्र महेशबुद्ध्या, नैकान्तिकत्वे स्फुटमेव हेतोः ॥ १९ ॥
पृथग्जनज्ञानमपेक्ष्य साधने, न च स्थितिर्वा व्यभिचार एव वा ।
सुवेदनेऽध्यक्षबलाच्च सुस्थिते, हेतोरकिञ्चित्करता निवार्या ॥ २० ॥
अन्तर्मुखो यः प्रतिभासभेदः, स साधयेद् ज्ञानगतं प्रकाशम् ।
बहिर्मुखस्त्वर्थगतं तदेवं, ज्ञानं प्रसिद्ध्येत् स्व-परप्रकाशम् ॥ २१ ॥
न च द्वयेऽपि प्रतिभासमाने, शक्योऽपलापोऽन्यतरस्य कर्तुम् ।
प्रत्यक्षता संविदि चात्र मुख्या, ज्ञेये पुनः स्यादुपचारवृत्त्या ॥ २२ ॥
यद् यस्मिन्नुपलब्धिलक्षणगताकारेण नाऽऽभासते, वाच्यं तन्न तदात्मकं किल यथा कुम्भः पटाद्याकृतिः ।

भासन्ते च घटादयो न हि जडा भावाः कचित् संविदाकारेणेति विभिन्नमूर्त्तय इमे मान्या मनीषाधनैः ॥ २३ ॥
तेन यदुच्यते योगाचारेण—
[..............................]ते ज्ञानमेव यदिहावभासते ।
तद्यथा सुखप्रमुखमवभासते च कुम्भादिस्तत् कुतस्त्याऽर्थसिद्धिः ? (?) ॥ २४ ॥
यद् येन सहोपलभ्यते, नियमात् तन्न ततो विभिद्यते । चन्द्राच्चन्द्रो यथा परः, सर्वं वस्तु तथा च संविदा ॥ २५ ॥
वेद्यते यदिह तन्न भिद्यते, ज्ञानतः खलु तदीयरूपवत् । वेद्यते च सकलं घटादिकं, बाह्यवस्तु सदिति भ्रमस्ततः ॥२६॥
संवेद्यमानत्वमिदं स्वतश्चेदसिद्धमर्थस्य तथा प्रतीतेः ।
अथापरस्माद् बहिरप्यसिद्धेर्विरुद्धमन्या च गतिर्न काचित् ॥ २७ ॥
ज्ञानस्य स्व-परप्रकाशपरतापक्षेऽपि सम्भाव्यते, नैयत्येन सहोपलम्भ इति सन्देहादनैकान्तिकः ।
प्रत्यक्षादनुमानतश्च विदिते बाह्ये च कालात्ययक्षिप्तोऽप्येष सहार्थचिन्तनविधिर्भेदाद् विरुद्धोऽपि च ॥ २८ ॥
नियतः सहोपलम्भो भिन्नास्वपि कृत्तिकासु यद् दृष्टः । तेन व्यभिचारित्वं स्फुटं विपक्षेऽपि वृत्तित्वात् ॥ २९ ॥
वेद्यत्वमत्र यदि वेदनकर्म तात् (भावात्), क्रोडीकृतं ननु भिदैव ततो विरुद्धम् ।
चिद्रूपता यदि पुनस्तदसिद्धमेव, कुम्भादयः खलु जडा यदमी प्रसिद्धाः ॥ ३० ॥
ज्ञानं विवादपतितं व्यवसायरूपं, बाधाप्रबन्धपरिवर्जितवेदनत्वात् ।

॥ अर्हम् ॥

आचार्यप्रवरश्रीदेवभद्रसूरिसूत्रितः

प्रमाणप्रकाशः ।

सन्न्यायनगरारम्भमूलसूत्रसनाभयः । श्रीनाभेयस्य नन्द्यासुर्देशनावचनक्रमाः ॥ १ ॥
ज्ञान-ज्ञेयस्वरूपं यत् कलयत्येकहेलया । त्रैलोक्यमखिलं ज्योतिस्तदार्हतमहं स्तुवे ॥ २ ॥
उपादेयमुपादातुं हेयं हातुमुपास्यते । प्रमाणमेव यत् सद्भिस्तदेवातः प्रकाश्यते ॥ ३ ॥
ज्ञानं स्वार्थविनिश्चयरूपमबाधं प्रमाणमेतच्च । ज्ञातुः पृथक् कथञ्चित् प्रामाण्यं च स्वतः परतः ॥ ४ ॥

---

१ ग्रन्थस्यास्य समाप्तेरनुपलभ्यमानत्वाद् एतद्ग्रन्थस्य तत्कर्तुश्च नाम नोपलभ्यते, तथापि प्रकरणस्यास्य तृतीयश्लोके "प्रमाणमेव यत् सद्भिस्तदेवातः प्रकाश्यते" इत्युल्लेखदर्शनाद् ग्रन्थस्यास्य "**प्रमाणप्रकाशः**" इत्यभिधानमस्माभिरुपकल्पितम् । तथा कर्तृनामोल्लेखाप्राप्तावपि च यद् ग्रन्थकर्तुः **देवभद्र** इति नामपरिकल्पनं तदपि तत्कृतस्तोत्रादिग्रन्थान्तररचनासमकक्षकत्वविलोकनेन पत्तनीयक्षेत्रवसहिपाटकसत्कभाण्डागारस्थैतद्ग्रन्थपुस्तिकासहवर्त्त्यैतद्ग्रन्थकृत्स्तोत्रादिसहभावेन चेति । अतः सम्भाव्यते ग्रन्थस्यास्य तत्कर्तुश्च नामान्तरमपि कदाचित् स्यादिति । प्रयतितव्यमेतत्सम्पूर्णग्रन्थावाप्तौ विद्वद्भिरिति ॥

अनेकधा विप्रतिपत्तिरत्र, प्रवादिनां दृष्टिवशात् तथाहि ॥ ३८ ॥
प्राभाकराः प्राहुरिहेन्द्रियोत्थमध्यक्षमेकं विषये पुरस्थे ।
संस्कारजन्या स्मृतिरन्यदस्याः, पूर्वानुभूतं विषयस्वरूपम् ॥ ३९ ॥
हेतुप्रभेदाद् विषयप्रभेदाच्चेदं किल ज्ञानयुगं प्रमातुः ।
स्मृतिप्रमोषाच्च भवेद् विवेकाख्यातिर्न तु ज्ञानमखण्डमेतत् ॥ ४० ॥
अत्रोच्यते कारणभेदमात्रात्, कार्यस्य भेदो यदि साधनार्थः ।
तदा दृगाद्यैर्बहुभिः कृतं सत्, प्राप्तं घटज्ञानमपि ह्यनेकम् ॥ ४१ ॥
सामग्र्यभेदादथ नास्ति सोऽस्मिन्, सामग्रिकैकैव यतोऽत्र तावत् ।
कार्यस्य भेदाद् यदि चात्र हेतुव्रजान्यताऽन्योन्यसमाश्रयस्तत् ॥ ४२ ॥
संस्कारेन्द्रिययोर्विलोकितमथान्यत्र प्रभुत्वं स्मृतिप्रत्यक्षप्रभवे इहापि सुवचस्तत् कार्यभेदस्ततः ।
दत्तस्तर्हि जलाञ्जलिस्तिश्र(?)सनाथः प्रत्यभिज्ञाविदोऽप्येकत्वे यदिहापि सैव सकला तत्कार्यता लोक्यते ॥ ४३ ॥
दृगादयो दोषवशाच्च रूप्यरूपेण शुक्तिं खलु दर्शयन्ति । तस्मादसिद्धो विषयप्रभेदः, सिद्धं ततो ज्ञानमखण्डमेतत् ॥ ४४ ॥
ज्ञानस्य सर्वस्य सगोचरत्वे, भङ्ग्या कयाचिद् विहितप्रतिष्ठे। बाह्यार्थनिह्नेतृमनोरथद्रून् , विपर्ययख्यातिर(रु)न्मूलयिष्यति ॥४५॥

विवेकाख्यातिः ।

आहुर्मध्यमका इदं रजतमित्यख्यातिरेषा यतो, रूप्यख्यातिमदत्र नो सजति न भ्रान्तित्वमस्यान्यथा ।
नो शुक्तिः कलधौतमित्यधिगतेः स्याद् वस्तु वस्त्वन्तराकारेण प्रतिभाति तर्हि न भवेद् वस्तुव्यवस्था क्वचित् ॥ ४६ ॥
अत्रोच्यते यदि न किञ्चिदिहावभाति, तत् स्याद् विशेषभणितेर्विरहप्रसङ्गः ।
अख्यातिरत्र च मतः किमभाव एव, ख्यातेरथाल्पतमता प्रथमे विकल्पे ॥ ४७ ॥
न स्याद् भिदा भ्रम-सुषुप्तदशासु हेतुर्नो वा मना(ता)ऽपि परमार्थसती न यस्मात् ।
पक्षे परे वितथरूपतयाऽर्थभाने, ख्यातिर्विपर्ययवती स्फुटमेव सिद्धा ॥ ४८ ॥
विपर्यये भाति यदत्र किञ्चित्, तज्ज्ञानधर्मो यदि वाऽर्थधर्मः । ना....नहङ्कारसमाश्रयत्वं, बहिर्मुखत्वप्रतिभासनाच्च ॥ ४९ ॥
न चार्थधर्मोऽर्थविधेयसाध्यवैधुर्यतो बाधकबोधभावे ।
तद्व(द्वा)मतायाश्च विबाधितत्वा[त् त]स्मादसत्ख्यातिरियं प्रपद्या ॥ ५० ॥
वि(वै)भाषिकैरुक्तमिदं न युक्तं, न सच्च भातीति च वाग्विरोधात् ।
ज्ञानार्थयोर्भेदकयोरभावे, भ्रान्तेरवैचित्र्यविधे[ः] प्रसङ्गात् ॥ ५१ ॥
अर्थक्रियायां पुनरर्थमात्रनिबन्धनेच्छादिरिहापि सोऽस्ति ।
विशिष्टरूपा तु शिव(विशि)ष्टवस्तुसाध्या यदि स्यान्न विपर्ययः स्यात् ॥ ५२ ॥

इत्यसत्ख्यातिः ।

प्रतीत्या यत् सिद्धं तदिह विषयो वस्तु न पुनः, प्रतीतौ तामन्यां मृगयति बुधो निष्ठितभयात् ।
अथैतद् यद्देशं कलयति न तद्देशगमने, तथा पश्येन्नैवं कलयति यदाऽस्त्येव हि तदा ॥ ५३ ॥
न चेदेवं विद्युद्विषयमपि विज्ञानमसति, प्रवृत्तं यत् पश्चान्न खलु तडितः सत्वकलता ।
प्रसिद्धार्थख्यातिं जगदुरिति वाचस्पतिसुताः, शुभोदर्कं तर्कं प्रतिविहितवैरव्यतिकराः ॥ ५४ ॥
भ्रान्ता-ऽभ्रान्तज्ञानवर्ताप्यतानात्, माऽस्मिन् पक्षे भेदकाभावतः स्यात् ।
यद्देशः ख्यात्येष तं तस्य चिह्नं, पश्येत् पश्चात् प्रागसौ तत्र चेत् स्यात् ॥ ५५ ॥
शुक्ताविचत्वारमिति (?) प्रतीतौ, बाह्यार्थरूपं न विभाति रूप्यम् ।
तद्बाधकप्रत्ययबाधितत्वादनाद्यविद्यावशविप्लवात् तु ॥ ५६ ॥
संवेदनाकार इहावभाति, तस्माद् बहीरूपतयेव नान्यः ।
बौद्धास्तृतीया इति युक्तिमात्मख्यातौ वदन्तः प्रतिषेधनीयाः ॥ ५७ ॥
प्रमाणतो बाह्यपदार्थसिद्धेः, स्वाकारमात्रग्रहणाप्रसिद्धेः ।
मिथ्येतरज्ञानकथाप्रणाशादेस(श)त्वतस्त्वा(स्ता)त्त्विकवासनायाः ॥ ५८ ॥
नीलादिकृतः सारूप्यलक्षणो ज्ञानगत इहाकारः । प्रत्यक्षो नीलादिः स्वतः परोक्षाबहीरूपः ॥ ५९ ॥
ज्ञानाकारख्यातेरात्मख्यातिरि[ह] वर्णिता निपुणैः । सौत्रान्तिकैरियं पुनरतिकलुषा ख्यातिरिव तेषाम् ॥ ६० ॥

यत् तूक्तसाध्यविकलं तदुपात्तहेतुशून्यं यथा किल विपर्यय-संशयादि ॥ ३१ ॥
विपर्यया-ऽनध्यवसाय-संशयस्वरूपकारोपविरोधि तावत् ।
विनिश्चयात्मत्वमृते न युज्यते, ज्ञाने विसंवादकता विशेषणम् ॥ ३२ ॥
निर्विकल्पमपि निश्चयं विना, न प्रमाणपदवीं समश्नुते ।
भाषमाण इति तत्प्रमाणतां, मा क्षिपंश्च सुगतो न सौगतः ॥ ३३ ॥
किञ्चाविकल्पकमनध्यवसायरूपं, युञ्जद् विनिश्चितिकृतावलम्बिकल्पम् ।
पुंसः स्वयं सुतकृतावबलस्य शण्ढदत्तात्मजप्रजननाधिकृतेः समं स्यात् ॥ ३४ ॥
ज्ञानं व्यवस्यति न व्यवहारकारि, गच्छत्तृणालगन [.................... ।
.............................] वेदवत्त(त्ता)थागतैरनुगतं खलु निर्विकल्पम् ॥ ३५ ॥
किञ्चाविकल्प-[स]विकल्पकयोरभीष्टौ, यत् तात्त्विकेतरतनू विषयौ तथा च ।
मिथ्याधिरोपितमहोत्स(?)विकल्पकस्याप्रामाण्यमात्तविषयग्रहणेन बौद्धैः ॥ ३६ ॥
यस्मिन् बाधा भवति विपरीतार्थनिर्णायकेन, ज्ञानं न स्यात् तदिह विलसद्बाधकं न प्रमाणम् ।
आत्मा व्यापी प्रकृतिजनितं विश्वमीशप्रक्लृप्तं, सर्वं नित्यं क्षणिकमथवेत्यादिसंवेदनं वा ॥ ३७ ॥
शुक्ताविदं रूप्यमिति प्रतीतिं, विपर्ययख्यातिमुशन्ति सन्तः ।

कलुषिनयनवृत्तेश्चाकचिक्यावलोकोल्लसितकलिततारानुस्मृतेः शुक्तिकायाम् ।
रजतमिव(द)मितीदं ज्ञानमत्र प्रमातु[ः], कथयति विपरीतख्यातिमाराध्यवर्गः ॥ ६६ ॥

विपरीतख्यातिः ।

तीव्राभ्यासदशा भवेद् यदि ततः प्रामाण्यमस्य स्वतः, सा चेन्नास्ति ततः परादधिगतप्रामाण्यभावात् स्वतः ।
उत्पत्तौ परतोऽथवाऽर्थविषयच्छित्तौ स्वकार्ये च तत् ,स्वभ्यासे···क्वचित्म(त् स ?)तः क्वचिदिदं स्यादन्यतो पाटवे॥६७॥

कर्तृभोक्तृपरिणामिदेहितो, भिन्नभिन्नमविनाशि नाशि यः ।
आत्मवस्तु न हि मन्यते प्रमासिद्धिमस्य वि(धि)गहो ! विवेकिता ॥ ६८ ॥

निःसन्देहमबाधितं सुखमहं संवेदयामीति यद् , ज्ञानं तन्न शरीरगोचरमहङ्कारास्पदं तन्न तत् ।
स्थूरोऽस्मीति यदौपचारिकमिदं भृत्येऽपि राजेतिवत् , स्वात्मान्तःकरणेन बाह्यकरणाभावे [···]तद् गृह्यते ॥ ६९ ॥

रूपादिविज्ञानमिहाश्रितं क्वचिद् , गुणत्वतो रूप-रसादिवत् तथा ।
ज्ञानाद्युपादानविशेषपूर्वकं, कार्यत्वहेतोः कलसा(शा)दिकं यथा ॥ ७० ॥

आत्मद्रव्यमनन्तपर्ययममी चास्मात् कथञ्चित् पृथक्, ते यस्मादुदयन्ति केचिदपरे नश्यन्ति चानुक्षणम् ।
द्रव्यं तु ध्रुवमेतदप्यतितरां तेभ्यो न वे(चेद्) भिद्यते, यन्न क्वापि विलोक्यते जगति तत् पर्यायपिण्डं विना ॥ ७१ ॥

आत्माविज्ञानयोर्भेदाभेदेऽनुभवस्विस्थिते(?) । कर्तृत्वे करणत्वादिलक्ष्मीमपहरेत कः ? ॥ ७२ ॥

द्वेधा वस्तु विनिश्चयेन भवति प्रत्यक्षमत्यक्षमित्यन्तर्भावविधेश्च निर्न(र्ण)यकृतां शेषप्रमाणामिह ।
ये त्वेकादिषडन्तमभ्युपगताश्चार्वाकमुख्याः परे, मानं तान्न विमुञ्चतीह बलवान्न व्याप्तिदोषग्रहः ॥ ७३ ॥

प्रत्यक्षं विशदं ज्ञानं प्रत्यक्षत्वेन हेतुना । यन्नोक्तसाध्यं तन्नोक्तसाधनं लिङ्गिकादिवत् ॥ ७४ ॥

ज्ञानान्तराव्यवहित[···]मथो विशेष[······]त्वमस्य विशदत्वमुशन्ति सन्तः ।
सर्वात्मना क्वचिदिदं क्वचिदंशतः स्याद् , द्रव्यादिकारणकलापवशात् प्रमातुः ॥ ७५ ॥

आत्मानमक्षमवदत् प्रति तं गतत्वादध्यक्षमक्षवचनाद्यनपेक्षमेव ।
स्वावारकत्रुटिकृतां पटुतां दधानं, स्वे गोचरेऽवधिमतो गमकैवलाख्यम् ॥ ७६ ॥

रूपि द्रव्यमवैति सर्वमवधिज्ञानी मनःपर्ययज्ञानी मानुषलोकसंज्ञिमनसां जानाति तान् पर्ययान् ।
द्रव्यं क्षेत्रमतीत-भावि-भवि(व)तः कालान् गुणान् पर्ययान् , सर्वान् केवलिनः क्षतावृतितया जानन्ति पश्यन्ति च ॥७७॥

यच्चेन्द्रियैः स्वविषयेषु मनःसहायैरक्षानपेक्षमनसा च किल क्रियेत ।
कर्मक्षयोपशमचित्रतया विचित्रं, तद्व्यावहारिकमिहाहुरवग्रहादि ॥ ७८ ॥

अक्षार्थयोगो(गः) किल निर्विशेषसत्त्वाश्रयालोचनदर्शनोत्थम् ।
संस्थान-वर्णादिविशिष्टवस्तुज्ञानं यद(दा)द्यं तदवग्रहः स्यात् ॥ ७९ ॥

तदन्वितानन्वितधर्मचिन्तनादवग्रहात्तार्थविशेषकाङ्क्षणम् ।
ईहा ततः काङ्क्षितवस्तुगोचरं, विनिश्चितज्ञानमता(वा)यमूचिरे ॥ ८० ॥
अवायनिर्नी(र्णी)तपदार्थगोचरं, कालान्तरेऽपि स्मृतिकारि धारणाम् ।
वदन्ति विज्ञानमियं त्वनेकधा, बह्वादिभेदप्रविकल्पनावशात् ॥ ८१ ॥

॥ इति प्रत्यक्षप्रकाशः प्रथमः ॥

ज्ञानं परोक्षमविशदरूपमिति ब्रूमहे परोक्षत्वात् । यन्नाविशदं तन्न परोक्षमतीन्द्रियमिवाध्यक्षम् ॥ ८२ ॥
पूर्वानुभू[त]विषया संस्कारोद्बोधहेतुका । संवादतः प्रमाणं स्यात् तदित्युल्लेखिनी स्मृतिः ॥ ८३ ॥
प..

[॥ तालपत्रीयप्रतावेतदन्तमेवैतत् प्रकरणमुपलब्धमित्येतावत्पर्यन्तमेवास्माभिः प्रकाशितमिदमिति ॥]

सारूप्यं द्वयदर्शने सति विनिश्चेतुं ध्रुवं शक्यते, नीलादिस्तु परोक्ष एव भवतामर्थः सदा सम्मतः ।
सारूप्याधिगमादनन्तरमथो जानाति नीलादिकं, व्यक्तोऽन्योन्यसमाश्रयस्तदिति न ख्यातिर्मता सिद्ध्यति ॥ ६१ ॥

आत्मख्यातिक्षेपः ।

ज्ञाने यत् प्रतिभासते तदसदित्यक्षोऽपि किं भाषते ?, बाधा यस्य च सम्भवे तदपि सद् ब्रूयात् कथं शिक्षितः ? ।
वक्तुं नो सदसद्विरोधभयतो वाञ्छत्यतुच्छाशया:(य)स्तेनाख्यातिरवाच्यवस्तुविषये वेदान्तिकैराक्षि(हि)ता ॥ ६२ ॥
सत् सत्त्वेन ग्रहीतुं गदितुमपि तथा सर्वथात्वेन वक्तुं, ज्ञातुं वा शक्यमेव प्रकटमपरथोच्छिद्यते शिष्टमार्गः ।
किञ्चेदं रूप्यमेवं वचनपरिगतीपूर्वदृष्टं सदेव, स्मृत्वा रूप्यं प्रवृत्ते किल सदृशतया तत् कथं ख्यातिरिष्टा ? ॥ ६३ ॥

अनिर्वचनीयार्थख्यातिः क्षिप्ता ।

ख्यात्यन्तराणामतिदुस्थितत्वादन्तर्बहिर्वाऽप्यति(नि)रूपितस्य ।
अलौकिकार्थस्य वदन्ति केचिल्लोकायताः ख्यातिमहातिरूढाः ॥ ६४ ॥
अर्थस्यालौकिकत्वं यदि विशदमतिं लोकमाश्रित्य मिथ्याज्ञानेऽप्यन्तर्बहिर्वा विषयमतितरां ख्यापयत्येष तर्हि ।
ख्यातिक्षेपादथैवं वदसि वद परं युक्तियुक्ताऽऽर्हतैर्या,ख्यातिः प्रोक्ताऽत्र तां चेद् विघटयसि तदा ज्ञास्यते चाऽऽदिता ते ॥६५॥

अलौकिकार्थस्मृतिः ।

सावणमासासियसत्तमीए सिरिसीहरायदइयाए । सुजसाए कुच्छिकमलम्मि रायहंसो तुमं जयसु ॥ ११ ॥
वइसाहकिन्हतेरसितिहीए जम्मूसवो कओ जेहिं । तुह ते सुरा-ऽसुर-नरा कयत्थमत्थयमणी जाया ॥ १२ ॥
वइसाहे किन्हचउद्दसीए तुह वयसिरीए सहियस्स । आसि कयचमक्कारो अन्नो च्चिय कोइ सिंगारो ॥ १३ ॥
सा वइसाहे कसिणा चउद्दसी भन्नए कहं ? जीए । केवलपया[व]कवलि(चि)यतेओ तुमं उग्गओ चंदो ॥ १४ ॥
चित्तं चित्ते सियपंचमीए तुह तिहुयणप्पईवस्स । निव्वाणगयस्स वि जलइ जोइकलिया पयासमई ॥ १५ ॥
जय सिद्ध ! बुद्ध ! नीरय ! जय सासयमोक्खसोक्खसंपत्त ! ।
जय जय अणंतसामिय ! जय कामियदाणदुल्ललिय ! ॥ १६ ॥
गयराओ पणयाणं [गुणे] पणामेसि रोसरहिओ य । दोसे हणेसि सामिय ! तुज्झ अउव्वा इमा महिमा ॥ १७ ॥
वलियग्गीवं लच्छी कडक्खए ते सया सउम्माहा । जेसिं चित्ते निवससि तुमं सयाऽणंतजिणनाह ! ॥ १८ ॥
सो पायालो जक्खो सासय(ण)देवी वियंभिणी सा य । तुह सासणे रयाणं कुणंतु कल्लाणकोडीओ ॥ १९ ॥
सिरिदेवभद्दसूरी पुणो पुणो विण्णवेइ इणमेव । तुह चेव गुणा हियए वसंतु मे आभवमणंत ! ॥ २० ॥

॥ इति श्रीअनन्तनाथस्तोत्रम् ॥

आचार्यश्रीदेवभद्रोपज्ञं

श्रीस्तम्भनकपार्श्वनाथस्तोत्रम् ।

लच्छीलीलाभवणं थंभणयपइट्ठियस्स पासस्स । पहुणो पयकमलं रायहंससयसेवियं जयई ॥ १ ॥
रागाइरिउनिसुंभणसुत्थीकयसयलधम्मरज्जंगो । विजयउ पासस्स चिरं परक्कमो पोढयं पत्तो ॥ २ ॥
उदियम्मि जम्मि न तमो नेव पयासन्तरं न अत्थमणं । तं पासजोगिरायज्जोइं जोगिप्पियं भरिमो ॥ ३ ॥
तुह नाह ! फणिफणारयणकिरणसीमंतिया सलायन्ना । देहप्पहा विडंबइ विद्दुमवल्लीजुयं जलहिं ॥ ४ ॥
मन्ने फणिफणमणिदीवएहिं अवलोइऊण पणइजणं । दुरियाहिंतो रक्खिय धरणो मणवंछियं देइ ॥ ५ ॥
सामि ! तुमं विम्हयवसवियसियनेत्तुप्पलाहिं दीसंतो । विज्जाहरीहि रेहसि कप्पूरच्छुरियदेहो व ॥ ६ ॥
तुह पहु ! पायप्पणयं सप्पणयं जणमिणं उवयरंतो । वक्खिवत्तमणो धरणो साण्डयं दीसइ पियाहिं ॥ ७ ॥
पणएसु अमयवरिसो सरिसो वज्जासणिस्स मच्छरिसु । एसो नवो पयावो तुह पहु ! जियरायदोसस्स ॥ ८ ॥
दुव्वायदुहियदेहा पित्तुत्तावियसमत्तगत्तंगा । अइदुसहसिंभभिंभलमण-तणुणो सुन्नचेयन्ना ॥ ९ ॥
सव्वाऽऽहि-वाहियत्था सव्व[ह] दुव्वारदुरियविहुरतणू । तुह नाह ! सुमरणेण वि वंछियसुहभायणं हुंति ॥ १० ॥
एस च्चिय निरवज्जा विज्जा मंताणिमो महामंतो । एत्तो नऽन्नो चुन्नो तिहुयणलच्छीवसीयरणे ॥ ११ ॥

सिरिपासस्स भयवओ अट्ठमहाभयपणासणपरस्स । नामक्खराइं हियए सययं चिय जं जविज्जंति ॥ १२ ॥
पासे पहुम्मि पत्तो (त्ते) मा ज्झूरसु हियय ! निव्वुयं होसु । किं सीयइ कोइ कयाइ कप्परुक्खम्मि साहीणे ? ॥ १३ ॥
नाह ! तुह पायपायववहलच्छायासु वीसमंतस्स । भवकंतारुत्तारो सुहेण होज्जा लहुं मज्झ ॥ १४ ॥
किं वा तुह पहु ! बहु विन्नवेमि विन्नायसवनायव ! ? । तुममेविक्को सरणं ताणं च भवे भवे मज्झ ॥ १५ ॥
सिरिदेवभद्ददायग ! नायग ! ससुरासुरस्स भुवणस्स । कुणसु पसायं सामी होज्ज तुमं मज्झ पइजम्मं ॥ १६ ॥

॥ इति श्रीस्तम्भनकपार्श्वनाथस्य स्तोत्रं समाप्तम् ॥

॥ अर्हम् ॥

आचार्यश्रीदेवभद्रोपज्ञं

श्रीअनन्तनाथस्तोत्रम् ।

सम्मत्तनाण-दंसण-वीरियसोक्खाइं जस्सऽणंताइं । तमणंतमणंतसुहाण कारणं संथुणामि जिणं ॥ १ ॥
तुह गुणगहणे वाणी वाणि चिय सवमिच्छतासंघो (?) । एक्कं पुणो मम मणो सया वि पगुणं न संदेहो ॥ २ ॥
देहो वि हु सियरुहिरो अरहो सुरहो सुयंधनीसासो । लोउत्तरा गुणा पुण लोउत्तरिया किमच्छरियं ? ॥ ३ ॥
गरुओ गुणाणुराओ तत्तो गरुया गुणा तओ गरुओ । थोयवो इह एक्को थोयारमई परं लहुया ॥ ४ ॥
न य सामिणो वि हु गुणे मुणेमि किं नाह ! मिय पगब्भामि । तेसि सरूवविमरिसे बहिम्मुहो तयणु झिज्जामि ॥ ५ ॥
जे केवलिणो जाणंति तुह गुणे ते थुइं न कुवंति । अम्हे उ अयाणंता थुइमीहामो महच्छरियं ! ॥ ६ ॥
अवो ! साहसमेयं जं सामिगुणे अयाणुया अम्हे । लग्गा थोउं अहवा हेवाओ होइ दुच्छड्डो ॥ ७ ॥
सिद्धावत्थाए वि हु अत्थित्तं नत्थि तारिसं मज्झ । जत्थऽत्थमिंति तुह तित्थनाह ! गुणसंथुइपबन्धा ॥ ८ ॥
चिन्तामणि व विज्ज [व] कप्पपायवलय व पणइयणं । कुणइ पयत्थं तुह पयसेवा अमुणियगुणग्गा वि ॥ ९ ॥
देव ! तुममेव सामी सरणं तुममेव [देव !] न हु अन्नो । एवं पहू वियाणइ अहव ससंवेयणं मज्झ ॥ १० ॥

॥ १२ ॥
॥ १३ ॥
॥ १४ ॥
॥ १५ ॥
॥ १६ ॥
॥ १७ ॥
.... । ...मिथ्यादृशां तेषां विनिपाताः पदे पदे ॥ १८ ॥
अस्वसंवेदनं ज्ञानं प्रत्यपद्यन्त ये प्रभो ! । तैरान्ध्यमोषधासाध्यं स्वयमेव विसाधितम् ॥ १९ ॥
यैरिष्टकल्पनामात्रं सन्तानोऽपारमार्थिकः । स्वयं स्वशिष्यसन्तान(ने) ख्यापिता तैरवस्तुता ॥ २० ॥
एकान्तनित्योऽनित्यो वा थैरात्मं (?) ततः प्रभो !। बन्ध-मोक्षौ घयं (?) नेयौ तैश्चिन्त्याऽर्थक्रियाऽपि च ॥ २१ ॥
अपौरुषेयं वचनं विरुद्धेति पदद्वयी । येषां वक्त्रे सदा तेषां कः प्रत्येत्यप्रियानृतः ? ॥ २२ ॥
ज्ञानं ज्ञेयप्रतिक्षेपात् शून्यं ये प्रत्यपीपदन् । वराकाः किं कथं केन ते वदिष्यन्ति यद्वदाः ? ॥ २३ ॥
सर्वापलापी पापीयान्, नास्तिकोऽपि हि दर्शनी । कीर्त्यते यैः स्फुटं नाथ ! शोचनीयास्ततोऽपि ते ॥ २४ ॥
त्वय्यपि त्रातरि स्वामिन् ! शठैरेतैरयं जनः । परैर्विलुप्तचैतन्यसर्वस्वः क्रियते कथम् ? ॥ २५ ॥

सिद्धे रसेन्द्रे स्याद्वादे कल्याणं सिद्धमेव मे । नातः परमपेक्षाऽस्ति स्वामिन्नपरदर्शने ॥ २६ ॥
अहो ! मोहस्य दौरात्म्यं यदनन्तां भवाटवीम् । विश्वास्य भ्रमितः शश्वद् धिग् ! निष्कारणवैरिता ॥ २७ ॥
निष्कृपः काममृगयुर्मृगीमिव मृगीदृशः । दर्शयन् मां मृगं हन्ति त[त्] त्रायस्व कृपां कुरु ॥ २८ ॥
दुःखदावानलज्वालालक्षैर्दह्ये दयानिधे ! । दृशा पीयूषवर्षिण्या सिञ्च मां मास्म विस्मरः ॥ २९ ॥
अयोग्यः सन्नहं योग्यो जातः स्वामिप्रसादतः । प्रमाणं तत्र भगवान् स्वसंवेदनमेव वा ॥ ३० ॥
प्रभो ! भालमिदं भूया[त्] त्वत्प्रणामकिणाङ्कितम् । वीतरागस्य दासोऽयमिति व्यक्तार्थसूचकम् ॥ ३१ ॥
भवेद् भवार्णवे भक्तिस्त्वयि नाथ ! तरीर्यदि । लीलयोत्तीर्ण एवायं तर्हि गोष्पदवन्मया ॥ ३२ ॥
भवाङ्कखलके व[ल्ग]न् मोहो योद्धा मया प्रभो ! । त्वद्भक्तिक्षुरिकाक्षेपैः पातितो जितकाशिना ॥ ३३ ॥
त्वद्दर्शनान्मनोभूमावानन्दाङ्कुर उद्गतः । हेतुर्भूयात् परीणामी महानन्दतरूच्छ्रये ॥ ३४ ॥
त्रिलोकबन्धो ! क्रोधादिवैरिभिर्भवता जितैः । तावकः परिभूयेऽहं यत् स कस्य पराभवः ? ॥ ३५ ॥
न वाऽहमत्र जन्मनि नाथ ! जन्मान्तरेषु वा । त्वां विनाऽन्यस्य कस्यापि सेवकः किङ्करोऽपि वा ॥ ३६ ॥
तव प्रसादतो मा भून्नाथ ! जन्मैव मे क्वचित् । अथ जन्म तदा तत्र यत्रार्हन्नेव देवता ॥ ३७ ॥
सिद्धान्तामृतकल्लोलक्षालिते योगिनां गुरो ! । मच्चित्तमन्दिरे योगं स्थिरत्वेन नियोगतः ॥ ३८ ॥
जानतश्च विधित्सोश्च त्वदाज्ञां मे प्रमादिनः । इच्छायोगवतो नाथ ! निर्वृतिश्रीर्दवीयसी ॥ ३९ ॥

कर्मसंहारकाराभ्यामतो वीर्यातिरेकतः । शास्त्र-सामर्थ्ययोगाभ्यां योगिनां नाथ ! योजय ॥ ४० ॥
प्लवङ्गलीलवच्चेतःपारिप्लवमिदं मम । तस्य स्थैर्यकृते नाथ ! योगदण्डं प्रसादय ॥ ४१ ॥
यदर्थं मृग्यते योगो योगिभिस्तत्त्ववेदिभिः । तदयोगं पदं दद्याः पूर्यन्तां मे मनोरथाः ॥ ४२ ॥
त्वदाज्ञा नाथ ! मे प्राणास्त्वदाज्ञा नाथ ! मे तपः । त्वदाज्ञा नाथ ! [मे यो]गस्त्वदाज्ञा परमं पदम् ॥ ४३ ॥
त्वदाज्ञाशरणा[ः] सिद्धा नैके सिद्ध्यन्ति चापरे । सेत्स्यन्त्यनन्तास्तत् स्वामिन्नाज्ञा मौलिमणिर्मम ॥ ४४ ॥
दूरतः सम्पदस्तावदासतां याः किलापदः । मुक्तावपि [न] मे वाञ्छा यत्र न त्वमुपास्यसे ॥ ४५ ॥
त्वच्छासनानुरागेण रञ्जिताः सप्त धातवः । यथा मम तथा मोक्षलक्ष्मीर्मय्यनुरज्यताम् ॥ ४६ ॥
तवानुभावतो भूयाद् भक्तिर्जिन ! भवे भवे । देवे त्वयि गुरौ जैने त्वदुपज्ञे च शासने ॥ ४७ ॥
देव ! त्वद्दर्शनादेव दुष्कृतं क्षयमाप्नुयात् । सुकृतं वर्धतां सर्वमनुमोदनया मम ॥ ४८ ॥
सुखे दुःखे दिवा रात्रौ जन्मन्यत्र परत्र च । भूयासुः शरणं स्वामिन् ! पञ्चापि परमेष्ठिनः ॥ ४९ ॥

श्रीवीतरागस्तवनादमुष्मात्, पुण्यं यदाप्तं भवतात् ततो मे ।
श्रीदेवभद्रैकमहानिधाने, त्वच्छासने तीव्रतरोऽनुरागः ॥ ५० ॥

॥ इति श्रीवीतरागस्तवः सम्पूर्णः ॥

आचार्यश्रीदेवभद्रसूरिविरचितः

श्रीवीतरागस्तवः ।

॥ १ ॥
॥ २ ॥
॥ ३ ॥
॥ ४ ॥
॥ ५ ॥
॥ ६ ॥
॥ ७ ॥
॥ ८ ॥
॥ ९ ॥
॥ १० ॥
॥ ११ ॥